2



श्रीगणेशाम्बा गुरूभ्यो नमः

ऐमम्बितमे नदीतमे देवीतमे सरस्वति।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि।।



रसो यः परमानन्द एक एव द्विधा सदा।
श्रीराधाकृष्णरूपाभ्यां तस्यै तस्मै नमो नमः।

पंचांगकर्त्ताः
पं. कौशलकिशोर कौशिक ज्यो.

राजा सूर्य

मन्त्री सूर्य

श्री ब्रजभूमि पञ्चाङ्गम्

शुभ सम्वत् २०६५ शाके १९३० ईसवीं सन् २००८-०९

सम्पादक :- पं. श्री कौशलकिशोर कौशिक ज्यो., संरक्षक :- ज्योतिर्विद पं. श्री प्रेमपाल कौशिक, रजत-स्वर्ण पदक विजेता

वर्षाङ्क १४

श्री ब्रजभूमि पंचांग कार्यालय :- ई-२१९, मेन रोड़, जगजीत नगर, दिल्ली-११००५३
निवास :- जी-९७, शिव मंदिर वाली गली, जगजीत नगर, दिल्ली-११००५३

मूल्य ३१/-

प्रकाशक- श्रीराजधानीपंचांग कार्यालय, E-219, मेनरोड़, जगजीतनगर, दिल्ली-53, फोन-22852476, 22941608, 9868909063

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

भूमिका

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

अज्ञानरूपी अन्धकारको दूर करनेमें समर्थ जिनके सदोपदेशीय ज्ञानाञ्जनशलाकासे मेरे चक्षु उन्मीलित(दोषरहित) हुए प्रातःस्मरणीय श्रीगुरुदेव जी को मेरा बारम्बार नमस्कार है।

श्रीराधिकासहितं श्रीकृष्णदेवं वन्दे जगद्गुरुम्।
प्रबोधस्तत्फलं प्राहुःकृतं श्रीब्रजभूमिपञ्चाङ्गम्॥

श्रीराधाजी सहित जगद्गुरु भगवान श्रीकृष्ण की मैं वन्दना करता हूँ, जिनकी असीम कृपावशात् श्रीब्रजभूमि नामक पंचांग की रचना करने का अन्तर्मन में बोध हुआ।

आपके करकमलों में प्रस्तुत **श्रीब्रजभूमि पंचांग** केतकी चित्रापक्षीय अयनांश तत्तुल्य सूक्ष्मातिसूक्ष्म ज्योतिर्गणित से बनाया गया है। इस पंचांग का गणित ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ७७।४१ उत्तर अक्षांश २७।२८पर स्थिति परमपवित्र श्रीकृष्णकी जन्मभूमि मथुराके आधार पर किया गया है। यह पंचांग सम्पूर्ण भारतवर्ष एवं समस्त देशोंके लिए समान उपयोगी है।

वर्त्तमान समय में देश-विदेशोंमें दृश्यगणित की ही सर्वोपरीय मान्यता है। भारत सरकार भी नवीन वेधसिद्ध ज्योतिर्गणित को ही महत्त्व प्रदान करती है। अन्तरिक्षमें गतिमान ग्रहस्थितिका यथार्थ दर्शन इस पंचांग की ग्रहगणनाके आधारपर किया जा सकता है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्को यत्र साक्षिणौ॥

ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्षशास्त्र है, जिसके सूर्य और चन्द्रमा साक्षी हैं। ग्रह गणिताध्याय अनन्त कालब्रह्मको तत्त्वसे जाननेके लिए ही बना है। कालके यथार्थ मापदण्ड सूर्य चन्द्रादि ग्रह तथा अन्य तारागण हैं, जिन्हें प्रत्यक्ष देखकर समय सुनिश्चित किया जाता है। सुयोग्य

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यम्।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम्॥-वशिष्ठ

वेदोंकी रचना यज्ञोंके लिए हुई है। यज्ञ सुनिर्णीत कालके अधीन है। ज्योतिषशास्त्र काल का निर्णायक है, अतः जो ज्योतिष को तत्त्व से जानता है, वही यज्ञोंको जानता है, अर्थात् सुखस्वरूप यज्ञोंको विधि-विधानसे करवा सकता है। जैसा कि वेदाङ्ग ज्योतिष के रचयिता आचार्य लगध ने कहा है-

वेदाहि यज्ञार्थमभि प्रवृत्ताःकालानुपूर्वाऽभिहिताश्च यज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वे यज्ञान्॥

काल ही अप्रमेय अच्युत अनन्तब्रह्म है। काल ही सृष्टि की उत्पत्ति और लय का कारण है एवं काल ही अशुद्धात्मरूप अन्यथा होने पर विनाश का कारण बन जाता है। यथा-

एषोऽप्रमेयोऽच्युतकालब्रह्म करोति सृष्टिर्जननं लयं च।
सुनिश्चितोऽयं जगतःसुखाय एषोऽन्यथा नाशकारो हि सृष्टेः॥

यज्ञादि सिद्धि के लिए इस काल के वर्ष, ऋतु, मास, दिन, रात्रि, प्रातः, सायं, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, होरा, लग्न, घटी-पल और मुहूर्त्तादि भाग बनाये गये हैं। यथा-

यज्ञादिसिद्ध्यै विहिता विभागाः तिथ्यर्क्षयोगा ऋतुवर्षमासाः।
उभे च सन्ध्ये दिवसा निशाश्च होराऽथ लग्नं करणं मुहूर्त्ताः॥

काल के तिथि वारादि समस्त अवयवोंका यथार्थ ज्ञान कराने वाला पांचोंअङ्गोंसे परिपूर्ण पंचांग आदर करने योग्य होता है।

तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च।
एतेषां यत्र विज्ञानं पञ्चाङ्ग तन्निगद्यते॥

श्रीब्रजभूमिपंचांग अद्वितीय पंचांग है। इसमें उन सभी विषयोंका समावेश कर दिया गया है, जोकि सामान्य ज्ञान वाले ज्योतिषियोंके लिए दुर्लभ रहे हैं।

इस पंचांगकी सहायतासे घण्टोंके कामको मिनटोंमें कर सकते हैं। दैनिक प्रयोगमें आने वाली सभी सारणियोंकी उपयोगिता उनके साथ-साथ सरल सुबोध भाषा शैलीमें लिखी गई है। भद्रा,पंचक,नक्षत्र [illegible]

विश्वके किसी भी स्थान एवं समय की कुण्डली मात्र जोड़-घटा से शीघ्र बना सकते हैं। होरादि षड्वर्ग कुण्डलियाँ बनाकर फल कथन करना तो बहुत ही आसान है।

नक्षत्र विभाजन एवम् इष्टकालीन चन्द्र स्पष्टसे विंशोत्तरीदशा, अर्न्तदशा, परिज्ञान तत्काल प्राप्त कर सकते हैं। पंचांगमें दैनिक ग्रहस्पष्ट प्रातःघं.५मि.३०बजे के दिये होते हैं। जिन्हें लाघवांक कोष्ठक की सहायता से इष्टकालीन सहज बना सकते हैं।

प्रकरण के अनुसार विषय अलग-अलग लिखे हैं। जैसेः- **जातक प्रकरणमें** जन्म से मृत्युपर्यन्त जीवन में होने वाली सभी शुभाशुभ घटनाओंकी जानकारी प्राप्त करना। बिना देखे रंग रूप आकृति समझ लेना तथा कष्ट और उनसे बचने के उपायोंको जानना आदि। इसी प्रकार **शान्तिप्रकरणमें** शान्तिसे सम्बन्धि उपायों पर विचार किया गया है तो **विवाहप्रकरणमें** केवल विवाह से सम्बन्धित बातें ही मिलेंगी। **मुहूर्त्तप्रकरण, यात्राप्रकरण, अद्भुत प्रकरण, प्रश्नप्रकरण** आदि अपने-अपने विषय परिलेखोंसे ओत-प्रोत हैं। विभिन्न प्रकार की शंकाओंका सामाधान और परिहार वाक्यों का समावेश पाठकोंके दैनिक उपयोगमें अति उत्तम रहेगा, ऐसी हमें आशा है।

श्रीमान्-भूदेव द्विजमात्र, स्वदेशी-विदेशी विद्वज्जन, ज्योतिष से लाभ उठाने वाले व्यापारीबन्धु, उद्योगपति, विदुषी माताएँ, बहिनें, पुत्रियाँ एवं पंचांगप्रेमी पाठक अपने-अपने सुझाव देकर अनुगृहीत करेंगे। किंचित् कहीं भूल या त्रुटि रह जाना सहज मानवीय विकार है, उसे सुधार कर लेना या अवगत कराना याथार्थ योग्यता का मापदण्ड है।

अतीत एवं वर्तमानके समस्त ज्योतिष गणिताचार्य एवं भविष्यमें होने वाले विद्वानों का समानादर करते हुए उन्हें प्रणाम करते हैं।

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः॥

विदुषामनुचरः

संरक्षक- ज्योतिर्विद् पं० श्री प्रेमपाल कौशिक

[illegible]



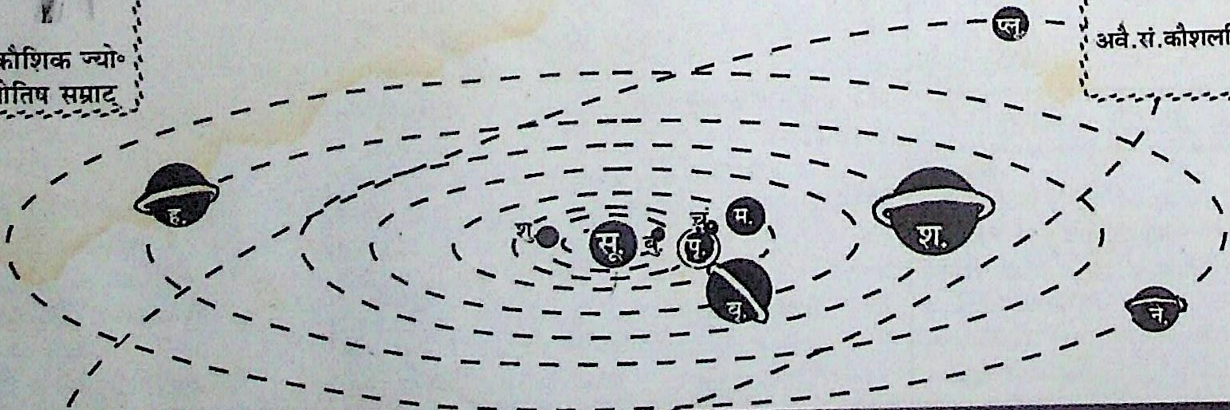
संरक्षक : पं॰ प्रेमपाल कौशिक ज्यो॰
ज्योतिष सम्राट्

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

ऐमम्बितमे नदीतमे देवीतमे सरस्वती ।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि ।।



अवै.रां.कौशलकिशोर कौशिक ज्यो.
बी.ए.,एल.एल.बी.



श्री ब्रजभूमि-पञ्चाङ्गम्

संरक्षकः– ज्योतिर्विद् पं॰ श्री प्रेमपाल कौशिक, **सम्पादकः**– श्रीकौशलकिशोर कौशिक ज्यो॰
श्री ब्रजभूमि पंचांग कार्यालय, E-219, मेन रोड, जगजीत नगर, दिल्ली -110053
Email:rajdhanipanchang@Gmail.com दूरभाषः- कार्यालय : 22852476, निवास : 22941608, मोबाइल : 9868909063

विषय - सूची

इस वर्ष के नए विषय

भैरव भवानी संवाद

कालपुरुष के शरीर में राशियों का स्थान

जातक के शरीर में राशियों का स्थान

शारीरिक दुःख-सुख का कैसे विचार करें?

दैनिक चन्द्रमा के नक्षत्र चार चरण के अनुसार बच्चों के नाम रखने की सुविधा

श्रीवृद्धि सौख्य समृद्धि प्रदायक यन्त्र

सरकारी छुट्टियाँ एवं प्रमुख पर्व-दिन सं.२०६५ (7 अप्रैल 2008 से 26 मार्च 2009 ई.तक)

पर्व	तिथि	वार
गुड़ी १,श्रीगौतमज.संवत्प्रारम्भ:	६ अप्रैल	रवि
गणगौर पूजन	८ "	मंगल
वैशाखीपुण्यपर्व, विशू केरल	१३ "	रवि
श्रीरामनवमी व्रतोत्सव	१४ "	चन्द्र
डा.अम्बेडकरज.	१४ "	चन्द्र
श्रीमहावीर जयंती (२६०७वीं)	१८ "	शुक्र
श्रीहनुमज्जयंती, चैत्रीपूर्णिमा	२० "	रवि
श्री बुद्धपूर्णिमा	१९ मई	चन्द्र
वट्सावित्री व्रत	३ जून	मंगल
श्रीगङ्गादशहरा स्नानादि पर्व	१३ "	शुक्र
श्रीजगदीश रथयात्रा(पुरी,उड़ीसा)	४ जुला.	शुक्र
जन्मदिन हजरतअली	१७ "	गुरु
गुरुपूर्णिमा,मुड़ियापूनो	१८ "	शुक्र
मासशिवरात्रिव्रत, रुद्राभिषेक	३० "	बुध
हरियाली तीज	४ अग.	चन्द्र
६२ वाँ स्वतन्त्रतादिवस	१५ "	शुक्र
रक्षाबन्धन (राखी)	१६ "	शनि
श्रीकृष्णजन्माष्टमी स्मार्त्त	२३ "	शनि
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वै. व्रतोत्सव	२४ "	रवि
श्रीगणेशज.पत्थरचौथ(महा.)	३ सित.	बुध
ओनम् (केरल, तमिलनाडु)	१२ "	शुक्र
श्रीविश्वकर्मा पूजा	१७ "	बुध
जमातुल विदा मुस.	२६ "	शुक्र
बैंक अर्धवार्षिक लेखाबन्दी	३० "	मंगल
शारदीय नवरात्रप्रारम्भ	३० "	मंगल
श्रीगांधीजी व शास्त्रीजीजयंती	२ अक्टू.	गुरु
ईदुलफितर (मीठी ईद)	२ "	गुरु
श्री दुर्गाष्टमी	७ "	मंगल
विजया १० दशहरा मेला	९ "	गुरु
म.वाल्मीकज.,कार्तिकस्नानप्रा.	१४ "	मंगल
करवाचौथ व्रत	१७ "	शुक्र
दीपावली श्रीमहालक्ष्मीपूजन	२८ "	मंगल
अन्नकूट गोवर्धनपूजा	२९ "	बुध
भइयादूज(टीका)	३० अक्टू.	गुरु
गुरुनानक जयंती,कार्तिकीपूर्णिमा	१३ नव.	गुरु
गुरुतेगबहादुर बलिदान दि.	३ दिस.	बुध
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	९ "	मंगल
क्रिसमसडे (बड़ादिन)	२५ "	गुरु
अंग्रेजी नववर्षारम्भ (२००९)	१ जन.	गुरु
गुरु गोविन्दसिंह जयंती	५ "	चन्द्र
मोहर्रम (ताजिया)	८ "	गुरु
लोहड़ी (पंजाब,हरि.,हिमा.)	१२ "	चन्द्र
मकरसंक्रांति, पोंगल	१४ "	बुध
गणतन्त्र दिवस ६०वाँ	२६ "	चन्द्र
वसंतपंचमी	३१ "	शनि
माघीपूर्णिमा, भक्तरविदास ज.	९ फर.	चन्द्र
महाशिवरात्रिव्रत	२३ "	चन्द्र
होलिका दहन	१० मार्च	मंगल
धुलैण्डी	११ "	बुध

सूचना:- सरकारी छुट्टियाँ तथा पर्व-दिन तारीख की सूची को भारत सरकार के गजट की सूची से मिलान कर लेना चाहिए। किंचित फेरबदल का उत्तरदायित्व सम्पादक पर नहीं है।

मासिक कालाष्टमी व्रत

मास	तिथि		वार
वैशाख(२००८)	२८	अप्रैल	सोमवार
ज्येष्ठ	२८	मई	बुधवार
आषाढ़	२६	जून	गुरुवार
श्रावण	२५	जुलाई	शुक्रवार
भाद्रपद	२३	अगस्त	शनिवार
आश्विन	२२	सितम्बर	सोमवार
कार्तिक	२१	अक्टूबर	मंगलवार
मार्ग.(भैरवाष्टमी)	२०	नवम्बर	गुरुवार
पौष	१९	दिसम्बर	शुक्रवार
माघ (२००९)	१८	जनवरी	रविवार
फाल्गुन	१६	फरवरी	सोमवार
चैत्र	१८	मार्च	बुधवार

एकादशी व्रत

मास	पक्ष	एकादशी	तिथि	वार
चैत्र	शुक्ल	कामदा	१६ अप्रैल	बुध
वैशाख	कृष्ण	वरूथिनी स्मार्त्त	१ मई	गुरु
"	शुक्ल	मोहिनी	१५ "	गुरु
ज्येष्ठ	कृष्ण	अपरा	३१ "	शनि
"	शुक्ल	निर्जला	१४ जून	शनि
आषाढ़	कृष्ण	योगिनी स्मार्त्त	२९ "	रवि
"	शुक्ल	शयनी स्मार्त्त	१३ जुला.	रवि
श्रावण	कृष्ण	कामिका स्मार्त्त	२८ "	सोम
"	शुक्ल	पवित्रा	१२ अग.	मंगल
भाद्रपद	कृष्ण	अजा	२७ "	बुध
"	शुक्ल	पद्मा	११ सित.	गुरु
आश्विन	कृष्ण	इन्दिरा	२५ "	गुरु
"	शुक्ल	पापांकुशा	११ अक्टू.	शनि
कार्तिक	कृष्ण	रमा	२४ "	शुक्र
"	शुक्ल	प्रबोधिनी	९ नव.	रवि
मार्गशीर्ष	कृष्ण	उत्पन्ना	२३ "	रवि
"	शुक्ल	मोक्षदा	९ दिस.	मंगल
पौष	कृष्ण	सफला स्मार्त्त	२२ "	सोम
"	शुक्ल	पुत्रदा	७ जन.	बुध
माघ	कृष्ण	षट्तिला	२१ "	बुध
"	शुक्ल	जया स्मार्त्त	५ फर.	गुरु
फाल्गुन	कृष्ण	विजया	२० "	शुक्र
"	शुक्ल	आमला	७ मार्च	शनि
चैत्र	कृष्ण	पापमोचनी	२२ "	रवि

एकादशीव्रत स्मार्त्त- सद्गृहस्थियों के लिए है, जिससे अग्रिमदिन चक्रांकित महाभागवत वैष्णवजन, साधूसन्यासी, योगीजती, विधवा स्त्रियाँ व्रत करती है। जिस दिन एकादशी के सामने कुछ न लिखा हो वह सभी के लिए समान व्रतोपयोगी है।

श्री गणेश चतुर्थी व्रत

मास		तिथि		वार
वैशाख		२४	अप्रैल	गुरुवार
ज्येष्ठ		२३	मई	शुक्रवार
आषाढ़		२२	जून	रविवार
श्रावण		२१	जुलाई	सोमवार
श्रावण	वरद्४	४	अगस्त	सोमवार
भाद्रपद	बहुलाचौथ	२०	"	बुधवार
भाद्रपद	श्रीगणेशज.	३	सितम्बर	बुधवार
आश्विन		१८	"	गुरुवार
कार्तिक	करवाचौथ	१७	अक्टूबर	शुक्रवार
मार्गशीर्ष		१६	नवम्बर	रविवार
मार्गशीर्ष	वैनायकी	१	दिसम्बर	सोमवार
पौष		१५	"	सोमवार
माघ	सकटचौथ	१४	जनवरी	बुधवार
माघ	तिलचतुर्थी	३०	"	शुक्रवार
फाल्गुन		१२	फरवरी	गुरुवार
चैत्र		१४	मार्च	शनिवार

व्रत की पूर्णिमाएं

मास		तिथि		वार
चैत्र	(२००८)	१९	अप्रैल	शनिवार
वैशाख		१९	मई	सोमवार
ज्येष्ठ		१८	जून	बुधवार
आषाढ़		१७	जुलाई	गुरुवार
श्रावण		१६	अग.	शनिवार
भाद्रपद		१४	सितम्बर	रविवार
आश्विन		१४	अक्टूबर	मंगलवार
कार्तिक		१२	नवम्बर	बुधवार
मार्गशीर्ष		१२	दिसम्बर	शुक्रवार
पौष	(२००९)	१०	जनवरी	शनिवार
माघ		९	फरवरी	सोमवार
फाल्गुन		१०	मार्च	मंगलवार

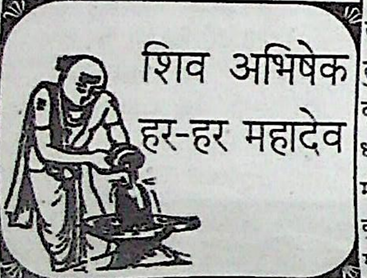
प्रदोष व्रत

मास	पक्ष	तिथि	माह	वार
चैत्र	शुक्ल	१७	अप्रैल	गुरुवार
वैशाख	कृष्ण	३	मई	शनिवार
"	शुक्ल	१७	"	शनिवार
ज्येष्ठ	कृष्ण	१	जून	रविवार
"	शुक्ल	१५	"	रविवार
आषाढ़	कृष्ण	३०	"	सोमवार
"	शुक्ल	१५	जुला.	मंगलवार
श्रावण	कृष्ण	३०	"	बुधवार
"	शुक्ल	१४	अग.	गुरुवार
भाद्रपद	कृष्ण	२८	"	गुरुवार
"	शुक्ल	१२	सित.	शुक्रवार
आश्विन	कृष्ण	२६	"	शुक्रवार
"	शुक्ल	१२	अक्टू.	रविवार
कार्तिक	कृष्ण	२६	"	रविवार
"	शुक्ल	११	नव.	मंगलवार
मार्गशीर्ष	कृष्ण	२५	"	मंगलवार
"	शुक्ल	१०	दिस.	बुधवार
पौष	कृष्ण	२४	"	बुधवार
"	शुक्ल	९	जन.	शुक्रवार
माघ	कृष्ण	२३	"	शुक्रवार
"	शुक्ल	७	फर.	शनिवार
फाल्गुन	कृष्ण	२२	"	रविवार
"	शुक्ल	८	मार्च	रविवार
चैत्र	कृष्ण	२४	"	मंगलवार

मासिक शिवरात्रि व्रत

श्रीगङ्गाजल से शिव अभिषेक आराधना में सर्वोत्तम माना गया है। गंगाजलके अतिरिक्त रत्नोदक, इक्षुरस (गन्नेका रस) दुग्ध,पञ्चामृत (दूध, दही, घी, चीनी,शहद)आदि अनेक द्रव्योंसे किया जाता है। **वृहद्धर्मपुराण अ.५७** में तो यहां तक लिखाहै कि शिवलिङ्ग में सभी देवताओंका पूजन करें- **शिवलिङ्गेऽपि सर्वेषां देवानां पूजनं भवेत्। सर्वलोकमये यस्याच्छिव शक्तिर्विभुः प्रभुः।।**
पञ्चाक्षर मन्त्र- (नमः शिवाय)
षडाक्षरमन्त्र- (ॐ नमः शिवाय)
शिवजी के अनन्य भक्त श्रावणमास में कन्धे पर कांवड़ि उठाए नंगेपांव भागते दौड़ते मुख से बोलते **बम-बम भोले। हर-हर महादेव।।** के उद्‌घोष अत्यन्त शोभायमान लगते हैं। **अवढ़रदानी सदा शिव** सबकी मनोकामना पूर्ण करते हैं।

मास	तिथि	माह	वार
वैशाख (२००८)	४	मई	रविवार
ज्येष्ठ	२	जून	सोमवार
आषाढ़	१	जुलाई	मंगलवार
श्रावण (विशेष)	३०	"	बुधवार
भाद्रपद	२९	अगस्त	शुक्रवार
आश्विन	२७	सित.	शनिवार
कार्तिक	२७	अक्टू.	सोमवार
मार्गशीर्ष	२५	नव.	मंगलवार
पौष	२५	दिस.	गुरुवार
माघ (२००९)	२४	जनवरी	शनिवार
फाल्गुन(महाशिवरात्रि)	२३	फरवरी	सोमवार
चैत्र	२४	मार्च	मंगलवार



अमावस्याएं

मास	तिथि	माह	वार
चैत्र पितरकार्येऽमा	५	अप्रैल	शनिवार
चैत्र देवकार्येऽमा	६	अप्रैल	रविवार
वैशाख	५	मई	सोमवार
ज्येष्ठ	३	जून	मंगलवार
आषाढ़ पितरकार्ये.	२	जुलाई	बुधवार
आषाढ़ देवकार्ये.	३	जुलाई	गुरुवार
श्रावण	१	अग.	शुक्रवार
भाद्रपद	३०	अग.	शनिवार
आश्विन	२९	सित.	सोमवार
कार्तिक	२८	अक्टू.	मंगलवार
मार्गशीर्ष	२७	नव.	गुरुवार
पौष	२७	दिस.	शनिवार
माघ (२००९)	२६	जनवरी	सोमवार
फाल्गुन पितरकार्ये.	२४	फरवरी	मंगलवार
फाल्गुन देवकार्ये.	२५	फरवरी	बुधवार
चैत्र	२६	मार्च	गुरुवार

संक्रान्तियाँ पुण्यकाल

राशि	तिथि	वार	पुण्यकाल
मेष	१३अप्रैल	रवि	पुण्यमध्याह्नात्परतः
वृष	१४मई	बुध	पुण्यकाल दिनभर
मिथुन	१४जून	शनि	अपराह्ने पुण्यकाल
कर्क	१६जुला.	बुध	पुण्यकाल दिनभर
सिंह	१६अग.	शनि	पुण्यकाल दिनभर
कन्या	१६सित.	मंगल	अपराह्ने पुण्यकाल
तुला	१६अक्टू.	गुरु	पुण्यकालअग्रिमदिन
वृश्चिक	१५नव.	शनि	पुण्यकालअग्रिमदिन
धनु	१५दिस.	सोम	अपराह्ने पुण्यकाल
मकर	१४जन.	बुध	पुण्यकालदिनभर
कुम्भ	१२फर.	गुरु	मध्याह्नात्परतःपुण्य
मीन	१४मार्च	शनि	मध्याह्नात्परतःपुण्य

सौंदर्यवर्धक सौभाग्य सुखसूचक रोहिणी व्रत

मास	पक्ष	तिथि	माह	वार
चैत्र	शु.	९	अप्रैल	बुधवार
वैशाख	शु.	७	मई	बुधवार
ज्येष्ठ	कृ.	३	जून	मंगलवार
आषाढ़	कृ.	१	जुलाई	मंगलवार
श्रावण	कृ.	२८	जुलाई	सोमवार
भाद्रपद	कृ.	२४	अगस्त	रविवार
आश्विन	कृ.	२०	सित.	शनिवार
कार्तिक	कृ.	१८	अक्टू.	शनिवार
मार्गशीर्ष	कृ.	१४	नवम्बर	शुक्रवार
मार्गशीर्ष	शु.	१२	दिस.	शुक्रवार
पौष	शु.	८	जनवरी	गुरुवार
माघ	शु.	४	फरवरी	बुधवार
फाल्गुन	शु.	४	मार्च	बुधवार

'चन्द्र पत्नी च रोहिणी' सूत्रानुसार जिस दिन चन्द्रमा अपनी सर्वाधिक प्रियपत्नी रोहिणी के यहाँ निवास करते हैं। उस दिन विदूषी महिलाएं अपने बल पुरुषार्थमय सौन्दर्य वृद्धि, सौभाग्य सुखोपभोग भोगने की कामना से रोहिणी व्रत किया करती हैं। यह व्रत किस दिन करना अभिष्ट रहेगा, इसका उल्लेख हम प्रतिवर्ष पाठकों की सुविधा के लिए कर देते हैं। जनश्रुति के अनुसार रोहिणी ने चन्द्रमासे यह वर प्राप्त किया था कि जो भी मेरे आपके सानिध्यदिवसमें व्रत रखकर तारोदय होने पर सविधिपूजनकरके अर्घ्य देकर चन्द्रमा सहित रोहिणी का ध्यान करेगा उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जायें।

रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रो सुधाशनः। विषमस्थानसम्भूतां पीडांदहतुमे विधुः।।

पद्मपुराण में उल्लिखित ऋषिखण्ड के अनुसार भीष्मजी के प्रश्नोत्तर में पुलस्त्यमुनि ने कहा- हे राजन्! इस लोक में रोहिणी चन्द्रशयन नामक व्रत बडा ही उत्तम माना गया है, जिसके करने वालों को अक्षय स्वर्ग सुख की प्राप्ति होती है। इसमें चन्द्रमा के नामोच्चार सहित नारायण का पूजन होता है। सोमवारी पूर्णिमा को रोहिणी नक्षत्र आने से यह सबल योग बनता है।

सिक्खों के गुरुपर्व

(नानकशाही कैलेण्डर)

गुरु	तिथि	माह
श्री गुरु अंगददेव जी	१८	अप्रैल
श्री गुरु तेगबहादुर जी	१८	"
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	२	मई
श्री गुरु अमरदास जी	२३	"
श्री गुरु हरगोविन्द जी	५	जुलाई
श्री गुरु हरकिशन जी	२३	"
श्री गुरु रामदास जी	९	अक्टू.
श्री गुरु नानकदेवजी	१३	नवम्बर
श्री गुरु गोविन्दसिंह जी	५	जनवरी
श्री गुरु हरराय जी	३१	"

(पुरानी परम्परा से)

गुरु	तिथि	माह
श्री गुरु तेगबहादुर जी	२५	अप्रैल
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	२७	"
श्री गुरु अंगददेव जी	६	मई
श्री गुरु अमरदास जी	१८	"
श्री गुरु हरगोविन्द जी	१९	जून
श्री गुरु हरकिशन जी	२७	जुलाई
श्री गुरु रामदास जी	१६	अक्टू.
श्री गुरु नानकदेवजी	१३	नवम्बर
श्री गुरु गोविन्दसिंह जी	३	जनवरी
श्री गुरु हरराय जी	७	फरवरी

आश्विनपितरपक्षकेश्राद्ध

तिथि		तारीख	वार
पूर्णिमा	का श्राद्ध	१५ सित.	सोमवार
प्रतिपदा	का श्राद्ध	१६ सित.	मंगलवार
द्वितीया	का श्राद्ध	१७ सित.	बुधवार
तृतीया	का श्राद्ध	१७ सित.	बुधवार
चतुर्थी	का श्राद्ध	१८ सित.	गुरुवार
पंचमी	का श्राद्ध	१९ सित.	शुक्रवार
षष्ठी	का श्राद्ध	२० सित.	शनिवार
सप्तमी	का श्राद्ध	२१ सित.	रविवार
अष्टमी	का श्राद्ध	२२ सित.	सोमवार
नवमी卐	का श्राद्ध	२३ सित.	मंगलवार
दशमी	का श्राद्ध	२४ सित.	बुधवार
एकादशी	का श्राद्ध	२५ सित.	गुरुवार
द्वादशी	का श्राद्ध	२६ सित.	शुक्रवार
त्रयोदशी	का श्राद्ध	२७ सित.	शनिवार
चतुर्दशी*	का श्राद्ध	२८ सित.	रविवार
मावस	का श्राद्ध	२९ सित.	सोमवार

卐मातृनवमी को सुहागिन (मृतक) स्त्रियों का श्राद्ध विशेषरूपसे किया जाता है। *विष, जलाग्नि, अस्त्र, शस्त्र, चोट-फेंट, विषाक्त जीव-जन्तुओंके दंश(काटने) एवं अपमृत्यु वालोंका श्राद्ध चतुर्दशी तिथि में होता है। भले ही उनकी मृत्यु चाहे जिस तिथि में हुई हो। चतुर्दशीमें सामान्य मृत्यु वालोंका श्राद्ध सर्वपितृ अमावस्या वाले दिन करना चाहिए। पिशाचमोचन (मुक्तियर्थ) श्राद्ध मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी में किया जाता है।

नोटः- मृत्यु तिथि पर होने वाले श्राद्ध को अपराह्णकाल में करने की शास्त्राज्ञा है। कभी- कभी ह्रास वृद्धि के कारण अभिष्ट तिथि दो दिन अपराह्ण को स्पर्श कर लेती है। उस स्थितिमें सुविधानुसार श्राद्ध पूर्वापर दिन कर सकते हैं।

जैन पर्वोत्सव

पर्व	तारीख
दशलक्षणपर्वप्रारम्भ (२००८)	१० अप्रैल
आ.भिक्षु अभिनिष्क्रमण	१४ "
श्री महावीर जयंती	१८ "
श्री महावीर केवल ज्ञान	१४ मई
श्री महावीर च्यवन	८ जुलाई
अष्टाह्निका व्रत प्रारम्भ	११ "
जैनमुनीनां चातुर्मास प्रारम्भ	१७ "
तेरापन्थ स्थापना दिवस	१८ "
श्री जयाचार्य नि.दि.पर्युषण प्रा.	२८ अगस्त
जैन संवत्सरी क्षमावाणीपर्व	४ सित.
पर्युषण प्रा. दशलक्षणपर्व प्रा.	४ "
श्री कालूनिर्वाण दिवस	५ "
आ.श्रीतुलसी पट्टारोहण	९ "
आ.श्रीभिक्षु निर्वाणदिवस	१३ "
श्री महावीर निर्वाण	२८ अक्टू.
आ.श्रीतुलसी जन्म	३० "
ज्ञानपंचमी जैन	३ नवम्बर
अष्टाह्निका प्रारम्भ	६ "
चौमासी चौदस जैन	१२ "
जैन चातुर्मास समाप्त	१३ "
श्री महावीर दीक्षा दिवस	२२ "
आ.तुलसी दीक्षा दिवस	१६ दिस.
श्रीपार्श्वनाथ चन्द्रप्रभुजयंती	२१ "
मेरुत्रयोदशीजैन (२००९)	२३ जनवरी
दसलक्षण पर्व प्रारम्भ	३१ "
मर्यादा महोत्सव जैन	२ फरवरी
अष्टाह्निका प्रारम्भ	४ मार्च

क्रिश्चियन त्योहार

त्योहार	तारीख
ईसा जयंती बड़ादिन	२५ दिस.
न्यू-ईयर-इव	३१ "
ईसाई नववर्ष प्रारम्भ (२००९)	१ जन.
सेंट वेलंटाइन डे	१४ फर.

मुस्लिम त्योहार

त्योहार	तारीख
ग्यारहवींशरीफ	१८ अप्रैल
उर्स मेला अजमेर प्रा.	५ जुला.
उर्स मेला बहरायच	१७ "
शब्बे मिराज	३१ "
शब्बेरात यवनोत्सव	१६ अग.
पाक रोजे शुरु	२ सित.
सहादते हजरतअली	२२ "
इबादतरात मुस.	२३ "
जुमातुल विदा	२६ "
शब-ए-कद्र	२७ "
ईदुल फितर (मीठीईद)	२ अक्टू.
उर्सअमीरखुसरो दिल्ली	१८ "
हज्ज	८ दिस.
ईदुल जुहा (ईद)	९ "
मुहर्रम हिजरी १४३०प्रा.	३० "
कत्लरात मुस.	७ जन.
मुहर्रम (ताजिया)	८ "
चेहल्लुम मुस.	१६ फर.
सहादते इमामहसन	२४ "
बाराबफात ईद ए मिलाद	१० मार्च
ईद ए मौलाद मुस.	१५ "
उर्स निजामुद्दीन	१७ "

दशावतार जयन्तियाँ

जयन्ती	तारीख
श्री मत्स्यजयन्ती (२००८)	८ अप्रैल
श्री रामनवमी जन्मोत्सव	१४ "
श्री परशुराम जयन्ती	७ मई
श्री नृसिंह जयन्ती	१८ "
श्री कूर्म जयन्ती	१८ "
श्री बौद्धावतार जयन्ती	१९ "
श्री कल्कि जयन्ती	६ अगस्त
श्री कृष्ण जन्माष्टमी	२३ "
श्री वराहवतार जयन्ती	२ सित.
श्री वामन जयन्ती	१२ "

दसमहाविद्या जयन्तियाँ

जयन्ती	तारीख	वार
श्री तारा जयन्ती	१३ अप्रैल	रवि
श्री मातङ्गी जयन्ती	८ मई	गुरु
श्री बगलामुखी जयन्ती	१२ "	सोम
श्री छिन्नमस्ता जयन्ती	१७ "	शनि
श्री धूमावती जयन्ती	११ जून	बुध
श्री आद्यकाली जयन्ती.	२४ अग.	रवि
श्री भुवनेश्वरि जयन्ती	१२ सित.	शुक्र
श्री कमला जयन्ती	२८ अक्टू.	मंगल
श्री त्रिपुरभैरव जयन्ती	१२ दिस.	शुक्र
श्री ललिता जयन्ती	९ फर.	सोम

द्वादशसिद्धिविद्याजयन्तियाँ

जयन्ती	तारीख	वार
श्रीकुब्जिका जयन्ती	३ मई	शनि
श्रीसिद्धिलक्ष्मी जयन्ती	१७ "	शनि
श्रीचण्डिका जयन्ती	१९ "	सोम
श्रीबटुकभैरव जयन्ती	१७ जून	मंगल
श्रीपार्वती जयन्ती	१० जुलाई	गुरु
श्रीदक्षिणमूर्ति जयन्ती	१८ "	शुक्र
श्रीगायत्री जयन्ती	१६ अगस्त	शनि
श्रीविन्ध्यवासिनीजयन्ती	२३ "	शनि
श्रीअपराजिता जयन्ती	९ अक्टू.	गुरु
श्रीबाला जयन्ती	२६ नव.	बुध
श्रीअन्नपूर्णा जयन्ती	१२ दिस.	शुक्र
श्रीसरस्वती जयन्ती	३१ जन.	शनि

नोटः-सिद्धिविद्याओंमें से कुब्जिका और पार्वती तो पश्चिमाम्बाय हैं। अन्नपूर्णा व सरस्वती पूर्वाम्बाय है। चण्डिका उत्तराम्बाय और सिद्धि लक्ष्मी, बटुक भैरवी, दक्षिण मूर्ति, गायत्री, विन्ध्यवासिनी, अपराजिता और बाला, ये ऊर्ध्वाम्बाय कहलाती हैं। अभिष्टकार्य सिद्ध्यर्थ उपासना करें।

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना हेतु शुभ समय

योग	तारीख
रामनवमीस्मार्त्त, रविपुष्यामृतयोग	१३ अप्रैल
श्रीहनुमज्जयंती बालाजीजयंती	२० "
सोमवती मावस पर्वदिन	५ मई
अक्षयतृतीया, शुभयोग	७ "
देवी बगलामुखी जयंती	१२ "
देवी चण्डिका जयंती	१९ "
श्रीगङ्गादशहरा, बटुकभैरवज.	१३ जून
निर्जला११, संक्रांति, स.सि.योग	१४ "
रथोत्सवपुरी, मनोरथ२, पुष्य	४जुलाई
गुरुपूर्णिमा दक्षिणमूर्तिजयंती	१८ "
कालाष्टमी स.सि.योग	२५ "
मास शिवरात्रि, पुनर्वसु	३० "
पुष्यभे अमापुण्य, सूर्यग्रहण	१अगस्त
श्रीदुर्गाष्टमी शुभयोगे	९ "
संक्रांति-पूर्णिमाचन्द्रग्रहण, गायत्रीज.	१६ "
भीमचण्डी विन्ध्याजयंती	१८ "
आद्यकालीजयंती, रोहिण्यां	२४ "
शनैश्चरी मावस पर्वदिन	३० "
शिवाचतुर्थी, रवियोगश्रेष्ठ	३ सित.
श्रीभुवनेश्वरिज.स.सि.योग	१२ "
सोमवतीमावस पर्वदिन	२९ "
भद्रकालीजयंती	७अक्टू.
विजया १० अपराजितापूजा	९ "
देवीशाकम्भरी दर्शन तिथि	१३ "
शरत्पूर्णिमा भद्रोत्तरं	१४ "
कालाष्टमी पुष्यनक्षत्रे	२१ "
श्री कमला जयंती	२८ "
प्रबोधिनी ११, स.सि.योग	९ नव.

महाकालभैरवाष्टमी २० नव.
श्री बालाजी जयंती २६ "
श्री भुवनेश्वरि अन्नपूर्णाजयंती १२ दिस.
संक्रांति पुष्यनक्षत्रे १५ "
शनैश्चरी मावस पर्वदिन २७ "
सकट संक्रांति समायोगेन १४ जन.
सोमोती मावस, सूर्यग्रहण २६ "
श्री सरस्वती जयंती ३१ "
श्रीगणेशचतुर्थी संक्रांति १२ फर.
महाशिवरात्रि स.सि.योग २३ "
रविपुष्यामृतयोग, स.सि.योग ८ मार्च
दारुणरात्रि हुताशनी १० "
श्रीगणेशचतुर्थी संक्रांति १४ "

कालसर्प योग का विवरण संवत् २०६५

जब राशिचक्र में राहु अथवा केतु के एक ओर सभी ग्रह आ जाते हैं, तब कालसर्प नामक योग बनता है, जिसे जन्मकुण्डली में सर्वाधिक दुःखदाई योग कहा है।

५ अगस्त ८।३० से
१६ अग. २६।१ तक
२९ अगस्त ५।३५ से
१३ सित. १०।२३ तक
२५ सित. १०।४४ से
१० अक्टू. १३।५८ तक
२२ अक्टू. १४।३० से
६ नव. २०।०० तक
१९ नव. १२।३० से
३ दिस. २३।२० तक



महापुरुषोंके जन्मदिन

डा. हेडगेवार जयंती(२००८) ६ अप्रैल
श्री गौत्तम जयंती ६ "
श्री झूलेलाल जयंती ७ "
डा.अम्बेडकर जयंती १४ "
सन्त पीपा जयंती २० "
बाबू कुंवर जयंती (बिहार) २३ "
श्री बल्लभाचार्य जयंती २ मई
श्रीशुकदेव मुनि जयंती ५ "
देवदामोदर तिथि असम ६ "
वीर शिवाजी जयंती ७ "
कवि टैगोर जयंती ७ "
आद्य श्रीशंकराचार्य ज. ९ "
श्रीसूरदास जयंती ९ "
श्री रामानुजाचार्य जयंती १० "
देवर्षि नारद जयंती २२ "
महाराणा प्रताप जयंती ६ जून
सन्त कबीर जयंती १८ "
अहिल्याबाई होल्कर जयंती २६ "
स्वा.कल्याणदेवनिर्वाणशुक्रताल १३ जुलाई
लोकमान्य तिलक जयंती २३ "
स्वामी श्रीकरपात्रीजीमहाराज ३ अग.
मानसकवि तुलसीदासजयंती ८ "
सन्त ज्ञानेश्वर,जम्भेश्वर जयंती २४ "
मदर टैरेसा जयंती २७ "
सन्त सुथरेशाह जयंती ३० "
डा. राधाकृष्ण जयंती ५ सित.
स्वामी हरिदास-शिवानन्द ज. ८ "
महर्षि दधीच जयंती ८ "
गो.वल्लभपंत जयंती ९ "
बाबा रामदेव जयंती १० "
श्री विनोबाभावे जयंती ११ "
श्री विश्वेश्वरैया जयंती १५ सित.
शहीद भगतसिंह जयंती २८ "
श्री अग्रसेन जयंती ३० "
श्रीगांधीजीव शास्त्रीजीज. २ अक्टू.
श्रीमाधवाचार्य जयंती ९ "
महर्षि बाल्मीक जयंती १४ "
सरदार पटेल जयंती १७ "
स्वामी रामतीर्थ जन्म+मोक्ष २७ "
कविकुल कालीदास जयंती १०नवम्बर
वीर वैरागी जयंती ११ "
श्री निम्बार्काचार्य जयंती १३ "
पं. जवाहरलाल नेहरु जयंती १४ "
बाबा सत्यसांई जयंती २३ "
नरसी मेहता जयंती ५ दिस.
श्रीघालदास जयंती ९ "
श्री दत्तात्रेय जयंती १२ "
पं.मदनमोहनमालवीयजयंती २५ "
श्रीविवेकानन्द,रामानुजाचार्यज. १७जनवरी
श्री सुभाष चन्द्र बोस जयंती २३ "
लाला लाजपतराय जयंती २८ "
बाबा लालदयाल जयंती २८ "
श्री देवनारायण जयंती २ फरवरी
श्री रामचरण स्नेही जयंती ८ "
भक्त रविदास जयंती ९ "
श्रीदीनबन्धु एण्ड्रयूज जयंती १२ "
समर्थ गुरु रामदास जयंती १८ "
महर्षि दयानन्द जयंती १९ "
श्रीरामकृष्णपरमहंसजयंती २७ "
पं.लेखरामवीर तृतीया २८ "
श्री दादूदयाल जयंती ४ मार्च
चैतन्य महाप्रभु जयंती ११ "
श्री गौतम जयंती १२ "
सन्त तुकाराम जयंती १२ "

ग्रहों की युति-प्रतियुतियाँ

सूर्य से भौम का त्रिकोण योग ७ अप्रैल
चन्द्र से भौम की युति १२ "
सूर्य बुध तथा चन्द्र शनि युति १६ "
भौम से गुरु का प्रतियोग २४ "
चन्द्र से गुरु की युति २७ "
चन्द्र से शुक्र की युति ५ मई
चन्द्र से बुध की युति ७ "
चन्द्र से शनि की युति १३ "
सूर्य बुध शुक्र का योग नेष्ट २१ "
चन्द्र से राहु की युति २७ "
चन्द्र+शुक्र की युति ३ जून
सूर्य से बुध की युति ८ "
सूर्य+शुक्र की युति ९ "
चन्द्र से बुध की युति १७ "
चन्द्र से राहु की युति २३ "
गुरु शुक्र का प्रतियोग नेष्ट ३ जुलाई
सूर्य गुरु का प्रतियोग ९ "
मंगल+शनि की युति नेष्ट १० "
चार ग्रह संयोग युद्धभय २६ "
सूर्य+बुध की युति २९ "
चन्द्र से शुक्र की युति २ अग.
चन्द्र से शनि की युति ३ "
चन्द्र से मंगल की युति ४ "
चन्द्र से गुरु की युति १३ "
शुक्र से शनि की युति १४ "
चन्द्र+शनि की युति ३१ "
सूर्य से शनि की युति नेष्ट ४ सित.
मंगल से बुध की युति ६ "
भौम से गुरु का ९०डिग्रीकोण ८ "
मंगल+शुक्र की युति १० "
सूर्य+चन्द्र की युति २९ "
चन्द्र से मंगल की युति १ अक्टू.
सूर्य से गुरु का ९०डिग्रीकोण ६ "
सूर्य से बुध की युति ७ "
चन्द्र भौम का प्रतियोग १६ अक्टू.
चन्द्र से मंगल की युति ३० "
चन्द्र+शुक्र की युति १ नव.
चन्द्र से राहु की युति ६ "
चन्द्र से शनि की युति २१ "
चन्द्र से बुध की युति २७ "
सूर्य+बुध की युति २८ "
ग्रहसंयोग युद्धभय ३० "
गुरु से शुक्र की युति १ दिस.
सूर्य से मंगल की युति ५ "
गुरु चन्द्र प्रतियोग १५ "
चन्द्र+बुध की युति २९ "
बुध से गुरु की युति ३१ "
चन्द्र+हर्शल युति २ जन.
चार ग्रह संयोग युद्धभय १५ "
सूर्य+बुध की युति २० "
सूर्य से गुरु की युति २४ "
शुक्र शनि का प्रतियोग २५ "
चन्द्र से शुक्र की युति ३० "
पडग्रही योग युद्धभय ७ फर.
सूर्य+नेपच्यून युति १२ "
मंगल से गुरु की युति १७ "
चन्द्र से गुरु की युति २३ "
बुध+गुरु की युति २४ "
चन्द्र से शुक्र की युति २८ "
मंगल से बुध की युति २ मार्च
चन्द्र+शनि की युति ११ "
बुध शनि का प्रतियोग १९ "
चन्द्र से गुरु की युति २२ "
सूर्य से शुक्र की युति २७ "

नोट:- प्रति अमावस्या में सूर्य+चन्द्र की युति होती है। पूर्णिमा में प्रतियोग प्रभावकारी रहता है। अन्तरिक्ष में जब-जब ग्रहों के अंशसाम्य योग बनते हैं तब धरा पर अनेक तरह के उत्पात हुआ करते हैं।

ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः

देश में होने वाले मेला, दशहरा, अन्यान्य उत्सव, सम्वत् २०६५

मेला / उत्सव	तिथि
मेला चौमानानकसर(पंजाब)	६अप्रैल
"आर्यसमाजस्थापन,डा.हेडगेवारज.	६ "
" श्रीझूलेलालज. सिंधीसम्प्रदाय	७ "
" गणगौरपूजन सवारी जयपुर	८ "
" सरहुल (विहार)	८ "
" माईसरखाना अमृतसर(पंजाब)	११ "
" मनसादेवी चण्डीगढ, वैशाखी	१३ "
" बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर)	१३ "
" ज्वालामुखी(हरचोवालगुरदासपुर)	१३ "
" श्रीरामनवमीजन्मोत्सव सर्वत्र	१४ "
" ब्राह्मण आश्रम नारनौल	१४ "
" कशाधा नहयाणीसह कुल्लूप्रा.	१५ "
" माताकांसादेवी (कांसलरोपड़)प्रा.	१८ "
" श्रीमहावीरजयंती२६०९वीं जैन	१८ "
" देवी मेला हथीहरा कुरुक्षेत्र	१९ "
" देवबन्द देवीकुण्ड सहारनपुर	१९ "
" सालासरहनुमान-बालाजी(राज)	२० "
" मानकपुर शरीफ (पंजाब)	२० "
" पीपलजातर प्रा.३दिन कुल्लू	२८ "
" पिंजौर (हरि.तथा अवन्तिकापुरी)	५ मई
" देवदामोदरतिथि असम	६ "
" मनीआऊटरसिराजप्रा.कुल्लू	७ "
"समागमहरिहरघाट,मणिकर्णकुल्लू	१३ "
" डूंगरीजातर मनाली २ दिन प्रा.	१४ "
" बंजार ४ दिन प्रारम्भ कुल्लू	१४ "
" शाढ़ीजातर प्रा.(नगरहिमाचल)	१८ "
" क्षीरभवानी (कश्मीर)	११ जून
" श्रीगङ्गादशहरा मेला (हरिद्वार)	१३ "
" सापोरयात्रा धारलदा(ऊधमपुर)	१४ "
" पाण्डवोंकावाडीमे.सरयांझसोलन	१४ "
" पंचकोसी यात्रा काशी	१४ "
" भून्तर कुल्लू ३ दिन हिमाचल	१४ "
" जोड़मेला (ढींढ़सा) पंजाब	१४ "
"खाटूश्याम(राज.),मे.पीपलू(ऊना)	१४ "

मेला / उत्सव	तिथि
मेला नौवेंगुरु बहेरभटिंडा (पंजाब)	१४ जून
" शुद्ध महादेवयात्रा (ऊधमपुर)	१८ "
" श्री जगन्नाथजी रथोत्सव (पुरी)	४जुलाई
" अजमेरका उर्स मेला प्रारम्भ	५ "
" वरसीबाबासंतोषसिंहप्रा.नानकसर	९ "
" बड़ुसाहिब प्रारम्भ (हिमाचल)	९ "
" शरीफभवानी (जम्मू कश्मीर)	११ "
" दादा मेला अजमेर प्रारम्भ	१३ "
" उर्स मेला बहरायच	१७ "
" परिक्रमा नैमिषारण्य	१८ "
" गुरुपूर्णिमा नदीपारआश्रम कुराली	१८ "
" रूद्राभिषेक पुरामहादेव मेरठ	३० "
" नीलकंठमहादेव (उत्तरांचल)	३० "
" कुरुक्षेत्र सूर्यग्रहण	१ अग.
" ब.स.बा.प्यारासिंहचमकौरसाहिब	५ "
" नैनादेवी,चिन्तपूर्णी (हिमाचल)	९ "
" श्रीअमरनाथ दर्शन (कश्मीर)	१६ "
" बंगवाल उत्सव (उत्तरांचल)	१६ "
" कजरीप्रतियोगिता (विहार)	१९ "
" द्रौणमेला दनकौरका प्रारम्भ.	२३ "
" श्रीकृष्णजन्माष्टमी (मथुरा)	२४ "
" कैलाश यात्रा (कश्मीर)	२९ "
"सुथरेशाह(दिल्ली),वीरजन्मोत्सवजैन	३० "
" श्री गुसांईआणां (कुराली)	१ सित.
" रुणीचामेला जैसलमेर (राजस्थान)	१ "
" श्रीगणेशोत्सव (मण्डी हिमाचल)	३ "
" श्रीगणेशजन्मोत्सव (महाराष्ट्र)	३ "
" पट्ट प्रारम्भ (कश्मीर)	४ "
" मणिमहेश चम्बा (हिमाचल)	८ "
" श्रीचन्दनवमी उत्सव उदासीन सं.	९ "
"नवलदुर्गमेला ग्रामदेवजी(राजस्थान)	१० "
" फूलडोल चारभुजाजी(मेवाड़)	११ "
" वामनद्वादशी(अम्बाला पटियाला)	१२ "
" ओनमपर्व केरल तमिलनाडू	१२ "

मेला / उत्सव	तिथि
मेला बाबासोढ़ल व छपार (पंजाब)	१४ सित.
" गोयन्दवाल (अमृतसर)	१५ "
" श्रीआशापति यात्रा (कश्मीर)	२८ "
" फल्गु पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	२९ "
"पितरविसर्जनश्राद्धमे.गयाजी-पिंडारा	२९ "
" ज्वालामुखीतारादेवी (हिमाचल)	७अक्टू.
" हरचोवाल गुरदासपुर (पंजाब)	७ "
" दशहरा कुल्लू (हिमाचल)	९ "
" पीरभीखनशाह(घड़ामपटियाला)	११ "
" शाकम्भरीदेवी (सहारनपुर)	१३ "
" देवी हथीहरा कैथल (कुरुक्षेत्र)	१३ "
" भ.श्रीहरिओमजी मानकपुरशरीफ	२२ "
" दीपावली अमृतसर	२८ "
" बटेश्वर का प्रारम्भ (आगरा)	३० "
" छठिपर्व प्रा. (विहार)	२ नव.
" रेणुका नाहन (हिमाचल)	९ "
" खाटूश्यामजी (राज.)	१० "
" बाबारुद्रानारी ऊना (हिमाचल)	१० "
" बीर वैरागी नकोदर(पंजाब)	११ "
" पुष्करराज रेणुकातीर्थ (राजस्थान)	१३ "
" रामतीर्थ कपालमोचन (हरियाणा)	१३ "
" कार्तिकीपूर्णिमा स्नान गढ़गंगा	१३ "
" ब्राह्मणवास आश्रम नारनौल	२० "
" पुरमण्डल देविकास्नान(जम्मू)	२६ "
" नरसीमेहता जयंती	५ दिस.
"बाबावैशाखसिंहदुदेहरसाहब(जम्मू)	५ "
" श्रीघालदासज.रामधामखेड़ापा	९ "
" कपर्दीश्वरयात्रा दर्शन (काशी)	११ "
" जोड मेला फतेहगढ़साहिब(पं)	२६ "
" संगीत बाबाहरवल्लभ(जालंधर)	२७ "
" वकुला मावस पर्वदिन (उड़ीसा)	२७ "
" हत्तापनाशन स्नान (मद्रास)	२७
" सतगुरुप्रकाशोत्सव (२००९)	२जनवरी
" शाम्बदशमी (उड़ीसा)	६ "

मेला / उत्सव	तिथि
मेला मढ़ारदेवी सतारा(महा.)	११ जन.
" लोहड़ी (दाऊबिदरख रोपड़)	१२ "
" मुक्तसर (पंजाब)	१४ "
" माघविहू पोंगलपर्व केरला	१५ "
" मेरू त्रयोदशी जैनोत्सव	२३ "
" मौनीमावस(प्रयागराज व हरिद्वार)	२६ "
" बाबारामदेव, लालदयालजयंती	२८ "
" मस्तुआणा (पंजाब)	२ फर.
" भैनी ग्यारस (बंगाल)	६ "
" बैणेश्वरमहादेव डूंगरपुर(राज.)	६ "
" पंचखण्डपीठविराटनगर(राज.)	७ "
" जितेन्द्र रथ यात्रा जैन	८ "
" माघीपूर्णिमा स्नानमेला हरिद्वार	९ "
" महाशिवरात्रि (मण्डी हिमाचल)	२३ "
" मेला राठौडा रामपुर (उप्र.)	२३ "
" नीलकण्ठमहादेव उत्तरांचल	२३ "
" ऋषिबोधोत्सव आर्यसमाज	२३ "
" खाटूश्यामजी (राजस्थान)	७ मार्च
" फूलडोलोत्सव शाहपुरा (मेवाड़)	७ "
" होला आनन्दपुरसाहिब (पंजाब)	११ "
" पंखामेला झज्जर(हरियाणा)	११ "
" गुरु रामसहाय (देहरादून)	१५ "
" बीरमदास बधोछी (पटियाला)	१५ "
" शीतलामाता (कुराली)	१८ "
" केसरियामेवाड़, केलादेवीकरौली	१९ "
" नौचन्दी मेरठ (उत्तरप्रदेश)	२२ "
" पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	२५ "

नोट: देशकाल परिस्थित्यानुसार कभी-कभी पर्वोत्सवोंकी निर्धारित तिथियोंमें राज्य सरकारों के स्थानीय प्रबन्धकों को परिवर्तन करनेके लिए बाध्य होना पड़ जाता है,सो उसका उत्तरदायित्व सम्पादक पर नहीं, पाठकोंसे- अपने यहाँ मान्य मेला उत्सवादि विवरण पंचांग कार्यालय को भेज दें, जिससे उन्हें सूचीमें शामिल कर सकें।

ब्रजक्षेत्र के खास उत्सव

उत्सव	तिथि
पंचांग श्रवण श्रीबांकेबिहारीजी महाराज वृन्दावन	६अप्रैल
सभी मंदिरों के समय परिवर्तन	६ "
श्रीयमुनाजी उत्सव वृन्दावन	११ "
देवी मेला नरीसेमरी मथुरा	१३ "
श्रीकेशवेश्वरमें जलधाराघटस्था.	१३ "
फूलडोल११ फूलबंगलाप्रा.वृन्दावन	१६ "
बन्दी-आनन्दी का मेला मथुरा	१९ "
श्रीद्वारिकाधीशजीछप्पनभोगमथुरा	२० "
चरणदर्शन सर्वाङ्ग चन्दन लेपन श्रीबांकेबिहारीजी मंदिर वृन्दावन	७ मई
वृन्दावन परिक्रमा वनविहार	२२ "
श्रीकृष्णद्वारा रुक्मिणीहरणलीला	१४ जून
श्रीजगन्नाथजीस्नानयात्रागु.सेवावृ.	१८ "
श्रीजगन्नाथजी रथयात्रा	४जुला.
मुडियापूनो गोवर्धन परिक्रमा	१८ "
श्रीकेशवेश्वरमहादेवबंगलादर्शन	२१ "
श्रावण के प्रत्येक सोमवारमें	"
श्रीविहारीजी महाराज स्वर्ण हिंडोले में विराजें वृन्दावन	४अग.
विशाल मेला जेतगांव मथुरा	६ "
छटीकरा मेला मथुरा	९ "
महारासलीला उत्सव वृन्दावन	१६ "
श्रीदाऊजी-मातारेवतीकाभव्यश्रृंगार	१६ "
१०००बत्तीएवंनामोच्चार आरती	१६ "
श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतोत्सव मथुरा	२४ "
नन्दोत्सव नन्दगांव बरसाना	२५ "
देवछटिमेला ब्रजमण्डल व गौमत	५सित.
श्रीराधिकाजी जन्मोत्सव बरसाना	८ "
मेला गरुड़गोविन्द छटीकरा	८ "
मटकीफोर डोंगालीला बरसाना	१३ "
श्रीबिहारीजी कटिकाछनी मुकुट-मुरली धारण वृन्दावन	१३अक्टू.

महारासपूर्णिमा, शरद्पूर्णिमाव्रत १४ अक्टू.
८४ कोसकी ब्रजपरिक्रमा शुरु १४ "
श्रीराधाकुण्ड में स्नान महोत्सव २१ "
अन्नकूट गोवर्धन पूजा गोवर्धन २९ "
मोक्षप्राप्तियर्थ यमुनास्नान मथुरा ३० "
जुगलजोड़ी परिक्रमा वृन्दावन ७ नव.
कंशवधलीला चतुर्वेदीय प.मथुरा ८ "
तीनवनपरिक्रमा मथुरा वृन्दावन ९ "
गरुड़गोविन्द
सभी मंदिर समय दर्शन परिवर्तन १४ "
श्रीबांकेबिहारीजी म.प्रादुर्भावउत्सव ३ दिस.
श्रीविट्टल विपुल उत्सव ३ "
स्वा.हरिदासजीकीसवारीनिधिवनसे ३ "
५६भोगबलदेवजी गोपमाससमाप्त १२ "
छप्पनभोग, मे.गरुड़गोविन्द मथुरा १ जन.
श्रीठाकुरजी तिलकभोग स्वीकारें २१ "
दुर्वासाऋषि मेला मथुरा ३१ "
श्रीमद्भागवतभवन प्रतिष्ठा दि.१४ फर.
श्रीकृष्णजन्मस्थान मथुरा
लट्ठमारहोरी बरसाना में ५ मार्च
लट्ठमारहोरी नन्दगांव में ६ "
लट्ठमारहोली जन्मभूमि.मथुरा ७ "
धार्मिक मेला मानसरोवर वृन्दावन ७ "
होलीमहोत्सवप्रा.रमणरेती वृन्दावन ९ "
पुजारीजी का होलीमें से निकलना १० "
फालेन गांव (कोसी)
महारासलीला स्वामीरामस्वरुपजी १० "
डोलोत्सवराधाबल्लभ-बांकेबिहारी ११ "
श्रीदाऊजीके मन्दिर में हुरंगा १२ "
छोटी आतिशबाजी मंदिर श्री १४ "
रङ्गनाथजी वृन्दावन
रङ्गोत्सव श्रीराधाबल्लभ वृन्दावन १५ "
भण्डारा छटीकरा मथुरा में १५ "
श्रीरङ्गनाथजीरथोत्सव मेलावृन्दावन २० "
बड़ीआतिशबाजी रङ्गनाथजीवृन्दा. २१ "

निम्नलिखित शहरों में संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी वाले दिन चन्द्रोदय का समय

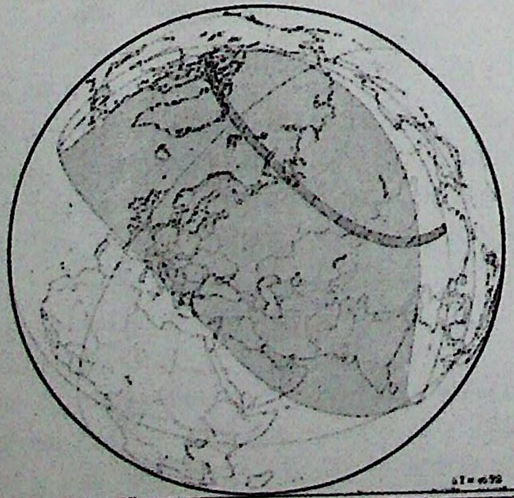
	२४अप्रैल घं. मि.	२३ मई घं. मि.	२२ जून घं. मि.	२१जुलाई घं. मि.	२०अग. घं. मि.	१८सित. घं. मि.	१७अक्टू. घं. मि.	१६नव. घं. मि.	१५दिस. घं. मि.	१४ जन. घं. मि.	१२ फर. घं. मि.	१४ मार्च घं. मि.
अयोध्या	२२।१२	२१।४६	२१।४४	२०।५२	२०।३२	१९।४८	१९।१८	२०।१४	२०।१३	२१।०८	२०।५०	२१।३०
अलवर	२२।३९	२२।१२	२२।०९	२१।१७	२०।५५	२०।१०	१९।४०	२०।३६	२०।३६	२१।३२	२१।१४	२१।५६
अजमेर	२२।४४	२२।१७	२२।१६	२१।२४	२१।०३	२०।२०	१९।५०	२०।४७	२०।४६	२१।४१	२१।२२	२२।०२
अमृतसर	२२।५८	२२।३१	२२।२३	२१।२७	२०।५८	२०।१०	१९।३६	२०।३३	२०।३५	२१।३८	२१।२४	२२।११
अलीगढ़	२२।३२	२२।०६	२२।०३	२१।१०	२०।४७	२०।०२	१९।३२	२०।२८	२०।२८	२१।२५	२१।०७	२१।४९
आगरा	२२।३१	२२।०५	२२।०२	२१।१०	२०।४८	२०।०३	१९।३३	२०।३०	२०।२९	२१।२५	२१।०७	२१।४८
इटावा	२२।२५	२१।५९	२१।५७	२१।०५	२०।४४	२०।००	१९।३१	२०।२७	२०।२६	२१।२१	२१।०३	२१।४३
इन्दौर	२२।२९	२२।०३	२२।०५	२१।१७	२१।०२	२०।२२	१९।५५	२०।५२	२०।४८	२१।३७	२१।१५	२१।५०
कलकत्ता	२१।३६	२१।११	२१।१३	२०।२५	२०।१०	१९।३०	१९।०३	१९।५९	१९।५५	२०।४४	२०।२३	२०।५७
कानपुर	२२।२०	२१।५४	२१।५२	२१।००	२०।४०	१९।५६	१९।२६	२०।२३	२०।२२	२१।१६	२०।५८	२१।३८
कोटा	२२।३६	२२।१०	२२।०९	२१।१८	२१।००	२०।१७	१९।४८	२०।४५	२०।४३	२१।३६	२१।१६	२१।५५
खीरीलखीमपुर	२२।११	२१।४५	२१।४५	२०।५४	२०।३६	१९।५३	१९।२४	२०।२०	२०।१९	२१।११	२०।५२	२१।३०
ग्वालियर	२२।२८	२२।०२	२२।००	२१।०९	२०।४९	२०।०५	१९।३५	२०।३२	२०।३१	२१।२५	२१।०६	२१।४६
जबलपुर	२२।१४	२१।४८	२१।५०	२१।०१	२०।४५	२०।०४	१९।३७	२०।३३	२०।३०	२१।२०	२०।५९	२१।३४
जयपुर	२२।४०	२२।१४	२२।१२	२१।२०	२०।५९	२०।१५	१९।४५	२०।४२	२०।४१	२१।३६	२१।१७	२१।५७
जोधपुर	२२।४९	२२।२३	२२।२१	२१।२९	२१।०९	२०।२५	१९।५६	२०।५३	२०।५२	२१।४६	२१।२७	२२।०७
झुंझनू	२२।४५	२२।१८	२२।१५	२१।२१	२०।५८	२०।१३	१९।४२	२०।३९	२०।३९	२१।३६	२१।१९	२२।०१
चंडीगढ़	२२।४७	२२।२०	२२।१४	२१।१८	२०।५१	२०।०३	१९।३१	२०।२७	२०।२९	२१।३०	२१।१६	२२।०१
दिल्ली	२२।३९	२२।१२	२२।०८	२१।१३	२०।४९	२०।०३	१९।३२	२०।३०	२०।३०	२१।२७	२१।११	२१।५४
बम्बई	२२।३२	२२।०७	२२।१२	२१।२७	२१।१८	२०।४०	२०।१६	२१।१३	२१।०७	२१।५१	२१।२६	२१।५६
बरेली	२२।२९	२२।०३	२१।५९	२१।०५	२०।४२	१९।५६	१९।२५	२०।२२	२०।२२	२१।२०	२१।०३	२१।४५
बिलासपुर	२२।००	२१।३५	२१।३८	२०।५०	२०।३५	१९।५५	१९।२९	२०।२५	२०।२१	२१।१०	२०।४८	२१।२२
बीकानेर	२२।५४	२२।२७	२२।२३	२१।३०	२१।०७	२०।२१	१९।५१	२०।४७	२०।४८	२१।४५	२१।२८	२२।१०
भोपाल	२२।२३	२१।५८	२१।५९	२१।१०	२०।५४	२०।१३	१९।४६	२०।४३	२०।४०	२१।३०	२१।०८	२१।४४
मेरठ	२२।३९	२२।१२	२२।०८	२१।१३	२०।४९	२०।०२	१९।३१	२०।२७	२०।२८	२१।२७	२१।११	२१।५४
रोहतक	२२।४२	२२।१५	२२।११	२१।१७	२०।५३	२०।०७	१९।३६	२०।३३	२०।३३	२१।३१	२१।१५	२१।५८
वाराणसी	२२।०५	२१।३९	२१।३९	२०।४८	२०।२९	१९।४६	१९।१७	२०।१४	२०।१२	२१।०५	२०।४६	२१।२४
लखनऊ	२२।१९	२१।५३	२१।५१	२०।५९	२०।३८	१९।५४	१९।२४	२०।२१	२०।२०	२१।१५	२०।५७	२१।३७
सिलचर	२१।२४	२०।५८	२०।५९	२०।०९	१९।५१	१९।०८	१८।४०	१९।३६	१९।३४	२०।२६	२०।०६	२०।४३
सूरत	२२।३८	२२।१२	२२।१६	२१।२९	२१।१६	२०।३६	२०।११	२१।०७	२१।०३	२१।५०	२१।२७	२२।००
हरिद्वार	२२।३८	२२।११	२२।०६	२१।११	२०।४५	१९।५८	१९।२७	२०।२३	२०।२४	२१।२४	२१।०८	२१।५३
हिसार	२२।४८	२२।२१	२२।१६	२१।२२	२०।५७	२०।१०	१९।३९	२०।३५	२०।३६	२१।३५	२१।१९	२२।०३

ग्रहण विवरण

६ अप्रैल २००८ से २६ मार्च २००९ तक विक्रमाब्द २०६५ में समस्त भूमण्डल पर केवल चार ग्रहण होंगे। दो सूर्यग्रहण तथा एक चन्द्रग्रहण दृश्य होगा। एक चन्द्रग्रहण उपछायी (Penumbral) होने से दृश्य नही होगा विवरण नीचे लिखे अनुसार जानें।

भारत में खण्डग्रास सूर्यग्रहण

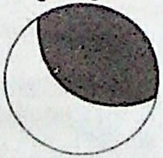
१ अगस्त सन् २००८ श्रावण कृष्ण अमावस्या शुक्रवार के दिन सायं ४ बजकर ६ मिनट से शुरु होने वाले अर्धाधिवय सूर्यग्रहण को भारत तथा यूरोप, अरेबिया(अरबदेश), चीन, रूस, श्रीलंका, उत्तरीध्रुव, स्वीडन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ब्रिटेन, ग्रीनलैण्ड, म्यानमार, नेपाल, नीदरलैण्ड, नार्वे, ओमान, पौलेण्ड, रोमानिया, स्वीटजरलैण्ड आदि स्थानों से देखा जा सकेगा। **निम्नलिखित मानचित्र में मंगोलिया के ऊपर से गुजरने वाली कालीपट्टी खग्रास ग्रहण की स्थिति को दर्शाती है। वहाँ चन्द्र की छाया दौड़ती हुई नजर आयेगी।**



मथुरा में ग्रहण का समय

स्पर्श घं.मि.	मध्य घं.मि.	मोक्ष घं.मि.	कुलसमय घं.मि.	ग्रासमान घं.मि.
१६। ६	१७। ४	१७।५८	१।५२	.६०८

दृश्याकृति



देश के कतिपय नगरों में ग्रहण का समय

नगरनाम	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	कुलसमय	ग्रासमान
अमृतसर	१५।५६	१६।५७	१७।५३	१।५७	०.६४४
अहमदाबाद	१६।१६	१७।११	१८।००	१।४४	०.४५८
इलाहाबाद	१६।११	१७।०८	१८।००	१।४९	०.६२२
बेंगलोर	१६।४२	१७।२६	१८।०७	१।२५	०.३१०
बड़ौदा	१६।१८	१७।१२	१८।०२	१।४४	०.४५२
भोपाल	१६।१६	१७।११	१८।०२	१।४६	०.५२६
भुज	१६।१६	१७।१०	१७।५९	१।४३	०.४२३
भुवनेश्वर	१६।२३	१७।१६	१८।०५	१।४२	०.५६४
चण्डीगढ़	१५।५८	१६।५९	१७।५४	१।५६	०.६५५
चैन्नई	१६।४१	१७।२६	१८।०८	१।२७	०.३४५
देहरादून	१६।००	१७।००	१७।५५	१।५५	०.६६२
दिल्ली	१६।०३	१७।०२	१७।५७	१।५४	०.६२३
द्वारिका	१६।१८	१७।११	१७।५९	१।४१	०.३९१
गुवाहाटी	१६।११	१७।०७	१७।५८	१।४७	०.७३७
हरिद्वार	१६।००	१७।००	१७।५५	१।५५	०.६५७
हैद्राबाद	१६।३०	१७।२०	१८।०६	१।३६	०.४२०
इम्फाल	१६।१३	१७।०८	१७।५९	१।४६	०.७३२
जयपुर	१६।०७	१७।०५	१७।५८	१।५१	०.५७४
काठमांडू	१६।०७	१७।०५	१७।५८	१।५१	०.६९९
कलकत्ता	१६।१८	१७।१२	१८।०३	१।४५	०.६३५
कानपुर	१६।०९	१७।०६	१७।५९	१।५०	०.६२३
लखनऊ	१६।०८	१७।०६	१७।५९	१।५१	०.६३६
मथुरा	१६।०६	१७।०५	१७।५८	१।५२	०.६०८
मुम्बई	१६।२७	१७।१७	१८।०३	१।३६	०.३७९
पटना	१६।११	१७।०८	१८।००	१।४९	० ६६१
पाण्डिचेरी	१६।४४	१७।२७	१८।०८	१।२४	०.३१४
पोरबन्दर	१६।२०	१७।१२	१८।००	१।४०	०.३८८
पुणे	१६।२८	१७।१८	१८।०४	१।३६	०.३८४
पुरी	१६।२४	१७।१७	१८।०५	१।४१	०.५५५
राजकोट	१६।१८	१७।१२	१८।००	१।४२	०.४१८
शिलोंग	१६।१२	१७।०८	१७।५९	१।४७	०.७२८
शिमला	१५।५७	१६।५८	१७।५४	१।५७	०.६६५
श्रीनगर	१५।५०	१६।५२	१७।४९	१।५९	०.६६८
सूरत	१६।२१	१७।१४	१८।०२	१।४१	०.४२५
त्रिवेन्द्रम	१६।५६	१७।३२	१८।०५	१।०९	०.१९८
उदयपुर	१६।१२	१७।०८	१८।००	१।४८	०.५०३
उज्जैन	१६।१६	१७।११	१८।०२	१।४६	०.५०३
वाराणसी	१६।१२	१७।०९	१८।०१	१।४९	०.६३२
वेरावल	१६।२२	१७।१४	१८।०१	१।३९	०.३८४

ग्रहण वेध (सूतक) दोष

वृद्ध गौतम जी के अनुसार सूर्यग्रहण में १२ घंटे पहले तथा चन्द्रग्रहण में ९ घंटा पूर्व सूतक प्रारम्भ हो जाता है-

सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात्पूर्वं यामचतुष्टयम्।
चन्द्रग्रहे तु यामास्त्रीन् बाल वृद्धातुरैर्विना।।

१ अगस्त २००८ शुक्रवार को प्रातः ४ बजकर ६ मिनट से सूतक प्रारम्भ हो जायेगा। सूतकों में बाल-वृद्ध-रोगी-आसक्तजनों को छोड़कर अन्यान्य को भोजन शयनादि नहीं करना चाहिए।

ग्रहण काल में स्नान दानादि- ग्रहण के आरम्भ में स्नान तदन्तर होम, मन्त्र, जाप, पूजा, पाठ, देवार्चन, श्राद्धादि करें। ग्रहण मध्य के बाद दान तथा ग्रहणान्ते सचैल (वस्त्रसहित) स्नानकर देवदर्शन का लाभ प्राप्त करें। जैसा कि स्मृत्यन्तर में लिखा है-

ग्रस्यमाने भवेत्स्नानं ग्रस्ते होमो विधीयते।
मुच्यमाने भवेद्दानं मुक्ते स्नानं विधीयते।।

ग्रहण के समय सौभाग्यवती स्त्रियाँ युवावस्था की बालिकायें शिर बिना धोए स्नान करें। पुष्पवती स्त्रियों को चाहिए कि वे गङ्गादि पवित्र नदी, सरोवर, तालाब, वावडी आदि से पात्र में जल लेकर अलग बैठकर स्नान करें।

गंगा कनखलं पुण्यं प्रयागः पुष्करं तथा।
कुरुक्षेत्रं तथा पुण्यं राहुग्रस्ते दिवाकरे।।

मत्स्य पुराण के बचनानुसार सूर्यग्रहण के समय गंगा, कनखल, प्रयाग (त्रिवेणीघाट) पुष्कर तथा कुरुक्षेत्र में स्नान दानादि के करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। यदि तीर्थ पर जाने का सौभाग्य प्राप्त न हो सके तो स्नानार्थी को वहीं लाभ तीर्थनाम का स्मरण करने मात्र से प्राप्त होता है-

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।।

मुनि व्यासजीके अनुसार सूर्य अथवा चन्द्रग्रहणके समय जल कहीं का हो वह पवित्र गंगाजल के समान होता है। ब्राह्मण व्यास के समान तथा दिया हुआ दान सम्पूर्ण भूमि के तुल्य माना जाता है।

सर्वं गङ्गा समंतोयं सर्वे व्यास समा द्विजाः।
सर्वं भूमि समं दानं ग्रहणे चन्द्र-सूर्य्ययोः।।

श्रीरामचरित मानस के अनुसार ऐनकेन प्रकारेण दिया हुआ दान पुण्यार्जन मनुष्यमात्र का कल्याणकारी होता है-

दोहा- प्रगट चारि पद धर्म के कलि महु एक प्रधान।
जेन केन विधि दीन्हें दान करइ कल्यान।।

भारत में अर्धाधिक ग्रास चन्द्रग्रहण

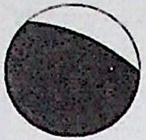
१६ अगस्त २००८ श्रावण शुक्ल पूर्णिमा शनिवार की रात्रि में १ बजकर ६ मिनट से शुरु होने वाले चन्द्रग्रहण को पूरे भारत में देखा जा सकेगा। इस ग्रहण को पश्चिमी चीन, रूस, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, इराक, साऊदीअरब, दक्षिण अफ्रीका, टर्की, लीबिया, सूडान, नैरोबी (केन्या), श्रीलंका, मेडागास्कर, खाड़ी के अन्य देश एवं यूरोप में ग्रीनविच वेधशाला तक देखा जा सकेगा। द.अमेरिका के कुछ भागों में चन्द्रमा ग्रस्ता हुआ उदय होगा।

नोटः- देश के पूर्वोत्तर प्रदेश असम आदि, तथा जावा, सुमात्रा, इण्डोनेशिया, जापान, आस्ट्रेलिया आदि में चन्द्रमा ग्रस्ता हुआ अस्त हो जायेगा। ग्रहण शनिवार की रात्रि में ४ बजकर १४ मिनट तक रहेगा।

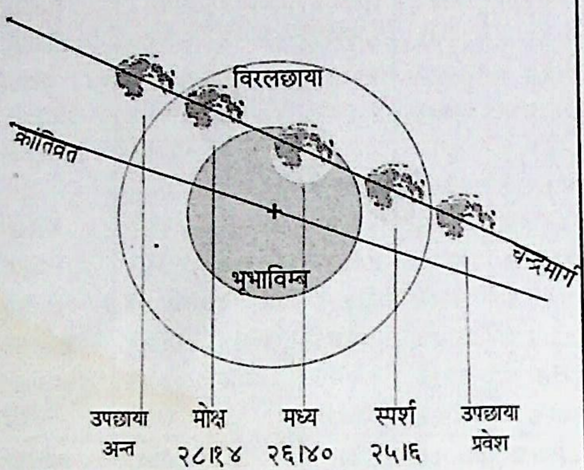
ग्रहण का समय

स्पर्श	मध्य	मोक्ष	कुलसमय	ग्रासमान
घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.	घं.मि.
२५।६	२६।४०	२८।१४	३।८	.८१३

मथुरा में दृश्याकृति



चन्द्रग्रहण की अवस्थाएं



सूतक- १६ अगस्त शनिवार सायं ४ बजकर ६ मिनट से प्रारम्भ हो जायेंगी। सूतकों में बाल, वृद्ध, रोगी, आसक्तजनों को छोड़कर अन्यान्य किसी को भोजन शयनादि नहीं करना चाहिये। सायंकाल देवस्थानों में सूतक विधान मान्य रहेगा।

आरनाल (नाना प्रकार के मिष्टान्न) माणिक (जलकलश) का जल। ये सब राहु सानिध्य ग्रहण के सूतकों में दूषित नहीं होते-

आरनालं पयस्तक्रं दधि स्नेहाज्य पाचितम्।
माणिकस्थोदकं चैव न दुष्येद्राहु सूतके।।

निर्णयसिन्धु पृष्ठ १०७ पर लिखा है कि पकान्न (बने हुए भोजन) मिष्टान्न आदि में तिल व कुशा रख दिये जायें तो वह दूषित नहीं होते हैं-

अन्नं पक्कमिह त्याज्यं स्नानं सवसनं ग्रहे।
वारि तक्रारनालादि तिलदर्भैर्न दुष्यति।।

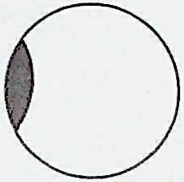
नोटः- १अगस्तका ग्रहण पुष्यनक्षत्र कर्क राशि तथा १६अगस्त का ग्रहण धनिष्ठा नक्षत्र मकर एवं कुम्भ राशि वालों के लिये नेष्ट है। ग्रहण जिस भूभाग के ऊपर होता है। वहाँ के लिये अशुभ रहता है-

यन्नक्षत्रगतो राहुर्ग्रसते राशि भास्करो।
तज्जातानां भवेत्पीड़ा ये नरा शान्तिवर्जिता।।

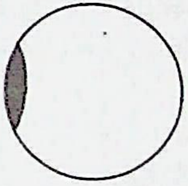
भारत के दक्षिण-पूर्व में आंशिक सूर्यग्रहण

२६ जनवरी २००९ माघ कृष्ण अमावस्या सोमवार के दिन देश के पूर्व-दक्षिण सम्भागों में आंशिक सूर्यग्रहण होगा। जिसे भारत से बाह्य देश चीन, जापान, जिम्बांबे, जाम्बिया, माम्बिया, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिणी नैरोबी, म्यानमार, थाईलैण्ड, सुमात्रा, जावा, श्रीलंका, मलेशिया, सिंगापुर, मेडागास्कर, मोजाम्बिया, पश्चिमी आस्ट्रेलिया, बंगाल की खाड़ी, बांगलादेश, दक्षिणीध्रुव प्रदेश आदि में अर्धाधिक ग्रासरुप में देखा जा सकेगा। इण्डोनेशिया में कंकणाकृति सूर्य ग्रहण वैज्ञानिकों की जिज्ञासा का विषय बनेगा।

चैन्नई में दृश्याकृति



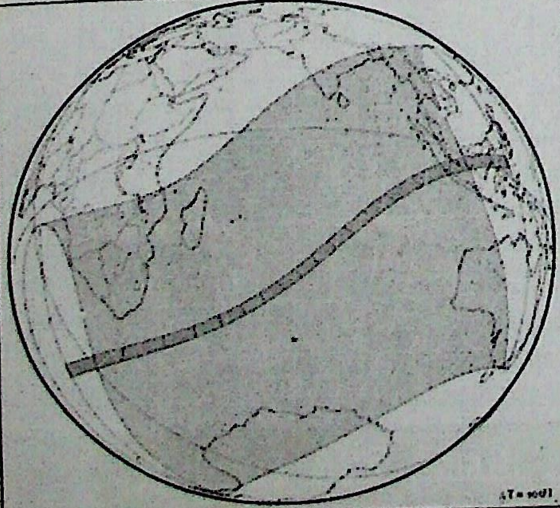
कलकत्ता में दृश्याकृति



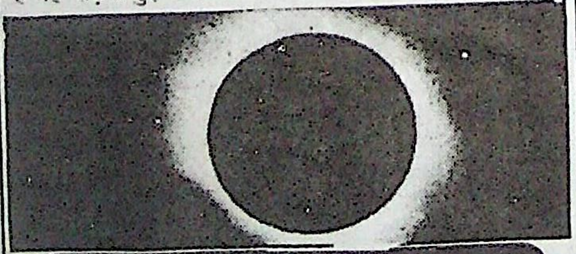
नोटः- २६ जनवरी २००९ में होने वाले आंशिक सूर्यग्रहण को केरल, तमिलनाडू, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, प.बंगाल, तथा बांगलादेश आदि समुद्रतटस्थ क्षेत्रों में ही देखा जा सकेगा।

देश के प्रमुख शहरों में ग्रहण का समय

नगरनाम	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	कुलसमय	ग्रासमान
बेंगलोर	१४।३३	१५।१६	१५।५६	१।२३	०.१०६
भुवनेश्वर	१४।५५	१५।२८	१६।००	१।०५	०.०७८
मद्रास	१४।२९	१५।१९	१६।०५	१।३६	०.१५३
गुवाहाटी	१५।१७	१५।३२	१५।४८	०।३१	०.०२०
हैदराबाद	१५।०२	१५।२१	१५।४०	०।३८	०.०२२
इंफाल	१५।०१	१५।३३	१६।०३	१।०२	०.८४
कलकत्ता	१५।०२	१५।३०	१५।५८	०।५६	०.०६१
मदुरै	१४।१७	१५।१४	१६।०५	१।४८	०.१८५
मैसूर	१४।३१	१५।१५	१५।५५	१।२४	०.१०५
पाण्डिचेरी	१४।२४	१५।१७	१६।०६	१।४२	०.१७२
पुरी	१४।५२	१५।२८	१६।०१	१।०९	०.०८९
शिलांग	१५।११	१५।३२	१५।५३	०।४२	०.०३६
तंजावूर	१४।२०	१५।१६	१६।०६	१।४६	०.१८५
त्रिवेन्द्रम	१४।११	१५।११	१६।०४	१।५३	०.१९६
विशाखपटनम्	१४।४७	१५।२५	१६।०१	१।१४	०.०९८



इण्डोनेशिया में कंकणाकृति सूर्यग्रहण का दृश्य निम्नलिखित चित्र में दर्शाया गया है। बांई तरफ के नक्शे पर जो पट्टी नजर आ रही है वह दौड़ती हुई चन्द्र की छाया है।



उपछायी चन्द्र ग्रहण

९ फरवरी २००९ माघ शुक्ल पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा विरलछाया में से गुजरेगा, जिसे सूक्ष्म यन्त्रों से देख पाना मुश्किल होगा, अतः उपछायी ग्रहण को वास्तविक ग्रहण नहीं माना जायेगा।

जिस भूभाग पर जब-जब सूर्य व चन्द्र ग्रहण होता है, तब-तब उस भाग पर दैहिक दैविक भौतिक सन्तापों की वृद्धि हुआ करती है।

यस्य राजस्य नक्षत्र स्वर्भानुरुपरज्यते।
राज्यभङ्ग सुहृन्नाशं मरणं चाऽत्र निर्दिशेत्।।

१ अगस्त २००८ सूर्य ग्रहण का राशिफल

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	अशुभ	शुभ	मध्यम	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ

१६ अगस्त २००८ चन्द्र ग्रहण का राशिफल

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	शुभ	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	मध्यम

२६ जनवरी २००९ सूर्य ग्रहण का राशिफल

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	शुभ	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	अशुभ	अशुभ	शुभ

भैरव - भवानी संवाद



प्रश्न-जगदम्बा को नाय शिर, पूछत भैरव लाल।
संवत पैसठ आ बना, कहो जगत के हाल।।
उत्तर-आपण मत मै जगतहित, कहहूँ सबहि समझाय।
सजग बैठि भैरव सुनो, कौशिक संग चितलाय।।
राजा-मन्त्री रवि बने, उपराजा हुये चन्द।
प्लव वर्ष उत्पात बहु, काल मचाबे द्विन्द।।
मेघदुर्ग फलपति शनी, फसलके मालिक चन्द।
नीर वित्तपति भूसुत बने, रसाधिपति गुर विन्द।।
कहि सूखा कहिं बाढ़ भय, कहिं आंधी तूफान।
भूमि कम्प दिग्दाह से, हौवे त्रस्त जहान।।
दुर्ग नष्ट सत्ता पलट, कलि का काला खेल।
आंतकी उत्पात से, होवे रेलम पेल।।
युद्ध जगत में होयगा, नित बाढ़े पापाचार।
प्राकृतिक प्रकोप से, त्राहि त्राहि भुखमार।।
बाल मृत्यु जननी हनन, बढ़ते नित सन्ताप।
समाधान इनका नही, निर्बल राजतन्त्र का साप।।
देश का दोहन होयगा, विदेशी सह आधार।
राज्य के भूखे भेडिया, करै न नीति विचार।।
ग्रह गोचर की चाल से, बाढें उद्योग अपार।
खड़ी सुहावन फसल में, मंगल करै विगार।।
कौशिक चिन्ता छोड़ि मन, करिकर्त्ता का ध्यान।
जगत सुधारे आन कर, सबका वह भगवान्।।

सपरिहार शुद्ध विवाह मुहुर्त्ताः सं.२०६५ (अप्रैल २००८ से मार्च २००९ तक)



जयति जयति श्रीराधिके, वंदौ-पद अरविंद।
चहत मुदित मकरंद मृदु, जेहि ब्रजचन्द मलिंद॥

शुक्रअस्तः- इस वर्ष वैशाख कृष्ण अमावस्या ५ मई २००८ को शुक्र पूर्व में अस्त होकर आषाढ़ शुक्ल चतुर्थी ६ जुलाई २००८ को पश्चिम में उदय होगा। पुनः चैत्र कृष्ण अमावस्या २६ मार्च २००९ को पश्चिम में अस्त होगा।

गुरुअस्तः- माघ कृष्ण तृतीया १३ जनवरी २००९ में गुरु अस्त होकर फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा १० फरवरी २००९ में उदय होगा। अतः गुरु-शुक्र अस्त में शुद्ध मुहूर्त्ताऽभावः रहेगा।

गुरु नवांश में श्रेष्ठः- ९ दिसम्बर २००८ तक स्वगृही गुरु शुभता का प्रतीक माना जायेगा। आगे मकर राशि में नीच के गुरु को पूजनादि से शुभ जानें। ता.६ अप्रैल से १२ जून तक अपनी राशि के नवांश में वर्गोत्तमो अतिश्रेष्ठ, १० जुलाई तक मित्र के वर्गोत्तम में श्रेष्ठ, ४ नवम्बर से ९ दिसम्बर तक श्रेष्ठ जानें। सन्२००९ में ८जनवरी से ५फरवरी तक, ६मार्च से ९अप्रैल तक उपयोगी रहेगा। स्वराशिमें, मित्रकी राशि में, अपने तथा मित्र के नवांश में गुरु किसी राशि के लिए अशुभ नहीं होता।

स्वच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः।
अशुभोऽपि शुभोज्ञेयो नीचारिस्थःशुभोऽप्यसन्॥

तिथि वार	ता.मास	नक्षत्र रेखाशुद्धि	विवाह लग्न	लग्नारंभ	लग्नारंभ	अन्य विवरण
			चैत्र शुक्ल पक्ष			
१२ गुरौ	१७अप्रैल	उफा. रे.८ ऽ।।ऽ।।।।।।	मकर,मीन	--	२५।७	गणितेनशुक्रवेधाऽभावःरेखावृ.
१३ शुक्रे	१८ "	हस्त रे.८ ।।।।।ऽऽ।।।	मकर,मीन	--	२५।३	शनिचं.दानादि परित्वेनशुभ
१४ शनौ	१९ "	चित्रा रे.७ ।ऽ।।ऽ।।ऽ।।	मकर	--	२४।५९	भद्रावासपातालेशुभ,ल.चिन्त
१५ रवि	२० "	स्वा. रे.७ ।।।ऽऽऽ।।।	मकर,मीन	--	२४।५५	धेनुधूरिवेलायांशुभ,चं.शु.बु.पू
			वैशाख कृष्ण पक्ष			
१ चन्द्रे	२१अप्रैल	स्वातीरे.८ ।।।ऽ।ऽ।।।	कर्क,कन्या	११।९	--	अत्या.दि.ल.रात्रौनक्षत्राऽभाव
२ भौमे	२२ "	अनु. रे.७ ऽऽ।।ऽऽ।।।	९।१०।१२	--	२२।४३	रोगवानदोषाऽभाव,रेखावृ.१
३ बुधे	२३ "	अनु. रे.७ ऽऽ।।।ऽ।।।	४।६।९	११।११	२२।३९	दि.ल. बुधशनि दानात्शुभः
७ रवि	२७ "	उषा. रे.६ ।ऽऽ।ऽऽ।।।।	गो.६।९।१०।१२	१५।३१	२२।२३	धेनुधूरिबेलाल.सकलसुमंगल
११ शुक्रे	२ मई	उभा. रे.८ ऽऽ।।।।।।।।	गो.६।८।९।१२	१५।१९	२२।१	अत्यावश्यके मीन चिन्त्येलुध
			आषाढ़ शुक्ल पक्ष			
६ भौमे	८ जुलाई	उफा. रे.८ ऽ।।।ऽ।।।।	१२।१।२	--	२२।५५	मीनादिलग्नानांचन्द्रदानात्शुभ
७ बुधे	९ जुलाई	हस्त रे.८ ।।।।।ऽ।।ऽ	७।८।१२	१२।५८	२२।५१	स्वर्गेभद्राशुभेकार्येपाताले...
९ शुक्रे	११ "	स्वाती रे.९ ।।।।।ऽ।।।	८।गो.।१२	१५।१९	२२।४३	गोधूलि लग्नानां श्रेष्ठः
			मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष			
९ शुक्रे	२१नव.	उफा. रे.९ ।।।।।।ऽ।।	६।७	--	२५।५०	भद्रावास पाताले शुभः
१० शनौ	२२ "	उफा. रे.७ ।।।।ऽ।ऽ।ऽ	१।२।३।६।७	१३।५६	२५।४७	चं.गु.शु.दानादिपरित्वेनशुभ
११ रवि	२३ "	हस्त रे.८ ।।।।।ऽऽ।।	१।२।६	१३।५२	२५।४३	चित्रायां लग्नचिन्त्येत्बुधः
१२ चन्द्रे	२४ "	चित्रा रे.९ ।।।।ऽ।।।।	१।२।६।७	१३।४८	२५।३९	तुलायां लग्नगत चं.दानात्शुभ
१३ भौमे	२५ "	स्वाती रे.९ ।।।।।ऽ।।।	१।२।६	१३।४४	२५।३५	अत्यावश्यके लग्न चिन्त.
			मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष			
२ शनौ	२९ नव.	मूल रे.७ ऽ।।।।ऽऽ।।।	१।२।३।६	१३।२८	२५।१९	चं.गु.दानादि से शुभ जानें
३ रवि	३० "	मूल रे.८ ऽ।।।।।ऽ।।।	मीन	१३।२५	--	रात्रौ विवाहे नक्षत्राऽभावः
४ चन्द्रे	१ दिस.	उषा. रे.६ ।।ऽ।।ऽऽऽ।।	३।६	१८।२२	२५।१२	रात्रिलग्न चोरवान दोषाऽभावः
४ भौमे	२ "	उषा. रे.७ ।ऽऽ।।।ऽ।।।	मीन	१३।१७	--	दि.ल.मीनश्रेष्ठ,अन्य चिन्त.
८ शनौ	६ "	उभा. रे.८ ऽ।।ऽ।।।।।	तुला	--	२७।२२	पूभा.नक्षात्रान्ते रात्रि लग्न श्रेष्ठ
९ रवि	७ "	उभा. रे.७ ऽ।।ऽ।।।।ऽ	१।२।३।६	१२।५७	२४।४८	लग्नानां चं.बु.दानादि से शुभः
१० चन्द्रे	८ "	अश्वि रे.९ ।।।।ऽ।।।।	तुला	--	२७।१	**स्वर्गेभद्राशुभेकार्ये....**
११ भौमे	९ "	अश्वि रे.१० ।।।।। ।।।।।	१।२।३	१२।५०	१७।५१	दिवा रात्रौ लग्नानां श्रेष्ठ
१४ गुरौ	११ "	रोहि. रे.८ ।।।।।।ऽऽ।।	६।७	--	२४।३३	रात्रि लग्न कन्यादि श्रेष्ठ
१५ शुक्रे	१२ "	रोहि. रे.७ ।।।।।ऽऽऽ।।	१।२।३।६	१२।३८	२४।२९	दिवा रात्रौ लग्नानां शुभः
			फाल्गुन कृष्ण पक्ष			
४ शुक्रे	१३ फर.	हस्त रे.६ ।।।ऽऽ।।ऽ।ऽ	वृष	११।३२	--	**मासदग्धाश्चतिथयोर्मध्य..**
५ शनौ	१४ "	स्वा. रे.८ ।ऽ।।।।।।ऽ।	तुला	--	२२।३१	अन्यान्य लग्न चिन्त्येत्बुधः
६ रवि	१५ "	स्वा. रे.६ ऽऽ।।।ऽ।।ऽ।	२।६	११।२४	२०।११	भद्रावास पाताले रेखावृद्धि
७ चन्द्रे	१६ "	अनु. रे.९ ।।।।।।।ऽ।।	धनु	--	२६।५९	विवाहे चन्द्रदानादि शुभः
८ भौमे	१७ "	अनु. रे.८ ।।।।।ऽ।ऽ।।	६।७।९	२०।३	२६।५५	रात्रिवेला नृपवान नैवरेखावृ.
१० गुरौ	१९ "	मूल रे.७ ।।।।।ऽऽऽ।।	२।६।७।८	११।८	१९।५५	कन्यादि३लग्नानां शुभ जानें
१२ शनौ	२१ "	उषा. रे.८ ।ऽ।।।।ऽ।।।	कन्या	--	१९।४७	**विष्टिरङ्गारकश्चैवव्यतिपात.**
१३ रवि	२२ "	उषा. रे.८ ।ऽ।।।।ऽ।।।	वृष	१०।५७	--	केवल दिवा लग्न शुभ जानें

विवाह के लिए शुभ समय अंग्रेजी मास—तारीखें (त्रिबल शुद्धि कोष्ठक)

सम्वत् २०६५ (अप्रैल २००८ से मार्च २००९ ई. तक)

उदाहरण- कुम्भ राशि वाले लड़के का विवाह तुला राशि वाली लड़की के साथ करना है, तो देखिए कुम्भ और तुला राशियों के सामने कोष्ठक में अप्रैल की १९, २०, २१, २२, २३ और मई की २, तथा जुलाई की ११, तारीखें दोनों तरफ समान मिलती हैं, जो कि विवाह के लिए श्रेष्ठ हैं। जिनमें से किसी भी तारीख में आप सुविधानुसार विवाह सुनिश्चित कर सकते हैं।

	लड़कों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)		लड़कियों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)
तुला	(अप्रैल, नवम्बर, फरवरी तथा मार्च में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें) **अप्रैल-** १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, **मई-** २, **जुलाई-** ८, ९, ११, **नवम्बर-** २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, **दिसम्बर-** १, ६, ७, ८, ९, १२, **फरवरी-** १३, १४, १५, १६, १७, १९, २६, २७, २८, **मार्च-** १, १२,	**तुला**	**अप्रैल-** १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, **मई-** २, **जुलाई-** ८, ९, ११, **नवम्बर-** २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, **दिसम्बर-** १, ६, ७, ८, ९, आगे मकर राशि का चौथा गुरु अग्राह्य माना जायेगा।
वृश्चि.	**अप्रैल-** १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, **मई-** २, (नवम्बर, दिसम्बर में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें), **नवम्बर-** २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, **दिसम्बर-** १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२, विवाह में बारहवाँ चन्द्रमा ग्राह्य माना गया है।	**वृश्चि.**	**अप्रैल-** १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, **मई-** २, **जुलाई-** ८, ९, ११, **नवम्बर-** २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, **दिसम्बर-** १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२(२६।४४तक), **फरवरी-** १३, १४, १५, १६, १७, १९, २१, २२, २६, २७, २८, **मार्च-** १, १२,
धनु	**अप्रैल-** १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, (जून, जुलाई तथा जनवरी में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें) **जुलाई-** ८, ९, ११, **फरवरी-** १३, १४, १५, १६, १७, १९, २१, २२, २८, **मार्च-** १, १२, **अभिषेके निषेके च प्राशने व्रत बन्धने। तीर्थयात्रा विवाहे च चन्द्रो द्वादगः शुभः॥**	**धनु**	**अप्रैल-** १७, १८, १९, २०, २१, २७, **जुलाई-** ८, ९, ११, **नवम्बर-** २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, **दिसम्बर-** १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२, **फरवरी-** १३, १४, १५, १९, २१, २२, २८, **मार्च-** १, १२,
मकर	(मई, जन. तथा फरवरी में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें) **जुलाई-** ८, ९, ११ **नवम्बर-** २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, **दिसम्बर-** १, २, ६, ७, ११, १२, **फरवरी-** १३, १४, १५, १६, १७, १९, २१, २२, २६, २७, २८(२२।२१तक), **मार्च-** १२, द्वादशेन्दु विवाहे ग्राह्यः।	**मकर**	९ दिसम्बर तक स्वगृही गुरु राशि से बारहवाँ रहेगा। आवश्यकता में ग्राह्यता हेतु प्रमाण वाक्य- **स्वच्चे स्वभे स्वमैत्रेवा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः। अशुभोऽपि शुभोज्ञेयो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसन्॥** **दिसम्बर-** ११, १२, **फरवरी-** १३, १४, १५, १६, १७, १९, २१, २२, २६, २७, २८(२२।२१तक), **मार्च-** १२,
कुम्भ	**अप्रैल-** १९, २०, २१, २२, २३, २७, **मई-** २, (जून, फरवरी, मार्च में रवि पूजनादि से शुभ जानें), **जुलाई-** ११, **नवम्बर-** २१(२६।३६तक), २४, २५, २९, ३०, **दिसम्बर-** १, २, ६, ७, ८, ९, **फरवरी-** १४, १५, १६, १७, १९, २१, २२, २६, २७, २८, **मार्च-** १, (राशि से बारहवाँ चन्द्र ग्राह्य समझें)	**कुम्भ**	**अप्रैल-** १९, २०, २१, २२, २३, २७, **मई-** २, **जुलाई-** ११, **नवम्बर-** २१(२६।३६तक), २४, २५, २९, ३०, **दिसम्बर-** १, २, ६, ७, ८, ९, आगे मकर का गुरु राशि से बारहवाँ अग्राह्य रहेगा।
मीन	**अप्रैल-** १७, १८, १९, २२, २३, २७, **मई-** २, (नवम्बर में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें।) **नवम्बर-** २१, २२, २३, २९, ३०, **दिसम्बर-** १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२,	**मीन**	**अप्रैल-** १७, १८, १९, २२, २३, २७, **मई-** २, **जुलाई-** ८, ९, **नवम्बर-** २१, २२, २३, २९, ३०, **दिसम्बर-** १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२, **फरवरी-** १३, १६, १७, १९, २१, २२, २६, २७, २८, **मार्च-** १, १२,

नोटः- राशि से बारहवाँ चन्द्रमा ग्राह्य माना गया है।

पाणिग्रहे सुरतोऽभिषेके यात्रान्नप्राशने व्रतबन्धने च। व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वैः प्रोक्तः शुभो द्वादशगो हिमांशुः॥ -गर्गः

विवाह के लिए शुभ समय अंग्रेजी मास–तारीखें (त्रिबल शुद्धि कोष्ठक)

सम्वत् २०६५ (अप्रैल २००८ से मार्च २००९ ई. तक)

वर-वधू राश्यानुसार सूर्य, गुरु तथा चन्द्रबल का संशोधन करके विवाह हेतु शुद्ध समय अंग्रेजी मास-तारीखें लिख दी गई है। जिस किसी भी राशि वाले वर-वधू का परस्पर विवाह करना हो, उन दोनों की राशियों के सामने जिन मासोंमें जो-जो तारीखें समान मिल जायें, वही दिन - तारीखें विवाह के लिए शुभ है। ऐसा समझना चाहिए।

	लड़कों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)		लड़कियों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)
मेष	(१४ अप्रैल से १४ मई तक उच्चस्थ रवि ग्राह्य, आगे १५ जून तक पूजनादि से शुभ जानें) अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, मई- २, जुलाई- ८, ९, ११, फरवरी- १३, १४, १५, १९, २१, २२, २६, २७, २८, मार्च- १, १२, द्वादश चन्द्र प्रशंसा- अभिषेके निषेके च प्राशने व्रत बन्धने। तीर्थ यात्रा विवाहे च चन्द्रो द्वाशगः शुभः।	मेष	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, मई- २, जुलाई- ८, ९, ११, नवम्बर- २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, दिसम्बर- १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२, फरवरी- १३, १४, १५, १९, २१, २२, २६, २७, २८, मार्च- १, १२,
वृष	(मई, जून, जुलाई, नवम्बर, दिसम्बर तथा जनवरी में रवि की मामूली पूजा से शुभ जानें), जुलाई- ८, ९, ११, नवम्बर- २१, २२, २३, २४, २५, दिसम्बर- १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२, फरवरी- १३, १४, १५, १६, १७, २१, २२, २६, २७, २८, मार्च- १, १२, राशि से बारहवाँ चन्द्र ग्राह्य समझें।	वृष	९ दिस.तक धनु में स्वगृही गुरु वृष से आठवाँ रहेगा। अत्यावश्यके ग्राह्य शास्त्र वचन- रजस्वलाया कन्याया गुरुशुद्धिं न चिन्तयेत्। अष्टमेऽपि प्रकर्तव्यो विवाहस्त्रिगुणार्चनात्।। दिसम्बर- ११, १२, फरवरी- १३, १४, १५, १६, १७, २१, २२, २६, २७, २८, मार्च- १, १२,
मिथुन	अप्रैल- १९, २०, २१, २२, २३, मई- २, (जून, फरवरी तथा मार्च में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें), जुलाई- ११, नवम्बर- २१, २४, २५, २९, ३०, दिसम्बर- १, ६, ७, ८, ९, ११, १२, फरवरी- १४, १५, १६, १७, १९, २६, २७, २८, मार्च- १,	मिथुन	अप्रैल- १९, २०, २१, २२, २३, मई- २, जुलाई- ११, नवम्बर- २१, २४, २५, २९, ३०, दिसम्बर- १, ६, ७, ८, ९, आगे मकर का गुरु मिथुन राशि से आठवाँ रहेगा।
कर्क	अप्रैल- १७, १८, १९, २२, २३, २७, मई- २, (नवम्बर, जनवरी तथा फरवरी में रवि पूजनादि से श्रेष्ठ जानें), नवम्बर- २१, २२, २३, २९, ३०, दिसम्बर- १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२,	कर्क	अप्रैल- १७, १८, १९, २२, २३, २७, मई- २, जुलाई- ८, ९, नवम्बर- २१, २२, २३, २९, ३०, दिसम्बर- १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२, फरवरी- १३, १६, १७, १९, २१, २२, २६, २७, २८, मार्च- १, १२,
सिंह	(अप्रैल में उच्चस्थ रवि ग्राह्यः) अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, जुलाई- ८, ९, ११, (फरवरी उत्तरार्ध से मार्च पूर्वार्ध तक रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें) फरवरी- १३, १४, १५, १९, २१, २२, २८, मार्च- १, १२,	सिंह	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, जुलाई- ८, ९, ११ नवम्बर- २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, दिसम्बर- १, २, ८, ९, ११, १२, फरवरी- १३, १४, १५, १९, २१, २२, २८, मार्च- १, १२,
कन्या	जुलाई- ८, ९, ११, (मई व जनवरी में रवि पूजनादि से शुभ जानें) नवम्बर- २१, २२, २३, २४, २५, दिसम्बर- १, २, ६, ७, ११, १२, फरवरी- १३, १४, १५, १६, १७, २१, २२, २६, २७, २८(२२।२१तक), मार्च- १२,	कन्या	९ दिस.तक धनु में स्वगृही गुरु राशि से चौथा अत्यावश्यकता में ग्राह्य माना जायेगा- स्वच्चे स्वभे स्वमैत्रेवा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः। अशुभोऽपि शुभोज्ञेयो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसन्।। दिसम्बर- ११, १२, फरवरी- १३, १४, १५, १६, १७, २१, २२, २६, २७, २८(२२।२१तक), मार्च- १२,

विवाह के लिए शुभ समय अंग्रेजी मास—तारीखें (त्रिबल शुद्धि कोष्ठक)

सम्वत् २०६५ (अप्रैल २००८ से मार्च २००९ ई. तक)

उदाहरण- कुम्भ राशि वाले लड़के का विवाह तुला राशि वाली लड़की के साथ करना है, तो देखिए कुम्भ और तुला राशियों के सामने कोष्ठक में अप्रैल की १९, २०, २१, २२, २३ और मई की २, तथा जुलाई की ११, तारीखें दोनों तरफ समान मिलती हैं, जो कि विवाह के लिए श्रेष्ठ हैं। जिनमें से किसी भी तारीख में आप सुविधानुसार विवाह सुनिश्चित कर सकते हैं।

	लड़कों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)		लड़कियों के विवाह हेतु शुद्ध समय (अंग्रेजी तारीखें)
तुला	(अप्रैल, नवम्बर, फरवरी तथा मार्च में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें) अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, मई- २, जुलाई- ८, ९, ११, नवम्बर- २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, दिसम्बर- १, ६, ७, ८, ९, १२, फरवरी- १३, १४, १५, १६, १७, १९, २६, २७, २८, मार्च- १, १२,	तुला	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, मई- २, जुलाई- ८, ९, ११, नवम्बर- २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, दिसम्बर- १, ६, ७, ८, ९, आगे मकर राशि का चौथा गुरु अग्राह्य माना जायेगा।
वृश्चि.	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, मई- २, (नवम्बर, दिसम्बर में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें।), नवम्बर- २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, दिसम्बर- १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२, विवाह में बारहवाँ चन्द्रमा ग्राह्य माना गया है।	वृश्चि.	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, मई- २, जुलाई- ८, ९, ११, नवम्बर- २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, दिसम्बर-१, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२(२६।४४तक), फरवरी- १३, १४, १५, १६, १७, १९, २१, २२, २६, २७, २८, मार्च- १, १२,
धनु	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, (जून, जुलाई तथा जनवरी में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें) जुलाई- ८, ९, ११, फरवरी- १३, १४, १५, १६, १७, १९, २१, २२, २८, मार्च- १, १२, अभिषेके निषेके च प्राशने व्रत बन्धने। तीर्थयात्रा विवाहे च चन्द्रो द्वादगः शुभः।।	धनु	अप्रैल- १७, १८, १९, २०, २१, २७, जुलाई- ८, ९, ११, नवम्बर- २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, दिसम्बर- १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२, फरवरी- १३, १४, १५, १९, २१, २२, २८, मार्च- १, १२,
मकर	(मई, जन. तथा फरवरी में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें) जुलाई- ८, ९, ११ नवम्बर- २१, २२, २३, २४, २५, २९, ३०, दिसम्बर- १, २, ६, ७, ११, १२, फरवरी- १३, १४, १५, १६, १७, १९, २१, २२, २६, २७, २८(२२।२१तक), मार्च- १२, द्वादशेन्दु विवाहे ग्राह्यः।	मकर	९ दिसम्बर तक स्वगृही गुरु राशि से बारहवाँ रहेगा। आवश्यकता में ग्राह्यता हेतु प्रमाण वाक्य- स्वच्चे स्वभे स्वमैत्रेवा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः। अशुभोऽपि शुभोज्ञेयो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसन्।। दिसम्बर- ११, १२, फरवरी- १३, १४, १५, १६, १७, १९, २१, २२, २६, २७, २८(२२।२१तक), मार्च- १२,
कुम्भ	अप्रैल- १९, २०, २१, २२, २३, २७, मई- २, (जून, फरवरी, मार्च में रवि पूजनादि से शुभ जानें), जुलाई- ११, नवम्बर- २१(२६।३६तक), २४, २५, २९, ३०, दिसम्बर- १, २, ६, ७, ८, ९, फरवरी- १४, १५, १६, १७, १९, २१, २२, २६, २७, २८, मार्च- १, (राशि से बारहवाँ चन्द्र ग्राह्य समझें)	कुम्भ	अप्रैल- १९, २०, २१, २२, २३, २७, मई- २, जुलाई- ११, नवम्बर- २१(२६।३६तक), २४, २५, २९, ३०, दिसम्बर- १, २, ६, ७, ८, ९, आगे मकर का गुरु राशि से बारहवाँ अग्राह्य रहेगा।
मीन	अप्रैल- १७, १८, १९, २२, २३, २७, मई- २, (नवम्बर में रवि की मामूली पूजनादि से शुभ जानें।) नवम्बर- २१, २२, २३, २९, ३०, दिसम्बर- १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२,	मीन	अप्रैल- १७, १८, १९, २२, २३, २७, मई- २, जुलाई- ८, ९, नवम्बर- २१, २२, २३, २९, ३०, दिसम्बर- १, २, ६, ७, ८, ९, ११, १२, फरवरी- १३, १६, १७, १९, २१, २२, २६, २७, २८, मार्च- १, १२,

नोटः- राशि से बारहवाँ चन्द्रमा ग्राह्य माना गया है।

पाणिग्रहे सुरतोऽभिषेके यात्रान्नप्राशने व्रतबन्धने च। व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वैः प्रोक्तः शुभो द्वादशगो हिमांशुः।। -गर्गः

☆ द्विरागमन (गौना) मुहूर्त्त ☆

१७	अप्रैल	गुरौ	उफायां अभिजित् मुहूर्ते
१८	"	शुक्रे	उफायां अभिजित् मुहूर्ते
२३	"	बुधे	अनुराधायां भद्रात्पूर्वे
२५	"	शुक्रे	मूलभे लग्न वृष मिथुन
२७	"	रवि	उषायां भद्रात्पूर्वे ल.चिन्त.
२८	"	चन्द्रे	श्रवण लग्न वृष मिथुन
३०	"	बुधे	धनिष्ठायां ८।१६ उपरान्त
१	मई	गुरौ	शतभिषायां लग्न चिन्त.
२	"	शुक्रे	उभायां अभिजित् मुहूर्ते
१७	नव.	चन्द्रे	पुनर्वसु लग्न चिन्त्येत्बुधः
१८	"	भौमे	पुष्यभे लग्न ११।१२ भद्रात्पूर्वे
२३	"	रवि	हस्त अभिजित् मुहूर्ते
२४	"	चन्द्रे	चित्रायां लग्न चिन्तनीयम्
३०	"	रवि	मूलभे अभिजित् मुहूर्ते
३	दिस.	बुधे	श्रवण लग्न मुहूर्त्त श्रेष्ठ
४	"	गुरौ	धनिष्ठायां १३।१२ उपरान्त
५	"	शुक्रे	शतभिषा भद्रात्पूर्वे ल.चिन्त.
८	"	चन्द्रे	रेवत्यां मकरादि लग्न श्रेष्ठ
१२	"	शुक्रे	रोहिण्यां अभिजित्मुहूर्ते
१४	"	रवि	१०।१२ उप. पुनर्वसु
२२	फर.	रवि	उषायां वृष लग्न श्रेष्ठ
२७	"	शुक्रे	उभायां फुलैरादूज
१	मार्च	रवि	अश्विनी आनन्दयोगे

नोटः- पूर्वाचार्यो के मतानुसार गुरु-शुक्र अस्त, शिशुत्व-वृद्धत्वमें भी साल भीतर द्विरागमन शुभ होता है। यथा- **अस्तेऽथवा शिशुत्वे वालत्वे गुरु शुक्रयोः। शुभो द्विरागमो यावद्वर्षमेकं विवाहिताः॥** रेवत्यादि छः नक्षत्रों (रे.अ.भ.कृ.रो.मृग.) में गतिशील चन्द्रमा के रहते हुए शुक्र अन्धा रहता है। कश्यप,वशिष्ट,अत्रि,भृगु,अंगिरा, भारद्वाज व वत्स गोत्रवालों को सम्मुख शुक्रका दोष नहीं लगता। यथा-

काश्यपेशु वशिष्ठेषु चात्रिभृग्वङ्गिरः सु च। भारद्वाजेषु वात्स्येषु प्रतिशुक्रो न दुष्यति॥

☆ उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त ☆

१६	अप्रैल	बुधे	पूफायां भद्रोत्तर ल.चि.
१७	"	गुरौ	पूफा. उफा. अभिजित् मुहूर्त्त
२०	"	रवि	चित्रायां लग्न चिन्त्येत्बुधः
२३	"	बुधे	अनुराधायां भद्रात्पूर्वे ल.२-३
२५	"	शुक्रे	मूल लग्न चिन्त्येत्बुधः
२७	"	रवि	पूषा. उषा. भद्रावास पाताले
३०	"	बुधे	धनिष्ठायां भद्रात्पूर्वे ल.चिन्त
१०	जुलाई	गुरौ	चित्रायां भद्रोत्तरं
१९	फर.	गुरौ	मूल वृषल.श्रेष्ठ भ.वा.पाताले
२०	"	शुक्रे	मूल - पूषायां श्रेष्ठ
२७	"	शुक्रे	उभायां लोक प्रसिद्ध मुहूर्त्त
१	मार्च	रवि	अश्विनी आनन्द योगे

नोटः- आवश्यकतानुसार तीर्थस्थानमें किसी पर्व विशेष के अवसर पर चन्द्रबल देखकर बिना उपनयन मुहूर्त्त के भी यज्ञोपवीत किया जा सकता है। वंश परम्परा (कुलाचार) वेद शाखानुसार उपाकर्म के दिन श्रावणी पूर्णिमादि में भी लग्नशुद्धि देखकर यज्ञोपवीत संस्कार करा सकते हैं।

☆ चूड़ाकरण (मुण्डन) मुहूर्त्त ☆

२८	अप्रैल	चन्द्रे	श्रवणभे लग्न श्रेष्ठ
३०	"	बुधे	धनिष्ठायां ८।१६ उपरान्त
१०	जुलाई	गुरौ	चित्रायां भद्रोत्तर

☆ कर्णवेध मुहूर्त्त ☆

नोटः- चूड़ाकरण मुहूर्त्तोंमें कर्णवेध संस्कार सविधि किया जा सकता है। कुलाचार मान्यतानुसार देवस्थान, तीर्थस्थान, मंगलकार्य पर्वोत्सवों के शुभ अवसर पर चन्द्र, तारा एवं लग्नबल विचारकर मुण्डन तथा कर्ण वेध कुलगुरु द्विजाचार्य की आज्ञानुसार सम्पन्न कर सकते हैं।

☆ गृहारम्भ मुहूर्त्त ☆

१७	अप्रैल	गुरौ	उफायां अभि.मु. वृषभचक्रशुभः
१८	"	शुक्रे	उफायां स्थिर ल. वृषभचक्रशुभः
२०	"	रवि	चित्रायां ल.२व४ वृषभचक्रशुभः
२३	"	बुधे	अनु. स्थिरल. **स्वर्गेभद्राशुभेकार्ये**
१८	जुलाई	शुक्रे	उषायां अभि.मु. वृषभचक्रशुभः
१९	"	शनौ	श्रवण स्थिरल. श्रे.वृषभचक्रशुभः
२१	"	चन्द्रे	शत. कन्या लग्न में, वृषभचक्रशुभः भद्रावास पाताले श्रेष्ठ
२५	"	शुक्रे	रेवती अश्विनी श्रीवत्सयोगे
८	अग.	शुक्रे	स्वात्यां अभिजित् मुहूर्ते श्रेष्ठ
१४	"	गुरौ	उषा. अभि.मुहूर्त्त वृषभचक्रशुभः
१८	"	चन्द्रे	शत. स्थिरलग्ने वृषभचक्रशुभः
४	सित.	गुरौ	स्वाती स्थिर लक्ष्मी सुयोग
११	"	गुरौ	उषा. अभिजितमु. वृषभचक्रशुभः
१२	"	शुक्रे	श्रवण वृषभचक्रशुभः लग्न८
६	नव.	गुरौ	श्रवण ल.९,११ वृषभचक्रशुभः
८	"	शनौ	शत. ल.९,११ वृषभचक्रशुभः
९	"	रवि	पूभा. लोक प्रसिद्ध मुहूर्त्त
१०	"	चन्द्रे	उभा. लग्नचिन्त. वृषभचक्रशुभः
३	दिस.	बुधे	श्रव. स्थिरलग्ने छत्रयोगे श्रेष्ठ
४	"	गुरौ	धनि.१३।१२से मीनलग्न श्रेष्ठ
५	"	शुक्रे	शत. वृषभचक्रशुभः ल.११,१२
८	"	चन्द्रे	रेव. स्थिर लग्ने वृषभचक्रशुभः
१२	"	शुक्रे	रोहिणी अभि.मुहूर्त्त वृषभचक्रशुभः
२२	फर.	रवि	उषा. स्थिर लग्न२ अमृतयोगे
२७	"	शुक्रे	उभायां लोक प्रसिद्ध मुहूर्त्त

नोटः- इस वाणिज्य युग में भवननिर्माण, गृहप्रवेश एवं अन्यान्य मूहूर्त्तो की बहुत आवश्यकता महसूस की जाती है। इस संदर्भ में वृषभचक्र कालगणना परित्वेन मुहूर्त्त न्यून ही बन पाते हैं। अतः सुयोग्य ज्योतिर्विद् सूक्ष्मातिसूक्ष्म तिथि,नक्षत्र,क्षण,वार, मान्यताके अनुसार मुहूर्त्त शोधन का कार्य सविधि सम्पन्न करा सकते हैं। आप अपनी सुविधानुसार श्रीब्रजभूमि पंचांग कार्यालय में सम्पर्क करके अपनी राशि नामानुसार रु.२५१/- भेजकर समाधान ले सकते हैं। श्रेष्ठ मुहूर्त्त निकलवा सकते हैं।

☆ गृहप्रवेश मुहूर्त्त ☆

१७	अप्रैल	गुरौ	उफा.अभिजित्मुहूर्ते कलशचक्रशुभ
१८	"	शुक्रे	उफा. स्थिरल.में कलशचक्रशुभः
२०	"	रवि	चित्रा ल.चिन्त. कलशचक्रशुभः
२३	"	बुधे	अनुराधायां **स्वर्गेभद्राशुभेकार्ये..**
२७	"	रवि	उषा. सर्वार्थसि.यो. रवियोगश्रेष्ठ
२८	"	चन्द्रे	श्रवण घं.१३मि.८उप. स्थिरलग्न
३०	"	बुधे	धनिष्ठा ल.३व५, कलशचक्रशुभः
१	मई	गुरौ	शत.भद्रोत्तरंल.श्रे.कलशचक्रशुभः
९	जुलाई	बुधे	हस्तभे ल.६-७ कलशचक्रशुभः
१०	"	गुरौ	चित्रा भद्रोत्तरअभि.मु.कलशचक्रशु.
१२	"	शनौ	स्वाती अभि.मु. कलशचक्रशुभः
१४	"	चन्द्रे	अनु. ल.६-७-८ कलशचक्रशुभः
१८	"	शुक्रे	उषा. गुरुपूर्णिमायां रवियोग श्रेष्ठ
२५	"	शुक्रे	अश्वि. कन्यादि लग्नश्रेष्ठ स.सि. व श्रीवत्सयोगे
७	अग.	गुरौ	चित्रा अभि.मु. कलशचक्रशुभः
८	"	शुक्रे	स्वात्यां भद्रात्पूर्वेश्रेष्ठ कलशचक्रशु.
१४	"	गुरौ	उषा. अभि.ल.चि. कलशचक्रशुभः
२१	"	गुरौ	रेव. स्थिर लग्ने मित्रयोगे श्रेष्ठ
२४	"	रवि	रोहि. अभि.मु. कलशचक्रशुभः
२५	"	चन्द्रे	मृग. लग्न धनु कलशचक्रशुभः
२७	"	बुधे	पुन. लग्न चि. कलशचक्रशुभः
४	सित.	गुरौ	स्वाती स्थिर योग में श्रेष्ठ
११	"	गुरौ	उषा. अभि.मु. कलशचक्रशुभः
१२	"	शुक्रे	श्रवण ल.८-९ कलशचक्रशुभः
१३	"	शनौ	धनि. प्रवर्धमानयोगकलशचक्रशुभः
२६	अक्टू.	रवि	सर्वार्थसिद्धियोग धनत्रयोदशी
५	नव.	बुधे	उषा. कलशचक्रशुभः ल.चिन्त.
६	"	गुरौ	श्रवण लग्न धनु कुम्भ
८	"	शनौ	शत. लग्न धनु कलशचक्रशुभः

९नव. रवि पुभा. लोकप्रसिद्धमुहूर्त्त
१० " चन्द्रे उभा.ल.चि. कलशचक्रशुभः
२२ " शनौउफा.भद्रोत्तर लग्न मीन श्रेष्ठ
२३ " रवि हस्तस्थिरलग्नकलशचक्रशुभ
२४ " चन्द्रे चित्राअभि.मु.कलशचक्रशुभ
३० " रवि मूलभे सर्वार्थ सिद्धियोगे श्रेष्ठ
३दिस.बुधे श्रवण छत्रयोगमें ल.श्रे.धनि.
४ " गुरौ श्रीवत्सयोगे,कलशचक्रशुभः
५ " शुक्रेशत.भद्रात्पूर्वेश्रेक.चक्रशुभ
७ " रवि उभा.स्थरयोगे,स.सि.योग
८ " चन्द्रे रेवतीअभि.मु.कलशचक्रशुभ
१२ " शुक्रेरोहि.भद्रोत्तरल.चि.,पूर्णिमा
१९फर.गुरौ मूल स्थिरल.भद्रावासपाताले
२० " शुक्रेमूल मीनल.कलशचक्रशुभः
२२ " रवि उषा. अमृतयोगे स.सि.योगे
२७ " शुक्रेउभायां लोकप्रसिद्ध मुहूर्त्त
१मार्चरवि अश्वि.आनन्द-स.सि.योग

सर्वेदोषाःविनश्यन्तिलग्नशुद्धिर्यदाभवेत्।

☆जीर्णानि(पुरातन)गृहप्रवेशमुहूर्त्त☆

नीचे लिखे पुरातन गृहप्रवेश मुहूर्त्त उन सबके लिए ग्राह्य हैं, जिन्हें नौकरी में ट्रांसफर के कारण मकान बदलने पड़ते हैं, अथवा किराये के मकान खालीकर दूसरी जगह निवास करना होता है। देशकाल परिस्थित्यावसात् इन मुहूर्तोंमें गुरु शुक्र का अस्तकाल, अधिमास दोष, गुर्वादित्य (सिंहे सिहांशक) दोष, कलश चक्रशुद्धि, होलाष्टक आदि का विचार नहीं किया जाता है। अत्यन्त व्यस्तता वाले इस वाणिज्य युगमें रविवार को अधिकांश विद्वान ग्राह्य मानते हैं।

१०अप्रैल गुरौ रोहिणी श्रीपंचमी
१३अप्रैल रवि पुष्यभे लग्न मुहूर्त्त श्रेष्ठ
१७ " गुरौ उफायां अभिजित् मुहूर्त्त
१८ " शुक्रे उफायां शुभ योगे
२० " रवि चित्रायां पूर्णिमायां
२३ " बुधे अनुराधा स.सि.योगे
२५ " शुक्रे मूलभे सुस्थिर योगे
२७ " रवि उषायां लग्न चिन्त्येत्बुधः
२८ " चन्द्रे उषायां सर्वार्थसिद्धियोग
३० " बुधे धनि. शत. भद्रात्पूर्वे
१ मई गुरौ शत. भद्रोत्तर ल.चिन्त.
९ " शुक्रे आर्द्रा स.सि.योग
११ " रवि रविपुष्यामृत योग
१५ " गुरौ उफायां रवियोग श्रेष्ठ
१६ " शुक्रे हस्तभे अमृतयोगे
२० " भौमे अनुराधा बुद्धपूर्णिमायां
२२ " गुरौ मूलभे लग्नमु. श्रेष्ठ
२५ " रवि उषा. स.सि.योग
२६ " चन्द्रे श्रव. स.सि.यो. भद्रात्पूर्वे
१ जून रवि अश्विनी सर्वार्थसि.योग
६ " शुक्रे पुनर्वसु सर्वार्थसिद्धियोग
७ " शनौ पुष्यभे पंचमी में
१२ " गुरौ हस्तभे १०.१० उप.
१६ " चन्द्रे अनु.९.२३से, स.सि.यो.
१८ " बुधे मूलभे पूर्णिमायां
२१ " शनौ उषा. भद्रात्पूर्वे श्रेष्ठ
२६ " गुरौ उभायां छत्रयोगे
५ जुलाई शनौ पुष्यभे श्रेष्ठ
९ " बुधे उफा. प्रवर्धमान योगे
१२ " शनौ स्वात्यां स.सि.योग
१४ " चन्द्रे अनुराधा स.सि.योग
१८ " शुक्रे उषा. गुरुपूर्णिमायां
२० " रवि धनिष्ठायां ल.चिन्त.
२५ " शुक्रे अश्विनी स.सि.योग
३० " बुधे आर्द्रायां लग्न श्रेष्ठ
६ अग. बुधे हस्तभे रवियोग
८ अग. शुक्रे स्वाती भद्रात्पूर्वे
१४ " गुरौ उषायां धाता योग
१८ " चन्द्रे शतभिषा अमृतयोग
२१ " गुरौ रेवती सर्वार्थसिद्धियोग
२४ " रवि रोहिण्यां श्रीकृष्णज.
२७ " बुधे पुनर्वसु अभिजितमुहूर्त्त
१सित. चन्द्रे उफा. श्रीवत्सयोगे
४ " गुरौ स्वाती सुस्थिरयोग में
६ " शनौ अनुराधा शुभयोग में
११ " गुरौ उषा. भद्रावास पाताले
१३ " शनौ धनि. प्रवर्धमान योगे
२अक्टू. गुरौ स्वात्यां सुस्थिरयोगे
४ " शनौ अनुराधा अमृतयोग
९ " गुरौ श्रवण विजयादशमी
१४ " भौमे रेवत्यां शरत्पूर्णिमा
१९ " रवि मृगशिर सौम्य योगे
२२ " बुधे पुष्यभे लग्न श्रेष्ठ
२६ " रवि उफा. सर्वार्थसिद्धियोग
३१ " शुक्रे अनु. सर्वार्थसिद्धियोग
२ नव. रवि मूल भद्रोत्तर लग्नचिन्त
८ " शनौ शतभिषा आनन्दयोग
१७ " चन्द्रे पुनर्वसु अभिजित्मु.
१८ " भौमे पुष्यभे प्रवर्धमान योग
२३ " रवि हस्तभे स.सि.योग
२४ " चन्द्रे चित्रायां अभिजित्
३० " रवि मूलभे स.सि.योग
३दिस. बुधे श्रवण लग्नचिन्त.
४ " गुरौ धनिष्ठा श्रीवत्सयोगे
७ " रवि उभा. १४।४७से
८ " चन्द्रे रेवती लग्नचिन्त.
१२ " शुक्रे रोहिणी पूर्णिमायां
१६ जन. शुक्रे उफा. भद्रात्पूर्वे श्रेष्ठ
१८ " रवि चित्रायां लग्नचिन्त.
२१ " बुधे अनुराधा स.सि.योग
२३ " शुक्रे मूल सुस्थिर योग
२८ जन. बुधे धनिष्ठा मित्रयोग श्रेष्ठ
१ फर. रवि रेवती प्रवर्धमानयोग
५ " गुरौ रोहिणी भद्रात्पूर्वेलग्न
८ " रवि रविपुष्यामृत योग
११ " बुधे उफा. स्थिरयोग में
१५ " रवि स्वात्यां भद्रात्पूर्वे
१९ " गुरौ मूलभे भद्रावास पाताले
२२ " रवि उषा. सर्वार्थसिद्धियोग
२७ " शुक्र उभा. लोकप्रसिद्धमुहूर्त्त
१ मार्च रवि अश्विनी आनन्दयोग
४ " बुधे रोहिणी शुभदयोग
८ " रवि रविपुष्यामृत योग
१३ " शुक्रे हस्तभे अमृतयोग

☆ देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त ☆

१७अप्रैल गुरौ उफायां अभिजित मु.
१८ " शुक्रे उफा. हस्त ल.चिन्त.
२० " रवि चित्रा चैत्री पूर्णिमायां
२१ " चन्द्रे स्वात्यां लग्न २ व ४
२३ " बुधे अनु. स्वर्गेभद्राशुभे...
२५ " शुक्रे मूल लग्न वृष-कर्कश्रे.
२७ " रवि उषा. स.सि.यो. र.यो.
२८ " चन्द्रे श्रवण लग्न वृष-कर्क
१ मई गुरौ शत. स्थिर लग्नशुभ
९जुलाईबुधे हस्त स.सि.यो.में श्रे.
१० " गुरौ चित्रायां भद्रोत्तर अभि.
१५ फर. रवि स्वाती अभि.मु. स्थिरल.
१९ " गुरौ मूल अभि.मु. भद्रापाताले
२२ " रवि उषा. लग्न चिन्त्येत्बुधः
२७ " शुक्रे उभा. लोकप्रसिद्धमुहूर्त्त
१ मार्च रवि अश्विनी स.सि.योग

☆ तामसी देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त ☆

१८जुलाई शुक्रे उषा. लग्न ६ व ८
२० " रवि श्रवण धनिष्ठायां
२३ " बुधे उभायां स्थिर लग्न
३०जुलाई बुधे आर्द्रायां ल.चिन्त.
६अग. बुधे हस्त स.सि.योग
१० " रवि अनुराधा रवियोग
१४ " गुरौ उषायां स्थिर लग्न
१८ " चन्द्रे शतभिषा लग्नचिन्त.
२४ " रवि रोहिण्यां लग्नचिन्त.
२७ " बुधे पुनर्वसु लग्नचिन्त.
१सित. चन्द्रे उफा. श्रीवत्सयोगे
४ " गुरौ स्वात्यां स्थिरयोगे
११ " गुरौ उषा. भद्रावास पाताले
१३ " शनौ धनिष्ठा प्रवर्धमानयोगे
२अक्टू. गुरौ स्वाती स्थिरयोगे
४ " शनौ अनुराधा अमृतयोगे
९ " गुरौ श्रवण विजयादशमी
११ " शनौ शतभिषा भद्रोत्तरं
१८ " शनौ रोहिणीपंचम्यां,ससियो.
१९ " रवि मृगशिर स्थिरलग्नमें
२२ " बुधे पुष्यभे लग्न चिन्त.
२६ " रवि उफा. धनतेरस
३१ " शुक्रे अनु. स.सि.योग
२ नव. रवि मूलभे भद्रोत्तरं
५ " बुधे उषायां स्थिर लग्न
८ " शनौ शतभिषा आनन्द योग
११ " भौमे रेवती शुभयोग में

☆ श्रीगणेश प्रतिष्ठा मुहूर्त्त ☆

२४अप्रैल गुरौ ज्येष्ठा लग्न ३ व ५
३ सित. बुधे चित्रायां ११।४१ल.स्थिर
१३ फर. शुक्रे हस्त स्थिरलग्न वृष

☆ श्रीदुर्गा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त ☆

१४अप्रैल चन्द्रे पुष्यभे अभिजित्मु.
११ जुलाई शुक्रे चित्रा एवं स्वात्यां
८अक्टू. बुधे उषायां लग्न चिन्त.
७ दिस. रवि उभायां कुम्भ लग्न मे
१९ फर. गुरौ मूलभे अभिजित्

☆ श्रीशिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त ☆

४ मई रवि अश्विन्यां स्वर्गेभद्रा...
२३ फर. चन्द्रे श्रवण स्थिर लग्न में

☆ श्रीगौरी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त ☆

८ अप्रैल भौमे भरणीसौभाग्य३ससियो.
२७ फर. शुक्रे उभायां तृतीयायां

☆ श्रीविष्णुरामकृष्णप्रतिष्ठामुहूर्त्त ☆

१७ अप्रैल गुरौ उफायां ल.चिन्त.
२४ अग. रवि रोहिण्यां अभिजितमु.
८ मार्च रवि रविपुष्यामृतयोग
होलाष्टक दोष सर्वत्र मान्य नहीं है।

☆ उद्योग संचालन मुहूर्त्त ☆

१२ अप्रैल शनौ पुनर्वसु भद्रात्पूर्वे
१८ " शुक्रे हस्तभे लग्न कर्क
१ मई गुरौ शत.भद्रोत्तर ल.चि.
११ " रवि रविपुष्यामृतयोगे
१६ " शुक्रे हस्तभे अभिजितमु.
२६ " चन्द्रे श्रवण स.सि.योग
१ जून रवि अश्विनी स.सि.योग
६ " शुक्रे पुनर्वसु अभिजितमु.
७ " शनौ पुष्यभे भद्रोत्तर
२३ " चन्द्रे धनिष्ठा अभिजितमु.
२८ " शनौ अश्विनी भद्रात्पूर्वे
४ जुलाई शुक्रे पुष्यभे स.सि.योग
१२ " शनौ स्वात्यां सिद्धियोग
२५ " शुक्रे अश्विनी श्रीवत्सयोगे
६ अग. बुधे हस्त स.सि.योग
८ " शुक्रे स्वात्यां भद्रात्पूर्वे
१८ " चन्द्रे शतभिषा अमृतयोगे
२१ " गुरौ अश्वि. १३।४३ उप.
२७ " बुधे पुनर्वसु लग्नचिन्त.
४ सित. गुरौ स्वाती स्थिरयोगे
१२ " शुक्रे श्रवण रवियोग श्रेष्ठ

२अक्टू. गुरौ स्वाती स्थिरयोगे
९ " गुरौ श्रवण विजयदशमी
१० " शुक्रे धनिष्ठा स.सि.योग
५ नव. बुधे श्रवण कुम्भ लग्ने
८ " शनौ शतभिषा आनन्दयोगे
१७ " चन्द्रे पुनर्वसु अभिजितमु.
२३ " रवि हस्त सर्वार्थसिद्धियोग
३ दिस. बुधे श्रवण कुम्भ लग्न में
५ " शुक्रे शतभिषा भद्रात्पूर्वे
२८ जन. बुधे धनिष्ठा ल. मीन मेष
२९ " गुरौ शतभिषा ल. चिन्त.
२ फर. चन्द्रे अश्विनी अभिजितमु.
१ मार्च रवि अश्विनी स.सि.योग

☆ विप्पणी (व्यापार) मुहूर्त्त ☆

१० अप्रैल गुरौ रोहिण्यां रवियोग
११ " शुक्रे मृगशिर श्रेष्ठ
१७ " गुरौ उत्तराफाल्गुनी
२० " रवि चित्रायां पूनो
२३ " बुधे अनुराधा स.सि.योग
२७ " रवि उषा. स.सि.यो. र.यो.
१ मई गुरौ शतभिषायां भद्रोत्तरं
७ " बुधे रोहिणी अक्षयतृतीया
१० " शनौ पुनर्वसु रवियोग
११ " रवि रविपुष्यामृत योग
१५ " गुरौ उफायां भद्रात्पूर्वे
१६ " शुक्रे हस्त अमृतयोग
२५ " रवि उषा. स.सि.योग
२६ " चन्द्रे श्रवण सिद्धियोग
२८ " बुधे शतभिषायां
३१ " शनौ रेवत्यां श्रेष्ठ
१ जून रवि अश्विनी स.सि.यो.
६ " शुक्रे पुन. सर्वार्थसिद्धियोग
११ " बुधे उफायां स.सि.योग
१२ " गुरौ हस्त दसम्यां
१३ जून शुक्रे चित्रायां श्रेष्ठ
१६ " चन्द्रे अनुराधा स.सि.योग
२१ " शनौ उषा. भद्रात्पूर्वे
२३ " चन्द्रे धनिष्ठायां शुभयोगे
२६ " गुरौ उभा. अभिजित्
२८ " शनौ अश्विनी भद्रात्पूर्वे
४ जुलाई शुक्रे पुनर्वसु स.सि.योग
९ " बुधे उफा. हस्त श्रेष्ठ
१० " गुरौ हस्त भद्रोत्तर
१२ " शनौ स्वात्यां, स.सि.यो.
१४ " चन्द्रे अनुराधा स.सि.यो.
१८ " शुक्रे उषा. पूर्णिमायां
२० " रवि धनिष्ठायां श्रेष्ठ
२३ " बुधे उभायां ल.चिन्त
२५ " शुक्रे रेवती श्रीवत्स योग
६ अग. बुधे हस्त स.सि.योग
७ " गुरौ चित्रा अभिजितमु.
८ " शुक्रे स्वाती भद्रात्पूर्वे
१४ " गुरौ उषायां रवियोगश्रेष्ठ
१८ " चन्द्रे शतभिषायां
२१ " गुरौ रेवती अश्विनी
२२ " शुक्रे अश्विनी श्रेष्ठ
२४ " रवि रोहिण्यां १०।२से
२७ " बुधे पुनर्वसु श्रेष्ठ
२८ " गुरौ गुरुपुष्यामृतयोग
१ सित. चन्द्रे उफा. श्रीवत्स योग
४ " गुरौ स्वात्यां स्थिर योग
६ " शनौ अनुराधा शुभयोग
११ " गुरौ उषा. लग्नचिन्त.
१ अक्टू. बुधे स्वाती ल.चिन्त.
२ " गुरौ स्वाती स्थिरयोग
४ " शनौ अनुराधायां
९ " गुरौ श्रवण दशहरा
१० " शुक्रे धनिष्ठायां श्रेष्ठ
१९ " रवि मृगशिर श्रेष्ठ
२२ अक्टू. बुधे पुष्यभे श्रेष्ठ
२६ " रवि उफा. स.सि.योग
३१ " शुक्रे अनुराधा स.सि.योग
५ नव. बुधे उषायां श्रेष्ठ
६ " गुरौ श्रवण भद्रोत्तरं
८ " शनौ शतभिषायां
१० " चन्द्रे उभायां ल.चिन्तनीय
१७ " चन्द्रे पुनर्वसु श्रेष्ठ
२२ "" शनौ उफा. अभिजित
२३ " रवि हस्त स.सि.योग
२४ " चन्द्रे चित्रायां श्रेष्ठ
३ दिस. बुधे श्रवणभे श्रेष्ठ
४ " गुरौ धनिष्ठा श्रीवत्सयोगे
५ " शुक्रे शतभिषा सौम्ययोगे
८ " चन्द्रे रेवती अभिजित्
१२ " शुक्रे रोहिणी भद्रोत्तर
१४ " रवि पुनर्वसु १०।१२से
१५ जन. गुरौ उफायां ११।२४से
१८ " रवि चित्रा - स्वाती
२१ " बुधे अनुराधा स.सि.योग
२८ " बुधे धनिष्ठा शतभिषा
३१ " शनौ उभायां वसंतपंचमी
१ फर. रवि रेवती प्रवर्धमानयोग
५ " गुरौ रोहिण्यां ल.चिन्त.
८ " रवि रविपुष्यामृत योग
१४ " शनौ चित्रायां स.सि.योग
१५ " रवि स्वाती भद्रात्पूर्वे
२१ " शनौ उषायां श्रेष्ठ
२२ " रवि उषायां स.सि.योग
२७ " शुक्रे उभायां लोकप्र.मुहूर्त्त
२८ " शनौ रेवती धाता योग
१ मार्च रवि अश्विनी स.सि.योग
४ " बुधे रोहिणी शुभयोग
८ " रवि पुष्यभे श्रीवत्स योग
१३ " शुक्रे हस्त - चित्रायां

वस्तुखरीदने(संग्रह) के शुभ नक्षत्र

अश्विनी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती माने गये हैं। रिक्ता व क्षय:तिथि एवं भौमवार रहित सभी दिन ग्राह्य कहे गये हैं।

बेचने (विक्री) के नक्षत्र

भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आर्द्रा, आश्ले., मघा, पूफा., उफा. विशाखा, मूल, पूषा. उषा. पूभा. और उभा., वारों में गुरु,सोम श्रेष्ठ माने गये हैं। मु.चिन्तामणि में मघा के बजाय ज्येष्ठा को निषेध कहा है। अत:युक्तियुक्त विचारकर काम में लेना चाहिए। व्यापारमें गुरु शुक्रास्तकाल क्षयाधि मास, खरमास, होलाष्टक, पितरपक्ष, सिंहस्थकाल, लुप्त संवत्सर आदि का दोष मान्य नहीं रहता। यह तो मन की इच्छावृत्ति पर आधारित कृत्य हैं। सर्वार्थ सिद्धि, अमृतसिद्धि, रविपुष्य, गुरुपुष्यामृतयोग व रवि योगसे शुद्ध होने वाला दिन व्यापार वृद्धि, उत्तरोत्तर सौख्य-समृद्धिमें सहायक होता है। कृत्य करने वालेका मान-सम्मान वृद्धि, नित्यानन्द का अनुभव होता है।

☆ वाहन क्रयविक्रय मुहूर्त्त ☆

१८ अप्रैल शुक्रे हस्त अभिजितमु.
२० " रवि चित्रा पूर्णिमायां
२३ " बुधे अनुराधा स्वर्गेभद्रा..
२८ " चन्द्रे श्रवण १०।४०से

३० अप्रैल बुधे शत. ल.चिन्त.
१ मई गुरौ शत. भद्रोत्तरं
९जुलाई बुधे हस्त स.सि.यो.
१२ " शनौ स्वाती स.सि.यो
२० " रवि धनिष्ठायां श्रेष्ठ
२१ " चन्द्रे शत.शुभयोग
२५ " शुक्रे रेवती अश्विनी
६ अग. बुधे हस्त स.सि.योग
७ " गुरौ चित्रा ११।१७से
८ " शुक्रे स्वाती भद्रात्पूर्वे
१८ " चन्द्रे शत. अमृतयोग
२१ " गुरौ रेवती स.सि.योग
२५ " चन्द्रे मृग. १३।५१से
२७ " बुधे पुनर्वसु ल.चिन्त.
२८ " गुरौ गुरुपुष्यामृत योग
४ सित. गुरौ स्वात्यां अभिजित
६ " शनौ अनुराधा शुभयोग
१३ " शनौ धनि.प्रवर्धमानयोग
२अक्टू. गुरौ स्वात्यां स्थिरयोग
४ " शनौ अनु.अमृतयोग
९ " गुरौ श्रवणस्वयंसिद्धिमु.
१० " शुक्रे धनि. स.सि.योग
१९ " रवि मृग. सौम्ययोग
२६ " रवि उफा. धनतेरस
३१ " शुक्रे अनु. स.सि.योग
६ नव. गुरौ श्रवण भद्रोत्तरश्रे.
८ " शनौ शत. आनन्दयोग
१७ " चन्द्रे पुन. ल.११-१२
२३ " रवि हस्त स.सि.योग
२४ " चन्द्रे चित्रायां अभिजित
३ दिस. बुधे श्रवण अभिजित
४ " गुरौ धनिष्ठाश्रीवत्सयो.
५ " शुक्रे शत. भद्रात्पूर्वे
८ " चन्द्रे रेवती ल.चिन्त.
१२ " शुक्रे मृग. भद्रोत्तरं

१३ फर. शुक्रे हस्त १२।३५से
१४ " शनौ चित्रा स्थिरलग्ने
१ मार्च रवि अश्विनीस.सि.योग

नोट:- कार, बस, ट्रक, स्कूटर, मोटरसाईकिल, वायुयान आदि वाहन लेने पर अपने देवस्थान में या शक्तिस्थान में दर्शनार्थ अवश्य जाना चाहिए। कुलगुरु आचार्य से पूजा कराते समय सिंदूर से स्वस्तिकचिह्न,शुभ-लाभ एवं मारुति यन्त्र बनवाकर रखने वालों को वाहन से अत्यन्त लाभ होता है।

☆ नलकूपारम्भ मुहूर्त ☆

१७अप्रैल गुरौ उफायां अभिजित
१८ " शुक्रे उफा. शुभयोग
२३ " बुधे अनु. भद्रात्पूर्वे
२८ " चन्द्रे उषा. रवियोग
३० " बुधे धनि. ८।१६उप.
१ मई गुरौ शत. भद्रोत्तरं
९जुलाई बुधे हस्त स.सि.योग
१४ " चन्द्रे अनु. स.सि.योग
१८ " शुक्रे उषा. पूर्णिमायां
२१ " चन्द्रे शत. १२।५९तक
२३ " बुधे उभा. ९।४९उप.
२४ " गुरौ रेवती भद्रात्पूर्वे
६ अग. बुधे हस्त स.सि.योग
१३ " बुधे पूषा. लग्न तुला
१४ " गुरौ पूषा. व उषा.श्रेष्ठ
१८ " चन्द्रे शत. अमृतयोग
२१ " गुरौ रेवती स.सि.योग
२८ " गुरौ गुरुपुष्यामृत योग
१सित. चन्द्रे उफा.श्रीवत्सयोग
४ " गुरौ स्वाती स्थिरयोग
१०सित. बुधे पूषा. श्रीवत्सयोग
१२ " शुक्रे श्रवण स.सि.यो.
९अक्टू. गुरौ श्रवणस्वयंसिद्धिमु.
१० " शुक्रे धनिष्ठायां श्रेष्ठ
२४ " शुक्रे मघायां ल.धनु
३१ " शुक्रे अनु. स.सि.योग
३ नव. चन्द्रे पूषा. ९।५५उप.
५ " बुधे उषा. लग्न धनु
६ " गुरौ श्रवण भद्रोत्तरं
१० " चन्द्रे उभायां श्रेष्ठ
१७ " चन्द्रे पुन.अभिजितमु.
३दिस. बुधे श्रवण अभिजितमु.
४ " गुरौ धनि. श्रीवत्सयोग
५ " शुक्रे शत. भद्रात्पूर्वे
८ " चन्द्रे रेवती अभिजित
१२ " शुक्रे रोहिणी भद्रोत्तरं
२० फर. शुक्रे पूषा. लग्न वृष
२७ " शुक्रे उभा. लो.प्र.मु.
४ मार्च बुधे रोहिणी शुभयोगे

श्रीगणेश,लक्ष्मीन्द्र,वरुण,कुबेर, कुलदेव, वास्तुदेव तथा शिव स्वरूप भैरव भगवान् का सविधि पूजन करके उपरोक्त मुहूर्तों में नल लगाने, बोरिंग करवाने, कुंआ-बावडी खुदवाने पर उसमें उत्तम जल की प्राप्ति होती है।

☆ हलप्रवहणबीजोप्तिमुहूर्त ☆

१०अप्रैल गुरौ रोहिणी
११ " शुक्रे मृगशिर
१७ " गुरौ उफायां
१८ " शुक्रे उफायां
२३ " बुधे अनुराधा
२५ " शुक्रे मूलभे
३० अप्रैल बुधे धनिष्ठायां
७ मई बुधे रोहिणी
११ " रवि रविपुष्यामृत
१५ " गुरौ उफायां
२५ " रवि उषायां
२६ " चन्द्रे श्रवण
६ जून शुक्रे पुनर्वसु
११ " बुधे उफायां
१६ " चन्द्रे अनुराधा
२१ " शनौ उषायां
२३ " चन्द्रे धनिष्ठायां
२६ " गुरौ उभायां
२८ " शनौ अश्विनी
२ जुलाई शुक्रे पुनर्वसु
५ " शनौ पुष्यभे
९ " बुधे हस्तभे
१० " गुरौ चित्रायां
१२ " शनौ स्वाती
१४ " चन्द्रे अनुराधा
१८ " शुक्रे उत्तराषाढ़ा
२१ " चन्द्रे शतभिषा
२३ " बुधे उभायां
२५ " शुक्रे रेवती
२८ " चन्द्रे रोहिणी
६ अग. बुधे हस्तभे
७ " गुरौ चित्रायां
८ " शुक्रे स्वाती
१३ " बुधे मूल पूषा.
१८ " चन्द्रे शतभिषा
२१ " गुरौ रेवती
२२ " शुक्रे अश्विनी
२७ " बुधे पुनर्वसु
२८ " गुरौ पुष्यभे
४ सित. गुरौ स्वाती
६ " शनौ अनुराधा
११ सित. गुरौ उत्तराषाढ़ा
१३ " शनौ धनिष्ठा
१ अक्टू. बुधे चित्रायां
४ " शनौ अनुराधा
६ " चन्द्रे मूलभे
९ " गुरौ श्रवण
१० " शुक्रे धनिष्ठा
१५ " बुधे अश्विनी
१९ " रवि मृगशिर
२४ " शुक्रे मघा
२५ " शनौ उफायां
२९ " बुधे स्वाती
३१ " शुक्रे अनुराधा
२ नव. रवि मूलभे
५ " बुधे उत्तराषाढ़ा
६ " गुरौ श्रवण
८ " शनौ शतभिषा
१० " चन्द्रे उत्तराभाद्रपद
१२ " बुधे अश्विनी
१७ " चन्द्रे पुनर्वसु
२० " गुरौ मघायां
२२ " शनौ उत्तराफाल्गुनी
२४ " चन्द्रे चित्रायां
३ दिस. बुधे श्रवण
८ " चन्द्रे रेवती
१२ " शुक्रे रोहिणी
१९ " शुक्रे उत्तराफाल्गुनी
२२ " चन्द्रे स्वाती
२५ " गुरौ अनुराधा
१ जन. गुरौ धनि.शतभिषा
८ " गुरौ रोहिणी
१५ " गुरौ उफायां
२१ " बुधे अनुराधा
२८ " बुधे धनिष्ठा
२ फर. चन्द्रे अश्विनी
५ " गुरौ रोहिणी
८ " रवि पुष्यभे
१२ " गुरौ उत्तराफाल्गुनी
१९ " गुरौ मूलभे
१ मार्च रवि अश्विनी
४ " बुधे रोहिणी
७ " शनौ पुनर्वसु
१३ " शुक्रे हस्त चित्रा
२१ " शनौ उत्तराषाढ़ा
२३ " चन्द्रे धनिष्ठा

☆ अक्षरारम्भ मुहूर्त ☆

२० अप्रैल रवि चित्रायां
२३ " बुधे अनुराधा
९ जुलाई बुधे हस्त स.सि.यो
१८ " शुक्रे उत्तराषाढ़ा
१५ फर. रवि स्वाती
१ मार्च रवि अश्विनी

☆ विद्यारम्भ मुहूर्त ☆

१४अप्रैल चन्द्रे पुष्य आश्लेषा
१७ " गुरौ पूफा. उफा.
१८ " शुक्रे उफा. श्रेष्ठ
२० " रवि चित्रायां
२३ " बुधे अनुराधा
२५ " शुक्रे मूलभे श्रेष्ठ
३० " बुधे धनिष्ठा
९जुलाई बुधे हस्त स.सि.यो
१८ " शुक्रे उत्तराषाढ़ा
१५ फर. रवि स्वाती
२० " शुक्रे मूल पूषा.
२२ " रवि उषा. स.सि.यो
२७ " शुक्रे उभायां
१ मार्च रवि अश्विनी

☆ अखण्डपाठारम्भ मुहूर्त्त ☆

गुरु आश्रित नक्षत्र से श्री रामचरित मानस पाठारम्भ मुहूर्त्त दिन नक्षत्र तक गिनने पर १६ की संख्या तक अर्थलाभ-सिद्धिप्रद, आगे २४ तक गिनने पर नेष्ट, उपरान्त २७ तक गिनने पर मोक्षप्रद जानें। शुक्ल पक्ष में देवप्रीत्यर्थ तथा कृष्णपक्ष में पितर बाधा एवं रोगशान्त्यर्थ श्रेष्ठ रहता है। गोस्वामी जी ने हरिनाम को जैसे भी बने स्मरण कर लिया जाय तो सर्वथा मंगलदायक कहा है।

☆ श्रीमद्भागवतसप्ताहमुहूर्त्त ☆

आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन शुक्लपक्ष, कार्त्तिक और मार्गशीर्ष अत्यन्त श्रेष्ठ, अन्यान्य आचार्यों के मत से चैत्र व पौष को छोड़कर सभी मास श्रेष्ठ माने गये है। तिथियाँ २। ३। ५। ६। १०।११।१२।१५ सोम, बुध, गुरु व शुक्रवार। नक्षत्र अश्विनी, मृग.पुन.पुष्य, मघा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., पूभा. तथा रेवती भद्रा दोष रहित।

पितरमोक्ष के लिए- मृत्युतिथि, श्राद्धदिन, अगहन शुक्ल चौदस अथवा अमावस्या में भागवत् कथा का शुभारम्भ होना चाहिए।

☆ नृत्यारम्भ मुहूर्त्त ☆

पुष्य,उफा.,हस्त,ज्येष्ठा,उषा.,धनि., शत.,उभा. व रेवती नक्षत्र सत् तिथियाँ मंगलवार को छोड़कर सभी वार नृत्यारम्भ, कलाकृति, नाटक, गायन, कला, फिल्म आदि बनाने के लिए श्रेष्ठ हैं।

☆ चुनावमें नामांकन मुहूर्त्त ☆

दोनों पक्ष की शुभ तिथियाँ- २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५ और कृष्ण पक्ष की १ श्रेष्ठ **शुभ वार-** रवि, सोम, बुध गुरु, शुक्रवार।

सूर्यकी होरा- टेण्डर लेने, चुनाव लड़ने, नौकरी आदि के फार्म भरने, पर्चा जमा करने, राजकाज का चार्ज लेने, शपथ ग्रहण करने में सर्वश्रेष्ठ रहती है। वार चाहे जो भी हो सूर्य की होरा या राशीश की होरा में सफलता सुनिश्चित है।

शुभनक्षत्र- अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., हस्त, स्वाती, अनुराधा, उ.षा., श्रवण, धनिष्ठा, उ.भा. और रेवत

शुभलग्न- जिससे नवम एवं दशम भाव प्रभावशाली हों अर्थात् कोई पापग्रह न हो और लग्न भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो। राशि से चन्द्रमा शुभ स्थान में हो।

शपथग्रहण- जहाँ तक हो सके स्थिर लग्न में करनी चाहिए।

☆ विटोड़ा-काष्ठ संग्रह मुहूर्त्त ☆

सूर्याश्रित नक्षत्र से चान्द्र नक्षत्र तक साभिजित् गणना करके देख लें- ६ नक्षत्र श्रेष्ठ, २ शवदाह नेष्ट, ४ सर्पभय के नेष्ट, ४ श्रेष्ठ, ४ रोगभय, ४ असुख और आगे के ४ नक्षत्रोंमें शुभ रहता है। दोहा- **रविनक्षत्र से षट् भलो, षट् खोटो शुभ चारि। आठ अशुभ शुभ चारि है, उपले धरो विचारि॥** बिटोड़ा (उपले, कण्डे) रखते समय वार चाहे जो भी हो, पंचकों के (धनिष्ठादि पांच नक्षत्र) छोडकर भद्रादि कुयोगरहित दिनमें बिटोड़ा रखना शुभ है।

☆ कालसर्प योग पूजा विधान ☆

कालसर्प योग की शान्ति हेतु यज्ञानुष्ठान कराते समय द्विजाचार्यो को ध्यान रखना चाहिए कि यज्ञ का आरम्भ या समाप्ति पंचमी, अष्टमी, दशमी या चतुर्दशी तिथि वार चाहे जो भी हो, भरणी आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित् और श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ अन्यान्य मध्यम जानने चाहिए। कर्त्ता की राशि से ग्रहगणना विचार परमावश्यक है। वर्ष मध्ये कालसर्प योग जिस समय बने उस समय अनुष्ठान सर्वश्रेष्ठ रहता है।

मूल तथा गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्तिकाल

ता. मास घं.मि. से	ता. मास घं.मि. तक
सन् २००८ ई.	
५ अप्रैल २३।३० "	७अप्रैल १८।३२ "
१४ " ७। २ "	१६ " ८।१९ "
२३ " २४। ८ "	२६ " ५।५९ "
३ मई १०। ६ "	५ मई ५। ५ "
११ " १३।१६ "	१३ " १३।५४ "
२१ " ६।१९ "	२३ " १२। ८ "
३० " १९।४० "	१ जून १५।३८ "
७ जून २१।३१ "	९ " २०।४७ "
१७ " १२।२१ "	१९ " १८। १ "
२६ " २७। ९ "	२८ " २४।३३ "
५ जुला. ७।२५ "	७जुला. ५।२८ "
१४ " १८।५१ "	१६ " २४।२६ "
२४ " ८।५४ "	२६ " ७।१६ "
१ अग. १७।३४ "	३ अग. १५।१३ "
१० " २६।११ "	१३ " ७।४९ "
२० " १४।२८ "	२२ " १२।४२ "
२८ " २६।२७ "	३०- " २४।३६ "
७ सित. १०। ८ "	९ सित. १५।५७ "
१६ " २१।३३ "	१८ " १८।४५ "
२५ " ९।१५ "	२७ " ८।२५ "
४ अक्टू. १८। ७ "	६अक्टू. २४। ८ "
१४ " ६।४८ "	१५ " २७। ० "
२२ " १४।४० "	२४ " १४।२६ "
३१ " २५।३२ "	३ नव. ७।३६ "
१० नव. १७।२० "	१२ " १३।२९ "
१८ " २०।४५ "	२० " १९।५३ "
२८ " ८। ७ "	३० " १४।१० "
७ दिस. २७।१३ "	९ दिस. २४।३० "
१६ " ५।२० "	१७ " २६।५२ "
२५ " १४।१२ "	२७ " २०।१७ "
सन् २००९ ई.	
४ जन. १०।५४ "	६ जन. ९।५२ "
१२ " १६।१६ "	१४ " १२।२३ "
२१ " २०।३० "	२३ " २६।४० "
३१ " १६।३९ "	२ फर. १६।३६ "
८ फर. २७।२८ "	१० " २३।१९ "
१७ " २७।४३ "	२० " ९।४८ "
२७ " २२।२२ "	१ मार्च २१।५९ "
८ मार्च १२।४१ "	१० " ९।२५ "
१७ " ११।५३ "	१९ " १७।४१ "
२७ " ५।४१ "	२८ " २८।१८ "

पंचक प्रारम्भ व समाप्तिकाल

ता. मास घं.मि. से	ता. मास घं.मि. तक
सन् २००८ ई.	
२९ अप्रैल २४।३० "	४ मई ७।४९ "
२७ मई ७।४२ "	३१ " १७।५६ "
२३ जून १३।३१ "	२७ जून २६। ९ "
२० जुलाई १९।१३ "	२५ जुलाई ८।१९ "
१६ अग. २६। १ "	२१ अग. १३।४३ "
१३ सित. १०।२३ "	१७ सित २०।१६ "
१० अक्टू. १९।४२ "	१५ अक्टू. ५। ५ "
६ नव. २८।३८ "	११ नव. १५।४२ "
४ दिस. १२। ४ "	८ दिस. २६।१४ "
३१ " १८। ४ "	५ जन. १०।४५ "
सन् २००९ ई.	
२७ जन. २३।५५ "	१ फर. १६।५३ "
२४ फर. ६।५० "	२८ " २२।२१ "
२३ मार्च १४।५८ "	२८ मार्च ५।१० "

साक्षेपयुक्त विवाह मुहूर्त्ताः

श्रीव्रजभूमि पंचांग में सुनिश्चित किए सभी मुहूर्त्त शास्त्रोक्त दृष्ट्या शुद्ध होते हैं। जिन लग्न मुहूर्त्तों में किंचित दोष परिलक्षित हुए हैं, उन्हें पूर्ण शुद्ध मुहूर्त्तों में स्थान न देकर यहाँ दर्शाया गया है, ताकि सुविज्ञजन अपनी-अपनी सुविधा, देशकाल परिस्थित्यानुसार मुहूर्त्तों का चयनकर लाभके भागीदार बन सकें। समय ही सर्वोपरीय है, जिसमें लग्नकी शुद्धतासे सभी दोष निर्दोष हो जाते हैं।

यथा- सर्वेदोषाः विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदा भवेत्।

१५ अप्रै. भौमे मघाशनियुति, मृत्युवान, रात्रौ लग्न अभाव
२४ " गुरौ मूलभे भौमवेध मृत्युपंचक निषेध
२५ " शुक्रे मूलभे भौमवेधदोषः वेधसर्वत्रवर्जयेत्
२८ " चन्द्रे श्रवण शनिवेध दोषः
२९ " भौमे धनिष्ठायां राहु युति केतूवेध चोरवान

५ मई से ६ जुलाई तक शुक्रास्तःदोषः

१५जुलाई भौमे मूल रविर्वेधः मासान्तदोषः
१६ " बुधे मूल सूर्यवेध, संक्रांतिदिन
१७जुलाई गुरौ उषा.रविनिरशःवैधृतिपातभद्रादोषः
१९ " शनौ श्रवणभे शनिवेध
२० " रवि धनिष्ठायां राहुर्युति शुक्रकेतुर्वेधः
२५ " शुक्रे अश्विन्यां भौमवेध रोगवान
५ अग. भौमे उफा. हस्तभे भौमवेध मृत्युपंचक
१५ " शुक्रे उषा. श्रवण मासान्ते मृत्युवानः
२२ " शुक्रे अश्विन्यां लग्नाऽभावः
२ सित. भौमे हस्तभे मं.बु.शु.त्रग्रही युतिदोषः
७ " रवि अनु. लग्नाभाव भद्रादोषः
१२ " शुक्रे श्रवण राहु की युति अतिनेष्ट
१३ " शनौ धनिष्ठा केतुर्वेध रोगवानः
६ अक्टू. चन्द्रे मूलभे मृत्युपंचक
९ " गुरौ श्रवण राहुयुति दोषः विजया १०
१० " शुक्रे धनिष्ठायां केतुर्वेध भद्रादोषः
१७ " शुक्रे रोहिण्यां व्यतिपात मृत्युवान
१८ " शनौ रोहिण्यां मृत्युपंचक
२३ " गुरौ मघायां राहुर्वेध भद्रायां
२७अक्टू.चन्द्रे हस्तभे वैधृतिपात मृत्युवान
५ नव. बुधे उषा. मृत्युवान भुजंगपात
६ " गुरौ श्रवण राहु की युतिदोषः
७ " शुक्रे धनिष्ठायां केतुर्वेधदोषः
१२ " बुधे अश्विन्यां शनिवेध व्यतिपातः
१५ " शनौ मृगशिर मासान्ते भद्रादोषः
१९ " बुधे मघायां राहुर्वेध दोषः
२० " गुरौ मघायां राहुर्वेध वैधृतिपात
३ दिस. बुधे श्रवण राहुर्युति रोगवानः
४ " गुरौ धनिष्ठायां केतुर्वेध व्याघातयोगः
८ " चन्द्रे रेवत्यां शनिर्वेध व्यतिपातदोषः
१३ " शनौ मृगशिर वेधदोष लग्नाऽभावः
२३ फर. चन्द्रे श्रवणभे राहुर्युति दोषक्षीणेन्दु
२४ " भौमे धनिष्ठायां क्षीणेन्दु दोष उत्पातयोग
३ मार्च भौमे रोहिण्यां मृत्युपंचक वैधृतिपात
४ " बुधे रोहिण्यां मृत्युवान भद्रा होलाष्टक
१३ " शुक्रे चित्रायां मासान्तदोष रविर्वेधः
१४ " शनौ स्वात्यां रविसंक्रमण दिन

मुहूर्त्त शोधनकार्य बहुत सूक्ष-बूझ के साथ किया जाता है फिर भी त्रुटि रह जाना सहज मानवीय गुण है। अतः विद्वान स्वयं सुधार कर लें।

अत्र क्वचित्स्मृति दृष्टिदोषश्चेत्क्षंतव्यं सुधीभिः।

लग्नानां दोष निवृत्ति हेतु शास्त्रीय परिहार

विवाह में मुख्य रूप से लता, पात, युति, वेध, जामित्र, बाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धा तिथि, इन दस दोषोंका विचार किया जाता है। इनमें से पापग्रहकृत युति, वेध, मृत्युबाण एवं क्रांतिसाम्य (महापातदोष) अपरिहार्य होने से त्याज्य माने गये हैं। **युतिदोष-** चन्द्रमा वृष, मिथुन, सिंह एवं कन्या राशि में हो तो युतिदोष नहीं होता। अर्थात् रोहि.,मृग.,मघा,उफा,हस्त और चित्रा नक्षत्र के विवाह मुहूर्तोंमें युतिदोष का परिहार होने से विवाह शुभफलदायक रहता है। **वेधदोष-** शुभ ग्रह बुध, गुरु, शुक्र का चरणगत वेध ही त्याज्य माना गया है, सम्पूर्ण नक्षत्र नहीं। पापग्रह सूर्य, भौम, शनि, राहु तथा केतु से विद्ध नक्षत्रों का हम अपने पंचांगों के विवाह मुहूर्तोंमें सर्वथा त्याग करते हैं। **मृत्युबाण-** सूर्य के १।१०।१९।२८ भोग्यांश से अग्रिमांशोंका समय मृत्युबाण से दूषित रहता है, जिसका परिहार न होनेसे सर्वथा त्याज्य मानते हैं।

क्रान्तिसाम्य- स्थूल न लेकर गणितांगत ही लिया जाता है, जो कि महापात गणित प्रक्रिया द्वारा सिद्धि होता है। हम अपने पंचांगोंमें उसी का उल्लेख करते हैं।

लतादोष- उज्जैन के आसन्न क्षेत्रोंमें ही माना जाता है, देश के अन्य भागोंमें नहीं। इसी तरह **पातदोष-** कुरुक्षेत्र में, **युतिदोष-** बंगाल में, **जामित्रदोष-** मथुरा में, **एकार्गलदोष-** कश्मीर में, **उपग्रहदोष-** कश्मीर के पश्चिम भाग में और **दग्धातिथिदोष-** भोपाल के आसन्न क्षेत्रोंमें माना जाता है। **'सर्वत्रवर्ज्यश्च भुजङ्गपातः'** अतः शूल योगान्ते नक्षत्र भुजंगपात से दूषित होने के कारण सभी जगह त्याज्य है। **जामित्रदोष-** चन्द्रमा उच्चका,शुभग्रहकी राशिमें, मित्रके वर्गमें हो तो जामित्रदोष सुखद रहता है।

लग्न- चाहे विवाह की हो या अन्य किसी शुभ कार्य की, लग्न से ६।८ शुक्र-चन्द्र यदि नीच, शत्रुक्षेत्री हों तो दोषावह नहीं होते। आठवें स्थान का मंगल कर्क, मिथुन, कन्या का हो, अथवा अस्त हो तो दोषकारक नहीं होता। अतः लग्नेश छटे आठवें होने पर दोषमुक्त नहीं कहा जा सकता। **कर्त्तरीदोष-** लग्न से ४।५।९ या १०वें भाव में गुरु, शुक्र या बुध हों तो कर्त्तरीदोष नहीं रहता। कर्त्तरीदोष कारक ग्रह नीच, शत्रुक्षेत्री या अस्त हो तो दोष समाप्त हो जाता है। लग्न से द्वितीय भाव में शुभग्रह तथा बारहवें भाव में गुरु हो तो कर्त्तरी दोष मान्य नहीं। बल्कि ग्रह संयोग से शुभ फलदायक बन जाता है।

अन्धे, बहरे, पंगु एवं बधिर लग्न- जो माने गये हैं, वह अपने स्वामी से या गुरु से दृष्ट हों तो दोषमुक्त हो जाते हैं। लग्न से १।४।५।९।१०वें स्थान में बुध, गुरु, शुक्र में से कोई ग्रह हो तो वर्षदोष, अयनदोष, ऋतु, तिथि, मास, पक्ष, दग्धा तिथि, अन्ध, कांण, बधिर आदि सभी दोष समाप्त हो जाते हैं। बुध बैठा हो तो सौ दोष, शुक्र दो सौ दोष तथा गुरु एक लाख दोषोंको समाप्तकर शुभ फल देने में समर्थ होता है।

सप्तमस्थ ग्रह- विवाह लग्न से ही दोषकारक होते हैं, क्योंकि उक्तस्थान दाम्पत्य जीवन से सम्बन्ध रखता है। अन्य कार्योंमें इसका विचार आवश्यक नहीं, देखना सिर्फ यह होता है कि लग्न अशुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त तो नहीं है। लग्न में बैठे बुध गुरु शुक्र तथा छटे-आठवें स्थान के पाप ग्रहोंको बहुत ही शुभ फलदायक माना गया है। **लग्न की गिनती-** कुछ आचार्य कर्त्ताकी राशि से लग्न ४।८।१२वीं होने पर ठीक नहीं, ऐसा कहते हैं। उनकी यह धारणा सार्थक नहीं, यह नियम तो केवल ग्रहगणना पर लागू होता है। पंचांगोंमें लग्नमुहूर्त्त सोच विचारकर सुनिश्चित किये जाते हैं, जो शुभप्रद रहते हैं।

सम्वत्-शाके-सनादि विवरण

स्वस्ति श्रीमन्नृपतिवीरविक्रमादित्य राज्यात्संवत् २०६५ शकसंवत् १९३० अब्दप्रवेशेसृष्टितोगताब्दाः१९५५८८५१०९ कल्पादितो गताब्दाः१९७२९४९१०९प्रमाणितः। ईस्वीसन्२००८व२००९ हिजरी१४२९व३०श्रीमहावीरनिर्वाणजैनसं.२५३४व३५फसली १४१५व१६भा.स्वतन्त्रसं.६१व६२कलिगताब्दाः५१०९ शेषाब्दाः ४२६८९१वंगला१४१५कौल्लम११८३व८४श्रीराम-रावण युद्धतोगताब्दाः८८०१५०श्रीकृष्णावतारः५२३४ कुरुपाण्डवयुद्ध तोगताब्दाः५१०९मलयालमसन् १९८३व८४पारसी१९७७व७८

राजा मन्त्री आदि विवरण

अथाऽस्मिन्वर्षेराजारविः। उपराजा चन्द्रः। मन्त्रीरविः। सस्येशो बुधः। धान्येशश्चन्द्रः। मेघेशः शनिः। रसेशोगुरुः। नीरशोभौमः। फलेशःशनिः। धनेशोभौमः। दुर्गेशःशनिः। ऐते दशाधिकारिणः। तत्रबार्हस्पत्यमानेन प्रभवादिषष्ट्यिब्दानां मध्ये विष्णुर्विंशतिकायां १५वाँ प्लव नाम सम्वत्सरः प्रवर्तते। तस्य मेषाऽर्कसमये गत मासादिः ११।६।५१।५० भोग्यमासादिः०।२३।८।१० पितृदैवतं युगम्। वर्षनाम आषाढ़ः। मेघनाम आवर्तः। रोहिणी निवासःसन्धौ समय निवासः वाणिकगृहे।

☀ सम्वत् आदि के विश्वामान ☀

संवत् विश्वा	१२	वर्षा विश्वा	७	छुधा विश्वा	१५	व्याधिविश्वा	११
स.वाहन	मृगः	धान्य विश्वा	११	तृष्णा विश्वा	१३	व्याधिनाशः"	७
स्तम्भ १	वायु	तृण विश्वा	१५	निद्रा विश्वा	९	आचारविश्वा	५
सोमोतीमावस्या	३	शीत विश्वा	१५	आलस्यविश्वा	५	अनाचार वि.	९
सोम पंचमी	२	तेज विश्वा	११	उद्यम विश्वा	५	मृत्युदरविश्वा	५
अंगारकीचतुर्थी	२	वायु विश्वा	१३	शान्ति विश्वा	१५	जन्मदर विश्वा	३
बुधाष्टमी	२	प्रजावृद्धि "	१५	क्रोध विश्वा	१३	देशोपद्रव "	१
भानु सप्तमी	२	प्रजाक्षयः "	१५	दम्भ विश्वा	५	देशस्वस्थता"	५
रवि दशमी	नैव	विग्रह विश्वा	११	लोभ विश्वा	३	चोरभयविश्वा	११
समयमुहूर्त्ताः	३६०	ऐक्यम्	११३	विलासिता "	१५	चोरभयनाश "	३
समयदिनानि	३५४	सत्यविश्वाआधा		रसनिष्पत्ति "	९	उद्भिजविश्वा	११
तिथि क्षयः	१७	धर्मविश्वाडयोढ़ा		फलनिष्पत्ति"	१३	जरायुज विश्वा	३
तिथि वृद्धिः	९	पाप विश्वा	१८	उत्साहविश्वा	११	अण्डज विश्वा	९
उत्पत्तिविश्वा	९३	शनिदृष्टिःदक्षिणे		उग्रता विश्वा	११	स्वेदज विश्वा	१५
खपति विश्वा	८४	ग्रहणस्पर्श नं२सू.		पुण्य विश्वा	१३		

☆ अथ दशाधिकारी शुभाशुभ फलम् ☆

सूर्ये नृपे स्वल्पफलाश्च मेघाः स्वल्पं पयोगोपुजनेपुपीड़ा।
स्वल्पं सुधान्यं फलमल्पवृक्षाश्चौराग्निबाधानिधनंनृपाणाम्।।

राजा सूर्य का फल- वर्षा कम होने से फल फूल, हरी सब्जियां, अन्नादि की पैदावार कम होगी। रोग, आदि व्याधि, चोर, युद्धादि, भयातंक से पशु पक्षी जीवजन्तु, श्रेष्ठजन त्रस्त रहेंगे। किसी देशके प्रभावी नायकको काल कवलित करेगा। मंहगाई से त्राहि-त्राहि मचेगी।

चन्द्रे नृपे मंगलशोभानानि प्रभूतवृष्टिः प्रचुरं च धान्यम्।
सौख्य जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधिजरानराणाम्।।

उपराजा चन्द्र का फल- वर्षमध्य मंगलोत्सवों की वृद्धि हो, पर्याप्त वृष्टि से अन्नादि का उत्पादन अच्छा रहे, सौख्यसमृद्धि बढ़े, राजालोग व्याधिनाश का प्रयत्न करते रहें। कुल मिलाकर योगायोग से साल मध्य यम बीते। स्त्रीवर्ग के मान सम्मान ख्याल किया जाय।

नृपभयंगदतोपि हि तस्करात्प्रचुर धान्यधनादि महितले।
रसचयं हि समर्घतम तदारवि रमात्यपदं हि समागतः।।

मन्त्री सूर्य का फल- राज्याधिकारी, प्रभवी राष्ट्रनयकों में युद्ध, आतंकवाद के चलते भय व्याप्त रहेगा। तस्कर, चोर, उचक्के, लफंगे, असामाजिकतत्व मौज मस्ती करेंगे। प्रजा में रोग शोक सन्ताप बढ़ेंगे। धन धान्यादि की वृद्धि से संग्रह करने वालोंको लाभ होगा।

जलधारा जलराशिमुचोभृशं सुखसमृद्धियुतं निरुपद्रवम्।
द्विजगणः श्रुतिपाठकरः सदा प्रथम सस्यपतौ सतिबोधने।।

सस्येश बुध का फल- देश के अधिकांश भागोंमें समयोचित वर्षा होने से पैदावार अच्छी हो, सौख्य समृद्धि बढ़े। द्विजमात्र विद्वान सतजन्य धार्मिक कृत्योंमें लगे रहें। शान्ति के प्रयासोंको बल मिले।

चन्द्रेधान्यधिपेजाते प्रजा वृद्धिः प्रजायते।
गोधूमाः सर्षपाश्चैव गोपुक्षीरं तदा बहु।।

धान्येश चन्द्र का फल-देश में जनसंख्या वृद्धि हो, गेहूँ, जौ, चना आदि अन्न, दाल, चावल, फल, फूल, मेवादि बढ़ें, दुधारु पशुओंमें दूध की मात्रा अधिक रहने से जनता राहत महसूस करने लगे।

रविसुते जलदस्यपतौ भवेद्विरलवृष्टिरतीव वसुंधरा।
मनसिताप करो नृपतिः सदा विविधरोगरता जनता मता।।

मेघेश शनि का फल- इस वर्ष विरलवृष्टि(यत्र तत्र न्यूनाधिक मात्रा में वर्षा हो) विश्वके राजा (प्रभावशालीलोग) परस्पर द्वेष रखें, एक दूसरेके लिए परेशानी का कारण बनें। देश-देशान्तर में रोग उपद्रवादि की भरमार रहे। भयंकर तूफान, भूकम्पादि के कारण क्षति हो।

यदि गुरुरसपो जन सौख्यदः कमलवन्ति सरांसितृणानि च।
जनपदाद्विजपूजनतत्परा: गजसुवाजिरथोष्ट्रयुता नृपाः।।

रसेश गुरु का फल- अच्छा होने से विश्व के किन्हीं देशोंमें जनजीवन सुखमय रहे। तालाब-सरोवर आदि में कमलपुष्पादि खिलते शोभायमान लगें। घास-फूंस पशुचारे की वृद्धि हो, जनपदोंमें द्विजमात्र विद्वान मान सम्मान प्राप्त करें। धन सम्पन्न बड़े लोग नाना प्रकार के वाहनोंका आनन्द लें। संचार व्यवस्था सुदृढ़ बनें।

नीरसेशोयदाभौमः प्रवाल रक्तवाससाम्।
रक्तचन्दन ताम्राणामर्घवृद्धिर्दिनेदिने।।

नीरसेश मंगल का फल- मूंग, लालवस्त्र, लालचन्दन, ताँबा आदि के भावोंमें वृद्धि हो। खनिज पदार्थोंकी कमी अखरती रहे। किंवा खान में अथवा यान में किसी विशेष प्रकार की घटना दुःख का कारण बने।

यदि शनिः फलपः फलहा भवेज्जनित पुष्पगणश्च द्रुमःसदा।
हिमभयं वर तस्कर जन्तुभिर्जनपदो गदराशि समाकुलः।।

फलेश शनि का फल- इस वर्ष अनियमित वर्षा होने से नाना औषधि, पुष्प, फल, फूंल, हरी सब्जियों की कमी रहे, किंवा भारी हिमपात के कारण शीतलहर प्रभावित करे। टिड्डी, चूहा, कातरा, हिंसक जीवजन्तु, जंगली जानवरोंका भय बना रहे।

असितमौल्यकरोधरणीसुतः शरदि वाभ्रकरस्तुष धान्यहत।
सहसिमासि भवेद्विगुणं तदा नरपतिर्जनशोक विधायकः।।

धनेश मंगल का फल- वर्षमध्ये कभी तेजी कभी मन्दी का चक्र चले, मन्त्रिस्तर के राजनेता चिन्तित रहें। आगे चलकर भावों में तेजी हो। प्रभावी व्यक्ति शोक का कारण बने।

रविसुते गढ़पालिन विग्रहैःसकलदेशगताश्चालिताजनाः।
विविधवैरि विशेषित नागराः कृषिधनं शलभैर्मुषितं भुविः।।

दुर्गेश शनि का फल- इस वर्ष धरा पर कहीं युद्धभय व्याप्त रहे, राष्ट्रनयकोंमें भारी कलह हो, आम जनता में वैर-विरोध बढ़े, भयातंक से दुःखित प्रजा पलायन करे, खड़ी फसलों में टिड्डी,

चूहा, माहूँ नामक कीड़ा लगने से क्षति हो। कोई राष्ट्र अस्तव्यस्त हो जाय तो आश्चर्य नहीं।

प्लवाब्दे निखिला धात्री वृष्टिभिः परिपूरिता।
प्रभवान्ति तथा रोगव्याकुलात्वीतिभीतिभिः॥

प्लव नामक सम्वत्सर में- इस वर्ष किंवा भारी बाढ़, रोगोत्पात, भूकम्प, दिग्दाह, अवर्षणवसात् क्षति हो, दुर्भिक्षजन्य भयातंक की व्याकुलता, भय विषाद का कारण बने।

आषाढ़ाब्देतु राजानः सर्वदाकलहोत्सुका।
क्वचिदीप्तिः कृचिद्भीति क्वचिद्वृद्धिःर्जलं क्वचित्॥

आषाढ़ नामक वर्ष में- राजा लोग(मन्त्रिस्तर के राजनेता) आपसी राजनैतिक कलह में उलझे रहें। आम जनता में हर्ष-विषाद के संयोग बनते रहें। असमंजस परिपूर्ण परिस्थितियोंमें समय बीते। दुराचारियोंके कुकृत्यों से त्राहि-त्राहि मचे।

मेघनाम आवर्त का फल-''आवर्तेछिन्नवृष्टिःस्यात्'' इस वर्ष छिन्नवृष्टि संयोग में कहीं वर्षा हो तो कहीं बिलकुल न हो, पानी की कमी के कारण चौतरफा हो हल्ला मचे। जल बंटवारे को लेकर राज्य सरकारें लड़ती झगड़ती रहें।

रोहिणी निवास सन्धि में होने का फल-''खण्डवृष्टिश्चसंधिपु'' इस वर्ष पृथ्वी के किसी खण्ड पर वर्षाधिक्य से बाढ़ तो किसी खण्ड पर अनावृष्टि क्षति का कारण बने। किसानों को कृषि कार्यो में भारी मशक्कत करनी पड़े। उत्पादन कमती रहे।

समय निवास वैश्य के घर होने से-''वणिक गृहे शुभंनास्ति'' व्यापारियोंके लिए अच्छा रहे. विदेश व्यापार अच्छा चले, देश में वर्चस्व बढ़ता जाय, धनिक लोग खूब धनवान बनें।

सारांश

वर्षेश अर्थात् राजा का प्रभाव कश्मीर अफगानिस्तान में सर्वाधिक होता है, ऐसे ही मन्त्री का पूर्वीप्रदेश कलिंगादि में, सस्येश का ईशान व मध्यदेश में, धान्येश का नर्मदा तट (मध्य प्रदेश में) मेघेश का मगध (बिहार) में, रसेश का कोंकण और गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवादि में, फलेश का पश्चिमी भाग कश्मीरादि में तथा धनेश व दुर्गेश का फल सर्वत्र समान घटित होता है।

❊ वर्ष के चार स्तंभ ❊

चैत्रशुदीएकम्- रेवती के अभाव में जल का स्तंभ सुदृढ़ नहीं है अतः समयोचित वर्षा न होने से पैदावार की कमी रहेगी। पेयजल बिजली के अभाव में त्राहि त्राहि मचेगी। प्रादेशिक राज्य सरकारोंमें नदियों के जल बंटवारे को लेकर संघर्ष होगा।

वैशाखशुक्लप्रतिपदा- को भरणी न होने से तृण का स्तंभ सही नहीं है, अतः इस वर्ष घास फूंस पशुचारा, फल फूल पत्ते हरी सब्जी आदि की कमी रहेगी। मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़ती जायेगी। चोरी छिपे उपयोगी वस्तुओं का विदेशोंमें निर्यात होगा।

ज्येष्ठशुदीएकम्- में मृगशिर की व्याप्ति से वायु का स्तम्भ अच्छा है। वर्षमध्ये शीतल-मन्द-सुगन्ध तीनों प्रकार की वायु सामान्य गति से बहती रहेगी। किंवा आंधी तूफान बवण्डर के कारण क्षति होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में झन्झावात, दुर्दिनवसात् क्षति सम्भव है।

आषाढ़शुक्लप्रतिपदा- में पुनर्वसु का योग न के बराबर होने से अन्न का स्तंभ बिगड़ गया है। पैदावार की कमी से मंहगाई बढ़ेगी। राज्यसरकारें कृषि कार्योको प्राथमिकता देंगी। निर्यात नीति में ढ़ील बरतने से पदार्थोकी भारी कमी पड़ सकती है। देश में विदेशी वर्चस्व बढ़ता जायेगा। कल कारखाने उद्योग धन्धों का विस्तार होगा। विदेशी तकनीक के माध्यम से भौतिक सुख सुविधाएं तो बढ़ेंगी मगर प्राकृतिक सम्पदा की कमी होती जायेगी। वर्ष में दो स्तम्भ श्रेष्ठ दो नेष्ट होने से राज्य की गाड़ी राम नाम पर चलेगी।

✯ आर्यमान विचार ✯

आखै तीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्तिक पुण्या कृतिका टारो॥
मही माहि खलवली प्रकाशै, कहै भड्डरी साख विनाशै।

सवत् २०६५ में आखातीज बुधवार के दिन रोहिणी का योग अर्धाल्प है। पौष की अमावस्या दिन शनिवार को मूल का पूर्ण संयोग श्रेष्ठ है। राखी वाले दिन शनिवार में श्रवण नक्षत्र अर्धाधिक्य है और कार्तिक की पूर्णिमा बृहस्पतिवार में कृतिका का अभाव है अतः इस वर्ष चार में दो आर्यमान श्रेष्ठ होने से शुभाशुभ मिलेजुले फल होंगे। विश्व के किन्हीं भागोंमें युद्ध का षड्यन्त्र रचा जायेगा तो कहीं शान्तिप्रतिक्रिया को बल मिलेगा। स्वदेश में राजनीति की शह पर विदेशियों का वर्चस्व बढ़ेगा। भौतिक सम्पदा कुछ घरानों के हाथ में सिमटती जायेगी।

नागफल- इस वर्ष द्वादश नागों में से वृष नामक १२वां नागका फल- **यदावृषाभिधानस्य भुजंगाख्योयदाभवेत्। तदास्यादिकाल्पत्वंसुतराभीतितोभयम्॥** खेती में नुकसान हो। ईतिभय (प्राकृतिक आपदा) का डर बना रहे, विषाक्त जीवजन्तु तंग करें, पशुओंमें बीमारी फैले बेजुबान जानवर काल का ग्रास बनें।

गुर्राफल- इस्लामी वर्ष १४३० का राजा मंगल होने से खाड़ी के देशोंमें उग्र वातावरण बनेगा। अधिकांश देश स्वरक्षा की चिन्ता से ग्रस्त रहेंगे। सायंकाल की लग्नकुण्डली का निरीक्षण करने से पता चलता है कि **ईसा मूसा की लड़ाई होन लगे तो आश्चर्य नहीं।** पाकिस्तान अफगानिस्तान में इस वर्ष भारी उठा पटक होगी। राजनैतिक रद्दोबदल का योग बन रहे है।

❊ आर्द्रा प्रवेश ❊

इस वर्ष भगवान भास्करका आर्द्रा नक्षत्रमें प्रवेश २१जून आषाढ़ कृष्ण तीज शनिवार रात्रि ९बजकर ४३मिनट पर मकर लग्नमें होगा। **शनेश्चरस्यावारेचेन्द्र विरादिद्रांग तोयदि। कृशतातर्हि लोका नांनितांतमन्दबुद्धिता॥** शनिवार में आर्द्राप्रवेश होने बौद्धिक सम्पदा पर असर पड़े, झन्झावात, दुर्दिन, भूस्खलन, भूकम्पके झटके झेलने पड़ें, कहीं अवर्षणवसात् क्षति हो।

शनि की साढ़ेसाती और लघुकल्याणी ढैय्या विचार

६अप्रैल २००८से २मार्च २००९तक संवत् २०६५में शनि सिंह राशि में भ्रमण करता रहेगा। ता.३मई को मार्गी होकर २८जुलाई २००८को पू.फा. नक्षत्र में चला जायेगा। ता.२६नवम्बर को उफा. नक्षत्र में प्रवेश करेगा। १ जनवरी २००९ को वक्री होकर ५फरवरी को पुनः पूफा. नक्षत्र में लौटकर आ जायेगा। अतः इस वर्ष शनि मघा.पूफा.उफा. नक्षत्र एवं सिंह राशि वालों को त्रस्त करेगा। सभी राशियों का फल नीचे लिखे चक्र से जान लें।

ग्रहदोष शान्त्यिर्थ दानोपाय- जिन्हें शनि की साढ़ेसाती से दिक्कत हो रही हो उन्हें प्रतिदिन लौहवानयुक्त वर्तिका कड़वे तेल में डालकर

सन्ध्यासमय पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। बन्दरों को गुड़-चना, भैंसे को उरद के आटे की रोटी खिलानी चाहिए। काले वस्त्र कम्बलादि, छायापात्र, तुलादान करने तथा जटायुक्त ११ कच्चे नारियल सिर के ऊपर से ग्यारह-ग्यारह बार उतारकर बहते पानी में प्रवाहित करने से बहुत लाभ होता है। भौतिक समृद्धि के साथ-साथ मान सम्मान बढ़ता है। सुख-शान्ति मिलती है।

२६ मार्च२००९तक सिंह के शनि का राशिफल

मेष ५	सिंह १B	धनु ९	**लौहपादफल-** भौतिक विकास अच्छा हो। सिंह राशि वाले हृदय के बीच ढैय्या से त्रस्त रहें।
वृष ४C	तुला ११	मकर ८C	**ताम्रपादफल-** वृष व मकर राशि वाले त्रस्त रहें। तुला राशि वाले विकासोन्नति की ओर बढ़ें।
मिथुन ३	वृश्चिक १०	मीन ६	**रजतपादफल-**अच्छा होने से लाभोन्नति मिले। मंगलोत्सव वृद्धि से हर्ष हो। यात्रा अच्छी रहेगी।
कर्क २D	कन्या १२ A	कुम्भ ७	**स्वर्णपादफल-**संशय, भ्रम, अपव्यय का संयोग बने। कर्क कन्या राशि वाले अधिक परेशान रहें।

A शिर पर चढ़ती साढ़ेसाती नेष्ट। B हृदय के बीच की ढैय्या नेष्ट।
C- लघुकल्याणी ढैय्या अशुभ D- यत्र-तत्र आवागमन श्रमाधिक्य।

९ दिसम्बर २००८ तक धनु के गुरु का राशिफल

राशियाँ	शुभाशुभ फल
मेष	विकास में गतिरोध
वृष	कानूनी आदिव्याधि
मिथुन	सुखोपभोग मिले
कर्क	लाभालाभ समान
सिंह	गतिरोध में क्षोभ
कन्या	गृहस्थी के झन्झटबढ़ें
तुला	पारिवारिक सुख
वृश्चिक	लाभोन्नति हर्ष हो
धनु	आदि व्याधि कष्ट
मकर	लाभालाभ समान
कुम्भ	विकास का बलमिले
मीन	व्यवसायमेंगतिरोधक्षोभ

१० दिसम्बर २००८ से मकर के गुरु का राशिफल

राशियाँ	शुभाशुभ फल
मेष	चिन्ता व्यथा
वृष	आदि व्याधि
मिथुन	लाभालाभ
कर्क	व्यवसाय वृद्धि
सिंह	भौतिक उन्नति
कन्या	कटुता वादिता
तुला	सफलता मिले
वृश्चिक	आदि व्याधि
धनु	व्यवसाय वृद्धि
मकर	परगृहस्थमेंक्षोभ
कुम्भ	यशोपलब्धि
मीन	भौतिकलाभखुशी

❊ लाभ-खर्च ज्ञानाय कोष्ठक ❊

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
खर्च	११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२

लाभ-खर्च देखने की विधि-

लाभ-खर्च अंक जोड़कर १ घटा दें, ८का भाग दें। शेष यदि १बचे तो उत्तम लाभ, २शेष में सुख, ३शेष में क्लेश, ४शेष में रोग उपद्रव, ५शेष में अपयश, ६शेष में मान-सम्मान, ७शेष में विजय लाभ और ०शेष बने तो वर्ष में हानि हो, चिन्ता व्यथा रहे। अन्यान्य ग्रहोंका गोचरमें गतिशील प्रभाव भी चिन्तनीय विषय है।

दक्षिण भारतीय लाभखर्च ज्ञानाय कोष्ठक

राशियाँ	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	२	११	१४	८	११	१४	११	२	५	८	८	५
खर्च	१४	५	२	२	११	२	५	१४	५	१४	१४	५

राहुकाल ज्ञानाय चक्र

रवि	सायं	१६।३०	से	१८।००	तक
चन्द्र	प्रातः	७।३०	से	९।००	तक
मंगल	दिवा	१५।००	से	१६।३०	तक
बुध	दिवा	१२।००	से	१३।३०	तक
गुरु	दिवा	१३।३०	से	१५।००	तक
शुक्र	प्रातः	१०।३०	से	१२।००	तक
शनि	प्रातः	९।००	से	१०।३०	तक

राहुकाल किस दिन कब से कब तक रहेगा। साथ के चक्र से सहज समझ सकते हैं। राहुकाल से दूषित समय का नर्मदा से दक्षिणी भारत में बहुत विचार किया जाता है। उत्तर भारतमें मान्यता नगण्य है। धीरे-धीरे उत्तरमें मान्यता बढ़ रही है।

यमगण्ड ज्ञानाय चक्र

रवि	दिवा	१२।००	से	१३।३०	तक
चन्द्र	प्रातः	१०।३०	से	१२।००	तक
मंगल	प्रातः	९।००	से	१०।३०	तक
बुध	प्रातः	७।३०	से	९।००	तक
गुरु	प्रातः	६।००	से	७।३०	तक
शुक्र	दिवा	१५।००	से	१६।३०	तक
शनि	दिवा	१३।३०	से	१५।००	तक

गुलिक योग ज्ञानायचक्र

दिवा	१५।००	से	१६।३०	तक
दिवा	१३।३०	से	१५।००	तक
दिवा	१२।००	से	१३।३०	तक
प्रातः	१०।३०	से	१२। ०	तक
प्रातः	९।००	से	१०।३०	तक
प्रातः	७।३०	से	९।००	तक
प्रातः	६।००	से	७।३०	तक

❊ अभिजित् नक्षत्र ❊

ता. मास	घं.मि.	स	घं. मि.	तक
२७ अप्रेल	२८।१३	"	-।-	"
२८ "	-।-	"	१२।२१	"
२५ मई	१०।३७	"	१८।५३	"
२१ जून	१६।१९	"	२४।३६	"
१८ जुलाई	२२।१९	"	-।-	"
१९ "	-।-	"	६।३८	"
१५ अगस्त	५।४२	"	१३।४९	"
११ सितम्बर	१४। ३	"	२२।१४	"
८ अक्टूबर	२२।४८	"	-।-	"
९ "	-।-	"	७। ७	"
५ नवम्बर	६।५०	"	१५।१५	"
२ दिसम्बर	१३।३४	"	२१।५४	"
२९ "	१९।३१	"	२७।३९	"
२५ जनवरी	२५।४५	"	-।-	"
२६ "	-।-	"	१०।११	"
२२ फरवरी	८।५५	"	१७।१८	"
२१ मार्च	१६।५४	"	२५।२२	"

नोट:- उषा. और श्रवण के मध्य राशिचक्र में अभिजित् नामक नक्षत्र वर्तमान रहता है, जिसका विवरण प्रायः पंचांगकार नहीं देते। पाठकों की सुविधा हेतु प्रतिवर्ष हम अपने पंचांगों में उल्लेख करते हैं। किस मास व तारीख में कितने बजे से कितने बजे तक अभिजित् नक्षत्र रहेगा; यह ऊपर दर्शाया गया है। उक्त अवधि में बच्चे का जन्म हो तो शास्त्राज्ञानुसार उसका नाम अभिजित् के चार चरण जू, जे, जो, खा प्रथमाक्षर तुल्य रखना चाहिए।

सरस्वती पुत्र विद्वान लेखकों से- निवेदन है कि आप अपनी ज्योतिष, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र एवं वास्तु से सम्बन्धित अप्रकाशित मौलिक रचनायें तथा तेजी-मन्दी परिलेख प्रतिवर्ष जुलाई से पहले पंचांग कार्यालय में भेज दिया करें। अपने यहाँ के पर्वोत्सवों की जानकारी दें, ताकि उन्हें सूची में सम्मिलित किया जा सके।

सूर्यादि ग्रहोंके निरयन राशि नक्षत्रप्रवेश, वक्री-मार्गी, उदयास्तादि विवरण सं. २०६५ (सन् २००८-०९)

सूर्य नक्षत्र राशि सञ्चार

ता.	मास	नक्षत्र	राशि	घं. मि.
१३	अप्रैल	अश्विनी	मेष	१८।३०
२७	"	भरणी		१०।२६
१०	मई	कृत्तिका		२८।३२
१४	"		वृष	१५।२४
२४	"	रोहिणी		२४।५३
७	जून	मृगशिर		२२।३७
१४	"		मिथुन	२२। ३
२१	"	आर्द्रा		२१।४३
५	जुलाई	पुनर्वसु		२१।२६
१६	"		कर्क	८।५७
१९	"	पुष्य		२०।५०
२	अगस्त	श्लेषा		१५।३२
१६	"	मघा	सिंह	१७।२३
३०	"	पूफा.		१३।२२
१३	सित.	उफा.		७।१४
१६	"		कन्या	१७।२३
२६	"	हस्त		२२।४९
१०	अक्टू.	चित्रा		११।४५
१६	"		तुला	२९।२१
२३	"	स्वाती		२२।२१
५	नव.	विशाखा		३०।२३
१५	"		वृश्चिक	२९। ८
१९	"	अनुराधा		१२।३१
२	दिस.	ज्येष्ठा		१६।४४
१५	"	मूल	धनु	१९।४६
२८	"	पूषा.		२२।१
१०	जन.	उषा.		२३।५८
१३	"		मकर	३०।२७
२०	"	अभिजित्	प्रवृत्तौ	१९।४०
२३	"	श्रवण		२६।१४
२४	"	अभिजित्	निवृत्तौ	२३।१२
५	फर.	धनि.		२९।२६
१२	फरवरी		कुम्भ	१९।२४
१९	"	शत.		९।५२
४	मार्च	पूभा.		१६। ६
१४	"		मीन	१६।१६
१७	"	उभा.		२४।३६

मंगल राशि सञ्चार

ता.	मास		राशि	घं. मि.
२८	अप्रैल		कर्क	१४।४८
२१	जून		सिंह	१६।५८
९	अग.		कन्या	२६।५२
२५	सित.		तुला	११। ६
७	नव.		वृश्चिक	२६।४५
१९	दिस.		धनु	११।३३
२७	जन.		मकर	२६।२९
७	मार्च		कुम्भ	१६।३१

बुध राशि सञ्चार

ता.	मास		राशि	घं. मि.
१४	अप्रैल		मेष	२९।५०
२९	"		वृष	१७।४६
२७	मई	वक्री		७।४४
२०	जून	मार्गी		५।४७
६	जुलाई		मिथुन	१८।५०
२३	"		कर्क	२०।५२
७	अगस्त		सिंह	११।२३
२४	"		कन्या	२७।३७
२४	सित.	वक्री		२३।१४
१६	अक्टू.	मार्गी		१६।४०
३१	"		तुला	२६।४९
१९	नवम्बर		वृश्चि.	१७।३७
८	दिस.		धनु	१९।३१
२७	"		मकर	२९।५३
११	जन.	वक्री		२९।३५
२६	"		धनु	२१।२४
१	फरवरी	मार्गी		२२।१०
७	फरवरी		मकर	२१।४१
४	मार्च		कुम्भ	२७।४७
२२	मार्च		मीन	२१।३६

गुरु नक्षत्र राशि सञ्चार

ता.	मास	नक्षत्र	राशि	घं. मि.
९	मई		वक्री	२८।१०
१२	जून	पूषा. ४		१३।५३
१०	जुलाई	पूषा. ३		१७।४०
८	अगस्त	पूषा. २		१८।३९
८	सित.		मार्गी	२०।२२
८	अक्टू.	पूषा. ३		२१।४७
३	नवम्बर	पूषा. ४		२९।४५
२३	"	उषा. १		११। ९
९	दिस.	उषा. २	मकर	२३।२९
२४	"	उषा. ३		२९।२५
८	जनवरी	उषा. ४		१६।३३
२२	"	श्रव. १		२०।२९
५	फर.	श्रव. २		२३। ३
२०	"	श्रव. ३		७।१५
६	मार्च	श्रव. ४		२८।१३
२२	"	धनि. १		२५।३०

शुक्र राशि सञ्चार

ता.	मास		राशि	घं. मि.
२५	अप्रैल		मेष	२१।४३
२०	मई		वृष	६।४८
१३	जून		मिथुन	१६।४२
७	जुलाई		कर्क	२६।३८
१	अगस्त		सिंह	१२।१४
२५	"		कन्या	२२।३१
१९	सित.		तुला	१०।१५
१३	अक्टू.		वृश्चिक	२४।५६
७	नवम्बर		धनु	२०।३५
२	दिसम्बर		मकर	२५।४५
२८	"		कुम्भ	३०।२३
२७	जनवरी		मीन	१२।१५
७	मार्च	वक्री		१३।१०

शनि नक्षत्र राशि सञ्चार

ता.	मास	नक्षत्र		घं. मि.
३	मई		मार्गी	२४।१०
२४	जून	मघा ४		२३।३१
२८	जुलाई	पूफा. १		८।२०
२४	अगस्त	पूफा. २		२९।२४
२०	सित.	पूफा. ३		१८।२९
१९	अक्टू.	पूफा. ४		६।४४
२६	नवम्बर	उफा. १		१८।२९
१	जनवरी		वक्री	७।२०
५	फरवरी	पूफा. ४		१९।१७
२२	मार्च	पूफा. ३		१३।१७

राहु केतु नक्षत्रराशि सञ्चार

ता.	मास	राहु	केतु	घं. मि.
२९	अप्रैल	धनि. २	श्ले. ४	२५।५८
२९	"	मकर	कर्क	२५।५८
१	जुलाई	धनि. १	श्ले. ३	२३।४२
२	सित.	श्रवण ४	श्ले. २	२०।३१
४	नव.	श्रवण ३	श्ले. १	१८। ६
६	जन.	श्रवण २	पुष्य ४	१५।५९
१०	मार्च	श्रवण १	पुष्य ३	१३। ३

हर्षल नक्षत्र सञ्चार

ता.	मास	नक्षत्र		घं. मि.
१४	अप्रैल	पूभा. ३		१४।१०
२७	जून		वक्री	११।१०
१३	सित.	पूभा. २		२३।३०
२७	नव.		मार्गी	१७।३१
५	फर.	पूभा. ३		१६।१०

नेपच्यून राशि सञ्चार

ता.	मास		राशि	घं. मि.
२४	अप्रैल		कुम्भ	१५।३८
२६	मई	वक्री		२६।१४
२८	जून		मकर	१५।१०
२	नव.	मार्गी		१९।१४
१३	फर.		कुम्भ	२९।१५

प्लूटो नक्षत्र सञ्चार

ता.	मास	नक्षत्र		घं. मि.
२	अप्रैल		वक्री	२६।१०
१६	मई	मूल २		२९।१८
९	सित.		मार्गी	२१।१०
१४	दिस.	मूल ३		१७।३७

मंगल उदयास्त

ता.	मास			घं. मि.
९	अक्टू.	अस्त	पश्चि.	१९।२५
८	फर.	उदय	पूर्व	२५।२९

बुध उदयास्त

ता.	मास			घं. मि.
२८	अप्रैल	उदय	पश्चि.	५।५५
२९	मई	अस्त	पश्चि.	१०।४४
१७	जून	उदय	पूर्व	५।३६
१८	जुलाई	अस्त	पूर्व	१५।३०
१०	अग.	उदय	पश्चि.	२६।४६
३०	सित.	अस्त	पश्चि.	१६।३७
१३	अक्टू.	उदय	पूर्व	२५।४६
५	नव.	अस्त	पूर्व	१३।२९
१८	दिस.	उदय	पश्चि.	७।१७
१४	जन.	अस्त	पश्चि.	२४।४४
२६	"	उदय	पूर्व	१७।४९
१६	मार्च	अस्त	पूर्व	२३।४६

गुरु उदयास्त

ता.	मास			घं. मि.
१३	जन.	अस्त	पश्चि.	१४।४४
१०	फर.	उदय	पूर्व	८।२९

शुक्र उदयास्त

ता.	मास			घं. मि.
५	मई	अस्त	पूर्व	८।४४
६	जुलाई	उदय	पश्चि.	८।१०
२६	मार्च	अस्त	पश्चि.	९।२०

शनि उदयास्त

ता.	मास			घं. मि.
१७	अग.	अस्त	पश्चि.	१५।१३
२१	सित.	उदय	पूर्व	२७।४१

अयनचलन विषुवदिन ऋतुपरिवर्तन

२१जून- वर्षाऋतुशुभागमन, रविदक्षिणायनं
२३सित.-शरद्सम्पात्,सूर्यदक्षिणगोलमेंप्रवेश
२२दिस.-शिशिरऋतु प्रा., रविउत्तरायणे
१९फर.- ऋतुराजवसंतका शुभागमन पतझड़
२०मार्च-वसन्तसम्पात,महाविषुवदिन,सूर्यका उत्तर गोलमें प्रवेश, दिनरातबराबर

दैनिक ग्रह स्पष्ट

ग्रहस्पष्ट करने की विधि- जिस समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, उक्त समय में से ५ घं. ३० मि. घटा दें, शेष घं. मि. चालन धन होगा। चालन तुल्य लाघवाङ्क कोष्ठक (पृष्ठ ९१-९२) से लाघवाङ्क दशमलव सहित प्राप्त करें। पुनः ग्रहगति के अनुसार लाघवाङ्क लेकर पूर्व प्राप्त लाघवाङ्क में जोड़ दें। कुल योग को लाघवाङ्क कोष्ठक में देखें। जहां समानांक मिलें, उनके ऊपर कला तथा बाईं ओर विकला अथवा(अंश कलादि) प्राप्त फल को प्रातःकालीन स्पष्ट ग्रह में जोड़ने पर तत्कालीन ग्रह स्पष्ट हो जायेगा। यदि वक्री ग्रह हो तो उक्त फल घटाना चाहिए। गतिसाधनसूत्र- **दिनद्वयग्रहान्तरं पूर्वदिने स्पष्टस्य सूक्ष्म गतिः।**

उदाहरण- ता. २१ जून २००८ सायं १७।० बजे मंगल स्पष्ट करना है, तो १७।० में से ५।३० घटाने पर ११घं. ३० मि. चालन धन हुआ। चालन तुल्य लाघवाङ्क कोष्ठक पृ.९१ से .३१९५ अंक प्राप्त किए। उक्त तारीख में मंगल की गति ३५क. ६वि. तुल्य अनुपात से लाघवाङ्क १.६१४३ लेकर पूर्व प्राप्त लाघवाङ्क .३१९५ में जोड दिया। यथा- .३१९५ + १.६१४३ = १.९३३८ हुए। जिन्हें पुनः लाघवाङ्क कोष्ठक में देखा तो १६क. ५४ वि. फल मिला, जिसे २१ जून प्रातः५।३० के मंगल स्पष्ट ३।२९।४३।१३ में जोड़ा तो ४।०।०।७ मंगल स्पष्ट हुआ।

अप्रैल सन् २००८ ई. प्रात: घं.५ मि.३० वजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५८।२८, वेंकटेश (प्लूटो) ८।७।१०।२३

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (व.)	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	र.क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	द. -	उदय	अस्त	रात्रि१२वजे	
७	११।२३।३४।४०	०। ५।११। १	२।१९।२८।३८	११।१३।५७।२०	८।२६।४६।४४	११। ६।५८।२०	४। ८।१७।४४	१०। १।१२।४५	१०।२६।१७।२६	९।२९।३७।३२	६।५२	६।३०	२०।१४	१३। १।४०	७
८	११।२४।३३।४०	०।२०। ९।५१	२।१९।५६।३८	११।१५।५२।४३	८।२६।५२।२५	११। ८।१२।२०	४। ८।१५। ७	१०। १। ९।३४	१०।२६।२०।३२	९।२९।३९। १	७।१४	७।१४	२१।२५	१३। ५।३७	८
९	११।२५।३२।३९	१। ५। ६।५०	२।२०।२४।४९	११।१७।४९।३७	८।२६।५७।५८	११। ९।२६।२५	४। ८।१२।३२	१०। १। ६।२४	१०।२६।२३।३७	९।२९।४०।३१	७।३७	८। ४	२२।३६	१३। ९।३३	९
१०	११।२६।३१।३५	१।१९।५३।३०	२।२०।५३। ७	११।१९।४७।४९	८।२७। ३।१९	११।१०।४०।३१	४। ८।१०। ७	१०। १। ३।१३	१०।२६।२६।४३	९।२९।४२। १	७।५९	९। १	२३।४३	१३।१३।३०	१०
११	११।२७।३०।३०	२। ४।२३।२६	२।२१।२१।३७	११।२१।४७।२५	८।२७। ८।३३	११।११।५४।३१	४। ८। ७।४९	१०। १। ०। २	१०।२६।२९।४९	९।२९।४३।२५	८।२१	१०। ४	--।--	१३।१७।२७	११
१२	११।२८।२९।२२	२।१८।३२।५६	२।२१।५०।१९	११।२३।४८।१९	८।२७।१३।३७	११।१३। ८।३१	४। ८। ५।३७	१०। ०।५६।५१	१०।२६।३२।४९	९।२९।४४।४९	८।४३	११।११	०।४२	१३।२१।२३	१२
१३	११।२९।२८।११	३। २।२०।५३	२।२२।१९। ७	११।२५।५०।३१	८।२७।१८।३१	११।१४।२२।३५	४। ८। ३।३१	१०। ०।५३।४०	१०।२६।३५।५५	९।२९।४६।१३	९। ५	१२।१६	१।३३	१३।२५।२०	१३
१४	०। ०।२६।५८	३।१५।४८। ९	२।२२।४८। ७	११।२७।५३।४९	८।२७।२३।१३	११।१५।३६।३७	४। ८। १।२५	१०। ०।५०।३०	१०।२६।३८।५५	९।२९।४७।३१	९।२६	१३।२०	२।१७	१३।२९।१६	१४
१५	०। १।२५।४३	३।२८।५६।५३	२।२३।१७।१३	११।२९।५८।१३	८।२७।२७।४८	११।१६।५०।३७	४। ७।५९।३१	१०। ०।४७।१९	१०।२६।४१।४९	९।२९।४८।५५	९।४८	१४।२०	२।५४	१३।३३।१३	१५
१६	०। २।२४।२५	४।११।४९।४२	२।२३।४६।३०	०। २। ३।३६	८।२७।३२। ८	११।१८। ४।३६	४। ७।५७।४२	१०। ०।४४। ८	१०।२६।४४।४८	९।२९।५०। ६	१०। ९	१५।१७	३।२७	१३।३७। ९	१६
१७	०। ३।२३। ५	४।२४।२९।१३	२।२४।१५।५४	०। ४। ९।४८	८।२७।३६।२१	११।१९।१८।३०	४। ७।५६। ०	१०। ०।४०।५७	१०।२६।४७।४२	९।२९।५१।२४	१०।३०	१६।११	३।५७	१३।४१। ६	१७
१८	०। ४।२१।४३	५। ६।५७।४२	२।२४।४५।३०	०। ६।१६।४२	८।२७।४०।२४	११।२०।३३।३०	४। ७।५४।१८	१०। ०।३७।४६	१०।२६।५०।३६	९।२९।५२।३६	१०।५१	१७। ५	४।२५	१३।४५। २	१८
१९	०। ५।२०।१९	५।१९।१६।५५	२।२५।१५। ९	०। ८।२४। ०	८।२७।४४।१८	११।२१।४६।३०	४। ७।५२।४८	१०। ०।३४।३६	१०।२६।५३।३०	९।२९।५३।४८	११।१२	१७।५९	४।५४	१३।४८।५९	१९
२०	०। ६।१८।५४	६। १।२८।१६	२।२५।४५। ०	०।१०।३३।३०	८।२७।४७।५८	११।२३। ०।२४	४। ७।५१।२४	१०। ०।३१।२५	१०।२६।५६।१८	९।२९।५५। ०	११।३३	१८।५४	५।२५	१३।५२।५६	२०
२१	०। ७।१७।२६	६।१३।३२।५३	२।२६।१४।५४	०।१२।३९। ०	८।२७।५१।३०	११।२४।१४।२४	४। ७।५०। ६	१०। ०।२८।१४	१०।२६।५९। ६	९।२९।५६।१२	११।५३	१९।४९	५।५७	१३।५६।५२	२१
२२	०। ८।१५।५७	६।२५।३१।५०	२।२६।४५। ०	०।१४।४६। ६	८।२७।५४।४८	११।२५।२८।१८	४। ७।४८।४८	१०। ०।२५। ३	१०।२७। १।५४	९।२९।५७।१८	१२।१४	२०।४५	६।३३	१४। ०।४९	२२
२३	०। ९।१४।२५	७। ७।२६।२६	२।२७।१५।११	०।१६।५२।४१	८।२७।५७।५९	११।२६।४२।१७	४। ७।४७।४२	१०। ०।२१।५२	१०।२७। ४।४१	९।२९।५८।२३	१२।३४	२१।४१	७।१४	१४। ४।४५	२३
२४	०।१०।१२।५१	७।१९।१८।२६	२।२७।४५।२९	०।१८।५८।१७	८।२८। ०।५९	११।२७।५६।११	४। ७।४६।४१	१०। ०।१८।४२	१०।२७। ७।२३	९।२९।५९।२९	१२।५३	२२।३४	७।५९	१४। ८।४२	२४
२५	०।११।११।१६	८। २।१०।१४	२।२८।१५।५९	०।२१। २।४७	८।२८। ३।४७	११।२९।१०। ५	४। ७।४५।४७	१०। ०।१५।३१	१०।२७।१०। ५	१०। ०। ०।२९	१३।१३	२३।२४	८।४९	१४।१२।३८	२५
२६	०।१२। ९।४०	८।१३। ४।५९	२।२८।४६।३५	०।२३। ५।३५	८।२८। ६।२३	०। ०।२३।५९	४। ७।४४।५९	१०। ०।१२।२०	१०।२७।१२।४७	१०। ०। १।२९	१३।३३	--। -	९।४३	१४।१६।३५	२६
२७	०।१३। ८। २	८।२५। ६।३२	२।२९।१७।१७	०।२५। ६।४१	८।२८। ८।५०	०। १।३७।५९	४। ७।४४।१७	१०। ०। ९। ९	१०।२७।१५।२३	१०। ०। २।२९	१३।५२	०।१०	१०।३९	१४।२०।३१	२७
२८	०।१४। ६।२२	९। ७।१९।२४	२।२९।४८। ५	०।२७। ५।२९	८।२८।११। ५	०। २।५१।५३	४। ७।४३।४१	१०। ०। ५।५८	१०।२७।१७।५९	१०। ०। ३।२३	१४।११	०।५२	११।३७	१४।२४।२८	२८
२९	०।१५। ४।४१	९।१९।४८।२५	३। ०।१८।५९	०।२९। १।५३	८।२८।१३।११	०। ४। ५।४७	४। ७।४३।११	१०। ०। २।४८	१०।२७।२०।३५	१०। ०। ४।१७	१४।२९	१।२९	१२।३५	१४।२८।२५	२९
३०	०।१६। २।५९	१०। २।३८।२१	३। ०।५०। ५	१। ०।५५।४१	८।२८।१५। ५	०। ५।१९।४१	४। ७।४२।४७	९।२९।५९।३७	१०।२७।२३।११	१०। ०। ५।११	१४।४८	२। ४	१३।३४	१४।३२।२१	३०
मई सन् २००८ ई. प्रात: घं.५ मि.३० वजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५८।३२, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।६।५७।४६															
१	०।१७। १।१४	१०।१५।५४।१२	३। १।२१।२०	१। २।४६।२८	८।२८।१६।४६	०। ६।३३।३४	४। ७।४२।२८	९।२९।५६।२६	१०।२७।२५।४०	१०। ०। ५।५८	१५। ६	२।३७	१४।३४	१४।३६।१८	१
२	०।१७।५९।२७	१०।२९।३८।२९	३। १।५२।२८	१। ४।३४।१०	८।२८।१८।१६	०। ७।४७।२२	४। ७।४२।२२	९।२९।५३।१५	१०।२७।२८।१०	१०। ०। ६।५२	१५।२४	३।१०	१५।३६	१४।४०।१४	२
३	०।१८।५७।४०	११।१३।५२।१२	३। २।२३।४७	१। ६।१८।३४	८।२८।१९।३४	०। ९। १।१६	४। ७।४२।१६	९।२९।५०। ४	१०।२७।३०।३४	१०। ०। ७।३४	१५।४२	३।४४	१६।४१	१४।४४।११	३
४	०।१९।५५।५१	११।२८।३३। ६	३। २।५५।१६	१। ७।५९।२८	८।२८।२०।४२	०।१०।१५।१०	४। ७।४२।१९	९।२९।४६।५४	१०।२७।३२।५८	१०। ०। ८।२२	१५।५९	४।२१	१७।४९	१४।४८। ७	४
५	०।२०।५४। ९	०।१३।३५।१७	३। ३।२६।५०	१। ९।३६।४६	८।२८।२१।४०	०।११।२९। ४	४। ७।४२।२५	९।२९।४३।४३	१०।२७।३५।२२	१०। ०। ९। ४	१६।१७	५। २	१९। ०	१४।५२। ४	५

मई सन् २००८ ई. प्रात: घं.५ मि.३० वजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५८।३२, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।६।५७।४६

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	र.क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	उ. +	उदय	अस्त	रात्रि१२वजे	
६	०।२१।५२। ९	०।२८।४१।३७	३। ३।५८।३४	१।११।१०।२८	८।२८।२२।२४	०।११।४२।५२	४। ७।४२।४०	९।२९।४०।३२	१०।२७।३७।३९	१०। ०। ९।४६	१६।३४	५।५०	२०।१४	१४।५६। ०	६
७	०।२२।५०।१५	१।१४। ५। १	३। ४।३०।२१	१।१२।४०।१५	८।२८।२२।५७	०।१३।५६।४५	४। ७।४३। ३	९।२९।३७।२१	१०।२७।३९।५७	१०। ०।१०।२७	१६।५०	६।४६	२१।२५	१४।५९।५७	७
८	०।२३।४८।११	१।२९।१०।३२	३। ५। २।१५	१।१४। ६। १	८।२८।२३।२१	०।१५।१०।३३	४। ७।४३।३३	९।२९।३४।१०	१०।२७।४२।१५	१०। ०।११। ३	१७। ७	७।५०	२२।३०	१५। ३।५४	८
९	०।२४।४६।२२	२।१३।५७।११	३। ५।३४।१५	१।१५।२८। ९	८।२८।२३।३२	०।१६।२४।२७	४। ७।४४। ९	९।२९।३१। ०	१०।२७।४४।२७	१०। ०।११।३९	१७।२३	८।५७	२३।२७	१५। ७।५०	९
१०	०।२५।४४।२३	२।२८।११।१६	३। ६। ६।२१	१।१६।४६। ३	८।२८।२३।३०	०।१७।३८।१५	४। ७।४४।४५	९।२९।२७।४९	१०।२७।४६।३९	१०। ०।१२।१५	१७।३९	१०। ६	--।--	१५।११।४७	१०
११	०।२६।४२।२२	३।१२।१४।३२	३। ६।३८।३३	१।१७।५९।४१	८।२८।२३।२०	०।१८।५२। ३	४। ७।४५।३३	९।२९।२४।३८	१०।२७।४८।५१	१०। ०।१२।४५	१७।५४	११।१२	०।१४	१५।१५।४३	११
१२	०।२७।४०।१९	३।२५।४३।३८	३। ७।१०।४५	१।१९। ९।२७	८।२८।२२।५७	०।२०। ५।५७	४। ७।४६।२७	९।२९।२१।२७	१०।२७।५०।५७	१०। ०।१३।१५	१८। ९	१२।१४	०।५४	१५।१९।४०	१२
१३	०।२८।३८।१४	४। ८।४१। ८	३। ७।४३। ९	१।२०।१४।५०	८।२८।२२।२९	०।२१।१९।४४	४। ७।४७।२६	९।२९।१८।१६	१०।२७।५३। २	१०। ०।१३।३८	१८।२४	१३।१२	१।२९	१५।२३।३६	१३
१४	०।२९।३६। ७	४।२१।३४।४३	३। ८।१५।३७	१।२१।१५।५६	८।२८।२१।५८	०।२२।३३।३२	४। ७।४८।३२	९।२९।१५। ६	१०।२७।५५। २	१०। ०।१४। ८	१८।३९	१४। ८	२। ०	१५।२७।३३	१४
१५	१। ०।३३।५९	५। ४। ४।१७	३। ८।४८। ८	१।२२।१२।४४	८।२८।२०।४०	०।२३।४७।१४	४। ७।४९।४४	९।२९।११।५५	१०।२७।५७। २	१०। ०।१४।३२	१८।५३	१५। २	२।२९	१५।३१।३०	१५
१६	१। १।३१।४१	५।१६।२१।३३	३। ९।२०।४४	१।२३। ५। २	८।२८।१९।३२	०।२५। १। २	४। ७।५१। २	९।२९। ८।४४	१०।२७।५८।५६	१०। ०।१४।५०	१९। ७	१५।५५	२।५८	१५।३५।२६	१६
१७	१। २।२९।३७	५।२८।२९।४२	३। ९।५३।२६	१।२३।५२।५०	८।२८।१८।१४	०।२६।१४।५०	४। ७।५२।२६	९।२९। ५।३३	१०।२८। ०।५०	१०। ०।१५।१४	१९।२१	१६।४९	३।२७	१५।३९।२३	१७
१८	१। ३।२७।२४	६।१०।३१।२०	३।१०।२६।१४	१।२४।३६। ८	८।२८।१६।४४	०।२७।२८।३८	४। ७।५३।५६	९।२९। २।२२	१०।२८। २।४४	१०। ०।१५।३२	१९।३४	१७।४४	३।५९	१५।४३।१९	१८
१९	१। ४।२५। ९	६।२२।२८।२७	३।१०।५९। २	१।२५।१४।४४	८।२८।१५। २	०।२८।४२।२०	४। ७।५५।३८	९।२८।५९।१२	१०।२८। ४।३२	१०। ०।१५।४४	१९।४७	१८।३९	४।३३	१५।४७।१६	१९
२०	१। ५।२२।५२	७। ४।२२।३५	३।११।३२। १	१।२५।४८।४३	८।२८।१३। ८	०।२९।५६। ७	४। ७।५७।११	९।२८।५६। १	१०।२८। ६।११	१०। ०।१६। १	२०। ०	१९।३५	५।१२	१५।५१।१२	२०
२१	१। ६।२०।३४	७।१६।१५। ८	३।१२। ५। १	१।२६।१८। १	८।२८।११। ६	१। १। ९।४९	४। ७।५९। ७	९।२८।५२।५०	१०।२८। ८। ७	१०। ०।१६।११	२०।१२	२०।२९	५।५६	१५।५५। ९	२१
२२	१। ७।१८।१६	७।२८। ७।३१	३।१२।३८। ७	१।२६।४२।३१	८।२८। ८।५१	१। २।२३।३७	४। ८। १। १	९।२८।४९।३९	१०।२८। ९।४९	१०। ०।१६।२१	२०।२४	२१।२०	६।४५	१५।५९। ५	२२
२३	१। ८।१५।५६	८।१०। १।२७	३।१३।११।११	१।२७। २।१३	८।२८। ६।२५	१। ३।३७।११	४। ८। ३। १	९।२८।४६।२८	१०।२८।११।३१	१०। ०।१६।२९	२०।३६	२२। ८	७।३८	१६। ३। २	२३
२४	१। ९।१३।३५	८।२१।५९। १	३।१३।४४।३१	१।२७।१७।१३	८।२८। ३।४९	१। ४।५१। ७	४। ८। ५। ७	९।२८।४३।१८	१०।२८।१३। ७	१०। ०।१६।३५	२०।४७	२२।५०	८।३३	१६। ६।५९	२४
२५	१।१०।११।१२	९। ४। ३।३२	३।१४।१७।४९	१।२७।२७।१९	८।२८। १। १	१। ६। ४।४१	४। ८। ७।२५	९।२८।४०। ७	१०।२८।१४।४३	१०। ०।१६।३९	२०।५८	२३।२८	९।३०	१६।१०।५५	२५
२६	१।११। ८।४८	९।१६।१८। ७	३।१४।५१।१२	१।२७।३२।४२	८।२७।५८। ३	१। ७।१८।३६	४। ८। ९।४२	९।२८।३६।५६	१०।२८।१६।१२	१०। ०।१६।४१	२१। ८	--।--	१०।२७	१६।१४।५२	२६
२७	१।१२। ६।२४	९।२८।४७। ४	३।१५।२४।४२	१।२७।३३।३०	८।२७।५४।५४	१। ८।३२।१८	४। ८।१२। ६	९।२८।३३।४५	१०।२८।१७।४२	१०। ०।१६।४१	२१।१९	०। ३	११।२४	१६।१८।४८	२७
२८	१।१३। ३।५९	१०।११।३४।५०	३।१५।५८।१२	१।२७।२९।३८	८।२७।५१।३६	१। ९।४६। ०	४। ८।१४।३६	९।२८।३०।३४	१०।२८।१९। ६	१०। ०।१६।४०	२१।२८	०।३६	१२।२२	१६।२२।४५	२८
२९	१।१४। १।३३	१०।२४।४५।४४	३।१६।३१।४८	१।२७।२१।२४	८।२७।४८। ६	१।१०।५९।४८	४। ८।१७।१२	९।२८।२७।२४	१०।२८।२०।३०	१०। ०।१६।३६	२१।३८	१। ७	१३।२१	१६।२६।४१	२९
३०	१।१४।५९। ६	११। ८।२३।२९	३।१७। ५।३०	१।२७। ९। ०	८।२७।४४।२४	१।१२।१३।३०	४। ८।१९।५४	९।२८।२४।१३	१०।२८।२१।५४	१०। ०।१६।३०	२१।४७	१।३९	१४।२२	१६।३०।३८	३०
३१	१।१५।५६।३८	११।२२।२९।२३	३।१७।३९।१८	१।२६।५२।३६	८।२७।४०।३६	१।१३।२७।१८	४। ८।२२।४२	९।२८।२१। २	१०।२८।२३।१२	१०। ०।१६।२३	२१।५६	२।१४	१५।२६	१६।३४।३४	३१

जून सन् २००८ ई. प्रात: घं.५ मि.३० वज के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५८।३७, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।६।२।१५

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	वुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	र.क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	१।१६।५४।१९	०। ७। ३। ८	३।१८।१३। ५	१।२६।३२।२९	८।२७।३६।३५	१।१४।४०।५९	४। ८।२५।३५	९।२८।१७।५१	१०।२८।२४।२९	१०। ०।१६।११	२२। ४	२।५२	१६।३४	१६।३८।३१	१
२	१।१७।५१।४०	०।२२। ०।२३	३।१८।४६।५९	१।२६। ९। ५	८।२७।३२।२३	१।१५।५४।४१	४। ८।२८।३५	९।२८।१४।४०	१०।२८।२५।४१	१०। ०।१५।५९	२२।१२	३।३६	१७।४७	१६।४२।२८	२
३	१।१८।४९।१०	१। ७।१३।२४	३।१९।२०।५९	१।२५।४२।४३	८।२७।२८। २	१।१७। ८।२९	४। ८।३१।३५	९।२८।११।३०	१०।२८।२६।५३	१०। ०।१५।४७	२२।१९	४।२८	१९। ०	१६।४६।२४	३
४	१।१९।४६।३९	१।२२।३१।४४	३।१९।५४।५९	१।२५।१३।५४	८।२७।२३।३१	१।१८।२२।११	४। ८।३४।४७	९।२८। ८।१९	१०।२८।२७।५९	१०। ०।१५।३५	२२।२६	५।२८	२०। ९	१६।५०।२१	४
५	१।२०।४४। ७	२। ७।४४। २	३।२०।२९। ५	१।२४।४३। ५	८।२७।१८।५३	१।१९।३५।५९	४। ८।३८। ५	९।२८। ५। ८	१०।२८।२९। ५	१०। ०।१५।१७	२२।३३	६।३६	२१।१२	१६।५४।१७	५
६	१।२१।४१।३३	२।२२।४०। ४	३।२१। ३।१७	१।२४।१०।४७	८।२७।१४। ४	१।२०।४९।४०	४। ८।४१।२३	९।२८। १।५७	१०।२८।३०। ४	१०। ०।१४।५८	२२।४०	७।४७	२२। ५	१६।५८।१४	६
७	१।२२।३८।५९	३। ७।१२।२४	३।२१।३७।३४	१।२३।३७।३५	८।२७। ९। ४	१।२२। ३।२२	४। ८।४४।५२	९।२७।५८।४६	१०।२८।३१। ४	१०। ०।१४।३४	२२।४६	८।५६	२२।५०	१७। २।१०	७
८	१।२३।३६।२४	३।२१।१७। ३	३।२२।११।५२	१।२३। ४। ४	८।२७। ३।५८	१।२३।१७। ४	४। ८।४८।२२	९।२७।५५।३६	१०।२८।३१।५८	१०। ०।१४।१६	२२।५१	१०। २	२३।२८	१७। ६। ७	८
९	१।२४।३३।४८	४। ४।५३।२०	३।२२।४६।१४	१।२२।३०।४६	८।२६।५८।४०	१।२४।३०।४६	४। ८।५१।५८	९।२७।५२।२५	१०।२८।३२।५२	१०। ०।१३।४६	२२।५६	११। ४	--।--	१७।१०। ३	९
१०	१।२५।३१।१०	४।१८। ३। ६	३।२३।२०।४०	१।२१।५८।११	८।२६।५३।१६	१।२५।४४।३४	४। ८।५५।४४	९।२७।४९।१४	१०।२८।३३।४६	१०। ०।१३।२२	२३। १	१२। २	०। १	१७।१४। ०	१०
११	१।२६।२८।३१	५। ०।४९।४६	३।२३।५५।१०	१।२१।२१। ३	८।२६।४७।४०	१।२६।५८।१५	४। ८।५९।२८	९।२७।४६। ३	१०।२८।३४।३३	१०। ०।१२।५१	२३। ५	१२।५७	०।३१	१७।१७।५७	११
१२	१।२७।२५।५१	५।१३।१७।३९	३।२४।२९।३९	१।२०।५७।४५	८।२६।४१।५७	१।२८।११।५७	४। ९। ३।२१	९।२७।४२।५२	१०।२८।३५।१५	१०। ०।१२।२१	२३। ९	१३।५१	१। ०	१७।२१।५३	१२
१३	१।२८।२३।११	५।२५।३१। ८	३।२५। ४।१५	१।२०।३०।५१	८।२६।३६। ९	१।२९।२५।३९	४। ९। ७।२१	९।२७।३९।४२	१०।२८।३५।५७	१०। ०।११।५१	२३।१३	१४।४५	१।३०	१७।२५।५०	१३
१४	१।२९।२०।२९	६। ७।३४।२३	३।२५।३८।५७	१।२०। ६।४५	८।२६।३०।१५	२। ०।३९।२७	४। ९।११।२२	९।२७।३६।३१	१०।२८।३६।३९	१०। ०।११।१५	२३।१६	१५।३९	२। ०	१७।२९।४६	१४
१५	२। ०।१७।४७	६।१९।२३।१२	३।२६।१३।३९	१।१९।४५।४१	८।२६।२४। ९	२। १।५३। ९	४। ९।१५।३३	९।२७।३३।२०	१०।२८।३७।१५	१०। ०।१०।३९	२३।१९	१६।३४	२।३४	१७।३३।४३	१५

जून सन् २००८ ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २३।५८।३७, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।६।२।१५

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (व.)	गुरु (व.)	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून(व.)	र.क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	उ. +	उदय	अस्त	रात्रि१२वजे	
१६	२। १।५१। ३	७। १।२४। ९	३।२६।४८।२६	१।१९।२८।३५	८।२६।१७।५६	२। ३। ६।५०	४। ९।१९।४४	९।२७।३०। ९	१०।२८।३७।४४	१०। ०।१०। ३	२३।२१	१७।२९	३।११	१७।३७।३९	१६
१७	२। २।२२।१९	७।१३।१६।१३	३।२७।२३।२०	१।१९।१५। ९	८।२६।११।३८	२। ४।२०।३२	४। ९।२४। २	९।२७।२६।५८	१०।२८।३८।१४	१०। ०। ९।२६	२३।२३	१८।२४	३।५४	१७।४१।३६	१७
१८	२। ३। ९।३५	७।२५। ९।१२	३।२७।५८।१४	१।१९। ५।५६	८।२६। ५।१४	२। ५।३४।१४	४। ९।२८।२६	९।२७।२३।४८	१०।२८।३८।४४	१०। ०। ८।४४	२३।२४	१९।१७	४।४१	१७।४५।३२	१८
१९	२। ४। ६।५०	८। ७। ४।४५	३।२८।३३। ८	१।१९। ०।५६	८।२५।५८।३९	२। ६।४७।५६	४। ९।३२।५०	९।२७।२०।३७	१०।२८।३९। ८	१०। ०। ८। २	२३।२५	२०। ५	५।३३	१७।४९।२९	१९
२०	२। ५। ४। ५	८।१९। ४।२५	३।२९। ८। ८	१।१९। ०।२६	८।२५।५२। २	२। ८। १।३८	४। ९।३७।२०	९।२७।१७।२६	१०।२८।३९।३२	१०। ०। ७।१४	२३।२६	२०।५०	६।२८	१७।५३।२६	२०
२१	२। ६। १।१८	९। १। ९।५०	३।२९।४३।१३	१।१९। ४।३१	८।२५।४५।१९	२। ९।१५।१९	४। ९।४२। १	९।२७।१४।१५	१०।२८।३९।४९	१०। ०। ६।३१	२३।२६	२१।२९	७।२५	१७।५७।२२	२१
२२	२। ६।५८।३२	९।१३।२२।५९	४। ०।१८।१९	१।१९।१३।१९	८।२५।३८।२६	२।१०।२९। १	४। ९।४६।३७	९।२७।११। ४	१०।२८।४०। ७	१०। ०। ५।४३	२३।२६	२२। ५	८।२३	१८। १।१९	२२
२३	२। ७।५५।४५	९।२५।४६।१४	४। ०।५३।३१	१।१९।२६।४९	८।२५।३१।३१	२।११।४२।४९	४। ९।५१।२५	९।२७। ७।५४	१०।२८।४०।१९	१०। ०। ४।५५	२३।२५	२२।३८	९।२०	१८। ५।१५	२३
२४	२। ८।५२।५९	१०। ८।२२।२६	४। १।२८।४३	१।१९।४५। १	८।२५।२४।३१	२।१२।५६।३१	४। ९।५६।१३	९।२७। ४।४३	१०।२८।४०।३०	१०। ०। ४। १	२३।२४	२३। ९	१०।१६	१८। ९।१२	२४
२५	२। ९।५०।१२	१०।२१।१४।४४	४। २। ४। १	१।२०। ७।५५	८।२५।१७।२५	२।१४।१०।१३	४।१०। १। ७	९।२७। १।३२	१०।२८।४०।३७	१०। ०। ३।१२	२३।२३	२३।४०	११।१३	१८।१३। ८	२५
२६	२।१०।४७।२४	११। ४।२६।२०	४। २।३९।२४	१।२०।३५।२६	८।२५।१०।१२	२।१५।२३।५४	४।१०। ६। ६	९।२६।५८।२१	१०।२८।४०।४०	१०। ०। २।१२	२३।२१	--।--	१२।१२	१८।१७। ५	२६
२७	२।११।४४।३७	११।१८। ०। ४	४। ३।१४।४८	१।२१। ७।४२	८।२५। २।५६	२।१६।३७।३६	४।१०।११।१२	९।२६।५५।१०	१०।२८।४०।४१	१०। ०। १।१८	२३।१९	०।१२	१३।१२	१८।२१। १	२७
२८	२।१२।४१।५१	०। १।५७।३५	४। ३।५०।१२	१।२१।४४।३०	८।२४।५५।३६	२।१७।५१।२४	४।१०।१६।१८	९।२६।५२। ०	१०।२८।४०।३९	१०। ०। ०।२४	२३।१६	०।४७	१४।१७	१८।२४।५८	२८
२९	२।१३।३९। ४	०।१६।१८।४५	४। ४।२५।४८	१।२२।२५।५४	८।२४।४८।१४	२।१९। ५। ६	४।१०।२१।३०	९।२६।४८।४९	१०।२८।४०।३६	९।२९।५९।२४	२३।१३	१।२७	१५।२५	१८।२८।५५	२९
३०	२।१४।३६।१८	१। १। ०।५३	४। ५। १।१८	१।२३।११।४२	८।२४।४०।४८	२।२०।१८।५०	४।१०।२६।४८	९।२६।४५।३८	१०।२८।४०।३०	९।२९।५८।२४	२३।१०	२।१३	१६।३६	१८।३२।५१	३०
जुलाई सन् २००८ ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २३।५८।४३, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।५।३५।२०															
१	२।१५।३३।३१	१।१५।५८।२६	४। ५।३६।५५	१।२४। २। २	८।२४।३३।१८	२।२१।३२।३५	४।१०।३२। ५	९।२६।४२।२७	१०।२८।४०।२२	९।२९।५७।२२	२३। ९	३। ९	१७।४६	१८।३६।४८	१
२	२।१६।३०।४५	२। १। ३।२५	४। ६।१२।३६	१।२४।५६।४०	८।२४।२५।४५	२।२२।४६।२०	४।१०।३७।२८	९।२६।३९।१६	१०।२८।४०। ६	९।२९।५६।१९	२३। २	४।१२	१८।५२	१८।४०।४४	२
३	२।१७।२७।५८	२।१६। ६।२४	४। ६।४८।२२	१।२५।५५।४०	८।२४।१८।१०	२।२४। ०। ५	४।१०।४२।५६	९।२६।३६। ६	१०।२८।३९।५०	९।२९।५५।१५	२२।५७	५।२२	१९।५०	१८।४४।४१	३
४	२।१८।२५।१२	३। ०।५८। ०	४। ७।२४।१०	१।२६।५८। २	८।२४।१०।३१	२।२५।१३।५०	४।१०।४८।२८	९।२६।३२।५५	१०।२८।३९।३०	९।२९।५४। ९	२२।५२	६।३३	२०।४०	१८।४८।३७	४
५	२।१९।२२।२५	३।१५।३०।२९	४। ७।५९।५९	१।२८। ६।१७	८।२४। २।५२	२।२६।२७।३६	४।१०।५४। ३	९।२६।२९।४४	१०।२८।३९।१०	९।२९।५३। १	२२।४७	७।४३	२१।२२	१८।५२।३४	५
६	२।२०।१९।३८	३।२९।३८।३९	४। ८।३५।५३	१।२९।१७।५०	८।२३।५५।१२	२।२७।४१।२१	४।१०।५९।४३	९।२६।२६।३३	१०।२८।३८।४५	९।२९।५१।५२	२२।४१	८।४८	२१।५८	१८।५६।३१	६
७	२।२१।१६।५१	४।१३।२०।१३	४। ९।११।४९	२। ०।३३।२७	८।२३।४७।३०	२।२८।५५। ७	४।११। ५।२५	९।२६।२३।२२	१०।२८।३८।१७	९।२९।५०।४२	२२।३४	९।५०	२२।३१	१९। ०।२७	७
८	२।२२।१४। ४	४।२६।३५।२९	४। ९।४७।४९	२। १।५३। ६	८।२३।३९।४७	३। ०। ८।५२	४।११।११।१२	९।२६।२०।११	१०।२८।३७।४७	९।२९।४९।५०	२२।२८	१०।४८	२३। १	१९। ४।२४	८
९	२।२३।११।१७	५। ९।२६।४४	४।१०।२३।५४	२। ३।१६।४४	८।२३।३२। ४	३। १।२२।३८	४।११।१७। २	९।२६।१७। १	१०।२८।३७।१४	९।२९।४८।१६	२२।२१	११।४३	२३।३१	१९। ८।२०	९
१०	२।२४। ८।२९	५।२१।५७।३३	४।११। ०। ०	२। ४।४४।१७	८।२३।२४।१९	३। २।३६।२४	४।११।२२।५५	९।२६।१३।५०	१०।२८।३६।३८	९।२९।४७। २	२२।१३	१२।३८	--।--	१९।१२।१७	१०
११	२।२५। ५।४२	६। ४।१२।१२	४।११।३६।१०	२। ६।१५।३६	८।२३।१६।३५	३। ३।५०। ९	४।११।२८।५२	९।२६।१०।३९	१०।२८।३५।५९	९।२९।४५।४६	२२। ५	१३।३३	०। १	१९।१६।१३	११
१२	२।२६। २।५४	६।१६।१५।१०	४।१२।१२।२३	२। ७।५०।४२	८।२३। ८।५२	३। ५। ३।५४	४।११।३४।५३	९।२६। ७।२८	१०।२८।३५।१८	९।२९।४४।३०	२१।५७	१४।२७	०।३४	१९।२०।१०	१२
१३	२।२७। ०। ७	६।२८।१०।४७	४।१२।४८।३८	२। ९।२९।२७	८।२३। १।१२	३। ६।१७।४०	४।११।४०।५८	९।२६। ४।१८	१०।२८।३४।३४	९।२९।४३।१२	२१।४९	१५।२३	१।१०	१९।२४। ६	१३
१४	२।२७।५७।१९	७।१०। ३। ५	४।१३।२४।५७	२।११।११।४४	८।२२।५३।३२	३। ७।३१।२५	४।११।४७। ५	९।२६। १। ७	१०।२८।३३।४७	९।२९।४१।५४	२१।४०	१६।१८	१।५१	१९।२८। ३	१४
१५	२।२८।५४।३२	७।२१।५५।३१	४।१४। १।१८	२।१२।५७।२४	८।२२।४५।५३	३। ८।४५।१०	४।११।५३।१५	९।२५।५७।५६	१०।२८।३२।५८	९।२९।४०।३४	२१।३०	१७।११	२।३६	१९।३२। ०	१५
१६	२।२९।५१।४४	८। ३।५१। ३	४।१४।३७।४३	२।१४।४६।१८	८।२२।३८।२५	३। ९।५८।५५	४।११।५९।३०	९।२५।५४।४५	१०।२८।३२। ६	९।२९।३९।१३	२१।२१	१८। २	३।२७	१९।३५।५६	१६
१७	३। ०।४८।५७	८।१५।५२। ३	४।१५।१४।१०	२।१६।३८।१४	८।२२।३०।४०	३।११।१२।४०	४।१२। ५।४७	९।२५।५१।३४	१०।२८।३१।११	९।२९।३७।५२	२१।११	१८।४८	४।२१	१९।३९।५३	१७
१८	३। १।४६।११	८।२८। ०।२८	४।१५।५०।४०	२।१८।३२।५१	८।२२।२३। ८	३।१२।२६।२५	४।१२।१२। ६	९।२५।४८।२४	१०।२८।३०।१३	९।२९।३६।२८	२१। ०	१९।२९	५।१८	१९।४३।४९	१८
१९	३। २।४३।२५	९।१०।१७।५०	४।१६।२७।१२	२।२०।३०।१८	८।२२।१५।३९	३।१३।४०।१०	४।१२।१८।२९	९।२५।४५।१३	१०।२८।२९।१३	९।२९।३५। ४	२०।५०	२०। ६	६।१७	१९।४७।४६	१९
२०	३। ३।४०।३९	९।२२।४५।२९	४।१७। ३।४८	२।२२।२९।५५	८।२२। ८।१३	३।१४।५३।५५	४।१२।२४।५५	९।२५।४२। २	१०।२८।२८।११	९।२९।३३।३८	२०।३९	२०।४०	७।१५	१९।५१।४२	२०
२१	३। ४।३७।५४	१०। ५।२४।४१	४।१७।४०।२७	२।२४।३१।३२	८।२२। ०।४९	३।१६। ७।४०	४।१२।३१।२३	९।२५।३८।५१	१०।२८।२७। ६	९।२९।३२।१२	२०।२७	२१।१२	८।१२	१९।५५।३९	२१
२२	३। ५।३५। ९	१०।१८।१६।४३	४।१८।१७। ९	२।२६।३४।५०	८।२१।५३।३०	३।१७।२१।२५	४।१२।३७।५५	९।२५।३५।४०	१०।२८।२५।५८	९।२९।३०।४५	२०।१५	२१।४३	९। ९	१९।५९।३५	२२
२३	३। ६।३२।२५	११। १।२२।५२	४।१८।५३।५४	२।२८।३९।३१	८।२१।४६।१४	३।१८।३५।१०	४।१२।४४।२९	९।२५।३२।३०	१०।२८।२४।४८	९।२९।२९।१७	२०। ३	२२।१४	१०। ७	२०। ३।३२	२३
२४	३। ७।२९।४२	११।१४।४४।२४	४।१९।३०।४२	३। ०।४५।१५	८।२१।३९। १	३।१९।४८।५५	४।१२।५१। ५	९।२५।२९।१९	१०।२८।२३।३४	९।२९।२७।४८	१९।५१	२२।४८	११। ७	२०। ७।२९	२४
२५	३। ८।२७। ०	११।२८।२२।२०	४।२०। ७।३२	३। २।५१।४२	८।२१।३१।५४	३।२१। २।४०	४।१२।५७।४५	९।२५।२६। ८	१०।२८।२२।१९	९।२९।२६।१८	१९।३८	२३।२५	१२। ८	२०।११।२५	२५
२६	३। ९।२४।१९	०।१२।१७। ४	४।२०।४४।२६	३। ४।५८।३६	८।२१।२४।५१	३।२२।१६।२६	४।१३। ४।२७	९।२५।२२।५७	१०।२८।२१। १	९।२९।२४।४८	१९।२५	--।--	१३।१३	२०।१५।२२	२६

जुलाई सन् २००८ ई. प्रात: घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५८।४३, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।५।३५।२०

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु (व.) रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल(व.) रा.अं.क.वि.	नेपच्यून(व.) रा.अं.क.वि.	र.क्रांति उ. +	चन्द्रोदयास्त उदय	अस्त	सांपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
२७	३।१०।२१।३८	०।२६।२८। ४	४।२१।२२।२३	३। ७। ५।३७	८।२२।१७।५५	३।२३।३०।१०	४।१३।११।१२	९।२५।१९।४६	१०।२८।१९।४१	९।२९।२३।१८	१९।११	०। ७	१४।२१	२०।१९।१८	२७
२८	३।११।१८।५९	१।१०।५३।२०	४।२१।५८।२३	३। ९।१२।२९	८।२२।११। ३	३।२४।४३।५६	४।१३।१७।५९	९।२५।१६।३६	१०।२८।१८।१८	९।२९।२१।४६	१८।५८	०।५७	१५।२९	२०।२३।१७	२८
२९	३।१२।१६।२२	१।२५।२९।१८	४।२२।३५।२७	३।११।१८।५७	८।२१। ४।१८	३।२५।५७।४२	४।१३।२४।४८	९।२५।१३।२५	१०।२८।१६।५४	९।२९।२०।१४	१८।४४	१।५५	१६।३५	२०।२७।११	२९
३०	३।१३।१३।४५	२।१०।१०।४८	४।२३।१२।३४	३।१३।२४।४८	८।२०।५७।३९	३।२७। १।२८	४।१३।३१।४०	९।२५।१०।१४	१०।२८।१५।२६	९।२९।१८।४१	१८।२९	३। ०	१७।३६	२०।३१। ८	३०
३१	३।१४।११। ९	२।२४।५१।३१	४।२३।४९।४३	३।१५।२९।५१	८।२०।५१। ५	३।२८।२५।१४	४।१३।३८।३४	९।२५। ७। ३	१०।२८।१३।५७	९।२९।१७। ७	१८।१४	४।१०	१८।२८	२०।३५। ४	३१

अगस्त सन् २००८ ई. प्रात: घं.५ मि.३० वज के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५८।४८, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।४।५३।३०

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (व.)	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल(व.)	नेपच्यून(व.)	र.क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	३।१५। ८।३३	३। १।२४।४४	४।२४।२६।५५	३।१७।३३।५५	८।२०।४४।३७	३।२९।३९। ०	४।१३।४५।३०	९।२५। ३।५२	१०।२८।१२।२५	९।२९।१५।३२	१८। ०	५।२०	१९।१३	२०।३९। १	१
२	३।१६। ५।५९	३।२३।४४।१५	४।२५। ४।११	३।१९।३६।५२	८।२०।३८।१८	४। ०।५२।४६	४।१३।५२।२८	९।२५। ०।४२	१०।२८।१०।५१	९।२९।१३।५७	१७।४४	६।२८	१९।५२	२०।४२।५८	२
३	३।१७। ३।२५	४। ७।४५। ५	४।२५।४१।३०	३।२१।३८।३५	८।२०।३२। ५	४। २। ६।३२	४।१३।५९।२८	९।२४।५७।३१	१०।२८। ९।१५	९।२९।१२।२२	१७।२९	७।३२	२०।२७	२०।४६।५४	३
४	३।१८। ०।५३	४।२१।२४। ६	४।२६।१८।५२	३।२३।३९। १	८।२०।२६। ०	४। ३।२०।१८	४।१४। ६।३०	९।२४।५४।२०	१०।२८। ७।३७	९।२९।१०।४७	१७।१३	८।३२	२०।५९	२०।५०।५१	४
५	३।१८।५८।२१	५। ४।४०। ८	४।२६।५६।१६	३।२५।३८। ५	८।२०।२०। २	४। ४।३४। ३	४।१४।१३।३४	९।२४।५१। ९	१०।२८। ५।५८	९।२९। ९।१०	१६।५७	९।३०	२१।३०	२०।५४।४७	५
६	३।१९।५५।५०	५।१७।३३।५३	४।२७।३३।४३	३।२७।३५।४१	८।२०।१४।१२	४। ५।४७।४८	४।१४।२०।४०	९।२४।४७।५८	१०।२८। ४।१६	९।२९। ७।३४	१६।४०	१०।२७	२२। १	२०।५८।४४	६
७	३।२०।५३।१९	६। ०। ७।३४	४।२८।११।१३	३।२९।३१।४९	८।२०। ८।३०	४। ७। १।३३	४।१४।२७।४८	९।२४।४४।४८	१०।२८। २।३१	९।२९। ५।५७	१६।२४	११।२३	२२।३३	२१। २।४०	७
८	३।२१।५०।४९	६।१२।२४।३४	४।२८।४८।४८	४। १।२६।२६	८।२०। २।५७	४। ८।१५।१८	४।१४।३४।५८	९।२४।४१।३७	१०।२८। ०।४५	९।२९। ४।२०	१६। ७	१२।१९	२३। ८	२१। ६।३७	८
९	३।२२।४८।२०	६।२४।२८।५९	४।२९।२६।२४	४। ३।१९।३३	८।१९।५७।३१	४। ९।२९। ३	४।१४।४२।१०	९।२४।३८।२६	१०।२७।५८।५७	९।२९। २।४३	१५।५०	१३।१४	२३।४७	२१।१०।३३	९
१०	३।२३।४५।५२	७। ६।२५।१५	५। ०। ४। ४	४। ५।११। ९	८।१९।५२।१५	४।१०।४२।४५	४।१४।४९।२३	९।२४।३५।१५	१०।२७।५७। ६	९।२९। १। ५	१५।३२	१४।१०	--।--	२१।१४।३०	१०
११	३।२४।४३।२५	७।१८।१७।५६	५। ०।४१।४५	४। ७। १।१३	८।१९।४७। ८	४।११।५६।२९	४।१४।५६।३७	९।२४।३२। ४	१०।२७।५५।१४	९।२८।५९।२७	१५।१४	१५। ४	०।३१	२१।१८।२७	११
१२	३।२५।४०।५९	८। ०।११।२२	५। १।१९।३०	४। ८।४९।४९	८।१९।४२।१०	४।१३।१०।१२	४।१५। ३।५३	९।२४।२८।५४	१०।२७।५३।२१	९।२८।५७।४९	१४।५६	१५।५५	१।२०	२१।२२।२३	१२
१३	३।२६।३८।३३	८।१२। ९।३५	५। १।५७।२०	४।१०।३६।४८	८।१९।३७।२०	४।१४।२३।५५	४।१५।११।१२	९।२४।२५।४३	१०।२७।५१।२५	९।२८।५६।११	१४।३८	१६।४३	२।१३	२१।२६।२०	१३
१४	३।२७।३६। ९	८।२४।१६। ४	५। २।३५।१०	४।१२।२२।११	८।१९।३२।४०	४।१५।३७।३८	४।१५।१८।३१	९।२४।२२।३२	१०।२७।४९।२८	९।२८।५४।३३	१४।२०	१७।२६	३। ९	२१।३०।१६	१४
१५	३।२८।३३।४६	९। ६।३३।३९	५। ३।१३। ४	४।१४। ६।२१	८।१९।२८।११	४।१६।५१।२०	४।१५।२५।५१	९।२४।१९।२१	१०।२७।४७।२९	९।२८।५२।५४	१४। १	१८। ५	४। ७	२१।३४।१३	१५
१६	३।२९।३१।२४	९।१९। ४।२४	५। ३।५०।५९	४।१५।४८।५४	८।१९।२३।५०	४।१८। ५। १	४।१५।३३।१२	९।२४।१६।१०	१०।२७।४५।२९	९।२८।५१।१६	१३।४२	१८।४१	५। ५	२१।३८। ९	१६
१७	४। ०।२९। ४	१०। १।४९।३८	५। ४।२८।५८	४।१७।२९।५९	८।१९।१९।४०	४।१९।१८।४२	४।१५।४०।३५	९।२४।१३। ०	१०।२७।४३।२७	९।२८।४९।३८	१३।२३	१९।१४	६। ४	२१।४२। ६	१७
१८	४। १।२६।४४	१०।१४।४९।५०	५। ५। ७। २	४।१९। ९।३९	८।१९।१५।४०	४।२०।३२।२३	४।१५।४७।५९	९।२४। ९।४९	१०।२७।४१।२४	९।२८।४७।५९	१३। ४	१९।४६	७। २	२१।४६। २	१८
१९	४। २।२४।२६	१०।२८। ४।४७	५। ५।४५। ७	४।२०।४७।४९	८।१९।११।५०	४।२१।४६। ४	४।१५।५५।२३	९।२४। ६।३८	१०।२७।३९।१८	९।२८।४६।२१	१२।४५	२०।१७	८। १	२१।४९।५९	१९
२०	४। ३।२२। ९	११।११।३३।३८	५। ६।२३।१७	४।२२।२४।३५	८।१९। ८।१०	४।२२।५९।४४	४।१६। २।४९	९।२४। ३।२७	१०।२७।३७।१२	९।२८।४४।४३	१२।२५	२०।५०	९। ०	२१।५३।५६	२०
२१	४। ४।१९।५३	११।२५।१५। ८	५। ७। १।२८	४।२३।५९।५५	८।१९। ४।४०	४।२४।१३।२३	४।१६।१०।१६	९।२४। ०।१६	१०।२७।३५। ४	९।२८।४३। ६	१२। ५	२१।२६	१०। २	२१।५७।५२	२१
२२	४। ५।१७।४०	०। ९। ७।४१	५। ७।३९।४३	४।२५।३३।५०	८।१९। १।२०	४।२५।२७। २	४।१६।१७।४४	९।२३।५७। ६	१०।२७।३२।५५	९।२८।४१।२८	११।४५	२२। ६	११। ६	२२। १।४९	२२
२३	४। ६।१५।२८	०।२३। १।२६	५। ८।१७।५९	४।२७। ६।१८	८।१८।५८।११	४।२६।४०।४०	४।१६।२५।११	९।२३।५३।५५	१०।२७।३०।४४	९।२८।३९।५१	११।२५	२२।५३	१२।१२	२२। ५।४५	२३
२४	४। ७।१३।१८	१। ७।१८।२८	५। ८।५६।२०	४।२८।३७।२३	८।१८।५५।१३	४।२७।५४।१९	४।१६।३२।४०	९।२३।५०।४४	१०।२७।२८।३३	९।२८।३८।१४	११। ४	२३।४७	१३।११	२२। ९।४२	२४
२५	४। ८।११।१०	१।२१।३२।३७	५। ९।३४।४५	५। ०। ७। २	८।१८।५२।२६	४।२९। ७।५७	४।१६।४०।११	९।२३।४७।३३	१०।२७।२६।२०	९।२८।३६।३७	१०।४४	--।--	१४।२५	२२।१३।३८	२५
२६	४। ९। ९। ४	२। ५।४९।२७	५।१०।१३।११	५। १।३५।१७	८।१८।४९।५१	५। ०।२१।३४	४।१६।४७।४१	९।२३।४४।२२	१०।२७।२४। ६	९।२८।३५। ०	१०।२३	०।४८	१५।२६	२२।१७।३५	२६
२७	४।१०। ६।५९	२।२०। ६।१२	५।१०।५१।४२	५। ३। २। ३	८।१८।४७।२५	५। १।३५।१०	४।१६।५५।१२	९।२३।४१।१२	१०।२७।२१।४९	९।२८।३३।२४	१०। २	१।५४	१६।२०	२२।२१।३१	२७
२८	४।११। ४।५६	३। ४।११।४२	५।११।३०।१५	५। ४।२७।२२	८।१८।४५।१२	५। २।४८।४७	४।१७। २।४५	९।२३।३८। १	१०।२७।१९।३५	९।२८।३१।४९	९।४१	३। २	१७। ६	२२।२५।२८	२८
२९	४।१२। २।५५	३।१८।२६।२८	५।१२। ८।५२	५। ५।५१।१४	८।१८।४३।१०	५। ४। २।२४	४।१७।१०।१६	९।२३।३४।५०	१०।२७।१७।१८	९।२८।३०।१३	९।१९	४। ९	१७।४७	२२।२९।२५	२९
३०	४।१३। ०।५६	४। २।२२।५७	५।१२।४७।४३	५। ७।१३।३४	८।१८।४१।१७	५। ५।१६। १	४।१७।१७।४९	९।२३।३१।३९	१०।२७।१५। ०	९।२८।२८।३९	८।५८	५।१४	१८।२३	२२।३३।२१	३०
३१	४।१३।५८।५८	४।१६। ५।५०	५।१३।२६।१६	५। ८।३४।२२	८।१८।३९।३८	५। ६।२९।३६	४।१७।२५।२२	९।२३।२८।२८	१०।२७।१२।४२	९।२८।२७। ५	८।३६	६।१६	१८।५६	२२।३७।१८	३१

सितम्बर सन् २००८ ई. प्रात: घं.५ मि.३० वज के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५८।५३, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।४।३१।५५

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (व.)	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल(व.)	नेपच्यून(व.)	र.क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	४।१४।५७। १	४।२९।३२।२५	५।१४। ५। २	५। ९।५३।३६	८।१८।३८। ८	५। ७।४३।१२	४।१७।३२।५४	९।२३।२५।१८	१०।२७।१०।२२	९।२८।२५।३१	८।१५	७।१५	१९।२७	२२।४१।१४	१
२	४।१५।५५। ६	५।१२।४१। ४	५।१४।४३।५०	५।११।११।१२	८।१८।३६।५०	५। ८।५६।४६	४।१७।४०।२९	९।२३।२२। ७	१०।२७। ८। २	९।२८।२३।५८	७।५३	८।१३	१९।५८	२२।४५।११	२
३	४।१६।५३।१३	५।२५।३१।१७	५।१५।२२।४२	५।१२।२७। ८	८।१८।३५।४४	५।१०।१०।२०	४।१७।४८। ४	९।२३।१८।५६	१०।२७। ५।४१	९।२८।२२।२५	७।३१	९।१०	२०।३१	२२।४९। ७	३
४	४।१७।५१।२२	६। ८। ३।५४	५।१६। १।३८	५।१३।४१।११	८।१८।३४।५०	५।११।२३।५४	४।१७।५५।३७	९।२३।१५।४५	१०।२७। ३।२०	९।२८।२०।५३	७। ९	१०। ६	२१। ५	२२।५३। ४	४

सितम्बर सन् २००८ ई. प्रात: घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५८।५३, वेंकटेश (प्लूटो वक्री) ८।४।३१।५५

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (व.)	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल(व.)	नेपच्यून(व.)	र.क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	उ. +	उदय	अस्त	रात्रि१२वजे	
५	४।१८।४९।३२	६।२०।२०।५९	५।१६।४०।३७	५।१४।५३।४१	८।१८।३४। ८	५।१२।३७।२७	४।१८। ३।११	९।२३।१२।३४	१०।२७। ०।५६	९।२८।११।२२	६।४७	११। ३	२१।४४	२२।५७। ०	५
६	४।१९।४७।४३	७। २।२५।४०	५।१७।११।३८	५।१६। ४।११	८।१८।३३।३७	५।१३।५०।५८	४।१८।१०।४५	९।२३। ९।२४	१०।२६।५८।३४	९।२८।१७।५२	६।२४	१२। ०	२२।२६	२३। ०।५७	६
७	४।२०।४५।५६	७।१४।२२।५४	५।१७।५८।४३	५।१७।१२।४०	८।१८।३३।१७	५।१५। ४।२९	४।१८।१८।१८	९।२३। ६।१३	१०।२६।५६।११	९।२८।१६।२३	६। २	१२।५५	२३।१२	२३। ४।५४	७
८	४।२१।४४।११	७।२६।१४।१०	५।१८।३७।५०	५।१८।११। ५	८।१८।३३। ९	५।१६।१७।५९	४।१८।२५।५२	९।२३। ३। २	१०।२६।५३।४८	९।२८।१४।५५	५।३९	१३।४७	--।--	२३। ८।५०	८
९	४।२२।४२।२७	८। ८। ७।१३	५।१९।१७। ०	५।१९।२३।१७	८।१८।३३।१२	५।१७।३१।२८	४।१८।३३।२५	९।२२।५९।५१	१०।२६।५१।२४	९।२८।१३।२८	५।१७	१४।३६	०। ३	२३।१२।४७	९
१०	४।२३।४०।४५	८।२०। ६। ७	५।१९।५६।१४	५।२०।२५।१०	८।१८।३३।२८	५।१८।४४।५७	४।१८।४०।५७	९।२२।५६।४०	१०।२६।४९। १	९।२८।१२। १	४।५४	१५।२१	०।५८	२३।१६।४३	१०
११	४।२४।३९। ४	९। २।१५।१४	५।२०।३५।२८	५।२१।२४।३४	८।१८।३३।५३	५।१९।५८।२५	४।१८।४८।३०	९।२२।५३।३०	१०।२६।४६।३७	९।२८।१०।३५	४।३१	१६। १	१।५५	२३।२०।४०	११
१२	४।२५।३७।२४	९।१४।३८।४५	५।२१।१४।५०	५।२२।२१।२०	८।१८।३४।३१	५।२१।११।५१	४।१८।५६। २	९।२२।५०।१९	१०।२६।४४।१३	९।२८। ९।१०	४। ९	१६।३८	२।५३	२३।२४।३६	१२
१३	४।२६।३५।४६	९।२७।११।५१	५।२१।५४।१३	५।२३।१५।१८	८।१८।३५।२०	५।२२।२५।१७	४।१९। ३।३४	९।२२।४७। ८	१०।२६।४१।५०	९।२८। ७।४७	३।४६	१७।१२	३।५१	२३।२८।३३	१३
१४	४।२७।३४।१०	१०।१०।२०।३४	५।२२।३३।३८	५।२४। ६।१५	८।१८।३६।२२	५।२३।३८।४१	४।१९।११। ५	९।२२।४३।५७	१०।२६।३९।२६	९।२८। ६।२४	३।२३	१७।४५	४।५०	२३।३२।२९	१४
१५	४।२८।३२।३६	१०।२३।४१।३०	५।२३।१३। ७	५।२४।५३।५७	८।१८।३७।३५	५।२४।५२। ५	४।१९।१८।३५	९।२२।४०।४६	१०।२६।३७। २	९।२८। ५। २	३। ०	१८।१७	५।४९	२३।३६।२६	१५
१६	४।२९।३१। ४	११। ७।२१।३३	५।२३।५२।३८	५।२५।३८।१०	८।१८।३८।५८	५।२६। ५।२७	४।१९।२६। ४	९।२२।३७।३६	१०।२६।३४।३८	९।२८। ३।४२	२।३६	१८।५०	६।४९	२३।४०।२३	१६
१७	५। ०।२९।३३	११।२१।१८। १	५।२४।३२।१३	५।२६।१८।४०	८।१८।४०।३४	५।२७।१८।४९	४।१९।३३।३३	९।२२।३४।२५	१०।२६।३२।१३	९।२८। २।२२	२।१३	१९।२६	७।५१	२३।४४।१९	१७
१८	५। १।२८। ४	०। ५।२६।५५	५।२५।११।५०	५।२६।५५। ८	८।१८।४२।२०	५।२८।३२। ९	४।१९।४१। ०	९।२२।३१।१४	१०।२६।२९।४९	९।२८। १। ४	१।५०	२०। ५	८।५६	२३।४८।१६	१८
१९	५। २।२६।३८	०।१९।४३।३१	५।२५।५१।३१	५।२७।२७।१७	८।१८।४४।१८	५।२९।४५।२८	४।१९।४८।२७	९।२२।२८। ३	१०।२६।२७।२६	९।२७।५९।४५	१।२७	२०।५१	१०। ३	२३।५२।१२	१९
२०	५। ३।२५।१४	१। ४। ३। १	५।२६।३१।१५	५।२७।५४।४८	८।१८।४६।२६	६। ०।५८।४७	४।१९।५५।५३	९।२२।२४।५२	१०।२६।२५। ३	९।२७।५८।२९	१। ६	२१।४३	११।११	२३।५६। ९	२०
२१	५। ४।२३।५२	१।१८।२१।१०	५।२७।११। १	५।२८।१७।१८	८।१८।४८।४६	६। २।११। ६	४।२०। ३।१८	९।२२।२१।४२	१०।२६।२२।४०	९।२७।५७।१५	०।४०	२२।४२	१२।१८	०। ०। ७	२१
२२	५। ५।२२।३२	२। २।३४।४५	५।२७।५०।५२	५।२८।३४।२४	८।१८।५१।१७	६। ३।२५।२३	४।२०।१०।४२	९।२२।१८।३१	१०।२६।२०।१९	९।२७।५६। १	०।१७	२३।४६	१३।२०	०। ४। २	२२
२३	५। ६।२१।१५	२।१६।४१।३५	५।२८।३०।४६	५।२८।४५।४५	८।१८।५३।५९	६। ४।३८।३९	४।२०।१८। ५	९।२२।१५।२०	१०।२६।१७।५८	९।२७।५४।४९	-। ६	--।--	१४।१६	०। ७।५८	२३
२४	५। ७।२०। ०	३। ०।४०।२२	५।२९।१०।४३	५।२८।५०।५७	८।१८।५६।५३	६। ५।५१।५६	४।२०।२५।२६	९।२२।१२। ९	१०।२६।१५।३७	९।२७।५३।३८	०।३०	०।५३	१५। ३	०।११।५५	२४
२५	५। ८।१८।४७	३।१४।३०।२१	५।२९।५०।४४	५।२८।४९।३८	८।१८।५९।५७	६। ७। ५।११	४।२०।३२।४७	९।२२। ८।५८	१०।२६।१३।१७	९।२७।५२।२९	०।५३	१।५९	१५।४५	०।१५।५२	२५
२६	५। ९।१७।३७	३।२८।१०।५६	६। ०।३०।४८	५।२८।४१।२७	८।१९। ३।१३	६। ८।१८।२५	४।२०।४०। ६	९।२२। ५।४८	१०।२६।१०।५७	९।२७।५१।२२	१।१७	३। २	१६।२१	०।१९।४८	२६
२७	५।१०।१६।२८	४।११।४१।२३	६। १।१०।५६	५।२८।२६। ६	८।१९। ६।३९	६। ९।३१।३९	४।२०।४७।२३	९।२२। २।३७	१०।२६। ८।३८	९।२७।५०।१५	१।४०	४। ४	१६।५४	०।२३।४५	२७
२८	५।११।१५।२२	४।२५। ०।४३	६। १।५१। ७	५।२८। ३।२१	८।१९।१०।१७	६।१०।४४।५३	४।२०।५४।३९	९।२१।५९।२६	१०।२६। ६।२०	९।२७।४९।१०	२। ३	५। २	१७।२६	०।२७।४१	२८
२९	५।१२।१४।१८	५। ८। ७।५०	६। २।३१।२१	५।२७।३३। ५	८।१९।१४। ६	६।११।५८। ३	४।२१। १।५४	९।२१।५६।१५	१०।२६। ४। ३	९।२७।४८। ६	२।२७	६। ०	१७।५७	०।३१।३८	२९
३०	५।१३।१३।१५	५।२१। १।४१	६। ३।११।३८	५।२६।५५।१९	८।१९।१८। ५	६।१३।११।१४	४।२१। ९। ६	९।२१।५३। ४	१०।२६। १।४७	९।२७।४७। ४	२।५०	६।५७	१८।२९	०।३५।३४	३०

अक्टूवर सन् २००८ ई. प्रात: घं.५ मि.३० वजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५८।५६, वेंकटेश (प्लूटो) ८।४।३८।२०

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (व.)	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल(व.)	नेपच्यून(व.)	र.क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	५।१४।१२।१४	६। ३।४१।३६	६। ३।५१।५९	५।२६।१०।१६	८।१९।२२।१५	६।१४।२४।२५	४।२१।१६।१७	९।२१।४९।५४	१०।२५।५९।३२	९।२७।४६। २	३।१३	७।५४	१९। २	०।३९।३१	१
२	५।१५।११।१६	६।१६। ७।४१	६। ४।३२।२२	५।२५।१८।२३	८।१९।२६।३५	६।१५।३७।३३	४।२१।२३।२६	९।२१।४६।४३	१०।२५।५७।१८	९।२७।४५। ३	३।३७	८।५१	१९।४०	०।४३।२७	२
३	५।१६।१०।२०	६।२८।२०।५२	६। ५।१२।४७	५।२४।२०।२०	८।१९।३१। ६	६।१६।५०।४०	४।२१।३०।३४	९।२१।४३।३२	१०।२५।५५। ४	९।२७।४४। ५	४। ०	९।४८	२०।२०	०।४७।२४	३
४	५।१७। ९।२५	७।१०।२३। ९	६। ५।५३।१७	५।२३।१७। ७	८।१९।३५।४७	६।१८। ३।४७	४।२१।३७।४०	९।२१।४०।२१	१०।२५।५२।५२	९।२७।४३। ९	४।२३	१०।४४	२१। ६	०।५१।२०	४
५	५।१८। ८।३३	७।२२।१७।३२	६। ६।३३।५०	५।२२। ९।५९	८।१९।४०।३८	६।१९।१६।५३	४।२१।४४।४४	९।२१।३६।१०	१०।२५।५०।४१	९।२७।४२।१५	४।४६	११।३८	२१।५५	०।५५।१७	५
६	५।१९। ७।४२	८। ४। ७।५५	६। ७।१४।२७	५।२१। ०।२९	८।१९।४५।४०	६।२०।२९।५६	४।२१।५१।४५	९।२१।३४। ०	१०।२५।४८।३२	९।२७।४१।२३	५। ९	१२।२९	२२।४८	०।५९।१४	६
७	५।२०। ६।५३	८।१५।५८।५२	६। ७।५५। ६	५।१९।५०।२०	८।१९।५०।५३	६।२१।४२।५९	४।२१।५८।४५	९।२१।३०।४९	१०।२५।४६।२४	९।२७।४०।३२	५।३२	१३।१५	२३।४३	१। ३।१०	७
८	५।२१। ६। ५	८।२७।५५।३०	६। ८।३५।४८	५।१८।४१।२५	८।१९।५६।१५	६।२२।५६। ०	४।२२। ५।४२	९।२१।२७।३८	१०।२५।४४।१८	९।२७।३९।४३	५।५५	१३।५६	--।--	१। ७। ७	८
९	५।२२। ५।१९	९।१०। ३। ७	६। ९।१६।३३	५।१७।३५।४१	८।२०। १।४७	६।२४। ९। ०	४।२२।१२।३७	९।२१।२४।२७	१०।२५।४२।१४	९।२७।३८।५५	६।१८	१४।३४	०।४०	१।११। ३	९
१०	५।२३। ४।३६	९।२२।२६।५२	६। ९।५७।२२	५।१६।३५। ०	८।२०। ७।३०	६।२५।२१।५९	४।२२।१९।२९	९।२१।२१।१६	१०।२५।४०।१०	९।२७।३८।१०	६।४१	१५। ८	१।३७	१।१५। ०	१०
११	५।२४। ३।५४	१०। ५।११।१८	६।१०।३८।१५	५।१५।४१। ९	८।२०।१३।२२	६।२६।३४।५६	४।२२।२६।२०	९।२१।१८। ६	१०।२५।३८। ८	९।२७।३७।२६	७। ३	१५।४१	२।३४	१।१८।५६	११
१२	५।२५। ३।१४	१०।१८।१९।५०	६।११।१९।११	५।१४।५५।३५	८।२०।१९।२४	६।२७।४७।५३	४।२२।३३। ७	९।२१।१४।५५	१०।२५।३६। ८	९।२७।३६।४३	७।२६	१६।१३	३।३२	१।२२।५३	१२
१३	५।२६। २।३५	११। १।५४। ६	६।१२। ०।१०	५।१४।१९।३१	८।२०।२५।३५	६।२९। ०।४७	४।२२।३९।५३	९।२१।११।४४	१०।२५।३४।१०	९।२७।३६। ३	७।४८	१६।४६	४।३२	१।२६।४९	१३
१४	५।२७। १।५९	११।१५।५३।२२	६।१२।४१।१०	५।१३।५३।४८	८।२०।३१।५५	७। ०।१३।३९	४।२२।४६।३५	९।२१। ८।३३	१०।२५।३२।१३	९।२७।३५।२४	८।११	१७।२१	५।३४	१।३०।४६	१४
१५	५।२८। १।२५	०। ०।१४।२६	६।१३।२२।१५	५।१३।३८।५९	८।२०।३८।२५	७। १।२६।३०	४।२२।५३।१५	९।२१। ५।२२	१०।२५।३०।१८	९।२७।३४।४७	८।३३	१८। ०	६।३९	१।३४।४३	१५

अक्टूबर सन् २००८ ई. प्रात: घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५९।५६, वेंकटेश (प्लूटो) ८।४।३८।२०

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (व.)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल(व.)	नेपच्यून(व.)	र.क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	उ. +	उदय	अस्त	रात्रि१२वजे	
१६	५।२९। ०।५२	०।१४।५०।५५	६।१४। ३।२४	५।१३।३५।१३	८।२०।४५। ५	७। २।३९।२०	४।२२।५९।५२	९।२१। २।१२	१०।२५।२८।२५	९।२७।३४।१२	८।५५	१८।४४	७।४६	१।३८।३९	१६
१७	६। ०। ०।२१	०।२९।३५।४०	६।१४।३३।३५	५।१३।४२।२६	८।२०।५१।५३	७। ३।५२। ७	४।२३। ६।२७	९।२०।५९। १	१०।२५।२६।३३	९।२७।३३।३८	९।१७	१९।३५	८।५६	१।४२।३६	१७
१८	६। ०।५९।५३	१।१४।२०।२५	६।१५।२५।५०	५।१४। ०।१७	८।२०।५८।५१	७। ५। ४।५३	४।२३।१२।५८	९।२०।५५।५०	१०।२५।२४।४४	९।२७।३३। ७	९।३९	२०।३४	१०। ६	१।४६।३२	१८
१९	६। १।५९।२८	१।२८।५७।५८	६।१६। ७। ८	५।१४।२८।१५	८।२१। ५।५८	७। ६।१७।३८	४।२३।१९।२८	९।२०।५२।३९	१०।२५।२२।५६	९।२७।३२।३८	१०। १	२१।३८	११।१२	१।५०।२९	१९
२०	६। २।५९। ५	२।१३।२२।५८	६।१६।४८।२९	५।१५। ५।३७	८।२१।१३।१३	७। ७।३०।२१	४।२३।२५।५४	९।२०।४९।२८	१०।२५।२१।११	९।२७।३२।१०	१०।२२	२२।४५	१२।११	१।५४।२५	२०
२१	६। ३।५८।४४	२।२७।३२।२३	६।१७।२९।५५	५।१५।५१।३९	८।२१।२०।३८	७। ८।४३। ४	४।२३।३२।१७	९।२०।४६।१८	१०।२५।१९।२७	९।२७।३१।४४	१०।४४	२३।५२	१३। २	१।५८।२२	२१
२२	६। ४।५८।२५	३।११।२५।१४	६।१८।११।२२	५।१६।४५।३१	८।२१।२८।११	७। ९।५५।४४	४।२३।३८।३५	९।२०।४३। ७	१०।२५।१७।४६	९।२७।३१।२०	११। ५	--।--	१३।४५	२। २।१८	२२
२३	६। ५।५८। ५	३।२५। २। ५	६।१८।५२।५३	५।१७।४६।२४	८।२१।३५।५३	७।११। ८।२३	४।२३।४४।५३	९।२०।३९।५६	१०।२५।१६। ६	९।२७।३०।५८	११।२६	०।५६	१४।२३	२। ६।१५	२३
२४	६। ६।५७।५३	४। ८।२४।१८	६।१९।३४।२८	५।१८।५३।२८	८।२१।४३।४३	७।१२।२१। १	४।२३।५१। ६	९।२०।३६।४५	१०।२५।१४।३०	९।२७।३०।३८	११।४७	१।५८	१४।५६	२।१०।१२	२४
२५	६। ७।५७।४१	४।२१।३३।२४	६।२०।१६। ६	५।२०। ५।५६	८।२१।५१।४३	७।१३।३३।३९	४।२३।५७।१५	९।२०।३३।३४	१०।२५।१२।५५	९।२७।३०।२०	१२। ८	२।५६	१५।२८	२।१४। ८	२५
२६	६। ८।५७।३१	५। ४।३०।४३	६।२०।५७।४६	५।२१।२३। ४	८।२१।५९।५०	७।१४।४६।१२	४।२४। ३।११	९।२०।३०।२४	१०।२५।११।२२	९।२७।३०। ५	१२।२८	३।५३	१५।५८	२।१८। ५	२६
२७	६। ९।५७।२३	५।१७।१७। ५	६।२१।३९।३१	५।२२।४४।११	८।२२। ८। ७	७।१५।५८।४५	४।२४। ९।२४	९।२०।२७।१३	१०।२५। ९।५२	९।२७।२९।५१	१२।४९	४।४९	१६।२९	२।२२। १	२७
२८	६।१०।५७।१८	५।२९।५२।५८	६।२२।२१।१९	५।२४। ८।४१	८।२२।१६।३१	७।१७।११।१७	४।२४।१५।२३	९।२०।२४। २	१०।२५। ८।२४	९।२७।२९।३८	१३। ९	५।४५	१७। १	२।२५।५८	२८
२९	६।११।५७।१४	६।१२।१८।३२	६।२३। ३।१२	५।२५।३६। २	८।२२।२५। ३	७।१८।२३।४८	४।२४।२१।११	९।२०।२०।५१	१०।२५। ६।५८	९।२७।२९।२८	१३।२९	६।४१	१७।३७	२।२९।५४	२९
३०	६।१२।५७।१२	६।२४।३४। २	६।२३।४५। ७	५।२७। ५।४३	८।२२।३३।४३	७।१९।३६।१५	४।२४।२७।११	९।२०।१७।४०	१०।२५। ५।३५	९।२७।२९।२०	१३।४९	७।३८	१८।१६	२।३३।५१	३०
३१	६।१३।५७।१२	७। ६।४०। २	६।२४।२७। ६	५।२८।३७।२०	८।२२।४२।३१	७।२०।४८।४१	४।२४।३२।५९	९।२०।१४।३०	१०।२५। ४।१५	९।२७।२९।१४	१४। ८	८।३५	१९। ०	२।३७।४७	३१

नवम्बर सन् २००८ इ. प्रात: घं.५ मि.३० बज क दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५९।१०, वेंकटेश (प्लूटो) ८।५।१३।३९

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (व.)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (व.)	हर्शल(व.)	नेपच्यून(व.)	र.क्रांति	उदय	अस्त	सांपा.काल	तारीख
१	६।१४।५७।१४	७।१८।३७।४४	६।२५। ९। ५	६। ०।१०।३१	८।२२।५१।२५	७।२२। १। ५	४।२४।३८।४३	९।२०।११।१९	१०।२५। २।५६	९।२७।२९।१०	१४।२७	९।३०	१९।४८	२।४१।४४	१
२	६।१५।५७।१८	८। ०।२९।१२	६।२५।५१।१०	६। १।४४।५६	८।२३। ०।३०	७।२३।१३।२६	४।२४।४४।२४	९।२०। ८। ८	१०।२५। १।४०	९।२७।२९। ९	१४।४६	१०।२१	२०।४०	२।४५।४१	२
३	६।१६।५७।२३	८।१२।१७।२१	६।२६।३३।१८	६। ३।२०।२०	८।२३। ९।४१	७।२४।२५।४६	४।२४।५०। ०	९।२०। ४।५७	१०।२५। ०।२७	९।२७।२९। ९	१५। ५	११। ९	२१।३४	२।४९।३७	३
४	६।१७।५७।३०	८।२४। ५।५९	६।२७।१५।३०	६। ४।५६।३०	८।२३।१९। ०	७।२५।३८। ४	४।२४।५५।३२	९।२०। १।४६	१०।२४।५९।१७	९।२७।२९।११	१५।२४	११।५१	२२।३०	२।५३।३४	४
५	६।१८।५७।३९	९। ५।५९।४३	६।२७।५७।४४	६। ६।३३।१२	८।२३।२८।२६	७।२६।५०।१९	४।२५। १। १	९।१९।५८।३६	१०।२४।५८। ९	९।२७।२९।१५	१५।४२	१२।३०	२३।२५	२।५७।३०	५
६	६।१९।५७।४९	९।१८। ३।४२	६।२८।४०। २	६। ८।१०।१८	८।२३।३७।५९	७।२८। २।३१	४।२५। ६।२५	९।१९।५५।२५	१०।२४।५७। ४	९।२७।२९।२२	१६। ०	१३। ५	--।--	३। १।२७	६
७	६।२०।५८। ०	१०। ०।२३।२६	६।२९।२२।२४	६। ९।४७।४०	८।२३।४७।४०	७।२९।१४।४१	४।२५।११।४४	९।१९।५२।१४	१०।२४।५६। २	९।२७।२९।३०	१६।१८	१३।३७	०।२२	३। ५।२३	७
८	६।२१।५८।१३	१०।१३। ४।१७	७। ०। ४।४७	६।११।२५।१०	८।२३।५७।२८	८। ०।२६।४७	४।२५।१७। ०	९।१९।४९। ३	१०।२४।५५। २	९।२७।२९।४१	१६।३८	१४। ९	१।१७	३। ९।२०	८
९	६।२२।५८।२७	१०।२६।१०।५४	७। ०।४७।१४	६।१३। २।४३	८।२४। ७।२३	८। १।३८।५२	४।२५।२२।११	९।१९।४५।५२	१०।२४।५४। ६	९।२७।२९।५३	१६।५३	१४।४१	२।१५	३।१३।१६	९
१०	६।२३।५८।४३	११। ९।४६।२५	७। १।२९।४४	६।१४।४०।१५	८।२४।१७।२४	८। २।५०।५३	४।२५।२७।१७	९।१९।४२।४२	१०।२४।५३।१२	९।२७।३०। ८	१७।१०	१५।१४	३।१४	३।१७।१३	१०
११	६।२४।५९। १	११।२३।५१।३७	७। २।१२।१८	६।१६।१७।४३	८।२४।२७।३२	८। ४। २।५१	४।२५।३२।१९	९।१९।३९।३१	१०।२४।५२।२०	९।२७।३०।२५	१७।२७	१५।५१	४।१७	३।२१।१०	११
१२	६।२५।५९।२०	०। ८।२४। ८	७। २।५४।५४	६।१७।५४। २	८।२४।३७।४७	८। ५।१४।४५	४।२५।३७।१७	९।१९।३६।२०	१०।२४।५१।३२	९।२७।३०।४३	१७।४३	१६।३३	५।२३	३।२५। ६	१२
१३	६।२६।५९।४०	०।२३।१८। ६	७। ३।३७।३३	६।१९।३२।१३	८।२४।४८। ८	८। ६।२६।३७	४।२५।४२। १	९।१९।३३। ९	१०।२४।५०।४७	९।२७।३१। ५	१७।५९	१७।२२	६।३३	३।२९। ३	१३
१४	६।२८। ०। २	१। ८।२४।४२	७। ४।२०।१५	६।२१। ९।१४	८।२४।५८।३५	८। ७।३८।२६	४।२५।४६।५७	९।१९।२९।५८	१०।२४।५०। ५	९।२७।३१।२८	१८।१५	१८।१८	७।४५	३।३२।५९	१४
१५	६।२९। ०।२६	१।२३।३३।३०	७। ५। ३। ०	६।२२।४६। २	८।२५। ९। ९	८। ८।५०।१३	४।२५।५१।४१	९।१९।२६।४८	१०।२४।४९।२५	९।२७।३१।५२	१८।३०	१९।२३	८।५५	३।३६।५६	१५
१६	७। ०। ०।५२	२। ८।३४।२२	७। ५।४५।५०	६।२४।२२।३६	८।२५।१९।५०	८।१०। १।५४	४।२५।५६।११	९।१९।२३।३७	१०।२४।४८।४८	९।२७।३२।१९	१८।४५	२०।३२	९।५९	३।४०।५२	१६
१७	७। १। १।२०	२।२३।१९। ५	७। ६।२८।४२	६।२५।५८।५८	८।२५।३०।३६	८।११।१३।३३	४।२६। ०।५३	९।१९।२०।२६	१०।२४।४८।१४	९।२७।३२।४८	१९। ०	२१।४१	१०।५६	३।४४।४९	१७
१८	७। २। १।५०	३। ७।४२।३२	७। ७।११।३९	६।२७।३५। ६	८।२५।४१।२९	८।१२।२५। ८	४।२६। ५।२२	९।१९।१७।१५	१०।२४।४७।४३	९।२७।३३।१९	१९।१५	२२।४९	११।४३	३।४८।४५	१८
१९	७। ३। २।२२	३।२१।४२।३७	७। ७।५४।३९	६।२९।११। ०	८।२५।५२।२७	८।१३।३६।४०	४।२६। ९।४६	९।१९।१४। ४	१०।२४।४७।१५	९।२७।३३।५२	१९।२९	२३।५२	१२।२३	३।५२।४२	१९
२०	७। ४। २।५४	४। ५।१९।४४	७। ८।३७।४१	७। ०।४६।४२	८।२६। ३।३१	८।१४।४८। ९	४।२६।१४। ४	९।१९।१०।५४	१०।२४।४६।५०	९।२७।३४।२७	१९।४२	--।--	१२।५९	३।५६।३९	२०
२१	७। ५। ३।२९	४।१८।३५।५५	७। ९।२०।४८	७। २।२२।१०	८।२६।१४।४०	८।१५।५९।३४	४।२६।१८।१९	९।१९। ७।४३	१०।२४।४६।२७	९।२७।३५। ४	१९।५६	०।५२	१३।३१	४। ०।३५	२१
२२	७। ६। ४। ६	५। १।३४। ०	७।१०। ३।५८	७। ३।५७।२६	८।२६।२५।५७	८।१७।१०।५५	४।२६।२२।२६	९।१९। ४।३२	१०।२४।४६। ८	९।२७।३५।४२	२०। ९	१।४९	१४। १	४। ४।३२	२२
२३	७। ७। ४।४४	५।१४।१६।५६	७।१०।४७।१०	७। ५।३२।३०	८।२६।३७।१८	८।१८।२२।१२	४।२६।२६।२९	९।१९। १।२१	१०।२४।४५।५२	९।२७।३६।२३	२०।२२	२।४५	१४।३२	४। ८।२८	२३
२४	७। ८। ५।२४	५।२६।४७।२५	७।११।३०।२५	७। ७। ७।२५	८।२६।४८।४५	८।१९।३३।२५	४।२६।३०।२७	९।१८।५८।१०	१०।२४।४५।३९	९।२७।३७। ६	२०।३४	३।४०	१५। ३	४।१२।२५	२४
२५	७। ९। ६। ५	६। ९। ७।३६	७।१२।१३।४५	७। ८।४२।१०	८।२७। ०।१८	८।२०।४४।३४	४।२६।३४।१९	९।१८।५५। ०	१०।२४।४५।२९	९।२७।३७।५१	२०।४६	४।३५	१५।३७	४।१६।२१	२५

नवम्बर सन् २००८ ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २३।५९।१०, वेंकटेश (प्लूटो) ८।५।१३।३९

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल(व.) रा.अं.क.वि.	नेपच्यून रा.अं.क.वि.	र.क्रांति द. -	चन्द्रोदयास्त उदय	अस्त	सांपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
२६	७।१०। ६।४८	६।२१।११।११	७।१२।५७। ८	७।१०।१६।४६	८।२७।११।५६	८।२१।५५।३९	४।२६।३८। ६	९।१८।५१।४९	१०।२४।४५।२२	९।२७।३८।३८	२०।५७	५।३१	१६।१५	४।२०।१८	२६
२७	७।११। ७।३३	७। ३।२३।२५	७।१३।४०।३४	७।११।५।१३	८।२७।२३।३९	८।२३। ६।४०	४।२६।४१।४७	९।१८।४८।३८	१०।२४।४५।१७	९।२७।३९।२८	२१। ८	६।२८	१६।५७	४।२४।१४	२७
२८	७।१२। ८।१९	७।१५।२१।२३	७।१४।२४। २	७।१३।२५।३३	८।२७।३५।२७	८।२४।१७।३६	४।२६।४५।२३	९।१८।४५।२७	१०।२४।४५।१६	९।२७।४०।१९	२१।१९	७।२३	१७।४३	४।२८।११	२८
२९	७।१३। ९। ६	७।२७।१४।१५	७।१५। ७।३४	७।१४।५९।४६	८।२७।४७।२०	८।२५।२८।२७	४।२६।४८।५३	९।१८।४२।१६	१०।२४।४५।१९	९।२७।४१।१२	२१।२९	८।१६	१८।३४	४।३२। ८	२९
३०	७।१४। ९।५४	८। ९। ३।३३	७।१५।५१। ९	७।१६।३३।५४	८।२७।५९।१८	८।२६।३९।१४	४।२६।५२।१७	९।१८।३९। ६	१०।२४।४५।२४	९।२७।४२। ६	२१।३९	९। ४	१९।२८	४।३६। ४	३०

दिसम्बर सन् २००८ ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २३।५९।१५, वेंकटेश (प्लूटो) ८।६।९।४

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल(व.) रा.अं.क.वि.	नेपच्यून रा.अं.क.वि.	र.क्रांति द. -	चन्द्रोदयास्त उदय	अस्त	सांपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
१	७।१५।१०।४३	८।२०।५।२०	७।१६।३४।४९	७।१८। ७।५५	८।२८।११।२०	८।२७।४९।५५	४।२६।५५।३५	९।१८।३५।५५	१०।२४।४५।३३	९।२७।४३। ३	२१।४९	९।४९	२०।२३	४।४०। १	१
२	७।१६।११।३४	९। २।४०।२५	७।१७।१८।३०	७।१९।४१।५४	८।२८।२३।२८	८।२९। ०।३१	४।२६।५८।४८	९।१८।३२।४४	१०।२४।४५।४४	९।२७।४४। २	२१।५८	१०।२८	२१।१८	४।४३।५७	२
३	७।१७।१२।२६	९।१४।३४।२१	७।१८। २।१४	७।२१।१५।५०	८।२८।३५।४०	९। ०।११। १	४।२७। १।५५	९।१८।२९।३३	१०।२४।४५।५९	९।२७।४५। २	२२। ७	११। ४	२२।१३	४।४७।५४	३
४	७।१८।१३।१८	९।२६।३७।२१	७।१८।४६। २	७।२२।४९।४४	८।२८।४७।५७	९। १।२१।२५	४।२७। ४।५५	९।१८।२६।२२	१०।२४।४६।१७	९।२७।४६। ४	२२।१५	११।३६	२३। ८	४।५१।५०	४
५	७।१९।१४।११	१०। ८।५४।१५	७।१९।२९।५२	७।२४।२३।३७	८।२९। ०।१८	९। २।३१।४३	४।२७। ७।५०	९।१८।२३।१२	१०।२४।४६।३८	९।२७।४७।१०	२२।२३	१२। ७	--। --	४।५५।४७	५
६	७।२०।१५। ५	१०।२१।३०। ७	७।२०।१३।४५	७।२५।५७।२९	८।२९।१२।४४	९। ३।४१।५५	४।२७।१०।३९	९।१८।२०। १	१०।२४।४७। २	९।२७।४८।१६	२२।३०	१२।३८	०। ३	४।५९।४४	६
७	७।२१।१५।५९	११। ४।२९।४८	७।२०।५७।४१	७।२७।३१।२०	८।२९।२५।१३	९। ४।५२। ०	४।२७।१३।२३	९।१८।१६।५०	१०।२४।४७।३०	९।२७।४९।२४	२२।३७	१३। ९	०।५९	५। ३।४०	७
८	७।२२।१६।५५	११।१७।५७।१९	७।२१।४१।४०	७।२९। ५।१२	८।२९।३७।४६	९। ६। १।५८	४।२७।१५।५८	९।१८।१३।३९	१०।२४।४८। ०	९।२७।५०।३४	२२।४३	१३।४३	१।५८	५। ७।३७	८
९	७।२३।१७।५१	०। १।५४।५३	७।२२।२५।४२	८। ०।३९। ५	८।२९।५०।२३	९। ७।११।४९	४।२७।१८।२९	९।१८।१०।२८	१०।२४।४८।३४	९।२७।५१।४४	२२।४९	१४।२१	३। १	५।११।३३	९
१०	७।२४।१८।४८	०।१६।२२। २	७।२३। ९।४७	८। २।१३। ०	९। ०। ३। ५	९। ८।२१।३३	४।२७।२०।५४	९।१८। ७।१८	१०।२४।४९।१०	९।२७।५२।५८	२२।५५	१५। ६	४। ८	५।१५।३०	१०
११	७।२५।१९।४६	१। १।१४।५३	७।२३।५३।५५	८। ३।४६।५४	९। ०।१५।५१	९। ९।३१। ८	४।२७।२३।१२	९।१८। ४। ७	१०।२४।४९।४९	९।२७।५४।१४	२३। ०	१५।५८	५।१८	५।१९।२६	११
१२	७।२६।२०।४४	१।१६।२५।५९	७।२४।३८।१५	८। ५।२०।४९	९। ०।२८।४०	९।१०।४०।३५	४।२७।२५।२४	९।१८। ०।५६	१०।२४।५०।३२	९।२७।५५।३०	२३। ५	१७। ०	६।३०	५।२३।२३	१२
१३	७।२७।२१।४२	२। १।४५।१०	७।२५।२२।२०	८। ६।५४।४७	९। ०।४१।३३	९।११।४९।५५	४।२७।२७।३०	९।१७।५७।४५	१०।२४।५१।१७	९।२७।५६।५०	२३। ९	१८। ८	७।३८	५।२७।१९	१३
१४	७।२८।२२।४२	२।१७। १।१३	७।२६। ६।३६	८। ८।२९।४१	९। ०।५४।३०	९।१२।५९। ६	४।२७।२९।३०	९।१७।५४।३४	१०।२४।५२। ६	९।२७।५८।१०	२३।१३	१९।२०	८।४०	५।३१।१६	१४
१५	७।२९।२३।४३	३। २। ३।४७	७।२६।५०।५५	८।१०। २।३६	९। १। ७।३०	९।१४। ८। ९	४।२७।३१।२३	९।१७।५१।२४	१०।२४।५२।५७	९।२७।५९।३२	२३।१६	२०।३२	९।३३	५।३५।१३	१५
१६	८। ०।२४।४५	३।१६।४५। ४	७।२७।३५।१८	८।११।३६।२८	९। १।२०।३५	९।१५।१७। ३	४।२७।३३।१०	९।१७।४८।१३	१०।२४।५३।५२	९।२८। ०।५६	२३।१९	२१।३९	२०।१८	५।३९। ९	१६
१७	८। १।२५।४८	४। १। ०।३३	७।२८।१९।४४	८।१३।१०।१९	९। १।३३।४२	९।१६।२५।४७	४।२७।३४।५०	९।१७।४५। २	१०।२४।५४।४९	९।२८। २।२२	२३।२१	२२।४३	२०।५७	५।४३। ६	१७
१८	८। २।२६।५१	४।१४।४८।५०	७।२९। ४।१३	८।१४।४४। ३	९। १।४६।५२	९।१७।३४।२४	४।२७।३६।२५	९।१७।४१।५१	१०।२४।५५।५०	९।२८। ३।४९	२३।२३	२३।४२	२१।३१	५।४७। २	१८
१९	८। ३।२७।५५	४।२८।११। ३	७।२९।४८।४४	८।१६।१७।३९	९। २। ०। ५	९।१८।४२।५२	४।२७।३७।५२	९।१७।३८।४०	१०।२४।५६।५३	९।२८। ५।१८	२३।२५	--। --	२२। ३	५।५०।५९	१९
२०	८। ४।२९। ०	५।११। ९।५६	८। ०।३३।१९	८।१७।५१। २	९। २।१३।२२	९।१९।५१। ८	४।२७।३९।१३	९।१७।३५।३०	१०।२४।५८। ०	९।२८। ६।४८	२३।२६	०।४०	२२।३४	५।५४।५५	२०
२१	८। ५।३०। ६	५।२३।४९। ५	८। १।१७।५७	८।१९।२४। ८	९। २।२६।४२	९।२०।५९।१५	४।२७।४०।२७	९।१७।३२।१९	१०।२४।५९। ८	९।२८। ८।२०	२३।२६	१।३५	२३। ५	५।५८।५२	२१
२२	८। ६।३१।१३	६। ६।११।२०	८। २। २।३८	८।२०।५६।५४	९। २।४०। ४	९।२२। ७।११	४।२७।४१।३५	९।१७।२९। ८	१०।२५। ०।२२	९।२८। ९।५३	२३।२६	२।३१	२३।३९	६। २।४८	२२
२३	८। ७।३२।२१	६।१८।२३।१९	८। २।४७।२२	८।२२।२९।१२	९। २।५३।३०	९।२३।१४।५७	४।२७।४२।३७	९।१७।२५।५७	१०।२५। १।३७	९।२८।११।२८	२३।२६	३।२७	१४।१५	६। ६।४५	२३
२४	८। ८।३३।२९	७। ०।२५।१७	८। ३।३२। ९	८।२४। ०।५४	९। ३। ६।५८	९।२४।२२।३१	४।२७।४३।३१	९।१७।२२।४६	१०।२५। २।५५	९।२८।१३। ४	२३।२५	४।२३	१४।५५	६।१०।४२	२४
२५	८। ९।३४।३८	७।१२।२०।५९	८। ४।१६।५८	८।२५।३१।५४	९। ३।२०।३०	९।२५।२९।५४	४।२७।४४।२०	९।१७।१९।३६	१०।२५। ४।१६	९।२८।१४।४२	२३।२४	५।१८	१५।४०	६।१४।३८	२५
२६	८।१०।३५।४७	७।२४।१२।४१	८। ५। १।५१	८।२७। १।५८	९। ३।३४।३०	९।२६।३७। ६	४।२७।४५। १	९।१७।१६।२५	१०।२५। ५।४०	९।२८।१६।२१	२३।२२	६।११	१६।२९	६।१८।३५	२६
२७	८।११।३६।५७	८। ६। २।२१	८। ५।४६।४६	८।२८।३०।५७	९। ३।४७।४०	९।२७।४४। ५	४।२७।४५।३५	९।१७।१३।१४	१०।२५। ७। ७	९।२८।१८। २	२३।१९	७। १	१७।२२	६।२२।३१	२७
२८	८।१२।३८। ७	८।१७।५।४३	८। ६।३।४४	८।२९।५८।३४	९। ४। १।११	९।२८।५०।५२	४।२७।४६। ३	९।१७।१०। ३	१०।२५। ८।३७	९।२८।१९।४५	२३।१७	७।४७	१८।१७	६।२६।२८	२८
२९	८।१३।३९।१७	८।२९।४२।३७	८। ७।१६।४४	९। १।२४।३४	९। ४।१४।५८	९।२९।५७।२५	४।२७।४६।२५	९।१७। ६।५२	१०।२५।१०।१०	९।२८।२१।२९	२३।१३	८।२८	१९।१३	६।३०।२४	२९
३०	८।१४।४०।२७	९।११।३७। १	८। ८। १।४७	९। २।४८।३६	९। ४।२८।४१	१०। १। ३।४५	४।२७।४६।४०	९।१७। ३।४२	१०।२५।११।४५	९।२८।२३।१४	२३।१०	९। ५	२०। ८	६।३४।२१	३०
३१	८।१५।४१।३७	९।२३।३७।२१	८। ८।४६।५२	९। ४।१०।२०	९। ४।४२।२७	१०। २। ९।५१	४।२७।४६।४८	९।१७। ०।३१	१०।२५।१३।२३	९।२८।२५। १	२३। ५	९।३८	२१। ३	६।३८।१७	३१

जनवरी सन् २००९ ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशाः २३।५९।१०, वेंकटेश (प्लूटो) ८।७।१६।१२

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल(व.) रा.अं.क.वि.	नेपच्यून रा.अं.क.वि.	र.क्रांति द. -	चन्द्रोदयास्त उदय	अस्त	सांपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
१	८।१६।४२।४७	१०। ५।४६।२७	८। ९।३१। २	९। ५।२९।१७	९। ४।५६।१५	१०। ३।१५।४१	४।२७।४६।५०	९।१६।५७।२०	१०।२५।१५। ४	९।२८।२६।४८	२३। १	१०। ९	२२।५७	६।४२।१४	१
२	८।१७।४३।५७	१०।१८। ७।४२	८।१०।१७।२४	९। ६।४४।५७	९। ५।१०। ४	१०। ४।२१।१७	४।२७।४६।४५	९।१६।५४। ९	१०।२५।१६।४८	९।२८।२८।३८	२२।५६	१०।३९	२२।५२	६।४६। १	२
३	८।१८।४५। ७	११। ०।४४।४६	८।११। २।२७	९। ७।५६।४७	९। ५।२३।५५	१०। ५।२६।३६	४।२७।४६।३४	९।१६।५०।५८	१०।२५।१८।३४	९।२८।३०।२८	२२।५०	११। ९	२३।४८	६।५०। ७	३
४	८।१९।४६।१७	११।१३।४१।२७	८।११।४७।४३	९। ९। ४। ८	९। ५।३७।४८	१०। ६।३१।३९	४।२७।४६।१६	९।१६।४७।४८	१०।२५।२०।२३	९।२८।३२।२०	२२।४४	११।४१	--। --	६।५४। ४	४

जनवरी सन् २००९ ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५९।१०, वेंकटेश (प्लूटो) ८।७।१६।१२

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (व.)	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	र.क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	द. -	उदय	अस्त	रात्रि१२बजे	
५	८।२०।४७।२७	११।२७। १।११	८।१२।३२।५९	९।१०। ६।१७	९। ५।५१।४३	१०। ७।३६।२५	४।२७।४५।५१	९।१६।४४।३७	१०।२५।२२।१५	९।२८।३४।१३	२२।३८	१२।१६	०।४७	६।५८। ०	५
६	८।२१।४८।३६	०।१०।४६।२५	८।१३।१८।२१	९।११। २।३०	९। ६। ५।३९	१०। ८।४०।५४	४।२७।४५।११	९।१६।४१।२६	१०।२५।२४। ९	९।२८।३६। ७	२२।३१	१२।५६	१।५०	७। १।५७	६
७	८।२२।४९।४४	०।२४।५७।५९	८।१४। ३।४८	९।१२।५१।५३	९। ६।११।३७	१०। ९।४५। ३	४।२७।४४।४१	९।१६।३८।१५	१०।२५।२६। ६	९।२८।३८। २	२२।२३	१३।४३	२।५६	७। ५।५३	७
८	८।२३।५०।५२	१। ९।३४।११	८।१४।४९।१०	९।१२।३३।३४	९। ६।३३।३५	१०।१०।४८।५४	४।२७।४३।५६	९।१६।३५। ४	१०।२५।२८। ५	९।२८।३९।५९	२२।१६	१४।३८	४। ५	७। ९।५०	८
९	८।२४।५२। ०	१।२४।३०।२६	८।१५।३४।३८	९।१३। ६।३९	९। ६।४७।३५	१०।११।५२।२५	४।२७।४३। ५	९।१६।३१।५४	१०।२५।३०। ७	९।२८।४१।५६	२२। ७	१५।४२	५।१४	७।१३।४७	९
१०	८।२५।५३। ८	२। ९।३९।२४	८।१६।२०। ९	९।१३।३०।१३	९। ७। १।३८	१०।१२।५५।३५	४।२७।४२। ८	९।१६।२८।४३	१०।२५।३२।१०	९।२८।४३।५४	२१।५९	१६।५३	६।१९	७।१७।४३	१०
११	८।२६।५४।१५	२।२४।५१।४१	८।१७। ५।४१	९।१३।४३।२९	९। ७।१५।४१	१०।१३।५८।२४	४।२७।४१। ४	९।१६।२५।३२	१०।२५।३४।१७	९।२८।४५।५४	२१।५०	१८। ५	७।१७	७।२१।४०	११
१२	८।२७।५५।२२	३। ९।५७।२३	८।१७।५१।२५	९।१३।४५।४४	९। ७।२९।४५	१०।१५। ०।५२	४।२७।३९।५४	९।१६।२२।२१	१०।२५।३६।२६	९।२८।४७।५४	२१।४०	१९।१६	८। ७	७।२५।३६	१२
१३	८।२८।५६।२९	३।२४।४७।२७	८।१८।३६।५४	९।१३।३६।२५	९। ७।४३।५०	१०।१६। २।५७	४।२७।३८।३८	९।१६।१९।१०	१०।२५।३८।३८	९।२८।४९।५६	२१।३०	२०।२४	८।४९	७।२९।३३	१३
१४	८।२९।५७।३५	४। ९।१५। ७	८।१९।२२।३४	९।१३।१५।११	९। ७।५७।५६	१०।१७। ४।३९	४।२७।३७।१५	९।१६।१६। ०	१०।२५।४०।५३	९।२८।५१।५८	२१।२०	२१।२८	९।२७	७।३३।२९	१४
१५	९। ०।५८।४१	४।२३।१६।२७	८।२०। ८।१६	९।१२।४२।३१	९। ८।१२। ३	१०।१८। ५।५७	४।२७।३५।४५	९।१६।१२।४९	१०।२५।४३। ८	९।२८।५४। १	२१। ९	२२।२८	१०। १	७।३७।२६	१५
१६	९। १।५९।४७	५। ६।५०।१५	८।२०।५४। ०	९।११।५८।३१	९। ८।२६।११	१०।१९। ६।५०	४।२७।३४।१०	९।१६। ९।३८	१०।२५।४५।२८	९।२८।५६। ५	२०।५८	२३।२६	१०।३३	७।४१।२२	१६
१७	९। ३। ०।५३	५।१९।५७।४७	८।२१।३९।४७	९।११। ४।१८	९। ८।४०।२०	१०।२०। ७।१७	४।२७।३२।२८	९।१६। ६।२७	१०।२५।४७।४८	९।२८।५८।११	२०।४६	--।--	११। ५	७।४५।१९	१७
१८	९। ४। १।५८	६। २।४१।५१	८।२२।२५।३८	९।१०। १।१७	९। ८।५४।३०	१०।२१। ७।१७	४।२७।३०।४०	९।१६। ३।१६	१०।२५।५०।१२	९।२९। ०।१६	२०।३४	०।२३	११।३८	७।४९।१६	१८
१९	९। ५। ३। ३	६।१५। ६।२१	८।२३।११।३०	९। ८।५१।१६	९। ९। ८।४०	१०।२२। ६।५१	४।२७।२८।४५	९।१६। ०। ६	१०।२५।५२।३७	९।२९। २।२३	२०।२२	१।२०	१२।१४	७।५३।१२	१९
२०	९। ६। ४। ८	६।२७।१५।३६	८।२३।५७।२४	९। ७।३६।२६	९। ९।२२।५०	१०।२३। ५।५८	४।२७।२६।४५	९।१५।५६।५५	१०।२५।५५। ४	९।२९। ४।३१	२०। ९	२।१६	१२।५३	७।५७। ९	२०
२१	९। ७। ५।१२	७। ९।१३।५८	८।२४।४३।२०	९। ६।२१। ७	९। ९।३७। २	१०।२४। ४।३५	४।२७।२४।३८	९।१५।५३।४४	१०।२५।५७।३४	९।२९। ६।३९	१९।५६	३।१२	१३।३७	८। १। ५	२१
२२	९। ८। ६।१६	७।२१। ५।३६	८।२५।२९।१९	९। ५। १।४४	९। ९।५१।१३	१०।२५। २।४१	४।२७।२२।२६	९।१५।५०।३३	१०।२६। ०। ६	९।२९। ८।४७	१९।४३	४। ६	१४।२५	८। ५। २	२२
२३	९। ९। ७।१९	८। ३।५४।१३	८।२६।१५।११	९। ३।४६।३४	९।१०। ५।२५	१०।२६। ०।१७	४।२७।२०। ८	९।१५।४७।२२	१०।२६। २।४०	९।२९।१०।५७	१९।२९	४।५७	१५।१६	८। ८।५८	२३
२४	९।१०। ८।२२	८।१४।४३। ४	८।२७। १।२२	९। २।३५।३८	९।१०।१९।३७	१०।२६।५७।२०	४।२७।१७।४४	९।१५।४४।१२	१०।२६। ५।१६	९।२९।१३। ७	१९।१५	५।४४	१६।११	८।१२।५५	२४
२५	९।११। ९।२४	८।२६।३४।५३	८।२७।४७।२७	९। १।३०।३७	९।१०।३३।४९	१०।२७।५३।४९	४।२७।१५।१४	९।१५।४१। १	१०।२६। ७।५४	९।२९।१५।१८	१९। ०	६।२७	१७। ७	८।१६।५१	२५
२६	९।१२।१०।२६	९। ८।३१।५५	८।२८।३३।३४	९। ०।३२।५०	९।१०।४८। ०	१०।२८।४९।४४	४।२७।१२।३८	९।१५।३७।५०	१०।२६।१०।३३	९।२९।१७।३०	१८।४५	७। ५	१८। ३	८।२०।४८	२६
२७	९।१३।११।२६	९।२०।३६। ६	८।२९।१९।४३	८।२९।४३।१०	९।११। २।१३	१०।२९।४५। २	४।२७। ९।५७	९।१५।३४।३९	१०।२६।१३।१५	९।२९।१९।४२	१८।३०	७।४०	१८।५८	८।२४।४५	२७
२८	९।१४।१२।२६	१०। २।४९। ७	९। ०। ५।५४	८।२९। २।११	९।११।१६।२५	११। ०।३९।४२	४।२७। ७।१०	९।१५।३१।२८	१०।२६।१५।५८	९।२९।२१।५४	१८।१४	८।१२	१९।५३	८।२८।४१	२८
२९	९।१५।१३।२५	१०।१५।१२।३२	९। ०।५२। ६	८।२८।३०। ६	९।११।३०।३६	११। १।३३।४४	४।२७। ४।१८	९।१५।२८।१८	१०।२६।१८।४४	९।२९।२४। ८	१७।५८	८।४२	२०।४८	८।३२।३८	२९
३०	९।१६।१४।२३	१०।२७।४७।५७	९। १।३८।२१	८।२८। ६।५२	९।११।४४।४७	११। २।२७। ४	४।२७। १।२१	९।१५।२५। ७	१०।२६।२१।३१	९।२९।२६।२२	१७।४२	९।१२	२१।४४	८।३६।३४	३०
३१	९।१७।१५।१९	११।१०।३७। ०	९। २।२४।३७	८।२७।५२।१५	९।११।५८।५८	११। ३।१९।४२	४।२६।५८।१८	९।१५।२१।५६	१०।२६।२४।२०	९।२९।२८।३५	१७।२६	९।४३	२२।४१	८।४०।३१	३१

फरवरी सन् २००९ ई. प्रातः घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५९।१६, वेंकटेश (प्लूटो) ८।८।१८।४०

तारीख	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (व.)	राहु (व.)	हर्शल	नेपच्यून	र.क्रांति	चन्द्रोदयास्त		सांपा.काल	तारीख
	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	रा.अं.क.वि.	द. -	उदय	अस्त	रात्रि१२बजे	
१	९।१८।१६।१४	११।२३।४१।२४	९। ३।१०।५४	८।२७।४५।५६	९।१२।१३। ८	११। ४।११।३६	४।२६।५५।१०	९।१५।१८।४५	१०।२६।२७।११	९।२९।३०।५१	१७। ९	१०।१६	२३।४१	८।४४।२७	१
२	९।१९।१७। ८	०। ७। २।४८	९। ३।५७।१३	८।२७।४७।२५	९।१२।२७।१८	११। ५। २।४५	४।२६।५१।५७	९।१५।१५।३४	१०।२६।३०। ४	९।२९।३३। ६	१६।५२	१०।५३	--।--	८।४८।२४	२
३	९।२०।१८। ०	०।२०।४२।२६	९। ४।४३।३४	८।२७।५६।१५	९।१२।४१।२६	११। ५।५३। ५	४।२६।४८।३९	९।१५।१२।२४	१०।२६।३२।५८	९।२९।३५।२१	१६।३४	११।३६	०।४४	८।५२।२०	३
४	९।२१।१८।५२	१। ४।४०।५१	९। ५।२९।५७	८।२८।११।५३	९।१२।५५।३५	११। ६।४२।३५	४।२६।४५।१७	९।१५। ९।१३	१०।२६।३५।५३	९।२९।३७।३६	१६।१६	१२।२६	१।५०	८।५६।१७	४
५	९।२२।१९।४२	१।१८।५७।२६	९। ६।१६।२१	८।२८।३३।४६	९।१३। ९।४३	११। ७।३१।१३	४।२६।४१।५०	९।१५। ६। २	१०।२६।३८।५१	९।२९।३९।५२	१५।५८	१३।२४	२।५७	९। ०।१४	५
६	९।२३।२०।३१	२। ३।२९।५६	९। ७। २।४७	८।२९। १।२७	९।१३।२३।५०	११। ८।१८।५७	४।२६।३८।१८	९।१५। २।५१	१०।२६।४१।५०	९।२९।४२। ८	१५।४०	१४।३०	४। १	९। ४।१०	६
७	९।२४।२१।१८	२।१८।१४।२०	९। ७।४९।१४	८।२९।३४।२५	९।१३।३७।५६	११। ९। ५।४५	४।२६।३४।४२	९।१४।५९।४०	१०।२६।४४।५०	९।२९।४४।२४	१५।२१	१५।४०	५। १	९। ८। ७	७
८	९।२५।२२। २	३। ३। ४।४७	९। ८।३५।४३	९। ०।१२।१५	९।१३।५२। ०	११। ९।५१।३५	४।२६।३१। २	९।१४।५६।३०	१०।२६।४७।५२	९।२९।४६।४०	१५। ३	१६।५१	५।५३	९।१२। ३	८
९	९।२६।२२।४७	३।१७।५४।१७	९। ९।२२।१३	९। ०।५४।३०	९।१४। ६। ३	११।१०।३६।२४	४।२६।२७।१६	९।१४।५३।१९	१०।२६।५०।५५	९।२९।४८।५७	१४।४४	१८। ०	६।३९	९।१६। ०	९
१०	९।२७।२३।३०	४। २।३५। ९	९।१०। ८।४५	९। १।४०।५०	९।१४।२०। ६	११।११।२०। ९	४।२६।२३।२७	९।१४।५०। ८	१०।२६।५४। ०	९।२९।५१।१३	१४।२४	१९। ६	७।१८	९।१९।५६	१०
११	९।२८।२४।११	४।१७। ०।३६	९।१०।५५।१७	९। २।३०।५३	९।१४।३४। ६	११।१२। २।५०	४।२६।१९।३५	९।१४।४६।५७	१०।२६।५७। ६	९।२९।५३।३०	१४। ५	२०। ९	७।५५	९।२३।५३	११
१२	९।२९।२४।५१	५। १। ५। ९	९।११।४१।५०	९। ३।२४।२१	९।१४।४८। ६	११।१२।४४।२३	४।२६।१५।३८	९।१४।४३।४६	१०।२७। ०।१३	९।२९।५५।४६	१३।४५	२१।१०	८।२८	९।२७।४९	१२
१३	१०। ०।२५।३०	५।१४।४५।३०	९।१२।२८।२७	९। ४।२०।५७	९।१५। २। ४	११।१३।२४।४५	४।२६।११।३७	९।१४।४०।३६	१०।२७। ३।२२	९।२९।५८। २	१३।२५	२२। ९	९। १	९।३१।४६	१३
१४	१०। १।२६। ८	५।२८। ०।३८	९।१३।१५। ४	९। ५।२०।२५	९।१५।१६। १	११।१४। ३।५४	४।२६। ७।३३	९।१४।३७।२५	१०।२७। ६।३१	१०। ०। ०।२०	१३। ५	२३। ८	९।३५	९।३५।४३	१४

फरवरी सन् २००९ ई. प्रात: घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५९।१६, वेंकटेश (प्लूटो) ८।८।१८।४०

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि (व.) रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल रा.अं.क.वि.	नेपच्यून रा.अं.क.वि.	र.क्रांति द. -	चन्द्रोदयास्त उदय	चन्द्रोदयास्त अस्त	सांपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
१५	१०। २।२६।४४	६।१०।५१।३६	९।१४। १।४३	९। ६।२२।३३	९।१५।२९।५५	११।१४।४१।४७	४।२६। ३।२५	९।१४।३४।१४	१०।२७। ९।४२	१०। ०। २।३७	१२।४४	--।--	१०।११	९।३९।३९	१५
१६	१०। ३।२७।१९	६।२३।२१।१२	९।१४।४८।२४	९। ७।२७। ९	९।१५।४३।४७	११।१५।१८।२३	४।२५।५९।१४	९।१४।३१। ३	१०।२७।१२।५४	१०। ०। ४।५३	१२।२३	०। ६	१०।४९	९।४३।३६	१६
१७	१०। ४।२७।५४	७। ५।३३।२१	९।१५।३५। ५	९। ८।३४। १	९।१५।५७।४०	११।१५।५३।३५	४।२५।५५। ०	९।१४।२७।५२	१०।२७।१६। ७	१०। ०। ७।१०	१२। ३	१। ३	११।३२	९।४७।३२	१७
१८	१०। ५।२८।२७	७।१७।३२।३९	९।१६।२१।४७	९। ९।४२।५९	९।१६।११।३०	११।१६।२७।२३	४।२५।५०।४२	९।१४।२४।४२	१०।२७।१९।२१	१०। ०। ९।२५	११।४१	१।५८	१२।१८	९।५१।२९	१८
१९	१०। ६।२८।५९	७।२९।२४। १	९।१७। ८।३३	९।१०।५३।५७	९।१६।२५।११	११।१६।५९।४३	४।२५।४६।२२	९।१४।२१।३१	१०।२७।२२।३६	१०। ०।११।४१	११।२०	२।५१	१३। ९	९।५५।२५	१९
२०	१०। ७।२९।२९	८।११।१२।१६	९।१७।५५।१७	९।१२। ६।४६	९।१६।३९। ५	११।१७।३०।३२	४।२५।४१।५९	९।१४।१८।२०	१०।२७।२५।५२	१०। ०।१३।५८	१०।५९	३।३९	१४। ३	९।५९।२२	२०
२१	१०। ८।२९।५७	८।२३। १।५६	९।१८।४२। ३	९।१३।२१।२०	९।१६।५२।४९	११।१७।५९।४६	४।२५।३७।३२	९।१४।१५। ९	१०।२७।२९। ८	१०। ०।१६।१३	१०।३७	४।२४	१४।५८	१०। ३।१८	२१
२२	१०। ९।३०।२५	९। ४।५७। ५	९।१९।२८।५२	९।१४।३७।३३	९।१७। ६।३१	११।१८।२७।२२	४।२५।३३। ३	९।१४।११।५८	१०।२७।३२।२५	१०। ०।१८।२९	१०।१५	५। ४	१५।५४	१०। ७।१५	२२
२३	१०।१०।३०।५१	९।१७। १। ५	९।२०।१५।४०	९।१५।५५।२०	९।१७।२०।१०	११।१८।५३।१५	४।२५।२८।३३	९।१४। ८।४८	१०।२७।३५।४४	१०। ०।२०।४४	९।५४	५।४०	१६।५०	१०।११।१२	२३
२४	१०।११।३१।१६	९।२९।१६।३२	९।२१। २।३०	९।१७।१४।३७	९।१७।३३।४८	११।१९।१७।२३	४।२५।२४। ०	९।१४। ५।३७	१०।२७।३९। ३	१०। ०।२२।५९	९।३१	६।१३	१७।४६	१०।१५। ८	२४
२५	१०।१२।३१।३९	१०।११।४५।१२	९।२१।४९।२१	९।१८।३५।१८	९।१७।४७।२३	११।१९।३९।४३	४।२५।१९।२४	९।१४। २।२६	१०।२७।४२।२४	१०। ०।२५।१५	९। ९	६।४५	१८।४२	१०।१९। ५	२५
२६	१०।१३।३२। १	१०।२४।२८। ०	९।२२।३६।१३	९।१९।५७।२२	९।१८। ०।५६	११।२०। ०। ८	४।२५।१४।४७	९।१३।५९।१५	१०।२७।४५।४४	१०। ०।२७।२९	८।४७	७।१५	१९।३८	१०।२३। १	२६
२७	१०।१४।३२।२०	११। ७।२५। ५	९।२३।२३। ५	९।२१।२०।४५	९।१८।१४।२६	११।२०।१८।३५	४।२५।१०।१०	९।१३।५६। ४	१०।२७।४९। ६	१०। ०।२९।४३	८।२४	७।४६	२०।३५	१०।२६।५८	२७
२८	१०।१५।३२।३८	११।२०।३६। १	९।२४। ९।५८	९।२२।४५।२३	९।१८।२७।५३	११।२०।३५। १	४।२५। ५।२९	९।१३।५२।५४	१०।२७।५२।२८	१०। ०।३१।५६	८। २	८।१९	२१।३५	१०।३०।५४	२८

मार्च सन् २००९ ई. प्रात: घं.५ मि.३० बजे के दैनिक ग्रह स्पष्ट, मासारम्भे चित्रापक्षीय अयनांशा: २३।५९।२०, वेंकटेश (प्लूटो) ८।८।५९।२७

तारीख	सूर्य रा.अं.क.वि.	चन्द्र रा.अं.क.वि.	मंगल रा.अं.क.वि.	बुध रा.अं.क.वि.	गुरु रा.अं.क.वि.	शुक्र रा.अं.क.वि.	शनि (व.) रा.अं.क.वि.	राहु (व.) रा.अं.क.वि.	हर्शल रा.अं.क.वि.	नेपच्यून रा.अं.क.वि.	र.क्रांति द. -	चन्द्रोदयास्त उदय	चन्द्रोदयास्त अस्त	सांपा.काल रात्रि१२बजे	तारीख
१	१०।१६।३२।५२	०। ३।५९।५७	९।२४।५६।५३	९।२४।११।१७	९।१८।४१।१७	११।२०।४९।२१	४।२५। ०।४८	९।१३।४९।४३	१०।२७।५५।५०	१०। ०।३४। ९	७।३९	८।५५	२२।३८	१०।३४।५१	१
२	१०।१७।३३। ६	०।१७।३५।५२	९।२५।४३।४७	९।२५।३८।२४	९।१८।५४।४०	११।२१। १।३२	४।२४।५६। ५	९।१३।४६।३२	१०।२७।५९।१३	१०। ०।३६।२२	७।१६	९।३५	२३।४२	१०।३८।४७	२
३	१०।१८।३३।१८	१। १।२२।४५	९।२६।३०।४१	९।२७। ६।४२	९।१९। ७।५९	११।२१।११।३२	४।२४।५१।२०	९।१३।४३।२१	१०।२८। २।३८	१०। ०।३८।३२	६।५३	१०।२२	--।--	१०।४२।४४	३
४	१०।१९।३३।२८	१।१५।१९।३८	९।२७।१७।३७	९।२८।३६।१०	९।१९।२१।१४	११।२१।१९।१३	४।२४।४६।३५	९।१३।४०।१०	१०।२८। ६। २	१०। ०।४०।४४	६।३०	११।१६	०।४८	१०।४६।४१	४
५	१०।२०।३३।३६	१।२९।२५।२९	९।२८। ४।३३	१०। ०। ६।४६	९।१९।३४।२७	११।२१।२४।३५	४।२४।४१।५०	९।१३।३७। ०	१०।२८। ९।२६	१०। ०।४२।५४	६। ७	१२।१८	१।५१	१०।५०।३७	५
६	१०।२१।३३।४१	२।१३।३९। २	९।२८।५१।२९	१०। १।३८।३३	९।१९।४७।३६	११।२१।२७।३२	४।२४।३७। ४	९।१३।३३।४९	१०।२८।१२।५१	१०। ०।४५। ५	५।४४	१३।२४	२।५१	१०।५४।३४	६
७	१०।२२।३३।४५	२।२७।५८।२६	९।२९।३८।२५	१०। ३।११।२८	९।२०। ०।४३	११।२१।२८। ४	४।२४।३२।१७	९।१३।३०।३८	१०।२८।१६।१६	१०। ०।४७।१५	५।२१	१४।३३	३।४४	१०।५८।३०	७
८	१०।२३।३३।४६	३।१२।२१। १	१०। ०।२५।२२	१०। ४।४५।३१	९।२०।१३।४५	११।२१।२६। ८	४।२४।२७।३०	९।१३।२७।२७	१०।२८।१९।४१	१०। ०।४९।२२	४।५७	१५।४०	४।३१	११। २।२७	८
९	१०।२४।३३।४५	३।२६।४३। १	१०। १।१२।१८	१०। ६।२०।४२	९।२०।२६।४५	११।२१।२१।४३	४।२४।२२।४३	९।१३।२४।१६	१०।२८।२३। ७	१०। ०।५१।३०	४।३४	१६।४६	५।१२	११। ६।२३	९
१०	१०।२५।३३।४२	४।११। ०।२८	१०। १।५९।१५	१०। ७।५७। २	९।२०।३९।४२	११।२१।१४।४६	४।२४।१७।५६	९।१३।२१। ६	१०।२८।२६।३२	१०। ०।५३।३८	४।१०	१७।५०	५।४९	११।१०।२०	१०
११	१०।२६।३३।३६	४।२५। ७।३१	१०। २।४६।१३	१०। ९।३४।२९	९।२०।५२।३४	११।२१। ५।१८	४।२४।१३।१०	९।१३।१७।५५	१०।२८।२९।५८	१०। ०।५५।४५	३।४७	१८।५१	६।२३	११।१४।१६	११
१२	१०।२७।३३।२८	५। ९। ०।१२	१०। ३।३३।११	१०।११।१३। ६	९।२१। ५।२३	११।२०।५३।१९	४।२४। ८।२३	९।१३।१४।४४	१०।२८।३३।२४	१०। ०।५७।५०	३।२३	१९।५२	६।५७	११।१८।१३	१२
१३	१०।२८।३३।१९	५।२२।३४।२५	१०। ४।२०। ९	१०।१२।५२।५२	९।२१।१८। ८	११।२०।३८।५०	४।२४। ३।२७	९।१३।११।३३	१०।२८।३६।५०	१०। ०।५९।५५	३। ०	२०।५२	७।३०	११।२२।१०	१३
१४	१०।२९।३३। ९	६। ५।४७।५१	१०। ५। ७। ८	१०।१४।३३।४८	९।२१।३०।४९	११।२०।२२।५४	४।२३।५८।५२	९।१३। ८।२२	१०।२८।४०।१६	१०। १। १।५८	२।३६	२१।५१	८। ६	११।२६। ६	१४
१५	११। ०।३२।५६	६।१८।३९।५६	१०। ५।५४। ७	१०।१६।१५।५५	९।२१।४३।२७	११।२०। २।३४	४।२३।५४। ८	९।१३। ५।१२	१०।२८।४३।४१	१०। १। ४। २	२।१२	२२।५०	८।४४	११।३०। ३	१५
१६	११। १।३२।४२	७। १।११।५१	१०। ६।४१। ६	१०।१७।५९।१४	९।२१।५६। ०	११।१९।४०।५४	४।२३।४९।२४	९।१३। २। १	१०।२८।४७। ६	१०। १। ६। ४	१।४९	२३।४७	९।२५	११।३३।५९	१६
१७	११। २।३२।२६	७।१३।२६।२०	१०। ७।२८। ५	१०।१९।४३।४५	९।२२। ८।३०	११।१९।१६।५८	४।२३।४४।४१	९।१२।५८।५०	१०।२८।५०।३२	१०। १। ८। ५	१।२५	--।--	१०।११	११।३७।५६	१७
१८	११। ३।३२। ९	७।२५।२७।२२	१०। ८।१५। ५	१०।२१।२९।२९	९।२२।२०।५५	११।१८।५०।५४	४।२३।४०। ०	९।१२।५५।३९	१०।२८।५३।५७	१०। १।१०। ५	१। १	०।४१	११। १	११।४१।५२	१८
१९	११। ४।३१।५०	८। ७।१९।४०	१०। ९। २। ५	१०।२३।१६।२६	९।२२।३३।१७	११।१८।२२।५०	४।२३।३५।२०	९।१२।५२।२८	१०।२८।५७।२२	१०। १।१२। ५	०।३८	१।३२	११।५३	११।४५।४९	१९
२०	११। ५।३१।२९	८।१९। ८।२७	१०। ९।४९। ४	१०।२५। ४।३९	९।२२।४५।३३	११।१७।५२।५४	४।२३।३०।४२	९।१२।४९।१८	१०।२९। ०।४८	१०। १।१४। ३	०।१४	२।१८	१२।४८	११।४९।४५	२०
२१	११। ६।३१। ६	९। ०।५९। १	१०।१०।३६। ४	१०।२६।५४। ६	९।२२।५७।४६	११।१७।२१।१५	४।२३।२६। ६	९।१२।४६। ७	१०।२९। ४।१२	१०। १।१६। ०	०।१०	३। ०	१३।४४	११।५३।४२	२१
२२	११। ७।३०।४०	९।१२।५६।३१	१०।११।२३। ३	१०।२८।४४।४९	९।२३। ९।५४	११।१६।४८। ५	४।२३।२१।३१	९।१२।४२।५६	१०।२९। ७।३७	१०। १।१७।५६	+।३४	३।३७	१४।३९	११।५७।३९	२२
२३	११। ८।३०।१३	९।२५। ५।३२	१०।१२।१०। १	११। ०।३६।४८	९।२३।२१।५७	११।१६।१३।३६	४।२३।१६।५९	९।१२।३९।४५	१०।२९।११। २	१०। १।१९।५२	०।५७	४।११	१५।३५	१२। १।३५	२३
२४	११। ९।२९।४५	१०। ७।२९।४९	१०।१२।५७। ०	११। २।३०। २	९।२३।३३।५६	११।१५।३७।५९	४।२३।१२।२७	९।१२।३६।३४	१०।२९।१४।२६	१०। १।२१।४६	१।२१	४।४३	१६।३१	१२। ५।३२	२४
२५	११।१०।२९।१४	१०।२०।११।२१	१०।१३।४३।५९	११। ४।२४।३१	९।२३।४५।५०	११।१५। १।२९	४।२३। ७।५९	९।१२।३३।२४	१०।२९।१७।४९	१०। १।२३।३८	१।४५	५।१५	१७।२७	१२। ९।२८	२५
२६	११।११।२८।४२	११। ३।१३।२०	१०।१४।३०।५८	११। ६।२०।१५	९।२३।५७।३८	११।१४।२४।२०	४।२३। ३।३३	९।१२।३०।१३	१०।२९।२१।१२	१०। १।२५।३०	२। ८	५।४६	१८।२५	१२।१३।२५	२६
२७	११।१२।२८। ८	११।१६।३६।२२	१०।१५।१७।५६	११। ८।१७।१२	९।२४। ९।२२	११।१३।४६।४५	४।२२।५९।१०	९।१२।२७। २	१०।२९।२४।३४	१०। १।२७।२०	२।३२	६।१९	१९।२५	१२।१७।२१	२७

सर्वार्थसिद्धि-अमृतसिद्धि तथा रविपुष्य-गुरुपुष्यामृत योगों का विवरण, सम्वत् २०६५ वि.

सर्वार्थ सिद्धि योग

वार, नक्षत्र एवं तिथि के संयोग से बनने वाले सर्वार्थ सिद्धि योगों का विवरण तारीख के सामने घं. मि. में लिखा है। अच्छे समय में किये गए कार्य की सफलता प्रायः सुनिश्चित है।

ता.	मास	घं.मि.	से	घं.मि.	तक
८	अप्रैल	१५।५४	”	३०।५	”
९	”	६।५	”	३०।४	”
१३	”	७।१३	”	३०।०	”
१४	”	६।०	”	७।२	”
१५	”	५।५९	”	७।२५	”
२३	”	५।५१	”	२४।८	”
२७	”	८।३४	”	२९।४६	”
२८	”	१०।४०	”	२९।४६	”
४	मई	७।४९	”	२९।५	”
६	”	५।४१	”	२३।३	”
७	”	५।४०	”	२९।४०	”
९	”	१५।३०	”	२९।३९	”
११	”	५।३८	”	१३।१६	”
१७	”	२१।४६	”	२९।३४	”
१९	”	२७।२२	”	२९।३३	”
२१	”	५।३२	”	६।१९	”
२५	”	५।३१	”	१७।११	”
२६	”	५।३०	”	१९।४	”
३०	”	१९।४०	”	२९।२९	”
१	जून	५।२९	”	१५।३८	”
३	”	५।२९	”	९।५०	”
४	”	५।२८	”	२७।४७	”
५	”	२५।९	”	२९।२८	”
६	”	५।२८	”	२३।१	”
११	”	२३।५	”	२९।२८	”
१४	जून	५।२८	से	२९।२८	तक
१६	”	९।२३	”	२९।२८	”
२१	”	२२।५२	”	२९।२९	”
२६	”	२७।९	”	२९।३१	”
२७	”	५।३१	”	२९।३१	”
३०	”	१९।५६	”	२९।३२	”
२	जुलाई	५।३२	”	१४।२४	”
३	”	११।४४	”	२९।३३	”
४	”	५।३३	”	९।२१	”
९	”	६।३२	”	२९।३५	”
१२	”	५।३६	”	१३।०	”
१४	”	५।३७	”	१८।५१	”
१८	”	२८।५४	”	२९।४०	”
१९	”	५।४०	”	२९।४०	”
२४	”	८।५४	”	२९।४३	”
२५	”	५।४३	”	२९।४३	”
२८	”	५।४४	”	२९।४५	”
३१	”	५।४६	”	२९।४७	”
६	अगस्त	५।४९	”	१६।२६	”
१५	”	१२।७	”	२९।५४	”
१६	”	५।५४	”	१३।३३	”
१९	”	१४।५३	”	२९।५६	”
२१	”	५।५७	”	२९।५७	”
२२	”	५।५७	”	१२।४२	”
२५	”	५।५९	”	२९।५९	”
२८	”	६।०	”	२६।२७	”
३१	”	२४।१८	”	३०।२	”
१२	सित.	६।७	”	२१।५९	”
१६	”	६।९	”	२१।३३	”
१८	”	६।१०	”	१८।४५	”
२०	”	१५।२७	”	३०।११	”
२२	”	६।११	”	१२।२५	”
२५	”	६।१३	”	९।१५	”
२८	सित.	८।२९	से	३०।१४	तक
३	अक्टू.	१५।२३	”	३०।१७	”
५	”	२१।६	”	३०।१८	”
१०	”	६।२०	”	७।१०	”
१४	”	६।२२	”	६।४८	”
१४	”	२९।५	”	३०।२३	”
१८	”	६।२४	”	२०।१२	”
२६	”	६।२९	”	३०।३०	”
३०	”	२२।५०	”	३०।३३	”
३१	”	६।३३	”	२५।३२	”
२	नव.	६।३४	”	३०।३५	”
९	”	१८।१३	”	३०।३९	”
११	”	१५।४२	”	३०।४१	”
१७	”	२२।७	”	३०।४६	”
१८	”	२०।४५	”	३०।४७	”
२३	”	६।५०	”	२२।४९	”
२६	”	२९।२२	”	३०।५३	”
२७	”	६।५३	”	३०।५३	”
२८	”	६।५३	”	८।७	”
३०	”	६।५५	”	१४।१०	”
७	दिस.	७।०	”	२७।१३	”
९	”	७।२	”	२४।३०	”
१०	”	२२।९	”	३१।३	”
१५	”	७।३२	”	२९।२०	”
१६	”	७।६	”	२७।४५	”
२४	”	११।१९	”	३१।११	”
२५	”	७।११	”	१४।१२	”
२८	”	२३।१९	”	३१।१३	”
२९	”	२६।१४	”	३१।१३	”
४	जन.	७।१४	”	१०।५४	”
६	”	७।१५	”	९।५२	”
७	”	८।१८	”	३१।१५	”
११	”	१८।५५	”	३१।१५	”
१२	जन.	७।१५	से	१६।१६	तक
१३	”	७।१५	”	१४।३	”
२१	”	७।१४	”	२०।३०	”
२५	”	७।१२	”	३१।११	”
२६	”	८।२५	”	३१।११	”
१	फर.	१६।५३	”	३१।९	”
३	”	१५।४७	”	३१।८	”
४	”	७।८	”	३१।७	”
८	”	७।६	”	२७।२८	”
१४	”	२१।३४	”	३१।०	”
१६	”	२५।४	”	३०।५८	”
२२	”	६।५४	”	१५।३४	”
२३	”	६।५३	”	१७।५४	”
२७	”	२२।२२	”	३०।४९	”
१	मार्च	६।४८	”	२१।५९	”
३	”	६।४६	”	२०।२१	”
४	”	६।४५	”	३०।४३	”
६	”	१६।८	”	३०।४१	”
८	”	६।४०	”	१२।४१	”
१४	”	७।५	”	३०।३३	”
१६	”	९।३८	”	३०।३१	”
२१	”	२३।३६	”	३०।२५	”
२६	”	२९।४१	”	३०।२०	”

अमृत सिद्धि योग

इसको शास्त्रकारों ने अत्यन्त शुभ फलदायक कहा है। ध्यान रहे- गुरु-पुष्य के संयोग से बना अ.सि.योग विवाह में, ऐसे ही शनि-रोहिणी से बना प्रयाण में, मंगल-अश्विनी से बना अमृतसिद्धियोग गृहप्रवेश में वर्जित है।

ता.	मास	घं.मि.	से	घं.मि.	तक
२३	अप्रैल	५।५१	”	२४।८	”
२१	मई	५।३२	”	६।१९	”
३०	मई	१९।४०	से	२९।२९	तक
२७	जून	५।३१	”	२६।९	”
२५	जुलाई	५।४३	”	८।१९	”
२८	”	२५।५७	”	२९।४५	”
३१	”	१९।२५	”	२९।४७	”
२५	अग.	८।२९	”	२९।५९	”
२८	”	६।०	”	२६।२७	”
२०	सित.	१५।२७	”	३०।११	”
२२	”	६।११	”	१२।२५	”
२५	”	६।१३	”	९।१५	”
१४	अक्टू.	२९।५	”	३०।२३	”
१८	”	६।२४	”	२०।१२	”
२६	”	१५।४५	”	३०।३०	”
११	नव.	१५।४२	”	३०।४१	”
२३	”	६।५०	”	२२।४९	”
२६	”	२९।२२	”	३०।५३	”
९	दिस.	७।२	”	२४।३०	”
२४	”	११।१९	”	३१।११	”
६	जन.	७।१५	”	९।५२	”
२१	”	७।१४	”	२०।३०	”
२७	फर.	२२।२२	”	३०।४९	”

रविपुष्य-गुरुपुष्यामृत योग

जैसे जंगल का राजा शेर बलवान होता है, उसी प्रकार नक्षत्रों का सम्राट् दोषों के समूह का नाशक पुष्य नक्षत्र माना गया है। यथा- ग्रहेणविद्धोऽप्य समन्वितोऽपि विरुद्धतारोऽपि विलोमगोऽपि। करोत्य वश्यं सकलार्थ सिद्धिर्विहाय पाणिग्रहणं च पुष्यः।। अर्थात् शुभाशुभ ग्रहविद्ध या युक्त होने, तारा की प्रतिकूलता एवं गोचर में चौथे, आठवें, बारहवें चन्द्रमा होने पर भी पुष्य नक्षत्र सम्पूर्ण कार्यों की

सिद्धि करता है, केवल विवाह को छोड़कर।

रवि या गुरुवार में पुष्य नक्षत्र आने से पुष्यामृत योग बन जाता है, जोकि सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। रविपुष्य यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र सिद्धि एवं रत्न, जड़ी-बूटी ग्रहण करने में तथा गुरुपुष्य योग व्यापारिक, आर्थिकलाभ, समस्त कलाकर्म, भूमि वाहनादि लेनदेन में परमोपयोगी होता है।

स्मरण रहे- शुक्रवार को पुष्य होने से उत्पात योग कार्यहानि का परिचायक है। भद्रातिथि हो तो महाअनिष्ट होता है। यदि शुक्रवार में पुष्य और नन्दातिथि का संयोग बने तो अनिष्ट की आशंका नहीं रहती है। पुष्यमें शिशुजन्म शुभ होता है।

ता.	मास	घं.मि. से	घं.मि. तक	संज्ञा
१३	अप्रैल	७।१३ "	३०।० "	र.पु.
१४	"	६।० "	७।२ "	पुष्य
१०	मई	१४।२ "	२९।३८ "	"
११	"	५।३८ "	१३।१६ "	र.पु.
६	जून	२३।१ "	२९।२८ "	पुष्य
७	"	५।२८ "	२१।३१ "	"
४	जुलाई	९।२१ "	२९।३३ "	"
५	"	५।३३ "	७।२५ "	"
३१	"	१९।२५ "	२९।४७ "	गु.पु.
१	अग.	५।४७ "	१७।३४ "	पुष्य
२७	"	२७।४८ "	३०।० "	"
२८	"	६।० "	२६।२७ "	गु.पु.
२४	सित.	१०।४ "	३०।१३ "	पुष्य
२५	"	६।१३ "	९।१५ "	गु.पु.
२१	अक्टू.	१५।२६ "	३०।२६ "	पुष्य
२२	"	६।२६ "	१४।४० "	"
[illegible]	नव.	[illegible] "	[illegible] "	"
१८	नव.	६।४६ से	२०।४५ तक	पुष्य
१५	दिस.	७।३२ "	२९।२० "	"
११	जन.	१८।५५ "	३१।१५ "	र.पु.
१२	"	७।१५ "	१६।१६ "	पुष्य
७	फर.	२९।५३ "	३१।६ "	"
८	"	७।६ "	२७।२८ "	र.पु.
७	मार्च	१४।२६ "	३०।४० "	पुष्य
८	"	६।४० "	१२।४१ "	र.पु.

संकेत- र.पु.= रविपुष्य, गु.पु. = गुरुपुष्ययोग जानना चाहिए। जहाँ केवल पुष्य नक्षत्र का शुभ संयोग बना हुआ है, वहाँ केवल पुष्य लिखा गया है।

द्विपुष्कर योग

ता.	मास	घं.मि. से	घं.मि. तक
२७	मई	५।३० "	२०।२० "
२०	जुलाई	६।३५ "	१५।३७ "
२९	"	५।४५ "	२३।४५ "
२१	सित.	१३।५२ "	२३।४० "
३०	"	१४।२ "	३०।१५ "
११	अक्टू.	७।१४ "	८।१३ "
२३	नव.	२२।४९ "	३०।५० "
१७	जन.	११।४६ "	१९।५० "
२७	"	१५।२१ "	३१।११ "
२२	मार्च	२६।२ "	३०।२४ "

त्रिपुष्कर योग

ता.	मास	घं.मि. से	घं.मि. तक
१२	अप्रैल	७।५८ "	१२।४७ "
२२	"	५।५२ "	२०।१५ "
२७	"	८।३४ "	२९।४६ "
६	मई	१३।५६ "	२३।१३ "
१५	जून	६।२७ "	१५।५८ "
२९	"	२२।२६ "	२९।३२ "
८	जुला.	२०।४८ "	[illegible]
२३	अग.	११।२७ से	१८।२६ तक
३१	"	२४।२७ "	३०।२ "
६	सित.	६।४ "	७।१८ "
२५	अक्टू.	१४।५४ "	२६।२० "
४	नव.	१८।२५ "	३०।३६ "
१४	दिस.	१०।१२ "	१४।३५ "
२३	"	८।४१ "	३१।११ "
२८	"	२३।१९ "	३१।१३ "
३	जन.	७।१४ "	१०।२० "
१५	फर.	२२।५९ "	३०।५९ "
२१	"	१२।४९ "	२६।१९ "
३	मार्च	६।४६ "	२०।२१ "

रवि योग

ता. मास	घं.मि. से	ता. मास	घं.मि. तक
८ अप्रैल	१५।५४ से	९ अप्रै.	१३।१२ तक
१० "	११।७ "	११ "	९।१८ "
१३ "	७।१३ "	१३ "	१८।३० "
१४ "	७।२ "	१६ "	८।१९ "
१८ "	११।२२ "	१९ "	१३।२६ "
२६ "	५।५९ "	२७ "	८।३४ "
२७ "	१०।२६ "	२८ "	१०।४० "
७ मई	२०।१९ "	८ मई	१७।३४ "
९ "	१५।३० "	१० "	१४।२ "
१० "	२८।३१ "	११ "	१३।१६ "
१३ "	१३।५४ "	१५ "	१७।११ "
१७ "	२१।४६ "	१८ "	२४।३० "
२६ "	१९।१४ "	२७ "	२०।२० "
५ जून	२५।१९ "	६ जून	२३।११ "
७ "	२१।३१ "	७ "	२२।३७ "
८ "	२०।४६ "	९ "	२०।४७ "
११ "	२३।१५ "	१३ "	२७।४० "
१६ "	९।२३ "	१७ "	१२।२१ "
२४ "	२७।११ "	२५ "	२७।३० "
५ जुलाई	७।२५ "	५ जुला.	२१।१६ "
६ "	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८ जुलाई	५।३७ से	९ जुलाई	६।३ तक
११ "	१०।२२ "	१३ "	१५।५३ "
१५ "	२१।४५ "	१६ "	२४।२६ "
२४ "	८।५४ "	२५ "	८।१९ "
४ अग.	१४।५५ "	५ अग.	१५।१९ "
६ "	१६।२६ "	७ "	१८।१२ "
९ "	२३।१५ "	११ "	२९।६ "
१४ "	१०।१२ "	१५ "	१२।७ "
२२ "	१२।४२ "	२३ "	११।२७ "
२ सित.	२५।२१ "	३ सित.	२६।४७ "
४ "	२८।४७ "	६ "	७।१८ "
८ "	१३।५ "	१० "	१८।३० "
१२ "	२१।५९ "	१३ "	७।१४ "
१३ "	२२।४६ "	१४ "	२२।५४ "
२० "	१५।२७ "	२१ "	१३।५२ "
२ अक्टू.	१३।२ "	३ अक्टू.	१५।२३ "
४ "	१८।७ "	५ "	२१।६ "
७ "	२६।५८ "	११ "	८।१३ "
१३ "	७।५८ "	१४ "	६।४८ "
१९ "	१८।१५ "	२० "	१६।३८ "
३१ "	२५।३२ "	१ नव.	२८।२९ "
३ नव.	७।३६ "	४ "	१०।४१ "
७ "	१७।२७ "	९ "	१८।१३ "
११ "	१५।४२ "	१२ "	१३।२९ "
१७ "	२२।७ "	१८ "	२०।४५ "
१९ "	१२।३१ "	१९ "	२०।१ "
३० "	१४।१० "	१ दिस.	१७।१७ "
२ दिस.	१६।४४ "	२ "	२०।१७ "
३ "	२२।५८ "	४ "	२५।९ "
६ "	२७।२२ "	८ "	२६।१४ "
१० "	२२।९ "	११ "	१९।२१ "
१७ "	२६।५२ "	१८ "	२६।४३ "
३० "	२८।५४ "	१ जन.	७।१४ "
२ जन.	९।४ "	३ "	१०।२० "
[illegible]	[illegible]	७ "	८।२८ "
८ जन.	२७।३७ से	९ जन.	२४।४५ तक
१६ "	११।१२ "	१७ "	११।४६ "
२९ "	१४।४० "	३० "	१५।५४ "
३१ "	१६।३९ "	१ फर.	१६।५३ "
३ फर.	१५।४७ "	५ "	१२।४५ "
५ "	२९।२६ "	६ "	१०।४० "
७ "	२९।५३ "	८ "	२७।२८ "
१४ "	२१।३४ "	१५ "	२२।५९ "
२७ "	२२।२२ "	२८ "	२२।२१ "
१ मार्च	२१।५९ "	२ मार्च	२१।१८ "
५ "	१७।४३ "	७ "	१४।२६ "
९ "	१०।५८ "	१० "	९।२५ "
१६ "	९।३८ "	१७ "	११।५३ "
१७ "	२४।३६ "	१८ "	१४।३८ "

ज्वालामुखी अशुभ योग

ता. मास	घं.मि. से	ता. मास	घं.मि. तक
१४ अप्रैल	१०।३९ "	१५ अप्रै.	७।२५ "
१८ जून	२३।० "	१९ जून	१८।१ "
२३ अग.	१८।२६ "	२४ अग.	१०।२ "
२४ "	१६।११ "	२५ "	८।२९ "
१९ सित.	६।४६ "	१९ सित.	१७।७ "
२२ अक्टू.	२७।२६ "	२३ अक्टू.	१४।२१ "
२७ दिस.	१७।५२ "	२७ दिस.	२०।१७ "
३ फर.	१५।४७ "	३ फर.	१५।५४ "
१ मार्च	२१।५९ "	१ मार्च	२९।२४ "

परिवा मूल पंचमी भरनी,
अष्टमी कृत्तिका नवे रोहिनी।
दसे अश्लेखा तू तो बांच
ज्वालामुखी नखत यह पांच॥
जनमे तो जीवे नहीं, बसे तो ऊजड़ होय।
नारी पहिने भूषणो, पुरुष विहूनो होय॥
संग्राम चढ़े जीवे नहीं, कृषि निष्फल जाय॥
कँआ पोखर जो खने, [illegible]

संदिग्ध व्रत-पर्व और धर्मशास्त्रीय व्यवस्था

नवरात्रारम्भः- इस वर्ष देश के पूर्वी सम्भागों में चैत्र शुदी द्वितीया क्षयः है और दिल्ली से पश्चिम के प्रदेशों में प्रतिपदा क्षयः है। श्री ब्रजभूमि पंचांग के अनुसार चैत्र शुदी एकम् सोमवार को प्रातः मात्र २ पल सूर्योदयान्तर रहेगी। इस परिस्थिति में कार्य की सिद्धि नहीं हो सकती, इसलिए चैत्रीय नवरात्रारम्भ ६ अप्रैल रविवार की अमायुक्ता प्रतिपदा में ही किये जायेंगा, क्योंकि निर्णयसिन्धु का स्पष्ट आदेश है- **परदिने प्रतिपादोऽत्यन्तासत्त्वे तु दर्शयुता पूर्वैव ग्राह्या।** इस वर्ष एक देशीय उभयपक्षीय प्रतिपदा सूर्योदय के समय व्याप्त-अव्याप्त परिस्थिति में वर्ष के राजा अपने सहायक उपराजा की सीट कायम करेंगे। **चैत्रे सितप्रतिपदि यो वारोऽर्कोदये स वर्षेशः।** के अनुसार पूर्व में राजा चन्द्र तो पश्चिम में रवि मान्य रहेगा। अर्थात् चन्द्रमा को उपराजा माना जायेगा।

श्रीरामनवमी- चैत्र शुदी नौमी रामनवमी कहलाती है। इसमें मध्याह्न के समय श्रीरामावतार हुआ- **चैत्रे नवम्यां प्राक्पक्षे दिवापुण्ये पुनर्वसौ। आविरासीत्स कलया कौशल्यायां परःपुमान्।।** जिस वर्ष नौमी मध्याह्न में दो दिन व्याप्त हो अथवा अव्याप्त हो तब तो दूसरे दिन ही व्रतोपवास को करें। पहले दिन पुनर्वसुयुक्ता भी हो तो उसे भी त्याग दें- **दिनद्वये मध्याह्नव्याप्तौ तदाभावे वा पूर्वदिने पुनर्वस्वृक्षयुक्तामपि त्यक्त्वा परैव कार्या।** ता.१३ अप्रैल रविवार में अष्टमी विद्धा नवमी होने के कारण त्याज्य है। **नवमी चाष्टमीविद्धा त्याज्या विष्णुपारायणैः। उपोषणं नवम्यां च दशम्यां चैव पारणम्।।** श्री माधवजी के मतानुसार नवमी में व्रत करके पारण दशमी में करें- **अष्टमीविद्धा सत्रृक्षाऽपि नोपोष्येति माधवः।**

श्री रामजन्मभूमि अयोध्या आसन्न क्षेत्रों में तो ता. १४ अप्रैल २००८ सोमवार को चैत्र शुक्ल नौमी मध्याह्नकाल को स्पर्श कर रही है, इसलिये सभी को एकमत होकर उसे स्वीकार कर लेना चाहिये। अर्थात् १४ अप्रैल सोमवार में सभी को श्रीरामनवमी व्रतोत्सव लाभप्रद रहेगा। श्रीरामचरित मानस में सुमति (एकता) को सर्वोपरि मानते हुये श्री गोस्वामीजी ने लिखा है-

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना। जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना।।

अक्षय तृतीया- वैशाख शुक्ल तृतीया अक्षयतृतीया कही जाती है। वह पूर्वाह्नव्यापिनी परविद्धा लेनी चाहिए- **वैशाख शुक्ल तृतीया अक्षय्यतृतीयोच्यते। सा पूर्वाह्नव्यापिनी ग्राह्या।** दो दिन तिथि व्याप्त हो तो परा ही ग्रहण करें- **दिनद्वयेऽपितद्व्याप्तौ परैव।** यदि दूसरे दिन त्रिमुहूर्त से कम हो तथा पहले दिन रोहिणी नक्षत्र और बुधवार का समागम मिलता हो तो पहले ही दिन अक्षयतृतीयाक को मनाया जाय- **द्वेधाविभक्त-दिन-पूर्वार्धैकदेश व्यापिनी दिनद्वयेचेत् त्रिमुहूर्ताधिक व्याप्तिसत्वे पर त्रिमुहूर्तन्यूनत्वे पूर्वा।। धर्मसिन्धु।।** अक्षयतृतीया में बुधवार या सोमवार तथा रोहिणी के मिलन को निर्णयामृत में दुर्लभ योग माना गया है- **वैशाखे शुक्लपक्षे तु तृतीया रोहिणीयुता। दुर्लभा बुधवारेण सोमनापि युता तथा।** इस वर्ष ७ मई २००८ बुधवार के दिन सुखद संयोग में अक्षयतृतीया मनाई जायेगी।

श्रीगङ्गादशहरा- ज्येष्ठ शुक्ल दशमी में मनाया जाता है- **ज्येष्ठ मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता। हरते दश पापानि तस्माद्दशहरा स्मृता।।** ब्रह्मपुराण के वाक्यानुसार हस्त नक्षत्र से युक्त दशमी तिथि दश पापों को हरती है। अतः उसी को दशहरा कहते हैं। वराहपुराण में लिखा है- **दशमी शुक्लपक्षे तु ज्येष्ठे मासि कुजेऽहनि। अवतीर्णायतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सरिद्वरा।। हरते दशपापानि तस्माद्दशहरा स्मृता।** ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि मंगलवार के दिन हस्त नक्षत्र में श्रीगङ्गाजी स्वर्ग से अवतीर्ण हुई हैं। यही दशमी दस प्रकार के पापों को हरती है अतः इसको दशहरा कहते हैं। स्कन्द पुराण में दस योगों में बुधवार का उल्लेख है। यथा- **ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां बुध हस्तयोः। व्यतीपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ।। दश योगे नरःस्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।** ज्येष्ठमास, शुक्लपक्ष, दशमीतिथि, बुधवार, हस्तनक्षत्र, व्यतीपातयोग, गरकरण, आनन्दयोग, कन्याके चन्द्रमा और वृष के सूर्य। इन दसयोगों के मिलने पर दशहरा स्नानार्थी सब पापों से मुक्त हो जाता है। दस योग एक साथ मिल पाना तो दुर्लभ हैं। इस वर्ष १२ जून गुरुवार को तथा १३ जून शुक्रवार को दस में से छः-छः योग दोनों दिन समान मिल रहे हैं। इस परिस्थिति में निर्णायक दशमी तिथि ही मान्य रहेगी, क्योंकि तिथि ही विश्वदेव स्वरुप कालचक्र का शरीर है यथा- **तिथिः शरीरं देवस्य तिथौ नक्षत्रमाश्रितम्। तस्मात्तिथि प्रशसन्ति न नक्षत्रं तिथि बिना।।** तिथि के बिना नक्षत्र मात्र से काम नहीं चल सकता और यदि तिथि है नक्षत्र ना भी हो तो भी काम चलेगा।

मार्कण्डेयजी ने लिखा है कि शुक्लपक्ष में वह तिथि उत्तम है जो सूर्योदय के समय व्याप्त हो। कृष्ण पक्ष में सूर्यास्त व्यापिनी कही गई है- **शुक्लपक्षे तिथिर्ग्राह्या यस्यामभ्युदितो रविः। कृष्णपक्षे तिथिर्ग्राह्या यस्यामस्तमितो रविः।।** अनादि काल में परम्परानुसार जिस तिथि में सूर्योदय हो वह तिथि स्नान, दान, जप, पुण्यार्जन के मामले में महत्त्वपूर्ण मानी जाती है- **यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः। सा तिथिःसकला ज्ञेया स्नान दान जपादिषु।।** देवल के मत का समर्थन करते हुए व्यासाचार्य लिखते हैं- **उदयन्नेव सविता यां तिथिं प्रतिपद्यते। सा तिथिःसकला ज्ञेया दानाध्ययन कर्मसु।।** उपरोक्त प्रमाणवाक्योंका समानादर करते हुए हमने अपने पंचांगोंमें श्रीगङ्गादशहरा मध्याह्न में व्याप्त ज्येष्ठ शुक्ल दशमी १३ जून २००८ में लगाया है जो कि धर्मशास्त्र संम्मत है।

इस वर्ष कुछ पंचांगकार द्विजाचार्य १२ जून गुरुवार में दशहरा लगाने के पक्ष में रहे हैं। हमने काफी प्रयास किया लेकिन मतैक्य नहीं हो सका। पाठक सम्यकपूर्वक विचार करें- ता.१२ जून गुरुवार में नौमी तिथि १० बजे तक रहेगी, उसके बाद दशमी लगने पर स्नानादि किया जायेगा, सो क्या उचित है? इस प्रश्न का उत्तर तो एक साधारण से साधारण व्यक्ति स्वयं खोज सकता है- स्नान, ध्यान, दान, पुण्यार्जन का जितना महत्त्व प्रातःकाल होता है, उतना सूर्योदयान्तर समय बीतने पर नहीं रहता। **हर हर गङ्गे हर हर गङ्गे**

हरिवासर- आषाढ़ शुदी द्वादशी में अनुराधा, भाद्रपद शुक्ल द्वादशी को श्रावण तथा कार्तिक शुक्ल द्वादशी में रेवती नक्षत्र हो तो **हरिवासर** का सुखद योग बनता है। द्वादशी में अनुराधा का एक तिहाई भाग समाहृत हो तो तभी इसकी मान्यता है अन्यथा नहीं। ऐसे ही श्रवण का मध्यभाग तथा

रेवती का अन्त्य भाग हरी के वास होने का परिचायक माना है। इस वर्ष आषाढ़ शुदी द्वादशी में अनुराधा तो है, लेकिन आद्यपाद सूर्योदय से पहले ही समाप्त हो जायेगा, अतः हरिवासर का अभाव रहेगा। सो **शयनीएकादशी** व्रती १४ जुलाई सोमवार में पारण कर पुण्य के भागीदार बनेंगे।

भाद्रपद शुदी द्वादशी शुक्रवार के दिन श्रावण नक्षत्र की मध्यस्थिति दिन में १३ बजकर २९ मिनट तक रहेगी, सो पद्मा एकादशी के व्रत करने वालों को हरिवासर के योग में व्रत की पारणा १ बजकर २९ मिनट के बाद करनी चाहिए। ऐसा योग पड़ने पर एकादशी तथा द्वादशी दोनों का व्रत करना अतिपुण्यप्रद रहता है। इसमें एकादशी के पारण-लोप का दोष नहीं लगता, क्योंकि दोनों तिथियों और व्रतों के एक ही देवता श्रीविष्णुजी है। वैष्णव मताबिलम्बियोंको तो इस नियम का अवश्य ही पालन करना चाहिये।

मासशिवरात्रिव्रत- प्रत्येक महीने की निशीथकाल व्यापिनी चतुर्दशी में किया जाता है। श्रावण तथा फाल्गुन मास की दोनों चतुर्दशी प्रमुख मानी गई है। जनश्रुति के अनुसार श्रावण की चतुर्दशी को भगवान सदाशिव ने समुद्र से प्रार्दुभूत हलाहल का पान किया था। विष को कंठ में रोक लेने के कारण नीलकंठ कहलाये। अग्नि को शान्त करने के लिये जलाभिषेक प्रारम्भ हुआ। शिव ने शिर पर चन्द्रमा को धारण किया तथा पहाड़ोंके शिखर पर जाकर बैठे, तब सदाशिव को कुछ शान्ति मिली। भक्तों ने भगवान को वहाँ भी नहीं छोड़ा, रुद्राभिषेक पहाड़ की चोटी पर जाकर भी किया। **बम-बम भोले, हर-हर महादेव** उद्घोष के साथ असंख्य शिव के भक्त कंधे पर कांवड़ लटकाये नंगे पांव भागते-दौड़ते श्रीगङ्गाजलसे रुद्राभिषेक करने के लिये आज भी कितने आतुर रहते हैं। यह सब जानते है कि भक्तिभाव में तल्लीन उन्हें अपने तन-मन-धन का होश नहीं रहता। आशुतोष भगवान् शंकरजी सबकी अभिलाषा पूर्ण करते हैं।

इस वर्ष ३० जुलाई २००८ बुधवार में अर्धरात्रि व्यापिनी चतुर्दशी होने से मासशिवरात्रि व्रतोपवास तथा श्रीगङ्गाजलसे रुद्राभिषक के लिये सर्वोत्तम मानी जायेगी। आर्द्रा नक्षत्र के स्वामी शिव हैं। अत- पूजन के लिये उपयुक्त रहेगा। उक्त दिन भद्रा की व्याप्ति स्वर्ग में रहेगी- **स्वर्गेभद्राशुभेकार्ये.** .. सूत्रानुसार भूलोक वासियों के सभी शुभ कार्य निर्विघ्नतापूर्वक सम्पन्न हो सकेंगे।

शिवलिङ्गतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः। ईशानसंहिता के वाक्यानुसार फाल्गुन मास की कृष्ण चतुर्दशी के निशीथकाल में ज्योतिर्लिङ्ग का प्रादुर्भाव हुआ था, इसलिये इस तिथि को महाशिवरात्रि के नाम से जाना जाता है। विक्रमाब्द २०६५ में महाशिवरात्रिव्रत २३ फरवरी २००९ सोमवार को श्रवण-धनिष्ठा नक्षत्र के सुखद संयोग में सम्पन्न किया जायेगा। **शिवरात्रिव्रतं नाम सर्वपापप्रणाशनम्। आचाण्डालमनुष्याणां भुक्तिमुक्ति प्रदायकम्।।** के अनुसार सभी वर्ण जाति समुदाय के स्त्री-पुरुष, बाल, वृद्ध और युवा इस व्रत को कर मोक्ष के भागीदार बन सकते हैं। इस व्रत में भद्रा का व्यवधान मान्य नहीं रहता फिर भी मकर के चन्द्रमा में भद्रा पाताल लोकवासी होती है। सोमवार में महाशिवरात्रि होना अत्यन्त उत्तम मानी गई है- **इयं च रवि भौम सोम वारेषु शिवयोगे चाति प्रशस्ता।**

श्रावणी उपाकर्म- १६ अगस्त शनिवार श्रावण शुक्ल पूर्णिमा राखी वाले दिन भद्रा की व्याप्ति १४ बजकर ३१ मिनट तक रहेगी। भद्राओं में रक्षाबन्धन धर्मशास्त्र दृष्टया निषेध है- **भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।।** भद्रा (स्वर्ग भूमि पाताल) तीनों लोकों में विचरण करती रहती है। इस संदर्भ में विस्तृत लेख सम्वत् २०६३ के श्री राजधानी पंचांग में छपा था। श्री ब्रजभूमि पंचांग में भी छापने का प्रयास करेंगे। इस वर्ष राखी वाले दिन भद्रावास पाताल में रहेगा। सो किसी किस्म का व्यवधान नहीं होगा। भद्रा का मुखकाल ११।२७ से १३।३० तक के समय को छोड़कर कभी भी माता बहिन और बेटियां अपने भाइयों की कलाई में निम्न मन्त्र- **येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेनत्वामपि बध्नामि रक्षे माचल माचल।।** बोलते हुये रक्षाबन्धन की रस्म पूरी कर सकती है। इस वर्ष राखी वाले दिन सिंह की संक्रांति और रात्रि में होने वाला चन्द्रग्रहण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ग्रहजन्य सूतककाल सायं ४ बजकर ६ मिनट से प्रारम्भ हो जायेगा, तब तो किसी को राखी नहीं बांधनी चाहिये। अत्यन्त पुण्यार्जन के दिन भाईयों को अपनी बहिनों को दिल खोलकर धन वस्त्राभूषण देकर सम्मानित करना चाहिए।

श्रावणी उपाकर्म- श्रावण की पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र के संयोग में किया जाता है। जिस वर्ष पर्व दिन में संक्रांति हो या चन्द्रग्रहण हो तब तो दूषित समय में इसे नहीं करना चाहिये- **यदि स्याच्छ्रावर्णं पर्व ग्रहसंक्रान्ति दूषितम्। स्यादुपाकरणं शुक्ल पञ्चम्यां श्रावणस्यतु।।** श्रावण शुक्ल पंचमी में उपाकर्म करें। **संक्रान्तिर्ग्रहणं वापि यदि पर्वाणि जायते। तन्मासे हस्तयुक्तायां पञ्चम्यां वा तदिस्यते।।** स्मृति महार्णव में कहा है कि- संक्रान्ति या ग्रहण से पर्व प्रभावित हो तो उस मास में हस्त नक्षत्र से युक्त पंचमी तिथि में उपाकर्म करें। इन सभी प्रमाणों को ध्यान में रखते हुये हमने अपने पंचांगों में श्रावणी उपाकर्म ६ अगस्त ब्रुधवार के दिन हस्त नक्षत्र के सुखद संयोग में लिखा है। आशा है कि सभी विद्वज्जन सहर्ष स्वीकार करेंगे।

हेमाद्री में निगम का वचन है कि वैष्णवोपाकर्म में ग्रहण का योग हो तो गुरु का नाश करता है और संक्रान्ति शिष्य को घातक बनती है तथा उत्तराषाढ़ा गुरु और शिष्य दोनों को नष्ट करता है- **ग्रहयोगो गुरुं हन्ति संक्रान्तिःशिष्यघातिनी। तयोर्हन्त्युत्तरषाढ़ा उपाकर्मणि वैष्णवे।।**

श्रीकृष्णजन्माष्टमी- २४ अगस्त २००८ रविवार में जयंती योगवाली सर्वमान्य रहेगी- **कृष्णाष्टम्यां भवेद्यत्र कलैका रोहिणीयदि। जयन्ती नाम सा प्रोक्ता उपोष्या सा प्रयलतः।।** इसमें व्रत पूजा अर्चना करने वाले विशेष पुण्य के भागीदार बनेंगे।

महाकाल भैरवाष्टमी- मार्गशीर्ष कृष्ण अष्टमी को कालाष्टमी का कृत्य किया जाता है। इसमें मतमतान्तर है। अधिकांश विद्वान शिव रहस्य के तन्त्र **शिवरहस्ये मध्याह्ने भैरवोत्पत्तिःश्रवणात्।** वाक्यानुसार मध्याह्नकाल में भैरवोत्पत्ति हुई ऐसा मानते हैं। इस वर्ष भैरव पूजा २० नवम्बर २००८ गुरुवार की अष्टमी में करके संसार की विघ्न बाधाओं से मुक्त हो सुख का अनुभव करेंगे- **कृत्या च विधिवत् पूजा ...। नरो मार्गसिताष्टम्यां वार्षिकं विघ्नमुत्सृजेत्।।**

अक्षय पुण्यार्जन अर्थलाभ के पुनीत अवसर

श्री रामनवमी:- इस वर्ष १४ अप्रैल सन् २००८ सोमवार



के दिन पूर्वाह्नकाल व्यापिनी चैत्र शुदी अष्टमी में मान्य रहेगी। देखें- **संदिग्ध व्रत पर्व व्यवस्था।** सोमवार में पुष्य नक्षत्र से धाता और आश्लेषा से सौम्य योग बनता है। ये दोनों सौभाग्य सुख-धन धान्यादि समृद्धि के सूचक हैं। वैसे भी अवतार दिन, तिथियाँ अभिष्ट सिद्धिप्रद मानी जाती हैं। सोमवार में सुबह ९।१२ से १०।४६ बजे तक शुभ का चौघड़िया तथा मिथुन लग्न की व्याप्ति बही-खाते बदलने वालों के लिए फायदेमन्द रहेगी। साल मध्ये लाभोन्नति की ओर अग्रसर होते जायेंगे। मान-सम्मान के भागीदार बनेंगे।

अक्षयतृतीया:- ७ मई २००८ बुधवार के दिन रोहिणी



नक्षत्र के सुखद संयोग में मनाई जायेगी। **वैशाखे शुक्ल पक्षे तु तृतीया रोहिणी युता। दुर्लभा बुध वारेण सोमेनापि युता तथा।।** इसी दिन श्री परशुराम जयन्ती भी मान्य रहेगी, क्योंकि प्रदोष के समय वैशाख शुक्ल तृतीया में स्वयं हरि ने परशुराम के रूप में रेणुका के उदर से अवतार ग्रहण किया- **रेणुकायास्तु यो गर्भादवतीर्णो हरि:स्वयम्।** यह तिथि स्वयं सिद्धि मुहूर्त्त है। अक्षयकारिणी होने से इसमें होने वाले सभी कार्य सिद्धि होते हैं। जैसाकि पूर्वाचार्यों ने लिखा है- **जयासु संग्रामे वलोपयोगी कार्याणि सिद्धियति निमित्तानि।** अनादिकाल से पूर्वज इसे बड़ी ही श्रद्धा-विश्वास के साथ सभी शुभ कामों में अपनाते रहे हैं। पंजाब में इसे **अणपूछा मुहूर्त्त** के नाम से जानते हैं। अबूझमुहूर्त में यदि किसी को अपने नाम राश्यानुसार लग्न मुहूर्त भी सही मिल जाएं तो **'सोने में सुगन्धी'** वाली कहावत चरितार्थ होना स्वभाविक है।

अक्षयतीज- बुधवार को सुबह ८ बजे से मिथुन लग्न शुरु हो जायेगी। इसमें काल का चौघड़िया मुहूर्त्त उपयोगी नहीं। घं.१० मि.१४ बजे से प्रारम्भ कर्क लग्न में नीच का मंगल केतु के साथ शुभफलदायक नहीं। मध्याह्न १२।३२ बजे से शुरु होने वाली सिंह लग्न **'स्थानवृद्धि करी शनि'** जिसमें शनि होने के कारण लाभदायक रहेगी। लग्नेश की स्थिति कर्मेश के साथ-साथ भाग्यस्थान में विकास को बल देगी। श्रेष्ट समय में श्रीगणेश लक्ष्मीन्द्रयो, ऋद्धि-सिद्धि, महालक्ष्मी, कुबेरभण्डारी अन्यान्यदेव पूजनार्चन के साथ-साथ बही-बसना, खाता(रोकड़ा), कलमदान पूजन, अत्याधुनिक उपकरण, कम्प्यूटर आदि का पूजन करने तथा करवाने वाले साल मध्ये सौख्य-समृद्धि की ओर अग्रसर होते रहेंगे।

रथयात्रा:- ४ जुलाई२००८ आषाढ़ शुदी द्वितीया शुक्रवार



के दिन पुनर्वसु एवं पुष्य नक्षत्र के सुखद संयोग में श्रीकृष्ण, बलराम तथा सुभद्राजी के रथों की सवारी जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) में बड़ी ही श्रद्धा एवं भक्ति के साथ निकाली जायेगी। शुक्रवार में पुनर्वसु से लुम्ब और पुष्य से राक्षस योग बनता है। सुबह ११।२ से १३।१८ बजे के मध्य कन्या लग्न में अभिजित् मुहूर्त के समय घं.१२ मि.२४ से शुभ का चौघड़िया रहेगा, जोकि कार्य विशेष के लिये सर्वोत्तम माना जायेगा। श्रीगणेश लक्ष्मीन्द्रयो, ऋद्धि-सिद्धि, कुबेर भण्डारी, अन्यान्य देव, नवग्रह पूजनार्चन के साथ-साथ बही-वसना, खातापूजन करके अपने कारोबार की शुरुआत करने वाले वर्ष मध्ये लाभोन्नति की ओर अग्रसर होते जायेंगे। राज समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। श्रीवृद्धि मंगलोत्सवमय नित्यानन्द का अनुभव होगा। जमीन-जायदाद, पशुधन, वाहनादि का सुख मिलेगा। विवाद निवृत्ति के साथ-साथ इच्छित कार्यपूर्ति हर्षोल्लास का कारण बनेगी। रथयात्रा वैसे तो पुरी का प्रमुख उत्सव है, लेकिन अब तो यह रथोत्सव देश के अन्यान्य महानगरों में भी बड़े ही हर्षोल्लास श्रद्धा-भक्ति के साथ मनाया जाने लगा है। पुरी का रथोत्सव देखते ही बनता है। देश-विदेश के विभिन्न भागों से आये हुए असंख्य श्रद्धालु भगवान जगन्नाथ, बलराम तथा बहिन सुभद्राजी के विशाल रथों को रस्सों से खींचते हुये अपने को धन्य समझते हैं। श्रद्धान्वत् भक्तजनों की प्रभु मनोइच्छा पूर्ण करते हैं।

श्रीगणेश-महालक्ष्मी पूजन

श्री गणेश लक्ष्मीन्द्रप्रभु, ऋद्धि सिद्धि दातार।
आन विराजो काज मह, करदो मम उद्धार।।

२८ अक्टूबर २००८ कार्तिक कृष्ण ३० मंगलवार के दिन चित्रा व स्वाती नक्षत्र, प्रीतियोग के सुखद संयोग में इस वर्ष दीपावली का पावन पर्व मनाया जायेगा। चित्रा नक्षत्र सायं ६ बजकर ३२ मिनट तक रहेगा, उपरान्त स्वाती भोग करेगा। सुबह ९।५५ बजे के बाद प्रीतियोग शुभफल प्रदान करेगा।

दीपावली पूजन और दिन के लग्न मुहूर्त्त

सौख्य समृद्धि हर्षोल्लास के इस पावन पर्व में श्रीगणेश महालक्ष्मी आदि के पूजनार्चन का क्रम पूरे दिन तथा मध्यरात्रि तक जारी रहता है। कुछ व्यापारी अपने लिए दीपावली पूजन हेतु धनु लग्न को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। उनकी धारणा सही है, क्योंकि धनु का स्वामी शुभ ग्रह बृहस्पति हैं। इस वर्ष लग्नेश स्वगृही होने से विशेष फायदेमन्द हैं। भाग्योन्नति में पूर्ण सहयोग करेगा।

धनु लग्न- मंगलवार के दिन १०।१७ से १२।२१ बजे तक रहेगी। सुबह ९।१६ से १३।२७ बजे तक चर लाभ अमृत के तीनों चौघड़िया मुहूर्त्त भी अत्यन्त शुभफल प्रदान करेंगे। लाभ के चौघड़िया



में श्रीगणेश लक्ष्मी जी के उपासक साल मध्ये उन्नति की ओर अग्रसर होते जायेंगे।

मकर लग्न- मध्याह्नकाल में १२।२१ से १४।५ बजे तक रहेगी, जिसमें राहु की स्थिति तथा लग्नेश की अष्टम में स्थिति श्रेष्ठ नहीं कही जा सकती, फिर भी ११।४३ से १२।२७ बजे के मध्य अभिजित् मुहूर्त्त पूजनार्चन के लिये उत्तम माना जायेगा। इस मुहूर्त्त में अनेक दोष निवारण की क्षमता होती है। अतः कोई भी अपने यहाँ श्रीगणेश लक्ष्मीन्द्रादि देवपूजन दीपावली पूजन कराकर लाभ उठा सकता है।

कुम्भ लग्न- दीपावली के दिन १४।५ से शुरु होकर घं.१५ मि.३४ बजे तक रहेगी। लग्न लग्नेश शनि से दृष्ट होने के कारण बलवान समझी जायेगी। कर्मेश भाग्यस्थान में राज्य के कर्त्ता सूर्य के साथ होने से भौतिक विकास को बल प्रदान करेगा। महालक्ष्मी जी के उपासक बही-बसना, खाता, रोकड़ा, पूजन करने तथा करवाने वाले इस वर्ष आश्चर्यजनक लाभोन्नति के भागीदार बनेंगे। राज-समाज में मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। ध्यान रहे १५।० से १६।३० बजे तक दक्षिण सम्भाग कर्नाटक, केरल, तमिलनाडू,आन्ध्रप्रदेशमें मान्यतानुसार राहुकाल विद्यमान रहेगा, जिसे दक्षिणवासी शुभ नहीं मानते।

मीन लग्न- मंगलवार सायंकाल १५।३४ से १७।१ बजे के मध्य वर्त्तमान रहेगी। इसमें शुभ का चौघड़िया १४।५० से १६।१४ तक मान्य रहेगा। चित्रा नक्षत्र मृदु व मैत्र संज्ञक है। इसमें फिल्मकार, फोटोग्राफर, नाट्यकला प्रवीन, मैत्री, वस्त्राभूषण क्रय-विक्रय, निर्माता, कृषक, अन्यान्य छोटे मोटे उद्योग-धन्धे करने तथा करवाने वाले लाभ के भागीदार बनते हैं। मंगलवार अस्त्र-शस्त्र, विष, अग्नि, दवाइयाँ, धातुओं के कारोबारी, शठता, दम्भ, पाखण्ड, स्वरक्षार्थ कर्म, खनिजकर्म, मिष्ठान्न बनाने, होटल संचालन करने वालों को अच्छा रहता है। मीन लग्न में अपने यहाँ श्रीगणेशादि देवपूजन करने वाले माता लक्ष्मीजी की कृपा से वर्षमध्ये बहुत अच्छा लाभ कमायेंगे। जमीन-जायदाद वाहनादि का सुख भोगेंगे। दक्षिण सम्भाग निवासियों को राहुकाल समय का ध्यान रखना चाहिये जो कि कुम्भ लग्न के संदर्भ में लिखा है।

दीपावली पूजन और रात्रि के लग्न मुहूर्त्त

मेष लग्न- दीपावली वाले दिन सायंकाल १७।१ बजे से प्रारम्भ होकर प्रदोष के समय १८ बजकर ३८ मिनट तक रहेगी। शुभ ग्रह बृहस्पति एवं अपने स्वामी मंगल से दृष्ट होने के कारण शुभ समझी जायेगी। **सर्वेदोषाः विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदाभवेत्।** सूत्रानुसार लग्न शुद्ध होने पर कोई भी दोष मान्य नहीं होता। वैसे भी दीपावली पूजन के लिये पूर्वाचार्यो ने प्रदोष को उपयोगी कहा है- **प्रदोष समये राजन् कर्त्तव्या दीपमालिका।** प्रदोष के अधिपति आशुतोष भगवान् सदाशिव अपने भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण करने में समर्थ हैं। श्रीगणेश महालक्ष्मी जी, ऋद्धि-सिद्धि, इन्द्र, वरुण, कुबेरभण्डारी, शक्तियों सहित ब्रह्मा-विष्णु-महेश, कुलदेवता, स्थानदेवता, सूर्यादि समस्त ग्रह पूजनार्चन के साथ-साथ बही-बसना, खाता, कमलदान, रोकड़ा पूजन अथवा अपने एकाउन्टेंट द्वारा सुनिश्चित किये गये अत्याधुनिक उपकरण, कम्प्यूटर आदि का पूजन करने वाले व्यवसायी तथा करवाने वाले द्विजाचार्य इस वर्ष लाभोन्नति की ओर अग्रसर होते जायेंगे। सम्पर्क में आने वाले समयोचित मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। झन्झटों से मुक्त हो नित्यानंद का अनुभव होगा। जमीन-जायदाद वाहनादि का सुख मिलेगा। श्री महालक्ष्मीजी की अनुकम्पावसात् उद्योग-धन्धे का विस्तार होगा। साल का अधिकांश समय हर्षोल्लासमय बीतेगा।

वृष लग्न- दीपावली की रात्रि में १८।३८ से २०।३५ बजे के मध्य वर्त्तमान रहेगी। शुक्र, मंगल तथा शनि से दृष्ट होने के कारण सबल समझी जायेगी। शुक्र लग्नेश है तो मंगल केन्द्रेश और शनि भाग्येश-कर्मेश होने से भौतिक विकास को बल देगा। दीपावली पूजन करने वालों को समृद्ध बनायेगा। रात्रि ७ बजकर १२ मिनट से लाभ, उद्वेग, शुभ, अमृत और चर के पांचों चौघडिया मुहूर्त्त मध्य रात्रि तक शुभ फलप्रद रहेंगे।

मिथुन लग्न- पूजनवाली रात्रि में २०।३५ बजे से शुरु होकर २२ बजकर ४९ मिनट तक रहेगी। लग्न पर गुरु का पूर्ण प्रभाव रहेगा। लग्नेश बुध तत्काल केन्द्र में स्वस्थ बैठकर व्यापार को खूब बढ़ावा देगा। मिथुन लग्न में कोई भी अपने यहाँ दुकान, मकान,



प्रतिष्ठान, दफ्तर, गोदाम, कारखाना, उद्योग समूह, फार्महाउस, नाट्यकलाकेन्द्र, उत्सवगृह आदि में सविधि पूजन कराकर श्रीमहालक्ष्मीजी की महती कृपा के भागीदार बन सकते हैं।

कर्क लग्न- दीपावली की रात्रि में २२।४९ बजे से कर्क लग्न प्रारम्भ होगी जो कि निशीथकाल तक रहेगी। इस वर्ष लग्नगत् केतु कार्य विशेष की दृष्टि से उत्तम नहीं है। फिर भी मध्यरात्रि में लक्ष्मीजी का प्रादुर्भाव होने के कारण निशीथकाल को लक्ष्मीपूजन के लिये उत्तम कहा जा सकता है- **'निशीथे लक्ष्म्यादि पूजनं कृत्यं शुभम्'** कल-कारखाने उद्योग-धन्धे, ऑफिस, दुकान, मकान, व्यवसाय, फैक्ट्री, फार्महाउस, नाट्यकला स्थान, कार्यालय, विद्यालय (स्कूल) आदि में श्रीगणेश लक्ष्मीन्द्रादि देवपूजन, बही-बसना, खातापूजन, कलमदान, रोकड़ापूजन करने-कराने वाले आश्चर्यजनक लाभ के भागीदार बनेंगे। नित्यानन्द का अनुभव होता रहेगा। सालमध्ये घूमने-फिरने का अवसर मिलेगा।

लक्ष्मी के भण्डार की बडी अपूरव बात।
ज्यों ज्यों दे त्यों त्यों बढ़े, बिन खर्चे घट जात।।

समुद्र से प्रादुर्भूत विष्णुप्रिया लक्ष्मीजी आश्रय ग्रहणार्थ सद्गृहस्थ दुकान, कारखाना, उद्योग, ऑफिस, स्टोर आदि का निरीक्षण करती हैं। किसने कितनी स्वच्छता से घर सजाया है और किसने नहीं। कहाँ में निवास करुँ अथवा कहाँ नहीं, यह भी देखती है कि कौन मेरी भक्ति में संलग्न है- **अर्धरात्रे भ्रमत्येव लक्ष्मीराश्रयितुं गृहान्। अतःस्वलंकृता लिप्ता दीपैर्जाग्रज्जनोत्सवाः।।** जहाँ अच्छा लगता है, वहीं ठहर जाती हैं। इसलिए मनुष्य अलंकारों से युक्त तथा पुष्प माल्यादि से सुशोभित चन्दन लगाकर दीपकों के उजाले में उत्सव करते हुए जागते रहें। ब्रह्ममुहूर्त्त में सद्गृहणियाँ आट-खटका करके अपने-अपने घरों से अलक्ष्मी को निष्कासित करें- **तावन्नगरनारीभिः शूर्पडिण्डिभवादनैः। निष्कास्यते प्रहृष्टाभिरलक्ष्मीःस्वगृहाङ्गणात्।।** और कहें कि हे अलक्ष्मी! (दरिद्रता) तुम मेरे घर से चली जाओ, क्योंकि अब यहाँ श्रीविष्णुसहित लक्ष्मीजी का निवास हो गया है। ऐसा करने से वर्ष में सुख-समृद्धि बढ़ती है।

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० चैत्र शुक्ल पक्ष १

ता. ७ से २० अप्रैल सन् २००८ ई. तक।

वसन्तऋतु, रविउत्तरायणे, उत्तर गोले।। केतकीअहर्गण:५८४६

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में है

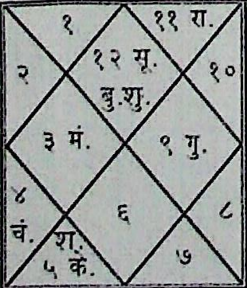
तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि	सूर्यास्त घं.	मि	तारीखें रा.चै.	प्र.चै.	मु.रअ	अंग्रेजी	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि	दैनिक रवि स्पष्ट प्रात:५घं३०मि रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]
१	चं	०	५	६	९	अ	३१	२	१८	३२	वै	३/५३	२/१०	७/२७	२०/२३	बव	०	५	३१	१०	६	७	१८	३५	१८	२५	२९	7	मेष	११	२३	३४	४०	[illegible]
२	चं	५१	३२	२६	४४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०
३	मं	४३	३	२३	१९	भर	२४	३०	१५	५४	प्री	४३	२३	२३	२७	तै	१७	१८	३१	१२	६	६	१८	३५	१९	२६	१	8	वृ२१।१६	११	२४	३३	४०	५८/५९
४	बु	३५	०	२०	५	कृ	१८	१३	१३	२२	आ	३३	५५	१९	३९	व	९	२	३१	१७	६	५	१८	३६	२०	२७	२	9	वृष	११	२५	३२	३९	५६
५	गु	२७	४८	१७	११	रो	१२	३७	११	७	सौ	२५	१०	१६	८	बव	१	२५	३१	२०	६	४	१८	३६	२१	२८	३	10	मिं२२।२	११	२६	३१	३५	५५
६	शु	२१	४०	१४	४३	मृग	८	८	९	१८	शो	१७	१८	१२	५८	तै	२१	४०	३१	२५	६	३	१८	३७	२२	२९	४	11	मिथुन	११	२७	३०	३०	५२
७	श	१६	५३	१२	४७	आ	४	५०	७	५८	अति	१०	३०	१०	१४	व	१६	५३	३१	२८	६	२	१८	३७	२३	३०	५	12	क२५।२४	११	२८	२९	२२	४९
८	र	१३	३०	११	२५	पुन	३	०	७	१३	सु	४	५२	७	५८	बव	१३	३०	३१	३३	६	१	१८	३८	२४	१	६	13	कर्क	११	२९	२८	११	४७
९	चं	११	३७	१०	३९	पु	२	३५	७	२	धृ	०/५७	२५/५	६/२८	१०/५०	कौ	११	३७	३१	३५	६	०	१८	३८	२५	२	७	14	कर्क	०	०	२६	५८	४५
१०	मं	११	८	१०	२६	श्ले	३	३५	७	२५	गंड	५४	४७	२७	५४	गर	११	८	३१	४०	५	५९	१८	३९	२६	३	८	15	सिं७।२५	०	१	२५	४३	४२
११	बु	११	५५	१०	४४	म	५	५३	८	१९	वृ	५३	२८	२७	२१	वि	११	५५	३१	४५	५	५८	१८	४०	२७	४	९	16	सिंह	०	२	२४	२५	४०
१२	गु	१३	५२	११	३०	पूफा	९	१५	९	३९	ध्रु	५२	५३	२७	६	बा	१३	५२	३१	५०	५	५७	१८	४१	२८	५	१०	17	क.१६।५	०	३	२३	५	३८
१३	शु	१६	४५	१२	३८	उफा	१३	३५	११	२२	व्या	५३	२	२७	९	तै	१६	४५	३१	५३	५	५६	१८	४१	२९	६	११	18	कन्या	०	४	२१	४३	३६
१४	श	२०	३३	१४	८	ह	१८	४७	१३	२६	ह	५३	४७	२७	२६	व	२०	३३	३१	५५	५	५५	१८	४१	३०	७	१२	19	तु२६।३६	०	५	२०	१९	३५
१५	र	२५	२	१५	५५	चि	२४	४२	१५	४७	वज्र	५५	५	२७	५६	बव	२५	२	३२	०	५	५४	१८	४२	३१	८	१३	20	तुला	०	६	१८	५४	३२

चन्द्रदर्शनमु.१५, सिंधारा२, श्रीझूलेलालज.सिन्ध, वि.स्वास्थ्यदिवस
द्वितीयाक्षय: **प्लव नामक सम्वत्सर**
सौभाग्य३ **गणगौरपूजन**, श्रीमत्स्यज., रविउस्सानी४, पुन.भौम:८।१६A
भ.९।४२से२०।५तक, **दमनकचतुर्थी**, सौर्यदि., **रोहिणीव्रत**,स.सि.यो.
हयव्रतपंचमी, **श्रीपंचमी**, कल्पादि:, रेलसप्ताहशुरु
स्कन्दषष्ठी, यमुनाषष्ठी, मेला माईसरखाना (अमृतसर)
भ.१२।४७से२४।६तक, श्रीदुर्गार्चनं, ओलीप्रा.**तेजीमन्दीसूचकांक**१४८२
अश्वि.मेषमेंसूर्य १८।३०, संक्रांतिमु.३०, **वैशाखीपुण्यपर्व**, बङ्कवसौरB
श्रीरामनवमीव्रत(वै), श्रीदुर्गा९, अश्वि.मेषमें **बुध:**२९।५०, डा.C
भ.२२।३५से, सर्वार्थसिद्धियोग ७।२५तक
भ.१०।४४तक, **कामदाएकादशीव्रत**(सबका), लक्ष्मीकांतडोलोत्सव
मदनद्वादशी, प्रदोषव्रत, हरिदमनोत्सव:, (वि.मु.उफा.)
अनङ्ग१३, **श्रीमहावीरज.** (वि.मु.हस्त), पुरातत्त्वरक्षणदि., ग्यारहवींD
भ.१४।८से२७।२तक, सा.वृषेभानु:२२।२२, ग्रीष्मऋतुप्रा.,(वि.मु.चित्रा)E
अन्वा., **चैत्रीपूर्णिमापुण्य:**, श्रीहनुमज्जयंती, वैशाखस्नानप्रा. ओलीF

A रवत्यांबुध:१५।१३,मन्वादि,सरहुल(बिहार),जलसंसाधनदि.,स.सि.यो.१५।५४से पूभा.३हर्शल१४।१०,स.सि.यो.७।२तक B वैशाखारम्भ:,खालसाज.खरमासस.,श्रीरामनवमीव्रतस्मार्त्त,स.सि.यो.७।१३से,विशूकेरल C अम्बेडकरज.,नवरात्रस.रेवत्यांशुक्र२६।२, D शरीफ, दमनकचतुर्दशी E बालासुन्दरी देवी मेला देवबन्द सहारनपुर F समाप्त,(वि.मु.स्वाती),सिद्धांचलयात्रा,मेला सालासर हनुमान तथा बालाजी

चैत्र शु.८ रवि प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता.१३ अप्रैल

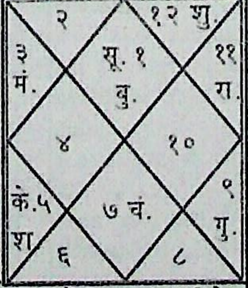
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	३	२	११	८	११	४	१०	४
अं.	२९	२	२२	२५	२७	१४	८	०	०
क.	२८	२०	१९	५०	१८	२२	३	५३	५३
वि.	११	५३	७	३१	३१	३५	३१	४०	४०
गति	५८ / ४७	८०७ / १६	२९ / ०	१२३ / १८	४ / ४२	७४ / २	२ / ६	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / अ.	मा. / उ.	मा. / उ.	व. / उ.	व. / अ.	व. / अ.
नक्षत्रचरण	रे.४	पुन.४	मृ.१	रे.३	उषा.१	उभा.४	मघा ३	धनि.३	मघा १
नाड़ी	दीप्ता	नीरा	नीरा	दीप्ता	नीरा	क्षीरा	अमृता	अमृता	अमृता



॥ फलम् ॥

श्रीगुरु राधाकृष्ण को, सुमिरहुँ बारम्बार। प्लव वर्ष का फल लिखूँ, ग्रहाधीन संसार।। श्रीविष्णु बीसी के १५वें प्लव नामक संवत् का फल- **प्लावऽब्दे निखिलाधात्री वृष्टिभि: परिपूरिता। प्रभवन्ति तथा रोगव्याकुलता त्वीतिभीतिभि:।।** इस वर्ष पृथ्वी पर कहीं जलाधिक्य, रोगोत्पात, भूकम्प, आंधी-तूफान तो कहीं भय-विषाद, व्याकुलता, अकाल जैसी असामान्य परिस्थितियों में से गुजरना पड़ेगा। सर्वत्र अशान्ति का साम्राज्य रहेगा। अन्तर्राष्ट्रीयजगत् में अकल्पित उलटफेर होंगे। **भूम्यां नाशश्चतुष्पद गजहयवृषभैर्युद्धदुर्भिक्षरोगै: पीड्यन्ते सर्वदेशा उदधिपुर पथे दुर्ग देशेषुभंग:। मलेच्छान्तो धान्यनाशो धन सुखमदनीशेन्द्र चन्द्रप्रताप: सर्वे ते यान्ते कालेयुगमिदं सिंहगे सूर्यपुत्रे।। बाजारभाव-** चन्द्रदर्शनमु.१५, ता.१३ में बैठी संक्रांति मु.३० तेजीकारक है। अत:मार्कीट का रुख अनिश्चित रहेगा। व्यापार सोच-विचारकर करें। सर्राफा,शेयर, सट्टा, मेटेरियल, सब्जी व फलों में सरगर्मी चलेगी। **मौसम-** पक्षारम्भ और अन्त में यत्र-तत्र बादलचाल, न्यूनाधिक वर्षा, विद्युत्पात, मेघगर्जन, ओलावृष्टि का संयोग बनेगा। रोगोत्पात, युद्धभय विपाद के कारण त्राहि-त्राहि मचेगी। यातायात सम्बन्धी कुघटनाचक्र सम्भव है। **ग्रहदर्शन-** सायं पश्चिमनत् मंगल पूर्वनत् शनि दृश्य रहेगा। प्रात:पूर्व में शुक्र, खमध्यमें गुरु दिखाई देगा। बुध अस्त रहेगा। **श्रीरामनवमी निर्णय देखें पृष्ठ ३७ पर।**

कु.ता.२०अप्रैल चैत्र शु.१५ रवि प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	६	२	०	८	११	४	१०	४
अं.	६	१	२५	१०	२७	२३	७	०	०
क.	१८	२८	४५	३१	४७	०	५१	३१	३१
वि.	५४	१६	०	३०	५८	२४	२४	२५	२५
गति	५८ / ३२	७२४ / ३७	२९ / ५४	१२७ / ३०	३ / ३२	७४ / ०	१ / १८	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / उ.	मा. / अ.	मा. / उ.	मा. / उ.	व. / उ.	व. / अ.	व. / अ.
नक्षत्रचरण	अश्वि.१	चित्रा ३	मृ.२	अश्वि.४	उषा.१	रे.१	मघा ३	धनि.३	मघा १
नाड़ी	वज्रा	दीप्ता	नीरा	वज्रा	नीरा	दीप्ता	अमृता	अमृता	अमृता

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० वैशाख कृष्णा पक्ष २

ता. २१ अप्रैल से ५ मई सन् २००८ ई. तक।

ग्रीष्मऋतु, रविउत्तरायणे, उत्तर गोले।। केतकीअहर्गणः५८६०

तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि	अस्त घं.	मि	रा.वै	प्र.वै	मु.रउ	इं.	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट (प्रातः५घं३०मि) रा.	अं.	क.	वि.		भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में हैं
१	चं	३०	१३	१७	५८	स्वा	३१	१५	१८	२३	सि	५६	५०	२८	३५	कौ	३०	१३	३२	२	५	५३	१८	४२	१	९	१४	21	तुला	०	७	१७	२६	५८/३१	इष्टिः, भरण्यांबुधः१३।१५, रा.वैशाखारम्भः, (विवाह मुहूर्त्त स्वाती)
२	मं	३५	५७	२०	१५	वि	३८	१७	२१	११	व्य	५८	५८	२९	२५	तै	३	५	३२	७	५	५२	१८	४३	२	१०	१५	22	वृ.४।२९	०	८	१५	५७	२८	वसुन्धरारक्षणदिवस, (विवाह मुहूर्त्त अनुराधा)
३	बु	४२	०	२२	३९	अनु	४५	४२	२४	८	वरि	६०	०	-	-	व	९	०	३२	१०	५	५१	१८	४३	३	११	१६	23	वृश्चिक	०	९	१४	२५	२६	भ.९।२७से २२।३९तक, (वि.मु.अनुराधा), स.सि.यो.व अ.सि.यो.A
४	गु	४८	१२	२५	७	ज्ये	५३	१२	२७	७	वरि	१	२०	६	२२	बव	१५	७	३२	१५	५	५०	१८	४४	४	१२	१७	24	ध.२७।७	०	१०	१२	५१	२५	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय२२।३४, कुम्भ में नेपच्यून १५।३८
५	शु	५४	८	२७	२८	मू	६०	०	-	-	परि	३	४२	७	१८	कौ	२१	१०	३२	२०	५	४९	१८	४५	५	१३	१८	25	धनु	०	११	११	१६	२४	अश्वि. मेषमें शुक्र २१।४३
६	श	५९	२०	२९	३२	मू	०	२८	५	५९	शि	५	४७	८	७	गर	२६	४५	३२	२३	५	४८	१८	४५	६	१४	१९	26	धनु	०	१२	९	४०	२२	भद्रा २९।३२से
७	र	६०	०	-	-	पूषा	६	५७	८	३४	सि	७	१८	८	४२	वि	३१	२२	३२	२८	५	४७	१८	४६	७	१५	२०	27	म.१५।६	०	१३	८	२	२०	भ.२८।२०तक, भरण्यांरविः १०।२६, कृत्तिकायां बुधः२४।२१, B
७	चं	३	२५	७	८	उषा	१२	१५	१०	४०	सा	७	५०	८	५४	बव	३	२५	३२	३३	५	४६	१८	४७	८	१६	२१	28	मकर	०	१४	६	२२	१९	अगस्तास्त १०।३२, शीतलापूजा (बूढ़ाबासौडा), कर्कमें मंगल C
८	मं	५	४७	८	५	श्र	१५	५८	१२	९	शुभ	७	७	८	३७	कौ	५	४७	३२	३३	५	४६	१८	४७	९	१७	२२	29	कु.२४।३०	०	१५	४	४१	१८	पंचकप्रारम्भ२४।३०, वृषमें बुध १७।४६, धनि.२मकरेराहुःश्ले.D
९	बु	६	१८	८	१६	ध	१७	४५	१२	५१	शु	४	५५	७	४३	गर	६	१८	३२	३७	५	४५	१८	४८	१०	१८	२३	30	कुम्भ	०	१६	२	५९	१५	भद्रा १९।५७से, चण्डिकानवमी
१०	गु	४	४०	७	३७	शत	१७	२७	१२	४४	ब्र	१/५५	२/२७	६/२७	१०/५६	वि	४	४०	३२	३७	५	४५	१८	४८	११	१९	२४	1	कुम्भ	०	१७	१	१४	१३	भ.७।३६तक, वरूथिनीएकादशीव्रतस्मार्त्त, मई मास ५ ता.३१.E
११	शु	१	०	६	८	पूभा	१५	८	११	४७	वै	४८	२०	२५	४	बा	१	०	३२	४२	५	४४	१८	४९	१२	२०	२५	2	मी.६।१	०	१७	५९	२७	१३	श्रीवल्लभाचार्यज., वरूथिनी११व्रत वैष्णवादि, (वि.मु.उ.भा.)
१२	शु	५५	२०	२७	५२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	द्वादशीक्षयः, त्रिस्पृशा महाद्वादशी
१३	श	४८	५	२४	५७	उभा	१०	५७	१०	६	वि	३९	५०	२१	३९	गर	२१	४२	३२	४५	५	४३	१८	४९	१३	२१	२६	3	मीन	०	१८	५७	४०	११	भद्रा २४।५७से, प्रदोषव्रत, शनिमार्गी२४।१०, सौरऊर्जादिवस
१४	र	३९	३३	२१	३२	रे	५/५८	१५/२५	७/२१	४१/५	प्री	३०	१२	१७	४८	वि	१३	४७	३२	४७	५	४३	१८	५०	१४	२२	२७	4	मे.७।४९	०	१९	५५	५१	१०	भ.११।१४तक, पंचकस.७।४९, पुष्येभौमः२५।५, स.सि.यो.७।४९से
३०	चं	३०	१५	१७	४८	भर	५०	५८	२६	५	आ	१९	५५	१३	४०	च	४	५५	३२	५०	५	४२	१८	५०	१५	२३	२८	5	मेष	०	२०	५४	१	८	अन्वा., देवपितृकार्येऽमापुण्यं, शुक्रास्तःपूर्वस्याम् ८।४४F शुक्रअस्त

A २४।८तक B (वि.गु.उषा.), स.सि.यो.८।३४से C १४।४८, बुधोदय पश्चि.५।५५,स.सि.यो.१०।४०से
D ४ कर्के केतुः२५।५८ E श्रमिकदिवस, मईडे F रोहिण्यांबुधः११।२७, मुनिशुकदेवजयंती

वैशाख कृ.८भौमे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता.२९ अप्रैल

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	९	३	०	८	०	४	१०	४
अं.	१५	१९	०	२९	२८	४	७	०	०
क.	४	४८	१८	१	१३	५	४३	२	२
वि.	४२	२५	५९	५३	११	४७	११	४८	४८
गति	५८	७६९	३१	११३	१	७३	०	३	३
	१८	५६	६	४८	५४	५४	२४	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	भ.१	श्रव.३	पुन.४	कृत्ति.१	उषा.१	अश्वि.२	मघा ३	धनि.३	मघा १
नाड़ी	चण्डा	अमृता	नीरा	चण्डा	नीरा	वायु	अमृता	अमृता	अमृता



।। फलम् ।।

सोमस्य पंचवारास्यु यत्र मासे भवन्ति हि। धन-धान्य समृद्धिःस्यात् सुखं भवति सर्वदा।। पैदावार अच्छी होने से सौख्य-समृद्धि बढ़ेगी। भौमवारोंका फल नेष्ट है। राजनीतिक उठापटक के चलते नये खिलाडी को समय सानुकूल नहीं। पश्चिमोत्तरीय सीमा पर चौकसी बरतनी चाहिए। त्रग्रही योग तथा केतू+भौम के योग में किंवा अग्निदाह, ज्वालामुखी विस्फोट, अस्त्र-शस्त्रादि की गूंज सुनाई पड़ने लगती है। **बाजारभाव-** तिथियोंकी ह्रास-वृद्धि का फल मन्दीकारक है। पक्षारम्भ के बने भाव अन्त में पलट सकते हैं। **वक्र चाल चलते हुये, शनि मार्गी हो जाय। सभी वस्तु व्यापार की, एकदम पलटा खाय।।** मेष में शुक्र का फल- **दैत्यगुरुर्यदा मेषे सर्वधान्य महर्घता। महिषी पशुपीड़ा च मेघ वर्षा भविष्यति।।** अनाज के भाव कुछ बढ़ सकते हैं। मशीनरी, वाहन, मेवा, वस्त्र, श्रृंगार तथा निर्माण सामग्री, पेयपदार्थ, सर्राफा, शेयर, सट्टा बाजार में सरगर्मी चलेगी। **मौसम-** बुधोदय, शुक्रास्त तथा ग्रहचार के प्रभाव से यत्र-तत्र बादलचाल, आंधी-तूफान, बिजली, गाज के साथ हल्की वर्षा, किंवा ओले पड़ने से क्षति होगी। **चलत्यङ्गारके वृष्टिरुदये च बृहस्पतौ। शुक्रास्तसमये वृष्टिस्त्रिधावृष्टिः शनैश्चरे।। ग्रहदर्शन-** प्रदोष समये खमध्य में मंगल, पूर्वनत शनि को देख सकते हैं। प्रातः पश्चिम में गुरु आकाश की शोभा बढ़ायेगा। ता.२८ में बुधउदय ता. ५ मई में शुक्र अस्त होगा।

कु.ता.५ मई वैशाख कृ.३०चन्द्रे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	०	३	१	८	०	४	९	३
अं.	२०	१३	३	९	२८	११	७	२९	२९
क.	५४	३५	२६	३६	२१	२९	४२	४३	४३
वि.	१	१७	५२	४६	४०	४	२५	४३	४३
गति	५८	९१४	३१	९३	०	७३	०	३	३
	८	२०	४२	४२	४४	४८	१५	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	भ.३	भर.१	पुष्य १	कृत्ति.४	उषा.१	अश्वि.४	मघा ३	धनि.२	श्ले.४
नाड़ी	चण्डा	चण्डा	जला	चण्डा	नीरा	वायु	अमृता	अमृता	अमृता

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० वैशाख शुक्ल पक्ष ३ — **ता. ६ से २० मई सन् २००८ ई. तक।**

ग्रीष्मऋतु, रविउत्तरायणे, उत्तर गोले।। केतकीअहर्गण:५८७५

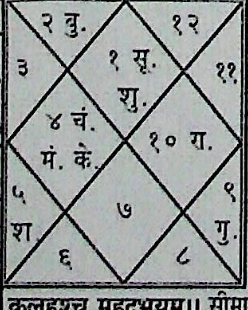
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टें.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	स्टै.टा. मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	स्टै.टा. मि	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	स्टै.टा. मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि	अस्त घं.	अस्त मि	रा.वै.	प्र.वै.	मु.रउ	मई	चन्द्र संचार स्टें.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट (प्रात:५घं३०मि) रा.	अं.	क.	वि.	गति कला	
१	मं	२०	३८	१३	५६	कृ	४३	२५	२३	३	सौ	५८/९	३३/५५	२१/९	६/२३	बव	२०	३८	३२	५५	५	४१	१८	५१	१६	२४	२९	6	वृ.७।१९	०	२१	५२	९	५८/६	इष्टि:, चन्द्रदर्शनमु.३०, भरण्यांशुक्र:१७।३३, स.सि.यो.२३।३तकA
२	बु	११	१०	१०	८	रो	३६	१३	२०	९	अति	४८	२०	२५	०	कौ	११	१०	३२	५७	५	४०	१८	५१	१७	२५	१	7	वृष	०	२२	५०	१४	४	श्रीपरशुरामज., **अक्षयतृतीया**(आखातीज), स.सि.योग, रोहिणीव्रत.B
३	गु	२	१५	६	३४	मृग	२९	४५	१७	३४	सु	३८	५०	२१	१२	गर	२	१५	३३	०	५	४०	१८	५२	१८	२६	२	8	मि.६।५१	०	२३	४८	१९	३	भ.१६।५९से २७।२४तक, चन्दनयात्रा, वर्षीतपपारणजैन
४	गु	५४	२०	२७	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	चतुर्थीक्षय:
५	शु	४७	५३	२४	४८	आ	२४	३८	१५	३०	धृ	३०	२५	१७	४९	बव	२१	७	३३	२	५	३९	१८	५२	१९	२७	३	9	मिथुन	०	२४	४६	२२	१	**गुरुवक्री २८।१०, आद्यशंकराचार्यजयंती**, श्रीसूरदासज.५३०वीं.C
६	श	४३	०	२२	५१	पुन	२०	५७	१४	२	शूल	२३	२७	१४	५८	कौ	१५	२५	३३	५	५	३९	१८	५३	२०	२८	४	10	क.८।२४	०	२५	४४	२३	५७/५९	श्रीरामानुजाचार्यजयंती, **कृत्तिकायां रवि:२८।३१,**
७	र	३९	५७	२१	३७	पु	१९	५	१३	१६	गंड	१७	३८	१२	४१	गर	११	३०	३३	१०	५	३८	१८	५४	२१	२९	५	11	कर्क	०	२६	४२	२२	५७	भद्रा २१।३७से, **श्रीगंगासप्तमी**, सर्वार्थसिद्धियोग १३।१६तक
८	चं	३८	४५	२१	७	श्ले	१९	५	१३	१५	वृ	१३	२७	११	०	वि	९	२२	३३	१३	५	३७	१८	५४	२२	३०	६	12	सिं.३।१५	०	२७	४०	१९	५५	भद्रा ९।२२तक, दुर्गाष्टमी, **देवी बगलामुखीजयंती**
९	मं	३९	१८	२१	१९	म	२०	४५	१३	५४	ध्रु	१०	४२	९	५३	बा	९	३	३३	१७	५	३६	१८	५५	२३	३१	७	13	सिंह	०	२८	३८	१४	५३	श्रीजानकीनवमी वैष्णव
१०	बु	४१	२०	२२	८	पूफा	२४	०	१५	१२	व्या	९	१३	९	१७	तै	१०	१७	३३	२०	५	३६	१८	५६	२४	१	८	14	क.२१।३९	०	२९	३६	७	५२	वृषमें सूर्य १५।२४ संक्रांतिमु.४५, बङ्ग व सौर मास ज्येष्ठप्रा. D
११	गु	४४	४०	२३	२७	उफा	२८	३५	१७	१	ह	८	५२	९	८	व	१३	०	३३	२२	५	३५	१८	५६	२५	२	९	15	कन्या	१	०	३३	३९	५०	भ.१०।४७से२३।२७तक, **मोहिनीएकादशीव्रत**(सबका), वि.परिवारदि.
१२	शु	४८	५७	२५	१०	ह	३४	२०	१९	१५	वज्र	९	२३	९	२०	बव	१६	४८	३३	२५	५	३५	१८	५७	२६	३	१०	16	कन्या	१	१	३१	४९	४८	मृगे बुध:१३।२, मूलरप्लूटो २९।१८, पक्षवर्धिनीद्वादशी
१३	श	५४	०	२७	२०	चि	४०	३०	२१	४६	सि	१०	३५	९	४८	कौ	२१	३०	३३	२७	५	३४	१८	५७	२७	४	११	17	तु.८।३०	१	२	२९	३७	४७	प्रदोषव्रत,कृत्तिकायांशुक्र:१३।४२,देवीछिन्नमस्ताज.,स.सि.यो.२१।४६से
१४	र	५९	३०	२९	२२	स्वा	४७	२०	२४	३०	व्य	१२	१५	१०	२८	गर	२६	४५	३३	३०	५	३४	१८	५८	२८	५	१२	18	तुला	१	३	२७	२४	४५	भ.२९।२२से, **श्रीनृसिंहजयंती**, कूर्मजयंती
१५	चं	६०	०	-	-	वि	५४	३३	२७	२२	वरि	१४	१८	११	१६	वि	३२	२५	३३	३३	५	३३	१८	५८	२९	६	१३	19	वृ.२०।३९	१	४	२५	९	४३	भ.१८।३१तक, अन्वा., श्रीबुद्धजयंती२५५१वीं, पूर्णिमाव्रत, यमप्रीतिE
१५	मं	५	२०	७	४१	अनु	६०	०	-	-	परि	१६	३	१२	१०	बव	५	२०	३३	३५	५	३३	१८	५९	३०	७	१४	20	वृश्चिक	१	५	२२	५२	४२	इष्टि:,उदयापूर्णिमास्नानपूर्ण, **वृषमें शुक्र:६।४८**, सा.मिथुनेभानु:E

A ऋषिपाराशरजयंती, देवदामोदरतिथि असम B जमादिउल-अव्वल५मुस., त्रेतायुगादि, कल्पादि, ४०१वीं श्रीशिवाजीजयंती, श्रीटैगोरजयंती C स.सि.योग १५।३०से
D तेजीमन्दीसूचकांक १९९९, श्रीमहावीरस्वामीकेवलज्ञान E यर्थजलकुंभदानम्, स.सि.यो.२७।२२से E २१।३२, देवयानीयात्रा सांभरलोके पीपलपूजनं

वैशाख शु.८ चन्द्रे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता.१२ मई

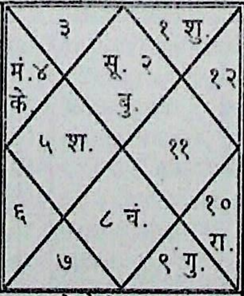
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	०	३	३	१	८	०	४	९	३
अं.	२७	२५	७	१९	२८	२०	७	२९	२९
क.	४०	४३	१०	९	२२	५	४६	२१	२१
वि.	१९	३८	४५	२७	५७	५७	२७	२७	२७
गति	५७	७८५	३२	६५	०	७३	०	३	३
	५५	३०	२४	२३	३६	४७	५९	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	कृत्ति.१	आश्ले.३	पुष्य २	रोहि.३	उषा.१	भर.३	मघा ३	धनि.२	आश्ले.४
नाड़ी	चण्डा	अमृता	दहना	वायु	नीरा	चण्डा	अमृता	अमृता	अमृता



|| फलम् ||

राहु मकर व केतु कर्क में भारत के लिये नेष्ट हैं। चल रहे साम्यक कामों में गतिरोध होगा। सत्तारूढ़ पार्टी की नैया डगमगाती चलेगी। विज्ञान के क्षेत्र में तरक्की होगी। **मकरे च यदा राहु: कांस्य सूत्रस्य संग्रह:। मासे तृतीयेऽतीते तु लाभश्चैव चतुर्गुण:।।** कांसा, पीतलादि धातु, सूत-कपास वस्त्रादि के संग्रह से लाभ होगा। वृष में सूर्य बुध का योग विश्व के किन्हीं भागों में भारी कलह, भयातंक, प्राकृतिक महोत्पात का कारण बनेगा- **सोमपुत्रे वृषे स्थित्वा एवं कुर्याच्च लक्षणम्। मेदिनी-नव-खण्डेषु कलहश्च महद्भयम्।।** सीमाओं पर चौकसी बरतनी चाहिये। **बाजारभाव-** चन्द्रदर्शनमु.३०, ता.१४ में बैठी वृष संक्रांतिमु.४५ भावोंमें गिरावट की सूचक हैं। **जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकै, मंहगाई हट जाय।।** इस योग का फल पूरा नहीं घटेगा। मेवा-मिष्ठान्न, चीनी, बूरा, बताशा, रसकश, घी, तेल, दूध, दही, खोआ, पनीर, निर्माणाधीन वस्तुएं तेज होंगी। **मौसम-** मई के पहले तथा तीसरे सप्ताह में यत्र-तत्र बादलचाल, मेघगर्जन, हल्की वर्षा से राहत मिलेगी। कहीं ओले पड़ सकते हैं। सर्द-गर्म की प्रतिक्रिया रोगों का कारण बनेगी। मरूस्थलोंमें आंधी-तूफान का जोर रहेगा। भूकम्प, समुद्रीतूफान की आशंका जानें। **ग्रहदर्शन-** सायं पश्चिममें बुध,मंगल, पूर्वनत् शनि दिखेंगे। गुरु को प्रात:पश्चिमनत् देख सकते हैं। शुक्र अस्त है।

कु.ता.२० मई वैशाख शु.१५भौमे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	७	३	१	८	०	४	९	३
अं.	५	४	११	२५	२८	२९	७	२८	२८
क.	२२	२२	३२	४८	१३	५६	५७	५६	५६
वि.	५२	३५	१	४३	८	७	१९	१	१
गति	५७	७१२	३३	२९	२	७३	१	३	३
	४२	३३	०	१८	२	४२	४८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	कृत्ति.३	अनु.१	पुष्य ३	मृग.१	उषा.१	कृत्ति.१	मघा ३	धनि.२	आश्ले.४
नाड़ी	चण्डा	चण्डा	दहना	दहना	नीरा	चण्डा	अमृता	अमृता	अमृता

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

ता. २१ मई से ३ जून सन् २००८ ई. तक।
ग्रीष्मऋतु, रविउत्तरायणे, उत्तर गोले।। केतकीअहर्गण:५८९०
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है

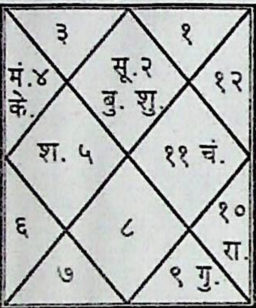
तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	स्टै.टा. मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	स्टै.टा. मि	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	स्टै.टा. मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि	तारीखें रा. वै	प्र. ज्ये	मु. जअ	मई	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	क्रां.घं
१	बु	११	२२	१०	५	अनु	१	५८	६	१९	शि	१८	५५	१३	६	कौ	११	२२	३३	३८	५	३२	१८	५९	३१	८	१५	21	वृश्चिक	१	६	२०	३४	५७/४२
२	गु	१७	२०	१२	२८	ज्ये	९	२०	९	१६	सि	२१	१३	१४	१	गर	१७	२०	३३	४०	५	३२	१९	०	१	९	१६	22	ध९।१६	१	७	१८	१६	४०
३	शु	२३	३	१४	४५	मू	१६	३०	१२	८	सा	२३	२०	१४	५२	वि	२३	३	३३	४०	५	३२	१९	०	२	१०	१७	23	धनु	१	८	१५	५६	३९
४	श	२८	१७	१६	५०	पूषा	२३	१५	१४	४९	शुभ	२५	५	१५	३३	बा	२८	१७	३३	४५	५	३१	१९	१	३	११	१८	24	म२१।२५	१	९	१३	३५	३७
५	र	३२	३८	१८	३४	उषा	२९	१०	१७	११	शु	२६	१०	१५	५९	कौ	०	२८	३३	४७	५	३१	१९	२	४	१२	१९	25	मकर	१	१०	११	१२	३६
६	चं	३५	४५	१९	४८	श्र	३३	५५	१९	४	ब्र	२६	२३	१६	३	गर	४	१२	३३	५०	५	३०	१९	२	५	१३	२०	26	मकर	१	११	८	४८	३६
७	मं	३७	१८	२०	२५	ध	३७	५	२०	२०	ऐ	२५	२०	१५	३८	वि	६	३१	३३	५२	५	३०	१९	३	६	१४	२१	27	कु७।४२	१	१२	६	२४	३५
८	बु	३७	०	२०	१७	शत	३८	३३	२०	५४	वै	२२	५५	१४	३९	बा	७	१०	३३	५५	५	२९	१९	३	७	१५	२२	28	कुम्भ	१	१३	३	५९	३४
९	गु	३४	४०	१९	२१	पूभा	३७	५७	२०	४०	वि	१८	५२	१३	२	तै	५	५०	३३	५७	५	२९	१९	४	८	१६	२३	29	मी१४।४४	१	१४	१	३३	३३
१०	शु	३०	२३	१७	३८	उभा	३५	२८	१९	४०	प्री	१३	१७	१०	४८	व	२	३०	३३	५८	५	२९	१९	४	९	१७	२४	30	मीन	१	१४	५९	६	३२
११	श	२४	१७	२५	१२	रे	३१	७	१७	५६	आ	६/५७	८/३७	७/२८	५६/३२	बा	२४	१७	३४	०	५	२९	१९	५	१०	१८	२५	31	मे१७।५६	१	१५	५६	३८	३१
१२	र	१६	४०	१२	९	अ	२५	२२	१५	३८	शो	४८	०	२४	४१	तै	१६	४०	३४	०	५	२९	१९	५	११	१९	२६	1	मेष	१	१६	५४	९	३१
१३	चं	७	५०	८	३७	भर	१८	२८	१२	५२	अति	३७	४०	२०	३३	व	७	५०	३४	२	५	२९	१९	६	१२	२०	२७	2	वृ१८।६	१	१७	५१	४०	३०
१४	चं	५८	१८	२८	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०
३०	मं	४८	३०	२४	५३	कृ	१०	५२	९	५०	सु	२६	५२	१६	१४	च	२३	२३	३४	३	५	२९	१९	६	१३	२१	२८	3	वृष	१	१८	४९	१०	२९

जिनवर व्रतारम्भ:जैन, स.सि.यो.व अ.सि.योग ६।१९तक
भ.२५।३७से, रा.ज्येष्ठारम्भः, श्रीनारदज.वीणादान, वृन्दावनपरिक्रमाA
भ.१४।४५तक, **चतुर्थीव्रत** चन्द्रोदय२२।८, श्रीविड़लाजयंती
रोहिण्यां रवि:२४।५३, तपनकाल प्रारम्भः
सर्वार्थसिद्धियोग ५।३१से १७।११तक
भद्रा १९।४८से, **वक्रीनेपच्यून** २६।१४, सर्वार्थसिद्धियोग ११।४तक
भ.८।६तक, **पंचकप्रारम्भ** ७।४२, **वक्रीबुध**:७।४४, श्रीनेहरूजीपुण्यः
रोहिण्यांशुक्र:१०।४, वीरसावरकरजयंती, संतदादूदयालपुण्यः
बुधास्त पश्चि. १०।४४, आश्लेषायां भौम:११।२१
भ.६।२९से १७।३८तक, स.सि.योग व अ.सि.योग १९।४०से
पंचकस.१७।५६, **अपराएकादशीव्रत**(सबका), भद्रकाली११(पंजाब)B
प्रदोषव्रत, सावित्रीव्रतारम्भः, जून ६ ता.३०, स.सि.यो.१५।३८तक
भद्रा ८।३७से १८।४३तक
चतुर्दशीक्षयः
अन्वा.,भावुका३०, **वट्सावित्रीव्रतपूजनं**, सौभाग्यसूचक**रोहिणीव्रत**,C

A वनबिहार B तम्बाकूनिषेधदिवस C शनिजयंती, स.सि.यो.९।५०तक

ज्येष्ठ कृ.८ बुधे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता.२८मई

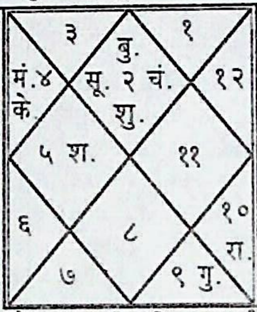
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	१०	३	१	८	१	४	९	३
अं.	१३	११	१५	२७	२७	९	८	२८	२८
क.	३	३४	५८	२९	५१	४६	१४	३०	३०
वि.	५९	५०	१२	३८	३६	०	३६	३४	३४
गति	५७/३४	७९०/५४	३३/३६	८/१४	३/३०	७३/४८	२/३६	३/११	३/११
स्थिति	मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	व./उ.	व./उ.	मा./अ.	मा./उ.	व./अ.	व./अ.
नक्षत्रचार	रोहि.१	शत.२	पुष्य ४	मृग.१	उषा.१	कृत्ति.४	मघा ३	धनि.२	आश्ले.४
नाड़ी	वायु	ज्वाला	ज्वाला	दहन	नीर	चण्डा	अमृत	अमृत	अमृत



|| फलम् ||

केतुरंगारकश्चैक राशिऋक्षगतो तथा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते।। कृषिकार्यों में गतिरोध, प्रचण्डगर्मी, अग्निदाह, ज्वालामुखीविस्फोट, चक्रवात के कारण क्षति सम्भव है। **धनु राशि गतो जीवो वक्रतामुपयाति चेत्। धनक्षयस्तदा लोके चौराद्राजापि रोषित:।।** देश-विदेश के अनेक सम्भागोंमें राजनीतिक सामाजिक उपद्रव से हानि होगी। चोर, उचक्के, असामाजिक तत्त्व अव्यवस्था फैलाने में लगे रहेंगे। संवेदनशील बड़े नगर, कश्मीर व अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, चीन, साऊदी अरब अन्यान्य पश्चिमी देश भयातंक से त्रस्त रहेंगे। **बाजारभाव-** त्रग्रही योग का फल- **एकराशौ गताह्यते सौम्य शुक्र दिनाधिपा:। सर्वधान्य महर्घत्वं मेघा: स्वल्पजलप्रदा:।।** धान्य में किंचित तेजी हो। रसकश, गुड़, शक्कर, बूरा-बताशा, चीनी, दूध, दही, पीतल, रसोईगैस, कोयला, लकड़ी, श्रृंगारप्रसाधन, कपड़ा, आभूषण, कलपुर्जे, स्टेशनरी, दवा-दारु, हरीसब्जियां, फल-फूल, पशुचारा, पेयजल, बर्फ, शेयर तथा सर्राफा के भावों में इजाफा सम्भव है। **मौसम-** कभी कहीं आकाश स्वच्छ तो कभी मेघाच्छांदित रहेगा। आंधी-तूफान के साथ हल्की वर्षा, बिजली, गाज, ओलावृष्टि का संयोग बनेगा। अन्तरिक्ष में कुघटनाचक्र सम्भव है। **ग्रहदर्शन-** प्रदोष समये पश्चिम में बुध, मंगल, खमध्य में शनि। प्रातः पश्चिमनत् गुरु अन्तरिक्ष की शोभा बढ़ायेगा। ता.२९ में बुध अस्त होगा।

कु.ता.३ जून ज्येष्ठ कृ.३० भौमे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट



सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह
१	१	३	१	८	१	४	९	३	रा.
१८	७	१९	२५	२७	१७	८	२८	२८	अं.
४९	१३	२०	४२	२८	८	३१	११	११	क.
१०	२४	५९	४३	२	२९	३५	३०	३०	वि.
५७/२९	११८/२०	३४/०	२८/४९	४/३१	७३/४२	३/१२	३/११	३/११	गति
मा./उ.	मा./अ.	मा./उ.	व./अ.	व./उ.	मा./अ.	मा./उ.	व./अ.	व./अ.	स्थिति
रोहि.३	कृत्ति.४	आश्ले.१	मृग.१	उषा.१	रोहि.३	मघा ३	धनि.२	आश्ले.४	नक्षत्रचार
वायु	चण्डा	अमृत	दहन	नीर	वायु	अमृत	अमृत	अमृत	नाड़ी

श्रीसम्वत् २०६५ शाके१९३० ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

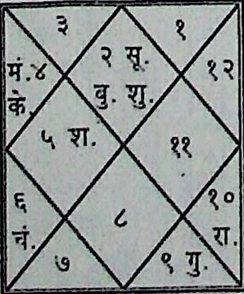
ता. ४ से १८ जून सन् २००८ ई. तक।
ग्रीष्मऋतु, रविउत्तरायणे, उत्तर गोले।। केतकीअहर्गण:५९०४
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	स्टे.टा. मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	स्टे.टा. मि	योग	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	स्टे.टा. मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि	अस्त घं.	अस्त मि	रा. ज्ये	प्र. ज्ये	मु. जउ	अंग्रेजी	चन्द्र संचार स्टे.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	पलभा	
१	बु	३८	५३	२१	१	रो	३/५५	१२/४७	६/२७	४५/४७	धृ	१६	१०	११	५६	किं	१३	४२	३४	८	५	२८	१९	७	१४	२२	२९	4	मि१७।१६	१	१९	४६	३९	५६/२८	इष्टि:, करवीरव्रतं, दशाश्वमेधघाटस्नानारम्भ:, स.सि.यो.२७।४७तक
२	गु	२९	५५	१७	२६	आ	४९	१३	२५	९	शू	५/५६	४५/७	७/२७	४६/५५	बा	४	२५	३४	८	५	२८	१९	७	१५	२३	३०	5	मिथुन	१	२०	४४	७	२६	चन्द्रदर्शनमु.१५, पर्यावरणदि., सघनवृक्षा:संकल्पे, स.सि.यो.२५।९से
३	शु	२२	०	१४	१६	पुन	४३	५२	२३	१	वृ	४७	३३	२४	२९	गर	२२	०	३४	१०	५	२८	१९	८	१६	२४	१	6	क१७।३३	१	२१	४१	३३	२६	भ.२४।५९से, रम्भातीजव्रत, जमादिउस्सानी६, राणाप्रतापज.४६९वीA
४	श	१५	३५	११	४२	पु	४०	७	२१	३१	ध्रु	४०	१८	२१	३५	वि	१५	३५	३४	१०	५	२८	१९	८	१७	२५	२	7	कर्क	१	२२	३८	५९	२५	भ..११।४२तक, मृगेरवि:२२।३७, वक्रीरोहिण्यांबुध:१८।२,वायुप्रवाहB
५	र	१०	५२	९	४९	श्ले	३८	१५	२०	४६	व्या	३४	३५	१९	१८	बा	१०	५२	३४	१०	५	२८	१९	८	१८	२६	३	8	सिं२०।४६	१	२३	३६	२४	२४	श्रुतिपंचमी जैन, मृगे शुक्र: ६।२८
६	चं	८	७	८	४३	म	३८	१७	२०	४७	ह	३०	२७	१७	३१	तै	८	७	३४	१२	५	२८	१९	९	१९	२७	४	9	सिंह	१	२४	३३	४८	२२	अरण्यषष्ठी, जामित्रषष्ठी (बंगाल), विन्ध्यवासिनीपूजा
७	मं	७	२३	८	२५	पूफा	४०	१८	२१	३५	वज्र	२७	५५	१६	३८	व	७	२३	३४	१३	५	२८	१९	९	२०	२८	५	10	क२७।५७	१	२५	३१	१०	२१	भ.८।२५से २०।३८तक
८	बु	८	३०	८	५२	उफा	४४	२	२३	५	सि	२६	५०	१६	१२	बव	८	३०	३४	१५	५	२८	१९	१०	२१	२९	६	11	कन्या	१	२६	२८	३१	२०	श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावतीजयंती, मेलाक्षीरभवानी(कश्मीर), स.सि.यो.२३।५से
९	गु	११	२०	१०	०	ह	४९	१५	२५	१०	व्य	२६	५८	१६	१५	कौ	११	२०	३४	१५	५	२८	१९	१०	२२	३०	७	12	कन्या	१	२७	२५	५१	२०	श्रीमहेशनवमी, वक्री पूषा.४ गुरु:१३।५३
१०	शु	१५	२७	११	३९	चि	५५	३०	२७	४०	वरि	२८	५	१६	४२	गर	१५	२७	३४	१५	५	२८	१९	१०	२३	३१	८	13	तु१४।२५	१	२८	२३	११	१८	भ.२४।४०से, श्रीगङ्गादशहरा, श्रीरामेश्वरप्रतिष्ठादिवस, बटुकभैरवC
११	श	२०	३३	१३	४१	स्वा	६०	०	-	-	परि	२९	५०	१७	२४	वि	२०	३३	३४	१७	५	२८	१९	११	२४	१	९	14	तुला	१	२९	२०	२९	१८	भ.१३।४१तक, निर्जलाएकादशीव्रत(सबका), मिथुन में सूर्य२२।३D
१२	र	२६	१५	१५	५८	स्वा	२	२७	६	२७	शि	३२	३	१८	१७	बा	२६	१५	३४	१८	५	२८	१९	११	२५	२	१०	15	वृ२६।३९	२	०	१७	४७	१६	प्रदोषव्रत, चम्पक १२, मेलाखाटूश्यामजी(राज), तेजीमन्दीसूचकांकE
१३	चं	३२	१०	१८	२०	वि	९	४८	९	२३	सि	३४	२५	१९	१४	तै	३२	१०	३४	१८	५	२८	१९	११	२६	३	११	16	वृश्चिक	२	१	१५	३	१६	सावित्रीव्रतारम्भ:, सर्वार्थसिद्धियोग ९।२३ से
१४	मं	३८	८	२०	४३	अनु	१७	१२	१२	२१	सा	३६	४७	२०	११	गर	५	७	३४	१८	५	२८	१९	१२	२७	४	१२	17	वृश्चिक	२	२	१२	१९	१६	भ.२०।४३से, बुधोदय:पूर्वस्यां ५।३६
१५	बु	४३	५०	२३	०	ज्ये	२४	२७	१५	१५	शुभ	३८	५८	२१	३	वि	१०	५७	३४	१८	५	२८	१९	१२	२८	५	१३	18	ध१५।१५	२	३	९	३५	१५	भ.९।५१तक, अन्वा, सत्यव्रतपूर्णिमा, दक्षिणवासियों का वट्सावित्रीF

A स.सि.यो.२३।१तक B काल:, शहीदी गुरु अर्जुनदेव C जयंती, मिथुन में शुक्र १६।४२ D संक्रांतिमु.१५, बङ्गलाब सौर मास आषाढ़ारम्भ:,स.सि.यो.दिनरात E २०६१ F व्रतपूर्ण, सन्तकबीरजयंती, आर्द्रायांशुक्र:२६।५३, मन्वादि:, श्रीजगन्नाथजी स्नानयात्रा दर्शननिषेध, रानीझांसीपुण्य:

ज्येष्ठ शु.८ बुधे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.११ जून

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१	५	३	१	८	१	४	९	३
अं.	२६	०	२३	२१	२६	२६	८	२७	२७
क.	२८	४९	५५	२७	४७	५८	५९	४६	४६
वि.	३१	४६	१०	३	४०	१५	२८	३	३
गति	५७/२०	७४७/५३	३४/२९	२९/१८	५/४३	७३/४२	३/५३	३/११	३/११
स्थिति	मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	व./अ.	व./उ.	मा./अ.	मा./उ.	व./अ.	व./अ.
नक्षत्रचरण	मृगा.१	उफा.२	आश्ले.३	रोहि.४	उषा.१	मृगा.१	मघा.३	धनि.२	आश्ले.४
नाड़ी	दहना	नीरा	अमृता	वायु	नीरा	दहना	अमृता	अमृता	अमृता



॥ फलम् ॥

एकादश्यां शनौ तस्मिन् छत्रभङ्गोऽथवा भुवि। नगरग्राम भङ्ग:स्याद्वैरि चौराद्युपद्रवा:।। किसी देश-प्रदेश की सरकार लुढ़क सकती है। घिनौनी राजनीति के तहत किंवा झगड़े-झमेले होंगे। मठाधीश धार्मिक उन्माद को बढ़ावा देंगे। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, साऊदीअरब, अमेरिकादि देशोंमें आन्तरिक कलह बढ़ेगा। कोई देश सीमातिक्रमण करेगा। आतंकी नया गुल खिला सकते हैं। शान्तिपरिचर्चा मात्र लोकदिखावा जानें। प्रभावी राष्ट्र युद्धसामग्री संचय करेंगे। **बाजारभाव-** चन्द्रदर्शन एवं मिथुन की बैठी संक्रांतिमु.१५ तेजी की सूचक है। मिथुन का शुक्र अनाजादि में विशेष तेजी करेगा- **मिथुने च यदा शुक्रो महार्घं तत्र जायते। यव गोधूम चूर्णका: शालिश्चैव विशेषत:।।** ध्यान रहे कि वृष में बुध वक्री चल रहा है। भावोंमें अकल्पित उलटफेर का संयोग बनेगा। **मौसम-** मिथुन में शुक्र का फल- **मिथुने कर्कटे संस्थो यस्मिन् काले भृगोसुत:। वातो वाति तदा नित्यं जलवृष्टिश्च जायते।।** पक्षान्तर्गत घामाछांई का संयोग बनेगा। आंधी-तूफान, विद्युत्पात के साथ हल्की वर्षा से राहत मिलेगी। दक्षिण में समुद्रीतूफान, अतिवृष्टि, बाढ़ के कारण क्षति सम्भव है। उत्तरभारत में प्रचण्ड गर्मी, अग्निदाह से त्राहि-त्राहि मचेगी। **उदयदर्शन-** सायं पश्चिममें मंगल, शनि तथा पूर्वीक्षितिज में उदित होते गुरु को देख सकते हैं। शुक्र अस्त है। बुध १७ जून को उदय होगा।

कु.ता.१८ जून ज्येष्ठ शु.१५ बुधे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	७	३	१	८	२	४	९	३
अं.	३	२५	२७	१९	२६	५	९	२७	२७
क.	९	९	५८	५	५	३४	२८	२३	२३
वि.	३५	१२	१४	५६	१४	१४	२६	४८	४८
गति	५७/१५	७१५/३३	३४/५४	५/०	६/३५	७३/४२	४/२४	३/११	३/११
स्थिति	मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	व./उ.	व./उ.	मा./अ.	मा./उ.	व./अ.	व./अ.
नक्षत्रचरण	मृगा.३	ज्ये.३	आश्ले.४	रोहि.३	पूषा.४	मृगा.४	मघा.३	धनि.२	आश्ले.४
नाड़ी	दहना	वायु	अमृता	वायु	सौम्या	दहना	अमृता	अमृता	अमृता

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६ | ता.१९ जून से ३ जुलाई सन् २००८ ई. तक।

ग्रीष्मऋतु, रविउत्तरायणे, उत्तर गोले।। केतकीअहर्गणः५९११

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि	सूर्यास्त घं.	मि	रा.ज्यो	प्र.आ	मु.जउ	ईस्वी	चन्द्र संचार स्टे.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	
१	गु	४९	७	२५	८	मू	३१	२०	१८	१	शु	४०	५०	२१	४९	बा	१६	२७	३४	२०	५	२९	१९	१३	२९	६	१४	19	धनु	२	४	६	५०	५७/१५	इष्टिः, गुरु हरगोविन्द जयंती
२	शु	५३	५३	२७	२	पूषा	३७	४५	२०	३५	ब्र	४२	२०	२२	२५	तै	२१	३०	३४	२०	५	२९	१९	१३	३०	७	१५	20	म२७।९	२	५	४	५	१३	मार्गीबुधः५।४७, स्त्री-पु.चं.चं.वर्षा वाहन महिष से यत्र-तत्र वर्षाA
३	श	५७	५०	२८	३७	उषा	४३	२७	२२	५२	ऐं	४३	१५	२२	४७	व	२५	५०	३४	२०	५	२९	१९	१३	३१	८	१६	21	मकर	२	६	१	१८	१४	भ.१५।४९से २८।३७तक, आर्द्रायां रविः२१।४३, मघासिंह में B
४	र	६०	०	-	-	श्र	४८	१५	२४	४७	वै	४३	२५	२२	५१	बव	२९	२०	३४	२०	५	२९	१९	१३	१	९	१७	22	मकर	२	६	५८	३२	१३	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २२।५, राष्ट्रीय आषाढ़ारम्भः
४	चं	०	४५	५	४८	ध	५१	५३	२६	१५	वि	४२	४२	२२	३५	बा	०	४५	३४	२०	५	३०	१९	१३	२	१०	१८	23	कु२३।३१	२	७	५५	४५	१४	पंचकप्रारम्भ १३।३१ से
५	मं	२	३२	६	३१	शत	५४	१२	२७	११	प्री	४०	५५	२१	५२	तै	२	३२	३४	२०	५	३०	१९	१४	३	११	१९	24	कुम्भ	२	८	५२	५९	१३	मघा ४ शनि.२३।३१
६	बु	२	५३	६	३९	पूभा	५५	०	२७	३०	आ	३७	५७	२०	४१	व	२	५३	३४	२०	५	३०	१९	१४	४	१२	२०	25	मी२१।२५	२	९	५०	१२	१२	भद्रा ६।३९से १८।२४तक
७	गु	१	३७	६	९	उभा	५४	७	२७	९	सौ	३३	४०	१८	५८	बव	१	३७	३४	२०	५	३०	१९	१४	५	१३	२१	26	मीन	२	१०	४७	२४	१३	कालाष्टमी, पंढ़रपुरयात्रारम्भ, स.सि.यो.२७।९से, अहिल्याबाईहोल्करC
८	गु	५८	४५	२९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	अष्टमीक्षयः
९	शु	५४	१०	२७	११	रे	५१	३५	२६	९	शो	२७	५८	१६	४२	तै	२६	२८	३४	१७	५	३१	१९	१४	६	१४	२२	27	मे२६।९	२	११	४४	३७	१४	पंचकस.२६।९, वक्रीहर्शल ११।१०, स.सि.योग दिनरात, अ.D
१०	श	४८	७	२४	४६	अ	४७	३५	२४	३३	अति	२१	३	१३	५६	व	२१	७	३४	१७	५	३१	१९	१४	७	१५	२३	28	मेष	२	१२	४१	५१	१३	भ.१३।५८से २४।४६तक, वक्री मकर में नेपच्यून १५।१०
११	र	४०	४८	२१	५०	भर	४२	१८	२२	२६	सु	१२	५५	१०	४१	बव	१४	२८	३४	१७	५	३१	१९	१४	८	१६	२४	29	वृ२७।४८	२	१३	३९	४	१४	योगिनीएकादशीव्रत स्मार्तादि, पुन.शुक्रः२३।२६, बाबादेवराहापुण्यः
१२	चं	३२	३०	१८	३२	कृ	३६	०	१९	५६	धृ	३/५४	५०/७	७/२७	४/११	कौ	६	३७	३४	१५	५	३२	१९	१४	९	१७	२५	30	वृष	२	१४	३६	१८	१३	सोमप्रदोषव्रत, योगिनी११व्रत निम्बार्क, मृगे बुधः९।२९, स.सि.E
१३	मं	२३	३८	१४	५९	रो	२९	१०	१७	१२	गंड	४४	२	२३	९	व	२३	३८	३४	१५	५	३२	१९	१४	१०	१८	२६	1	मि२७।४८	२	१५	३३	३१	१४	भ.१४।५९से २५।१०तक, जुलाई मास ७ ता.३१, धनि.१राहुःF
१४	बु	१४	३३	११	२१	मृग	२२	१०	१४	२४	वृ	३३	५५	११	६	श	१४	३३	३४	१५	५	३२	१९	१४	११	१९	२७	2	मिथुन	२	१६	३०	४५	१४	अन्वाधान, सर्वार्थसिद्धियोग १४।२४तक, पितरकार्येऽमापुण्यः
३०	गु	५	३७	७	४८	आ	१५	२७	११	४४	ध्रु	२४	५	१५	११	ना	५	३७	३४	१२	५	३३	१९	१४	१२	२०	२८	3	कर७।५६	२	१७	२७	५८	१४	इष्टिः, स्नानदानादि देवकार्येऽमापुण्यः, सर्वार्थसिद्धियोग ११।४४से

A आंधी-तूफान B मंगल १६।५८, सा.कर्कभानुः५।३०, वर्षाऋतुप्रा.,रविदक्षिणायने, दैत्योंकी मध्यरात्रि देवताओंका मध्याह्न, स.सि.योग २२।५२से

C जयंती, विश्व नशा विरोध दिवस D सि.योग २६।९तक E योग १९।५६से F आश्ले.३केतुः२३।४२, रोहिणीव्रत

आषाढ़ कृ.७ गुरौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता.२६ जून

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	११	४	१	८	२	४	९	३
अं.	१०	४	२	२०	२५	१५	१०	२६	२६
क.	४७	२६	३९	३५	१०	२३	६	५८	५८
वि.	२४	२०	२४	२६	१२	५४	६	२१	२१
गति	५७	८२३	३५	३२	७	७३	५	३	३
	१३	४४	२४	१६	१६	४२	६	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	आर्द्रा २	उभा. १	मघा १	रोहि. ४	पूषा. ४	आर्द्रा ३	मघा ४	धनि. २	श्ले. ४
नाड़ी	सौम्या	सौम्या	अमृता	वायु	सौम्या	सौम्या	अमृता	अमृता	अमृता

४ के.		२ बु.
मं.५ श	सू. ३ शु.	१
६		१२ चं.
७	९ गु.	११
८		१० रा.

॥ फलम् ॥

यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पते। विग्रह पश्चिमेदेशे खङ्गयुद्धञ्च जायते।। पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देशोंमें राजनीतिक सामाजिक उपद्रव होंगे। कहीं युद्ध का षड्यन्त्र रचा जायेगा, तो कहीं कुदरती मार झेलनी पड़ेगी। **देवगुरुके सामने, जब चलते शुक्राचार। धर्म विरोधी मर मिटें, करते पापाचार।।** धर्मान्ध मठाधीश तथा सत्ताके भूखे भेड़िये भोली-भाली जनता को लड़ाने का प्रयास करेंगे। पार्टी स्तर पर उलटफेर, प्रभावी राष्ट्रनायक क्षतिग्रस्त हो सकता है। चुनावी सरगर्मी चलेगी।

कु.ता.३जुलाई आषाढ़ कृ.३०गुरौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट

४ के.		२ बु.
मं.५ श	सू. ३ चं.शु.	१
६		१२
७	९ गु.	११
८		रा.१०

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	२	४	१	८	२	४	९	३
अं.	१७	१६	६	२५	२४	२४	१०	२६	२६
क.	२७	६	४८	५५	१८	०	४२	३६	३६
वि.	५८	२४	२२	४०	१०	५	५६	६	६
गति	५७	८११	३५	६२	७	७३	५	३	३
	१४	३६	४८	२२	३९	४५	३२	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	आर्द्रा ४	आर्द्रा ३	मघा ३	मृग. १	पूषा. ४	पुन. २	मघा ४	धनि. २	श्ले. ३
नाड़ी	सौम्या	सौम्या	अमृता	दहना	सौम्या	नीरा	अमृता	अमृता	अमृता

बाजारभाव- तिथियोंकी घटा-बढ़ी का फल- **जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिके, मंहगाई हट जाय।।** सिंह का मंगल सोना, चांदी, अन्यान्य धातुएँ, लाल रंग की सभी वस्तुओं में तेजी करेगा। पक्षारम्भ के बने भाव अन्त में पलट सकते हैं- **वक्र चाल चलते हुये, बुध मार्गी हो जाय। चालू रुख मार्कीट का, एकदम पलटा खाय।।** अस्थिर माहौल में व्यापार सोच विचारकर करें। **मौसम-** आंधी-तूफान तथा हल्की वर्षा से राहत मिलेगी। इस वर्ष दिल्ली मथुरा में मानसून समय से पहले आ सकता है, अन्यथा विलम्ब से तरसायेगा। दक्षिण-पूर्व के प्रदेशोंमें वर्षाधिक्य बाढ़, भूकम्पादि के कारण क्षति होगी। **ग्रहदर्शन-** सायं पश्चिमी कपाल में मंगल, शनि, पूर्वीक्षितिज में गुरु को स्पष्ट देख सकते हैं। सुबह पूर्व में बुध दृश्य रहेगा। शुक्र अस्त है।

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० आषाढ़ शुक्ल पक्ष ता. ४ से १८ जुलाई सन् २००८ ई. तक।

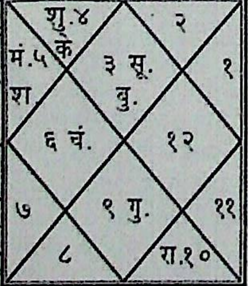
वर्षाऋतु, रविदक्षिणायने, उत्तर गोले।। केतकीअहर्गण:५९३४

तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि	सूर्यास्त घं.	मि	रा.आ	प्र.आ	मु.जउ	अंग्रेजी तारीख	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट (प्रात:५घं३०मि) रा.	अं.	क.	वि.	पृ.	भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है
१	गु	५७	२८	२८	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	प्रतिपदाक्षयः
२	शु	५०	१७	२५	४०	पुन	९	३०	९	२१	व्या	१४	५८	११	३२	बा	२३	५३	३४	१२	५	३३	१९	१४	१३	२१	२९	4	कर्क	२	१८	२५	१२	५७/१३	चन्द्रदर्शनमु.३०,श्रीजगन्नाथरथयात्रापुरी(उडीसा),स.सि.यो.९।२१तकA
३	श	४४	३३	२३	२२	पु	४	४०	७	२५	ह	६/५१	५०/५७	८/२१	१७/३३	तै	१७	२५	३४	१२	५	३३	१९	१४	१४	२२	१	5	कर्क	२	१९	२२	२५	१३	रज्जब७मु.,उर्समेलाअजमेरप्रा.,गुडीचामहोत्सवः,पुन.रवि:२१।१६,स्त्रीB
४	र	४०	२८	२१	४५	श्ले	१/५१	२०/४५	६/२१	६/२८	सि	५४	२७	२७	२१	व	१२	२८	३४	१०	५	३४	१९	१४	१५	२३	२	6	सिं.६।६	२	२०	१९	३८	१३	भ.१०।३३से२१।४५तक, मिथुनमें बुध:१८।५०, शुक्रोदयपश्चि.C
५	चं	३८	१७	२०	५३	पूफा	६०	०	-	-	व्य	५०	३३	२५	४७	बव	९	२२	३४	१०	५	३४	१९	१४	१६	२४	३	7	सिंह	२	२१	१६	५१	१३	कर्कमें शुक्र २६।३८ शुक्रउदय
६	मं	३८	५	२०	४८	पूफा	०	७	५	३७	वरि	४८	१२	२४	५१	कौ	८	१०	३४	१०	५	३४	१९	१४	१७	२५	४	8	क.११।५०	२	२२	१४	४	१३	महावीरस्वामीगर्भकल्याणंक,कौमारिकीषष्ठी,स्कन्दपूजनार्चन,(वि.मु.D
७	बु	३९	४५	२१	२९	उफा	२	२३	६	३२	परि	४७	१८	२४	३०	गर	८	५५	३४	५	५	३५	१९	१३	१८	२६	५	9	कन्या	२	२३	११	१७	१२	भ.२१।२९से,विवस्वत्सप्तमी,सूर्यपूजन,(वि.मु.हस्त),स.सि.यो.६।३२से
८	गु	४३	५	२२	४९	ह	६	२५	८	९	शि	४७	४३	२४	४०	वि	११	२५	३४	५	५	३५	१९	१३	१९	२७	६	10	तु२१।१५	२	२४	८	२९	१३	भ.१०।९तक, वक्रीपूषा.३गुरु:१७।४०, पुष्यभेशुक्र:१९।४२
९	शु	४७	४३	२४	४१	चि	११	५५	१०	२२	सि	४९	२	२५	१३	बा	१५	२३	३४	३	५	३६	१९	१३	२०	२८	७	11	तुला	२	२५	५	४२	१२	भड्डलीनवमी,आर्द्राबुध:११।४१,(वि.मु.स्वाती),मेलाशरीफभवानी(क)E
१०	श	५३	१५	२६	५४	स्वा	१८	३०	१३	०	सा	५१	५	२६	२	तै	२०	३०	३४	३	५	३६	१९	१३	२१	२९	८	12	तुला	२	२६	२	५४	१३	मन्वादिः, उलटारथ(पुरी), स.सि.योग १३।०तक
११	र	५९	७	२९	१६	वि	२५	४०	१५	५३	शुभ	५३	२३	२६	५८	व	२६	१०	३४	०	५	३७	१९	१३	२२	३०	९	13	वृ.९।१०	२	२७	०	७	१२	भ.१६।५से२९।१६तक,शयनीएकादशीव्रतस्मार्त्तादि.,देवशयनोत्सवः F
१२	चं	६०	०	-	-	अनु	३३	५	१८	५१	शु	५५	४५	२७	५५	बव	३२	५	३४	०	५	३७	१९	१३	२३	३१	१०	14	वृश्चिक	२	२७	५७	९	१३	शयनीग्यारसनिम्बार्क,हरिवासराऽभावः,वञ्जुलीमहाद्वादशी,स.सि.यो.G
१२	मं	५	०	७	३८	ज्ये	४०	१८	२२	४५	ब्र	५७	५०	२८	४६	बा	५	०	३३	५५	५	३८	१९	१२	२४	३२	११	15	ध२१।४५	२	२८	५४	३२	१२	भौमप्रदोषव्रत, तेजीमन्दीसूचकांक २३७९
१३	बु	१०	३५	९	५२	मू	४७	०	२४	२६	ऐं	५९	३२	२९	२७	तै	१०	३५	३३	५५	५	३८	१९	१२	२५	१	१२	16	धनु	२	२९	५१	४४	१३	कर्कमें सूर्य८।५७,संक्रांतिमु.३०,वङ्गवसौरश्रावणारम्भ,मनसापूजाप्रा.(बं)
१४	गु	१५	२८	११	५०	पूषा	५३	०	२६	५१	वै	६०	०	-	-	व	१५	२८	३३	५२	५	३९	१९	१२	२६	२	१३	17	धनु	३	०	४८	५७	१४	भ.११।५०से२४।३९तक,सत्यव्रत,वायुपरीक्षा,ज.दि.हजरतअली,उर्सH
१५	शु	१९	३५	१३	२९	उषा	५८	८	२८	५४	वै	०	३५	५	५३	बव	१९	३५	३३	५०	५	३९	१९	११	२७	३	१४	18	म.९।२२	३	१	४६	११	१४	अन्वा.गुरुपूर्णिमा,व्यासपूजा,मुड़ियापूनो,परिक्रमागोवर्धन,गे.नैमिषारण्यK

A मनोरथ२बंगाल,स्वामीकरपात्रीजीज.,श्रीदिवेकानन्दपुण्यः B स्त्री,चं.चं.व वाहन मंडूक से वायुवेग के साथ वर्षा C ८।१० D उफा.) E अष्टाह्निकाप्रा.,वि.जनसंख्यादि. F पूफायांभौम:२६।१३,चातुर्मास्ययमनियमादिप्रा. जिनदत्तसूरिश्वरनि.दादामेलाअजमेरकाप्रा.जैन G १८।५१तक H बहरायच,चौमासी१४जैनमुनीनांचातुर्मासप्रा. K बुधास्त:पूर्वस्यां१५।३०, पुन.बुध२३।२१,मन्वादि,स.सि.यो.२८।५४से,सन्यासीनांचातुर्मासप्रा.कोकिलाव्रत,शिवशयनोत्सव

आषाढ़ शु.८ गुरौ प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता.१०जुलाई

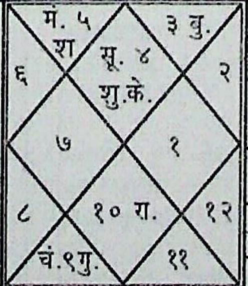
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	२	५	४	२	८	३	४	९	३
अं.	२४	२१	११	४	२३	२	११	२६	२६
क.	८	५७	०	४४	२४	३६	२२	१३	१३
वि.	२९	३३	०	१७	१९	२४	५५	५०	५०
गति	५७ १३	७३४ ३९	३६ १०	९१ १९	७ ४८	७३ ४५	५ ५७	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचरण	पुन. २	हस्त ४	मघा ४	मृग. ४	पूषा. ४	पुन. ४	मघा ४	धनि. २	श्ले. ३
नाड़ी	नीरा	सौम्या	अमृता	दहना	सौम्या	नीरा	अमृता	अमृता	अमृता



॥ फलम् ॥

पांच शुक्रवारों का फल अच्छा होने से देश में सौहार्दपूर्ण मैत्री का वातावरण बनेगा। कल-कारखानों में उत्पादन, खेतीमें अधिक पैदावार की उम्मीद से कुछ राहत मिलेगी। **सम सप्तक बहु ग्रह हों, अथवा एकहि संग। प्रजा कष्ट पावे अति, जन विग्रह का रंग।।** किंवा प्राकृतिक आपदा, भयातंकसे दुःखित जनता भागती फिरेगी। बड़े देश छोटे देशों पर अपनी धाक जमाने की चेष्टा करेंगे। देशमें विदेशी मेहमानों का आगमन शुभ नहीं। **बाजारभाव-** चन्द्रदर्शन एवं ता.१६ में सूती कर्क संक्रांतिमु.३०साम्यार्घकारक है। भावों में कम ही घटा-बढ़ी होगी। **दैत्यगुरुर्यदा कर्के रसानां वे महर्घता। सर्वधान्य समर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि।।** कर्क का शुक्र रसीलेपदार्थ, फल, पेयजल, शरबत, कच्चीखांड आदिमें तेजी करेगा। अनाज, दाल, चावल आदि के भाव पड़े रह सकते हैं। पशुपक्षी, वाहन, पैट्रोल, डीजल, गैस, सर्राफा, शेयरोंमें इजाफा सम्भव है। **मौसम-** शुक्रोदय तथा बुधास्त के प्रभाव से मौसम खराब होगा- **उदयास्तगतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः। चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रिधावृष्टि:शनैश्चरे:।।** कहीं अधिक वर्षा होगी। दक्षिण पूर्व सम्भागोंमें तूफान या बाढ़ की स्थिति चिन्ताजनक बनेगी। किंवा वर्षा गतिरोध, उमससे रोगोत्पात, विषाक्त जीवों का भय होगा। **ग्रहदर्शन-** प्रातः पूर्व में बुध, सायं पश्चिम में शुक्र, मंगल, शनि एवं पूर्वी क्षितिज के ऊपर गुरु दीखेगा। ता.६ में शुक्रोदय होगा।

कु.ता.१८जुलाई आषाढ़ शु.१५ शुक्रे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	८	४	२	८	३	४	९	३
अं.	१	२८	१५	१८	२२	१२	१२	२५	२५
क.	४६	०	५०	३२	२३	२६	१२	४८	४८
वि.	११	२८	४०	५९	८	२५	६	२४	२४
गति	५७ १४	७३७ २२	३६ ३२	११७ १९	७ २९	७३ ४५	६ २३	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचरण	पुन. ४	उषा. १	पूफा. १	आर्द्रा ४	पूषा. ३	पुष्य ३	मघा ४	धनि. १	श्ले. ३
नाड़ी	नीरा	नीरा	दहना	सौम्या	सौम्या	दहना	अमृता	अमृता	अमृता

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० श्रावण कृष्ण पक्ष ८

ता. १९ जुलाई से १ अगस्त सन् २००८ ई. तक। वर्षाऋतु, रविदक्षिणायने, उत्तर गोले।। केतकीअहर्गणः५९४९

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	स्टे.टा. मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	स्टे.टा. मि.	योग	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	स्टे.टा. मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि.	तारीखें रा. आ	तारीखें प्र. श्रा	तारीखें मु. रज्ज	ईस्वी	चन्द्र संचार स्टे.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट (प्रातः५घं३०मि) रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	
१	शा	२२	४२	१४	४५	श्र	६०	०	-	-	वि	०	५७	६	३	कौ	२२	४२	३३	४७	५	४०	१९	११	२८	४	१५	19	मकर	३	२	४३	२५	५७/१४	इष्टिः, पुष्ये रविः२०।५०, अशून्यशयनव्रतारम्भः, स.सि.यो., स्त्रीA
२	र	२४	५३	१५	३७	श्र	२	१८	६	३५	प्री	०/५१	३२/२०	५/२१	५३/२४	गर	२४	५३	३३	४७	५	४०	१९	११	२९	५	१६	20	कु.१९।३	३	३	४०	३९	१५	भद्रा २७।५०से, **पंचक प्रारम्भ** १९।१३
३	चं	२५	५५	१६	३	ध	५	२३	७	५०	सौ	५७	१३	२८	३४	वि	२५	५५	३३	४३	५	४१	१९	१०	३०	६	१७	21	कुम्भ	३	४	३७	५४	१५	भ.१६।३तक, **चतुर्थीव्रत** चन्द्रोदय२१।१२, स्वर्णगौरीव्रत, आश्ले.B
४	मं	२५	५०	१६	१	शत	७	२५	८	३९	शो	५४	१०	२७	२१	बा	२५	५०	३३	४३	५	४१	१९	१०	३१	७	१८	22	मी.२६।५६	३	५	३५	९	१६	सायन सिंहेभानुः१६।२६
५	बु	२४	३३	१५	३१	पूभा	८	१८	९	१	अति	५०	१०	२५	४६	तै	२४	३३	३३	३८	५	४२	१९	९	१	८	१९	23	मीन	३	६	३२	२५	१७	नागपंचमी मरुस्थले बंगेऽपि, **कर्कमें बुध**२०।५२, रा.श्रावणारम्भः,C
६	गु	२२	७	१४	३३	उभा	८	०	८	५४	सु	४५	१२	२३	४७	व	२२	७	३३	३८	५	४२	१९	९	२	९	२०	24	मीन	३	७	२९	४२	१८	भ.१४।३३से २५।४९तक, सर्वार्थसिद्धियोग ८।५४से
७	शु	१८	२५	१३	५	रे	६	३०	८	११	धृ	३९	१५	२१	२५	बव	१८	२५	३३	३२	५	४३	१९	८	३	१०	२१	25	मे.८।१९	३	८	२७	०	१९	**पंचकस**.८।१९, पुष्यभेबुधः१०।५१, स्वा.अखण्डानन्दज., कॉवडD
८	शा	१३	४०	११	११	अ	३	५२	७	१६	शू	३२	२७	१८	४२	कौ	१३	४०	३३	३२	५	४३	१९	८	४	११	२२	26	मेष	३	९	२४	९	१९	
९	र	७	५२	८	५३	भर	०/५५	१३/४२	५/२८	४९/१	गंड	२४	५२	१५	४१	गर	७	५२	३३	२७	५	४४	१९	७	५	१२	२३	27	वृ.११।२२	३	१०	२१	३८	२१	भद्रा १९।३३से
१०	चं	१	१५	६	१४	रो	५०	३३	२५	५७	वृ	१६	३८	१२	२३	वि	१	१५	३३	२७	५	४४	१९	७	६	१३	२४	28	वृष	३	११	१८	५९	२३	भ.६।१४तक, **कामिकाएकादशीव्रत** स्मार्त्त, पूफा.१शनिः८।२०E
११	चं	५४	३	२७	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	एकादशीक्षयः
१२	मं	४६	२७	२४	२०	मृग	४५	०	२३	४५	ध्रु	७/५१	५५/२	८/२१	५५/२२	कौ	२०	१३	३३	२३	५	४५	१९	६	७	१४	२५	29	मि.२।५१	३	१२	१६	२२	२३	
१३	बु	३८	५३	२१	१८	आ	३९	२५	२१	३१	ह	५०	१०	२५	४९	गर	१२	४०	३३	२३	५	४५	१९	६	८	१५	२६	30	मिथुन	३	१३	१३	४५	२४	भ.२१।१८से, **प्रदोषव्रत, मासशिवरात्रिव्रत**, श्रीगङ्गाजलसे रुद्राभिषेकF
१४	गु	३१	३०	१८	२२	पुन	३४	७	१९	२५	वज्र	४१	३५	२२	२४	वि	५	१०	३३	१८	५	४६	१९	५	९	१६	२७	31	क.३।५६	३	१४	११	९	२४	भ.७।५०तक, आश्लेषायां बुधः१९।३, शब्बेमिराज, स.सि.योग,G
३०	शु	२४	४७	१५	४२	पु	२९	२८	१७	३४	सि	३३	३५	१९	१३	ना	२४	४७	३३	१२	५	४७	१९	४	१०	१७	२८	1	कर्क	३	१५	८	३३	२६	अन्वाधान, **हरियाली३० अमापुण्यः अगस्त ८ ता.३१, मघासिंह**H

A पु.चं.चं.वर्षावाहन मूषक मन्दवृष्टि B शुक्रः१६।०, कॉवडधारणमुहूर्त C श्रीतिलक व चन्द्रशेखरजयंती, कॉवडधारणमुहूर्त D धारणमुहूर्त, स.सि.योग,अ.सि.यो.८।१९तक

E रोहिणीव्रत, कॉवडधारणमुहूर्त, स.सि.योग,अ.सि.यो.२५।५७से F हर-हर महादेव, बम-बम भोले G अ.सि.यो.१९।२५से H में शुक्र १२।१४, श्रीतिलकपुण्यः,**सूर्यग्रहणम्**

श्रावण कृ.८ शनौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता. २६जुलाई

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	०	४	३	८	३	४	९	३
अं.	९	१२	२०	४	२१	२२	१३	२५	२५
क.	२४	१७	४४	५८	२४	१६	४	२२	२२
वि.	१९	४	२६	३६	५१	२६	२७	५७	५७
गति	५७/१९	८५९/०	३६/५७	१२७/१	६/५६	७३/४४	६/४५	३/११	३/११
स्थिति	मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	मा./अ.	व./उ.	मा./उ.	मा./उ.	व./अ.	व./अ.
नक्षत्रचार	पुष्य २	अश्वि ४	पू.फा. ३	पुष्य १	पू.षा. ३	आश्ले. २	मघा ४	धनि. १	आश्ले. ३
नाड़ी	जला	वायु	जला	जला	सौम्या	अमृता	अमृता	अमृता	अमृता



कु.ता.१ अगस्त श्रावण कृ.३० शुक्रे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट



सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह
३	३	४	३	८	३	४	९	३	रा.
१५	९	२४	१७	२०	२९	१३	२५	२५	अं.
८	२४	२६	३३	४४	३९	४५	३	३	क.
३३	४४	५५	५५	३७	०	३०	५२	५२	वि.
५७/२६	८५९/३१	३७/२६	१२२/५७	६/१९	७३/४६	६/५८	३/११	३/११	गति
मा./उ.	मा./अ.	मा./उ.	मा./अ.	व./उ.	मा./उ.	मा./उ.	व./अ.	व./अ.	स्थिति
पुष्य ४	पुष्य २	पू.फा. ४	आश्ले. १	पू.षा. ३	आश्ले. ४	पू.फा. १	धनि. १	आश्ले. ३	नक्षत्रचार
जला	जला	जला	अमृता	सौम्या	अमृता	जला	अमृता	अमृता	नाड़ी

।। फलम् ।।

शनिवारायदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देशभङ्गश्च वह्निदाहो महर्घता।। अमेरिका, ब्रिटेन, ग्रीनलैण्ड, स्पेन, मोरक्को अल्जीरिया, नाईजीरिया, अफ्रीकादि देशोंमें प्राकृतिकआपदा से क्षति होगी। ईशान देश असम, नेपाल, मंगोलिया, जापान तथा चीनमें अग्निदाह, युद्धोत्पात की त्रासदी झेलनी पड़ सकती है। **यदैक मासे ग्रहण जायते चन्द्र सूर्ययोः। शस्त्र कोपै क्षयं यान्ति तदा भूपा परस्परम्।।** मन्त्रिस्तरके नेता एक दूसरे को कुदृष्टि से देखेंगे। **बाजारभाव-** चतुर्ग्रही योग के चलते भावोंमें अकल्पित उलटफेर की सम्भावना जानें। सट्टा, शेयर, सर्राफा में दो तरफा चाल चलेगी। **दैत्यगुरुर्यदा सिंहे हेमरक्तं चतुष्पदः। धान्यानि च महार्घाणि नाशं याति च वारिदः।।** सुवर्ण, लालवस्तु, चौपाये पशु, वाहन, सभी अनाज मंहगे होंगे। व्यापार सोच विचारकर करें। **मौसम-** पक्षारम्भ और अन्तमें वर्षा विशेषके योग हैं। **उदयास्तमये मार्गे वक्रयुक्ते च संक्रमे। जलराशि गताः खेटा महावृष्टिप्रदाःसदा।।** शिवरात्रि के अवसर पर आकाश मेघाच्छादित रहेगा। कहीं बादलफाड़ वर्षा हो, तो कहीं बिल्कुल न हो। **शकुनविचार- पुरवा बादर पश्चिम जाय। वासे वृष्टि अधिक बरसाय।।** [illegible] जाय।। **ग्रहदर्शन-** सायं पश्चिमी क्षितिज के ऊपर शुक्र, मंगल, शनि को श्रृंखलाबद्ध देख सकते हैं। गुरु पूर्वीकपाल में शोभा बढ़ाता रहेगा। बुध अस्त है।

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० श्रावण शुक्ल पक्ष ९

ता. २ से १६ अगस्त सन् २००८ ई. तक।
वर्षाऋतु, रविदक्षिणायने, उत्तर गोले।। केतकीअहर्गणः५९६३

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	रा. श्रा	प्र. श्रा	मु. रज्ज	अंग्रेजी	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गते	
१	श	१९	८	१३	२६	श्ले	२५	५३	१६	८	व्य	२६	२७	१६	२२	वव	१९	८	३३	१२	५	४७	१९	४	११	१८	२९	2	सिं१६।८	३	१६	५	५९	५७/३६	इष्टिः,नक्तव्रतारम्भः,**चन्द्रदर्शनमु.३०,आश्ले.रविः१५।३२**,स्त्री-स्त्रीA
२	र	१४	४०	११	४०	म	२३	३२	१५	१३	वरि	२०	२०	१३	५६	कौ	१४	४०	३३	७	५	४८	१९	३	१२	१९	१	3	सिंह	३	१७	३	२५	२८	सिंधारा२, सावान ८ मुस.
३	चं	११	४७	१०	३१	पूफा	२२	४७	१४	५५	परि	१५	३५	१२	२	गर	११	४७	३३	७	५	४८	१९	३	१३	२०	२	4	क.२१।१	३	१८	०	५३	२८	भ.२२।१७से, **हरियालीतीज**, मधुश्रवा-सिंधारातीज, वरद्४, उफायांB
४	मं	१०	३५	१०	३	उफा	२३	४५	१५	१९	शि	१२	८	१०	४०	वि	१०	३५	३३	२	५	४९	१९	२	१४	२१	३	5	कन्या	३	१८	५८	२१	२९	भ.१०।३तक, विनायकचतुर्थीव्रत, श्रवणतप जैन
५	बु	११	१५	१०	१९	ह	२६	३२	१६	२६	सि	१०	१०	९	५३	बा	११	१५	३३	०	५	४९	१९	१	१५	२२	४	6	तु२१।१८	३	१९	५५	५०	२९	**नागपंचमीदेशाचारे** ॐ कुरुकुल्ये हूँ फट् स्वाहा, स.सि.यो.१६।२६तकC
६	गु	१३	३७	११	१७	चि	३०	५५	१८	१२	सा	९	३३	९	३९	तै	१३	३७	३२	५५	५	५०	१९	०	१६	२३	५	7	तुला	३	२०	५३	१९	३०	**वर्णश्रृयालपष्ठी, मघा सिंह में बुध ११।२३**, टैगोरपुण्यः
७	शु	१७	३५	१२	५२	स्वा	३६	४५	२०	३२	शुभ	१०	१०	९	५४	व	१७	३५	३२	५६	५	५०	१९	०	१७	२४	६	8	तुला	३	२१	५०	४९	३१	भ.१२।५२से २५।५३तक, शीतला७सिंध, श्रीतुलसीदासजयंती, वक्रीD
८	श	२२	३७	१४	५४	वि	४३	३०	२३	१५	शु	११	४०	१०	३१	वव	२२	३७	३२	५०	५	५१	१८	५९	१८	२५	७	9	वृ.६।३४	३	२२	४८	२०	३२	श्रीदुर्गाष्टमीसिंध, **कन्यामें मंगल २६।५२**, मेला नयनादेवीचिन्तपूर्णीE
९	र	२८	२५	१७	१३	अनु	५०	५०	२६	११	ब्र	१३	४७	११	२२	कौ	२८	२५	३२	४४	५	५१	१८	५८	१९	२६	८	10	वृश्चिक	३	२३	४५	५२	३३	**बुधोदय पश्चिमायां २६।४६**
१०	चं	३४	२०	१९	३६	ज्ये	५८	५	२९	६	ऐं	१६	५	१२	१८	तै	१	२२	३२	४३	५	५२	१८	५७	२०	२७	९	11	ध२९।६	३	२४	४३	२५	३४	
११	मं	३९	५५	२१	५०	मू	६०	०	-	-	वै	१८	१५	१३	१०	व	७	८	३२	४०	५	५२	१८	५६	२१	२८	१०	12	धनु	३	२५	४०	५९	३४	भ.८।४३से २१।५०तक, **पवित्राएकादशीव्रत**(सबका),पूफायांशुक्र८।१४
१२	बु	४४	४२	२३	४६	मू	४	५०	७	४९	वि	१९	५	१३	३०	वव	१२	१७	३२	३७	५	५३	१८	५६	२२	२९	११	13	धनु	३	२६	३८	३३	३६	श्रीविष्णु पवित्रार्पणम्
१३	गु	४८	३०	२५	१७	पूषा	१०	४७	१०	१२	प्री	२०	४७	१४	१२	कौ	१६	३५	३२	३५	५	५३	१८	५५	२३	३०	१२	14	म१६।४१	३	२७	३६	९	३७	**प्रदोषव्रत**, पूफायां बुधः१८।४१
१४	शु	५०	५७	२६	१७	उषा	१५	३३	१२	७	आ	२०	४७	१४	१३	गर	१९	४२	३२	३०	५	५४	१८	५४	२४	३१	१३	15	मकर	३	२८	३३	४६	३८	भ.२६।१७से,**स्वतन्त्रतादि.६२वाँ**, ध्वजारोहणं, स.सि.यो.१२।७से,F
१५	श	५२	१०	२६	४६	श्र	१९	८	१३	३३	सौ	१९	४८	१३	४९	वि	२१	३३	३२	२८	५	५४	१८	५३	२५	१	१४	16	कु२६।१	३	२९	३१	२४	४०	भ.१४।३१तक, अन्वा., **पंचकप्रा.२६।१**, पूर्णिमाव्रत, **रक्षाबन्धन(राखी)** **मघासिंहमें सूर्य १७।२३**,संक्रांतिमु.३०,बङ्गव सौरभाद्रपदारम्भः,G

A चं.चं.व वाहन अश्वसे वर्षा कम रह B भौमः१८।२४ C श्रीकल्किजयंती, अमरनाथयात्रारम्भः, श्रावणोपाकर्म हस्तभ D पूषा.२ गुरुः१८।३९ E (हिमा.), क्रांतिदिवस F हयग्रीवोत्पत्ति, भदंनीमन्दिर दर्शनपूजन, तेजीमन्दीसूचकांक२४७५ G ऋषितर्पण, श्रीगायत्रीजयंती, श्रीअमरनाथदर्शन, संस्कृतदिवस, बंग्वालउत्सव उत्तराखण्ड, स्त्री-पु.चं.चं.व.वाहन चातक अच्छी वर्षा हो, स.सि.यो.१३।३३तक, चन्द्रग्रहणम्

श्रावण शु.८ शनौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता.९ अगस्त

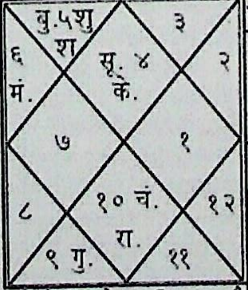
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	६	४	४	८	४	४	९	३
अं.	२२	२४	२९	३	१९	९	१४	२४	२४
क.	४८	२८	२६	१९	५७	२९	४२	३८	३८
वि.	२०	५९	२४	३३	३१	३	१०	२६	२६
गति	५७	७६६	३७	१११	५	७३	७	३	३
	३२	१६	४०	३६	१६	४२	१३	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	आश्ले. २	विशा. २	उफा. १	मघा १	पूषा. २	मघा ३	पूफा. १	धनि. १	आश्ले. ३
नाड़ी	अमृता	चण्डा	नीरा	अमृता	मिश्रा	अमृता	जला	अमृता	अमृता



॥ फलम् ॥

एक राशौ यदा यान्ति चत्वारःपंचखेचराः। प्लावयन्ति महीसर्वा रुधिरेण जलेन वा।। विश्व के किन्हीं भागोंमें प्राकृतिक आपदा, युद्धोत्पात तथा भयातंक से दुखित प्रजा पलायन करेगी। **एक मास दो गहना, राजा मरै कि सेना।।** भारतीय राजनीति में उठापटक के चलते प्रभावी राजनेता तथा प्रादेशिक सरकार को समय सानुकूल नहीं। पश्चिमोत्तरीय सीमाओं पर चौकसी बरतनी चाहिए। कश्मीर समस्या का समाधान अभी सम्भव नहीं। बाह्य हस्तक्षेप घातक होगा। **बाजारभाव-** चन्द्रदर्शन तथा सिंह की बैठी संक्रांतिमु.३०साम्यार्घकारक है। सिंह का बुध सभी अनाज, सोना, देवदारु, लकड़ी आदि में तेजी करेगा- **सिंह राशौ बुधःस्याच्चेत् सर्वधान्य महर्घता। सुवर्णं देवदारुश्च महर्घं प्रभवेत्तदा।।** कन्या का मंगल लालचन्दन, वस्त्राभूषण आदि में तेजी करेगा। पूर्वार्ध के बने भाव पश्चान्त में पलट सकते हैं। राखी के आसन्न सट्टा, शेयर व सर्राफा में भारी इजाफा सम्भव है। **मौसम-** कभी आकाश स्वच्छ तो कभी बादलों से घिरा रहेगा। वर्षा, बिजली, गाज, बडम्बर के साथ बुध ता.१० को पश्चिम में उदय होगा- **नोत्पात परित्यक्तःकदाचिदपि चन्द्रजो वज्रत्युदयम्।** जलदहन पवनभय कृद्धान्यर्घ क्षयःविवृद्धयैर्वा।। **ग्रहदर्शन-** सायं पश्चिमी क्षितिज में शुक्र, शनि, बुध और मंगल को स्पष्ट देख सकते हैं। पूर्व दिशा में गुरु दृश्य रहेगा। आकाश में ग्रहमाला के दर्शन भी होंगे।

कु.ता.१६ अगस्त श्रावण शु.१५ शनौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	३	९	५	४	८	४	४	९	३
अं.	२९	११	३	१५	१९	१८	१५	२४	२४
क.	३१	४	५०	४८	२३	५	३३	१६	१६
वि.	२४	२४	५९	५४	५०	१	१२	१०	१०
गति	५७	७६५	३७	१०१	४	७३	७	३	३
	४०	१४	५९	५	१०	४१	२३	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	आश्ले. ४	श्र. ३	उफा. ३	पूफा. १	पूषा. २	पूफा. २	पूफा. १	धनि. १	आश्ले. ३
नाड़ी	अमृता	अमृता	नीरा	जला	मिश्रा	जला	जला	अमृता	नीरा

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० भाद्रपद कृष्ण पक्ष १० — **ता. १७ से ३० अगस्त सन् २००८ ई. तक।**

वर्षाऋतु, रविदक्षिणायने, उत्तर गोले।। केतकीअहर्गण:५९७८

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि	अस्त घं.	अस्त मि	रा.श्रा	प्र.भा	मु.सा	अंग्रेजी	चन्द्र संचार स्टे.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]
१	र	५२	५	२६	४५	ध	२१	२३	१४	२८	शो	१७	४५	१३	१	बा	२२	७	३२	२२	५	५५	१८	५२	२६	२	१५	17	कुम्भ	४	०	२९	४	५६/४०
२	चं	५०	४७	२६	१४	शत	२२	२७	१४	५४	अति	१४	४५	११	४९	तै	२१	२५	३२	२०	५	५५	१८	५१	२७	३	१६	18	कुम्भ	४	१	२६	४४	४२
३	मं	४८	२५	२५	१८	पूभा	२२	२२	१४	५३	सु	१०	४५	१०	१४	व	१९	३५	३२	१५	५	५६	१८	५०	२८	४	१७	19	मी८।५४	४	२	२४	२६	४३
४	बु	४५	१०	२४	०	उभा	२१	२०	१४	२८	घृ	६ / ०	२ / ३०	८ / ६	२१ / ९	बव	१६	४८	३२	१३	५	५६	१८	४९	२९	५	१८	20	मीन	४	३	२२	९	४४
५	गु	४१	५	२२	२३	रे	१९	२५	१३	४३	शू	५४	२७	२७	४४	कौ	१३	७	३२	७	५	५७	१८	४८	३०	६	१९	21	मे१३।४३	४	४	१९	५३	४७
६	शु	३६	२५	२०	३१	अ	१६	५३	१२	४२	वृ	४७	५३	२५	६	गर	८	४५	३२	५	५	५७	१८	४७	३१	७	२०	22	मेष	४	५	१७	४०	४८
७	श	३१	२०	१८	२६	भर	१३	४२	११	२७	ध्रु	४०	५०	२२	१८	वि	३	४८	३२	०	५	५८	१८	४६	१	८	२१	23	वृ१७।६	४	६	१५	२८	५०
८	र	२५	३३	१६	११	कृ	१०	१०	१०	२	व्या	३३	३५	१९	२४	कौ	२५	३३	३१	५८	५	५८	१८	४५	२	९	२२	24	वृष	४	७	१३	१८	५२
९	चं	१९	४०	१३	५१	रो	६ / २	१५ / १७	८ / ६	२९ / ५४	ह	२६	२	१६	२४	गर	१९	४०	३१	५२	५	५९	१८	४४	३	१०	२३	25	मि१९।४१	४	८	११	१०	५४
१०	मं	१३	४२	११	२८	मृग	५८	१८	२१	१८	वज्र	१८	३०	१३	२३	वि	१३	४२	३१	५०	५	५९	१८	४३	४	११	२४	26	मिथुन	४	९	९	४	५५
११	बु	७	४७	९	७	पुन	५४	३०	२७	४८	सि	१०	५७	१०	२३	बा	७	४७	३१	४५	६	०	१८	४२	५	१२	२५	27	कर२२।१०	४	१०	६	५९	५७
१२	गु	२	८	६	५१	पु	५१	७	२६	२७	व्य	३ / ५६	४० / ४५	७ / २८	२८ / ४२	तै	२	८	३१	४३	६	०	१८	४२	६	१३	२६	28	कर्क	४	११	४	५६	५९
१३	गु	५६	५३	२८	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०
१४	शु	५२	१७	२६	५६	श्ले	४८	२०	२५	२१	परि	५०	१७	२६	८	वि	२४	३५	३१	३८	६	१	१८	४०	७	१४	२७	29	सिं२५।२१	४	१२	२	५५	५८/१
३०	श	४८	३८	२५	२८	म	४६	२८	२४	३६	शि	४४	३८	२३	५२	च	२०	२८	३१	३५	६	१	१८	३९	८	१५	२८	30	सिंह	४	१३	०	५६	२

- इष्टिः, **शनि:पश्चिमास्त:१५।१३**, अशून्यशयनव्रत-श्रवणतपपूर्ण
- भीमचण्डी विन्ध्या जयंती A१४।५३से
- भ.१३।४६से २५।१८तक, **कज्जलीतृतीया**,सातूड़ीतीज, स.सि.यो.A
- **वहुलाचौथ, चतुर्थीव्रत** चन्द्रोदय २०।५०
- **पंचकस.१३।४३, रक्षापंचमी**, हलचन्दनषष्ठी, सर्वार्थसिद्धियोग
- भ.२०।३१से, **ललहीछटिव्रत**चन्द्रोदय२२।६, सा.कन्यायांभानु:२३।३३B
- भ.७।२९तक, श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत स्मार्त्त चन्द्रोदय२२।५३,रा.मासC
- **श्रीकृष्णजन्माष्टमी** जयंतीसमायोगेन व्रतोत्सव वैष्णव, चन्द्रोदय२३।४७D
- भ.२४।३९से, गोगानवमी,नन्दोत्सवमे.नन्दगाँव, कन्यामें शुक्र२२।३१E
- भद्रा ११।२८तक
- **अजाएकादशीव्रत** (सबका), मदरटैरेसा जयंती
- भ.२८।४५से, **प्रदोषव्रत**, वत्सद्वादशी, वछवारस, पर्यूषणपर्वप्रा.जैनF
- त्रयोदशीक्षयः कलियुगादिः
- भद्रा १५।५१तक, अघोराचौदस, मेला कश्मीरयात्रा(कश्मीर)
- अन्वा.,**पिठौरी३०**,कुशोत्पाटिनी ॐहूँफट्स्वाहामन्त्रसे, सतीपूजा अग्रवंशे लोहार्गलयात्रा,पूफायांरवि:१३।२२,स्त्री-स्त्री,चन्द्र-सूर्य वर्षावा.नाग वायुG

B शरदऋतुप्रा.,उफायां बुधः२२।४०,उफायांशुक्रः२९।१९,स.सि.यो.१२।४२तक C भाद्रपदप्रा.,द्रोणमेला दनकौरका शुरु D कन्यामें बुध२७।३७,रोहिणीव्रत,पूफा.२शनिः२९।२४,दूर्वाष्टमीव्रत,आद्यकालीज.,सन्त ज्ञानेश्वरजयंती,गुरुजम्भेश्वरज.,मन्वादिः E हस्तेभौमः२१।१७,अगस्तोदय१७।४,स.सि.यो.,अ.सि.यो.८।२९से F स.सि.यो.व अ.सि.यो.२६।२७तक G वेग,वर्षाधिक्य,कल्पसूत्रपाठजैन,मे.सुधरेशाहदिल्ली,शनीचरीमावस,मन्वादिः

भाद्रपद कृ.८ रवि प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता.२४ अगस्त

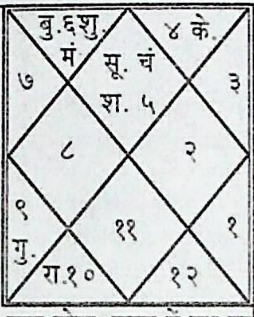
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	१	५	४	८	४	४	९	३
अं.	७	७	८	२८	१८	२७	१६	२३	२३
क.	१३	१८	५६	३७	५५	५४	३२	५०	५०
वि.	१८	२८	२०	२३	१३	१९	४०	४४	४४
गति	५७ / ५२	८५४ / ९	३८ / २५	८९ / ३९	२ / ४७	७३ / ३८	७ / ३१	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
स्थिति	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	मघा ३	कृति.४	उफा.४	उफा.१	पूषा.२	उफा.१	पूफा.१	धनि.१	श्ले.३
नाड़ी	अमृता	खण्डा	नीरा	नीरा	सौम्या	नीरा	जला	अमृता	अमृता



॥ फलम् ॥

रविन्दु शुक्रेज्यशशाङ्कपुत्राःयदैक राशौसाहिता भवति। मेघाप्रवर्षन्ति महर्घतास्यात्प्रजा विनाशा दिशिनैऋत्याम्॥ मेघगर्जन, विद्युत्पात, न्यूनाधिक वर्षा, पश्चिमोत्तर सम्भागोंमें प्राकृतिक प्रकोप, युद्ध, भयातंक के चलते प्राणियोंकी क्षति संभव है। कश्मीर समस्या सिरदर्द बनेगी। गुजरात में अधिक कठिनाई हो सकती है। किंवा शान्ति प्रक्रिया को बल मिलेगा। विदेशी कूटनीतिज्ञोंकी कुचाल से बचे रहना चाहिये। **बाजारभाव-** तिथियोंकी ह्रास-वृद्धि का फल उत्तम है- **कृष्णपक्ष की तिथि घटे, शुक्ल पक्ष वढ़ जाय। एक चीज तो क्या वढ़े, सभी चीज वढ़ जाय॥** पदार्थोंकी वृद्धि से चालू मार्कीट का रुख नरम रहेगा। कन्या में बुध का फल छठे मास में सोना-चांदी, गुड, शक्कर आदि में विशेष लाभ का सूचक है। **कन्या राशि गते बुधे कांचनं शुद्ध शर्करा:। मासे षष्ठे ददेल्लाभ: पुन: सस्तोभविष्यति॥** किंवा सर्राफा, सट्टा, शेयरबाजार ऊँचा-नीचा कटेगा। **मौसम-** ग्रहचाल के हिसाब से कहीं वर्षाधिक्य, बाढ़, भूकम्प, झञ्झावात के कारण क्षति तो कहीं वर्षा गतिरोध, रोगोत्पात, चूहा, कातरा, विषाक्त जीवों का प्रकोप दुःख का कारण बनेगा। **ग्रहदर्शन-** सायं पश्चिमी क्षितिज में मंगल, बुध, शुक्र तथा खमध्य में गुरु आकाश की शोभा वढ़ायेगा। **श्रीकृष्णजन्माष्टमी-** व्रतोत्सव रविवार २४ अगस्त रोहिणीनक्षत्र जयंती समायोगेन अत्यन्त शुभ फलप्रद मान्य रहेगा।

कु.ता.३०अगस्त भाद्रपद कृ.३० शनौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	४	५	५	८	५	४	९	३
अं.	१३	२	१२	७	१८	५	१७	२३	२३
क.	०	२२	४७	१३	४१	१६	१७	३१	३१
वि.	५६	५७	४३	३४	१७	१	४९	३९	३९
गति	५८ / २	८२२ / ५३	३८ / ३३	८० / ४८	१ / ३९	७३ / ३५	७ / ३२	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
स्थिति	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	मघा ४	मघा १	हस्त १	उफा.४	पूषा.२	उफा.३	पूफा.२	धनि.१	श्ले.३
नाड़ी	अमृता	अमृता	सौम्या	नीरा	सौम्या	नीरा	जला	अमृता	अमृता

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११ — ता. ३१ अगस्त से १५ सितम्बर सन् २००८ ई. तक।

शरदृतु, रविदक्षिणायने, उत्तर गोले।। केतकीअहर्गण:५९९२

तिथि	वार	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि	अस्त घं.	मि	रा.भा	प्र.श्रा	मु.सा	अंग्रेजी	चन्द्र संचार स्टे.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट (प्रात:५घं३०मि) रा.	अं.	क.	वि.	पं.घं.	भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में है
१	र	४६	२	२४	२७	पूफा	४५	४०	२४	१८	सि	२९	४७	२१	५७	किं	१७	२०	३१	३०	६	२	१८	३८	९	१६	२९	31	सिंह	४	१३	५८	५८	५८/३	इष्टि:. नक्तव्रतसमाप्त, स.सि.यो.२४।१८से
२	चं	४४	५०	२३	५८	उफा	४६	१५	२४	३२	सा	३६	२	२०	२७	बा	१५	२८	३१	२७	६	२	१८	३७	१०	१७	३०	1	क.६।२१	४	१४	५७	१	५	सितम्बर१ता.३०,चन्द्रदर्शनमु.४५,हस्तेबुध:८।१,बाबारामदेवबीज.A
३	मं	४५	१०	२४	६	ह	४८	१७	२५	२१	शुभ	३३	३०	१९	२६	तै	१५	०	३१	२५	६	२	१८	३६	११	१८	१	2	कन्या	४	१५	५५	६	७	हरितालिकातीजव्रत,गौरीतृतीया,रमजान१रोजेशुरु,वराहवतार,श्रव.४B
४	बु	४७	०	२४	५१	चि	५१	५०	२६	४७	शु	३२	७	१८	५४	व	१६	५	३१	२०	६	३	१८	३५	१२	१९	२	3	तु.१४।४	४	१६	५३	१३	९	भ.१२।२९से२४।५१तक,श्रीगणेशचौथव्रत,पत्थरचौथचन्द्रदर्शननिषेधC
५	गु	५०	२५	२६	१३	स्वा	५६	५०	२८	४७	ब्र	३२	०	१८	५१	बव	१८	४२	३१	१५	६	३	१८	३३	१३	२०	३	4	तुला	४	१७	५१	२२	१०	ऋषिपंचमी, जैनसम्वत्सरी क्षमावाणीपर्व, पर्युषणपर्वारम्भ:
६	शु	५५	५	२८	६	वि	६०	०	-	-	ऐं	३२	५	१९	१३	कौ	२२	४५	३१	१०	६	४	१८	३२	१४	२१	४	5	वृ.२४।४०	४	१८	४९	३२	११	सूर्यषष्ठी, हलषष्ठी, श्रीबलरामज.,मे.ब्रजमण्डल, देवछटिमेलागौमतD
७	श	६०	०	-	-	वि	३	५	७	१८	वै	३४	३८	१९	५५	गर	२७	५५	३१	८	६	४	१८	३१	१५	२२	५	6	वृश्चिक	४	१९	४७	४३	१३	मुक्ताभरणसप्तमी, श्रीमहालक्ष्मीव्रतारम्भ:
७	र	०	४२	६	२२	अनु	१०	८	१०	८	वि	३६	४७	२०	४८	व	०	४२	३१	३	६	५	१८	३०	१६	२३	६	7	वृश्चिक	४	२०	४५	५६	१५	भ.६।२२से १९।३४तक K कु.संध्यापूजनारंभ,भगवतीदेवीपुण्य:
८	चं	६	४५	८	४७	ज्ये	१७	३०	१३	५	प्री	३९	५	२१	४३	बव	६	४५	३१	०	६	५	१८	२९	१७	२४	७	8	ध.१३।५	४	२१	४४	११	१६	श्रीराधाष्टमी व्रतोत्सव बरसाना, गुरुमार्गी:२०।२२, श्रीदधीच-स्वामीE
९	मं	१२	३७	११	९	मू	२४	३७	१५	५७	आ	४१	०	२२	३०	कौ	१२	३७	३०	५५	६	६	१८	२८	१८	२५	८	9	धनु	४	२२	४२	२७	१८	श्रीचन्दनवमी,श्रीनन्दा९महोत्सवउदासीनसं.लक्ष्मीव्रतस.पन्तजयंती,मार्गीF
१०	बु	१७	४५	१३	१२	पूषा	३१	०	१८	३०	सौ	४२	१३	२२	५९	गर	१७	४५	३०	५२	६	६	१८	२७	१९	२६	९	10	म.२५।१	४	२३	४०	४५	१९	भ.२५।५९से,नवलदुर्गेमे.रामदेवजी,तेजा-दशावतार१०,सुगन्धधूप१०जैन
११	गु	२१	४०	१४	४७	उषा	३६	५	२०	३३	शो	४२	२	२२	३४	वि	२१	४०	३०	४८	६	७	१८	२६	२०	२७	१०	11	मकर	४	२४	३९	४	२०	भ.१४।४७तक, पद्माएकादशीव्रत(सबका),दौलग्यारस(म.प्र.),फूलG
१२	शु	२४	५	१५	४५	श्र	३९	४०	२१	५९	अति	४१	१७	२२	३८	बा	२४	५	३०	४३	६	७	१८	२४	२१	२८	११	12	मकर	४	२५	३७	२४	२२	प्रदोषव्रत,हरिवासर:१३।२९तक,श्रीवामनज.,विजया व श्रवणद्वादशीH
१३	श	२४	४८	१६	३	ध	४१	३५	२२	४६	सु	३८	५३	२१	४१	तै	२४	४८	३०	३७	६	८	१८	२३	२२	२९	१२	13	कु.१०।२३	४	२६	३५	४६	२४	पंचकप्रा.१०।२३,चित्रा.बुध:७।४३,चित्रा.शुक्र:२३।२६,उफायांरवि:J
१४	र	२३	५५	१५	४२	शत	४१	५५	२२	५४	धृ	३५	१२	२०	१३	व	२३	५५	३०	३५	६	८	१८	२२	२३	३०	१३	14	कुम्भ	४	२७	३४	१०	२६	भ.१५।४२से२७।१२तक,अनन्त१४गणेशविसर्जन,सत्यव्रत,राष्ट्रभाषादि.
१५	चं	२१	२७	१४	४३	पूभा	४०	५०	२२	२८	शूल	३०	२०	१८	१६	बव	२१	२७	३०	३२	६	८	१८	२१	२४	३१	१४	15	मी.१६।३५	४	२८	३२	३६	२८	अन्वा.प्रौष्ठपदीपूर्णिमाश्राद्धमहालयप्रा.,चित्रा.भौम:९।४४,इन्जीनियर्सडेK

A रुणीचामेलाजैसलमेर,तैलाधारतपजैन B राहु:आश्ले.२केतु:२०।३१,हस्तेशुक्र:६।३३ C शिवाचतुर्थी,श्रीगणेशजन्मोत्सवारम्भ(महा) D शिक्षकदिवस,शान्तिदिवस E हरिदास-शिवानन्दजयंती,वि.साक्षरतादिवस F प्लूटो२१।१० G डोलमे.चारभुजाजीमेवाड़,विनोवाजयंती,कटिपरिवर्तनोत्सव: H ओनमपर्वकेरल,श्रीभुवनेश्वरिज.,स.सि.यो.२१।५९तक J ७।१४,स्त्री-पु.सू.चं.वाहनमंडूक वर्षाधिक्य,मटकीफोरडोंगालीलाबरसाना,पूभा.२हर्शल२३।३०

भाद्रपद शु.८ चन्द्रे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.८ सितम्बर

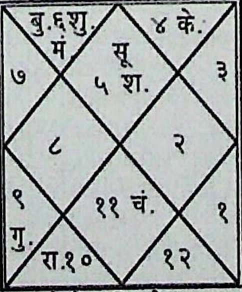
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	७	५	५	८	५	४	९	३
अं.	२१	२६	१८	१८	१८	१६	१८	२३	२३
क.	४४	१४	३७	१९	३३	१७	२५	३	३
वि.	११	१०	५०	५	९	५९	५२	२	२
गति	५८ १६	८५३ ३	३९ १०	६४ १२	० ८	७३ २९	७ ३३	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	मा. उ.	मा. अ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	पूफा.३	ज्ये.३	हस्त३	हस्त३	पूषा.२	हस्त२	पूफा.२	धनि.४	पूभा.२
नाड़ी	जला	वायु	सौम्या	सौम्या	सौम्या	सौम्या	जला	अमृता	अमृता



।। फलम् ।।

क्रूर पाप के मध्य में रवि के भौम अगार। राजनीति सह द्विन्द से नैतिक पतन विचार।। इस योग के चलते मास पर्यन्त राजनीति में अकल्पित उलटफेर होगा। गृहयुद्धके आसार बनेंगे। प्रभावी राष्ट्रनायक को समय सानुकूल नहीं। संवेदनशील महानगर एवं सीमावर्ती क्षेत्रों में चौकसी बरतनी चाहिये। पंचार्क वासरे रोगपीड़ा लोकेपु जायते। अन्तर्राष्ट्रीयजगत् में कुछ नये नियम बनाये जा सकते हैं। बाजारभाव- चन्द्रदर्शनमु.४५ एवं सप्तमी की वृद्धि मन्दी का लक्षण है। कन्या में शुक्र का फल- कन्या राशि गते शुक्रो सर्वसस्य विनश्यति। तत्र धान्य महार्घाणि शालिश्चैव विशेषत:।। खडी फसलों में हानि करेगा, अत: अनाज, दाल, चावल में तेजी होगी। गुड़, शक्कर, बूरा-बताशा, रसकश, तेल, मूंगफली, रूई, ऊनीवस्त्र, श्रृंगारसामग्री, सब्जियाँ तथा फलादि मार्कीट का रुख गरम हो सकता है। मार्गी गुरु उथल-पुथल करायेगा। सर्राफा, सट्टा, शेयरोंके कारोबारियों को सचेत रहना चाहिये। मौसम- सौम्यादि नाड़ियों में ग्रह तथा सिंह में सूर्य+शनि का योग प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्पादि महोत्पात, यत्र-तत्र बादलचाल, न्यूनाधिक वर्षा, पर्वतीयक्षेत्रोंमें झन्झावात का कारण बनेगा। शकुन विचार- भादोंकी सुदि पंचमी, स्वाति संजोगी होय। दोनों सुभ जोगै मिलै, मंगल बरती लोय।। ग्रहदर्शन- सायं पश्चिममें मंगल, बुध, शुक्र तथा खमध्यमें गुरु स्पष्ट देख सकते हैं।

कु.ता.१५सितम्बर भाद्रपद शु.१५चन्द्रे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	४	१०	५	५	८	५	४	९	३
अं.	२८	२३	२३	२४	१८	२४	१९	२२	२२
क.	३२	४१	१३	५३	३७	५२	१८	४०	४०
वि.	३६	३०	७	५७	३५	५	३५	४६	४६
गति	५८ २८	८२० ३	३९ ३१	४४ १३	१ २३	७३ २२	७ २९	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	उफा.१	पूभा.२	हस्त४	चित्रा१	पूषा.२	चित्रा१	पूफा.२	धनि.४	पूभा.२
नाड़ी	नीरा	नीरा	सौम्या	दहना	सौम्या	दहना	जला	अमृता	अमृता

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० आश्विन कृष्ण पक्ष १२ — **ता. १६ से २९ सितम्बर सन् २००८ ई. तक।**

शरदृतु, रविदक्षिणायने, उत्तरगोले।। केतकीअहर्गण:६००८

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में हैं

तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि.	अस्त घं.	अस्त मि	तारीखें रा.भा	प्र.आ	मु.रम	अंग्रेजी	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट (प्रात:५घं३०मि) रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	
१	मं	१७	४३	१३	१४	उभा	३८	३०	२१	३३	गंड	२४	२५	१५	५५	कौ	१७	४३	३०	२८	६	९	१८	२०	२५	१	१५	16	मीन	४	२९	३१	४	५८/२९	इष्टि:, प्रतिपदाश्राद्ध, **कन्यामें सूर्य** १७।२३,संक्रांतिमु.४५, वज्रA
२	बु	१२	५५	११	१९	रे	३५	१८	२०	१६	वृ	१७	४५	१३	१५	गर	१२	५५	३०	२५	६	९	१८	१९	२६	२	१६	17	मि२०।१६	५	०	२९	३३	३१	भ.२२।१३से, **पंचकस.**२०।१६, द्वितीया व तृतीया का श्राद्ध, B
३	गु	७	२५	९	८	अ	३१	२७	१८	४५	ध्रु	१०	२८	१०	२१	वि	७	२५	३०	२०	६	१०	१८	१८	२७	३	१७	18	मेष	५	१	२८	४	३४	भ.९।८तक, **चतुर्थीव्रत** श्राद्ध, चन्द्रोदय २०।५, स.सि.यो.१८।४५तक
४	शु	१	३०	६	४६	भर	२७	२३	१७	७	व्या	२/५५	५०/७	७/२८	१८/१३	बा	१	३०	३०	१५	६	१०	१८	१६	२८	४	१८	19	वृ२२।४२	५	२	२६	३८	३६	**तुला में शुक्र प्र.** १०।१५, पंचमी का श्राद्ध
५	शु	५५	२७	२८	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	पंचमीक्षय:
६	श	४९	२८	२५	५७	कृ	२३	१२	१५	२७	वज्र	४७	२८	२५	९	गर	२२	२८	३०	१३	६	१०	१८	१५	२९	५	१९	20	वृष	५	३	२५	१४	३८	भ.२५।५७से, पूफा.३शनि१८।२९, षष्ठीका श्राद्ध, स.सि.यो.व अC
७	र	४३	४२	२३	४०	रो	१९	१२	१३	५२	सि	३९	५७	२२	२०	वि	१६	३५	३०	७	६	११	१८	१४	३०	६	२०	21	मि२५।१९	५	४	२३	५२	४०	भ.१२।४९तक, सप्तमी का श्राद्ध, **पूर्वोदय शनि:**२७।४१
८	चं	३८	२३	२१	३२	मृग	१५	३५	१२	२५	व्य	३२	५०	१९	१९	बा	११	२	३०	५	६	११	१८	१३	३१	७	२१	22	मिथुन	५	५	२२	३२	४३	अष्टमीका श्राद्ध, जीवित्पुत्रिकाव्रत, सा.तुलायांभानु:२१।१६, रवि D
९	मं	३३	२७	१९	३५	आ	१२	२०	११	८	वरि	२६	०	१६	३६	तै	५	५३	३०	०	६	१२	१८	१२	१	८	२२	23	कर२८।२०	५	६	२१	१५	४५	**मातृनवमी**, सौभाग्यवतीनांश्राद्ध, ए.आश्विनप्रारम्भ, इबादतरातमुस.
१०	बु	२९	१२	१७	५३	पुन	९	४०	१०	४	परि	१९	४२	१४	५	व	१	२०	२९	५८	६	१२	१८	११	२	९	२३	24	कर्क	५	७	२०	०	४७	भ.६।४४से १७।५३तक, दशमीश्राद्ध, **वक्रीबुध:**२३।१४, स्वात्यांशुक्रE
११	गु	२५	३०	१६	२५	पु	७	३५	९	१५	शि	१३	५०	११	४५	बा	२५	३०	२९	५२	६	१३	१८	१०	३	१०	२४	25	कर्क	५	८	१८	४७	५०	इन्दिराएकादशीव्रत(सबका), श्राद्धं, **तुलामें मंगल** ११।६, स.सि.F
१२	शु	२२	३३	१५	१४	श्ले	६	१०	८	४१	सि	८	३३	९	३८	तै	२२	३३	२९	४८	६	१३	१८	८	४	११	२५	26	सिं८।४१	५	९	१७	३७	५१	**प्रदोषव्रत**, सन्यासीनां द्वादशीश्राद्ध, जुमातुलविदा, **हस्तेरवि:**२२।४९G
१३	श	२०	२०	१४	२१	म	५	३०	८	२५	सा	३/५१	५२/५०	७/३०	४६/९	व	२०	२०	२९	४५	६	१३	१८	७	५	१२	२६	27	सिंह	५	१०	१६	२८	५४	भ.१४।२१से२६।५तक, तेरसका श्राद्ध, पितृश्राद्ध, विश्वपर्यटनदिवसH
१४	र	१८	५७	१३	४९	पूफा	५	३७	८	२९	शु	५६	३२	२८	५१	श	१८	५७	२९	४०	६	१४	१८	६	६	१३	२७	28	क.१४।३६	५	११	१५	२२	५६	विषजलाग्नि शस्त्रादिदुर्मरण श्राद्ध, चौदसका श्राद्ध, स.सि.यो.८।२९सेK
३०	चं	१८	४०	१३	४२	उफा	६	४५	८	५६	ब्र	५४	७	२७	५३	ना	१८	४०	२९	३७	६	१४	१८	५	७	१४	२८	29	कन्या	५	१२	१४	१८	५७	अन्वा.,**सर्वपितृ३०**,श्राद्ध तर्पञ्च पितरविसर्जन, श्राद्धमेला गयाजीM **सोमवती मावस विशेष पर्वदिन**

A व सौर आश्विन्यारम्भ:,पितरपक्षारम्भ:,स.सि.यो.२१।३३तक B **श्रीविश्वकर्माजयंती**,श्रीहनुमानपोद्दारज.,तेजीमन्दीसूचकांक १४३२ C सि.यो.१५।२७से, **रोहिणीव्रत** D दक्षिणगोले,दैत्योंका दिनोदय देवोंका सन्ध्यांश,स.सि.यो.व अ.सि.यो.१२।२५तक E २१।७ F यो.व अ.सि.यो.९।१५तक G स्त्री-स्त्री,सु.चं.वर्षावा.महिष उत्तमवृष्टि: H शब-ए-कद्र K श.भगतसिंहज.,देवीकात्यायनीज. M कुरुक्षेत्र व पिण्डारा

आश्विन कृ.८ चन्द्रे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.२२सितम्बर || फलम् || **कु.ता.२९ सितम्बर आश्विन कृ.३० चन्द्रे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट**

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	२	५	५	८	६	४	९	३
अं.	५	२	२७	२८	१८	३	२०	२२	२२
क.	२२	३४	५०	३४	५१	२५	१०	१८	१८
वि.	३२	४५	५२	२४	१७	२३	४२	३१	३१
गति	५८ ४३	८४६ ५०	३९ ५४	११ २१	२ ४२	७३ १६	७ २३	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	उफा.३	मृग.३	चित्रा.१	चित्रा.१	पूषा.२	चित्रा.४	पूफा.३	श्रव.४	पुष्य.१
नाड़ी	नीरा	दहला	दहला	दहला	सौम्या	दहला	जला	अमृता	अमृता



यदा दैत्यगुरुश्चैव तुला राशि प्रवर्तते। मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किंचित्किंचिद्विरोधकृत्।। विश्व के किन्हीं भागों में कुशलक्षेम आरोग्यता से जनता सुख-शान्ति का अनुभव करेगी तो किंवा वैर-विरोध के बढ़ते सामाजिक, राजनीतिक तथा प्राकृतिक महोत्पात-भयातंक से चौतरफा त्राहि-त्राहि मचेगी। पश्चिम के देशोंमें युद्ध का षड्यन्त्र रचा जायेगा। प्रभावी राजनेता को समय सानुकूल नहीं। सिंह का शनि दिल्ली के लिये परेशानी का कारण बन सकता है- **जो शनि सिंहा करसी संग। तो गढ़ दिल्ली होसी भंग।।** इसका फल विगत वर्ष भी परिलक्षित हुआ था। **बाजारभाव-** प्रतिपदा में सूती कन्या संक्रांति मु.४५ मन्दीकारक है। तुला का मंगल तेजी करेगा- **भूमिपुत्रस्तुलाजात: सर्वधान्य महर्घता। माषा मुग्दास्तथा सूत्रं कार्पासादि विशेषत:।।** सभी अनाज, दाल, चावल, मेवा, मिष्ठान्न, रसकश, घी, तेल आदि में सामान्य तथा उड़द, मूंग, सूत, कपास, वस्त्र, निर्माण-श्रृंगार सामग्री में विशेष तेजी सम्भव है। वक्री बुध उलटफेर करा देता है। **मौसम-** ग्रहचाल के हिसाब से बादलोंकी लुका-छिपी चलेगी। किंवा न्यूनाधिक वर्षा, आंधी-तूफान के कारण क्षति होगी। सुदूर दराजके पर्वतीय क्षेत्रोंमें भूकम्पादि महोत्पात की आशंका जानें। **ग्रहदर्शन-** प्रदोष में पश्चिमनत् बुध, मंगल, शुक्र तथा शिरोभाग में गुरु को स्पष्ट देख सकते हैं। ता.२१ को शनि उदय होगा।



सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह
५	५	६	५	८	६	४	९	३	रा.
१२	८	२	२७	१९	११	२१	२१	२१	अं.
१४	७	३१	३३	१४	५८	१	५६	५६	क.
१८	५०	२१	५	६	३	५४	१५	१५	वि.
५८ ५७	७७३ ५१	४० १७	३७ ४६	३ ५९	७३ ११	७ १२	३ ११	३ ११	गति
मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	व. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.	स्थिति
हस्त.१	उफा.४	चित्रा.३	चित्रा.१	पूषा.१	स्वा.१	पूफा.३	श्रव.४	पुष्य.१	नक्षत्रचार
सौम्या	नीरा	दहला	दहला	सौम्या	वायु	जला	अमृता	अमृता	नाड़ी

श्रीसम्वत् २०६५ शाके१९३० आश्विन शुक्लपक्ष १३ — ता. ३० सित. से १४ अक्टू. सन् २००८ ई. तक।

शरदृतु, रविदक्षिणायने, दक्षिणगोले।। केतकीअहर्गण:६०२२

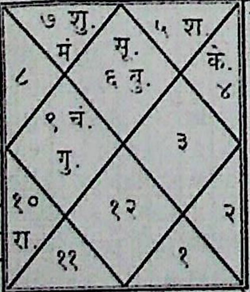
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि	अस्त घं.	मि	ग.आ	प्र.आ	मु.रम	तारीखें	चन्द्र संचार स्टे.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.		
१	मं	१९	२८	१४	२	ह	८	५५	९	४९	ऐं	५२	३८	२७	१८	बव	१९	२८	२९	३३	६	१५	१८	४	८	१५	२९	30	तु२२।३०	५	१३	१३	१५	५८/१०	इष्टिः,शा.नवरात्रारम्भ,कलशस्थापनं,अग्रसेनज.,बुधास्त:पश्चि.A
२	बु	२१	३३	१४	५२	चि	१२	२०	११	११	वै	५२	१०	२७	७	कौ	२१	३३	२९	३०	६	१५	१८	३	९	१६	३०	1	तुला	५	१४	१२	१४	५९/२	चन्द्रदर्शनमु.१५, अक्टूबर१० ता.३१, रक्तदानदि., अ.रा.बुजुर्गदिवस
३	गु	२४	५५	१६	१४	स्वा	१६	५५	१३	२	वि	५२	३७	२७	१९	गर	२४	५५	२९	२५	६	१६	१८	२	१०	१७	१	2	तुला	५	१५	११	१६	४	भ.२९।१०से,सिंदूरतृतीया,श्रीगांधी-श्रीशास्त्रीज.,ईदुलफितर(मीठीB
४	शु	२९	३२	१८	५	वि	२२	४७	१५	२३	प्री	५३	५८	२७	५१	वि	२९	३२	२९	२२	६	१६	१८	१	११	१८	२	3	वृ.८।४८	५	१६	१०	२०	५	भ.१८।५तक, वक्रीहस्ते बुध:२८।२०, स.सि.यो.१५।२३से
५	श	३५	७	२०	२०	अनु	२९	३५	१८	७	आ	५५	५७	२८	४०	बव	२	२०	२९	१५	६	१७	१७	५९	१२	१९	३	4	वृश्चिक	५	१७	९	२५	८	उपांगललितापंचमी Cवरिष्ठनागरिकदिवस
६	र	४१	२३	२२	५०	ज्ये	३७	३	२१	६	सौ	५८	२०	२९	३७	कौ	८	१५	२९	१३	६	१७	१७	५८	१३	२०	४	5	ध.२१।६	५	१८	८	३३	९	स्वात्यांभौम:९।४, विशाखायांशुक्र:१९।४०, स.सि.यो.२१।६सेC
७	चं	४७	४०	२५	२२	मू	४४	३५	२४	८	शो	६०	०	-	-	गर	१४	३०	२९	८	६	१८	१७	५७	१४	२१	५	6	धनु	५	१९	७	४२	११	भ.२५।२२से, श्रीसरस्वतीआवाहनम्, नवपदओलीप्रा. पुष्करमुनिज.
८	मं	५३	२८	२७	४१	पूषा	५१	४०	२६	५८	शो	०	३८	६	३३	वि	२०	३३	२९	५	६	१८	१७	५६	१५	२२	६	7	धनु	५	२०	६	५३	१२	भ.१४।३१तक,महाष्टमी,भद्रकाल्यावतार:,सरस्वतीपूजनं,मेलाज्वालाD
९	बु	५८	५	२९	३३	उषा	५७	४०	२९	२३	अति	२	२३	७	१६	बा	२५	४५	२९	०	६	१९	१७	५५	१६	२३	७	8	म.९।३५	५	२१	६	५	१४	महानवमी,श्रीदुर्गार्चनं,सरस्वतीबलिदानं,अस्त्र-शस्त्रपूजनं,पूषा.३गुरु:E
१०	गु	६०	०	-	-	श्र	६०	०	-	-	सु	३	२७	७	३८	तै	२९	३७	२८	५८	६	१९	१७	५४	१७	२४	८	9	मकर	५	२२	५	१९	१७	विजयादशमी(दशहरामेला,रावणदाह), सरस्वतीविसर्जनं, भौमास्त:F
१०	शु	१	७	६	४७	श्र	२	५	७	१०	धृ	२	५५	७	३०	गर	१	७	२८	५३	६	२०	१७	५३	१८	२५	९	10	कु.९।४२	५	२३	४	३६	१८	भ.१९।०से, पंचकप्रारम्भ:१९।४२,भरतमिलाप पट्टाभिषेक,चित्रायांG
११	श	२	१५	७	१४	ध	४	४२	८	१३	शू	१/५७	५/४०	६/२९	४६/२४	वि	२	१५	२८	५०	६	२०	१७	५२	१९	२६	१०	11	कुम्भ	५	२४	३	५४	२०	भद्रा ७।१४तक, पापांकुशा एकादशीव्रत (सबका)
१२	र	१	२०	६	५३	शत	५	१७	८	२८	वृ	५२	३८	२७	२४	बा	१	२०	२८	४५	६	२१	१७	५१	२०	२७	११	12	मी२६।५	५	२५	३	१४	२१	प्रदोषव्रत Dमुखीनारादेवी(हिप्र.)
१३	र	५८	३०	२९	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	त्रयोदशीक्षय: E२१।४७,मन्वादि,वायुसेनादि.,अश्वादिकनीराजनस.
१४	चं	५३	५५	२७	५५	पूभा	४	३	७	५८	ध्रु	४६	१५	२४	५१	गर	२६	१३	२८	४२	६	२१	१७	५०	२१	२८	१२	13	मीन	५	२६	२	३५	२४	भ.२७।५५से,वृश्चिकमेंशुक्र२४।५६,बुधोदय:पूर्व२५।४६,शाकम्भरीI
१५	मं	४७	५५	२५	३२	उभा	१/५६	५/४८	६/२९	४६/५	व्या	३८	३७	२१	४९	वि	२०	५	२८	३७	६	२२	१७	४९	२२	२९	१३	14	मे२९।५	५	२७	१	५९	२६	भ.१४।४३तक,अन्वा.पंचकस२९।५,रासपूर्णिमा,शरदपूर्णिमाकोजागरीK

A१६।३७,बैंकअर्धवार्षिकलेखाबन्दी,मातामहश्राद्ध,अश्वादिकनीराजनं B ईद),शव्वाल१० F पश्चि.१९।२५,बौद्धावतार,अपराजितापूजा,नीलकंठदर्शन,सीमोल्लंघनं,माधवाचार्यज.,वि.डाकदि. G रवि:११।४५,स्त्री-पु.सू.चं.व.वाहनअश्वमध्यमवृष्टि,स.सि.यो.७।१०तक H देवीदर्शनमे.देवबन्द K व्रतं,लक्ष्मीन्द्रयोपूजा,वाल्मीकज.,कार्तिकस्नानप्रा.,क्षीरशयनोत्सव,आकाशदीपदानं,अश्वयुजी,नवान्नभक्षणं,ओलीस.,व्रजपरिक्रमाशुरु.स.सि.यो.६।४८तक

आश्विन शु.८ भौमे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.७ अक्टूबर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	८	६	५	८	६	४	९	३
अं.	२०	१५	७	१९	१९	२१	२१	२१	२१
क.	६	५८	५५	५०	१०	४२	५८	३०	३०
वि.	५३	५२	६	२०	१३	५९	४५	४९	४९
गति	५९ १२	७३६ ३८	४० ४२	६८ ५५	५ २२	७३ १	६ ५७	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
नाड़ी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]



|| फलम् ||

यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासरा:। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।। कहीं सत्ता हस्तान्तरण की लड़ाई विकरालरूप धारण कर सकती है। प्रभावी राजनेता, प्रादेशिक सरकार लुढ़क जाए तो आश्चर्य नहीं। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, रूस, चीन, नेपाल तथा जापान की भूमि पर ग्रहवेध हानिकारक है। राष्ट्रनायकों को ईश्वर सद्बुद्धि प्रदान करें। त्रेकादश शनि भौम हों, अथवा एकहि संग। प्रजा कष्ट ओ अन्न से, जन विग्रह का रंग।। कहीं अन्नादि की भारी कमी पड़ सकती है। **बाजारभाव-** चन्द्रदर्शनमु.१५ तेजी के सूचक हैं। **कृष्णपक्ष की तिथि घटे, शुक्लपक्ष बढ़ जाय। एक चीज को क्या बढ़े, सभी चीज बढ़ जाय।।** जहाँ पदार्थोंकी बहुतायत होती है, वहाँ बाजार रुख नरम रहता है। पक्षारम्भ के बने भाव अन्त में पलट सकते हैं। वृश्चिक का शुक्र अनाज, दाल, चावलादि में तेजी करेगा- **वृश्चिके च गते शुक्रे सर्वधान्य महर्घता।** सर्राफा, शेयर, सट्टाबाजार में धमाका हो सकता है। **मौसम-** ग्रहों के उदयास्त, राशिनक्षत्र परिवर्तनवसात् जहाँ-तहाँ बादलचाल, मेघगर्जन, हल्कीवर्षा का संयोग बनेगा। पर्वतीयक्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा से क्षति सम्भव है। **ग्रहदर्शन-** सायं पश्चिम में मंगल, शुक्र तथा शिरोभाग में बृहस्पति को देख सकते हैं। प्रातः पूर्वीक्षितिज में शनि को देखें। बुध ता.३० में अस्त होकर ता.१३ में उदय होगा। ता.९ में मंगल अस्त होगा।

कु.ता.१४ अक्टूबर आश्विन शु.१५ भौमे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	५	११	६	५	८	७	४	९	३
अं.	२७	१५	१२	१३	२०	०	२२	२१	२१
क.	१	५३	४१	५३	३१	१३	४६	८	८
वि.	५९	२२	१०	४८	५५	३९	३५	३३	३३
गति	५९ २६	८६० ५५	४१ ५	१४ ४९	६ ३०	७२ ५१	६ ४०	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	व. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
नाड़ी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० कार्तिक कृष्ण पक्ष १४

ता. १५ से २८ अक्टूबर सन् २००८ ई. तक।
शरदृतु, रविदक्षिणायने, दक्षिणगोले।। केतकीअहर्गणः६०३७
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.मं है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि	अस्त घं.	मि	तारीखें रा.आ	प्र.आ	मु.स	अंग्रेजी	चन्द्र संचार स्टे.टा. रा.घं.मि	दैनिक रवि स्पष्ट प्रातः५घं३०मि रा.	अं.	क.	वि.	गति	
१	बु	४०	५५	२२	४५	अ	५१	३२	२७	०	ह	३०	१०	१८	२७	बा	१४	२५	२८	३२	६	२३	१७	४८	२३	३०	१४	15	मेष	५	२८	१	२५	५९ [illegible]	इष्टिः, कृषकभूमिपूजन, तेजीमन्दीसूचकांक २४०६
२	गु	३३	२३	१९	४४	भर	४५	५०	२४	४३	वज्र	२१	१०	१४	५१	तै	७	८	२८	३०	६	२३	१७	४७	२४	१	१५	16	वृ.३०।८	५	२९	०	५२	२९	भ.३०।११से, तुलामें सूर्य २९।२१,संक्रांतिमु.३०, मार्गीबुधः१६।४०A
३	शु	२५	३७	१६	३९	कृ	४०	०	२२	२४	सि	११	५५	११	१०	वि	२५	३७	२८	२५	६	२४	१७	४६	२५	२	१६	17	वृष	६	०	०	२१	३२	भ.१६।३९तक, करकचतुर्थी, **करवाचौथव्रत** चन्द्रोदयरात्रि ७।३५,B
४	श	१८	८	१३	३९	रो	३४	३०	२०	१२	व्य	२ / ५४	४७ / ०	७ / २८	३१ / ०	बा	१८	८	२८	२३	६	२४	१७	४५	२६	३	१७	18	वृष	६	०	५९	५३	३५	उर्स अमीरखुशरो, स.सि.यो.व अ.सि.यो.२०।१२तक, **रोहिणीव्रत**
५	र	११	५	१०	५१	मृग	२९	३५	१८	१५	परि	४५	४५	२४	४३	तै	११	५	२८	१७	६	२५	१७	४४	२७	४	१८	19	मि७।१३	६	१	५९	२८	३७	पूफा.४ शनिः६।४४, पद्मप्रभुजयंती जैन
६	चं	४	५२	८	२२	आ	२५	३३	१६	३८	शि	३८	२०	२१	४५	व	४	५२	२८	१५	६	२५	१७	४३	२८	५	१९	20	मिथुन	६	२	५९	५	३९	भद्रा ८।२२से १९।२०तक
७	चं	५९	४०	३०	१७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	सप्तमीक्षयः
८	मं	५५	३०	२८	३८	पुन	२२	३०	१५	२६	सि	३१	४२	१९	७	बा	२७	३५	२८	१०	६	२६	१७	४२	२९	६	२०	21	क९।४४	६	३	५८	४४	४१	कालाष्टमी, **अहोईअष्टमीव्रत** चन्द्रोदय२३।५२, दाम्पत्याष्टमी,C
९	बु	५२	३०	२७	२६	पु	२०	३५	१४	४०	सा	२६	०	१६	५०	तै	२४	०	२८	८	६	२६	१७	४१	३०	७	२१	22	कर्क	६	४	५८	२५	४३	
१०	गु	५०	३२	२६	४०	श्ले	१९	४५	१४	२१	शुभ	२१	८	१४	५४	व	२१	३०	२८	३	६	२७	१७	४०	१	८	२२	23	सिं४।२१	६	५	५८	८	४५	भ.१५।३से २६।४०तक, सा.वृश्चिकेभानुः६।४०, हेमन्तऋतुप्रा.,D
११	शु	४९	३७	२६	१८	म	१९	५८	१४	२६	शु	१७	७	१३	१८	बव	२०	५	२८	२	६	२७	१७	४०	२	९	२३	24	सिंह	६	६	५७	५३	४८	रमाएकादशीव्रत(सबका), विशा.भौमः२०।१४, संयुक्तराष्ट्रदिवस
१२	श	४९	४०	२६	२०	पूफा	२१	५	१४	५४	ब्र	१३	५३	१२	१	कौ	१९	३८	२७	५७	६	२८	१७	३९	३	१०	२४	25	क२१।७	६	७	५७	४१	५०	रमा११व्रतनिम्बार्क, गोवत्सद्वादशी, गोत्रिरात्रप्रा. नारीकर्तृकनीरांजनं .
१३	र	५०	४०	२६	४५	उफा	२३	१०	१५	४५	ऐ	११	२०	११	१	गर	२०	१०	२७	५३	६	२९	१७	३८	४	११	२५	26	कन्या	६	८	५७	३१	५२	भ.२६।४५से, **प्रदोषव्रत, धनतेरस**, श्रीधन्वन्तरिज., यमप्रीतियर्थदीपE
१४	चं	५२	३८	२७	३३	ह	२६	१०	१६	५८	वै	९	३५	१०	२०	वि	२१	३७	२७	४८	६	३०	१७	३७	५	१२	२६	27	कन्या	६	९	५७	२३	५५	भ.१५।९तक, नरकहरा रूप१४, यमतर्पणं, दीपदानं, तेलाभ्यङ्गस्नानंF
३०	मं	५५	३५	२८	४४	चि	३०	५	१८	३२	वि	८	३३	९	५५	च	२४	७	२७	४५	६	३०	१७	३६	६	१३	२७	28	तु.५।४४	६	१०	५७	१८	५६	अन्वा., **श्रीमहालक्ष्मीपूजन (दीपावली)**, कालरात्रिकमलाज. प्रदोषेG

A अनु.शुक्रः१८।५४,बङ्कव सौर कार्तिकारम्भ, वि.खाद्यदिवस B दशरथपूजा, स.पटेलजयंती C श्रीराधाकुण्डमें स्नान, गोवर्धन D रा.कार्तिकप्रा.,स्वात्यांरविः२२।२१,स्त्री-स्त्री.सू.चं.व.वाहन वातक वर्षाविशेष E दानम्,स.सि.योग, अ.सि.यो.१५।४५से F चित्रायां बुधः१५।३९, ज्येष्ठा.शुक्रः१९।९,श्रीहनुमज्जन्मलग्न मेष, गोत्रिरात्रस.,स्वामीरामतीर्थ जन्म+निर्वाण दिवस G दीपोत्सवः;श्रीमहावीरनिर्वाणदिवस

कार्तिक कृ.८ भौमे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.२१ अक्टूबर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	२	६	५	८	७	४	९	३
अं.	३	२७	१७	१५	२१	८	२३	२०	२०
क.	५८	३२	२९	५१	२०	४३	३२	४६	४६
वि.	४४	२३	५५	३९	३८	४	१७	१८	१८
गति	५९	८३२	४१	५३	७	७२	६	३	३
	४१	५१	२७	५२	३३	४०	१८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	चित्रा ४	पुन. ३	स्वा. ४	हस्त २	पूषा. ३	अनु. २	पूफा. ४	श्रव. ४	श्ले. २
नाड़ी	दहना	नीरा	वायु	सौम्या	सौम्या	चण्डा	जला	अमृता	अमृता



|| फलम् ||

मास में पांच बुधवार श्रेष्ठ तो मंगलवार की दीपावली नेष्ट है- **कार्तिकस्य त्वमावस्या रविवारेण संयुता। शनि भौम युता वापि सर्वलोक भयावहा।।** अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में नई हलचल होगी। किंवा आतंकवादीउत्पात अथवा प्राकृतिक प्रकोप से त्रस्त जनता भागती फिरेगी। कोई देश प्रदेश अथवा महानगर तहस-नहस हो सकता है। पश्चिमोत्तरीय सीमाओंपर चौकसी बरतनी चाहिये। विदेशी दखलन्दाजी हित में नहीं। **बाजारभाव-** तुलाकी बैठी संक्रांतिमु.३० साम्यार्घकारक है। शनि भावोंमें अकल्पित उलटफेर करेगा- **वक्र चाल चलते हुये, बुध मार्गी हो जाय। चालू रुख मार्कीट का, एकदम पलटा खाय।।** अतः अनिश्चित माहोल में व्यापार सोच-विचारकर करें। मंगलवार की दीपावली व्यापारियों के लिये श्रेष्ठ नहीं- **मंगलवारी होय दिवारी। हँसे किसान रोवै व्योपारी।।** सर्राफा-शेयर मार्कीट बहुत गर्म हो सकती है। इमारतीसामान, रंग-रोगन, तेल, मादक द्रव्य, सब्जी, तेल, गुड़, रसकश आदि में तेजी होगी। **मौसम-** आकाश कभी स्वच्छ तो कभी मेघाच्छांदित रहेगा। जहाँ-तहाँ बूंदा-बांदी का संयोग बनेगा। पर्वतीय क्षेत्रोंमें आंधी-तूफान, हिमपात के कारण क्षति होगी। सर्द-गर्म की प्रतिक्रिया रोगोत्पात का कारण बनेगी। यान-वाहन दुर्घटनाचक्र सम्भव है। **ग्रहदर्शन-** प्रदोषसमये पश्चिम में गुरु शुक्र के दर्शन होंगे। सुबह पूर्व में बुध-शनि को स्पष्ट देख सकते हैं। मंगल अस्त है।

कु.ता.२८अक्टूबर कार्तिक कृ. ३०भौमे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	५	६	५	८	७	४	९	३
अं.	१०	२९	२२	२४	२२	१७	२४	२०	२०
क.	५७	५२	२१	८	१६	११	१५	२४	२४
वि.	१८	५८	१९	४१	३१	१७	२३	२	२
गति	५९	७४५	४१	८७	८	७२	५	३	३
	५६	३४	५३	२१	३२	३१	५६	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	स्वा. २	चित्रा २	विशा. १	चित्रा १	पूषा. ३	ज्ये. १	पूफा. ४	श्रव. ४	श्ले. २
नाड़ी	वायु	दहना	चण्डा	दहना	सौम्या	वायु	जला	अमृता	अमृता

श्रीसम्वत्२०६५ शाके १९३० कार्तिक शुक्ल पक्ष १५

ता.२९ अक्टू. से १३ नवम्बर सन् २००८ ई. तक।
हेमन्तऋतु, रविदक्षिणायने, दक्षिण गोले।। केतकीअहर्गण:६०५१
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि	अस्त घं.	मि	रा.का	प्र.का	मु.स	ता.	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रात:५घं३०मि रा.	अं.	क.	वि.	सौर दिन
१	बु	५९	२८	३०	१८	स्वा	३४	५८	२०	३०	प्री	८	१५	९	४९	किं	२७	३०	२७	४०	६	३१	१७	३५	७	१४	२८	29	तुला	६	११	५७	१४	५९/५८
२	गु	६०	०	-	-	वि	४०	४५	२२	५०	आ	८	४०	१०	०	बा	३१	५५	२७	३५	६	३२	१७	३४	८	१५	२९	30	वृ२६।१५	६	१२	५७	१२	६०/०
२	शु	४	२०	८	१७	अनु	४७	२७	२५	३२	सौ	९	५०	१०	२९	कौ	४	२०	२७	३०	६	३३	१७	३३	९	१६	१	31	वृश्चिक	६	१३	५७	१२	२
३	श	१०	७	१०	३६	ज्ये	५४	५०	२८	२९	शो	११	४०	११	१३	गर	१०	७	२७	२८	६	३३	१७	३२	१०	१७	२	1	ध२८।२९	६	१४	५७	१४	४
४	र	१६	३०	१३	१०	मू	६०	०	-	-	अति	१३	५७	१२	९	वि	१६	३०	२७	२५	६	३४	१७	३२	११	१८	३	2	धनु	६	१५	५७	१८	५
५	चं	२३	१०	१५	५१	मू	२	३३	७	३६	सु	१६	२५	१३	९	बा	२३	१०	२७	२०	६	३५	१७	३१	१२	१९	४	3	धनु	६	१६	५७	२३	७
६	मं	२९	३३	१८	२५	पूषा	१०	१२	१०	४१	धृ	१८	४३	१४	५	तै	२९	३३	२७	१५	६	३६	१७	३०	१३	२०	५	4	म२७।२३	६	१७	५७	३०	९
७	बु	३५	८	२०	३९	उषा	१७	१३	१३	२९	शू	२०	२८	१४	४७	गर	२	२०	२७	१५	६	३६	१७	३०	१४	२१	६	5	मकर	६	१८	५७	३९	१०
८	गु	३९	१०	२२	१७	श्र	२३	०	१५	४९	गंड	२१	१२	१५	६	वि	७	८	२७	१०	६	३७	१७	२९	१५	२२	७	6	कु२८।३८	६	१९	५७	४९	११
९	शु	४१	२२	२३	११	ध	२७	२	१७	२७	वृ	२०	३५	१४	५२	बा	१०	१५	२७	७	६	३८	१७	२९	१६	२३	८	7	कुम्भ	६	२०	५८	०	१३
१०	श	४१	२७	२३	१३	शत	२९	५	१८	१६	ध्रु	१८	२५	१४	०	तै	११	२५	२७	५	६	३८	१७	२८	१७	२४	९	8	कुम्भ	६	२१	५८	१३	१४
११	र	३९	१५	२२	२१	पूभा	२८	५५	१८	१३	व्या	१४	२८	१२	२६	व	१०	२०	२७	२	६	३९	१७	२८	१८	२५	१०	9	मी१२।१४	६	२२	५८	२७	१६
१२	चं	३४	५८	२०	३८	उभा	२६	४३	१७	२०	ह	८	५०	१०	११	बव	७	५	२७	०	६	३९	१७	२७	१९	२६	११	10	मीन	६	२३	५८	४३	१८
१३	मं	२८	५०	१८	१२	रे	२२	३५	१५	४२	वज्र	१ / ५३	३३ / ०	७ / २७	२७ / ५२	कौ	१	५३	२६	५८	६	४०	१७	२७	२०	२७	१२	11	मे१५।४२	६	२४	५९	१	१९
१४	बु	२१	१७	१५	१२	अ	१७	०	१३	२९	व्य	४३	२५	२४	३	व	२१	१७	२६	५३	६	४१	१७	२६	२१	२८	१३	12	मेष	६	२५	५९	२०	२०
१५	गु	१२	४३	११	४७	भर	१०	२२	१०	५१	वरि	३३	७	१९	५७	बव	१२	४३	२६	५०	६	४२	१७	२६	२२	२९	१४	13	वृ१६।८	६	२६	५९	४०	२२

- 29: इष्टि,**अन्नकूटगोवर्धनपूजा**,बलिपूजासांयगो-द्यूतक्रीड़ा,गुर्जराणांकार्तिकA
- 30: **चन्द्रदर्शनमु.४५,यम२भइयादूज(टीका)**चित्रगुप्त-विश्वकर्मापूजा,स.सिB
- 31: जिल्कादर१,तुलामेंबुध२६।४९,इन्द्रापुण्य,संकल्पादि.ससियो.२५।३२तक
- 1: भ.२३।५३से, **नवम्बर मास११ ता.३०** Dअष्टाह्निकाप्रा.
- 2: भ.१३।१०तक, **नेपच्यूनमार्गी** १९।१४, **सर्वार्थसिद्धियोग**
- 3: सौभाग्य५, **पाण्डवज्ञानपंचमी**, पूषा.४गुरु:२९।४५
- 4: **छटिपूजा, सूर्यषष्ठी डाला६(बि.)**, श्रव.३राहु: आश्ले.१केतु:१८।६
- 5: भ.२०।३९से,विशा.रवि:३०।२३,स्वात्यांबुध:७।१०,**बुधास्त:पूर्वस्यां**C
- 6: भ.९।२८तक,**पंचकप्रारम्भ**२८।३८,**गोपाष्टमी,गोपूजा** यवन्नादिदान,D
- 7: **अक्षय-आंवला-कूष्माण्डनवमी,वृश्चिकमेंमंगल**२६।४५,**मूलधनुमें**E
- 8: आशादशमी, कंशवधलीलामथुरा Gअ.सि.यो.१५।४२से
- 9: भ.१०।४७से २२।२१तक, **प्रवोधिनीएकादशीव्रत** (देवउठान), **तुलसी**F
- 10: मन्वादि, कविकालीदासजयन्ती, मेला खाटूश्यामजी(राज.)
- 11: **पंचकस.१५।४२,प्रदोषव्रत**,वैकुंठचतुर्दशी,जैनदिवाकरचौथज.ससि.G
- 12: भ.१५।१२से२५।२९तक,अन्वा,सत्यव्रत,अनु.भौम१९।३५,रा.प्रसारणH
- 13: इष्टि:, **कार्तिकपूर्णिमा**, त्रिपुरोत्सवमे.पुष्करराज रेणुकातीर्थ गढ़गंगाK

A नववर्षप्रा.वीरनिर्वाणसं.२५३५,नेपालीसन् ११२९प्रा. B यो.२२।५०से,वि.वचनदि.मे.वटेश्वरप्रा. C १३।२९,कल्पादि:,सहस्त्रार्जुनज. E शुक्र२०।३५,कृतयुगादि,जुगलजोडीपरिक्रमावृन्दावन,मेलासरस्वतीकुण्डमथुरा
F विवाह,स.सि.यो.१८।१३से,चातुर्मासपूर्ण,भीष्मपंचकप्रा.३वनपरिक्रमा.मथुरावृन्दा. H दि.,विश्वेश्वरी-विश्वेश्वरार्चनं K गुरुनानकजयंती,विशा.बुध:१२।३२,कार्तिकस्नानस.भीष्मपंचकस.श्रीनिम्बार्काचार्यज.अष्टाह्निकापूर्ण

कार्तिक शु.८ गुरौ प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.६ नवम्बर

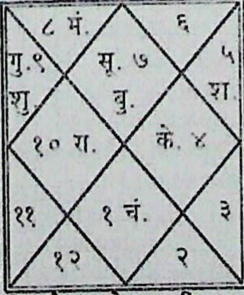
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	९	६	६	८	७	४	९	३
अं.	१९	१८	२८	८	२३	२८	२५	१९	१९
क.	५७	३	४०	१०	३७	२	६	५५	५५
वि.	४९	४२	२	१८	५९	३१	२५	२५	२५
गति	६०	७३९	४२	९७	९	७२	५	३	३
	११	४४	२२	२२	४१	१०	१९	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	स्वा.४	श्र.३	विशा.३	स्वा.१	पू.षा.४	ज्ये.४	पू.फा.४	श्र.३	आश्ले.१
नाड़ी	वायु	अमृत	चण्ड	वायु	सौम्य	वायु	जल	अमृत	अमृत



॥ फलम् ॥

२९दिस. तक विरोधी ग्रहचाल का फल- **गुरु शुक्रौ यदैकस्थो नर युद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद्वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशय:।।** सात्त्विक एवं तामस वृत्ति वाले समुदाय विशेष के लोग आपस में लड़ते-झगड़ते रहेंगे। राजनीतिक उठापटक, हिंसात्मक लूटपाट, आगजनी, चोरी, डकैती, उद्योगोंमें तोड़फोड़, तालाबन्दीके कारण क्षति होगी। खाड़ी के देशों में युद्धभय विषाद कायम रहेगा। अमेरिका, यूरोप, श्रीलंका तथा नेपाल में असम्भावी कुचटनाचक्र सम्भव है। **बाजारभाव-** इस पक्ष में भाव ऊंचे-नीचे होते रहेंगे। चन्द्रदर्शनमु.४५ मन्दी के सूचक हैं, लेकिन वृश्चिक का मंगल तेजी करेगा- **यदा वृश्चिक राशिस्थो जायते च महीसुत:। महार्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्।।** बाजार की लगभग सभी वस्तुएं कुछ तेज होंगी। मन्त्रिस्तर के राजनेता परस्पर क्रूर दृष्टि से देखेंगे। धनु का शुक्र खेती में क्षति करेगा। **मौसम-** पक्षान्तर्गत जहाँ-तहाँ बूंदा-बांदी, तीव्रवायुवेग, मेघगर्जन, विद्युत्पात का संयोग बनेगा। यातायात बाधित रहेगा। किंवा बड़ा हादसा सम्भव है। **यदा च तुला राशिस्थो निशाकर सुतस्तदा। मेघश्च जायते तत्र मेदिनी कलहान्विता।।** उत्तर भारत में तापमान की कमी से ठंड वृद्धि रोगोत्पात का कारण बनेगी। **ग्रहदर्शन-** प्रात: पूर्व में शनि तथा सन्ध्यासमय पश्चिममें गुरु+शुक्र को सन्निकट देख सकते हैं। मंगल अस्त चल रहा है। ता.५ में बुध भी अस्त हो जायेगा।

कु.ता.१३ नवम्बर कार्तिक शु.१५ गुरौ प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	६	०	७	६	८	८	४	९	३
अं.	२६	२३	३	१९	२४	६	२५	१९	१९
क.	५९	१८	३७	३२	४८	२६	४२	३३	३३
वि.	४०	६	३३	१३	८	३७	९	९	९
गति	६०	९०६	४२	९७	१०	७१	४	३	३
	२२	३६	४२	१	२७	४९	४८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	विशा.३	भर.३	अनु.१	स्वा.४	पू.षा.४	मू.२	पू.फा.४	श्र.३	आश्ले.१
नाड़ी	चण्ड	चण्ड	चण्ड	वायु	सौम्य	दहन	जल	अमृत	अमृत

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-१६

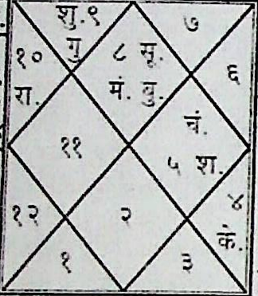
ता.१४ से २७ नवम्बर सन् २००८ ई. तक।
हेमन्तऋतु, रविदक्षिणायने, दक्षिण गोले।। केतकीअहर्गणः६०६७
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि	ग.का	प्र.का	मु.जि	तारीखें नव.	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि	प्रातः५घं३०मि रा.	अं.	क.	वि.	गति	
१	शु	३	४२	८	११	कृ	३/५६	३५/२	८/२१	०/७	परि	२२	३७	१५	४५	कौ	३	४२	२६	४७	६	४२	१७	२५	२३	३०	१५	14	वृष	६	२८	०	२	६०/२४	मे.वटेश्वरसमाप्त बाह, **रोहिणीव्रत**, पं.जवाहरलालनेहरूज.**बालदिवस**
२	शु	५४	३८	२८	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	द्वितीयाक्षयः
३	श	४५	५३	२५	४	मृग	४९	१५	२६	२५	शि	२२	३	११	३६	व	२०	१५	२६	४३	६	४३	१७	२४	२४	१	१६	15	मि१५।४६	६	२९	०	२६	२६	भ.१४।४९से २५।४तक, **वृश्चिकमें सूर्य**२९।८,संक्रांतिमु.१५,वङ्क्षA
४	र	३७	५७	२१	५५	आ	४३	२५	२४	२	सि	२/५३	१२/०	७/२७	३७/५६	बव	२१	५५	२६	४०	६	४४	१७	२४	२५	२	१७	16	मिथुन	७	०	०	५२	२८	**चतुर्थीव्रत** चन्द्रोदय २०।३२
५	चं	३२	८	१९	१२	पुन	३८	२५	२२	७	शुभ	४४	४३	२४	३८	कौ	४	३०	२६	३५	६	४५	१७	२३	२६	३	१८	17	क२६।३५	७	१	१	२०	३०	लाजपतरायपुण्यः, सर्वार्थसिद्धियोग २२।७से
६	मं	२५	४५	१७	४	पु	३४	५७	२०	४५	शु	३७	३७	२१	४९	व	२५	४५	२६	३२	६	४६	१७	२३	२७	४	१९	18	कर्क	७	२	१	५०	३१	भ.१७।४से २८।१८तक, पूषायांशुक्रः२३।५७, स.सि.यो.२०।४५से
७	बु	२१	५२	१५	३२	श्ले	३३	५	२०	१	ब्र	३१	४५	१९	२९	बव	२१	५२	२६	३०	६	४७	१७	२३	२८	५	२०	19	सिं२०।१	७	३	२	२१	३३	**वृश्चिकमें बुध** १७।३७, **अनु.रविः**१२।३१, इन्दिराजीजयंती
८	गु	१९	४०	१४	३९	म	३२	४५	१९	५३	ऐं	२७	१२	१७	४०	कौ	१९	४०	२६	२८	६	४७	१७	२२	२९	६	२१	20	सिंह	७	४	२	५४	३५	**श्रीमहाकालभैरवाष्टमी**, भैरवसमुत्पत्तिः पूजनदर्शन
९	शु	१८	५५	१४	२२	पूफा	३३	५	२०	२१	वै	२३	४८	१६	१९	गर	१८	५५	२६	२५	६	४८	१७	२२	३०	७	२२	21	क२६।३६	७	५	३	२९	३७	भ.२६।३०से, सा.धनुषिभानुः२८।१५, अनु.बुधः२०।५,(वि.मु.उफा.)
१०	श	१९	३५	१४	३९	उफा	३६	२०	२१	२१	वि	२१	२७	१५	२४	वि	१९	३५	२६	२३	६	४९	१७	२२	१	८	२३	22	कन्या	७	६	४	६	३८	भ.१४।३९तक, रा.मार्गशीर्षप्रा., महावीरस्वामीदीक्षादि.,(वि.मु.उफा.)
११	र	२१	३२	१५	२७	ह	३९	५७	२२	४९	प्री	२०	५	१४	५२	बा	२१	३२	२६	२०	६	५०	१७	२२	२	९	२४	23	कन्या	७	७	४	४४	४०	**उत्पत्तिएकादशीव्रत** (सबका), उषा.१गुरुः११।९, (वि.मु.हस्त), स.B
१२	चं	२४	३५	१६	४०	चि	४४	३५	२४	४०	आ	१९	३३	१४	३९	तै	२४	३५	२६	१७	६	५०	१७	२१	३	१०	२५	24	तु११।४४	७	८	५	२४	४१	(विवाह मुहूर्त चित्रा)
१३	मं	२८	३३	१८	१६	स्वा	५०	२	२६	५२	सौ	१९	४२	१४	४४	व	२८	३३	२६	१५	६	५१	१७	२१	४	११	२६	25	तुला	७	९	६	५	४३	भद्रा १८।१६से, **प्रदोषव्रत**, (विवाह मुहूर्त स्वाती)
१४	बु	३३	२०	२०	१२	वि	५६	१५	२९	२२	शो	२०	२७	१५	३	वि	०	५५	२६	१२	६	५२	१७	२१	५	१२	२७	26	वृ२२।४४	७	१०	६	४८	४५	भद्रा ७।१४तक, उफा.१शनिः१८।२९, मेलापुरमण्डल देविकास्नानC
३०	गु	३८	४७	२२	२४	अनु	६०	०	-	-	अति	२१	४८	१५	३६	च	६	२	२६	१०	६	५३	१७	२१	६	१३	२८	27	वृश्चिक	७	११	७	३३	४६	अन्वाधान, स्नान-दानादि अमापुण्यः, **हर्शलमार्गी** १७।३१, सर्वार्थ सिद्धियोग

A व सौरमार्गशीर्षारम्भः, तेजीमन्दीसूचकांक२२५८ B सि.यो.व अ.सि.योग२२।४९तक, बाबासत्यसांईजयंती
C जम्मू, सर्वार्थसिद्धि योग व अमृतसिद्धि योग२९।२२से, श्रीबालाजी जयंती, एन.सी.सी. की वर्षगांठ

मार्गशीर्ष कृ.८गुरौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता.२० नवम्बर

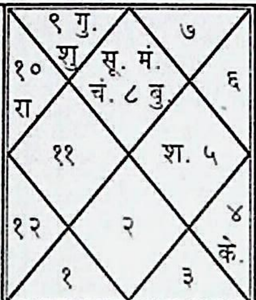
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	४	७	७	८	८	४	९	३
अं.	४	५	८	०	२६	१४	२६	१९	१९
क.	२	१९	३७	४६	३	४८	१४	१०	१०
वि.	५४	४४	४१	४२	३१	९	४	५४	५४
गति	६० ३५	७३६ ११	४३ ७	९५ २८	११ ९	७१ २५	४ १५	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. अ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	अनु. १	मघा २	अनु. २	विशा ४	पूषा. ४	पूषा. १	पूफा.४	श्रव. ३	श्ले. १
नाड़ी	चण्डा	अमृता	चण्डा	चण्डा	सौम्या	सौम्या	जला	अमृता	अमृता



॥ फलम् ॥

यत्र मासे पंचवाराःजायन्ते च बृहस्पतेः विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धञ्च जायते।। पश्चिमी देश-प्रदेशोंमें राजविग्रह युद्ध भयातंक का कारण बनेगा। खाड़ी के देश षड्यन्त्र रचेंगे। देशमें किसी बड़े घोटाले का खुलासा हो सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तनावपूर्ण बनेगी। अन्तरिक्ष में नई खोज एवं अकल्पित कुघटनाचक्र सम्भव है। **क्रूर पाप के मध्य में, रवि के भूसुत संग। अनहोनी होवे तभी, होय किसी से जंग।।** सीमाओं पर युद्धके बादल मंडराते नजर आयेंगे। **बाजारभाव-** तृतीया में बैठी वृश्चिक संक्रांतिमु.१५ तेजी का कारक है। वृश्चिक का बुध सहयोग करेगा- **बुधो वृश्चिक राशिस्थो घृत तैल महार्घता। सुभिक्षं सर्वधान्यानां लोकानां च शुभं भवेत्।।** घी, तेल, रूई, ऊनीवस्त्र, मूंगफली, चना, मेवा, केशर, कस्तूरी, सुपारी, कत्था, चूना, चाय, काफी, कोयला, बर्तन, दवा-दारु में तेजी होगी। सभी अनाज, शेयर-सर्राफा, सट्टा बाजार में दोतरफा चाल चलेगी। न्यायपालिका पर्याप्त सुदृढ़ बनेगी। **मौसम-** चण्डा नाडी ग्रहवेध प्राकृतिक प्रकोप का हेतु कहा गया है। पक्षारम्भ और अन्त में मौसम खराब होगा। न्यूनाधिक वर्षा, किंवा हिमपात, ओलावृष्टि, शीतलहर प्रभावित करेगी। दुर्दिन होने से यातायात बाधित रहेगा। **ग्रहदर्शन-** सायं पश्चिमनत् गुरु+शुक्र के दर्शन होते रहेंगे। सुबह शिरोभाग में शनि अन्तरिक्ष की शोभा बढ़ायेगा। मंगल+बुध अस्त हैं।

कु.ता.२७नवम्बर मार्गशीर्षकृ.३०गुरौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	७	७	७	८	८	४	९	३
अं.	११	३	१३	११	२७	२३	२६	१८	१८
क.	७	२३	४०	५१	२३	६	४१	४८	४८
वि.	३३	२५	३४	१३	३९	४०	४७	३८	३८
गति	६० ४६	७१७ ५८	४३ २८	९४ २०	११ ४८	७० ५६	३ ३६	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा अ.	मा. अ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	अनु.३	अनु. १	अनु.४	अनु. ३	उषा. १	पूषा.३	उफा.१	श्रव. ३	श्ले. १
नाड़ी	चण्डा	चण्डा	चण्डा	चण्डा	नीरा	सौम्या	नीरा	अमृता	अमृता

श्रीसम्वत्२०६५ शाके१९३०मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष१७

ता. २८ नव. से १२ दिसम्बर सन् २००८ ई. तक।

हेमन्तऋतु, रविदक्षिणायने, दक्षिण गोले।। केतकीअहर्गणः६०८१

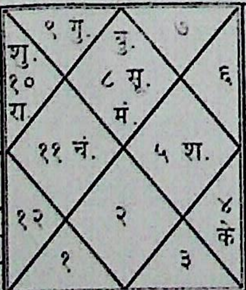
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि	अस्त घं.	मि	रा.मा	प्र.मा	मु.जि	ता.	चन्द्र संचार स्टे.टा. रा.घं.मि	रा.	अं.	क.	वि.	पल	
१	शु	४४	५८	२४	५२	अनु	३	५	८	७	सु	२३	३८	१६	२०	किं	११	५३	२६	१०	६	५३	१७	२१	७	१४	२९	28	वृश्चिक	७	१२	८	१९	६०/४७	इष्टिः, श्रीमल्लारीभैरव पट्रात्रप्रा.(महा), स.सि.योग ८।७तक,
२	श	५१	२७	२७	२९	ज्ये	१०	२७	११	५	धृ	२५	४५	१७	१२	वा	१८	१२	२६	८	६	५४	१७	२१	८	१५	३०	29	ध.११।५	७	१३	९	६	४८	**चन्द्रदर्शनमु.३०**, उषायांशुक्रः२९।४५, (विवाहमुहूर्तमूल)
३	र	५८	१२	३०	१२	मू	१८	८	१४	१०	शू	२८	७	१८	१०	तै	२४	५०	२६	५	६	५५	१७	२१	९	१६	१	30	धनु	७	१४	९	५४	४९	जिल्हेज१ २मुस., ज्येष्ठायांबुधः७।२, (वि.मु.मूल), स.सि.यो.१४।१०तक
४	चं	६०	०	-	-	पूषा	२५	५३	१७	१७	गंड	३०	३०	१९	८	व	३१	२७	२६	२	६	५६	१७	२१	१०	१७	२	1	म.२४।२	७	१५	१०	४३	५१	भ.१९।३१से, **दिसम्बरमास१२ता.३१**, वैनायकीचौथव्रत, ज्येष्ठायांA
४	मं	४	४५	८	५०	उषा	३३	२२	२०	१७	वृ	३२	४०	२०	०	वि	४	४५	२६	२	६	५६	१७	२१	११	१८	३	2	मकर	७	१६	११	३४	५२	भ.८।५०तक,**मकरमें शुक्र२५।४५,ज्येष्ठायांरविः१६।४४**,(वि.मु.उषा)B
५	बु	१०	४५	११	१५	श्र	४०	३	२२	५८	ध्रु	३४	१०	२०	३३	वा	१०	४५	२६	०	६	५७	१७	२१	१२	१९	४	3	मकर	७	१७	१२	२६	५२	नाग५(दभा), श्रीरामजानकी विवाहोत्सव, श्रीबांकेबिहारी प्राकट्योत्सवC
६	गु	१५	३५	१३	१२	ध	४५	२७	२५	९	व्या	३४	४५	२०	५२	तै	१५	३५	२५	५७	६	५८	१७	२१	१३	२०	५	4	कु.१२।४	७	१८	१३	१८	५३	**पंचकप्रारम्भ१२।४,स्कन्दषष्ठी**,चम्पाषष्ठी(महा),नौसेनादिवस,मूलकD
७	शु	१८	५२	१४	३२	शत	४९	१०	२६	३९	ह	३४	०	२०	३५	व	१८	५२	२५	५५	६	५९	१७	२१	१४	२१	६	5	कुम्भ	७	१९	१४	११	५४	भ.१४।३२से २६।४९तक, **मित्रसप्तमी** नरसीमेहताज.,विष्णु-नन्दा-भद्रा७
८	श	२०	१७	१५	६	पूभा	५०	५८	२७	२२	वज्र	३१	४७	१९	४२	बव	२०	१७	२५	५४	६	५९	१७	२१	१५	२२	७	6	मी२१।२२	७	२०	१५	५	५४	(विवाह मुहूर्त्त उत्तराभाद्रपद)
९	र	१९	२८	१४	४७	उभा	५०	३३	२७	१३	सि	२७	५०	१८	८	कौ	१९	२८	२५	५२	७	०	१७	२१	१६	२३	८	7	मीन	७	२१	१५	५९	५६	**नन्दिनीनवमी**,कल्पादि,(वि.मु.उभा.).स.सि.यो.२७।१३तक,जैनदिवाकरE
१०	चं	१६	२७	१३	३६	रे	४८	२	२६	१४	व्य	२२	१०	१५	५३	गर	१६	२७	२५	५०	७	१	१७	२१	१७	२४	९	8	मेर६।१४	७	२२	१६	५५	५६	भ.२४।३६से,**पंचकस.२६।१४,मूलधनुमेंबुधः१९।३१**,(वि.मु.अश्वि)F
११	मं	११	२५	११	३६	अ	४३	४०	२४	३०	वरि	१४	५	१२	५९	वि	११	२५	२५	४८	७	२	१७	२२	१८	२५	१०	9	मेष	७	२३	१७	५१	५७	भ.११।३६तक,**मोक्षदाएकादशीव्रत**(सबका),उषा.२मकरे गुरुः२३।२९G
१२	बु	४	३८	८	५३	भर	३७	४८	२२	९	परि	६/५६	१५/२७	९/२१	३२/३७	वा	४	३८	२५	४८	७	२	१७	२२	१९	२६	११	10	वृ.७।२७	७	२४	१८	४८	५८	**व्यञ्जन-अखण्डाद्वादशी, प्रदोषव्रत**, स.सि.यो.२२।९से, गुरुग्रंथोत्सवH
१३	बु	५६	२७	२९	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	त्रयोदशीक्षयः H मानवाधिकारदिवस
१४	गु	४७	१८	२५	५८	कृ	३०	४५	१९	२१	सि	४५	५०	२५	२३	गर	२१	५०	२५	४७	७	३	१७	२२	२०	२५	१२	11	वृष	७	२५	१९	४६	५८	भ.२५।५८से,श्रवणेशुक्रः१५।३०,पिशाचमोचनश्राद्ध,(वि.मु.रोहि.)K
१५	शु	३७	४०	२२	७	रो	२३	७	१६	१८	सा	३४	५३	२१	०	वि	१२	३०	२५	४७	७	३	१७	२२	२१	२८	१३	12	मिर६।४४	७	२६	२०	४४	५८	भ.१२।३तक,अन्वा,**सत्यव्रतपूर्णिमा,रोहिणीव्रत**,दत्तजयंती,षोडसीM

A भौमः८।१६,(वि.मु.उषा.),एड्सदिवस,पातस्पर्श.२६।१२ B पानमाद:९।५५ C गुरुतगबहादुरबलिदानदिवस D रूपिणी६बंगाल E चौथपुण्यः,झन्डादिवस F दशादित्यव्रत,अमरनाथजन्म+मोक्षजैन G ईद-उल-जुहा,(वि.मु.अश्वि),ससियो.व अग्नियो.२४।३०तक,गीता जयंती,मौनी११ श्रीमालदासज.,गमधामखेड़ापा जोधपुर K कपर्दीश्वरयात्रादर्शन(काशी),सम्भवनाथज.जैन M त्रिपुरसुन्दरीश्रीविद्याज.,अन्नपूर्णाज.(वि.मु.रोहिणी)

मार्गशीर्ष शु.८ शनौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता.६दिसम्बर

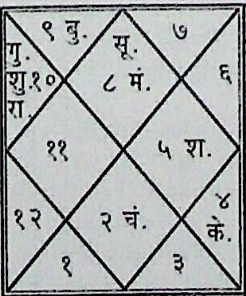
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
रा.	७	१०	७	७	८	९	४	९	३
अं.	२०	२१	२०	२५	२९	३	२७	१८	१८
क.	१५	३०	१३	५७	१२	४१	१०	२०	२०
वि.	५	७	४५	२९	४४	५५	३९	१	१
गति	६०	७३०	४३	९३	१२	७०	२	३	३
	५४	४१	५६	५१	२९	५	४४	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	२	२	२	३	२	३	२	३	२
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
नाड़ी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अमृता	अमृता



॥ फलम् ॥

नक्रस्थिते देवगुरौ दुर्भिक्षं घोर दारुणम्। पूर्वस्यां दक्षिणे चैव दुर्भिक्षं राजविग्रहम्। पापबुद्धि रतालोका हा!हा!!भूता च मेदिनी। जलतैलाज्य दुग्धान्न रक्तवस्त्र महर्घता।। पूर्व-दक्षिण सम्भागीय देश-प्रदेशोंमें भारी हो-हल्ला मचेगा। पापाचारी असामाजिकतत्त्व कुकृत्योंमें लिप्तायमान रहेंगे। कहीं राजविग्रह, युद्धोत्पात तो कहीं प्राकृतिक आपदावशात् क्षति सम्भव है। जल, दूध, अन्न, वस्त्र आदि उपयोगी चीजें मिलनी कठिन हो जायेंगी। मंहगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। बढ़ते अत्याचारों से धरा अकुलायेगी। डेढ़ वर्ष की समयावधि में कहीं भी युद्ध हो सकता है। **बाजारभाव- चन्द्रदर्शनमु.३० साम्यार्घकारक है। मकरे च यदा शुक्रःसर्वसस्य विनाशकृत। जायतेऽत्र महार्घाणि नात्र कार्या विचारणा।।** मकर का शुक्र कृषि में व्यवधान करेगा। उपयोगी वस्तुओंके अभाव में मंहगाई बढ़ेगी। **जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही मे घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकै, मंहगाई हट जाय।।** उलटफेर के संयोग में सूझ-बूझ से काम लेने वाले लाभ के भागीदार बनते हैं। **मौसम- जलराशि गताःखेटा महावृष्टिप्रदा सदा।।** जलराशि में ग्रहसंचार के कारण न्यूनाधिक वर्षा, किंवा झन्झावात, दुर्दिन होने, बर्फ गिरने, शीतलहर चलने से यातायात बाधित रहेगा। **ग्रहदर्शन-** प्रदोष के समय पश्चिमीक्षितिज के ऊपर गुरु, शुक्र को देख सकते हैं। प्रातः शिरोभाग में शनि के दर्शन होते रहेंगे। मंगल, बुध अस्त हैं।

कु.ता.१२दिसम्बर मार्गशीर्ष शु.१५ शुक्रे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	७	१	७	८	९	९	४	९	३
अं.	२६	१६	२४	५	०	१०	२७	१८	१८
क.	२०	२५	३८	२०	२८	४०	२५	०	०
वि.	४४	५९	१५	४९	४०	३५	२४	५६	५६
गति	६०	७१९	४४	९३	१२	६९	२	३	३
	५८	११	५	५८	५३	२०	६	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	३	२	३	२	२	२	२	३	२
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
नाड़ी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अमृता	[illegible]	अमृता	अमृता

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० पौष कृष्ण पक्ष १८ — ता.१३ से २७ दिसम्बर सन् २००८ ई. तक।

हेमन्तऋतु, रविदक्षिणायने, दक्षिण गोले।। केतकीअहर्गण:६०९६

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि.	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि.	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि.	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	रा.मा	प्र.मा	मु.जि	अंग्रेजी	चन्द्र संचार स्टे.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	विशेष
१	श	२८	०	१८	१६	मू	१५	१७	१३	११	शुभ	२३	४८	१६	३५	बा	२	५०	२५	४५	७	४	१७	२२	२२	२९	१४	13	मिथुन	७	२७	२१	४२	६१/०	इष्टि:
२	र	१८	४५	१४	३५	आ	७	४८	१०	१२	शु	१३	५	१२	१९	गर	१८	४५	२५	४३	७	५	१७	२२	२३	३०	१५	14	क२६।१२	७	२८	२२	४२	१	भ.२४।५५से, मूल३प्लूटो१७।३७, पातस्पर्श:२३।३५, मोक्ष:३०।५३
३	चं	१०	२५	११	१६	पुन	१/५५	५/३५	७/२१	३२/२०	ब्र	३/५४	२/३	८/२८	११/४३	वि	१०	२५	२५	४३	७	६	१७	२३	२४	१	१६	15	कर्क	७	२९	२३	४३	२	भ.११।१६तक, **चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय**२०।३२, **मूल धनुमें सूर्य** १९।४६A
४	मं	३	२३	८	२७	श्ले	५१	३७	२७	४५	वै	४६	१५	२५	३६	बा	३	२३	२५	४२	७	६	१७	२३	२५	२	१७	16	सि२७।४५	८	०	२४	४५	३	**तेजीमन्दी सूचकांक** २०४६, सर्वार्थसिद्धियोग २७।४५तक
५	मं	५७	५२	३०	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	पंचमीक्षय:
६	बु	५४	१०	२८	४७	म	४९	२२	२६	५२	वि	३९	५०	२३	३	गर	२६	०	२५	४२	७	७	१७	२४	२६	३	१८	17	सिंह	८	१	२५	४८	३	भद्रा २८।४७से, पूषायां बुध:७।५९
७	गु	५२	२०	२८	४	पूफा	४८	५७	२६	४३	प्री	३४	५५	२१	६	वि	२३	१५	२५	४०	७	८	१७	२४	२७	४	१९	18	सिंह	८	२	२६	५१	४	भद्रा १६।२६तक, **बुधोदय पश्चिमायां** ७।१७
८	शु	५२	२५	२८	६	उफा	५०	२५	२७	१८	आ	३१	२७	१९	४३	बा	२२	२३	२५	४०	७	८	१७	२४	२८	५	२०	19	क८।५१	८	३	२७	५५	५	**मूल धनुमें मंगल** ११।३३, अष्टकाश्राद्ध, कालाष्टमी
९	श	५४	१०	२८	४९	ह	५३	३०	२८	३३	सौ	२९	२३	१८	५४	तै	२३	१७	२५	४०	७	९	१७	२५	२९	६	२१	20	कन्या	८	४	२९	०	६	
१०	र	५७	३०	३०	९	चि	५८	५	३०	२३	शो	२८	३५	१८	३५	व	२५	५०	२५	४०	७	९	१७	२५	३०	७	२२	21	तु२७।२८	८	५	३०	६	७	भ.१७।२९से ३०।९तक, सा.मकरेभानु:१७।३५, शिशिरऋतुप्रा. रविB
११	चं	६०	०	-	-	स्वा	६०	०	-	-	अति	२८	४५	१८	४०	बव	२९	४२	२५	४०	७	१०	१७	२६	१	८	२३	22	तुला	८	६	३१	१३	८	**सफलाएकादशीव्रत** स्मार्त्त, ग.पौषारम्भ:, ग्यारससठियागई
११	मं	२	०	७	५८	स्वा	३	४७	८	४१	सु	२९	४५	१९	४	बा	२	०	२५	४०	७	१०	१७	२६	२	९	२४	23	वृ२८।४०	८	७	३२	२१	८	धनिष्ठायां शुक्र:७।१६, सफला११व्रत वैष्णव, किसानदिवस
१२	बु	७	२८	१०	१०	वि	१०	२०	११	१९	धृ	३१	२०	१९	४३	तै	७	२८	२५	४०	७	११	१७	२७	३	१०	२५	24	वृश्चिक	८	८	३३	२९	९	**प्रदोषव्रत**, उषा.३गुरु:२९।२५, बाबानागपालपुण्य:, स.सि.योग वC
१३	गु	१३	३५	१२	३७	अनु	१७	३२	१४	१२	शूल	३३	२०	२०	३१	व	१३	३५	२५	४०	७	११	१७	२७	४	११	२६	25	वृश्चिक	८	९	३४	३८	९	भ.१२।३७से २५।५५तक, **बड़ादिन**, ईसाजयंती, श्रीमालवीयजयंतीD
१४	शु	२०	२	१५	१३	ज्ये	२५	२	१७	१३	गंड	३५	३०	२१	२४	श	२०	२	२५	४२	७	१२	१७	२९	५	१२	२७	26	ध१७।१३	८	१०	३५	४७	१०	
३०	श	२६	४०	१७	५२	मू	३२	४३	२०	१७	वृ	३७	४८	२२	१९	ना	२६	४०	२५	४२	७	१२	१७	२९	६	१३	२८	27	धनु	८	११	३६	५७	१०	अन्वा. **शनीचरीमावस** पर्वदिन देवपितृकार्येऽमा, **मकरमें बुध**२९।५३E

A संक्रांतिमु.३०,बङ्कव सौरमास पौषारम्भ,खरमासारम्भ,श्रीपटेलपुण्य:,सर्वार्थसिद्धियोग
B उत्तरायणे,दैत्योंकामध्याह्न देवोंकीमध्यरात्रि,श्रीपार्श्वनाथ+चन्द्रप्रभुजयंतीजैन
C अ.सि.यो.११।१९से
D उषायांबुध:२३।४०, स.सि.यो.१४।१२तक
E वकुलामावस (उड़ीसा), हत्तापनाशनस्नान ब्रह्महत्याशमनार्थ(मद्रास)

पौष कृ.८ शुक्रे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता. १९ दिसम्बर

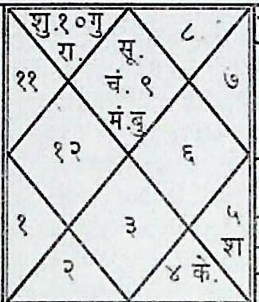
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	४	७	८	९	९	४	९	३
अं.	३	२८	२९	१६	२	१८	२७	१७	१७
क.	२७	११	४८	१७	०	४२	३७	३८	३८
वि.	५५	३	४४	३९	५	५२	५२	४०	४०
गति	६१/५	७७८/५३	४४/३५	९३/२३	१३/१७	६८/१६	१/२१	३/११	३/११
स्थिति	मा./उ.	मा./उ.	मा./अ.	मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	व./अ.	व./अ.
नक्षत्रचार	मूल २	उफा १	ज्ये ४	पूषा १	उषा २	श्र ३	उफा १	श्र ३	पूफा १
नाड़ी	दक्षिणा	नीरा	वाम	सौम्या	नीरा	अमृता	नीरा	अमृता	अमृता



॥ फलम् ॥

धने मीने बुधोयाति मारयति मृगान् गजान्। प्रजा शाशकयोर्वैरं करोति विग्रहं तदा।। मृग, हाथी, शेर, चीतादि जंगली जानवर, जीवजन्तु, पशु-पक्षियोंकी क्षति होगी। राष्ट्रनायकोंमें परस्पर वैर-विरोध बढ़ेगा। किंवा भारी राजविग्रह, आन्तरिक कलह सम्भव है। संवेदनशील महानगरों में चौकसी बरतनी चाहिये। **शनिवारा यदापंच जायन्ते रवि पंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोग शोकाकुला मही।।** मंहगाई की मार से त्राहि-त्राहि मचेगी। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में शान्ति परिचर्चा होगी। किसी को भारी मात्रा में युद्ध सामग्री मिल सकती है। **बाजारभाव-** तृतीया में बैठी धनु संक्रांतिमु.३०साम्यार्घकारक है। धनु राशि गतो भानु: **सुभिक्षं तत्र जायते। तिल तैलं महर्घं च कार्पासादि तथैव च।।** तिल तेल, रूई, वस्त्रादि मंहगे होंगे। धनु का मंगल मूलद्रव्य, कच्चेमाल, तृण, काष्ठ, इमारतीसामान, कपास, ऊनीवस्त्र आदि में तेजी करेगा। शेयर तथा सर्राफा बाजार अनिश्चित रहेगा। **मौसम-** १८दिस.बुधोदय भारी मेघगर्जन, विद्युत्पात, तीव्रवायुवेग के साथ जहाँ-तहाँ वर्षा, हिमपात, झञ्झावात से क्षति का कारण बनेगा। **नोत्पात परित्यक्त:कदाचिदपि चन्द्रजो वज्रत्युदयम्। जलदहन पवनभय कृद्धान्यर्घ क्षय:विवृद्धयैर्वा।।** उत्तरभारत में शीतलहर प्रभावित करेगी। **ग्रहदर्शन-** सायं पश्चिमी कपाल में गुरु, शुक्र, बुध तथा सुबह पश्चिमनत् शनि को स्पष्ट देख सकते हैं। मंगल अदृश्य रहेगा।

कु.ता.२७ दिसम्बर पौष कृ. ३० शनौ प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	८	८	८	९	९	४	९	३
अं.	११	६	५	२८	३	२७	२७	१७	१७
क.	३६	२	४६	३०	४७	४४	४५	१३	१३
वि.	५७	२१	४६	५७	४०	५	३५	१४	१४
गति	६१/१०	७०९/२२	४४/५८	८७/३७	१३/३९	६६/४७	०/२८	३/११	३/११
स्थिति	मा./उ.	मा./अ.	मा./अ.	मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	व./अ.	व./अ.
नक्षत्रचार	मूल ४	मूल १	मूल १	उषा २	उषा ३	धनि २	उफा २	श्रव ३	पूफा २
नाड़ी	दक्षिणा	दक्षिणा	दक्षिणा	नीरा	नीरा	अमृता	नीरा	अमृता	अमृता

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० पौष शुक्ल पक्ष १९ — ता.२८ दिस. से ११ जनवरी सन् २००९ ई. तक।

शिशिरऋतु, रविउत्तरायणे, दक्षिणगोले।। केतकीअहर्गणः६१११

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टे.टा घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टे.टा घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टे.टा घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि	अस्त घं.	मि	ग.पं.	प्र.पं.	मु.जि.	अंग्रेजी तारीख	चन्द्र संचार स्टे.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.		
१	र	३३	१३	२०	३०	पूषा	४०	१५	२३	१९	ध्रु	४०	०	२३	१३	बव	३३	१३	२५	४३	७	१३	१७	३०	७	१४	२९	28	म.३०।३	८	१२	३८	७	११/१०	इष्टिः, पूषायां रविः२२।१, कुम्भमें शुक्र ३०।२३, स.सि.यो.२३।१९से
२	चं	३९	२७	२३	०	उषा	४७	३२	२६	१८	व्या	४१	५८	२४	०	बा	६	२०	२५	४३	७	१३	१७	३०	८	१५	३०	29	मकर	८	१३	३९	१७	१०	चन्द्रदर्शन मु.४५, सर्वार्थसिद्धियोग २६।१४से
३	मं	४५	१०	२५	१७	श्र	५४	१३	२८	५४	ह	४३	३०	२४	३७	तै	१२	२०	२५	४५	७	१३	१७	३१	९	१६	१	30	मकर	८	१४	४०	२७	१०	यतीन्द्रसूरिपुण्यः त्रिस्तुतिजैन, मुहर्रम १ हिजरीसन् १४३०प्रा.
४	बु	४९	५८	२७	१२	ध	६०	०	-	-	वज्र	४४	२३	२४	५८	व	१७	३३	२५	४५	७	१३	१७	३१	१०	१७	२	31	कु.१८।४	८	१५	४१	३७	१०	भ.१४।१४से २७।१२तक, **पंचक प्रारम्भ** १८।४, न्यू-ईयर-इव
५	गु	५३	३५	२८	३९	ध	०	२	७	१४	सि	४४	२५	२४	५९	बव	२१	४७	२५	४७	७	१३	१७	३२	११	१८	३	1	कुम्भ	८	१६	४२	४७	१०	**जनवरी मास१ ता.३१ सन्२००९प्रा., वक्रीशनिः७।२०**, छप्पनA
६	शु	५५	३७	२९	२९	शत	४	३५	९	४	व्य	४३	१५	२४	३२	को	२४	३५	२५	४८	७	१४	१७	३३	१२	१९	४	2	मीं२८।१	८	१७	४३	५७	१०	गुरुगोविन्दसिंह प्रकाशोत्सवः
७	श	५६	०	२९	३८	पूभा	७	४५	१०	२०	वरि	४०	५	२२	३५	गर	२५	४८	२५	४८	७	१४	१७	३३	१३	२०	५	3	मीन	८	१८	४५	७	१०	भद्रा २९।३८से, श्रीराजेन्द्रसूरि जन्म+पुण्यः त्रिस्तुतिजैन
८	र	५४	३०	२९	२	उभा	९	१०	१०	५४	परि	३७	५	२२	४	वि	२५	१५	२५	५०	७	१४	१७	३४	१४	२१	६	4	मीन	८	१९	४६	१७	१०	भ.१७।२०तक, श्रवणेबुधः२७।८, शतेशुक्रः८।३५,स.सि.यो.१०।५४तक
९	चं	५१	७	२७	४१	रे	८	४७	१०	४५	शि	३१	४८	१९	५७	बा	२२	४७	२५	५०	७	१४	१७	३४	१५	२२	७	5	मे.१०।४५	८	२०	४७	२७	९	**पंचकसमाप्त** १०।४५, पूषायांभौमः३०।२३
१०	मं	४५	५८	२५	३८	अ	६	३२	९	५२	सि	२५	३	१७	१६	तै	१८	३०	२५	५०	७	१५	१७	३५	१६	२३	८	6	मेष	८	२१	४८	३६	८	शाम्बदशमी(उड़ीसा), श्रव.२राहुः पुष्य४केतुः१५।५९, जिनानन्दसागरB
११	बु	३९	१७	२२	५८	भर	२/५७	३८/२०	८/३०	१८/११	सा	१७	०	१४	३	व	१२	३७	२५	५२	७	१५	१७	३६	१७	२४	९	7	वृ.३।४६	८	२२	४९	४४	८	भ.१२।१८से २२।५८तक, **पुत्रदाएकादशीव्रत** (सबका), मन्वादिः,C
१२	गु	३१	२५	१९	४९	रो	५०	५	२७	३७	शुभ	७/५७	५२/५५	१०/३०	२४/२५	बव	५	२०	२५	५५	७	१५	१७	३७	१८	२५	१०	8	वृष	८	२३	५०	५२	८	उषा.४गुरुः१६।३३, **मोहर्रम (ताजिए), पुत्रदाएकादशीव्रत** निम्बार्कD
१३	शु	२२	४०	१६	१९	मृग	४३	४५	२४	४५	ब्र	४७	२५	२६	१३	तै	२२	४०	२५	५७	७	१५	१७	३८	१९	२६	११	9	मि.४।११	८	२४	५२	०	८	**प्रदोषव्रत**, प्रवासीभारतीय दिवस
१४	श	१३	२८	१२	३८	आ	३६	२२	२१	४८	ऐं	३६	४२	२१	५६	व	१३	२८	२६	०	७	१५	१७	३९	२०	२७	१२	10	मिथुन	८	२५	५३	८	७	भ.१२।३८से २२।४८तक, अन्वाधान, **उषायांरविः२३।५८**, सत्यव्रत
१५	र	४	१५	८	५७	पुन	२९	१०	१८	५५	वै	२६	१०	१७	४३	बव	४	१५	२६	०	७	१५	१७	३९	२१	२८	१३	11	क.३।३८	८	२६	५४	१५	७	इष्टिः, **पौषीपूर्णिमा**, माघस्नानारम्भः, **वक्रीबुधः२९।३५**, शास्त्रीजीE

A धोग गरुड़गोविन्द B पुण्यः, खरतरगच्छजैन, स.सि.यो.व अ.सि.यो.९।५२तक C स.सि.यो.८।१८से

D पापनाशिनी १२, रोहिणीव्रत E पुण्यः, देवीशाकुम्भरीजयंती, सर्वार्थसिद्धियोग १८।५५से

पौष शु.८ रवि प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता.४ जनवरी

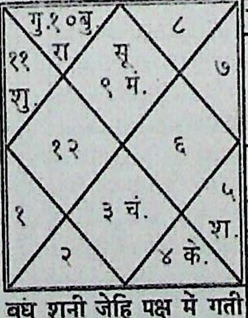
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	११	८	९	९	१०	४	९	३
अं.	१९	१३	११	९	५	६	२७	१६	१६
क.	४६	४१	४७	४	३७	३१	४६	४७	४७
वि.	१७	२७	४३	८	४८	३९	१६	४८	४८
गति	६१/१०	७९१/४४	४५/१६	६२/९	१३/५५	६४/४६	०/२५	३/११	३/११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	पूषा.२	उभा.४	मूल.४	उषा.४	उषा.३	धनि.४	उफा.१	श्रव.३	पुष्य.१
नाड़ी	सौम्या	सौम्या	दहना	नीरा	नीरा	अमृता	नीरा	अमृता	अमृता



।। फलम् ।।

शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देशभङ्गश्च वह्निदाहो महर्घता।। पूर्वोत्तर सम्भाग में कोई देश-प्रदेश भंग हो सकता है। भयंकर अग्निदाह, मंहगाई, युद्धोत्पात की मार से त्राहि-त्राहि मचेगी। **अतीचार गते जीवे वक्री भूते शनैश्चरै। हा! हा!!भूतं जगत्सर्वं रुण्डमाला महीतले।।** सम्वत्सरान्त तक अतीचारी गुरु एवं वक्री शनि चौतरफा हो-हल्ला मचवायेंगे। अमेरिकादि देशों में रुण्ड-मुण्ड लुढ़कते नजर आयेंगे। सीमाओं पर चौकसी बरतनी चाहिये। **बाजारभाव-** चन्द्रदर्शनमु.४५ सस्ते का संकेत है। सूर्य भौम का योग तेजी करेगा। अतः चालू बाजार के भावों में गतिरोध होगा। **बुध शनी जेहि पक्ष में गती बदलते जाँय। मार्कीट के भाव सव नित नूतन हो जाँय।।** पक्षारम्भ के बने भाव अन्त में पलट सकते हैं। सर्राफा, सट्टा, शेयर तथा लाल रंग की वस्तुओंमें तेजी जानें। **एकादश्यां पौष शुक्ले कृतिकाभोगतःस्मृतः। रक्तवस्तु महाल्लाभः सधान्यात्प्रथमाम्बुदे।। मौसम-** नीरा नाड़ी ग्रहवेध में जहाँ-तहाँ बादलचाल, हल्कीवर्षा, मेघगर्जन, विद्युत्पात, ओलावृष्टि के कारण क्षति होगी। शीतलहर प्रभावित करेंगी। अन्तरिक्ष में विस्मयकारी घटना संभव है। दक्षिणभारत में सर्द-गर्म की प्रतिक्रिया रोगोत्पात का कारण बनेगा। **ग्रहदर्शन-** सायं पश्चिमनत् बुध, गुरु, शुक्र को स्पष्ट देख सकते हैं। प्रातः पश्चिमी कपाल में शनि के दर्शन होंगे। मंगल अदृश्य है।

कु.ता.११ जनवरी पौष शु.१५ रवि प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	८	२	८	९	९	१०	४	९	३
अं.	२६	२४	१७	१३	७	१३	२७	१६	१६
क.	५४	५१	५	४३	१५	५८	४१	२५	२५
वि.	१५	४१	४१	२९	४१	२४	४	३२	३२
गति	६१/७	७०५/४२	४५/४४	२/१५	१४/४	६२/२८	१/१०	३/११	३/११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	उषा.१	पुन.२	पूषा.२	श्रव.१	उषा.४	शत.३	उफा.१	श्रव.२	पुष्य.४
नाड़ी	नीरा	नीरा	सौम्या	अमृता	नीरा	जला	नीरा	अमृता	जला

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० माघ कृष्ण पक्ष २० — **ता. १२ से २६ जनवरी सन् २००९ ई. तक।**

शिशिरऋतु, रविउत्तरायणे, दक्षिणगोले।। केतकीअहर्गणः६१२६

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	दिनमान पल	उदय घं.	उदय मि	अस्त घं.	अस्त मि	रा.पौ.	प्र.पौ.	मु.मु.	ता.	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	
१	र	५५	२५	२९	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	प्रतिपदाक्षयः, काशी दशाश्वमेधघाट स्नानारम्भः
२	चं	४७	२८	२६	१४	पु	२२	३३	१६	१६	वि	१६	५	१३	४१	तै	२१	२५	२६	३	७	१५	१७	४०	२२	२९	१४	12	कर्क	८	२७	५५	२२	६१/७	लोहड़ी (पंजाब), सर्वार्थसिद्धियोग १६।१६तक **गुरुअस्त**
३	मं	४०	४२	२३	३२	श्ले	१७	०	१४	३	प्री	६/५८	५०/४०	९/३०	५१/४३	व	१४	५	२६	५	७	१५	१७	४१	२३	१	१५	13	सिं१४।३	८	२८	५६	२९	६	भ.१२।५३से २३।३२तक, **गुरु पश्चिमास्तः१४।४४**, बङ्ग व सौरA
४	बु	३५	३०	२१	२७	म	१२	५०	१२	२३	सौ	५१	५३	२८	०	बव	८	५	२६	५	७	१५	१७	४१	२४	२	१६	14	सिंह	८	२९	५७	३५	६	संकष्टी **(सक्टचौथव्रत)** चन्द्रोदय२१।२८, **मकरमें सूर्यप्र.६।२७**,B
५	गु	३२	१०	२०	७	पूफा	१०	२२	११	२४	शो	४६	३२	२५	५२	कौ	३	५०	२६	८	७	१५	१७	४२	२५	३	१७	15	क१७।२१	९	०	५८	४१	६	थलसेनादिवस, तेजीमन्दीसूचकांक १८९७, मत्तुपोंगल(द.भारत)
६	शु	३०	४७	१९	३४	उफा	१	५३	११	१२	अति	४२	४७	२४	२२	गर	१	२८	२६	१०	७	१५	१७	४३	२६	४	१८	16	कन्या	९	१	५९	४७	६	भद्रा १९।३४से, पूभायां शुक्रः२६।३४
७	श	३१	३०	१९	५०	ह	११	२०	११	४६	सु	४०	४०	२३	३०	वि	१	१०	२६	१५	७	१४	१७	४४	२७	५	१९	17	तु२४।२६	९	३	०	५३	५	भ.७।४२तक, व.उषायांबुधः२९।५५, स्वामीविवेकानन्द एवं रामाC
८	र	३४	५	२०	५२	चि	१४	४०	१३	६	धृ	३९	५५	२३	१२	बा	२	४७	२६	१७	७	१४	१७	४५	२८	६	२०	18	तुला	९	४	१	५८	५	कालाष्टमी, अष्टकाश्राद्ध
९	चं	३८	१८	२२	३३	स्वा	१९	४०	१५	६	शूल	४०	२३	२३	२३	तै	६	१२	२६	२०	७	१४	१७	४६	२९	७	२१	19	तुला	९	५	३	३	५	सायन कुम्भेभानुः२८।२१
१०	मं	४३	४७	२४	४५	वि	२५	५७	१७	३७	गंड	४१	४५	२३	५६	व	११	३	२६	२०	७	१४	१७	४६	३०	८	२२	20	वृ१०।५९	९	६	४	८	४	भ.११।३९से २४।४५तक, अभिजित् प्रवृत्तौ रविः१९।४०
११	बु	५०	८	२७	१७	अनु	३३	१०	२०	३०	वृ	४३	४८	२४	४५	बव	१६	५८	२६	२२	७	१४	१७	४७	१	९	२३	21	वृश्चिक	९	७	५	१२	४	षट्तिलाएकादशीव्रत(सबका), रा.माघमासारम्भ, स.सि.योगव अ.D
१२	गु	५६	५२	२९	५८	ज्ये	४०	५५	२३	३५	ध्रु	४६	१०	२५	४१	कौ	२३	३०	२६	२८	७	१३	१७	४८	२	१०	२४	22	ध२३।३५	९	८	६	१६	३	श्रवणेगुरुः२०।२९, शीतलनाथजयंती जैन
१३	शु	६०	०	-	-	मू	४८	३८	२६	४०	व्या	४८	३३	२६	३८	गर	३०	१३	२६	३०	७	१३	१७	४९	३	११	२५	23	धनु	९	९	७	१९	३	**प्रदोषव्रत, श्रवणेरविः२६।१४**, श्रीसुभाषजयंती, उषायांभौमः१८।२३E
१३	श	३	३५	८	३८	पूषा	५६	७	२९	३९	ह	५०	४२	२७	२९	व	३	३५	२६	३३	७	१२	१७	५०	४	१२	२६	24	धनु	९	१०	८	२२	२	भ.८।३८से २१।५३तक, अभिजित् निवृत्तौ रविः२३।१२
१४	र	९	५३	११	९	उषा	६०	०	-	-	वज्र	५२	२७	२८	११	श	९	५३	२६	३७	७	१२	१७	५१	५	१३	२७	25	म१२।२१	९	११	९	२४	२	रटन्तीकालिका पूजन, सर्वार्थसिद्धियोग
३०	चं	१५	३५	१३	२५	उषा	३	५	८	२५	सि	५३	४०	२८	३९	ना	१५	३५	२६	४०	७	११	१७	५२	६	१४	२८	26	मकर	९	१२	१०	२६	०	अन्वा.,**सोमवतीमौनीमावस पर्वदिन**, वक्रीधनुमें बुध२१।२४, गणतन्त्रF

A मास माघप्रा., खरमासस., स.सि.यो.१४।३तक
B संक्रांतिमु.३०,पुण्यकालदिनभर, **पोंगलपर्व** केरला, **बुधास्तःपश्चि.२४।४४**
C नन्दाचार्यजयंती
D सि.यो.२०।३०तक
E **मेरुत्रयोदशी**, आदिनाथनिर्वाण कल्याणंक जैन
F **दिवस६०वाँ**, द्वापरयुगादिः, स्नानमेला प्रयागराज, **बुधोदयःपूर्वस्यां १७।४९**, सर्वार्थसिद्धियोग ८।२५से, **सूर्यग्रहण**

माघ कृ.८ रवि प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता.१८ जनवरी

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	६	८	९	९	१०	४	९	३
अं.	४	२	२२	१०	८	२१	२७	१६	१६
क.	१	४१	२५	१	५४	७	३०	३	३
वि.	५८	५१	३८	१७	३०	१७	४०	१६	१६
गति	६१	७४४	४५	७०	१४	५९	१	३	३
	५	३०	५२	१	१०	३४	५५	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्र चरण	उषा.३	चित्रा.३	पूषा.३	श्रव.१	उषा.४	पूभा.१	उफा.१	श्रव.२	पुष्य.४
नाड़ी	नीरा	दहना	सौम्या	अमृता	नीरा	नीरा	नीरा	अमृता	जला



॥ फलम् ॥

मकर राशि में चार ग्रह, रवि राहु आगार। राजनीति सह द्विन्द से, होवे बहुत विगार।। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तनावपूर्ण बनेगी। भयातंक से दुःखित जनता भागती फिरेगी। भारतीय राजनीति में उठा-पटक के योग बन रहे हैं। मासान्तर्गत दो ग्रहण युद्धोत्पात के लक्षण कहे गये हैं- **यदैकमासे ग्रहण जायते चन्द्र सूर्ययोः। शस्त्रकोपैःक्षयं यान्ति तदा भूपा परस्परम्।।** प्रभावी राष्ट्रनायक को समय अनुकूल नहीं। सीमावर्ती राज्यों में चौकसी बरतनी चाहिये। चुनाव परिचर्चा जोर पकड़ सकती है। **बाजारभाव-** मकर की बैठी संक्रांतिमु.३०साम्यार्घकारक है। **जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकें, मंहगाई हट जाय।।** इस योग का फल प्रभावी नहीं होगा, क्योंकि सोमवती अमावस्या में सूर्यग्रहण तेजी देता है। साम्प्रदायिक तनाव, झगड़े-झमेले होने से मंहगाई बढ़ेगी। अतः चालू मार्कीट का रुख अनिश्चित रहेगा। पंचग्रही योग असाध्य रोग का लक्षण ना है। **मौसम-** गुरुअस्त, बुधोदय तथा ग्रहराशि नक्षत्रचारवशात् मौसम खराब होगा। **ग्रहाणामुदये वाऽस्ते राश्यान्तरगतेऽयने। संयोगेवाऽपि पक्षान्ते प्रायोवृष्टिःप्रजायते।।** वायुवेग, विद्युत्पात, मेघगर्जन, हल्की र्षा तो कहीं ओलावृष्टि, हिमपात, दुर्दिन होने से क्षति होगी। उत्तरभारत में शीतलहर चलेगी। **ग्रहदर्शन-** सायं पश्चिम में शुक्र, प्रातः पश्चिमनत् शनि को स्पष्ट देख सकते हैं। मंगल, बुध व गुरु अस्त हैं।

कु.ता.२६जनवरी माघ कृ.३० चन्द्रे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	९	८	९	९	१०	४	९	३
अं.	१२	८	२८	०	१०	२८	२७	१५	१५
क.	१०	३१	३३	३२	४८	४९	१२	३७	३७
वि.	२६	५५	३४	५०	०	४४	३८	५०	५०
गति	६१	७२४	४६	४९	१४	५५	२	३	३
	०	११	९	४०	१३	१८	४१	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचरण	श्रव.१	उषा.४	उषा.१	उषा.२	श्रव.१	पूभा.३	उफा.१	श्रव.२	पुष्य.४
नाड़ी	अमृता	नीरा	नीरा	नीरा	अमृता	नीरा	नीरा	अमृता	जला

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० माघ शुक्ल पक्ष २१

ता.२७ जनवरी से ९ फर. सन् २००९ ई. तक। शिशिरऋतु, रविउत्तरायणे, दक्षिण गोले।। केतकीअहर्गण:६१४१

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल
१	मं	२०	२५	१५	२१	श्र	९	१३	१०	५२	व्य	५४	७	२८	५०	बव	२०	२५
२	बु	२४	१७	१६	५४	ध	१४	२७	१२	५८	वरि	५३	५०	२८	४३	कौ	२४	१७
३	गु	२७	२	१८	०	शत	१८	४२	१४	४०	परि	५२	४०	२८	१५	गर	२७	२
४	शु	२८	४०	१८	३८	पूभा	२१	५०	१५	५४	शि	५०	३५	२७	२४	वि	२८	४०
५	श	२९	०	१८	४६	उभा	२३	४३	१६	३९	सि	४७	३०	२६	१०	बा	२९	०
६	र	२८	०	१८	२१	रे	२४	२०	१६	५३	सा	४३	२५	२४	३१	तै	२८	०
७	चं	२५	३७	१७	२४	अ	२३	३७	१६	३६	शुभ	३८	१२	२२	२६	व	२५	३७
८	मं	२१	५५	१५	५४	भर	२१	३८	१५	४७	शु	३२	०	१९	५६	बव	२१	५५
९	बु	१६	५८	१३	५५	कृ	१८	२२	१४	२९	ब्र	२४	४८	१७	३	कौ	१६	५८
१०	गु	१०	५७	११	३०	रो	१४	५	१२	४५	ऐं	१६	४७	१३	५०	गर	१०	५७
११	शु	४	०	८	४३	मृग	८	५३	१०	४०	वै	८/५८	०/४२	१०/३०	११/३६	वि	४	०
१२	शु	५६	२५	२९	४१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१३	श	४८	३३	२६	३१	आ	३/५६	५/५७	६/२१	२०/५३	प्री	४१	१३	२६	४७	कौ	२	३०
१४	र	४०	३५	२३	२०	पु	५०	५५	२७	२८	आ	३९	४२	२२	५१	गर	१४	३३
१५	चं	३३	५	२०	१९	श्ले	४५	२३	२५	१४	सौ	३०	३०	१९	१७	वि	६	५०

तिथि	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैण्डर्ड टाइम सूर्योदयास्त उदय घं.	उदय मि	अस्त घं.	अस्त मि	तारीखें रा.मा	प्र.मा	मु.मे	ता.	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि	दैनिक रवि स्पष्ट प्रात:५घं३०मि रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	
१	२६	४२	७	११	१७	५२	७	१५	२९	27	कु२३।५५	९	१३	११	२६	६१/०	पंचकप्रारम्भ २३।५५,चन्द्रदर्शनमु.३०,मकरमें मंगल२६।२९,मीनA
२	२६	४५	७	११	१७	५३	८	१६	१	28	कुम्भ	९	१४	१२	२६	६०/५९	सफर२मुस., बाबारामदेवबीज, बाबालालदयालज. (रामानन्दसंप्रदाय)
३	२६	४८	७	११	१७	५४	९	१७	२	29	कुम्भ	९	१५	१३	२५	५८	भद्रा ३०।१९से
४	२६	५०	७	१०	१७	५४	१०	१८	३	30	मी१।३६	९	१६	१४	२३	५६	भ.१८।३८तक, उभायांशुक्र२९।४१, तिल४,वरद्चतुर्थी, कुन्दपुष्पादिB
५	२६	५३	७	१०	१७	५५	११	१९	४	31	मीन	९	१७	१५	२१	५५	**वसन्तपंचमी**, श्रीसरस्वतीजयंती, रतिकामोत्सवः, तक्षकपूजा, ऋषिC
६	२६	५७	७	९	१७	५६	१२	२०	५	1	मे१६।५३	९	१८	१६	१४	५४	पंचकस.१६।५३, मन्दारषष्ठी, मार्गीबुध:२२।१०, फरवरी२ता.D
७	२७	०	७	९	१७	५७	१३	२१	६	2	मेष	९	१९	१७	८	५२	भ.१७।२४से २८।३९तक, भानु-रथ-आरोग्य-अचलासप्तमी, मन्वादिE
८	२७	५	७	८	१७	५८	१४	२२	७	3	वृ२१।२८	९	२०	१८	०	५२	श्रीदुर्गाष्टमी, **भीष्माष्टमीव्रत**, सर्वार्थसिद्धियोग १५।४७से
९	२७	८	७	८	१७	५९	१५	२३	८	4	वृष	९	२१	१८	५२	५०	सर्वार्थसिद्धियोग, **सौभाग्यसूचक रोहिणीव्रत**, रवियोग
१०	२७	१०	७	७	१७	५९	१६	२४	९	5	मि२३।४३	९	२२	१९	४२	४९	भ.२२।७से, **जयाएकादशीव्रतस्मार्त्त**, धनि.रवि:२९।२६, श्रव.२गुरु:F
११	२७	१३	७	७	१८	०	१७	२५	१०	6	मिथुन	९	२३	२०	३१	४७	भ.८।४३तक, जया११व्रतवैष्णव, **भीष्मद्वादशी**, भैनीग्यारस(बंगाल)
१२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	द्वादशीक्षयः, त्रिस्पृशा महाद्वादशी
१३	२७	१७	७	६	१८	१	१८	२६	११	7	क२४।३०	९	२४	२१	१८	४४	**प्रदोषव्रत, मकरमें बुध**२१।४१, कल्पादिः पंचखण्डपीठमेलाविराटनगर
१४	२७	२०	७	६	१८	२	१९	२७	१२	8	कर्क	९	२५	२२	२	४५	भ.२३।२०से, **पूर्वोदयभौम**:२५।२९, श्रीमद्भागवतपाठारम्भः, जितेन्द्रG
१५	२७	२२	७	५	१८	२	२०	२८	१३	9	सिं२५।१४	९	२६	२२	४७	४३	भ.९।४९तक, अन्वा., स्नानादिमाघीपूर्णिमा,स्नानपूर्ण, **गुरुरविदास**H

A में शुक्रप्र.१२।५, लालालाजपतरायज. B से देवपूजन,गांधीजीपुण्यः,सर्वोदयपखवाराशुरुः C दुर्वासा मेला मथुरा D २८, स.सि.यो.१६।५३से, दारिद्रयहरण६ शीतलाषष्ठी(ब) E देवनारायणज. गुर्जर F २३।३,वक्रीपृफा.४शनि:१९।१७,ठा.राधादामोदरप्राकट्योत्सव:वृन्दावन,पृभा.३हर्शल२१६।१० G रथयात्राजैन,रामचरणस्नेहीज.श्रीललिताज.,स.सि.यो.२७।२८तक H ज.,श्रवणेभौम:२४।५९,माघकविज.

माघ शु.८ भौमे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट कु.ता. ३ फरवरी

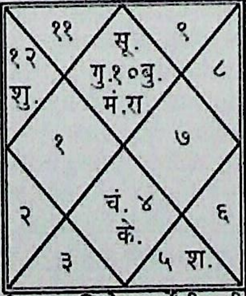
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	०	९	८	९	११	४	९	३
अं.	२०	२०	४	२७	१२	५	२६	१५	१५
क.	१८	४२	४३	५६	४१	५३	४८	१२	१२
वि.	०	२६	३४	१५	२६	५	३९	२४	२४
गति	६०/५२	८३८/२५	४६/२३	१५/३८	१४/९	४९/३०	३/२२	३/११	३/११
स्थिति	मा./उ.	मा./उ.	मा./अ.	मा./उ.	मा./अ.	मा./उ.	व./उ.	व./अ.	व./अ.
नक्षत्रचार	श्रव.४	भर.३	उषा.३	उषा.२	श्रव.२	उभा.२	उफा.१	श्रव.२	पुष्य.४
नाड़ी	अमृता	चण्डा	नीरा	नीरा	अमृता	मिश्रा	नीरा	अमृता	जला



|| फलम् ||

एक राशौ यदा यान्ति चत्वार:पंच खेचरा:। प्लावयन्ति महीसर्वा रुधिरेण जलेन वा।। किन्हीं देश-प्रदेशों में सामाजिक, राजनीतिक लड़ाई-झगड़े होंगे। कहीं जलाधिक्य तो कहीं अग्निकांड,ज्वालामुखी विस्फोट, भूकम्प, भूस्खलन, झन्झावात के कारण क्षति होगी। **सम सप्तक बहु ग्रह हों, अथवा एकहि संग। प्रजा कष्ट पावे अति, जन विग्रह का रंग।।** इस कुयोग के चलते देश के कर्णधारों को सचेत रहना चाहिए। महाशक्तियाँ अन्दरूनी मामलों में हस्तक्षेप करेंगी। **बाजारभाव-** चन्द्रदर्शनमु.३०साम्यार्घकारक है। मकरका मंगल घी तेलादिमें तेजी करेगा- **मकरेच स्थिते भौमे घृत तैल महार्घता।** तिथियों की ह्रास-वृद्धिसे पदार्थोंकी कमी पड़ेगी- **कृष्णपक्ष की तिथि बढ़े, शुक्लपक्ष घट जाय। एक वस्तु तो क्या घटे, सभी वस्तु घट जाय।।** ऊनी-सूती वस्त्र, मूंगफली,चाय,काफी,मेवा,पान-सुपारी,चावल,दाल,सोयाबीन,सूरजमुखी,बारदाना, रसकश, निर्माणसामग्री तथा शेयर-सट्टा बाजार में तेजी सम्भव है। कल-कारखाने, उद्योगधन्धे, सरकारी विभागोंमें जनाक्रोश उभरकर सामने आयेगा। **मौसम-** पक्षारम्भ और अन्तमें यत्र-तत्र बादलचाल, हल्कीवर्षा, मेघगर्जन, बिजली, ओलावृष्टि का संयोग बनेगा। किंवा हिमपात, यान-खान कुघटनाचक्र सम्भव है। **ग्रहदर्शन-** सायं पश्चिममें शुक्र, प्रातः पूर्वीक्षितिज में बुध तथा पश्चिमनत् शनि को देख सकते हैं। ता.८में मंगल उदय होगा। गुरु अस्त है।

कु.ता.९ फरवरी माघ शु.१५ चन्द्रे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	९	३	९	९	९	११	४	९	३
अं.	२६	१७	९	०	१४	१०	२६	१४	१४
क.	२२	५४	२२	५४	६	३६	२७	५३	५३
वि.	४७	१७	१३	३०	३	२४	१६	१९	१९
गति	६०/४३	८८०/५२	४६/३२	४६/२०	१४/३	४३/४५	३/४९	३/११	३/११
स्थिति	मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	मा./उ.	मा./अ.	मा./उ.	व./उ.	व./अ.	व./अ.
नक्षत्रचार	धनि.२	पुष्य.२	उषा.४	उषा.२	श्रव.२	उभा.३	पूफा.४	श्रव.२	पुष्य.४
नाड़ी	अमृता	अमृता	नीरा	नीरा	अमृता	मिश्रा	जला	अमृता	जला

श्रीसम्वत्२०६५ शाके १९३० फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

ता. १० से २५ फरवरी सन् २००९ ई. तक।

शिशिरऋतु, रविउत्तरायणे, दक्षिणगोले।। केतकीअहर्गणः६१५५

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टे.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टे.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि	अस्त घं.	मि	रा.मा	प्र.मा	मु.स.	फ़र.	चन्द्र संचार स्टे.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	
१	मं	२६	१५	१७	३५	म	४०	३५	२३	१९	शो	२१	५०	१५	४९	कौ	२६	१५	२७	२५	७	५	१८	३	२१	२९	१४	10	सिंह	९	२७	२३	३०	६०/४२	इष्टिः, पूर्वोदय गुरुः ८।२९ गुरूदय
२	बु	२०	३५	१५	१८	पूफा	३७	०	२१	५२	अति	१४	७	१२	४३	गर	२०	३५	२७	३०	७	४	१८	४	२२	३०	१५	11	कर७।३९	९	२८	२४	११	४०	भद्रा २६।२७से
३	गु	१६	२२	१३	३६	उफा	३४	५८	२१	२	सु	७	३०	१०	३	वि	१६	२२	२७	३३	७	३	१८	४	२३	१	१६	12	कन्या	९	२९	२४	५१	३९	भ.१३।३६तक, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय२१।१०, कुम्भमें सूर्य १९।२४A
४	शु	१३	५३	१२	३५	ह	३४	४२	२०	५५	धृ	२/५८	१८/३०	७/३०	५७/२६	बा	१३	५३	२७	३८	७	२	१८	५	२४	२	१७	13	कन्या	१०	०	२५	३०	३८	कुम्भमें नेपच्यून२९।१५, तेजीमन्दीसूचकांक १४२६, (वि.मु.हस्त)
५	श	१३	१७	१२	२०	चि	३६	२३	२१	३४	गंड	५६	१७	२९	३२	तै	१३	१७	२७	४२	७	१	१८	६	२५	३	१८	14	तु.९।१४	१०	१	२६	८	३६	भागवत्भवनप्रतिष्ठादि., वेलंटाइनडे, (वि.मु.स्वाती) स.सि.यो.२१।३४से
६	र	१४	४५	१२	५४	स्वा	३९	५७	२२	५९	वृ	५५	३५	२९	१४	व	१४	४५	२७	४७	७	०	१८	७	२६	४	१९	15	तुला	१०	२	२६	४४	३५	भ.१२।५४से २५।३४तक, (विवाह मुहूर्त स्वाती)
७	चं	१८	५	१४	१३	वि	४५	१२	२५	४	ध्रु	५६	१०	२९	२७	बव	१८	५	२७	५३	६	५९	१८	८	२७	५	२०	16	वृ.८।३३	१०	३	२७	९	३५	चैहल्लुम ४०मुस., (विवाहमुहूर्तअनुराधा), सर्वार्थसिद्धियोग २५।४से
८	मं	२३	०	१६	१०	अनु	५१	५३	२७	४३	व्या	५७	४५	३०	४	कौ	२३	०	२७	५५	६	५८	१८	८	२८	६	२१	17	वृश्चिक	१०	४	२७	५४	३३	श्रीजानकीव्रत, अष्टकाश्राद्ध, (विवाह मुहूर्त अनुराधा)
९	बु	२९	०	१८	३४	ज्ये	५९	२०	३०	४२	ह	६०	०	-	-	गर	२९	०	२७	५८	६	५८	१८	९	२९	७	२२	18	ध३०।४२	१०	५	२८	२७	३२	स.गुरुरामदासनवमी, सा.मीनभानुः१८।१७, वसंतऋतुप्रा., श्रवणेबुधः B
१०	गु	३५	४०	२१	१३	मू	६०	०	-	-	ह	०	२	६	५८	व	२	२०	२८	०	६	५७	१८	९	३०	८	२३	19	धनु	१०	६	२८	५९	३०	भ.७।५३से २१।१३तक, शतेरविः९।५२, (वि.मु.मूल), म.दयानन्दज.
११	शु	४२	२०	२३	५२	मू	७	१०	९	४८	वज्र	२	२८	७	५५	बव	९	०	२८	५	६	५६	१८	१०	१	९	२४	20	धनु	१०	७	२९	२९	२८	विजयाएकादशीव्रत(सबका), रा.फाल्गुनारम्भः, श्रव.३गुरुः७।१५
१२	श	४८	३०	२६	१९	पूषा	१४	४५	१२	४९	सि	४	४७	८	५०	कौ	१५	२५	२८	१०	६	५५	१८	११	२	१०	२५	21	म२९।३०	१०	८	२९	५७	२७	पक्षवर्धिनीद्वादशी, (विवाहमुहूर्तउ.षा.)
१३	र	५३	४५	२८	२४	उषा	२१	४०	१५	३४	व्य	६	३८	९	३३	गर	२१	७	२८	१३	६	५४	१८	११	३	११	२६	22	मकर	१०	९	३०	२५	२६	भ.२८।२४से, प्रदोषव्रत, (वि.मु.उ.षा.), सर्वार्थसिद्धियोग १५।३४तक
१४	चं	५७	४७	३०	०	श्र	२७	३३	१७	५४	वरि	७	४२	९	५८	वि	२५	४८	२८	१७	६	५३	१८	१२	४	१२	२७	23	कु३०।५०	१०	१०	३०	५१	२५	भ.१७।१२तक, महाशिवरात्रिव्रत, रुद्राभिषेक चतुर्दशज्योतिर्लिङ्गपूजाC
३०	मं	६०	०	-	-	ध	३२	१२	१९	४५	परि	७	५५	१०	२	च	२९	१०	२८	२२	६	५२	१८	१३	५	१३	२८	24	कुम्भ	१०	११	३१	१६	२३	पंचकप्रारम्भ ६।५०, अन्वाधान, पितृकार्येऽमा, सहादतेइमामहसन
३०	बु	०	३५	७	५	शत	३५	३८	२१	६	शि	७	५	९	४१	ना	०	३५	२८	२५	६	५१	१८	१३	६	१४	२९	25	कुम्भ	१०	१२	३१	३९	२२	इष्टिः, स्नानादिअमापुण्यः, मन्वादिः, शिवखप्परपूजा, चन्द्रशेखरD

A संक्रांतिमु.४५, बङ्ग व सौरमास फाल्गुनारम्भः, श्रीनर्मदाज., सर्वोदयदि., दीनबन्धुएण्ड्रयूजज. B ११।१५,रेवत्यांशुक्रः१४।५३

C श्रीवैद्यनाथजयंती, ऋषिबोधोत्सवः, मे.राठौड़ा जिला रामपुर, स.सि.योग १७।५४तक D पुण्यः, आखरीचहारशाम्बा

फाल्गुन कृ.८ भौमे प्रातः५घं ३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता.१७ फरवरी

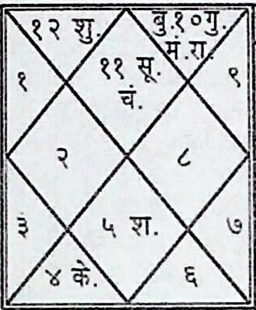
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	७	९	९	९	११	४	९	३
अं.	४	५	१५	८	१५	१५	२५	१४	१४
क.	२७	३३	३५	३४	५७	५३	५५	२७	२७
वि.	५४	२१	५	१	४०	३५	०	५२	५२
गति	६० ३३	७९१ १८	४६ ४२	६८ ५८	१३ ५०	३३ ४८	४ १८	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	धनि.४	अनु.१	श्रव.२	उषा.४	श्रव.२	उभा.४	पूफा.४	श्रव.२	पुष्य.४
नाड़ी	अमृता	गण्डा	अमृता	नीरा	अमृता	सौम्या	ज्वाला	अमृता	ज्वाला



|| फलम् ||

विश्वमें शुभाशुभ फल समान होंगे। आतंकी, असामाजिकतत्त्व महानगरों में भय उत्पन्न करेंगे। विरोधी सम्प्रदाय एक-दूसरे से टकरा सकते हैं। **बुधस्य पंचवाराःस्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुखसम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते।।** उत्पादन वृद्धि खेती में पैदावार अच्छी होने से सौख्य-समृद्धि बढ़ेगी। सरकारी तौर पर राहत कार्योंकी घोषणा हो सकती है। राजनीतिमें उठापटक के योग बन रहे हैं। प्रभावी राजनेताको समय सानुकूल नहीं। **बाजारभाव-** तृतीया में बैठी कुम्भ संक्रांतिमु.४५ भावों में गिरावट का संकेत है। मकर में अंशात्मक ग्रहयुद्ध बाजार को बहुत गर्म कर सकता है। **कृष्ण पक्ष की तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाय। एक वस्तु तो क्या घटे, सभी वस्तु घट जाय।।** वाहन, मशीनरी, श्रृंगार-निर्माण सामग्री, रसीले पदार्थ, मादकद्रव्य, फल-फूल, मसाले, रंग-रोगन आदि तेज हो सकते हैं। सट्टा, शेयर, सर्राफा में दो तरफा चाल चलेगी। **मौसम-** पक्षारम्भ और अन्त में खराब होगा। यत्र-तत्र बादलचाल, मेघगर्जन, बिजली, गाज तो कहीं ओलावृष्टि का संयोग बनेगा। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात से शीतलहर प्रभावित करेगी। भूस्खलन, भूकम्पादि महोत्पात, यान-खान कुघटनाचक्र की आशंका जानें। **ग्रहदर्शन-** प्रातः पूर्वीक्षितिज के ऊपर मंगल, बुध, गुरु का योग श्रृंखलाबद्ध दिखेंगा। सायं पश्चिम में शुक्र तथा पूर्व में उदित होते शनि को स्पष्ट देख सकते हैं।

कु.ता.२५फरवरी फाल्गुनकृ.३०बुधे प्रातः५घं.३०मि.के ग्रहस्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	१०	९	९	९	११	४	९	३
अं.	१२	११	२१	१८	१७	१९	२५	१४	१४
क.	३१	४५	४९	३५	४७	३९	१९	२	२
वि.	३९	१२	२१	१८	२३	४३	२४	२६	२६
गति	६० २२	७६२ ४८	४६ ५२	८२ ४	१३ ३३	२० २५	४ ३७	३ ११	३ ११
स्थिति	मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	शत.२	शत.२	श्रव.४	श्रव.३	श्रव.३	रेव.१	पूफा.४	श्रव.२	पुष्य.४
नाड़ी	ज्वाला	ज्वाला	अमृता	अमृता	अमृता	सौम्या	ज्वाला	अमृता	ज्वाला

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० फाल्गुन शुक्ल पक्ष२३ — ता. २६ फरवरी से ११ मार्च सन् २००९ ई. तक।

वसन्तऋतु, रविउत्तरायणे, दक्षिणगोले।। केतकीअहर्गण:६१७१

भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टें.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टें.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टें.टा घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टें.टा घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	उदय घं.	मि	अस्त घं.	मि	रा.फा	प्र.फा	मु.स.	ता.	चन्द्र संचार स्टें.टा. रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रात:५घं३०मि रा.	अं.	क.	वि.	गति	विवरण
१	गु	२	३	७	३९	पूभा	३७	४७	२१	५७	सि	५	१८	८	५७	बव	२	३	२८	३०	६	५०	१८	१४	७	१५	३०	26	मी१५।४४	१०	१३	३२	१	६०/११	चन्द्रदर्शनमु.३०, धनिष्ठायांभौम:२७।५३, (विवाहमुहूर्त उभा.)
२	शु	२	१०	७	४२	उभा	३८	५०	२२	२२	सा	२/५८	३०/४७	७/३०	५०/२१	कौ	२	१०	२८	३०	६	५०	१८	१४	८	१६	१	27	मीन	१०	१४	३२	२०	१८	फुलैरादूज, श्रीरामकृष्णप.ह.ज., रविउलअवल३मुस.,(वि.मु.उभा.)A
३	श	१	१५	७	१९	रे	३८	५०	२२	२१	शु	५४	२३	२८	३४	गर	१	१५	२८	३५	६	४९	१८	१५	९	१७	२	28	मेर.२।२१	१०	१५	३२	३८	१४	भ.१८।५५से ३०।३२तक, **पंचकस.२२।२१**,धनि.बुध:१५।९(वि.B
४	शा	५९	१८	३०	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	चतुर्थीक्षय:
५	र	५६	३०	२९	२४	अ	३७	५७	२१	५१	ब्र	४९	१७	२६	३१	बव	२७	५५	२८	४०	६	४८	१८	१६	१०	१८	३	1	मेष	१०	१६	३२	५२	१४	**मार्च मास ३ ता.३१**, (वि.मु.अश्वि.), सर्वार्थसिद्धियोग २१।५९तक
६	चं	५२	५३	२७	५६	भर	३६	१८	२१	१८	ऐं	४३	३३	२४	१२	कौ	२४	४३	२८	४५	६	४७	१८	१७	११	१९	४	2	वृ२७।४	१०	१७	३३	६	१२	
७	मं	४८	३७	२६	१३	कृ	३३	५७	२०	२१	वै	३७	१५	२१	४०	गर	२०	४५	२८	४७	६	४६	१८	१७	१२	२०	५	3	वृष	१०	१८	३३	१८	१०	भद्रा २६।१३से, सर्वार्थसिद्धियोग २०।२१तक
८	बु	४३	४५	२४	१५	रो	३०	५८	१९	८	वि	३०	२८	१८	५६	वि	१६	१२	२८	५२	६	४५	१८	१८	१३	२१	६	4	मि३०।२६	१०	१९	३३	२८	८	भ.१३।१४तक, **होलाष्टकारम्भ**,पूभा.रवि:१६।६,**कुम्भमें बुध**२७।४७C
९	गु	३८	२५	२२	५	मृग	२७	३०	१७	४३	प्री	२३	१७	१६	२	बा	११	७	२८	५८	६	४३	१८	१८	१४	२२	७	5	मिथुन	१०	२०	३३	३६	५	ऐशवेशडे, लट्ठमार होली बरसाना
१०	शु	३२	३७	१९	४५	आ	२३	३५	१६	८	आ	१५	४५	१३	०	तै	५	३	२९	३	६	४२	१८	१९	१५	२३	८	6	मिथुन	१०	२१	३३	४१	४	भ.३०।३२से, श्रवण४ गुरु:२८।२३, लट्ठमारहोली नन्दगांव, स.D
११	शा	२६	३३	१७	१८	पुन	१९	२२	१४	२६	सौ	७/५९	५५/५५	९/३०	५१/३१	वि	२६	३३	२९	७	६	४१	१८	२०	१६	२४	९	7	क.८।५१	१०	२२	३३	४५	१	भ.१७।१८तक, **आमलकीएकादशीव्रत (सबका)**, **कुम्भमें मंगल**E
१२	र	२०	२५	१४	५०	पु	१५	३	१२	४१	अति	५२	३	२७	२९	बा	२०	२५	२९	१०	६	४०	१८	२०	१७	२५	१०	8	कर्क	१०	२३	३३	४६	५९/५९	**गोविन्दद्वादशी, प्रदोषव्रत**, विश्वमहिलादि., जयाद्वादशी,स.सि.यो.F
१३	चं	१४	२२	१२	२४	श्ले	१०	४७	१०	५८	सु	४४	२०	२४	२३	तै	१४	२२	२९	१२	६	३९	१८	२१	१८	२६	११	9	सिं१०।५८	१०	२४	३३	४५	५७	शतभिषायां बुध:१०।२५
१४	मं	८	४५	१०	८	म	६	५८	९	२५	धृ	३७	८	२१	२९	व	८	४५	२९	१८	६	३८	१८	२१	१९	२७	१२	10	सिंह	१०	२५	३३	४२	५४	भ.१०।८से२१।८तक, अन्वा., सत्यव्रतपूनो, **होलिकादहन**२०।१३G
१५	बु	३	४७	८	८	पूफा	३	४५	८	७	शूल	३०	३२	१८	५०	बव	३	४७	२९	२२	६	३७	१८	२२	२०	२८	१३	11	क१३।५३	१०	२६	३३	३६	५२	इष्टि:,पूर्णिमापुण्य:,छारेंडी,धुलैण्डी,वसन्तोत्सव१,चैतन्यमहाप्रभुज.H

A स.सि.यो.व अ.सि.यो.२२।२२से,पातस्पर्श:११।१०,मोक्ष:२३।२४ B मु.रे.),पं.लेखरामवीरतृतीया,रा.विज्ञानदि. C स.सि.यो.,**रोहिणीव्रत**,अष्टाह्निकाप्रा.,श्रीदादूदयालज. D सि.योग १६।८से E १६।३१, **वक्रीशुक्र**:१३।१०, लट्ठमारहोलीजन्मभूमि, मे.खाटूश्यामजी(राज.),रामचरणस्नेहीज.फूलडोलमे.शाहपुरा(मेवाड़) F १२।४१तक G उपरान्त,नवान्नेष्टिदारुणरात्रिहुताशनी,मन्वादि,श्रव.१ राहु:पुष्य३केतु:१३।३,**बारावफात**, मुनिनाथूलालपुण्य:जैन, वायुपरीक्षा, ज्वालानिष्कासन फालेनगांवमथुरामें H अष्टा.स., गणगौरपूजनारम्भ:, अभ्यङ्गस्नानं, आम्रकुसुमप्राशनं, पंखामेलाझज्जर,मे.आनन्दपुरसाहिब(पं.),होलामेला रामधामखेडापा जोधपुर

फाल्गुन शु.८ बुधे प्रात:५घं ३०मि.के ग्रहस्पष्ट कु.ता. ४ मार्च

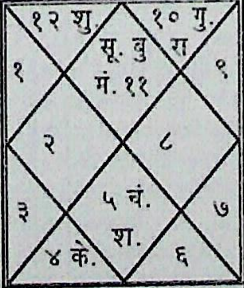
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	१	९	९	९	११	४	९	३
अं.	१९	१५	२७	२८	१९	२१	२४	१३	१३
क.	३३	१९	१७	३६	२१	१९	४६	४०	४०
वि.	२८	३८	३७	१०	१४	१३	३५	१०	१०
गति	६० / ८	८४५ / ५१	४६ / ५६	९० / ३६	१३ / १३	५ / २२	४ / ४५	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	शत.४	रोहि.२	धनि.२	धनि.२	श्रव.३	रेव.२	पूफा.४	श्रव.२	पुष्य.४
नाड़ी	जला	वायु	अमृता	अमृता	अमृता	दहना	जला	अमृता	जला



|| फलम् ||

सम सप्तक शनि भौम हो, अथवा एकहि संग। प्रजा कष्ट ओ अन्न से, जन विग्रह का रङ्ग।। किसी देश-प्रदेश, महानगर में भारी विद्रोह, साम्प्रदायिक दंगे, आतंकी गतिविधियाँ जानलेवा सिद्धि हो सकती हैं। उपयोगी वस्तुओं के अभाव में हो-हल्ला मचेगा। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान-इराक आदि में गृहयुद्ध, सत्तापलट के आसार बन सकते हैं। **मीनराशि गते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं भवेत्। मेदिनी सुख संयुक्ता भविष्यति न संशय:।।** अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में शान्ति के प्रयास किए जायेंगे। **बाजारभाव-** चन्द्रदर्शनमु.३०साम्यार्घकारक है। **निशापतेश्च तनय: शनिक्षेत्रे यदाभवेत्। समभाव: सुखं दु:खं तथैव च शुभाशुभम्।।** जिस वर्ष होली पापवार की होती है, उस वर्ष उपद्रव होने पर मंहगाई बढ़ती है। मेवा, मावा, बूरा, बताशा, खेल-खिलौने, फल-फूल, हरी सब्जियाँ, श्रृंगार-निर्माणसामग्री, रंगरोगन, मशीनरी, वाहन, मिर्च-मसाले, दाल, चावल, शरबत, अचार, मुरब्बा, पेयजल, रसकश, सर्राफा, शेयर तथा सट्टाबाजार में तेजी का रुख बनेगा। **मौसम-** पक्षारम्भ और अन्त में खराब होगा। यत्र-तत्र हल्की वर्षा तो कहीं बिजली, गाज, आंधी-तूफान के साथ ओले पड़ने से खड़ी फसलों में क्षति होगी। यान-खान कुघटनाचक्र सम्भव है। **ग्रहदर्शन-** प्रदोषसमये पश्चिम में शुक्र तो पूर्व में शनि को देख सकते हैं। सूर्योदय से पहले पूर्वीकपाल में मंगल, बुध, गुरु के दर्शन होंगे।

कु.ता.११ मार्च फाल्गुन शु.१५ बुधे प्रात:५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट



ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	१०	४	१०	१०	९	११	४	९	३
अं.	२६	२५	२	९	२०	२१	२४	१३	१३
क.	३३	७	४६	३४	५२	५	१३	१७	१७
वि.	३६	३१	१३	२९	३४	१८	१०	५५	५५
गति	५९ / ५२	८३२ / ४१	४६ / ५८	९८ / ३७	१२ / ४९	११ / ५९	४ / ४७	३ / ११	३ / ११
स्थिति	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	व. उ.	व. अ.	व. अ.
नक्षत्रचार	पूभा.२	पूफा.४	धनि.३	शत.१	श्रव.४	रेव.२	पूफा.४	श्रव.२	पुष्य.३
नाड़ी	नीरा	जला	अमृता	जला	अमृता	दहना	जला	अमृता	जला

श्रीसम्वत् २०६५ शाके १९३० चैत्र कृष्ण पक्ष २४ — ता. १२ से २६ मार्च सन् २००९ ई. तक।

वसन्तऋतु, रविउत्तरायणे, दक्षिणगोले।। केतकीअहर्गणः६१८५

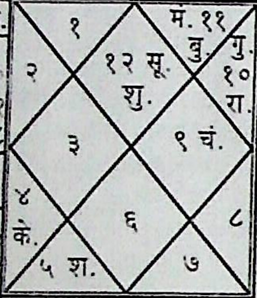
भद्रा,पंचक,ग्रहराशि नक्षत्रसंचारादिका सभी समय स्टै.टा.घं.मि.में है

तिथि	वार	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	नक्षत्र	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	योग	घटी	पल	स्टै.टा. घं.	मि	करण	घटी	पल	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घं.	मि	सूर्यास्त घं.	मि	रा.फा	प्र.फा	मु.रअ	मार्च	चन्द्र संचार स्टै.टा. रा.घं.मि	रवि रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	
१	बु	५९	४५	३०	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	प्रतिपदाक्षयः
२	गु	५७	८	२९	२७	उफा	१	३३	७	१३	गंड	२४	५५	१६	३४	तै	२८	२७	२९	२५	६	३६	१८	२२	२१	२९	१४	12	कन्या	१०	२७	३३	२८	५९/५१	सन्ततुकारामज., श्रीरङ्गजीमन्दिरोत्सव वृन्दावन, (वि.मु.हस्त)
३	शु	५६	०	२८	५९	ह	०	३७	६	५०	वृ	२०	२५	१४	४५	व	२६	३५	२९	३०	६	३५	१८	२३	२२	३०	१५	13	तु.१८।५७	१०	२८	३३	१९	५०	भ.१७।१३से २८।५९तक, कल्पादिः, **तेजीमन्दीसूचकांक** २१८२
४	श	५६	४०	२९	१४	चि	१	१८	७	५	धृ	१७	१५	१३	२८	बव	२६	२०	२९	३२	६	३४	१८	२३	२३	१	१६	14	तुला	१०	२९	३३	९	४७	**चतुर्थीव्रत** चन्द्रोदय२१।५१, **मीनमें सूर्यप्र.**१६।१६, संक्रांतिमु.१५, बङ्गA
५	र	५९	१०	३०	१३	स्वा	३	३७	८	०	व्या	१५	२८	१२	४४	कौ	२७	५५	२९	३८	६	३३	१८	२४	२४	२	१७	15	वृ.७।१३	११	०	३२	५६	४६	**रंगपंचमी**, शते.भौमः२१।२२, ईद-ए-मौलाद
६	चं	६०	०	-	-	वि	७	४५	९	३८	ह	१५	२	१२	३३	गर	३१	१५	२९	४०	६	३२	१८	२४	२५	३	१८	16	वृश्चिक	११	१	३२	४२	४४	सोमशीतलापूजन(बासोडा), एकनाथषष्ठी, **बुधास्तःपूर्वे** २३।४६B
६	मं	३	२३	७	५२	अनु	१३	२५	११	५३	वज्र	१५	५०	१२	५१	व	३	२३	२९	४५	६	३१	१८	२५	२६	४	१९	17	वृश्चिक	११	२	३२	२६	४३	भद्रा.७।५२से २०।५८तक, उभा.रविः२४।३६, पूभायांबुधः९।१९,C
७	बु	८	५२	१०	३	ज्ये	२०	२०	१४	३८	सि	१७	३७	१३	३३	बव	८	५२	२९	४७	६	३०	१८	२५	२७	५	२०	18	ध.१४।३८	११	३	३२	९	४१	शीतलासप्तमी(बासोडा), कालाष्टमी, मेला नाहरपुर(एटा)
८	गु	१५	१५	१२	३५	मू	२८	०	१७	४१	व्य	२०	०	१४	२९	कौ	१५	१५	२९	५३	६	२९	१८	२६	२८	६	२१	19	धनु	११	४	३१	५०	३९	शीतलाष्टमीपूजा, ऋषभदेवज. केसरियामेलामेवाड़, वर्षीतपप्रा.जैनD
९	शु	२२	५०	१५	१२	पूषा	३५	४३	२०	४५	वरि	२२	३०	१५	२८	गर	२१	५०	२९	५५	६	२८	१८	२६	२९	७	२२	20	म.७।२८	११	५	३१	२९	३७	भ.२८।२५से, सा.मेषभानुः१७।१५, वसन्तसम्पात्, महाविषुवदिनE
१०	श	२७	५७	१७	३८	उषा	४२	५	२२	३६	परि	२४	४०	१६	१९	वि	२७	५७	३०	०	६	२७	१८	२७	३०	८	२३	21	मकर	११	६	३१	६	३४	भ.१७।३८तक, दशमाताव्रत, सर्वार्थसिद्धियोग २३।३६से
११	र	३३	८	१९	४०	श्र	४९	३	२६	२	शि	२६	१०	१६	५३	बव	०	३५	३०	५	६	२५	१८	२७	१	९	२४	22	मकर	११	७	३०	४०	३३	**पापमोचनीएकादशीव्रत**(सबका), **मीनमें बुध** २१।३६, धनि.१गुरुःF
१२	चं	३६	५०	२१	८	ध	५३	४२	२७	५३	सि	२६	३२	१७	१	कौ	५	०	३०	१०	६	२४	१८	२८	२	१०	२५	23	कु.१४।५८	११	८	३०	१३	३२	**पंचकप्रारम्भ** १४।५८, शहीददिवस, भक्तमीराबाई जयंती
१३	मं	३८	५२	२१	५६	शत	५६	४७	२९	६	सा	२५	४३	१६	४०	गर	७	५३	३०	१२	६	२३	१८	२८	३	११	२६	24	कुम्भ	११	९	२९	४५	२९	भ.२१।५६से, **प्रदोषव्रत**, उफायांबुधः१५।५९, वारुणीपर्वसमायोग
१४	बु	३९	१७	२२	५	पूभा	५८	१८	२९	४१	शुभ	२३	३२	१५	४७	वि	९	५	३०	१७	६	२२	१८	२९	४	१२	२७	25	मी.३।३२	११	१०	२९	१४	२८	भद्रा १०।०तक **शुक्रअस्त**
३०	गु	३८	७	२१	३६	उभा	५८	२०	२९	४१	शु	२०	१०	१४	२५	च	८	४३	३०	२०	६	२१	१८	२९	५	१३	२८	26	मीन	११	११	२८	४२	२६	अन्वा., चैत्रीअमापुण्यः, मन्वादिः, **शुक्र पश्चिमास्त** ९।२०, चान्द्रG

A सौर मास चैत्रारम्भः, स.सि.यो.७।५से   B स.सि.यो.९।३८से   C वि.विकलांगदिवस   D मेलाकेलादेवीकरौली, श्रीरङ्गजीरथोत्सव वृन्दावन, अष्टकाश्राद्ध   E रविउत्तरगोले, देवों का दिनोदय, दैत्यों का संध्यांश   F २५।३०, वक्रीपूफा.३शनिः१३।७, रा.चैत्रारम्भः, वक्रीउभा.शुक्रः११।३०, **शाके१९३१प्रा.**, जलसंसाधनदि., नौचन्दीमेलाप्रा.मेरठ   G सम्वत् समाप्त, स.सि.यो.२१।४१से, श्रीरस्तु

चैत्र कृ.८ गुरौ प्रातः५घं ३०मि.के ग्रहस्पष्ट   कु.ता.१९ मार्च

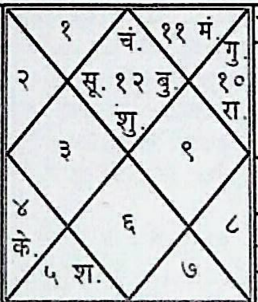
ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
रा.	११	८	१०	१०	९	११	४	९	३
अं.	४	७	९	२३	२२	१८	२३	१२	१२
क.	३१	१९	२	१६	३३	२२	३५	५२	५२
वि.	५०	४०	५	२६	१७	५०	२०	२८	२८
गति	५९	७७८	४६	१०८	१२	२९	४	३	३
	३९	४७	५९	१३	१६	५६	३८	११	११
स्थिति	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
नक्षत्रचार	उभा.१	मूल.३	शत.१	पूभा.१	श्रव.४	रेव.१	पूफा.४	श्रव.१	पुष्य.३
नाड़ी	सौम्या	दहना	जला	नीरा	अमृता	दहना	जला	अमृता	जला



॥ फलम् ॥

एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयन्ति मही सर्वा रुधिरेण जलेन वा।। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में भारी हलचल होगी। किंवा जलाधिक्य, प्राकृतिक आपदा, अग्निदाह, युद्धोत्पात, भयातंक से त्रस्त जनता दुःखी रहेगी। **एकराशौ गता ह्यते सौम्य शुक्र दिनाधिपाः। सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाःस्वल्प जलप्रदाः।।** राहु गुरु के राशि संयोगमें राजनेता एकदूसरे को नीचा दिखाने का प्रयास करेंगे। कश्मीर समस्या उभरेगी। किसी बड़े घोटाले का रहस्य खुलेगा। **बाजारभाव-** ता.१४ में बैठी मीन संक्रांतिमु. १५ तेजीकारक है। **जेहि पखवारे तिथि वढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकै, मंहगाई हट जाय।।** योगायोग के प्रभावसे भावोंमें विशेष परिवर्तन नहीं होगा। शेयर,सर्राफा,सट्टा बाजारमें दो तरफा चाल चलेगी। **शनिक्षेत्रे यदाभानुर्वस्त्राणां च महर्घता।।** कुम्भ का सूर्य वस्त्रादि के भावोंमें तेजी करेगा। **मौसम-** बुध, शुक्रास्त तथा ग्रहचारवसात् भारी मेघगर्जन, हल्की वर्षा, जहाँ-तहाँ ओलावृष्टि, पर्वतीयक्षेत्रों में बर्फबारी होने से क्षति होगी। शीतलहर चलेगी। दक्षिण सम्भागों में भारी असाध्य रोग फैल सकते हैं। **ग्रहदर्शन-** प्रातः पूर्वदिशामें मंगल, गुरु सायं पश्चिम में शुक्र तथा पूर्वदिशा में शनि स्पष्ट दिखाई देगा। ता.१६बुध ता.२६में शुक्र अस्त होगा। **कपासु राधा रमनकी, कौशिक कीन्हि विचार। सम्वत्सर फल लिख दिया, ईश जगत् आधार।।** ता.८.६.२००७

कु.ता.२६ मार्च   चैत्र कृ.३० गुरौ प्रातः५घं.३०मि.के ग्रह स्पष्ट



सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह
११	११	१०	११	९	११	४	९	३	रा.
११	३	१४	६	२३	१४	२३	१२	१२	अं.
२८	१३	३०	२०	५७	२४	३	३०	३०	क.
४२	२०	५८	१५	३८	२०	३३	१३	१३	वि.
५९	८००	४६	११६	११	३७	४	३	३	गति
२६	२	५८	५७	४४	३५	२३	११	११	
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	स्थिति
उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	
उभा.३	पूभा.४	शत.३	उभा.१	धनि.१	उभा.४	पूफा.३	श्रव.१	पुष्य.३	नक्षत्रचार
सौम्या	नीरा	जला	सौम्या	अमृता	सौम्या	जला	अमृता	जला	नाड़ी

जनवरी मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	८।५	९।४९	११।१८	१२।४५	१४।२२	१६।१९	१८।३३	२०।५१	२३।१९	१।२५	३।४४	६।१
२	८।१	९।४५	११।१४	१२।४१	१४।१८	१६।१५	१८।२९	२०।४७	२३।१५	१।२१	३।४०	५।५७
३	७।५७	९।४१	११।१०	१२।३७	१४।१४	१६।११	१८।२५	२०।४३	२३।११	१।१७	३।३६	५।५३
४	७।५३	९।३७	११।६	१२।३३	१४।१०	१६।७	१८।२१	२०।३९	२२।५७	१।१३	३।३२	५।४९
५	७।४९	९।३३	११।२	१२।२९	१४।६	१६।३	१८।१७	२०।३५	२२।५३	१।९	३।२८	५।४५
६	७।४६	९।३०	१०।५९	१२।२६	१४।३	१६।०	१८।१४	२०।३२	२२।५०	१।६	३।२५	५।४२
७	७।४२	९।२६	१०।५५	१२।२२	१३।५९	१५।५६	१८।१०	२०।२८	२२।४६	१।२	३।२१	५।३८
८	७।३८	९।२२	१०।५१	१२।१८	१३।५५	१५।५२	१८।६	२०।२४	२२।४२	०।५८	३।१७	५।३४
९	७।३४	९।१८	१०।४७	१२।१४	१३।५१	१५।४८	१८।२	२०।२०	२२।३८	०।५४	३।१३	५।३०
१०	७।३०	९।१४	१०।४३	१२।१०	१३।४७	१५।४४	१७।५८	२०।१६	२२।३४	०।५०	३।९	५।२६
११	७।२६	९।१०	१०।३९	१२।६	१३।४३	१५।४०	१७।५४	२०।१२	२२।३०	०।४६	३।५	५।२२
१२	७।२२	९।६	१०।३५	१२।२	१३।३९	१५।३६	१७।५०	२०।८	२२।२६	०।४२	३।१	५।१८
१३	७।१८	९।२	१०।३१	११।५८	१३।३५	१५।३२	१७।४६	२०।४	२२।२२	०।३८	२।५७	५।१४
१४	७।१४	८।५८	१०।२७	११।५४	१३।३१	१५।२८	१७।४२	२०।०	२२।१८	०।३४	२।५३	५।१०
१५	७।१०	८।५४	१०।२३	११।५०	१३।२७	१५।२४	१७।३८	१९।५६	२२।१४	०।३०	२।४९	५।६
१६	७।६	८।५०	१०।१९	११।४६	१३।२३	१५।२०	१७।३४	१९।५२	२२।१०	०।२६	२।४५	५।२
१७	७।२	८।४६	१०।१५	११।४२	१३।१९	१५।१६	१७।३०	१९।४८	२२।६	०।२२	२।४१	४।५८
१८	६।५९	८।४३	१०।१२	११।३९	१३।१६	१५।१३	१७।२७	१९।४५	२२।३	०।१९	२।३८	४।५५
१९	६।५५	८।३९	१०।८	११।३५	१३।१२	१५।९	१७।२३	१९।४१	२१।५९	०।१५	२।३४	४।५१
२०	६।५१	८।३५	१०।४	११।३१	१३।८	१५।५	१७।१९	१९।३७	२१।५५	०।११	२।३०	४।४७
२१	६।४७	८।३१	१०।०	११।२७	१३।४	१५।१	१७।१५	१९।३३	२१।५१	०।७	२।२६	४।४३
२२	६।४३	८।२७	९।५६	११।२३	१३।०	१४।५७	१७।११	१९।२९	२१।४७	०।३	२।२२	४।३९
२३	६।३९	८।२३	९।५२	११।१९	१२।५६	१४।५३	१७।७	१९।२५	२१।४३	२३।५९	२।१८	४।३५
२४	६।३५	८।१९	९।४८	११।१५	१२।५२	१४।४९	१७।३	१९।२१	२१।३९	२३।५५	२।१४	४।३१
२५	६।३१	८।१५	९।४४	११।११	१२।४८	१४।४५	१६।५९	१९।१७	२१।३५	२३।५१	२।१०	४।२७
२६	६।२७	८।११	९।४०	११।७	१२।४४	१४।४१	१६।५५	१९।१३	२१।३१	२३।४७	२।६	४।२३
२७	६।२३	८।७	९।३६	११।३	१२।४०	१४।३७	१६।५१	१९।९	२१।२७	२३।४३	२।२	४।१९
२८	६।२०	८।४	९।३३	११।०	१२।३७	१४।३४	१६।४८	१९।६	२१।२४	२३।४०	१।५९	४।१६
२९	६।१६	८।०	९।२९	१०।५६	१२।३३	१४।३०	१६।४४	१९।२	२१।२०	२३।३६	१।५५	४।१२
३०	६।१२	७।५६	९।२५	१०।५२	१२।२९	१४।२६	१६।४०	१८।५८	२१।१६	२३।३२	१।५१	४।८
३१	६।८	७।५२	९।२१	१०।४८	१२।२५	१४।२२	१६।३६	१८।५४	२१।१२	२३।२८	१।४७	४।४

दैनिक लग्न देखने की विधि:- जिस लग्नके नीचे जिस तारीख के सामने घं.मि. में जो समय लिखा हुआ है वह उस तारीख में उस लग्न का आरम्भ काल है। उसी समयको गत लग्नका समाप्तिकाल समझना चाहिए। जैसे- १ जनवरी को मकर लग्न के नीचे ८ घं. ५ मि. लिखा है। इससे यह स्पष्ट हो गया कि प्रातः ८ बजकर ५ मिनट पर मकर लग्न शुरु हुई है। उसी समय मकर से पहली धनु लग्न समाप्त हो गई और देखिये १ जनवरी को वृष लग्नके नीचे १४ घं. २२ मि. लिखा है। अतः इससे यह सिद्ध हुआ कि दिन के २ बजकर २२ मिनट से वृष लग्न प्रारम्भ होगी। उसी समय मेष लग्न समाप्त हो जायेगी।

फरवरी मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	७।४७	९।१६	१०।४३	१२।२०	१४।१७	१६।३१	१८।४९	२१।७	२३।२३	१।४२	३।५९	६।३
२	७।४३	९।१२	१०।३९	१२।१६	१४।१३	१६।२७	१८।४५	२१।३	२३।२०	१।३७	३।५५	५।५९
३	७।३९	९।८	१०।३५	१२।१२	१४।९	१६।२३	१८।४१	२०।५९	२३।१७	१।३३	३।५१	५।५५
४	७।३५	९।४	१०।३१	१२।८	१४।५	१६।१९	१८।३७	२०।५५	२३।१३	१।२९	३।४७	५।५१
५	७।३१	९।०	१०।२७	१२।४	१४।१	१६।१५	१८।३३	२०।५१	२३।९	१।२५	३।४३	५।४७
६	७।२७	८।५६	१०।२३	१२।०	१३।५७	१६।११	१८।२९	२०।४७	२३।५	१।२१	३।३९	५।४३
७	७।२३	८।५२	१०।१९	११।५६	१३।५३	१६।७	१८।२५	२०।४३	२३।१	१।१७	३।३५	५।३९
८	७।१९	८।४८	१०।१५	११।५२	१३।४९	१६।३	१८।२१	२०।३९	२२।५७	१।१३	३।३१	५।३५
९	७।१५	८।४४	१०।११	११।४८	१३।४५	१५।५९	१८।१७	२०।३५	२२।५३	१।९	३।२७	५।३१
१०	७।११	८।४०	१०।७	११।४४	१३।४१	१५।५५	१८।१३	२०।३१	२२।४९	१।५	३।२३	५।२७
११	७।७	८।३६	१०।३	११।४०	१३।३७	१५।५१	१८।९	२०।२७	२२।४५	१।१	३।१९	५।२३
१२	७।३	८।३२	९।५९	११।३६	१३।३३	१५।४७	१८।५	२०।२३	२२।४१	०।५७	३।१५	५।१९
१३	६।५९	८।२८	९।५५	११।३२	१३।२९	१५।४३	१८।१	२०।१९	२२।३७	०।५३	३।११	५।१५
१४	६।५५	८।२४	९।५१	११।२८	१३।२५	१५।३९	१७।५७	२०।१५	२२।३३	०।५०	३।७	५।११
१५	६।५१	८।२०	९।४७	११।२४	१३।२१	१५।३५	१७।५३	२०।११	२२।२७	०।४६	३।३	५।७
१६	६।४७	८।१६	९।४३	११।२०	१३।१७	१५।३१	१७।४९	२०।७	२२।२३	०।४२	२।५९	५।३
१७	६।४३	८।१२	९।३९	११।१६	१३।१३	१५।२७	१७।४५	२०।३	२२।१९	०।३८	२।५५	४।५९
१८	६।३९	८।८	९।३५	११।१२	१३।९	१५।२३	१७।४१	१९।५९	२२।१५	०।३४	२।५१	४।५५
१९	६।३५	८।४	९।३१	११।८	१३।५	१५।१९	१७।३७	१९।५५	२२।११	०।३०	२।४७	४।५१
२०	६।३१	८।०	९।२७	११।४	१३।१	१५।१५	१७।३३	१९।५१	२२।७	०।२६	२।४३	४।४७
२१	६।२७	७।५६	९।२३	११।०	१२।५७	१५।११	१७।२९	१९।४७	२२।३	०।२२	२।३९	४।४३
२२	६।२४	७।५३	९।२०	१०।५७	१२।५४	१५।८	१७।२६	१९।४४	२२।०	०।१९	२।३६	४।४०
२३	६।२०	७।४९	९।१६	१०।५३	१२।५०	१५।४	१७।२२	१९।४०	२१।५६	०।१५	२।३२	४।३६
२४	६।१६	७।४५	९।१२	१०।४९	१२।४६	१५।०	१७।१८	१९।३६	२१।५२	०।११	२।२८	४।३२
२५	६।१२	७।४१	९।८	१०।४५	१२।४२	१४।५६	१७।१४	१९।३२	२१।४८	०।७	२।२४	४।२८
२६	६।९	७।३८	९।५	१०।४२	१२।३९	१४।५३	१७।११	१९।२९	२१।४५	०।४	२।२१	४।२५
२७	६।५	७।३४	९।१	१०।३८	१२।३५	१४।४९	१७।७	१९।२५	२१।४१	०।०	२।१७	४।२१
२८	६।२	७।३१	८।५८	१०।३५	१२।३२	१४।४६	१७।४	१९।२२	२१।३८	२३।५७	२।१४	४।१८

लग्न सारिणी में लिखे हुए घं.मि. अर्धरात्रोत्तर (रेलवे नियमानुसार) क्रमशः अर्धरात्रिपर्यन्त २४ घंटे तक लिखे गये है। जैसे- दिन के २ घ. २२ मि. को १४ घं. २२ मि. लिखा गया है। सायं ४ घं. १९ मि. को १६ घं. १९ मि. लिखा गया है। इसी प्रकार कन्या लग्नारम्भ रात्रि ११ घं. ९ मि. को २३ घं. ९ मि. लिखा गया है। स्टैण्डर्ड टाइम रेलवे नियमानुसार दिन के १ बजे को १३ व २ बजे को १४ बजे इत्यादि क्रमानुसार लिखा जाता है। नोट : विशेष जानकारी के लिए लग्न नाम के नीचे प्रातः, दिवा, सायं तथा रात्रि का संकेत रूप स्पष्ट लिख दिया गया है। प्रयोग करते समय वार्षिक संस्कार का भी ध्यान रखें, कोष्ठक पृष्ठ (८३) पर छपा है।

मार्च मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	७।२७	८।५४	१०।३१	१२।२८	१४।४२	१७।०	१९।१८	२१।३४	२३।५३	२।१०	४।१४	५।५८
२	७।२२	८।४९	१०।२६	१२।२३	१४।३७	१६।५५	१९।१३	२१।२९	२३।४८	२।५	४।९	५।५३
३	७।१८	८।४५	१०।२२	१२।१९	१४।३३	१६।५१	१९।९	२१।२५	२३।४४	२।१	४।५	५।४९
४	७।१४	८।४१	१०।१८	१२।१५	१४।२९	१६।४७	१९।५	२१।२१	२३।४०	१।५७	४।१	५।४५
५	७।१०	८।३७	१०।१४	१२।११	१४।२५	१६।४३	१९।१	२१।१७	२३।३६	१।५३	३।५७	५।४१
६	७।६	८।३३	१०।१०	१२।७	१४।२१	१६।३९	१८।५७	२१।१३	२३।३२	१।४९	३।५३	५।३७
७	७।२	८।२९	१०।६	१२।३	१४।१७	१६।३५	१८।५३	२१।९	२३।२८	१।४५	३।४९	५।३३
८	६।५८	८।२५	१०।२	११।५९	१४।१३	१६।३१	१८।४९	२१।५	२३।२४	१।४१	३।४५	५।२९
९	६।५४	८।२१	९।५८	११।५५	१४।९	१६।२७	१८।४५	२१।१	२३।२०	१।३७	३।४१	५।२५
१०	६।५०	८।१७	९।५४	११।५१	१४।५	१६।२३	१८।४१	२०।५७	२३।१६	१।३३	३।३७	५।२१
११	६।४६	८।१३	९।५०	११।४७	१४।१	१६।१९	१८।३७	२०।५३	२३।१२	१।२९	३।३३	५।१७
१२	६।४३	८।१०	९।४७	११।४४	१३।५८	१६।१६	१८।३४	२०।५०	२३।९	१।२६	३।३०	५।१४
१३	६।३९	८।६	९।४३	११।४०	१३।५४	१६।१२	१८।३०	२०।४६	२३।५	१।२२	३।२६	५।१०
१४	६।३५	८।२	९।३९	११।३६	१३।५०	१६।८	१८।२६	२०।४२	२३।१	१।१८	३।२२	५।६
१५	६।३१	७।५८	९।३५	११।३२	१३।४६	१६।४	१८।२२	२०।३८	२२।५७	१।१४	३।१८	५।२
१६	६।२७	७।५४	९।३१	११।२८	१३।४२	१६।०	१८।१८	२०।३४	२२।५३	१।१०	३।१४	४।५८
१७	६।२३	७।५०	९।२७	११।२४	१३।३८	१५।५६	१८।१४	२०।३०	२२।४९	१।६	३।१०	४।५४
१८	६।१९	७।४६	९।२३	११।२०	१३।३४	१५।५२	१८।१०	२०।२६	२२।४५	१।२	३।६	४।५०
१९	६।१५	७।४२	९।१९	११।१६	१३।३०	१५।४८	१८।६	२०।२२	२२।४१	०।५८	३।२	४।४६
२०	६।११	७।३८	९।१५	११।१२	१३।२६	१५।४४	१८।२	२०।१८	२२।३७	०।५४	२।५८	४।४२
२१	६।७	७।३४	९।११	११।८	१३।२२	१५।४०	१७।५८	२०।१४	२२।३३	०।५०	२।५४	४।३८
२२	६।३	७।३०	९।७	११।४	१३।१८	१५।३६	१७।५४	२०।१०	२२।२९	०।४६	२।५०	४।३४
२३	५।५९	७।२६	९।३	११।०	१३।१४	१५।३२	१७।५०	२०।६	२२।२५	०।४२	२।४६	४।३०
२४	५।५५	७।२२	८।५९	१०।५६	१३।१०	१५।२८	१७।४६	२०।२	२२।२१	०।३८	२।४२	४।२६
२५	५।५१	७।१८	८।५५	१०।५२	१३।६	१५।२४	१७।४२	१९।५८	२२।१७	०।३४	२।३८	४।२२
२६	५।४७	७।१४	८।५१	१०।४८	१३।२	१५।२०	१७।३८	१९।५४	२२।१३	०।३०	२।३४	४।१८
२७	५।४३	७।१०	८।४७	१०।४४	१२।५८	१५।१६	१७।३४	१९।५०	२२।९	०।२६	२।३०	४।१४
२८	५।३९	७।६	८।४३	१०।४०	१२।५४	१५।१२	१७।३०	१९।४६	२२।५	०।२२	२।२६	४।१०
२९	५।३५	७।२	८।३९	१०।३६	१२।५०	१५।८	१७।२६	१९।४२	२२।१	०।१८	२।२२	४।६
३०	५।३१	६।५८	८।३५	१०।३२	१२।४६	१५।४	१७।२२	१९।३८	२१।५७	०।१४	२।१८	४।२
३१	५।२७	६।५४	८।३१	१०।२८	१२।४२	१५।०	१७।१८	१९।३४	२१।५३	०।१०	२।१४	३।५८

अप्रैल मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	६।५०	८।२७	१०।२४	१२।३८	१४।५६	१७।१४	१९।३०	२१।४९	२४।६	२।१०	३।५४	५।२३
२	६।४६	८।२३	१०।२०	१२।३४	१४।५२	१७।१०	१९।२६	२१।४५	२४।२	२।६	३।५०	५।१९
३	६।४२	८।१९	१०।१६	१२।३०	१४।४८	१७।६	१९।२२	२१।४१	२३।५८	२।२	३।४६	५।१५
४	६।३८	८।१५	१०।१२	१२।२६	१४।४४	१७।२	१९।१८	२१।३७	२३।५४	१।५८	३।४२	५।११
५	६।३४	८।११	१०।८	१२।२२	१४।४०	१६।५८	१९।१४	२१।३३	२३।५०	१।५४	३।३८	५।७
६	६।३०	८।७	१०।४	१२।१८	१४।३६	१६।५४	१९।१०	२१।२९	२३।४६	१।५०	३।३४	५।३
७	६।२६	८।३	१०।०	१२।१४	१४।३२	१६।५०	१९।६	२१।२५	२३।४२	१।४६	३।३०	४।५९
८	६।२३	८।०	९।५७	१२।११	१४।२९	१६।४७	१९।२	२१।२२	२३।३९	१।४३	३।२७	४।५६
९	६।१९	७।५६	९।५३	१२।७	१४।२५	१६।४३	१८।५९	२१।१८	२३।३५	१।३९	३।२३	४।५२
१०	६।१५	७।५२	९।४९	१२।३	१४।२१	१६।३९	१८।५५	२१।१४	२३।३१	१।३५	३।१९	४।४८
११	६।११	७।४८	९।४५	११।५९	१४।१७	१६।३५	१८।५१	२१।१०	२३।२७	१।३१	३।१५	४।४४
१२	६।७	७।४४	९।४१	११।५५	१४।१३	१६।३१	१८।४७	२१।६	२३।२३	१।२७	३।११	४।४०
१३	६।३	७।४०	९।३७	११।५१	१४।९	१६।२७	१८।४३	२१।२	२३।१९	१।२३	३।७	४।३६
१४	५।५९	७।३६	९।३३	११।४७	१४।५	१६।२३	१८।३९	२०।५८	२३।१५	१।१९	३।३	४।३२
१५	५।५५	७।३२	९।२९	११।४३	१४।१	१६।१९	१८।३५	२०।५४	२३।११	१।१५	२।५९	४।२८
१६	५।५१	७।२८	९।२५	११।३९	१३।५७	१६।१५	१८।३१	२०।५०	२३।७	१।११	२।५५	४।२४
१७	५।४७	७।२४	९।२१	११।३५	१३।५३	१६।११	१८।२७	२०।४६	२३।३	१।७	२।५१	४।२०
१८	५।४३	७।२०	९।१७	११।३१	१३।४९	१६।७	१८।२३	२०।४२	२२।५९	१।३	२।४७	४।१६
१९	५।३९	७।१६	९।१३	११।२७	१३।४५	१६।३	१८।१९	२०।३८	२२।५५	०।५९	२।४३	४।१२
२०	५।३५	७।१२	९।९	११।२३	१३।४१	१५।५९	१८।१५	२०।३४	२२।५१	०।५५	२।३९	४।८
२१	५।३१	७।८	९।५	११।१९	१३।३७	१५।५५	१८।११	२०।३०	२२।४७	०।५१	२।३५	४।४
२२	५।२७	७।४	९।१	११।१५	१३।३३	१५।५१	१८।७	२०।२६	२२।४३	०।४७	२।३१	४।०
२३	५।२३	७।०	८।५७	११।११	१३।२९	१५।४७	१८।३	२०।२२	२२।३९	०।४३	२।२७	३।५६
२४	५।१९	६।५६	८।५३	११।७	१३।२५	१५।४३	१७।५९	२०।१८	२२।३५	०।३९	२।२३	३।५२
२५	५।१५	६।५२	८।४९	११।३	१३।२१	१५।३९	१७।५५	२०।१४	२२।३१	०।३५	२।१९	३।४८
२६	५।११	६।४८	८।४५	१०।५९	१३।१७	१५।३५	१७।५१	२०।१०	२२।२७	०।३१	२।१५	३।४४
२७	५।७	६।४४	८।४१	१०।५५	१३।१३	१५।३१	१७।४७	२०।६	२२।२३	०।२७	२।११	३।४०
२८	५।३	६।४०	८।३७	१०।५१	१३।९	१५।२७	१७।४३	२०।२	२२।१९	०।२३	२।७	३।३६
२९	४।५९	६।३६	८।३३	१०।४७	१३।५	१५।२३	१७।३९	१९।५८	२२।१५	०।१९	२।३	३।३२
३०	४।५३	६।३२	८।२७	१०।४१	१३।१०	१५।१७	१७।३४	१९।५३	२२।१०	०।१४	१।५८	३।२७

लग्न परिवर्तन विधि :- अन्य स्थान पर लग्न प्रवेश जानना हो तो "स्वदेशकाल सुबोधिनी तालिका" (कालम सं. ५) में लिखित स्वस्थानीय मि. से. का विपरीत संस्कार (ऋण का धन और धन का ऋण) लग्न प्रवेश समयमें करने से स्वस्थानीय स्थूल लग्नप्रवेश (लग्न शुरू होने का समय) निकल आता है। सूक्ष्मता लानेके लिए अभीष्ट दिन रविक्रान्ति एवं अक्षांशतुल्य चरान्तर सारिणी से प्राप्त चरान्तर मिनटों का [illegible] (लग्नारम्भ समय) में करने से शुद्ध सूक्ष्म (स्पष्ट) लग्नप्रवेशकाल निकलता है।

उदाहरण :- १ मार्च को मेष लग्न प्रवेश घं. ८ मि. ५४ है, तो दिल्ली में मेष लग्न कितने बजे शुरु होगी। "स्वदेशकाल सुबोधिनी तालिका" में दिल्लीका देशान्तर सं. १ मि. ४८ से. ऋण का धन संस्कार किया तो ८ घं. ५५ मि. ४८ से. स्थूल लग्न प्रवेश काल हुआ। अक्षांश २८।३८ और रविक्रान्ति दक्षिण ७।४१ तुल्य चरान्तर १ मि. ऋण किया तो दिल्ली में मेष लग्न का प्रवेश (आरम्भ काल) घं. ८ मि. ५४ से [illegible] पर स्पष्ट हो गया।

मई मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	६।२६	८।२३	१०।३७	१२।५५	१५।१३	१७।२९	१९।४८	२२।५	०।९	१।५३	३।२२	४।४९
२	६।२२	८।१९	१०।३३	१२।५१	१५।९	१७।२५	१९।४४	२२।१	०।५	१।४९	३।१८	४।४५
३	६:१८	८।१५	१०।२९	१२।४७	१५।५	१७।२१	१९।४०	२१।५७	०।१	१।४५	३।१४	४।४१
४	६।१५	८।१२	१०।२६	१२।४४	१५।१	१७।१८	१९।३७	२१।५४	२३।५८	१।४२	३।११	४।३८
५	६।११	८।८	१०।२२	१२।४०	१४।५८	१७।१४	१९।३३	२१।५०	२३।५४	१।३८	३।७	४।३४
६	६।७	८।४	१०।१८	१२।३६	१४।५४	१७।१०	१९।२९	२१।४६	२३।५०	१।३४	३।३	४।३०
७	६।३	८।०	१०।१४	१२।३२	१४।५०	१७।६	१९।२५	२१।४२	२३।४६	१।३०	२।५९	४।२६
८	५।५९	७।५६	१०।१०	१२।२८	१४।४६	१७।२	१९।२१	२१।३८	२३।४२	१।२६	२।५५	४।२२
९	५।५५	७।५२	१०।६	१२।२४	१४।४२	१६।५८	१९।१७	२१।३४	२३।३८	१।२२	२।५१	४।१८
१०	५।५१	७।४८	१०।२	१२।२०	१४।३८	१६।५४	१९।१३	२१।३०	२३।३४	१।१८	२।४७	४।१४
११	५।४७	७।४४	९।५८	१२।१६	१४।३४	१६।५०	१९।९	२१।२६	२३।३०	१।१४	२।४३	४।१०
१२	५।४३	७।४०	९।५४	१२।१२	१४।३०	१६।४६	१९।५	२१।२२	२३।२६	१।१०	२।३९	४।६
१३	५।३९	७।३६	९।५०	१२।८	१४।२६	१६।४२	१९।१	२१।१९	२३।२२	१।६	२।३५	४।२
१४	५।३६	७।३३	९।४७	१२।५	१४।२३	१६।३९	१८।५८	२१।१५	२३।१९	१।३	२।३२	३।५९
१५	५।३२	७।२९	९।४३	१२।१	१४।१९	१६।३५	१८।५४	२१।११	२३।१५	०।५९	२।२८	३।५५
१६	५।२८	७।२५	९।३९	११।५७	१४।१५	१६।३१	१८।५०	२१।७	२३।११	०।५५	२।२४	३।५१
१७	५।२४	७।२१	९।३५	११।५३	१४।११	१६।२७	१८।४६	२१।३	२३।७	०।५१	२।२०	३।४७
१८	५।२०	७।१७	९।३१	११।४९	१४।७	१६।२३	१८।४२	२०।५९	२३।३	०।४७	२।१६	३।४३
१९	५।१६	७।१३	९।२७	११।४५	१४।३	१६।१९	१८।३८	२०।५५	२२।५९	०।४३	२।१२	३।३९
२०	५।१२	७।९	९।२३	११।४१	१३।५९	१६।१५	१८।३४	२०।५१	२२।५५	०।३९	२।८	३।३५
२१	५।८	७।५	९।१९	११।३७	१३।५५	१६।११	१८।३०	२०।४७	२२।५१	०।३५	२।४	३।३१
२२	५।४	७।१	९।१५	११।३३	१३।५१	१६।७	१८।२६	२०।४३	२२।४७	०।३१	२।०	३।२७
२३	५।०	६।५७	९।११	११।२९	१३।४७	१६।३	१८।२२	२०।३९	२२।४३	०।२७	१।५६	३।२३
२४	४।५६	६।५३	९।७	११।२५	१३।४३	१५।५९	१८।१८	२०।३५	२२।३९	०।२३	१।५२	३।१९
२५	४।५२	६।४९	९।३	११।२१	१३।३९	१५।५५	१८।१४	२०।३१	२२।३५	०।१९	१।४८	३।१५
२६	४।४८	६।४५	८।५९	११।१७	१३।३५	१५।५१	१८।१०	२०।२७	२२।३१	०।१५	१।४४	३।११
२७	४।४४	६।४१	८।५५	११।१३	१३।३१	१५।४७	१८।६	२०।२३	२२।२७	०।११	१।४०	३।७
२८	४।४०	६।३७	८।५१	११।९	१३।२७	१५।४३	१८।२	२०।१९	२२।२३	०।७	१।३६	३।३
२९	४।३६	६।३३	८।४७	११।५	१३।२३	१५।३९	१७।५८	२०।१५	२२।१९	०।३	१।३२	२।५९
३०	४।३२	६।२९	८।४३	११।१	१३।१९	१५।३५	१७।५४	२०।११	२२।१५	२३।५९	१।२८	२।५५
३१	४।२८	६।२५	८।३९	१०।५७	१३।१५	१५।३१	१७।५०	२०।७	२२।११	२३।५५	१।२४	२।५१

जून मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	६।२१	८।३५	१०।५३	१३।११	१५।२७	१७।४६	२०।३	२२।७	२३।५१	१।२०	२।४७	४।२४
२	६।१७	८।३१	१०।४९	१३।७	१५।२३	१७।४२	१९।५९	२२।३	२३।४७	१।१६	२।४३	४।२०
३	६।१३	८।२७	१०।४५	१३।३	१५।१९	१७।३८	१९।५५	२१।५९	२३।४३	१।१२	२।३९	४।१६
४	६।९	८।२३	१०।४१	१२।५९	१५।१५	१७।३४	१९।५१	२१।५५	२३।३९	१।८	२।३५	४।१२
५	६।५	८।१९	१०।३७	१२।५५	१५।११	१७।३०	१९।४७	२१।५१	२३।३५	१।४	२।३१	४।८
६	६।१	८।१५	१०।३३	१२।५१	१५।७	१७।२६	१९।४३	२१।४७	२३।३१	१।०	२।२७	४।४
७	५।५७	८।११	१०।२९	१२।४७	१५।३	१७।२२	१९।३९	२१।४३	२३।२७	०।५६	२।२३	४।०
८	५।५३	८।७	१०।२५	१२।४३	१४।५९	१७।१८	१९।३५	२१।३९	२३।२३	०।५२	२।१९	३।५६
९	५।४९	८।३	१०।२१	१२।३९	१४।५५	१७।१४	१९।३१	२१।३५	२३।१९	०।४८	२।१५	३।५२
१०	५।४५	७।५९	१०।१७	१२।३५	१४।५१	१७।१०	१९।२७	२१।३१	२३।१५	०।४४	२।११	३।४८
११	५।४१	७।५५	१०।१३	१२।३१	१४।४७	१७।६	१९।२३	२१।२७	२३।११	०।४०	२।७	३।४४
१२	५।३८	७।५२	१०।१०	१२।२८	१४।४४	१७।२	१९।२०	२१।२४	२३।८	०।३७	२।४	३।४१
१३	५।३४	७।४८	१०।६	१२।२४	१४।४०	१६।५९	१९।१६	२१।२०	२३।४	०।३३	२।०	३।३७
१४	५।३०	७।४४	१०।२	१२।२०	१४।३६	१६।५५	१९।१२	२१।१६	२३।०	०।२९	१।५६	३।३३
१५	५।२६	७।४०	९।५८	१२।१६	१४।३२	१६।५१	१९।८	२१।१२	२२।५६	०।२५	१।५२	३।२९
१६	५।२२	७।३६	९।५४	१२।१२	१४।२८	१६।४७	१९।४	२१।८	२२।५२	०।२१	१।४८	३।२५
१७	५।१८	७।३२	९।५०	१२।८	१४।२४	१६।४३	१९।०	२१।४	२२।४८	०।१७	१।४४	३।२१
१८	५।१४	७।२८	९।४६	१२।४	१४।२०	१६।३९	१८।५६	२१।०	२२।४४	०।१३	१।४०	३।१७
१९	५।१०	७।२४	९।४२	१२।०	१४।१६	१६।३५	१८।५२	२०।५६	२२।४०	०।९	१।३६	३।१३
२०	५।६	७।२१	९।३९	११।५७	१४।१३	१६।३२	१८।४९	२०।५३	२२।३७	०।६	१।३३	३।१०
२१	५।३	७।१७	९।३५	११।५३	१४।९	१६।२८	१८।४५	२०।४९	२२।३३	०।२	१।२९	३।६
२२	४।५९	७।१३	९।३१	११।४९	१४।५	१६।२४	१८।४१	२०।४५	२२।२९	२३।५८	१।२५	३।२
२३	४।५५	७।९	९।२७	११।४५	१४।१	१६।२०	१८।३७	२०।४१	२२।२५	२३।५४	१।२१	२।५८
२४	४।५१	७।५	९।२३	११।४१	१३।५७	१६।१६	१८।३३	२०।३७	२२।२१	२३।५०	१।१७	२।५४
२५	४।४७	७।१	९।१९	११।३७	१३।५३	१६।१२	१८।२९	२०।३३	२२।१७	२३।४६	१।१३	२।५०
२६	४।४४	६।५८	९।१६	११।३४	१३।५०	१६।९	१८।२६	२०।३०	२२।१४	२३।४३	१।१०	२।४७
२७	४।४०	६।५४	९।१२	११।३०	१३।४६	१६।५	१८।२२	२०।२६	२२।१०	२३।३९	१।६	२।४३
२८	४।३६	६।५०	९।८	११।२६	१३।४२	१६।१	१८।१८	२०।२२	२२।६	२३।३५	१।२	२।३९
२९	४।३२	६।४६	९।४	११।२२	१३।३८	१५।५७	१८।१४	२०।१८	२२।२	२३।३१	०।५८	२।३५
३०	४।२८	६।४२	९।०	११।१८	१३।३४	१५।५३	१८।१०	२०।१४	२१।५८	२३।२७	०।५४	२।३१

लग्न क्या है? :- इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले इस विषयमें श्री ब्रजभूमि-पंचांग प्रेमी पाठकोंकी जानकारी हेतु कुछ विशेष महत्वपूर्ण विषयोंका ज्ञान कराना हम अपना परम कर्तव्य समझते है। अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर परिभ्रमण करने के साथ-साथ यह वसुन्धरा (पृथ्वी) ३६५ दिन ६ घं. ९ मि. में सूर्य के चारों ओर घूम जाती है। यह समय व्यवहारिक सौर वर्ष कहलाता है। ज्योतिषाचार्यों ने भ्रमणमार्ग, ग्रहकक्षा, (राशि पथ) को समान बारह भागोंमें विभाजित किया है; जोकि मेष, वृष आदि द्वादश राशियोंके नाम से प्रसिद्ध है। अश्विनी, भरणी, कृतिकादि २७ नक्षत्र राशिपथ के स्थिर बिन्दु है। अक्षपरिभ्रमण के कारण प्रति एक अहोरात्र (दिन-रात) में पृथ्वी सम्पूर्ण राशिपथ के सामने होकर घूम जाती है; अर्थात् ६० घटी या बराबर २४ घंटे में बारहों लग्नोंका उदय होता है। जिस समय सूर्य जिस राशिमें गतिशील होता है उस समय वही राशि (लग्न) प्रातः सूर्योदय के समय पूर्वक्षितिज में उदय होती है।

(शेष अग्रिम पृष्ठ पर)

जुलाई मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	६।३८	८।५६	११।१४	१३।३०	१५।४९	१८।६	२०।१०	२१।५४	२३।२३	०।५०	२।२७	४।२४
२	६।३४	८।५२	११।१०	१३।२६	१५।४५	१८।२	२०।६	२१।५०	२३।१९	०।४६	२।२३	४।२०
३	६।३०	८।४८	११।६	१३।२२	१५।४१	१७।५८	२०।२	२१।४६	२३।१५	०।४२	२।१९	४।१६
४	६।२६	८।४४	११।२	१३।१८	१५।३७	१७।५४	१९।५८	२१।४२	२३।११	०।३८	२।१५	४।१२
५	६।२२	८।४०	१०।५८	१३।१४	१५।३३	१७।५०	१९।५४	२१।३८	२३।७	०।३४	२।११	४।८
६	६।१८	८।३६	१०।५४	१३।१०	१५।२९	१७।४६	१९।५०	२१।३४	२३।३	०।३०	२।७	४।४
७	६।१४	८।३२	१०।५०	१३।६	१५।२५	१७।४२	१९।४६	२१।३०	२२।५९	०।२६	२।३	४।०
८	६।१०	८।२८	१०।४६	१३।२	१५।२१	१७।३८	१९।४२	२१।२६	२२।५५	०।२२	१।५९	३।५६
९	६।६	८।२४	१०।४२	१२।५८	१५।१७	१७।३४	१९।३८	२१।२२	२२।५१	०।१८	१।५५	३।५२
१०	६।२	८।२०	१०।३८	१२।५४	१५।१३	१७।३०	१९।३४	२१।१८	२२।४७	०।१४	१।५१	३।४८
११	५।५८	८।१६	१०।३४	१२।५०	१५।९	१७।२६	१९।३०	२१।१४	२२।४३	०।१०	१।४७	३।४४
१२	५।५५	८।१३	१०।३१	१२।४७	१५।६	१७।२३	१९।२७	२१।११	२२।४०	०।७	१।४४	३।४१
१३	५।५१	८।९	१०।२७	१२।४३	१५।२	१७।१९	१९।२३	२१।७	२२।३६	०।३	१।४०	३।३७
१४	५।४७	८।५	१०।२३	१२।३९	१४।५८	१७।१५	१९।१९	२१।३	२२।३२	२३।५९	१।३६	३।३३
१५	५।४३	८।१	१०।१९	१२।३५	१४।५४	१७।११	१९।१५	२०।५९	२२।२८	२३।५५	१।३२	३।२९
१६	५।३९	७।५७	१०।१५	१२।३१	१४।५०	१७।७	१९।११	२०।५५	२२।२४	२३।५१	१।२८	३।२५
१७	५।३५	७।५३	१०।११	१२।२७	१४।४६	१७।३	१९।७	२०।५१	२२।२०	२३।४७	१।२४	३।२१
१८	५।३१	७।४९	१०।७	१२।२३	१४।४२	१६।५९	१९।३	२०।४७	२२।१६	२३।४३	१।२०	३।१७
१९	५।२७	७।४५	१०।३	१२।१९	१४।३८	१६।५५	१८।५९	२०।४३	२२।१२	२३।३९	१।१६	३।१३
२०	५।२३	७।४१	९।५९	१२।१५	१४।३४	१६।५१	१८।५५	२०।३९	२२।८	२३।३५	१।१२	३।९
२१	५।१९	७।३७	९।५५	१२।११	१४।३०	१६।४७	१८।५१	२०।३५	२२।४	२३।३१	१।८	३।५
२२	५।१६	७।३४	९।५२	१२।८	१४।२७	१६।४४	१८।४८	२०।३२	२२।१	२३।२८	१।५	३।२
२३	५।१२	७।३०	९।४८	१२।४	१४।२३	१६।४०	१८।४४	२०।२८	२१।५७	२३।२४	१।१	२।५८
२४	५।८	७।२६	९।४४	१२।०	१४।१९	१६।३६	१८।४०	२०।२४	२१।५३	२३।२०	०।५७	२।५४
२५	५।४	७।२२	९।४०	११।५६	१४।१५	१६।३२	१८।३६	२०।२०	२१।४९	२३।१६	०।५३	२।५०
२६	५।०	७।१८	९।३६	११।५२	१४।११	१६।२८	१८।३२	२०।१६	२१।४५	२३।१२	०।४९	२।४६
२७	४।५६	७।१४	९।३२	११।४८	१४।७	१६।२४	१८।२८	२०।१२	२१।४१	२३।८	०।४५	२।४२
२८	४।५२	७।१०	९।२८	११।४४	१४।३	१६।२०	१८।२४	२०।८	२१।३७	२३।४	०।४१	२।३८
२९	४।४८	७।६	९।२४	११।४०	१३।५९	१६।१६	१८।२०	२०।४	२१।३३	२३।०	०।३७	२।३४
३०	४।४४	७।२	९।२०	११।३६	१३।५५	१६।१२	१८।१६	२०।०	२१।२९	२२।५६	०।३३	२।३०
३१	४।४०	६।५८	९।१६	११।३२	१३।५१	१६।८	१८।१२	१९।५६	२१।२५	२२।५२	०।२९	२।२६

अगस्त मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	६।५५	९।१३	११।२९	१३।४८	१६।५	१८।९	१९।५३	२१।२२	२२।४९	०।२६	२।२३	४।३७
२	६।५१	९।९	११।२५	१३।४४	१६।१	१८।५	१९।४९	२१।१८	२२।४५	०।२२	२।१९	४।३३
३	६।४७	९।५	११।२१	१३।४०	१५।५७	१८।१	१९।४५	२१।१४	२२।४१	०।१८	२।१५	४।२९
४	६।४३	९।१	११।१७	१३।३६	१५।५३	१७।५७	१९।४१	२१।१०	२२।३७	०।१४	२।११	४।२५
५	६।३९	८।५७	११।१३	१३।३२	१५।४९	१७।५३	१९।३७	२१।६	२२।३३	०।१०	२।७	४।२१
६	६।३६	८।५४	११।१०	१३।२९	१५।४६	१७।५०	१९।३४	२१।३	२२।३०	०।७	२।४	४।१८
७	६।३२	८।५०	११।६	१३।२५	१५।४२	१७।४६	१९।३०	२०।५९	२२।२६	०।३	२।०	४।१४
८	६।२८	८।४६	११।२	१३।२१	१५।३८	१७।४२	१९।२६	२०।५५	२२।२२	२३।५९	१।५६	४।१०
९	६।२४	८।४२	१०।५८	१३।१७	१५।३४	१७।३८	१९।२२	२०।५१	२२।१८	२३।५५	१।५२	४।६
१०	६।२०	८।३८	१०।५४	१३।१३	१५।३०	१७।३४	१९।१८	२०।४७	२२।१४	२३।५१	१।४८	४।२
११	६।१६	८।३४	१०।५०	१३।९	१५।२६	१७।३०	१९।१४	२०।४३	२२।१०	२३।४७	१।४४	३।५८
१२	६।१२	८।३०	१०।४६	१३।५	१५।२२	१७।२६	१९।१०	२०।३९	२२।६	२३।४३	१।४०	३।५४
१३	६।८	८।२६	१०।४२	१३।१	१५।१८	१७।२२	१९।६	२०।३५	२२।२	२३।३९	१।३६	३।५०
१४	६।४	८।२२	१०।३८	१२।५७	१५।१४	१७।१८	१९।२	२०।३१	२१।५८	२३।३५	१।३२	३।४६
१५	६।०	८।१८	१०।३४	१२।५३	१५।१०	१७।१४	१८।५८	२०।२७	२१।५४	२३।३१	१।२८	३।४२
१६	५।५६	८।१४	१०।३०	१२।४९	१५।६	१७।१०	१८।५४	२०।२३	२१।५०	२३।२७	१।२४	३।३८
१७	५।५२	८।१०	१०।२६	१२।४५	१५।२	१७।६	१८।५०	२०।१९	२१।४६	२३।२३	१।२०	३।३४
१८	५।४९	८।७	१०।२३	१२।४२	१४।५९	१७।२	१८।४७	२०।१६	२१।४३	२३।२०	१।१७	३।३१
१९	५।४५	८।३	१०।१९	१२।३८	१४।५५	१६।५९	१८।४३	२०।१२	२१।३९	२३।१६	१।१३	३।२७
२०	५।४१	७।५९	१०।१५	१२।३४	१४।५१	१६।५५	१८।३९	२०।८	२१।३५	२३।१२	१।९	३।२३
२१	५।३७	७।५५	१०।११	१२।३०	१४।४७	१६।५१	१८।३५	२०।४	२१।३१	२३।८	१।५	३।१९
२२	५।३३	७।५१	१०।७	१२।२६	१४।४३	१६।४७	१८।३१	२०।०	२१।२७	२३।४	१।१	३।१५
२३	५।२९	७।४७	१०।३	१२।२२	१४।३९	१६।४३	१८।२७	१९।५६	२१।२३	२३।०	०।५७	३।११
२४	५।२५	७।४३	९।५९	१२।१८	१४।३५	१६।३९	१८।२३	१९।५२	२१।१९	२२।५६	०।५३	३।७
२५	५।२१	७।३९	९।५५	१२।१४	१४।३१	१६।३५	१८।१९	१९।४८	२१।१५	२२।५२	०।४९	३।३
२६	५।१७	७।३५	९।५१	१२।१०	१४।२७	१६।३१	१८।१५	१९।४४	२१।११	२२।४८	०।४५	२।५९
२७	५।१३	७।३१	९।४७	१२।६	१४।२३	१६।२७	१८।११	१९।४०	२१।७	२२।४४	०।४१	२।५५
२८	५।९	७।२७	९।४३	१२।२	१४।१९	१६।२३	१८।७	१९।३६	२१।३	२२।४०	०।३७	२।५१
२९	५।५	७।२३	९।३९	११।५८	१४।१५	१६।१९	१८।३	१९।३२	२०।५९	२२।३६	०।३३	२।४७
३०	५।१	७।१९	९।३५	११।५४	१४।११	१६।१५	१७।५९	१९।२८	२०।५५	२२।३२	०।२९	२।४३
३१	४।५७	७।१५	९।३१	११।५०	१४।७	१६।११	१७।५५	१९।२४	२०।५१	२२।२८	०।२५	२।३९

(गत पृष्ठ का शेष) :- मध्यान्हमें उदयकालीन लग्न से सदैव चौथा लग्न वर्तमान रहता है। सूर्यास्त के समय सातवाँ लग्न भोग करता है। इसी प्रकार रात्रिमें आगे जानना चाहिए। जिस दिन जिस राशिमें गतिशील सूर्य (संक्रान्ति) के जितने अंशभुक्त होंगे, उस दिन सूर्योदय पर संक्रान्तितुल्य लग्न के उतने ही अंश भुक्त होंगे; अर्थात् संक्रान्ति गतांशतुल्य लग्न सूर्योदय पर बीत जायेगी। जन्म कुण्डली आकाशीय गोचर ग्रहोंका नक्शा होती है। यद्यपि अपने इस सौर मण्डल में सूर्य स्थिर है। फिर भी सिद्धान्त शास्त्रियों ने पृथ्वी को स्थिर एवं सूर्यको चलित मानकर खगोल, भगोल और भूगोल से सम्बन्धित समस्त सिद्धान्त ग्रन्थों का निर्माण किया है। गणितमें इससे अन्तर नही आता है। पंचांगमें लिखा रहता है कि सूर्य अमुक राशिके अमुक अंश पर भोग कर रहा है, जिसका अभिप्राय यह है कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती हुई उक्त राशिके उतने अंश पर पहुंच चुकी है।

सम्पादक :- **पं. कौशलकिशोर कौशिक ज्यो. बी.ए.,एल.एल.बी.**

सितम्बर मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	७।११	९।२७	११।४६	१४।३	१६।७	१७।५१	१९।२०	२०।४७	२२।२४	०।२१	२।३५	४।५३
२	७।७	९।२३	११।४२	१३।५९	१६।३	१७।४७	१९।१६	२०।४३	२२।२०	०।१७	२।३१	४।४९
३	७।३	९।१९	११।३८	१३।५५	१५।५९	१७।४३	१९।१२	२०।३९	२२।१६	०।१३	२।२७	४।४५
४	६।५९	९।१५	११।३४	१३।५१	१५।५५	१७।३९	१९।८	२०।३५	२२।१२	०।९	२।२३	४।४१
५	६।५५	९।११	११।३०	१३।४७	१५।५१	१७।३५	१९।४	२०।३१	२२।८	०।५	२।१९	४।३७
६	६।५२	९।८	११।२७	१३।४४	१५।४८	१७।३२	१९।१	२०।२८	२२।५	०।१	२।१६	४।३४
७	६।४८	९।४	११।२३	१३।४०	१५।४४	१७।२८	१८।५७	२०।२४	२२।१	२३।५८	२।१२	४।३०
८	६।४४	९।०	११।१९	१३।३६	१५।४०	१७।२४	१८।५३	२०।२०	२१।५७	२३।५४	२।८	४।२६
९	६।४०	८।५६	११।१५	१३।३२	१५।३६	१७।२०	१८।४९	२०।१६	२१।५३	२३।५०	२।४	४।२२
१०	६।३६	८।५२	११।११	१३।२८	१५।३२	१७।१६	१८।४५	२०।१२	२१।४९	२३।४६	२।०	४।१८
११	६।३२	८।४८	११।७	१३।२४	१५।२८	१७।१२	१८।४१	२०।८	२१।४५	२३।४२	१।५६	४।१४
१२	६।२८	८।४४	११।३	१३।२०	१५।२४	१७।८	१८।३७	२०।४	२१।४१	२३।३८	१।५२	४।१०
१३	६।२४	८।४०	१०।५९	१३।१६	१५।२०	१७।४	१८।३३	२०।०	२१।३७	२३।३४	१।४८	४।६
१४	६।२०	८।३६	१०।५५	१३।१२	१५।१६	१७।०	१८।२९	१९।५६	२१।३३	२३।३०	१।४४	४।२
१५	६।१६	८।३२	१०।५१	१३।८	१५।१२	१६।५६	१८।२५	१९।५२	२१।२९	२३।२६	१।४०	३।५८
१६	६।१२	८।२८	१०।४७	१३।४	१५।८	१६।५२	१८।२१	१९।४८	२१।२५	२३।२२	१।३६	३।५४
१७	६।८	८।२४	१०।४३	१३।०	१५।४	१६।४८	१८।१७	१९।४४	२१।२१	२३।१८	१।३२	३।५०
१८	६।४	८।२०	१०।३९	१२।५६	१५।०	१६।४४	१८।१३	१९।४०	२१।१७	२३।१४	१।२८	३।४६
१९	६।०	८।१६	१०।३५	१२।५२	१४।५६	१६।४०	१८।९	१९।३६	२१।१३	२३।१०	१।२४	३।४२
२०	५।५६	८।१२	१०।३१	१२।४८	१४।५२	१६।३६	१८।५	१९।३२	२१।९	२३।६	१।२०	३।३८
२१	५।५२	८।८	१०।२७	१२।४४	१४।४८	१६।३२	१८।१	१९।२८	२१।५	२३।२	१।१६	३।३४
२२	५।४८	८।४	१०।२३	१२।४०	१४।४४	१६।२८	१७।५७	१९।२४	२१।१	२२।५८	१।१२	३।३०
२३	५।४४	८।०	१०।१९	१२।३६	१४।४०	१६।२४	१७।५३	१९।२०	२०।५७	२२।५४	१।८	३।२६
२४	५।४०	७।५६	१०।१५	१२।३२	१४।३६	१६।२०	१७।४९	१९।१६	२०।५३	२२।५०	१।४	३।२२
२५	५।३६	७।५२	१०।११	१२।२८	१४।३२	१६।१६	१७।४५	१९।१२	२०।४९	२२।४६	१।०	३।१८
२६	५।३२	७।४८	१०।७	१२।२४	१४।२८	१६।१२	१७।४१	१९।८	२०।४५	२२।४२	०।५६	३।१४
२७	५।२८	७।४४	१०।३	१२।२०	१४।२४	१६।८	१७।३७	१९।४	२०।४१	२२।३८	०।५२	३।१०
२८	५।२४	७।४०	९।५९	१२।१६	१४।२०	१६।४	१७।३३	१९।०	२०।३७	२२।३४	०।४८	३।६
२९	५।२०	७।३६	९।५५	१२।१२	१४।१६	१६।०	१७।२९	१८।५६	२०।३३	२२।३०	०।४४	३।२
३०	५।१६	७।३२	९।५१	१२।८	१४।१२	१५।५६	१७।२५	१८।५२	२०।२९	२२।२६	०।४०	२।५८

अक्टूबर मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रातः
१	७।२८	९।४७	१२।४	१४।८	१५।५२	१७।२१	१८।४८	२०।२५	२२।२२	०।३६	२।५४	५।१२
२	७।२४	९।४३	१२।०	१४।४	१५।४८	१७।१७	१८।४४	२०।२१	२२।१८	०।३२	२।५०	५।८
३	७।२०	९।३९	११।५६	१४।०	१५।४४	१७।१३	१८।४०	२०।१७	२२।१४	०।२८	२।४६	५।४
४	७।१६	९।३५	११।५२	१३।५६	१५।४०	१७।९	१८।३६	२०।१३	२२।१०	०।२४	२।४२	५।०
५	७।१२	९।३१	११।४८	१३।५२	१५।३६	१७।५	१८।३२	२०।९	२२।६	०।२०	२।३८	४।५६
६	७।८	९।२७	११।४४	१३।४८	१५।३२	१७।१	१८।२८	२०।५	२२।२	०।१६	२।३४	४।५२
७	७।४	९।२३	११।४०	१३।४४	१५।२८	१६।५७	१८।२४	२०।१	२१।५८	०।१२	२।३०	४।४८
८	७।०	९।१९	११।३६	१३।४०	१५।२४	१६।५३	१८।२०	१९।५७	२१।५४	०।८	२।२६	४।४४
९	६।५६	९।१५	११।३२	१३।३६	१५।२०	१६।४९	१८।१६	१९।५३	२१।५०	०।४	२।२२	४।४०
१०	६।५२	९।११	११।२८	१३।३२	१५।१६	१६।४५	१८।१२	१९।४९	२१।४६	०।०	२।१८	४।३६
११	६।४८	९।७	११।२४	१३।२८	१५।१२	१६।४१	१८।८	१९।४५	२१।४२	२३।५६	२।१४	४।३२
१२	६।४४	९।३	११।२०	१३।२४	१५।८	१६।३७	१८।४	१९।४१	२१।३८	२३।५२	२।१०	४।२८
१३	६।४०	८।५९	११।१६	१३।२०	१५।४	१६।३३	१८।०	१९।३७	२१।३४	२३।४८	२।६	४।२४
१४	६।३७	८।५६	११।१३	१३।१७	१५।०	१६।३०	१७।५७	१९।३४	२१।३१	२३।४५	२।२	४।२१
१५	६।३३	८।५२	११।९	१३।१३	१४।५७	१६।२६	१७।५३	१९।३०	२१।२७	२३।४१	१।५९	४।१७
१६	६।२९	८।४८	११।५	१३।९	१४।५३	१६।२२	१७।४९	१९।२६	२१।२३	२३।३७	१।५५	४।१३
१७	६।२५	८।४४	११।१	१३।५	१४।४९	१६।१८	१७।४५	१९।२२	२१।१९	२३।३३	१।५१	४।९
१८	६।२१	८।४०	१०।५७	१३।१	१४।४५	१६।१४	१७।४१	१९।१८	२१।१५	२३।२९	१।४७	४।५
१९	६।१७	८।३६	१०।५३	१२।५७	१४।४१	१६।१०	१७।३७	१९।१४	२१।११	२३।२५	१।४३	४।१
२०	६।१३.	८।३२	१०।४९	१२।५३	१४।३७	१६।६	१७।३३	१९।१०	२१।७	२३।२१	१।३९	३।५७
२१	६।९	८।२८	१०।४५	१२।४९	१४।३३	१६।२	१७।२९	१९।६	२१।३	२३।१७	१।३५	३।५३
२२	६।५	८।२४	१०।४१	१२।४५	१४।२९	१५।५८	१७।२५	१९।२	२०।५९	२३।१३	१।३१	३।४९
२३	६।१	८।२०	१०।३७	१२।४१	१४।२५	१५।५४	१७।२१	१८।५८	२०।५५	२३।९	१।२७	३।४५
२४	५।५७	८।१६	१०।३३	१२।३७	१४।२१	१५।५०	१७।१७	१८।५४	२०।५१	२३।५	१।२३	३।४१
२५	५।५३	८।१२	१०।२९	१२।३३	१४।१७	१५।४६	१७।१३	१८।५०	२०।४७	२३।१	१।१९	३।३७
२६	५।४९	८।८	१०।२५	१२।२९	१४।१३	१५।४२	१७।९	१८।४६	२०।४३	२२।५७	१।१५	३।३३
२७	५।४५	८।४	१०।२१	१२।२५	१४।९	१५।३८	१७।५	१८।४२	२०।३९	२२।५३	१।११	३।२९
२८	५।४१	८।०	१०।१७	१२।२१	१४।५	१५।३४	१७।१	१८।३८	२०।३५	२२।४९	१।७	३।२५
२९	५।३७	७।५६	१०।१३	१२।१७	१४।१	१५।३०	१६।५७	१८।३४	२०।३१	२२।४५	१।३	३।२१
३०	५।३३	७।५२	१०।९	१२।१३	१३।५७	१५।२६	१६।५३	१८।३०	२०।२७	२२।४१	०।५९	३।१७
३१	५।२९	७।४८	१०।५	१२।९	१३।५३	१५।२२	१६।४९	१८।२६	२०।२३	२२।३७	०।५५	३।१३

नवांश जानने की विधि :- लग्न के आरम्भ काल को अग्रिम लग्न प्रवेश समय में से घटाने पर कुल लग्न भोग (समय घं.मि.) सुनिश्चित होंगे। कुल समय के मिनट बना ले; मिनटोंको ९ से भाग करने पर लब्ध एक नवांश के मि. सै. होंगे। जो नवांश ज्ञात करना हो उससे गत नवांश संख्याका एक नवांश के मान को गुणा करें। गुणितफल के घंटा-मिनटोंको लग्नारम्भ में जोड़ने से उक्त नवांश का आरम्भकाल होगा, जिसमें एक नवांश के मिनट-सेकेण्ड युक्त करने पर अभीष्ट नवांशका समाप्तिकाल आ जायेगा।

मेष, सिंह तथा धनु लग्न में नवांश की गिनती मेष से शुरू होती है। अतः मेष लग्नमें प्रथम नवांश मेष का होगा, दूसरा वृष का ऐसा ही आगे जानें। वृष, कन्या और मकर लग्नमें नवांश की गणना मकर से की जाती है। मिथुन, तुला और कुम्भ में तुला से गिनती करें। इसी प्रकार कर्क, वृश्चिक एवं मीन लग्न में प्रथम नवांश कर्क का होता है। प्रत्येक लग्न (राशि) के ३० अंश होते है। तीस को ९ से विभाजित किया तो ३०÷९=३ अंश २० कला एक नवांश का मान सुनिश्चित हुआ।

श्री ब्रजभूमि पंचांग से भारत के प्रसिद्ध नगरों का लग्न परिवर्तन तालिका

नगर नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अयोध्या	-१७	-१५	-१४	-१५	-१६	-१८	-१९	-२१	-२२	-२२	-२०	-१८
अलीगढ़	- १	-१	-०	-०	-१	-१	-२	-२	-३	-३	-२	-२
अजमेर	+१६	+१६	+१६	+१६	+१५	+१२	+१०	+१०	+१०	+८	+१०	+११
अकवरपुर	-१८	-१६	-१५	-१५	-१७	-१९	-२१	-२३	-२४	-२२	-२२	-२०
अलवर	+ ५	+५	+५	+५	+५	+४	+३	+३	+३	+३	+३	+४
अनूपशहर	- ३	-४	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-३
अमृतसर	+ ९	+५	+४	+५	+७	+१०	+१४	+१७	+१९	+१८	+१५	+१२
अमेठी	-१५	-१३	-११	-११	-१३	-१६	-१८	-२१	-२२	-२१	-१९	-१७
अगरतला	-५१	-४७	-४४	-४५	-४८	-५३	-५७	-६२	-६४	-६३	-६०	-५५
आगरा	- ०	+१	+२	+२	+१	-१	-३	-४	-५	-४	-३	-१
उन्नाव	-१०	-८	-७	-७	-९	-११	-१३	-१५	-१६	-१५	-१४	-१२
कलकत्ता	-३८	-३३	-३०	-३१	-३५	-४२	-४८	-५२	-५६	-५४	-५०	-४४
कानपुर	- ९	-७	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११
कुल्लू	- १	-४	-६	-५	-२	+१	+५	+९	+११	+१०	+८	+३
कोटा	+ ९	+१३	+१५	+१४	+१२	+८	+५	+२	+०	+१	+३	+७
कोहिमा	-६४	-६१	-६०	-५९	-६२	-६५	-६८	-७०	-७२	-७१	-६९	-६६
गान्तोक	-४२	-४१	-४१	-४१	-४२	-४२	-४५	-४६	-४७	-४७	-४६	-४३
गाँधीनगर	+२४	+२९	+३१	+३०	+२६	+२१	+१६	+११	+८	+९	+१३	+१९
गुना	+ ४	+७	+९	+८	+६	+२	-२	-५	-७	-७	-४	-०
ग्वालियर	- ०	+२	+३	+३	+१	+१	-४	-६	-७	-७	-५	-२
चण्डीगढ़	+ १	-१	-३	-२	-०	+३	+४	+७	+९	+८	+६	+४
चित्तौड़गढ़	+१४	+१८	+१९	+१९	+१६	+१३	+९	+६	+४	+५	+७	+११
जयपुर	+ ९	+११	+११	+११	+९	+८	+६	+४	+३	+४	+५	+७
जम्मू	+ ७	+३	+०	+१	+५	+१०	+१५	+२०	+२२	+२१	+१७	+१२
जवलपुर	- ५	-०	+३	+२	-३	-८	-१३	-१८	-२१	-२०	-१६	-१०
जालन्धर	+ ५	+४	+२	+४	+५	+८	+११	+१३	+१५	+१४	+११	+९
जैसलमेर	+२८	+३०	+३१	+३०	+२९	+२७	+२५	+२४	+२३	+२४	+२५	+२७
जोधपुर	+२०	+२२	+२४	+२३	+२१	+१९	+१६	+१४	+१३	+१४	+१५	+१८
झांसी	- १	+२	+३	+३	+१	-३	-६	-९	-११	-१०	-८	-४
तिरुअनंतपुरम	+१५	+३१	+४०	+३७	+२३	+६	-१३	-२९	-३७	-३४	-२१	-३
दतिया	- १	+२	+३	+३	+१	-२	-५	-८	-९	-९	-७	-४
दमोह	- ४	+१	+२	+२	-१	-६	-११	-१५	-१७	-१६	-१३	-८
दिल्ली	+ १	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+३	+३	+३	+२	+२
दिसपुर	-५६	-५२	-५१	-५१	-५४	-५६	-६०	-६२	-६३	-६३	-६१	-५८
देहरादून	-४	-५	-५	-५	-४	-२	-०	+१	+२	+२	-१	-१

नगर नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
नागपुर	+११	+१८	+२१	+२०	+१५	+७	-०	-६	-१०	-८	-३	+५
नासिक	+२२	+२९	+३४	+३२	+२६	+१७	+९	+२	-३	-१	+५	+१४
पटना	-२८	-२५	-२४	-२४	-२६	-२९	-३२	-३५	-३६	-३६	-३३	-३०
पणजी	+२५	+३६	+४३	+३९	+३०	+१८	+५	-५	-११	-९	-०	+१२
मुम्बई	+२६	+३५	+४०	+३२	+३१	+२१	+११	+४	-१	+१	+७	+१७
वहरायच	-१५	-१५	-१४	-१४	-१५	-१६	-१७	-१७	-१८	-१८	-१७	-१६
वाढ़मेर	+२७	+३०	+३१	+३०	+२९	+२६	+२३	+२१	+२०	+२०	+२२	+२५
वरेली	-७	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-८	-८	-८	-७	-७
वीकानेर	+१९	+२०	+२०	+२०	+२०	+१९	+१८	+१८	+१८	+१८	+१८	+१९
वुलन्दशहर	-०	-०	-०	-०	-०	-१	-१	-२	-२	-२	-२	-१
वेंगलूर	+१२	+२५	+३१	+२९	+१८	+४	-११	-२४	-३१	-२८	-१७	-३
भरतपुर	+२	+३	+४	+४	+३	+१	-०	-२	-३	-२	-१	-१
भुवनेश्वर	-२९	-१९	-१५	-१७	-२३	-३१	-४०	-४६	-५१	-५०	-४३	-३४
भोपाल	+५	+१०	+१२	+१२	+८	+२	-३	-८	-१०	-९	-५	-०
मद्रास	+१	+१३	+२०	+१८	+७	-७	-२२	-३४	-४२	-४०	-२८	-१४
मुरादाबाद	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-५.	-५
मेरठ	-१	-१	-१	-१	-१	-०	+०	+०	+१	+१	+०	+०
मैनपुरी	-४	-३	-२	-२	-३	-५	-७	-८	-९	-९	-७	-५
रांची	-२७	-२२	-१९	-२०	-२४	-२९	-३५	-४०	-४२	-४१	-३७	-३२
रेवाड़ी	+४	+५	+५	+५	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४
रोहतक	+४	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+५	+५	+५	+४	+४
लखनऊ	-१२	-१०	-९	-१०	-११	-१३	-१४	-१६	-१७	-१६	-१५	-१३
लुधियाना	+६	+३	+१	+२	+४	+६	+९	+११	+१३	+१३	+१०	+८
वाराणसी	-१९	-१६	-१४	-१४	-१७	-२०	-२४	-२७	-२९	-२८	-२५	-२२
सहारनपुर	-१	-१	-२	-२	-१	+१	+२	+४	+५	+४	+३	+२
सिक्किम	-४३	-४१	-४०	-४०	-४२	-४३	-४५	-४७	-४७	-४७	-४६	-४४
हाथरस	-०	+२	+३	+३	+२	+१	-३	-५	-७	-६	-४	-२
हिसार	+७	+७	+७	+७	+७	+८	+८	+८	+९	+९	+८	+८

लग्न परिवर्तन तालिका में लिखे नगरों में लग्नारम्भ जानने के लिए इच्छित नगर तथा राशि के नीचे लिखे मिनटों का धन-ऋण चिह्नानुसार संस्कार इस पंचांग में लिखे लग्न प्रवेश काल में करने से उक्त नगर में लग्न प्रारम्भ होने का समय निकल आयेगा।

टिप्पणी:- उपरोक्त संस्कार से संस्कृत लग्नारम्भ स्थूल होता है। सूक्ष्मता लाने के लिये लग्नों में वार्षिक संस्कार करना पड़ता है। वार्षिक संस्कार कोष्ठक पृष्ठ ८२ पर छपा है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म लग्न तो साम्पातिक काल के माध्यम से स्पष्ट होता है। अन्यथा ज्या-कोटिज्या गणित करना पड़ता है।

नवम्बर मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
	प्रात:	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रात:
१	७।४४	१०।११	१२।१५	१३।४९	१५।१८	१६।४५	१८।२२	२०।१९	२२।३३	०।५१	३।१९	५।२५
२	७।४०	९।५७	१२।११	१३।४५	१५।१४	१६।४१	१८।१८	२०।१५	२२।२९	०।४७	३।१५	५।२१
३	७।३६	९।५३	११।५७	१३।४१	१५।१०	१६।३७	१८।१४	२०।११	२२।२५	०।४३	३।११	५।१७
४	७।३२	९।४९	११।५३	१३।३७	१५।६	१६।३३	१८।१०	२०।७	२२।२१	०।३९	२।५७	५।१३
५	७।२८	९।४५	११।४९	१३।३३	१५।२	१६।२९	१८।६	२०।३	२२।१७	०।३५	२।५३	५।९
६	७।२४	९।४१	११।४५	१३।२९	१४।५८	१६।२५	१८।२	१९।५९	२२।१३	०।३१	२।४९	५।५
७	७।२०	९।३७	११।४१	१३।२५	१४।५४	१६।२१	१७।५८	१९।५५	२२।९	०।२७	२।४५	५।१
८	७।१६	९।३३	११।३७	१३।२१	१४।५०	१६।१७	१७।५४	१९।५१	२२।५	०।२३	२।४१	४।५७
९	७।१२	९।२९	११।३३	१३।१७	१४।४६	१६।१३	१७।५०	१९।४७	२२।१	०।१९	२।३७	४।५३
१०	७।८	९।२५	११।२९	१३।१३	१४।४२	१६।९	१७।४६	१९।४३	२१।५७	०।१५	२।३३	४।४९
११	७।४	९।२१	११।२५	१३।९	१४।३८	१६।५	१७।४२	१९।३९	२१।५३	०।११	२।२९	४।४५
१२	७।०	९।१७	११।२१	१३।५	१४।३४	१६।१	१७।३८	१९।३५	२१।४९	०।७	२।२५	४।४१
१३	६।५६	९।१३	११।१७	१३।१	१४।३०	१५।५७	१७।३४	१९।३१	२१।४५	०।३	२।२१	४।३७
१४	६।५२	९।९	११।१३	१२।५७	१४।२६	१५।५३	१७।३०	१९।२७	२१।४१	२३।५९	२।१७	४।३३
१५	६।४८	९।५	११।९	१२।५३	१४।२२	१५।४९	१७।२६	१९।२३	२१।३७	२३।५५	२।१३	४।२९
१६	६।४४	९।१	११।५	१२।४९	१४।१८	१५।४५	१७।२२	१९।१९	२१।३३	२३।५१	२।९	४।२५
१७	६।४०	८।५७	११।१	१२।४५	१४।१४	१५।४१	१७।१८	१९।१५	२१।२९	२३।४७	२।५	४।२१
१८	६।३७	८।५४	१०।५८	१२।४२	१४।११	१५।३८	१७।१५	१९।१२	२१।२६	२३।४४	२।२	४।१८
१९	६।३३	८।५०	१०।५४	१२।३८	१४।७	१५।३४	१७।११	१९।८	२१।२२	२३।४०	१।५८	४।१४
२०	६।२९	८।४६	१०।५०	१२।३४	१४।३	१५।३०	१७।७	१९।४	२१।१८	२३।३६	१।५४	४।१०
२१	६।२५	८।४२	१०।४६	१२।३०	१३।५९	१५।२६	१७।३	१९।०	२१।१४	२३।३२	१।५०	४।६
२२	६।२२	८।३९	१०।४३	१२।२७	१३।५६	१५।२३	१७।०	१८।५७	२१।११	२३।२९	१।४७	४।२
२३	६।१८	८।३५	१०।३९	१२।२३	१३।५२	१५।१९	१६।५६	१८।५३	२१।७	२३।२५	१।४३	३।५९
२४	६।१४	८।३१	१०।३५	१२।१९	१३।४८	१५।१५	१६।५२	१८।४९	२१।३	२३।२१	१।३९	३।५५
२५	६।१०	८।२७	१०।३१	१२।१५	१३।४४	१५।११	१६।४८	१८।४५	२०।५९	२३।१७	१।३५	३।५१
२६	६।६	८।२३	१०।२७	१२।११	१३।४०	१५।७	१६।४४	१८।४१	२०।५५	२३।१३	१।३१	३।४७
२७	६।२	८।१९	१०।२३	१२।७	१३।३६	१५।३	१६।४०	१८।३७	२०।५१	२३।९	१।२७	३।४३
२८	५।५८	८।१५	१०।१९	१२।३	१३।३२	१४।५९	१६।३६	१८।३३	२०।४७	२३।५	१।२३	३।३९
२९	५।५४	८।११	१०।१५	११।५९	१३।२८	१४।५५	१६।३२	१८।२९	२०।४३	२३।१	१।१९	३।३५
३०	५।५१	८।८	१०।१२	११।५६	१३।२५	१४।५२	१६।२९	१८।२६	२०।४०	२२।५८	१।१६	३।३२

दिसम्बर मास की दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी स्टै. टाइम घंटा-मिनट

तारीख	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
	प्रात:	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायं	सायं	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	प्रात:
१	८।१४	१०।१८	११।५२	१३।२१	१४।४८	१६।२५	१८।२२	२०।३६	२२।५४	१।१२	३।२८	५।४७
२	८।१०	१०।१४	११।४८	१३।१७	१४।४४	१६।२१	१८।१८	२०।३२	२२।५०	१।८	३।२४	५।४३
३	७।५६	१०।१०	११।४४	१३।१३	१४।४०	१६।१७	१८।१४	२०।२८	२२।४६	१।४	३।२०	५।३९
४	७।५२	९।५६	११।४०	१३।९	१४।३६	१६।१३	१८।१०	२०।२४	२२।४२	१।०	३।१६	५।३५
५	७।४८	९।५२	११।३६	१३।५	१४।३२	१६।९	१८।६	२०।२०	२२।३८	०।५६	३।१२	५।३१
६	७।४४	९।४८	११।३२	१३।१	१४।२८	१६।५	१८।२	२०।१६	२२।३४	०।५२	३।८	५।२७
७	७।४०	९।४४	११।२८	१२।५७	१४।२४	१६।१	१७।५८	२०।१२	२२।३०	०।४८	३।४	५।२३
८	७।३७	९।४१	११।२५	१२।५४	१४।२१	१५।५८	१७।५५	२०।९	२२।२७	०।४५	३।१	५।२०
९	७।३३	९।३७	११।२१	१२।५०	१४।१७	१५।५४	१७।५१	२०।५	२२।२३	०।४१	२।५७	५।१६
१०	७।२९	९।३३	११।१७	१२।४६	१४।१३	१५।५२	१७।४७	२०।१	२२।१९	०।३७	२।५३	५।१२
११	७।२५	९।२९	११।१३	१२।४२	१४।९	१५।४८	१७।४३	१९।५७	२२।१५	०।३३	२।४९	५।८
१२	७।२१	९।२५	११।९	१२।३८	१४।५	१५।४४	१७।३९	१९।५३	२२।११	०।२९	२।४५	५।४
१३	७।१७	९।२१	११।५	१२।३४	१४।१	१५।४०	१७।३५	१९।४९	२२।७	०।२५	२।४१	५।०
१४	७।१३	९।१७	११।१	१२।३०	१३।५७	१५।३६	१७।३१	१९।४५	२२।३	०।२१	२।३७	४।५६
१५	७।९	९।१३	१०।५७	१२।२६	१३।५३	१५।३२	१७।२७	१९।४१	२१।५९	०।१७	२।३३	४।५२
१६	७।५	९।९	१०।५३	१२।२२	१३।४९	१५।२८	१७।२३	१९।३७	२१।५५	०।१३	२।२९	४।४८
१७	७।१	९।५	१०।४९	१२।१८	१३।४५	१५।२४	१७।१९	१९।३३	२१।५१	०।९	२।२५	४।४४
१८	६।५७	९।१	१०।४५	१२।१४	१३।४१	१५।१९	१७।१५	१९।२९	२१।४७	०।५	२।२१	४।४०
१९	६।५३	८।५७	१०।४१	१२।१०	१३।३७	१५।१४	१७।११	१९।२५	२१।४३	०।१	२।१७	४।३६
२०	६।४९	८।५३	१०।३७	१२।६	१३।३३	१५।१०	१७।७	१९।२१	२१।३९	२३।५७	२।१३	४।३२
२१	६।४५	८।४९	१०।३३	१२।२	१३।२९	१५।६	१७।३	१९।१७	२१।३५	२३।५३	२।९	४।२८
२२	६।४२	८।४६	१०।३०	११।५९	१३।२६	१५।३	१७।०	१९।१४	२१।३२	२३।५०	२।६	४।२५
२३	६।३८	८।४२	१०।२६	११।५५	१३।२२	१४।५९	१६।५६	१९।१०	२१।२८	२३।४६	२।२	४।२१
२४	६।३४	८।३८	१०।२२	११।५१	१३।१८	१४।५५	१६।५२	१९।६	२१।२४	२३।४२	१।५८	४।१७
२५	६।३०	८।३४	१०।१८	११।४७	१३।१४	१४।५१	१६।४८	१९।२	२१।२०	२३।३८	१।५४	४।१३
२६	६।२६	८।३०	१०।१४	११।४३	१३।१०	१४।४७	१६।४४	१८।५८	२१।१६	२३।३४	१।५०	४।९
२७	६।२२	८।२६	१०।१०	११।३९	१३।६	१४।४३	१६।४०	१८।५४	२१।१२	२३।३०	१।४६	४।५
२८	६।१८	८।२२	१०।६	११।३५	१३।२	१४।३९	१६।३६	१८।५०	२१।८	२३।२७	१।४२	४।१
२९	६।१४	८।१८	१०।२	११।३१	१२।५८	१४।३५	१६।३२	१८।४६	२१।४	२३।२२	१।३८	३।५७
३०	६।१०	८।१४	९।५८	११।२७	१२।५४	१४।३१	१६।२८	१८।४२	२१।०	२३।१८	१।३४	३।५३
३१	६।६	८।१०	९।५४	११।२३	१२।५०	१४।२७	१६।२४	१८।३८	२०।५६	२३।१४	१।३०	३।४९

विशेष जानकारी :- भगवान् श्रीकृष्ण की जन्मस्थली ब्रजभूमि 'मथुरा' का उत्तरअक्षांश २७।२८ तथा ग्रीनविच से पूर्वरेखांश ७७।४१ है। तदनुसार पलभा ६ अंगुल १४ व्यंगुल तुल्य चरखण्ड ६२।५०।२१ परित्वेन बना सायन मेषादि लग्नमान पलात्मक २१७।२४९।३०१।३४३।३४९।३४१।३४१।३४९।३४३।३०१।२४९।२१७ है। इसी के अनुसार पृष्ठ (७२) पर छपी लग्न सारिणी बनाई गई है।

अंग्रेजी तारीख मासानुसार दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी में प्रयुक्त मेषादि लग्नोंका निरियन मान घंटा-मिनटों में इस प्रकार है- [illegible] धनु २।४ मकर १।४४ कुम्भ १।२९ मीन १ घं. २७ मि.। **नोट :-** अक्षांश भेद से लग्नमान कम ज्यादा हो जाता है। निरक्ष देश (भूमध्य रेखा) लंकोदय मान मेष २७९ वृष २९९ मिथुन ३२२ कर्क ३२२ सिंह २९९ कन्या २७९ यही मान उत्क्रम से पलात्मक तुलादि ६ राशि का होता है। यथा-

लंकोदया विघटिका गजमानिगाङ्कवस्त्रा, त्रिपक्षदहना: क्रमगोत्क्रमस्था:।
हीनान्विताञ्चरदलै: क्रमगोत्क्रमस्थे-मेषादितोघटत उत्क्रमतास्त्वमेस्यु:॥

श्री ब्रजभूमि पंचांग से भारत के प्रसिद्ध नगरों की लग्न परिवर्तन तालिका

नगर नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अयोध्या	-१७	-१५	-१४	-१५	-१६	-१८	-१९	-२१	-२२	-२२	-२०	-१८
अलीगढ़	- १	-१	-०	-०	-१	-१	-२	-२	-३	-३	-२	-२
अजमेर	+१६	+१६	+१६	+१६	+१५	+१२	+१०	+१०	+१०	+८	+१०	+११
अकबरपुर	-१८	-१६	-१५	-१५	-१७	-१९	-२१	-२३	-२४	-२२	-२२	-२०
अलवर	+ ५	+५	+५	+५	+५	+४	+३	+३	+३	+३	+३	+४
अनूपशहर	- ३	-४	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-३
अमृतसर	+ ९	+५	+४	+५	+७	+१०	+१४	+१७	+१९	+१८	+१५	+१२
अमेठी	-१५	-१३	-११	-११	-१३	-१६	-१८	-२१	-२२	-२१	-१९	-१७
अगरतला	-५१	-४७	-४४	-४५	-४८	-५३	-५७	-६२	-६४	-६३	-६०	-५५
आगरा	- ०	+१	+२	+२	+१	-१	-३	-४	-५	-४	-३	-१
उन्नाव	-१०	-८	-७	-७	-९	-११	-१३	-१५	-१६	-१५	-१४	-१२
कलकत्ता	-३८	-३३	-३०	-३१	-३५	-४२	-४८	-५२	-५६	-५४	-५०	-४४
कानपुर	- ९	-७	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११
कुल्लू	- १	-४	-६	-५	-२	+१	+५	+९	+११	+१०	+८	+३
कोटा	+ ९	+१३	+१५	+१४	+१२	+८	+५	+२	+०	+१	+३	+७
कोहिमा	-६४	-६१	-६०	-५९	-६२	-६५	-६८	-७०	-७२	-७१	-६९	-६६
गान्तोक	-४२	-४१	-४१	-४१	-४२	-४२	-४५	-४६	-४७	-४७	-४६	-४३
गाँधीनगर	+२४	+२९	+३१	+३०	+२६	+२१	+१६	+११	+८	+९	+१३	+१९
गुना	+ ४	+७	+९	+८	+६	+२	-२	-५	-७	-७	-४	-०
ग्वालियर	- ०	+२	+३	+३	+१	+१	-४	-६	-७	-७	-५	-२
चण्डीगढ़	+ १	-१	-३	-२	-०	+३	+४	+७	+९	+८	+६	+४
चित्तौड़गढ़	+१४	+१८	+१९	+१९	+१६	+१३	+९	+६	+४	+५	+७	+११
जयपुर	+ ९	+११	+११	+११	+९	+८	+६	+४	+३	+४	+५	+७
जम्मू	+ ७	+३	+०	+१	+५	+१०	+१५	+२०	+२२	+२१	+१७	+१२
जवलपुर	- ५	-०	+३	+२	-३	-८	-१३	-१८	-२१	-२०	-१६	-१०
जालन्धर	+ ५	+४	+२	+४	+५	+८	+११	+१३	+१५	+१४	+११	+९
जैसलमेर	+२८	+३०	+३१	+३०	+२९	+२७	+२५	+२४	+२३	+२४	+२५	+२७
जोधपुर	+२०	+२२	+२४	+२३	+२१	+१९	+१६	+१४	+१३	+१४	+१५	+१८
झांसी	- १	+२	+३	+३	+१	-३	-६	-९	-११	-१०	-८	-४
तिरुअनंतपुर	+१५	+३१	+४०	+३७	+२३	+६	-१३	-२९	-३७	-३४	-२१	-३
दतिया	- १	+२	+३	+३	+१	-२	-५	-८	-९	-९	-७	-४
दमोह	- ४	+१	+२	+२	-१	-६	-११	-१५	-१७	-१६	-१३	-८
दिल्ली	+ १	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+३	+३	+३	+२	+२
दिसपुर	-५६	-५२	-५१	-५१	-५४	-५६	-६०	-६२	-६३	-६३	-६१	-५८
देहरादून	-४	-५	-५	-५	-४	-२	-०	+१	+२	+२	-१	-१

नगर नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
नागपुर	+११	+१८	+२१	+२०	+१५	+७	-०	-६	-१०	-८	-३	+५
नासिक	+२२	+२९	+३४	+३२	+२६	+१७	+९	+२	-३	-१	+५	+१४
पटना	-२८	-२५	-२४	-२४	-२६	-२९	-३२	-३५	-३६	-३६	-३३	-३०
पणजी	+२५	+३६	+४३	+३९	+३०	+१८	+५	-५	-११	-९	-०	+१२
मुम्बई	+२६	+३५	+४०	+३२	+३१	+२१	+११	+४	-१	+१	+७	+१७
वहरायच	-१५	-१५	-१४	-१४	-१५	-१६	-१७	-१७	-१८	-१८	-१७	-१६
वाढ़मेर	+२७	+३०	+३१	+३०	+२९	+२६	+२३	+२१	+२०	+२०	+२२	+२५
वरेली	-७	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-८	-८	-८	-७	-७
वीकानेर	+१९	+२०	+२०	+२०	+२०	+१९	+१८	+१८	+१८	+१८	+१८	+१९
वुलन्दशहर	-०	-०	-०	-०	-०	-१	-१	-२	-२	-२	-२	-१
वेंगलूर	+१२	+२५	+३१	+२९	+१८	+४	-११	-२४	-३१	-२८	-१७	-३
भरतपुर	+२	+३	+४	+४	+३	+१	-०	-२	-३	-२	-१	-१
भुवनेश्वर	-२९	-१९	-१५	-१७	-२३	-३१	-४०	-४६	-५१	-५०	-४३	-३४
भोपाल	+५	+१०	+१२	+१२	+८	+२	-३	-८	-१०	-९	-५	-०
मद्रास	+१	+१३	+२०	+१८	+७	-७	-२२	-३४	-४२	-४०	-२८	-१४
मुरादाबाद	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-५.	-५
मेरठ	-१	-१	-१	-१	-१	-०	+०	+०	+१	+१	+०	+०
मैनपुरी	-४	-३	-२	-२	-३	-५	-७	-८	-९	-९	-७	-५
रांची	-२७	-२२	-१९	-२०	-२४	-२९	-३५	-४०	-४२	-४१	-३७	-३२
रेवाड़ी	+४	+५	+५	+५	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४
रोहतक	+४	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+५	+५	+५	+४	+४
लखनऊ	-१२	-१०	-९	-१०	-११	-१३	-१४	-१६	-१७	-१६	-१५	-१३
लुधियाना	+६	+३	+१	+२	+४	+६	+९	+११	+१३	+१३	+१०	+८
वाराणसी	-१९	-१६	-१४	-१४	-१७	-२०	-२४	-२७	-२९	-२८	-२५	-२२
सहारनपुर	-१	-१	-२	-२	-१	+१	+२	+४	+५	+४	+३	+२
सिक्किम	-४३	-४१	-४०	-४०	-४२	-४३	-४५	-४७	-४७	-४७	-४६	-४४
हाथरस	-०	+२	+३	+३	+२	+१	-३	-५	-७	-६	-४	-२
हिसार	+७	+७	+७	+७	+७	+८	+८	+८	+९	+९	+८	+८

लग्न परिवर्तन तालिका में लिखे नगरों में लग्नारम्भ जानने के लिए इच्छित नगर तथा राशि के नीचे लिखे मिनटों का धन-ऋण चिह्नानुसार संस्कार इस पंचांग में लिखे लग्न प्रवेश काल में करने से उक्त नगर में लग्न प्रारम्भ होने का समय निकल आयेगा।

टिप्पणी:- उपरोक्त संस्कार से संस्कृत लग्नारम्भ स्थूल होता है। सूक्ष्मता लाने के लिये लग्नों में वार्षिक संस्कार करना पड़ता है। वार्षिक संस्कार कोष्ठक पृष्ठ ८२ पर छपा है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म लग्न तो साम्पातिक काल के माध्यम से स्पष्ट होता है। अन्यथा ज्या-कोटिज्या गणित करना पड़ता है।

❀ लग्न सारिणी ❀

ब्रजेश्वरि श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण जी की लीलास्थली ब्रजभूमि अक्षांश २७।२८ पलभा ६।१४।१९ चरखण्ड ६२।५०।२१ अयनांश २४

अंशाः-	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष ०	२ ५३	३ ०	३ ८	३ १५	३ २२	३ २९	३ ३७	३ ४५	३ ५३	४ २	४ १०	४ १८	४ २७	४ ३५	४ ४३
वृष १	६ ५६	७ ५	७ १३	७ २१	७ २९	७ ३७	७ ४६	७ ५६	८ ६	८ १६	८ २६	८ ३६	८ ४६	८ ५६	९ ६
मिथुन २	११ ४७	११ ५७	१२ ७	१२ १७	१२ २७	१२ ३७	१२ ४७	१२ ५८	१३ ९	१३ २१	१३ ३२	१३ ४४	१३ ५५	१४ ६	१४ १८
कर्क ३	१७ २२	१७ ३३	१७ ४५	१७ ५६	१८ ८	१८ १९	१८ ३०	१८ ४१	१८ ५३	१९ ४	१९ १६	१९ २८	१९ ३९	१९ ५१	२० ३
सिंह ४	२३ ७	२३ १८	२३ ३०	२३ ४१	२३ ५३	२४ ५	२४ १९	२४ ३०	२४ ४१	२४ ५३	२५ ४	२५ १५	२५ २७	२५ ३८	२५ ४९
कन्या ५	२८ ५२	२९ ३	२९ १५	२९ २६	२९ ३७	२९ ४८	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३४	३० ४५	३० ५६	३१ ८	३१ १९	३१ ३०
तुला ६	३४ ३३	३४ ४५	३४ ५६	३५ ८	३५ १९	३५ ३०	३५ ४१	३५ ५२	३६ ४	३६ १५	३६ २७	३६ ३९	३६ ५१	३७ ३	३७ १४
वृश्चिक ७	४० २०	४० ३२	४० ४३	४० ५४	४१ ६	४१ १८	४१ ३०	४१ ४१	४१ ५३	४२ ४	४२ १५	४२ २६	४२ ३७	४२ ४९	४३ ०
धनु ८	४६ ३	४६ १४	४६ २६	४६ ३७	४६ ४८	४७ ०	४७ १२	४७ २३	४७ ३३	४७ ४३	४७ ५३	४८ ३	४८ १३	४८ २३	४८ ३३
मकर ९	५१ १४	५१ २४	५१ ३४	५१ ४४	५१ ५४	५२ ४	५२ १३	५२ २२	५२ ३०	५२ ३९	५२ ४७	५२ ५६	५३ ५	५३ १३	५३ २१
कुम्भ १०	५५ ३४	५५ ४२	५५ ५१	५५ ५९	५६ ७	५६ १५	५६ २३	५६ ३०	५६ ३७	५६ ४४	५६ ५२	५६ ५९	५७ ६	५७ १३	५७ २०
मीन ११	५९ १६	५९ २३	५९ ३०	५९ ३७	५९ ४५	५९ ५२	० ०	० ७	० १४	० २१	० २८	० ३६	० ४३	० ५०	० ५७

अंशाः-	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	४ ५२	५ ०	५ ८	५ १७	५ २५	५ ३३	५ ४१	५ ५०	५ ५८	६ ७	६ १५	६ २३	६ ३१	६ ३९	६ ४८
वृष १	९ १६	९ २६	९ ३६	९ ४६	९ ५७	१० ७	१० [illegible]७	१० २७	१० ३७	१० ४७	१० ५७	११ ७	११ १७	११ २७	११ ३७
मिथुन २	१४ २९	१४ ४१	१४ ५२	१५ ३	१५ १५	१५ २६	१५ ३८	१५ ४९	१६ ०	१६ १२	१६ २४	१६ ३५	१६ ४६	१६ ५८	१७ १०
कर्क ३	२० १४	२० २५	२० ३६	२० ४८	२१ ०	२१ ११	२१ २३	२१ ३५	२१ ४६	२१ ५८	२२ १०	२२ २१	२२ ३२	२२ ४३	२२ ५५
सिंह ४	२६ १	२६ १२	२६ २४	२६ ३५	२६ ४६	२६ ५८	२७ ९	२७ २०	२७ ३१	२७ ४३	२७ ५४	२८ ६	२८ १७	२८ २८	२८ ४०
कन्या ५	३१ ४२	३१ ५३	३२ ५	३२ १६	३२ २७	३२ ३९	३२ ५०	३३ १	३३ १३	३३ २४	३३ ३६	३३ ४७	३३ ५९	३४ १०	३४ २२
तुला ६	३७ २६	३७ ३८	३७ ५०	३८ २	३८ १३	३८ २४	३८ ३६	३८ ४७	३८ ५९	३९ १०	३९ २२	३९ ३४	३९ ४५	३९ ५६	४० ८
वृश्चिक ७	४३ १२	४३ २३	४३ ३५	४३ ४६	४३ ५७	४४ ९	४४ २१	४४ ३२	४४ ४४	४४ ५५	४५ ६	४५ १८	४५ २९	४५ ४१	४५ ५२
धनु ८	४८ ४३	४८ ५३	४९ ३	४९ १३	४९ २३	४९ ३३	४९ ४३	४९ ५३	५० ३	५० १४	५० २४	५० ३४	५० ४४	५० ५४	५१ ४
मकर ९	५३ २९	५३ ३८	५३ ४६	५३ ५४	५४ २	५४ ११	५४ २०	५४ २८	५४ ३६	५४ ४४	५४ ५३	५५ १	५५ ९	५५ १७	५५ २५
कुम्भ १०	५७ २८	५७ ३५	५७ ४२	५७ ४९	५७ ५६	५८ ४	५८ ११	५८ १८	५८ २५	५८ ३२	५८ ४०	५८ ४७	५८ ५४	५९ १	५९ ९
मीन ११	१ ५	१. १२	१ १९	१ २६	१ ३३	१ ४१	१ ४८	१ ५५	२ २	२ १०	२ १७	२ २४	२ ३१	२ ३९	२ ४६

पलभा ज्ञान सारणी

१	०।१२।३६	३१	७।१२।३८
२	०।२५।८	३२	७।२९।५५
३	०।३७।४३	३३	७।४७।३४
४	०।५०।१९	३४	८।५।३८
५	१।३।०	३५	८।२४।८
६	१।१५।४०	३६	८।४३।५६
७	१।२८।२४	३७	९।२।३५
८	१।४१।१०	३८	९।२२।३२
९	१।५४।२	३९	९।४३।३
१०	२।६।५६	४०	१०।४।१९
११	२।१९।५८	४१	१०।२५।५३
१२	२।३३।४	४२	१०।४८।१७
१३	२।४६।१४	४३	११।११।२४
१४	२।५९।२९	४४	११।३५।१८
१५	३।१३।५	४५	१२।०।०
१६	३।२६।२५	४६	१२।२५।३३
१७	३।४०।६	४७	१२।५२।७
१८	३।५३।५५	४८	१३।१९।३७
१९	४।७।५३	४९	१३।४८।२५
२०	४।२२।४	५०	१४।१८।५
२१	४।३६।२४	५१	१४।४९।७
२२	४।५०।५२	५२	१५।२१।३१
२३	५।५।३८	५३	१५।५५।२६
२४	५।२०।३२	५४	१६।३१।०
२५	५।३५।४४	५५	१७।१५।२५
२६	५।५१।८	५६	१७।४७।२८
२७	६।६।५०	५७	१८।२८।४३
२८	६।२२।५०	५८	१९।१२।१२
२९	६।३९।५	५९	१९।५८।१७
३०	६।५५।४३	६०	२०।४७।६

इष्ट बनाने की नूतन विधि- जिस दिन जिस टाइम का इष्ट बनाना हो तत्कालीन स्टैं.टाइम घंटा-मिनट में से उसी दिन का सूर्योदय घटा दें; शेष घंटादि इष्ट काल होगा। जिसे ढ़ाई से गुणाकर घटी-पल बना लें। (लग्न सारणी में लिखे अंक भी घटी पल होते हैं।) **स्मरण रहे--** जिस स्थान का इष्ट बनाना हो उसी स्थान का सूर्योदय घटावें।

उदाहरण- १ जनवरी को दिन में २ बजकर २३ मि. पर किसी का जन्म हुआ या किसी की पदनियुक्ति फल ज्ञानार्थ इष्ट बनाना है तो दिन के २।२३ को स्टैं.टाइम के अनुसार १४ घंटा २३ मिनट लिखकर उनमेंसे उसी दिन का सूर्योदय ७ घं. २३ मि. घटाया तो शेष [illegible] मि. इष्ट काल हुआ। इसको २॥ से गुणा किया तो १७ घटी ५५ पल शुद्ध इष्टकाल सिद्ध हुआ। नोट- मध्य रात्रि १२ बजे के बाद का इष्ट बनानेके लिए २४ में जोड़कर तब सूर्योदय घटायें। जैसे- रात्रि २ बजे को २६ लिखें, ४ बजे को २८ घंटा लिखें इत्यादि।

लग्न ज्ञात कीजिये- तद्दिने रविराश्यांश तुल्य लग्न सारिणी से घट्यादि अनुपात फल लेकर इष्टघटी पलों में जोड़ दें। (जोड़ यदि ६० से अधिक हो तो ६० घटी घटाकर शेष) कुल योग तुल्य लग्न सारिणी में जहां समानांक मिलें, उसके बाईं ओर लिखी लग्न (राशि) के ऊपर उस लग्न के भुक्तांश होंगे। जिन अंकों से लग्न मिला है वही कला-विकला है ऐसा जानें।

उपरोक्त सारिणी में १ से ६० अक्षांश की अंगुल,व्यंगुल, प्रतिव्यंगुल पलभा दी गई है। ज्ञानार्थसूत्र- मथुरा का अक्षांश २७।२८ है, इसलिए अंश २८ की पलभा ६।२२।५० में से २७ की पलभा ६।६।५० को घटाया तो शेष १६ व्यंगुल रहे। अर्थात् १ कला बराबर १६ प्रतिव्यंगुल सिद्ध हुए। १६x२८ = ४४८÷६०=७ व्यंगुल २८ प्रतिव्यंगुल को २७ अक्षांश की पलभा ६।६।५० में जोड़ा

भारत के प्रसिद्ध नगरों में (भा.स्टै.टा के अनुसार) सूर्योदयास्त

मास	तारीख	अयोध्या		अलीगढ		अलमोडा		आगरा		अहमदाबाद		उरई (जालौन)		कुल्लू		कानपुर	
		उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
अप्रैल	१	५।५६	१८।१४	६।१२	१८।३२	६। ५	१८।२६	६।१२	१८।३२	६।३६	१८।५१	६। ७	१८।२६	६।१५	१८।३७	६। ३	१८।२२
	६	५।५१	१८।१७	६। ६	१८।३५	५।५९	१८।२९	६। ७	१८।३४	६।३२	१८।५३	६। २	१८।२८	६। ९	१८।४०	५।५८	१८।२५
	११	५।४७	१८।१७	६। १	१८।३७	५।५३	१८।३२	६। १	१८।३७	६।२७	१८।५५	५।५६	१८।३१	६। २	१८।४३	५।५२	१८।२७
	१६	५।४३	१८।१९	५।५५	१८।४०	५।४७	१८।३५	५।५६	१८।४०	६।२२	१८।५७	५।५१	१८।३३	५।५६	१८।४७	५।४७	१८।३०
	२१	५।३८	१८।२२	५।५०	१८।४३	५।४२	१८।३८	५।५१	१८।४२	६।१८	१८।५८	५।४६	१८।३६	५।५१	१८।५०	५।४२	१८।३२
	२६	५।३३	१८।२५	५।४५	१८।४६	५।३७	१८।४१	५।४६	१८।४४	६।१६	१९। ०	५।४२	१८।३८	५।४५	१८।५४	५।३८	१८।३५
मई	१	५।२७	१८।२९	५।४१	१८।४८	५।३३	१८।४४	५।४३	१८।४८	६।११	१९। ३	५।३८	१८।४१	५।४०	१८।५७	५।३४	१८।३८
	६	५।२३	१८।३३	५।३८	१८।५१	५।२९	१८।४७	५।३९	१८।५०	६। ७	१९। ५	५।३५	१८।४३	५।३६	१९। १	५।३०	१८।४०
	११	५।१९	१८।३५	५।३४	१८।५४	५।२५	१८।५०	५।३५	१८।५३	६। ५	१९। ७	५।३१	१८।४६	५।३३	१९। ४	५।२७	१८।४३
	१६	५।१६	१८।३८	५।३१	१८।५७	५।२२	१८।५३	५।३३	१८।५६	६। ३	१९। ९	५।२९	१८।४८	५।२८	१९। ८	५।२४	१८।४५
	२१	५।१५	१८।४१	५।२९	१८।५९	५।२०	१८।५६	५।३१	१८।५८	६। १	१९।१२	५।२७	१८।५१	५।२५	१९।११	५।२२	१८।४८
	२६	५।१३	१८।४३	५।२८	१९। १	५।१८	१८।५८	५।२९	१९। १	५।५९	१९।१४	५।२५	१८।५३	५।२३	१९।१४	५।२१	१८।५०
	३१	५।१२	१८।४६	५।२७	१९। ४	५।१७	१९। १	५।२८	१९। ३	५।५८	१९।१६	५।२४	१८।५५	५।२१	१९।१८	५।२०	१८।५३
जून	५	५।१०	१८।४८	५।२६	१९। ६	५।१६	१९। ३	५।२७	१९। ५	५।५८	१९।१८	५।२४	१८।५७	५।२०	१९।१९	५।१९	१८।५४
	१०	५।१०	१८।५०	५।२५	१९। ८	५।१६	१९। ५	५।२७	१९। ७	५।५७	१९।२०	५।२४	१८।५९	५।२०	१९।२१	५।१९	१८।५७
	१५	५।११	१८।५१	५।२६	१९।१०	५।१६	१९। ७	५।२७	१९। ९	५।५८	१९।२१	५।२४	१९। १	५।२०	१९।२४	५।१९	१८।५८
	२०	५।११	१८।५३	५।२७	१९।११	५।१७	१९। ८	५।२८	१९।१०	५।५९	१९।२३	५।२५	१९। २	५।२०	१९।२५	५।२०	१८।५९
	२५	५।१२	१८।५४	५।२८	१९।१२	५।१८	१९। ९	५।२९	१९।११	६। ०	१९।२४	५।२६	१९। ३	५।२२	१९।२६	५।२१	१९। १
	३०	५।१४	१८।५४	५।२९	१९।१३	५।२०	१९।१०	५।३१	१९।१२	६। १	१९।२४	५।२७	१९। ४	५।२३	१९।२७	५।२३	१९। १
जुलाई	५	५।१६	१८।५४	५।३१	१९।१३	५।२२	१९।१०	५।३३	१९।१२	६। ३	१९।२४	५।२९	१९। ४	५।२६	१९।२६	५।२५	१९। २
	१०	५।१८	१८।५४	५।३३	१९।१२	५।२४	१९। ८	५।३५	१९।११	६। ५	१९।२४	५।३१	१९। ४	५।२८	१९।२६	५।२७	१९। १
	१५	५।२०	१८।५४	५।३६	१९।११	५।२६	१९। ८	५।३७	१९।१०	६। ७	१९।२३	५।३३	१९। ३	५।३१	१९।२४	५।२९	१९। ०
	२०	५।२३	१८।५१	५।३८	१९।१०	५।२९	१९। ७	५।३९	१९। ९	६। ९	१९।२२	५।३५	१९। १	५।३३	१९।२२	५।३१	१८।५९
	२५	५।२५	१८।४९	५।४२	१९। ७	५।३१	१९। ४	५।४२	१९। ७	६।११	१९।२१	५।३६	१९। ०	५।३७	१९।२०	५।३३	१८।५७
	३०	५।२८	१८।४६	५।४३	१९। ५	५।३४	१९। २	५।४४	१९। ५	६।१३	१९।१८	५।४०	१८।५७	५।४०	१९।१६	५।३६	१८।५४
अगस्त	४	५।३०	१८।४४	५।४५	१९। २	५।३६	१८।५८	५।४६	१९। २	६।१५	१९।१६	५।४२	१८।५४	५।४३	१९।१३	५।३८	१८।५१
	९	५।३३	१८।४१	५।४८	१८।५९	५।३९	१८।५५	५।४९	१८।५८	६।१७	१९।१३	५।४५	१८।५१	५।४६	१९। ८	५।४१	१८।४८
	१४	५।३५	१८।३७	५।५०	१८।५५	५।४२	१८।५०	५।५१	१८।५४	६।१९	१९। ९	५।४७	१८।४७	५।५०	१९। ३	५।४४	१८।४४
	१९	५।३८	१८।३२	५।५३	१८।५०	५।४५	१८।४५	५।५४	१८।५०	६।२१	१९। ५	५।४९	१८।४३	५।५३	१८।५८	५।४६	१८।३९
	२४	५।४०	१८।२८	५।५५	१८।४५	५।४७	१८।४०	५।५६	१८।४५	६।२३	१९। १	५।५१	१८।३८	५।५६	१८।५२	५।४८	१८।३५
	२९	५।४२	१८।२२	५।५८	१८।४०	५।५०	१८।३५	५।५९	१८।३९	६।२५	१८।५७	५।५४	१८।३३	५।५९	१८।४६	५।५०	१८।३०
सितम्बर	३	५।४४	१८।१७	६। ०	१८।३४	५।५३	१८।२९	६। १	१८।३४	६।२६	१८।५२	५।५६	१८।२८	६। २	१८।४०	५।५२	१८।२४
	८	५।४७	१८।११	६। ३	१८।२८	५।५५	१८।२३	६। ३	१८।२८	६।२८	१८।४७	५।५८	१८।२२	६। ५	१८।३४	५।५४	१८।१९
	१३	५।४९	१८। ५	६। ५	१८।२२	५।५८	१८।१७	६। ६	१८।२२	६।२९	१८।४२	६। ०	१८।१६	६। ८	१८।२७	५।५७	१८।१३
	१८	५।५१	१७।५९	६। ८	१८।१६	६। १	१८।१०	६। ८	१८।१६	६।३१	१८।३७	६। ३	१८।११	६।११	१८।२१	५।५९	१८। ७
	२३	५।५४	१७।५४	६।१०	१८।१०	६। ४	१८। ४	६।११	१८।११	६।३२	१८।३२	६। ५	१८। ५	६।१४	१८।१४	६। १	१८। १
	२८	५।५५	१७।४९	६।१३	१८। ४	६। ७	१७।५८	६।१३	१८। ५	६।३४	१८।२७	६। ७	१७।५९	६।१७	१८। ८	६। ४	१७।५५

मास	तारीख	कलकत्ता		कोटा		गोहाटी असम		चण्डीगढ		जयपुर		जोधपुर		जबलपुर		जालन्धर		जम्मूकश्मीर	
		उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
अप्रैल	१	५।३३	१७।४८	६।२२	१८।३९	५।१८	१७।३६	६।१७	१८।३७	६।२०	१८।४१	६।३४	१८।५२	६। ७	१८।२२	६।१९	१८।४१	६।२३	१८।४६
	६	५।२९	१७।५०	६।१७	१८।४१	५।१३	१७।३८	६।११	१८।४०	६।१५	१८।४४	६।२९	१८।५५	६। २	१८।२३	६।१३	१८।४३	६।१७	१८।५०
	११	५।२४	१७।५२	६।१२	१८।४३	५। ८	१७।४१	६। ६	१८।४२	६।११	१८।४७	६।२३	१८।५७	५।५७	१८।२५	६। ७	१८।४७	६।११	१८।५३
	१६	५।२०	१७।५४	६। ८	१८।४५	५। ३	१७।४३	५।५९	१८।४६	६। ६	१८।४९	६।१८	१९। ०	५।५२	१८।२७	६। १	१८।५०	६। ५	१८।५६
	२१	५।१५	१७।५५	६। ३	१८।४८	४।५८	१७।४५	५।५३	१८।४९	६। १	१८।५१	६।१४	१९। २	५।४९	१८।२९	५।५५	१८।५३	५।५९	१८।५९
	२६	५।१२	१७।५७	५।५९	१८।५०	४।५४	१७।४८	५।४८	१८।५२	५।५६	१८।५४	६।१०	१९। ४	५।४७	१८।३१	५।५०	१८।५६	५।५३	१९। ३
मई	१	५। ८	१७।५९	५।५५	१८।५२	४।५०	१७।५०	५।४४	१८।५६	५।५२	१८।५७	६। ५	१९। ७	५।४१	१८।३३	५।४५	१८।५९	५।४८	१९। ६
	६	५। ५	१८। २	५।५१	१८।५५	४।४६	१७।५३	५।३९	१८।५९	५।४८	१८।५९	६। २	१९।१०	५।३८	१८।३६	५।४०	१९। ३	५।४३	१९। ९
	११	५। २	१८। ४	५।४८	१८।५८	४।४३	१७।५६	५।३५	१९। ३	५।४५	१९। २	५।५८	१९।१२	५।३५	१८।३८	५।३६	१९। ७	५।३९	१९।१३
	१६	५। ०	१८। ६	५।४६	१९। ०	४।४०	१७।५९	५।३१	१९। ७	५।४२	१९। ५	५।५५	१९।१५	५।३३	१८।४०	५।३३	१९।१०	५।३६	१९।१६
	२१	४।५८	१८। ८	५।४४	१९। २	४।३८	१८। १	५।२८	१९।१०	५।३९	१९। ८	५।५३	१९।१७	५।३१	१८।४२	५।३०	१९।१३	५।३३	१९।१९
	२६	४।५६	१८।११	५।४२	१९। ५	४।३६	१८। ४	५।२५	१९।१३	५।३७	१९।११	५।५२	१९।२०	५।३०	१८।४४	५।२८	१९।१६	५।३०	१९।२३
	३१	४।५५	१८।१३	५।४१	१९। ७	४।३५	१८। ६	५।२३	१९।१६	५।३५	१९।१३	५।५०	१९।२२	५।२९	१८।४७	५।२७	१९।२०	५।२८	१९।२६
जून	५	४।५५	१८।१५	५।४०	१९। ९	४।३४	१८। ८	५।२३	१९।१९	५।३५	१९।१५	५।५०	१९।२५	५।२८	१८।४९	५।२५	१९।२२	५।२७	१९।२९
	१०	४।५५	१८।१७	५।४०	१९।११	४।३४	१८।११	५।२२	१९।२१	५।३५	१९।१८	५।५०	१९।२६	५।२८	१८।५०	५।२५	१९।२५	५।२७	१९।३२
	१५	४।५५	१८।१८	५।४१	१९।१३	४।३४	१८।१२	५।२३	१९।२३	५।३५	१९।२०	५।४९	१९।२९	५।२८	१८।५२	५।२५	१९।२६	५।२७	१९।३४
	२०	४।५६	१८।२०	५।४१	१९।१४	४।३५	१८।१४	५।२३	१९।२५	५।३६	१९।२१	५।४९	१९।३१	५।२९	१८।५४	५।२५	१९।२७	५।२८	१९।३५
	२५	४।५७	१८।२१	५।४२	१९।१५	४।३६	१८।१५	५।२४	१९।२६	५।३७	१९।२२	५।५०	१९।३१	५।३०	१८।५४	५।२७	१९।२८	५।२९	१९।३६
	३०	४।५८	१८।२१	५।४४	१९।१६	४।३८	१८।१५	५।२६	१९।२५	५।३८	१९।२२	५।५३	१९।३२	५।३२	१८।५५	५।२९	१९।२८	५।३१	१९।३६
जुलाई	५	५। ०	१८।२२	५।४६	१९।१६	४।३९	१८।१५	५।२८	१९।२६	५।४०	१९।२२	५।५५	१९।३२	५।३४	१८।५५	५।३०	१९।२८	५।३३	१९।३६
	१०	५। २	१८।२२	५।४८	१९।१६	४।४१	१८।१५	५।३०	१९।२६	५।४२	१९।२२	५।५७	१९।३२	५।३६	१८।५५	५।३२	१९।२७	५।३५	१९।३५
	१५	५। ४	१८।२१	५।५०	१९।१५	४।४४	१८।१४	५।३३	१९।२४	५।४५	१९।२०	५।५९	१९।३०	५।३८	१८।५४	५।३५	१९।२६	५।३७	१९।३४
	२०	५। ६	१८।१९	५।५२	१९।१४	४।४६	१८।१२	५।३६	१९।२२	५।४८	१९।१८	६। १	१९।२९	५।४०	१८।५३	५।३७	१९।२५	५।४०	१९।३२
	२५	५। ८	१८।१८	५।५४	१९।१२	४।४९	१८।१०	५।३९	१९।१९	५।५०	१९।१६	६। ३	१९।२७	५।४२	१८।५१	५।४१	१९।२१	५।४३	१९।२९
	३०	५।१०	१८।१५	५।५७	१९। ९	४।५१	१८। ८	५।४२	१९।१६	५।५३	१९।१३	६। ६	१९।२४	५।४४	१८।४९	५।४५	१९।१९	५।४७	१९।२६
अगस्त	४	५।१३	१८।१३	५।५९	१९। ६	४।५३	१८। ५	५।४६	१९।१२	५।५६	१९।१०	६। ९	१९।२१	५।४६	१८।४७	५।४८	१९।१५	५।५०	१९।२२
	९	५।१४	१८।१०	६। १	१९। ३	४।५६	१८। १	५।४९	१९। ७	५।५८	१९। ६	६।१२	१९।१८	५।४८	१८।४४	५।५१	१९।१२	५।५३	१९।१७
	१४	५।१६	१८। ६	६। ४	१८।५९	४।५८	१७।५७	५।५२	१९। २	६। १	१९। २	६।१४	१९।१४	५।५०	१८।४०	५।५४	१९। ६	५।५६	१९।१२
	१९	५।१८	१८। २	६। ६	१८।५५	५। १	१७।५३	५।५६	१८।५७	६। ३	१८।५७	६।१६	१९।१०	५।५२	१८।३६	५।५६	१९। ०	६। ०	१९। ६
	२४	५।२०	१७।५८	६। ८	१८।५०	५। ३	१७।४८	५।५९	१८।५१	६। ५	१८।५३	६।१८	१९। ६	५।५४	१८।३२	६। ०	१८।५५	६। ३	१९। १
	२९	५।२१	१७।५४	६।१०	१८।४५	५। ५	१७।४३	६। १	१८।४६	६। ७	१८।४८	६।२०	१९। १	५।५५	१८।२७	६। ३	१८।४९	६। ६	१८।५६
सितम्बर	३	५।२३	१७।४९	६।१२	१८।४०	५। ७	१७।३८	६। ४	१८।४०	६। ९	१८।४२	६।२३	१८।५५	५।५७	१८।२३	६। ५	१८।४३	६। ९	१८।५०
	८	५।२४	१७।४४	६।१४	१८।३५	५। ९	१७।३३	६। ७	१८।३४	६।१२	१८।३७	६।२५	१८।४९	५।५८	१८।१८	६। ८	१८।३७	६।१२	१८।४४
	१३	५।२६	१७।४०	६।१५	१८।३०	५।११	१७।२७	६।१०	१८।२८	६।१४	१८।३१	६।२७	१८।४३	६। ०	१८।१३	६।११	१८।३१	६।१५	१८।३७
	१८	५।२७	१७।३४	६।१७	१८।२४	५।१३	१७।२२	६।१२	१८।२१	६। ३	१८।२६	६।३०	१८।३८	६। १	१८। ८	६।१५	१८।२५	६।१८	१८।३०
	२३	५।२९	१७।२९	६।१९	१८।१९	५।१५	१७।१६	६।१५	१८।१५	६।१८	१८।२०	६।३२	१८।३२	६। ३	१८। ३	६।१८	१८।१८	६।२१	१८।२४
	२८	५।३०	१७।२५	६।२१	१८।१४	५।१७	१७।११	६।१७	१८। ९	६।२०	१८।१४	६।३४	१८।२७	६। ४	१७।५८	६।२२	१८।१२	६।२४	१८।१७

भारत के प्रसिद्ध नगरों में (भा.स्टै.टा के अनुसार) सूर्योदयास्त

मास / तारीख	अयोध्या अक्षांश २६।४८ रेखांश ८२।१४		अलीगढ़ अक्षांश २७।५४ रेखांश ७८।५		अलमोडा अक्षांश २९।३७ रेखांश ७९।४०		आगरा अक्षांश २७।११ रेखांश ७८।२		अहमदाबाद अक्षांश २३।२ रेखांश ७२।३८		उरई(जालौन) अक्षांश २५।५९ रेखांश ७९।२७		कुल्लू अक्षांश ३१।५८ रेखांश ७७।६		कानपुर अक्षांश २६।२७ रेखांश ८०।२१		कलकत्ता अक्षांश २२।३४ रेखांश ८८।२३		कोटा अक्षांश २५।११ रेखांश ७५।५०		गोहाटीअसम अक्षांश २६।११ रेखांश ९१।४५		चण्डीगढ़ अक्षांश ३०।४४ रेखांश ७६।५२		जयपुर अक्षांश २६।५५ रेखांश ७५।५२		जोधपुर अक्षांश २६।१९ रेखांश ७३।४		जबलपुर अक्षांश २३।१० रेखांश ७९।५९		जालन्धर अक्षांश ३१।१९ रेखांश ७५।३४		जम्मुकश्मीर अक्षांश ३२।४४ रेखांश ७४।५४	
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
अक्टूबर ३	५।५६	१७।४५	६।१६	१७।५८	६।१०	१७।५१	६।१५	१७।५९	६।३५	१८।२२	६।९	१७।५३	६।२०	१८।१	६।६	१७।५०	५।३२	१७।२०	६।२३	१८।८	५।२०	१७।५	६।२०	१८।३	६।२३	१८।९	६।३६	१८।२१	६।६	१७।५३	६।२३	१८।५	६।२८	१८।११
८	६।१	१७।३७	६।१८	१७।५२	६।१३	१७।४५	६।१८	१७।५३	६।३७	१८।१८	६।१२	१७।४८	६।२४	१७।५५	६।९	१७।४४	५।३४	१७।१५	६।२५	१८।३	५।२२	१७।०	६।२४	१७।५७	६।२६	१८।४	६।३८	१८।१५	६।७	१७।४८	६।२६	१७।५९	६।३१	१८।५
१३	६।३	१७।३१	६।२१	१७।४७	६।१६	१७।४०	६।२१	१७।४७	६।३९	१८।१३	६।१५	१७।४३	६।२७	१७।४९	६।११	१७।३९	५।३५	१७।१०	६।२७	१७।५९	५।२४	१६।५५	६।२७	१७।५१	६।२८	१७।५८	६।४१	१८।१०	६।९	१७।४४	६।३०	१७।५३	६।३४	१७।५९
१८	६।६	१७।२६	६।२४	१७।४२	६।१९	१७।३४	६।२४	१७।४२	६।४१	१८।९	६।१७	१७।३८	६।३१	१७।४३	६।१४	१७।३४	५।३७	१७।६	६।३०	१७।५४	५।२७	१६।५०	६।३०	१७।४५	६।३१	१७।५३	६।४४	१८।५	६।१२	१७।३९	६।३४	१७।४९	६।३७	१७।५३
२३	६।१०	१७।२२	६।२८	१७।३७	६।२३	१७।२९	६।२७	१७।३८	६।४३	१८।५	६।२०	१७।३३	६।३४	१७।३८	६।१७	१७।२९	५।४०	१७।२	६।३२	१७।५०	५।३०	१६।४५	६।३४	१७।४०	६।३४	१७।४९	६।४७	१८।०	६।१४	१७।३५	६।३७	१७।४३	६।४१	१७।४८
२८	६।१२	१७।१८	६।३१	१७।३२	६।२६	१७।२४	६।३१	१७।३२	६।४६	१८।१	६।२३	१७।२९	६।३९	१७।३२	६।२०	१७।२५	५।४२	१६।५९	६।३५	१७।४६	५।३३	१६।४१	६।३७	१७।३५	६।३७	१७।४४	६।५०	१७।५७	६।१६	१७।३२	६।४१	१७।३७	६।४५	१७।४३
नवम्बर २	६।१६	१७।१४	६।३४	१७।२९	६।३०	१७।२०	६।३३	१७।२९	६।४९	१७।५८	६।२६	१७।२५	६।४२	१७।२८	६।२३	१७।२१	५।४५	१६।५६	६।३८	१७।४२	५।३६	१६।३८	६।४२	१७।३१	६।४०	१७।४०	६।५३	१७।५३	६।१९	१७।२८	६।४५	१७।३४	६।४९	१७।३८
७	६।१९	१७।११	६।३८	१७।२५	६।३३	१७।१७	६।३७	१७।२६	६।५२	१७।५५	६।३०	१७।२२	६।४७	१७।२४	६।२७	१७।१८	५।४८	१६।५३	६।४२	१७।४०	५।३९	१६।३४	६।४५	१७।२७	६।४३	१७।३७	६।५६	१७।५०	६।२२	१७।२५	६।५०	१७।३०	६।५३	१७।३४
१२	६।२२	१७।८	६।४२	१७।२३	६।३७	१७।१४	६।४०	१७।२४	६।५५	१७।५३	६।३३	१७।२०	६।५१	१७।२१	६।३०	१७।१५	५।५१	१६।५१	६।४५	१७।३७	५।४३	१६।३२	६।५०	१७।२४	६।४७	१७।३४	७।०	१७।४७	६।२५	१७।२३	६।५४	१७।२७	६।५८	१७।३०
१७	६।२६	१७।६	६।४५	१७।२१	६।४१	१७।११	६।४४	१७।२२	६।५८	१७।५१	६।३७	१७।१८	६।५६	१७।१७	६।३४	१७।१४	५।५४	१६।४९	६।४८	१७।३५	५।४६	१६।३०	६।५४	१७।२१	६।५१	१७।३२	७।४	१७।४५	६।२८	१७।२२	६।५८	१७।२४	७।३	१७।२७
२२	६।३०	१७।४	६।४९	१७।१९	६।४५	१७।१०	६।४८	१७।२०	७।१	१७।५०	६।४०	१७।१६	७।०	१७।१५	६।३७	१७।१२	५।५७	१६।४८	६।५२	१७।३४	५।५०	१६।२८	७।०	१७।१८	६।५५	१७।३१	७।७	१७।४२	६।३१	१७।२१	७।२	१७।२२	७।८	१७।२५
२७	६।३४	१७।४	६।५२	१७।१८	६।४९	१७।९	६।५१	१७।२०	७।४	१७।५०	६।४४	१७।१६	७।५	१७।१४	६।४२	१७।१२	६।१	१६।४८	६।५५	१७।३३	५।५४	१६।२८	७।४	१७।१६	६।५९	१७।३१	७।१०	१७।४२	६।३५	१७।२०	७।७	१७।२१	७।१२	१७।२४
दिसम्बर २	६।३७	१७।३	६।५६	१७।१८	६।५३	१७।९	६।५५	१७।२०	७।८	१७।५०	६।४७	१७।१६	७।९	१७।१३	६।४४	१७।११	६।४	१६।४८	६।५९	१७।३३	५।५७	१६।२७	७।८	१७।१५	७।२	१७।३१	७।१३	१७।४२	६।३९	१७।२०	७।१०	१७।२१	७।१६	१७।२४
७	६।४२	१७।३	७।०	१७।१९	६।५६	१७।९	६।५८	१७।२०	७।११	१७।५१	६।५१	१७।१७	७।१३	१७।१३	६।४८	१७।१२	६।७	१६।४८	७।४	१७।३२	६।१	१६।२८	७।१२	१७।१६	७।६	१७।३१	७।१७	१७।४३	६।४२	१७।२१	७।१४	१७।२१	७।२०	१७।२४
१२	६।४५	१७।५	७।३	१७।२०	७।०	१७।१०	७।२	१७।२१	७।१४	१७।५२	६।५४	१७।१८	७।१६	१७।१४	६।५१	१७।१३	६।१०	१६।५०	७।६	१७।३४	६।४	१६।२९	७।१६	१७।१७	७।९	१७।३२	७।२१	१७।४४	६।४५	१७।२३	७।१८	१७।२१	७।२३	१७।२५
१७	६।४८	१७।६	७।६	१७।२२	७।३	१७।१२	७।५	१७।२३	७।१७	१७।५४	६।५७	१७।२०	७।१९	१७।१६	६।५४	१७।१५	६।१३	१६।५१	७।९	१७।३६	६।७	१६।३१	७।१९	१७।१९	७।१२	१७।३४	७।२५	१७।४५	६।४८	१७।२४	७।२२	१७।२४	७।२६	१७।२६
२२	६।५१	१७।७	७।९	१७।२४	७।५	१७।१४	७।७	१७।२५	७।२०	१७।५६	६।५९	१७।२३	७।२२	१७।१८	६।५७	१७।१८	६।१६	१६।५४	७।१२	१७।३८	६।१०	१६।३२	७।२१	१७।२०	७।१५	१७।३६	७।२८	१७।४६	६।५०	१७।२७	७।२६	१७।२६	७।२९	१७।२८
२७	६।५३	१७।११	७।११	१७।२७	७।८	१७।१७	७।१०	१७।२८	७।२२	१७।५९	७।२	१७।२५	७।२४	१७।२१	६।५९	१७।२०	६।१८	१६।५६	७।१४	१७।४१	६।१२	१६।३५	७।२३	१७।२३	७।१७	१७।३८	७।३०	१७।५०	६।५३	१७।२९	७।२८	१७।३०	७।३१	१७।३१
जनवरी १	६।५५	१७।१५	७।१३	१७।३०	७।१०	१७।२०	७।११	१७।३१	७।२४	१८।२	७।४	१७।२८	७।२६	१७।२४	७।१	१७।२३	६।२०	१६।५९	७।१६	१७।४४	६।१४	१६।३९	७।२५	१७।२७	७।१९	१७।४१	७।३०	१७।५३	६।५५	१७।३३	७।२८	१७।३२	७।३३	१७।३४
६	६।५६	१७।१८	७।१४	१७।३३	७।१०	१७।२४	७।१३	१७।३५	७।२५	१८।५	७।५	१७।३१	७।२७	१७।२८	७।२	१७।२७	६।२२	१७।३	७।१७	१७।४८	६।१४	१६।४२	७।२७	१७।३०	७।१९	१७।४४	७।३२	१७।५७	६।५६	१७।३६	७।२९	१७।३६	७।३४	१७।३७
११	६।५६	१७।२२	७।१४	१७।३७	७।११	१७।२७	७।१३	१७।३८	७।२६	१८।९	७।५	१७।३५	७।२७	१७।३२	७।३	१७।३०	६।२२	१७।६	७।१८	१७।५१	६।१४	१६।४६	७।२७	१७।३३	७।१९	१७।४८	७।३३	१८।१	६।५७	१७।३९	७।२९	१७।४०	७।३४	१७।४१
१६	६।५६	१७।२६	७।१४	१७।४१	७।११	१७।३१	७।१३	१७।४२	७।२६	१८।१२	७।५	१७।३८	७।२६	१७।३६	७।३	१७।३४	६।२२	१७।१०	७।१८	१७।५५	६।१४	१६।४९	७।२६	१७।३८	७।१९	१७।५४	७।३३	१८।३	६।५७	१७।४३	७।२८	१७।४३	७।३३	१७।४६
२१	६।५५	१७।२९	७।१३	१७।४५	७।१०	१७।३५	७।१३	१७।४६	७।२६	१८।१६	७।५	१७।४२	७।२५	१७।४०	७।२	१७।३८	६।२२	१७।१३	७।१७	१७।५९	६।१३	१६।५३	७।२५	१७।४३	७।१९	१७।५७	७।३३	१८।७	६।५७	१७।४६	७।२७	१७।४८	७।३२	१७।५१
२६	६।५४	१७।३४	७।१२	१७।४८	७।८	१७।३९	७।११	१७।५०	७।२५	१८।१९	७।३	१७।४६	७।२३	१७।४५	७।१	१७।४२	६।२१	१७।१६	७।१५	१८।३	६।१३	१६।५७	७।२२	१७।४८	७।१८	१८।१	७।३१	१८।११	६।५५	१७।५०	७।२५	१७।५२	७।३०	१७।५६
३१	६।५१	१७।३७	७।१०	१७।५२	७।६	१७।४३	७।९	१७।५३	७।२४	१८।२२	७।२	१७।५०	७।२०	१७।५०	६।५९	१७।४५	६।२०	१७।२०	७।१४	१८।६	६।१२	१७।१	७।१९	१७।५३	७।१६	१८।५	७।२९	१८।१६	६।५४	१७।५३	७।२३	१७।५६	७।२७	१८।०
फरवरी ५	६।४९	१७।४१	७।७	१७।५६	७।३	१७।४८	७।७	१७।५७	७।२२	१८।२६	६।५९	१७।५३	७।१७	१७।५५	६।५७	१७।४९	६।१८	१७।२३	७।११	१८।१०	६।९	१७।५	७।१६	१७।५८	७।१३	१८।९	७।२६	१८।१९	६।५२	१७।५६	७।२०	१८।०	७।२४	१८।५
१०	६।४५	१७।४५	७।४	१८।०	७।०	१७।५२	७।४	१८।१	७।१९	१८।२९	६।५७	१७।५७	७।१२	१८।०	६।५४	१७।५२	६।१५	१७।२६	७।८	१८।१३	६।६	१७।८	७।१२	१८।२	७।१०	१८।१३	७।२३	१८।२३	६।४९	१७।५९	७।१७	१८।५	७।२०	१८।१०
१५	६।४२	१७।४८	७।०	१८।४	६।५६	१७।५५	७।१	१८।४	७।१६	१८।३२	६।५३	१८।०	७।८	१८।४	६।५०	१७।५६	६।१२	१७।२९	७।५	१८।१६	६।३	१७।१२	७।७	१८।६	७।६	१८।१६	७।२०	१८।२६	६।४६	१८।२	७।१२	१८।९	७।१६	१८।१४
२०	६।३८	१७।५२	६।५६	१८।७	६।५१	१७।५९	६।५६	१८।८	७।१२	१८।३५	६।४९	१८।३	७।३	१८।८	६।४६	१७।५९	६।९	१७।३२	७।१	१८।२०	५।५९	१७।१५	७।२	१८।१०	७।२	१८।१९	७।१६	१८।३०	६।४३	१८।५	७।८	१८।१४	७।११	१८।१८
२५	६।३३	१७।५५	६।५१	१८।११	६।४६	१८।३	६।५१	१८।११	७।८	१८।३७	६।४४	१८।६	६।५८	१८।१२	६।४२	१८।२	६।५	१७।३४	६।५७	१८।२३	५।५५	१७।१८	६।५८	१८।१४	६।५८	१८।२२	७।१२	१८।३३	६।३९	१८।७	७।२	१८।१७	७।६	१८।२२
मार्च २	६।२८	१७।५८	६।४६	१८।१४	६।४२	१८।७	६।४६	१८।१४	७।४	१८।४०	६।४०	१८।९	६।५२	१८।१६	६।३६	१८।६	६।१	१७।३७	६।५३	१८।२५	५।५०	१७।२१	६।५२	१८।१८	६।५४	१८।२५	७।७	१८।३७	६।३५	१८।१०	६।५५	१८।१९	७।०	१८।२६
७	६।२३	१८।१	६।४२	१८।१७	६।३५	१८।१०	६।४२	१८।१८	७।०	१८।४२	६।३५	१८।१२	६।४६	१८।२०	६।३१	१८।८	५।५७	१७।३९	६।४८	१८।२८	५।४५	१७।२४	६।४७	१८।२१	६।४९	१८।२८	७।२	१८।३९	६।३०	१८।१२	६।४८	१८।२२	६।५४	१८।२९
१२	६।१९	१८।४	६।३५	१८।२०	६।२९	१८।१३	६।३५	१८।२१	६।५५	१८।४४	६।२९	१८।१५	६।४०	१८।२३	६।२६	१८।११	५।५२	१७।४२	६।४३	१८।३०	५।४०	१७।२६	६।४२	१८।२४	६।४४	१८।३१	६।५६	१८।४२	६।२६	१८।१५	६।४२	१८।२६	६।४८	१८।३१
१७	६।१३	१८।७	६।३०	१८।२३	६।२३	१८।१७	६।३०	१८।२४	६।५०	१८।४६	६।२४	१८।१८	६।३४	१८।२७	६।२०	१८।१४	५।४८	१७।४३	६।३८	१८।३३	५।३५	१७।२९	६।३५	१८।२८	६।३८	१८।३३	६।५१	१८।४५	६।२१	१८।१७	६।३६	१८।३०	६।४२	१८।३६
२२	६।७	१८।९	६।२४	१८।२६	६।१७	१८।२०	६।२४	१८।२६	६।४६	१८।४८	६।१८	१८।२१	६।२८	१८।३०	६।१५	१८।१७	५।४३	१७।४६	६।३३	१८।३५	५।२९	१७।३२	६।२९	१८।३१	६।३३	१८।३६	६।४५	१८।४७	६।१६	१८।१८	६।३०	१८।३४	६।३६	१८।३९
२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भारत के प्रसिद्ध नगरों में (भा.स्टै.टा के अनुसार) सूर्योदयास्त

मास	तारीख	दिल्ली		नागपुर		नरसिंहपुर		पटना		बम्बई		बंगलौर		बरेली		मद्रास		मैनपुरी	
		उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.
अप्रैल	१	६।१५	१८।३४	६।११	१८।२५	६।१०	१८।२५	५।४५	१८। २	६।३७	१८।४९	६।१९	१८।२९	६। ६	१८।२७	६। ९	१८।१७	६। ८	१८।२८
	६	६।१०	१८।३६	६। ६	१८।२६	६। ५	१८।२६	५।४०	१८। ४	६।३३	१८।५०	६।१७	१८।२८	६। ०	१८।२९	६। ६	१८।१८	६। ३	१८।३१
	११	६। ३	१८।४०	६। २	१८।२८	६। ०	१८।२८	५।३५	१८। ६	६।२९	१८।५१	६।१४	१८।२८	५।५५	१८।३२	६। २	१८।१८	५।५७	१८।३३
	१६	५।५८	१८।४२	५।५८	१८।२९	५।५५	१८।३०	५।३०	१८। ९	६।२५	१८।५३	६।१०	१८।२९	५।४९	१८।३५	५।५९	१८।१८	५।५२	१८।३६
	२१	५।५३	१८।४६	५।५४	१८।३१	५।५२	१८।३२	५।२५	१८।१०	६।२१	१८।५४	६। ८	१८।३०	५।४४	१८।३८	५।५७	१८।१९	५।४७	१८।३८
	२६	५।४८	१८।४९	५।५०	१८।३३	५।५०	१८।३४	५।२२	१८।१४	६।१८	१८।५५	६। ५	१८।३०	५।३९	१८।४१	५।५४	१८।२०	५।४२	१८।४१
मई	१	५।४४	१८।५२	५।४७	१८।३५	५।४६	१८।३६	५।१७	१८।१६	६।१५	१८।५७	६। ३	१८।३१	५।३५	१८।४३	५।५२	१८।२१	५।३८	१८।४४
	६	५।४०	१८।५५	५।४४	१८।३७	५।४२	१८।३८	५।१३	१८।१९	६।१२	१८।५९	६। १	१८।३२	५।३१	१८।४६	५।५०	१८।२२	५।३४	१८।४६
	११	५।३७	१८।५८	५।४१	१८।३९	५।३८	१८।४१	५।१०	१८।२१	६।१०	१९। ०	५।५९	१८।३३	५।२८	१८।४९	५।४८	१८।२३	५।३१	१८।४९
	१६	५।३४	१९। १	५।३९	१८।४१	५।३६	१८।४२	५। ७	१८।२४	६। ८	१९। २	५।५८	१८।३४	५।२५	१८।५२	५।४७	१८।२४	५।२९	१८।५२
	२१	५।३१	१९। ४	५।३७	१८।४३	५।३४	१८।४५	५। ५	१८।२७	६। ६	१९। ४	५।५७	१८।३५	५।२३	१८।५४	५।४६	१८।२५	५।२६	१८।५४
	२६	५।२९	१९। ६	५।३६	१८।४५	५।३३	१८।४७	५। ४	१८।२९	६। ५	१९। ६	५।५६	१८।३७	५।२१	१८।५७	५।४५	१८।२७	५।२५	१८।५७
	३१	५।२९	१९। ९	५।३५	१८।४७	५।३१	१८।४९	५। २	१८।३१	६। ४	१९। ८	५।५६	१८।३८	५।२०	१८।५९	५।४५	१८।२८	५।२४	१८।५९
जून	५	५।२८	१९।१२	५।३५	१८।४८	५।३१	१८।५२	५। २	१८।३४	६। ४	१९।१०	५।५६	१८।४०	५।१९	१९। २	५।४५	१८।३०	५।२३	१९। १
	१०	५।२७	१९।१४	५।३५	१८।४९	५।३१	१८।५३	५। २	१८।३६	६। ४	१९।११	५।५६	१८।४१	५।१९	१९। ४	५।४५	१८।३१	५।२३	१९। ३
	१५	५।२७	१९।१५	५।३५	१८।५१	५।३१	१८।५५	५। २	१८।३८	६। ५	१९।१३	५।५८	१८।४३	५।२०	१९। ५	५।४६	१८।३३	५।२३	१९। ५
	२०	५।२७	१९।१७	५।३६	१८।५३	५।३२	१८।५६	५। ३	१८।३९	६। ६	१९।१४	५।५८	१८।४४	५।२०	१९। ७	५।४७	१८।३४	५।२४	१९। ६
	२५	५।२९	१९।१७	५।३७	१८।५५	५।३३	१८।५७	५। ४	१८।४०	६। ७	१९।१५	५।५९	१८।४५	५।२२	१९। ८	५।४८	१८।३५	५।२५	१९। ७
	३०	५।३१	१९।१८	५।३९	१८।५६	५।३५	१८।५८	५। ५	१८।४०	६। ८	१९।१६	६। ०	१८।४६	५।२३	१९। ८	५।४९	१८।३६	५।२७	१९। ८
जुलाई	५	५।३३	१९।१७	५।४०	१८।५६	५।३७	१८।५८	५। ८	१८।४०	६।१०	१९।१६	६। २	१८।४६	५।२५	१९। ८	५।५१	१८।३६	५।२८	१९। ८
	१०	५।३५	१९।१७	५।४२	१८।५६	५।३९	१८।५८	५।१०	१८।४०	६।११	१९।१६	६। ३	१८।४६	५।२७	१९। ८	५।५२	१८।३६	५।३०	१९। ८
	१५	५।३८	१९।१६	५।४४	१८।५५	५।४१	१८।५७	५।१२	१८।३९	६।१३	१९।१६	६। ५	१८।४६	५।२९	१९। ७	५।५३	१८।३६	५।३३	१९। ७
	२०	५।४०	१९।१५	५।४६	१८।५४	५।४३	१८।५६	५।१४	१८।३७	६।१५	१९।१५	६। ६	१८।४६	५।३१	१९। ५	५।५५	१८।३६	५।३५	१९। ५
	२५	५।४२	१९।१३	५।४८	१८।५३	५।४५	१८।५४	५।१६	१८।३६	६।१७	१९।१४	६। ७	१८।४५	५।३४	१९। ३	५।५६	१८।३५	५।३७	१९। ३
	३०	५।४६	१९।१०	५।५०	१८।५०	५।४७	१८।५२	५।१९	१८।३३	६।१८	१९।१२	६। ८	१८।४४	५।३६	१९। १	५।५७	१८।३४	५।४०	१९। १
अगस्त	४	५।४८	१९। ६	५।५२	१८।४८	५।४९	१८।५०	५।२१	१८।३०	६।२०	१९।१०	६। ९	१८।४२	५।३९	१८।५७	५।५८	१८।३२	५।४२	१८।५८
	९	५।५१	१९। २	५।५३	१८।४५	५।५१	१८।४७	५।२३	१८।२६	६।२२	१९। ७	६।१०	१८।४०	५।४२	१८।५४	५।५९	१८।३०	५।४५	१८।५४
	१४	५।५३	१८।५७	५।५५	१८।४२	५।५३	१८।४३	५।२६	१८।२३	६।२३	१९। ४	६।११	१८।३८	५।४४	१८।५०	६। ०	१८।२८	५।४७	१८।५०
	१९	५।५६	१८।५३	५।५७	१८।३८	५।५५	१८।३९	५।२८	१८।१८	६।२४	१९। १	६।११	१८।३६	५।४७	१८।४५	६। ०	१८।२५	५।५०	१८।४६
	२४	५।५८	१८।४७	५।५८	१८।३४	५।५७	१८।३५	५।३०	१८।१३	६।२६	१८।५७	६।१२	१८।३३	५।४९	१८।४०	६। १	१८।२२	५।५२	१८।४१
	२९	६। १	१८।४२	६। ०	१८।३०	५।५८	१८।३०	५।३२	१८। ९	६।२७	१८।५३	६।१२	१८।३०	५।५२	१८।३५	६। १	१८।१९	५।५४	१८।३६
सितम्बर	३	६। ४	१८।३८	६। १	१८।२५	६। ०	१८।२५	५।३४	१८। ३	६।२७	१८।४९	६।१२	१८।२६	५।५४	१८।२९	६। १	१८।१५	५।५७	१८।३०
	८	६। ६	१८।३१	६। २	१८।२१	६। १	१८।२१	५।३६	१७।५८	६।२८	१८।४४	६।१२	१८।२३	५।५७	१८।२३	६। १	१८।१३	५।५९	१८।२४
	१३	६। ९	१८।२५	६। ३	१८।१६	६। ३	१८।१६	५।३८	१७।५२	६।२९	१८।४१	६।१२	१८।२०	६। ०	१८।१७	६। १	१८। ९	६। २	१८।१८
	१८	६।११	१८।१९	६। ५	१८।११	६। ४	१८।११	५।४०	१७।४७	६।३०	१८।३६	६।१२	१८।१६	६। २	१८।११	६। १	१८। ५	६। ४	१८।१२
	२३	६।१३	१८।१३	६। ६	१८। ७	६। ६	१८। ६	५।४१	१७।४२	६।३१	१८।३२	६।१२	१८।१२	६। ५	१८। ५	६। १	१८। २	६। ७	१८। ७
	२८	६।१६	१८। ७	६। ७	१८। २	६। ७	१८। १	५।४३	१७।३७	६।३२	१८।२७	६।१३	१८। ९	६। ७	१७।५९	६। १	१७।५८	६। ९	१८। १

मास	तारीख	रतलाम		लखनऊ		वाराणसी		बिलासपुर		हैदराबाद		हरिद्वार		हिसार		भुवनेश्वर	
		उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.
अप्रैल	१	६।२६	१८।४२	६। १	१८।२०	५।५३	१८।११	५।५८	१८।१२	६।१५	१८।२६	६।११	१८।३२	६।२१	१८।४१	५।४४	१७।५७
	६	६।२१	१८।४३	५।५५	१८।२३	५।४८	१८।१४	५।५४	१८।१४	६।११	१८।२६	६। ५	१८।३५	६।१५	१८।४४	५।४०	१७।५९
	११	६।१७	१८।४५	५।५०	१८।२५	५।४२	१८।१६	५।४९	१८।१६	६। ७	१८।२८	५।५९	१८।३८	६।१०	१८।४६	५।३६	१८। ०
	१६	६।१२	१८।४७	५।४५	१८।२८	५।३८	१८।१८	५।४५	१८।१७	६। ४	१८।३०	५।५३	१८।४२	६। ५	१८।४९	५।३२	१८। १
	२१	६। ८	१८।४९	५।४०	१८।३१	५।३३	१८।२१	५।४१	१८।१९	६। ०	१८।३०	५।४८	१८।४५	६। ०	१८।५२	५।२८	१८। ३
	२६	६। ६	१८।५२	५।३५	१८।३३	५।२८	१८।२३	५।३८	१८।२१	५।५७	१८।३१	५।४३	१८।४८	५।५४	१८।५५	५।२४	१८। ४
मई	१	६। ०	१८।५४	५।३१	१८।३६	५।२५	१८।२६	५।३३	१८।२३	५।५४	१८।३२	५।३८	१८।५०	५।५१	१८।५८	५।२१	१८। ६
	६	५।५७	१८।५६	५।२८	१८।३८	५।२१	१८।२८	५।३०	१८।२५	५।५२	१८।३३	५।३४	१८।५४	५।४६	१९। १	५।१८	१८। ८
	११	५।५४	१८।५८	५।२४	१८।४१	५।१८	१८।३१	५।२८	१८।२७	५।५०	१८।३५	५।३१	१८।५६	५।४३	१९। ४	५।१६	१८।१०
	१६	५।५२	१९। १	५।२२	१८।४४	५।१६	१८।३३	५।२५	१८।२९	५।४८	१८।३६	५।२८	१८।५९	५।४०	१९। ७	५।१४	१८।१२
	२१	५।५०	१९। ३	५।१९	१८।४६	५।१४	१८।३५	५।२४	१८।३१	५।४६	१८।३८	५।२५	१९। २	५।३७	१९।१०	५।१२	१८।१४
	२६	५।४९	१९। ५	५।१८	१८।४९	५।१२	१८।३८	५।२२	१८।३४	५।४५	१८।४०	५।२४	१९। ५	५।३५	१९।१३	५।११	१८।१५
	३१	५।४९	१९। ८	५।१७	१८।५१	५।११	१८।४०	५।२२	१८।३६	५।४५	१८।४२	५।२२	१९। ७	५।३३	१९।१६	५।१०	१८।१८
जून	५	५।४६	१९।१०	५।१६	१८।५३	५।११	१८।४२	५।२१	१८।३८	५।४४	१८।४३	५।२२	१९।१०	५।३३	१९।१८	५।१०	१८।२०
	१०	५।४७	१९।१२	५।१६	१८।५५	५।११	१८।४४	५।२१	१८।४०	५।४४	१८।४५	५।२१	१९।१२	५।३२	१९।२०	५।१०	१८।२१
	१५	५।४७	१९।१४	५।१६	१८।५७	५।११	१८।४५	५।२१	१८।४२	५।४५	१८।४६	५।२१	१९।१३	५।३३	१९।२२	५।१०	१८।२३
	२०	५।४८	१९।१५	५।१७	१८।५८	५।१३	१८।४७	५।२२	१८।४३	५।४६	१८।४७	५।२२	१९।१५	५।३३	१९।२३	५।११	१८।२५
	२५	५।४९	१९।१६	५।१८	१८।५९	५।१३	१८।४८	५।२३	१८।४४	५।४७	१८।४८	५।२३	१९।१६	५।३४	१९।२४	५।१२	१८।२६
	३०	५।५१	१९।१७	५।२०	१८।५९	५।१४	१८।४८	५।२४	१८।४४	५।४८	१८।४९	५।२५	१९।१६	५।३६	१९।२५	५।१४	१८।२६
जुलाई	५	५।५३	१९।१६	५।२२	१९। ०	५।१६	१८।४९	५।२६	१८।४५	५।५०	१८।४९	५।२७	१९।१६	५।३८	१९।२५	५।१६	१८।२६
	१०	५।५५	१९।१६	५।२४	१८।५९	५।१८	१८।४८	५।२८	१८।४४	५।५२	१८।५०	५।२९	१९।१६	५।४१	१९।२४	५।१७	१८।२६
	१५	५।५७	१९।१५	५।२६	१८।५८	५।२०	१८।४८	५।३०	१८।४३	५।५४	१८।५०	५।३२	१९।१५	५।४३	१९।२२	५।१९	१८।२५
	२०	५।५९	१९।१४	५।२८	१८।५७	५।२२	१८।४६	५।३२	१८।४२	५।५५	१८।४८	५।३४	१९।१३	५।४५	१९।२१	५।२१	१८।२४
	२५	६। १	१९।१२	५।३०	१८।५५	५।२४	१८।४४	५।३५	१८।४०	५।५७	१८।४७	५।३७	१९।११	५।४८	१९।१९	५।२३	१८।२३
	३०	६। ३	१९।१०	५।३३	१८।५३	५।२७	१८।४२	५।३६	१८।३९	५।५९	१८।४६	५।३९	१९। ८	५।५१	१९।१६	५।२५	१८।२१
अगस्त	४	६। ५	१९। ८	५।३५	१८।५०	५।२९	१८।३९	५।३८	१८।३६	६। ०	१८।४४	५।४२	१९। ५	५।५४	१९।१२	५।२७	१८।१९
	९	६। ७	१९। ५	५।३७	१८।४६	५।३१	१८।३६	५।४०	१८।३३	६। १	१८।४१	५।४५	१९। १	५।५६	१९। ९	५।२८	१८।१६
	१४	६।१०	१९। १	५।४०	१८।४२	५।३४	१८।३२	५।४२	१८।३०	६। ३	१८।३९	५।४८	१८।५७	५।५९	१९। ४	५।३०	१८।१३
	१९	६।११	१८।५७	५।४२	१८।३८	५।३६	१८।२८	५।४४	१८।२६	६। ४	१८।३६	५।५०	१८।५२	६। २	१९। ०	५।३१	१८। ९
	२४	६।१३	१८।५३	५।४५	१८।३३	५।३८	१८।२३	५।४५	१८।२२	६। ५	१८।३२	५।५३	१८।४७	६। ५	१८।५४	५।३३	१८। ५
	२९	६।१५	१८।४८	५।४७	१८।२८	५।४०	१८।१८	५।४७	१८।१८	६। ६	१८।२९	५।५६	१८।४२	६। ७	१८।४९	५।३४	१८। १
सितम्बर	३	६।१६	१८।४३	५।४९	१८।२२	५।४२	१८।१३	५।४८	१८।१३	६। ६	१८।२५	५।५८	१८।३५	६।१०	१८।४५	५।३५	१७।५७
	८	६।१८	१८।३८	५।५२	१८।१७	५।४४	१८। ८	५।५०	१८। ८	६। ७	१८।२१	६। १	१८।२९	६।१२	१८।३७	५।३६	१७।५३
	१३	६।१९	१८।३३	५।५४	१८।११	५।४६	१८। २	५।५१	१८। ३	६। ७	१८।१७	६। ४	१८।२३	६।१५	१८।३२	५।३७	१७।४८
	१८	६।२१	१८।२८	५।५६	१८। ५	५।४८	१७।५६	५।५२	१७।५९	६। ७	१८।१३	६। ७	१८।१६	६।१७	१८।२६	५।३८	१७।४४
	२३	६।२२	१८।२३	५।५९	१७।५९	५।५१	१७।५१	५।५४	१७।५४	६। ८	१८। ९	६।१०	१८।१०	६।२०	१८।२०	५।३९	१७।३९
	२८	६।२४	१८।१८	६। १	१७।५३	५।५३	१७।४५	५।५५	१७।४९	६। ९	१८। ५	६।१३	१८। ३	६।२२	१८।१३	५।४०	१७।३५

भारत के प्रसिद्ध नगरों में (भा.स्टै.टा के अनुसार) सूर्योदयास्त

मास	तारीख	दिल्ली अक्षांश २८।३८ रेखांश ७७।१४ उदय	अस्त	नागपुर अक्षांश २१।९ रेखांश ७९।७ उदय	अस्त	नरसिंहपुर अक्षांश २२।५७ रेखांश ८२।१४ उदय	अस्त	पटना अक्षांश २५।३७ रेखांश ८५।१० उदय	अस्त	बम्बई अक्षांश १८।५७ रेखांश ७२।५० उदय	अस्त	बंगलौर अक्षांश १२।५८ रेखांश ७७।३५ उदय	अस्त	बरेली अक्षांश २८।२२ रेखांश ७९।२७ उदय	अस्त	मद्रास अक्षांश १३।५ रेखांश ८०।१७ उदय	अस्त	मैनपुरी अक्षांश २७।१३ रेखांश ७९।१२ उदय	अस्त
अक्टूबर	३	६।१९	१८।१	६।९	१७।५७	६।९	१७।५६	५।४६	१७।३१	६।३३	१८।२३	६।१३	१८।५	६।१०	१७।५३	६।२	१७।५५	६।१२	१७।५५
	८	६।२२	१७।५६	६।१०	१७।५३	६।१०	१७।५१	५।४८	१७।२६	६।३४	१८।१९	६।१३	१८।२	६।१३	१७।४७	६।२	१७।५२	६।१४	१७।४९
	१३	६।२५	१७।५०	६।१२	१७।४८	६।१२	१७।४७	५।५०	१७।२१	६।३५	१८।१५	६।१३	१७।५९	६।१६	१७।४२	६।२	१७।४८	६।१७	१७।४३
	१८	६।२८	१७।४५	६।१३	१७।४४	६।१५	१७।४२	५।५३	१७।१६	६।३७	१८।११	६।१४	१७।५६	६।१९	१७।३६	६।३	१७।४६	६।२०	१७।३८
	२३	६।३१	१७।४०	६।१६	१७।४१	६।१७	१७।३८	५।५५	१७।११	६।३९	१८।८	६।१५	१७।५३	६।२२	१७।३१	६।४	१७।४३	६।२३	१७।३४
	२८	६।३५	१७।३५	६।१८	१७।३७	६।१९	१७।३५	५।५९	१७।७	६।४०	१८।५	६।१६	१७।५१	६।२६	१७।२६	६।५	१७।४२	६।२६	१७।२९
नवम्बर	२	६।३८	१७।३२	६।२०	१७।३४	६।२२	१७।३१	६।२	१७।३	६।४२	१८।२	६।१७	१७।५०	६।२९	१७।२२	६।६	१७।३९	६।२९	१७।२५
	७	६।४२	१७।२८	६।२३	१७।३२	६।२५	१७।२८	६।५	१७।०	६।४५	१८।०	६।१८	१७।४८	६।३३	१७।१९	६।८	१७।३८	६।३३	१७।२२
	१२	६।४५	१७।२५	६।२६	१७।३०	६।२८	१७।२६	६।८	१६।५८	६।४७	१७।५८	६।२१	१७।४७	६।३६	१७।१७	६।१०	१७।३६	६।३६	१७।२०
	१७	६।४९	१७।२२	६।२९	१७।२९	६।३१	१७।२५	६।१२	१६।५६	६।५०	१७।५७	६।२३	१७।४७	६।४०	१७।१४	६।१२	१७।३६	६।४०	१७।१८
	२२	६।५४	१७।२१	६।३२	१७।२८	६।३४	१७।२४	६।१५	१६।५४	६।५३	१७।५७	६।२५	१७।४७	६।४४	१७।१३	६।१४	१७।३६	६।४४	१७।१६
	२७	६।५७	१७।२०	६।३५	१७।२७	६।३८	१७।२३	६।१९	१६।५४	६।५६	१७।५७	६।२८	१७।४७	६।४८	१७।१२	६।१७	१७।३६	६।४७	१७।१५
दिसम्बर	२	७।१	१७।२०	६।३८	१७।२८	६।४३	१७।२३	६।२३	१६।५३	६।५९	१७।५७	६।३०	१७।४८	६।५१	१७।१२	६।१९	१७।३७	६।५१	१७।१५
	७	७।५	१७।२०	६।४२	१७।२८	६।४५	१७।२४	६।२७	१६।५४	७।२	१७।५८	६।३३	१७।४९	६।५५	१७।१२	६।२२	१७।३८	६।५४	१७।१६
	१२	७।८	१७।२१	६।४५	१७।३०	६।४८	१७।२५	६।३०	१६।५५	७।५	१७।५९	६।३६	१७।५१	६।५८	१७।१३	६।२५	१७।४०	६।५८	१७।१७
	१७	७।११	१७।२३	६।४८	१७।३२	६।५१	१७।२७	६।३३	१६।५७	७।८	१८।१	६।३८	१७।५३	७।१	१७।१५	६।२८	१७।४२	७।१	१७।२०
	२२	७।१४	१७।२५	६।५०	१७।३४	६।५४	१७।२९	६।३५	१६।५९	७।११	१८।३	६।४२	१७।५५	७।४	१७।१७	६।३०	१७।४४	७।३	१७।२१
	२७	७।१६	१७।२७	६।५२	१७।३६	६।५६	१७।३२	६।३८	१७।२	७।१३	१८।६	६।४३	१७।५८	७।६	१७।२०	६।३२	१७।४७	७।६	१७।२४
जनवरी	१	७।१९	१७।३१	६।५४	१७।३९	६।५८	१७।३५	६।३९	१७।५	७।१५	१८।९	६।४२	१८।१	७।८	१७।२४	६।३५	१७।५०	७।८	१७।२७
	६	७।१९	१७।३५	६।५४	१७।४३	६।५९	१७।३९	६।४०	१७।८	७।१७	१८।१२	६।४७	१८।४	७।९	१७।२७	६।३७	१७।५३	७।९	१७।३१
	११	७।१८	१७।३९	६।५४	१७।४६	७।०	१७।४२	६।४२	१७।१२	७।१८	१८।१५	६।४८	१८।७	७।१०	१७।३०	६।३८	१७।५६	७।९	१७।३४
	१६	७।१८	१७।४३	६।५३	१७।४९	७।०	१७।४६	६।४२	१७।१६	७।१८	१८।१८	६।५०	१८।९	७।९	१७।३४	६।३९	१७।५९	७।९	१७।३८
	२१	७।१८	१७।४६	६।५३	१७।५२	७।०	१७।४९	६।४०	१७।२०	७।१८	१८।२२	६।५०	१८।१२	७।९	१७।३८	६।३९	१८।१	७।९	१७।४२
	२६	७।१६	१७।५१	६।५३	१७।५५	६।५८	१७।५३	६।३९	१७।२४	७।१८	१८।२४	६।५०	१८।१५	७।७	१७।४२	६।३९	१८।३	७।७	१७।४६
	३१	७।१४	१७।५५	६।५२	१७।५९	६।५७	१७।५६	६।३७	१७।२८	७।१७	१८।२८	६।५०	१८।१६	७।५	१७।४६	६।३९	१८।६	७।५	१७।४९
फरवरी	५	७।११	१७।५९	६।५२	१८।२	६।५५	१७।५९	६।३५	१७।३१	७।१५	१८।३०	६।४९	१८।१९	७।३	१७।५०	६।३८	१८।८	७।३	१७।५३
	१०	७।८	१८।३	६।५१	१८।५	६।५२	१८।२	६।३२	१७।३५	७।१३	१८।३३	६।४८	१८।२०	६।५९	१७।५४	६।३७	१८।१०	७।०	१७।५७
	१५	७।४	१८।७	६।४८	१८।८	६।४९	१८।५	६।२८	१७।३९	७।११	१८।३५	६।४६	१८।२२	६।५६	१७।५८	६।३५	१८।११	६।५६	१८।०
	२०	६।५९	१८।१०	६।४५	१८।१०	६।४६	१८।८	६।२४	१७।४२	७।८	१८।३७	६।४४	१८।२३	६।५१	१८।१	६।३३	१८।१३	६।५२	१८।४
	२५	६।५४	१८।१४	६।४२	१८।१३	६।४२	१८।११	६।२०	१७।४४	७।५	१८।३९	६।४२	१८।२४	६।४६	१८।५	६।३१	१८।१४	६।४७	१८।७
मार्च	२	६।४९	१८।१८	६।३८	१८।१५	६।३७	१८।१३	६।१५	१७।४८	७।१	१८।४१	६।३९	१८।२५	६।४१	१८।८	६।२८	१८।१४	६।४२	१८।१०
	७	६।४४	१८।२१	६।३३	१८।१६	६।३३	१८।१५	६।११	१७।५०	६।५८	१८।४३	६।३६	१८।२६	६।३६	१८।११	६।२५	१८।१५	६।३७	१८।१४
	१२	६।३८	१८।२४	६।२९	१८।१८	६।२९	१८।१७	६।५	१७।५३	६।५४	१८।४४	६।३३	१८।२७	६।३०	१८।१५	६।२२	१८।१६	६।३१	१८।१७
	१७	६।३३	१८।२७	६।२५	१८।२०	६।२४	१८।१९	६।०	१७।५५	६।५०	१८।४५	६।३०	१८।२७	६।२३	१८।१८	६।१९	१८।१६	६।२६	१८।२०
	२२	६।२६	१८।२९	६।२०	१८।२२	६।१९	१८।२१	५।५५	१७।५७	६।४५	१८।४७	६।२६	१८।२८	६।१८	१८।२१	६।१६	१८।१७	६।२०	१८।२२
	२७	६।२१	१८।३३	६।१५	१८।२३	६।१४	१८।२३	५।५०	१७।५९	६।४१	१८।४८	६।२३	१८।२८	६।१२	१८।२३	६।१२	१८।१७	६।१४	१८।२५

मास	तारीख	रतलाम अक्षांश २३।२० रेखांश ७५।६ उदय	अस्त	लखनऊ अक्षांश २६।५१ रेखांश ८०।५५ उदय	अस्त	वाराणसी अक्षांश २५।२० रेखांश ८३।० उदय	अस्त	बिलासपुर अक्षांश २२।५ रेखांश ८२।१३ उदय	अस्त	हैदराबाद अक्षांश १७।१८ रेखांश ७८।३० उदय	अस्त	हरिद्वार अक्षांश २९।५८ रेखांश ७८।१० उदय	अस्त	हिसार अक्षांश २९।१४ रेखांश ७५।४४ उदय	अस्त	भुवनेश्वर अक्षांश २०।१५ रेखांश ८५।५२ उदय	अस्त
अक्टूबर	३	६।२६	१८।१२	६।४	१७।४७	५।५५	१७।३९	५।५६	१७।४४	६।१०	१८।१	६।१६	१७।५७	६।२५	१८।८	५।४२	१७।३०
	८	६।२७	१८।८	६।७	१७।४१	५।५८	१७।३४	५।५८	१७।४०	६।११	१७।५६	६।१९	१७।५१	६।२७	१८।२	५।४३	१७।२६
	१३	६।३०	१८।४	६।९	१७।३६	६।०	१७।२९	६।०	१७।३५	६।१२	१७।५३	६।२२	१७।४५	६।३०	१७।५७	५।४४	१७।२२
	१८	६।३२	१७।५९	६।१२	१७।३१	६।३	१७।२४	६।२	१७।३१	६।१३	१७।४९	६।२६	१७।४०	६।३४	१७।५१	५।४६	१७।१८
	२३	६।३४	१७।५५	६।१५	१७।२६	६।५	१७।१९	६।४	१७।२७	६।१४	१७।४६	६।२९	१७।३५	६।३७	१७।४६	५।४८	१७।१४
	२८	६।३६	१७।५१	६।१८	१७।२२	६।८	१७।१५	६।६	१७।२४	६।१६	१७।४४	६।३३	१७।३०	६।४०	१७।४२	५।५०	१७।११
नवम्बर	२	६।३९	१७।४८	६।२२	१७।१८	६।११	१७।१२	६।९	१७।२०	६।१८	१७।४२	६।३६	१७।२६	६।४४	१७।३७	५।५२	१७।८
	७	६।४२	१७।४४	६।२५	१७।१५	६।१५	१७।९	६।१२	१७।१८	६।२०	१७।४०	६।४०	१७।२२	६।४८	१७।३४	५।५५	१७।६
	१२	६।४५	१७।४२	६।२८	१७।१२	६।१८	१७।६	६।१५	१७।१६	६।२२	१७।३८	६।४४	१७।१९	६।५१	१७।३१	५।५७	१७।४
	१७	६।४८	१७।४१	६।३२	१७।१०	६।२१	१७।५	६।१८	१७।१४	६।२५	१७।३७	६।४८	१७।१७	६।५५	१७।२८	६।०	१७।३
	२२	६।५२	१७।४०	६।३६	१७।९	६।२५	१७।३	६।२१	१७।१४	६।२८	१७।३६	६।५२	१७।१५	६।५९	१७।२७	६।३	१७।२
	२७	६।५५	१७।३९	६।३९	१७।८	६।२८	१७।३	६।२४	१७।१३	६।३१	१७।३६	६।५५	१७।१४	७।३	१७।२६	६।६	१७।२
दिसम्बर	२	६।५९	१७।३९	६।४३	१७।८	६।३२	१७।३	६।२८	१७।१३	६।३४	१७।३६	६।५९	१७।१४	७।७	१७।२५	६।१०	१७।२
	७	७।२	१७।४०	६।४६	१७।९	६।३५	१७।४	६।३१	१७।१४	६।३७	१७।३८	७।३	१७।१५	७।११	१७।२६	६।१३	१७।३
	१२	७।५	१७।४०	६।५०	१७।१०	६।३८	१७।५	६।३४	१७।१५	६।४०	१७।३९	७।७	१७।१६	७।१५	१७।२७	६।१६	१७।५
	१७	७।८	१७।४२	६।५३	१७।१२	६।४१	१७।७	६।३७	१७।१७	६।४३	१७।४१	७।९	१७।१७	७।१८	१७।२८	६।१९	१७।५
	२२	७।११	१७।४४	६।५५	१७।१४	६।४४	१७।९	६।४०	१७।१९	६।४५	१७।४४	७।१२	१७।२०	७।२१	१७।३१	६।२१	१७।९
	२७	७।१३	१७।४७	६।५८	१७।१७	६।४६	१७।१२	६।४२	१७।२२	६।४८	१७।४६	७।१४	१७।२२	७।२३	१७।३३	६।२४	१७।१२
जनवरी	१	७।१५	१७।५१	६।५९	१७।२१	६।४८	१७।१५	६।४४	१७।२५	६।५०	१७।५०	७।१६	१७।२६	७।२५	१७।३७	६।२६	१७।१५
	६	७।१६	१७।५४	७।०	१७।२४	६।४९	१७।१८	६।४५	१७।२८	६।५१	१७।५३	७।१७	१७।२९	७।२५	१७।४०	६।२७	१७।१७
	११	७।१७	१७।५८	७।१	१७।२७	६।५०	१७।२१	६।४६	१७।३२	६।५२	१७।५६	७।१८	१७।३३	७।२६	१७।४४	६।२८	१७।२१
	१६	७।१७	१८।२	७।१	१७।३१	६।५०	१७।२५	६।४६	१७।३५	६।५३	१७।५९	७।१७	१७।३७	७।२७	१७।४८	६।२८	१७।२४
	२१	७।१७	१८।५	७।०	१७।३५	६।५०	१७।२९	६।४६	१७।३९	६।५३	१८।१	७।१६	१७।४१	७।२६	१७।५२	६।२८	१७।२७
	२६	७।१६	१८।९	६।५९	१७।३८	६।४९	१७।३३	६।४५	१७।४२	६।५२	१८।४	७।१५	१७।४५	७।२४	१७।५७	६।२७	१७।३१
	३१	७।१४	१८।१२	६।५७	१७।४२	६।४७	१७।३६	६।४४	१७।४६	६।५१	१८।७	७।१३	१७।४९	७।२१	१८।१	६।२६	१७।३४
फरवरी	५	७।१२	१८।१५	६।५५	१७।४६	६।४५	१७।४०	६।४२	१७।४९	६।५०	१८।१०	७।१०	१७।५३	७।१८	१८।५	६।२५	१७।३७
	१०	७।९	१८।१९	६।५२	१७।५०	६।४२	१७।४३	६।३९	१७।५२	६।४९	१८।१२	७।६	१७।५७	७।१४	१८।९	६।२२	१७।४०
	१५	७।६	१८।२२	६।४८	१७।५३	६।३८	१७।४६	६।३६	१७।५५	६।४७	१८।१५	७।२	१८।१	७।१०	१८।१३	६।२०	१७।४२
	२०	७।३	१८।२४	६।४४	१७।५७	६।३४	१७।५०	६।३३	१७।५७	६।४४	१८।१७	६।५८	१८।५	७।५	१८।१७	६।१६	१७।४४
	२५	६।५९	१८।२७	६।३९	१८।०	६।३०	१७।५३	६।२९	१७।५९	६।४२	१८।१८	६।५३	१८।९	७।१	१८।२०	६।१३	१७।४६
मार्च	२	६।५४	१८।३०	६।३४	१८।३	६।२५	१७।५६	६।२५	१८।२	६।३७	१८।२०	६।४७	१८।१२	६।५५	१८।२३	६।९	१७।४९
	७	६।५०	१८।३२	६।२९	१८।६	६।२०	१७।५८	६।२१	१८।४	६।३४	१८।२१	६।४२	१८।१६	६।५०	१८।२६	६।५	१७।५०
	१२	६।४६	१८।३४	६।२४	१८।९	६।१५	१८।१	६।१७	१८।६	६।३०	१८।२२	६।३६	१८।१९	६।४४	१८।३०	६।१	१७।५२
	१७	६।४१	१८।३६	६।१८	१८।१२	६।१०	१८।४	६।१२	१८।८	६।२६	१८।२३	६।२९	१८।२३	६।३८	१८।३३	५।५७	१७।५३
	२२	६।३६	१८।३८	६।१२	१८।१५	६।४	१८।६	६।६	१८।९	६।२३	१८।२४	६।२३	१८।२६	६।३३	१८।३५	५।५३	१७।५५
	२७	६।३१	१८।४०	६।७	१८।१७	५।५९	१८।८	६।३	१८।११	६।१९	१८।२५	६।१७	१८।२९	६।२७	१८।३८	५।४९	१७।५६

अथ दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी) अयनांश:२४

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८
०	४३	५२	२	११	२०	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
वृष	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
मिथुन	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९
२	५५	६	१७	२८	३८	४८	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
कर्क	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
सिंह	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८
४	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	५५
कन्या	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३
५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५३	५	१५	२४	३३
तुला	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८
६	४३	५२	२	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
वृश्चि.	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	४५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
धनु	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९
८	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
मकर	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२२	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५३	२	१२
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८
१०	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
११	४	१४	३३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	२३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३४

दिनके नत बनानेकी विधि:- दिनार्ध(दिनका आधा)से कम इष्ट हो तो दिनार्ध में से इष्ट को हीन करने से पूर्व नत होता है। मध्याह्न पश्चात् का इष्ट हो तो जितना दिन शेष रहे, उसको दिनार्ध में से घटा दें, शेष पश्चिम नत होगा।

रात्रिके नत बनानेकी विधि- रात्र्यर्ध(रात्रिमान का आधा)के पूर्व का इष्ट हो तो गतरात्रि (सूर्यास्त के बाद इष्टकाल तक जितना समय बीते उसमें) दिनार्ध युक्त करने से पश्चिम नत होता है। रात्र्यर्ध के पश्चात् का इष्टकाल हो तो (इष्टकालके बाद अगले दिन सूर्योदय तक) शेष रात्रि में दिनार्ध युक्त करने से पूर्वनत होता है। नत को इष्ट मानकर लग्नवत् क्रिया करें। ध्यान रहे नत पश्चिम हो तो धन करना और नत पूर्व हो तो हीन करना, फिर उसे दशम सारणी में देखें। जिस कोष्ठक में समानांक मिलें उसके बाईं ओर लिखी राशि दशम लग्न एवं ऊपर लग्नांश स्पष्ट होंगे। जिन अंकों से दशमलग्न सिद्ध हुआ वही कलाविकला है। **पूर्वउदाहरण:-** १जनवरी १९९३दिनके घं.२मि.२३बजे इष्ट घट्यादि १७।५५पर दशम लग्न जानने के लिए पहले नत बनाइये। मथुराका दिनमान २५।४६का आधा घटी१२ पल५३दिनार्ध हुआ। इष्टकाल मध्याह्नके बाद का है, इसलिए दिनमानमें से इष्ट १७।५५घटाया तो दिनशेष ७घं.५१पल रहा जिसे दिनार्ध १२।५३में बाद किया तो ५घटी २पल दिवानत पश्चिमसिद्ध हुआ। रविराश्यांशतुल्य लग्नसारणीसे प्राप्तांक ४९।३में नत ५।२ पश्चिम होनेके कारण जोड़ा तो कुलयोग ५४।५हुए। जिन्हें दशम सारणी में देखा तो दशम लग्न मकरके २८अंश पर सिद्ध हुई।

दशमलग्न- भावसाधनकी भारतमें चार पद्धतियाँ हैं। जिनमें सबसे सरलरीति लग्न (तनादि)द्वादशभाव समान रूपेण ३०अंश के होते हैं। लग्नस्पष्ट में १५अंश जोड़ने पर प्रथम भावकी संधि होगी। पुनः १५अंश जोड़ने पर दूसरा भाव स्पष्ट हो जायेगा। इसी प्रकार आगे जोड़ने से ससंधि द्वादश भाव स्पष्ट हो जायेंगे। महर्षि पराशरजीने भावलग्न और होरालग्नको पृथक-पृथक कहा है। यथा-''अथाहं संप्रवक्ष्यामि तवाग्रे द्विगसत्तम-भाव-होरा घटी संज्ञ लग्नानीति पृथक्-पृथक्।।'' **भावलग्न साधन प्रकार:-** इष्टकाल के घट्यादि को ६से गुणा करने पर गुणनफल अंशादि को उदयकालीन स्पष्ट सूर्यमें जोड़नेसे प्रथमभाव(लग्न) स्पष्ट होता है। इसमें उपरोक्त क्रिया करनेसे द्वादशभाव स्पष्ट करनेके प्रबल समर्थक अनेकों ज्योतिर्विद हैं। इनके अतिरिक्त त्रिकोणमिति से भी भाव सिद्ध हो जाते हैं, लेकिन वह कठिन है। मेरे विचारसे पहली विधि सर्वश्रेष्ठ है। देखें'मुहूर्त्त मार्तण्ड','ज्योतिष रहस्य','वृहज्ज्योतिषसार'आदि ग्रंथों में।

पंचांग परिवर्तन विधि

श्रीब्रजभूमि पंचांग से आप किसीभी स्थानका सूर्योदयास्त, दिनमान एवं तिथ्यादि पूर्ण शुद्ध पंचांग बना सकते हैं। **सूर्योदयास्त बनानेकी विधि:-** जिस नगर का सूर्योदयास्त बनाना हो उसी नगर के सामने (स्वदेशकाल-सुबोधिनी तालिका से) देशान्तर मिनट धन हो तो ऋण और यदि ऋण हो तो धन संस्कार मथुरा के सूर्योदय में करने से इष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय प्राप्त हो जायेगा।

अभीष्ट दिन रविक्रान्ति व स्वस्थानीय अक्षांश तुल्य चरान्तर मिनटों का संस्कार मध्यम सूर्योदय में करने से स्पष्ट सूर्योदय होगा। चरान्तर मिनटों को ५से गुणाकर लब्ध पलों का विपरीत (धन को ऋण व ऋण को धन) संस्कार मथुरा के दिनमान में करने से इष्ट दिन, अभीष्ट स्थानीय (जहां का आप करना चाहते हैं।) स्पष्ट दिनमान हो जायेगा। दिनमानको ढ़ाईसे भागकर लब्धघंटादिको सूर्योदयमें जोड़नेसे सूर्यास्तकाल होता है।

तिथ्यादि साधनम्:- इष्ट नगरीय सूर्योदयान्तर मिनटोंके पल बनाकर(सूर्योदय पहलेका हो तो)इस पंचांगके तिथ्यादि मान(समाप्तिकाल)में जोड़ दें और यदि इष्टस्थान पर सूर्योदय बादमें हो तो घटाने पर इष्टनगरीय स्पष्ट तिथ्यादि मान हो जायेगा।

दूसरी विधियाँ:- स्थानीय अक्षांश व इष्ट दिन रवि क्रान्तितुल्य चरपल सारणी से चरपल लेकर उन्हें दूना करके घटीपल बना लें। दुगुणित चरपल(घटी-पलों) को उत्तर क्रान्ति (धन) हो तो ३०घटीमें जोड़ दें। रविक्रान्ति दक्षिण ऋण हो तो ३०में से घटाने पर स्पष्ट दिनमान होगा। दिनमान को पांच से भाग करने पर लब्ध स्थानीय सूर्यास्तकाल होगा। सूर्यास्तकालके घंटामिनटों को १२में घटानेपर सूर्योदय होगा। स्थानीय सूर्योदयास्तको भा.स्टै.टा में परिवर्तन करनेके लिए रेलवे मध्यान्तर(समयान्तर) मिनटादि **''देशकाल सुबोधिनी तालिका''** के कालम नं.४ से धन-ऋण चिह्नानुसार संस्कार करें, पुनःवेलान्तर संस्कार यथावत् करने पर भा.स्टै.टा.के अनुसार अभीष्ट स्थानीय सूर्योदयास्तका समय स्पष्ट हो जायेगा।

तिथ्यादि साधनम्:- श्रीब्रजभूमि पंचांगमें उल्लिखित भा.स्टै.टा. के अनुसार तिथ्यादि समाप्तिकालमें स्वस्थानीय स्पष्ट सूर्योदय घटाकर ढ़ाई से गुणा करने पर तिथि, नक्षत्र योगादि का शुद्ध समाप्तिकाल घटीपलों में आ जायेगा। पाठकों की सुविधा के लिए ८ से ३६ उत्तर अक्षांश की चरपल सारणी पंचांग में पृ.७८ पर छपी है।

टिप्पणी- भारत से बाह्य देशों में सूर्योदयास्त जानने के लिए तद्देशीय (S.T.) का प्रयोग करें। तिथि, नक्षत्र योगादि में पूर्व की ओर चालन धन व पश्चिम दिशा में ऋण होता है। ग्रहों में इसके विपरीत जानना चाहिए।

ग्रहों की मध्यम गति:- दैनिक मध्यम गति ०.९८५६से राशिपथ पर सूर्य भ्रमण करता हुआ भगणों का भोग कर रहा है। चन्द्रादि अन्य ग्रहों की गति इस प्रकार से है- चन्द्र १३.१७६, मंगल ०.५२४०, बुध ४.०९२३, गुरु ०.०८३१, शुक्र १.६०२१, शनि ०.०३३५, राहु ०.०५३, हर्षल(वरुण) ०.०११७, नेपच्यून(इन्द्र) ०.००६०, अंश के बाद दशमलव संख्याओं को ६०से गुणा करने पर कला पुनः ६०से गुणा करने पर विकला आ जाती है।

ग्रहों का भगण काल:- सूर्य ३६५.२५६, चन्द्र २९दिन ३१घ५०.१ मंगल ६८६.९७९, बुध ८७.९६९ गुरु ४३३२.५८४, शुक्र २२४.७००, शनि १०७५९.२१९,राहु ६७९३.३९१,वरुण(हर्शल)३०६८६.६१४, इन्द्र (नेपच्यून)६०१८६.६३५

चर संस्कार सारणी

अक्षांशा:→

क्रांत्यंशाः	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल	पल
१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७
२	३	३	४	४	४	५	५	५	५	६	६	७	७	८	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४
३	४	४	५	६	७	७	७	८	८	९	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१७	१८	१९	१९	२०	२१	२२
४	६	६	७	८	९	१०	१०	११	१२	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१७	१८	१९	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२४	२६	२७	२८	२९
५	७	८	९	१०	११	१२	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३५	३७
६	८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२८	२९	३०	३२	३३	३४	३६	३७	३९	४०	४२	४४
७	१०	११	१२	१४	१५	१६	१८	१९	२०	२२	२३	२४	२५	२७	२८	२९	३१	३२	३४	३५	३७	३९	४०	४२	४४	४५	४७	४९	५१
८	१२	१३	१४	१६	१७	१८	२०	२२	२३	२५	२६	२७	२९	३१	३२	३४	३६	३८	३९	४१	४३	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५९
९	१३	१४	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२६	२८	२९	३१	३३	३५	३७	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६१	६३	६७
१०	१५	१६	१८	१९	२१	२३	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५	४७	४९	५१	५३	५६	५८	६१	६३	६५	६८	७०	७४
११	१६	१८	२०	२१	२३	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४५	४७	५०	५२	५४	५६	५८	६१	६३	६७	६९	७२	७५	७७	८१
१२	१७	१९	२१	२३	२६	२९	३१	३३	३५	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५१	५४	५७	५८	६१	६३	६७	७०	७३	७६	७८	८२	८५	८९
१३	१९	२१	२३	२६	२९	३१	३३	३५	३८	४१	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५८	६२	६४	६७	७०	७३	७६	८१	८३	८६	८९	९३	९७
१४	२१	२३	२५	२८	३१	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६३	६७	७०	७३	७६	७९	८२	८६	८८	९२	९६	१००	१०५
१५	२२	२४	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	५९	६२	६५	६८	७२	७५	७८	८१	८४	८८	९२	९६	१००	१०३	१०७	११३
१६	२४	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६४	६६	७०	७३	७७	८०	८३	८७	९१	९५	९९	१०३	१०६	१११	११५	१२१
१७	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५७	६०	६४	६८	७१	७५	७८	८२	८५	८७	९२	९७	१०१	१०६	११०	११३	११८	१२३	१२९
१८	२६	२९	३३	३६	४०	४३	४६	५०	५३	५७	६१	६४	६८	७२	७५	८०	८३	८७	९१	९४	९९	१०३	१०७	११२	११६	१२१	१२६	१३१	१३७
१९	२८	३१	३५	३८	४२	४५	४९	५३	५७	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८३	८८	९२	९६	१००	१०५	१०९	११४	११९	१२५	१२८	१३३	१३८	१४५
२०	३०	३३	३७	४०	४४	४८	५२	५६	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४	८८	९३	९८	१०२	१०६	१११	११६	१२०	१२५	१३१	१३६	१४१	१४७	१५३
२१	३१	३५	३९	४२	४६	५१	५५	५९	६४	६८	७२	७६	८०	८४	८९	९३	९८	१०३	१०७	११२	११७	१२२	१२७	१३२	१३८	१४३	१४९	१५६	१६२
२२	३३	३७	४१	४४	४८	५३	५८	६२	६७	७१	७५	८०	८५	८९	९४	९८	१०३	१०९	११३	११८	१२३	१२८	१३३	१३९	१४५	१५१	१५७	१६३	१७१
२३	३४	३८	४३	४७	५१	५६	६१	६५	७०	७५	७९	८४	८९	९४	९९	१०३	१०९	११४	११९	१२४	१३०	१३५	१४१	१४७	१५२	१५८	१६५	१७२	१८०
२४	३६	४१	४५	५०	५४	५९	६४	६८	७३	७८	८३	८८	९३	९८	१०४	१०९	११४	१२०	१२५	१३०	१३६	१४२	१४८	१५५	१६१	१६७	१७३	१८०	१८९

चरान्तर सारणी

उत्तरअक्षांशाः चरान्तरमिनटाः — क्रांति दक्षिण हो तो धन, उत्तरमें ऋण

क्रांत्यंशाः	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	६	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०

दिनमानज्ञानम्- उपरोक्त चर संस्कार सारिणी ८से३६अक्षांश तक है। बांईं ओर खडी लाइन में १ से २४ तक क्रान्त्यांश दिये हैं। इष्टदिन रवि क्रान्ति व स्वस्थानीय अक्षांशतुल्य चर सारणीसे चरपल लेकर दूना कर लें। दुगुणित चरपलोंको सूर्यक्रान्ति उत्तर(२२मार्च से २३सितम्बर तक) हो तो ३०घटी में जोडें अथवा रविक्रान्ति दक्षिण(२४सितम्बर से २१मार्च तक) हो तो ३०घटी में घटाने पर स्पष्ट दिनमान होता है।

उदाहरण- १ अप्रैल सन् १९९५ई. बम्बई (मुम्बई) का दिनमान ज्ञात करना हो तो देखिये कि उक्त तारीखमें प्रातः घं.५मि.३०बजे रविक्रान्ति उत्तर+४अंश१६कला है। मुम्बईका उत्तर अक्षांश १८।५७ है। रविक्रान्ति एवं अक्षांश तुल्य साधित चरपल १६ को दूना करके ३० घटी में जोड़ दिया तो ३०घटी ३२पल स्पष्ट दिनमान हुआ। दिनमान को ५ से भाग करने पर ६घं.६मि.२४सें.स्थानीय सूर्यास्तकाल हुआ, जिसे १२ में घटाने पर ५घं. ५३मि.३६सें.सूर्योदय का यह समय (धूपघड़ी)के अनुसार सिद्ध हुआ। जिसमें स्वदेशकाल सुबोधिनी तालिका के कालम नं.४ से मुम्बई स्टे.टा.का अन्तर(समयान्तर)३८।४०ऋण को धन किया, साथ ही १अप्रैल का वेलान्तर संस्कार ४मि.७सै.भी जोड दिया तो मुम्बई में स्टे.टा.सूर्योदय ६।३६।२३ तथा सूर्यास्त ६।४९।११ बजे हुआ।

स्टैण्डर्ड(रेलवे)टाइम को देशी (धूपघडी)के समयमें बदलनेकी विधि- जिस नगरका स्टैण्डर्ड अन्तर धन हो उसे ऋण अथवा ऋणको धन करके चालू समयमें संस्कार करने पर मध्यम समय होगा। उस मध्यम समयमें अभिष्ट मास तारीख के वेलान्तर मि.सै. का विपरीति (धन को ऋण और ऋण को धन)संस्कार करने पर स्पष्ट समय घण्टा-मिनट हो जायेगा।

समयभेद- इस समय समस्त भूमण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है, वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच (वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है। सभी देशोंने अपने-अपने यहाँ व्यवहारमें लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय/स्टैण्डर्ड टाइम चालू कर रखा है। इस समय भारतवर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, घोरा और जुम्ला आदि स्थानों से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मानकर किया जाता है। जो कि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३०×४=५घं.३०मि.का अन्तर ही ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है। भा.स्टै.टा.पूरे देशमें एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भलीभांति समझकर जन्मपत्र आदि बनाएँ।

इस समय समस्त घडियाँ स्टे.टा. से चल रही है। प्रायः धूप घडी का प्रचलन समाप्तहो चुका है। धूपघडीसे बने पंचांगव उनमें छपी लग्नसारिणी, दिनार्ध से या दिनमानादि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि भी सर्वथा अनुचित है, क्योंकि धूपघडी के अनुसार कोई भी अपने बच्चेका जन्मटाइम नोट नहीं करता, फिर भी रेलवेटाइमको देशी (धूप घडी) टाइम में बदलनेकी विधि साथके कालममें लिख चुके हैं।

चरपल साधन विधि- इष्टस्थानीयाक्षांशाः। इष्ट तारिखायाः क्रान्तिः। अनयोगुणकारस्तस्य यःपंचमांशः।तदिष्टदिने पलात्मकं चरं भवति। तत क्रान्तिवद्धनर्णम्। तद्द्विगुणितं त्रिशत् ३० घटीषु हीने युते वा दिनमानं भवति। उत्तरक्रान्तियुतं दक्षिण क्रान्तौ हीनं कार्यम्।

स्टै.अन्तर = स्थानीय टा. और स्टै.टा. का अन्तर

स्वदेशकाल (अक्षांशादि) सुबोधिनी तालिका

देशान्तर = मथुरासे पूर्वमें + पश्चिममें − अन्तर

उत्तर - प्रदेश

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	−०१।०४	+१८।१२
अलीगढ़	२७।५४	७८।०५	−१७।४०	+०१।३६
अमेठी	२६।०८	८१।४९	−०२।४४	+१६।३२
अनूपशहर	२८।२१	७८।२३	−१६।२८	+०२।४८
अकबरपुर	२६।२६	८२।३३	+००।१२	+१९।२८
अछनेरा	२७।११	७७।४६	−१८।५६	+००।२०
अतरोली	२८।०२	७८।१७	−१६।५२	+०२।२४
आजमगढ़	२६।०५	८३।१२	+०२।४८	+२२।०४
आगरा	२७।११	७८।०२	−१७।५२	+०१।२४
इटावा	२६।४७	७९।०२	−१३।५२	+०५।२४
इगलास	२७।५०	७८।००	−१८।००	+०१।१६
उन्नाव	२६।३३	८०।३०	−०८।००	+११।१६
उतरौला	२७।१९	८२।२८	−००।०८	+१९।०८
उरई (जालौन)	२५।५९	७९।२७	−१२।१२	+०७।०४
एटा (कासगंज)	२७।३५	७८।४१	−१५।१६	+०४।००
कन्नौज	२७।०३	७९।५८	−१०।०८	+०९।०८
कानपुर नगर	२६।२७	८०।२१	−०८।३६	+१०।४०
कोसी	२७।४८	७७।२६	−२०।१६	−०१।००
खीरीलखीमपुर	२७।५७	८०।४९	−०६।४४	+१२।३२
खुर्जा जं.	२८।१४	७७।५०	−१८।४०	+००।३६
खैर	२७।५५	७७।५४	−१८।२४	+००।५२
गढ़मुक्तेश्वर	२८।४८	७८।०६	−१७।३६	+०१।४०
गाजियाबाद	२८।४०	७७।२५	−२०।२०	−०१।०४
गाजीपुर	२५।३६	८३।३५	+०४।२५	+२३।३६
गोरखपुर	२६।४६	८३।२३	+०३।३२	+२२।४८
गोवर्धन	२७।३०	७७।२८	−२०।०८	−००।५२
गोंडा	२७।१०	८१।५८	−०२।०८	+१७।०८
चन्दौसी	२८।२७	७८।४७	−१४।५२	+०४।२४
चित्रकूट धाम	२५।१२	८०।५४	−०६।२४	+१२।५२
छाता	२७।४३	७७।३०	−२०।००	−००।४४
जेवर	२८।१०	७७।४०	−१९।००	−००।०४
जौनपुर	२५।४४	८२।४३	+००।५२	+२०।०८
झांसी	२५।२६	७८।३४	−१५।४४	+०३।३२
टप्पल	२८।०३	७७।३५	−१९।४०	−००।२४
टनकपुर	२९।०५	८०।०७	−०९।३२	+०९।४४
टूंडला जंक्शन	२७।१३	७८।१३	−१७।०८	+०२।०८
दिल्ली(राजधानी)	२८।३८	७७।१४	−२१।०४	−०१।४८
देवरिया	२६।३२	८३।४७	+०५।०८	+२४।२४
नोहझील	२७।४०	७७।३१	−१९।५६	−००।४०
पीलीभीत	२८।३८	७९।५०	−१०।४०	+०८।३६
प्रयागराज(इलाहाबाद)	२५।२८	८१।५४	−०२।२४	+१६।५२
प्रतापगढ़ बेल्हा	२५।५३	८१।५८	−०२।०८	+१७।०८
फतेहपुर	२५।५५	८०।५२	−०६।३२	+१२।४४
फतेहपुर(सीकरी)	२७।०६	७७।४०	−१९।२०	−००।०४
फतेहाबाद	२७।०१	७८।१९	−१६।४४	+०२।३२
फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	−११।३२	+०७।४४
फैजाबाद	२६।४७	८२।०८	−०१।२८	+१७।४८
बरेली	२८।२२	७९।२७	−१२।१२	+०७।०४
बलिया	२४।४४	८४।०९	+०६।३६	+२५।५२
बस्ती	२६।४८	८२।४३	+००।५२	+२०।०८
बहरायच	२७।३४	८१।३७	−०३।३२	+१५।४४
बदायूँ	२८।०२	७९।०८	−१३।२८	+०५।४८
बरसाना	२७।२५	७७।३८	−१९।२८	−००।१२
बाराबंकी	२६।५६	८१।१०	−०५।२०	+१३।५६
बाह	२६।५३	७८।३६	−१५।३६	+०३।४०
बांदा	२५।२८	८०।२१	−०८।३६	+१०।४०
बिजनौर	२९।२३	७८।११	−१७।१६	+०२।००
बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५२	−१८।३२	+००।४४
मथुरा	२७।२८	७७।४१	−१९।१६	शून्य।शून्य
मिर्जापुर(सोनभद्र)	२५।०८	८२।३७	+००।२८	+१९।४४
मुजफ्फरनगर	२९।२८	७७।४३	−१९।०८	+००।०८
मुगलसराय	२५।१८	८३।०७	+०२।२८	+२१।४४
मुरादाबाद	२८।५०	७८।५०	−१४।४०	+०४।३६
मेरठ	२९।००	७७।४५	−१९।००	+००।१६
मैनपुरी	२७।१३	७९।०२	−१३।५२	+०५।२४
रामपुर	२८।४७	७९।०२	−१३।५२	+०५।२४
रायबरेली	२६।१४	८१।१४	−०५।०४	+१४।१२
रेणुकूट	२४।०१	८३।१५	+०३।००	+२२।१६
लखनऊ(राजधा.)	२६।५१	८०।५५	−०६।२०	+१२।५६
ललितपुर	२४।४१	७८।२४	−१६।२४	+०२।५२
लखीमपुर(खीरी)	२७।५७	८०।४९	−०६।४४	+१२।३२
वाराणसी(काशी)	२५।२०	८३।००	+०२।००	+२१।१६
वृन्दावन	२७।३०	७७।४०	−१९।२०	−००।०८
शाहजहाँनपुर	२७।५४	७९।५७	−१०।१२	+०९।०४
सहारनपुर	२९।५९	७७।३३	−१९।४८	−००।३२
सम्भल	२८।३५	७८।३४	−१५।४४	+०३।३२
सीतापुर	२७।३५	८०।४०	−०७।२०	+११।५६
सुलतानपुर	२६।१५	८२।०४	−०१।४४	+१७।३२
हरदोई	२७।२३	८०।१०	−०९।२०	+०९।५६
हमीरपुर	२५।५८	८०।१०	−०९।२०	+०९।५६
हापुड़	२८।४५	७७।४६	−१८।५६	+००।२०
हाथरस(म.माया)	२७।३६	७८।०३	−१७।४८	+०१।२८

उत्तरांचल

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
अल्मोड़ा	२९।३७	७९।४०	−११।२०	+०७।५६
उत्तरकाशी	३०।४४	७८।२६	−१६।१६	+०३।००
गोपेश्वर(चमोली)	३०।२४	७९।२१	−१२।३६	+०६।४०
चम्पावत	२९।२०	८०।०६	−०९।३६	+०९।४०
गढ़वाल(टिहरी)	३०।२३	७८।३०	−१६।००	+०३।१६
देहरादून(राजधानी)	३०।१९	७८।०४	−१७।४४	+०१।३२
नैनीताल(वेधशाला)	२९।२३	७९।२७	−१२।१२	+०७।०४
पिथौरागढ़	२९।३५	८०।१३	−०९।०८	+१०।०८
पौड़ी(गढ़वाल)	३०।०९	७८।४७	−१४।५२	+०४।२४
केदारनाथ(बद्रीनाथ)	३०।४४	७९।३०	−१२।००	+०७।१६
बागेश्वर	२९।५२	७९।४२	−११।१२	+०८।०४
ऋषिकेश	३०।०७	७८।४२	−१५।१२	+०४।०४
उ.सिं.नगर(रुद्रपुर)	२८।५८	७९।२७	−१२।१२	+०७।०४
रुद्रप्रयाग	३०।१०	७९।११	−१३।१६	+०६।००
हरिद्वार	२९।५८	७८।१०	−१७।२०	+०१।५६

स्टै.अन्तर = स्थानीय टा. और स्टै.टा. का अन्तर

स्वदेशकाल (अक्षांशादि) सुबोधिनी तालिका

देशान्तर = मथुरासे पूर्वमें + पश्चिममें - अन्तर

हरियाणा

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
अम्वाला	३०।२२	७६।५२	-२२।३२	-०३।१६
करनाल	२९।४२	७७।०२	-२१।५२	-०२।३६
कुरुक्षेत्र	३०।००	७६।४८	-२२।४८	-०३।३२
कैथल	२९।४८	७६।२६	-२४।१६	-०५।००
चण्डीगढ़	३०।४४	७६।५२	-२२।३२	-०३।१६
जींद	२९।१८	७६।२३	-२४।२८	-०५।१२
नरवाना	३०।०५	७५।४५	-२७।००	-०७।४४
नारनौल	२८।०२	७६।१४	-२५।०४	-०५।४८
नारायणगढ़	३०।५०	७७।३०	-२०।००	-००।४४
पटौदी	२८।१८	७६।४८	-२२।४८	-०३।३२
पलवल	२८।२१	७७।१०	-२१।२०	-०२।०४
पानीपत	२९।२७	७६।५९	-२२।०४	-०२।४८
फरीदाबाद	२८।२५	७७।२२	-२०।३२	-०१।१६
भिवानी	२८।४८	७६।१८	-२४।४८	-०५।३२
महेन्द्रगढ़	२८।१७	७६।१४	-२५।०४	-०५।४८
रेवाड़ी	२८।१३	७६।४०	-२३।२०	-०४।०४
रोहतक	२८।५४	७६।३८	-२३।२८	-०४।१२
लोहारु	२८।२६	७५।४७	-२६।५२	-०७।३६
सिरसा	२९।३१	७५।०५	-२९।४०	-१०।२४
सोनीपत	२९।०२	७६।४२	-२३।१२	-०३।५६
हाँसी	२९।०६	७६।००	-२६।००	-०६।४४
हिसार	२९।१४	७५।४४	-२७।०४	-०७।४८

राजस्थान

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
अलवर	२७।३४	७६।३८	-२३।२८	-०४।१२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	-३१।१२	-११।५६
अनूपगढ़	२९।०७	७३।०६	-३७।३६	-१८।२०
उदयपुर	२४।३५	७३।४२	-३५।१२	-१५।५६
किशनगढ़	२६।३६	७४।५२	-३०।३२	-११।१६
कोटा	२५।११	७५।५०	-२६।४०	-०७।२४
श्रीगंगानगर	२९।५०	७३।५१	-३४।३६	-१५।२०
गंगापुर(टोंक)	२६।२९	७६।४४	-२३।०४	-०३।४८
चौलो	२७।२३	७३।१६	-३६।५६	-१७।४०
चिड़ावा	२८।१५	७५।३८	-२७।२८	-०८।१२
चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४२	-३१।१२	-११।५६
चुरु (शेखावटी)	२८।१९	७५।०२	-२९।५२	-१०।३६
जयपुर	२६।५५	७५।५२	-२६।३२	-०७।१६
जालौर	२५।२२	७२।३८	-३९।२८	-२०।१२
जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	-४६।१२	-२६।५६
जोधपुर	२६।१९	७३।०४	-३७।४४	-१८।२८
झालावाड़	२४।३६	७६।०९	-२५।२४	-०६।०८
झुन्झुनू	२८।०७	७५।२५	-२८।२०	-०९।०४
टोंक	२६।११	७५।५०	-२६।४०	-०७।२४
डीग	२७।२८	७७।२०	-२०।४०	-०१।२४
डूंगरपुर	२३।५०	७३।४३	-३५।०८	-१५।५२
देशनोक	२७।४८	७३।२०	-३६।४०	-१७।२४
धौलपुर	२६।४२	७७।५३	-१८।२८	+००।४८
नवलगढ़	२७।५१	७५।१८	-२८।४८	-०९।३२
नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	-३०।५६	-११।४०
नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	-३४।३२	-१५।१६
नागौर	२७।११	७३।४४	-३५।०४	-१५।४८
पाली	२५।४६	७३।२०	-३६।४०	-१७।२४
पुष्कर	२६।२८	७४।३३	-३१।४८	-१२।३२
नोखा	२७।३५	७३।३०	-३६।००	-१६।४४
पिलानी	२८।२३	७५।३५	-२७।२८	-०८।२४
फलौदी(जोध)	२७।१०	७२।२२	-४०।३२	-२१।१६
फतेहपुर	२७।५२	७५।०२	-२९।५२	-१०।३६
फुलेरा	२६।५२	७५।१६	-२८।५६	-०९।४०
बाड़मेर	२५।४५	७१।२४	-४४।२४	-२५।०८
बांसवाड़ा	२३।३०	७४।२४	-३२।२४	-१३।०८
बांदीकुई	२७।०३	७६।३४	-२३।४४	-०४।२८
बीकानेर	२८।०१	७३।२०	-३६।४०	-१७।२४
बूंदी	२५।२७	७५।४०	-२७।२०	-०८।०४
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	-२०।००	-००।४४
भीलवाड़ा	२५।२१	७४।४०	-३१।२०	-१२।०४
मेड़तासिटी	२६।३९	७४।०४	-३३।४४	-१४।२८
रतनगढ़(चुरु)	२८।०५	७४।४०	-३१।२०	-१२।०४
राजगढ़	२८।४०	७५।२४	-२८।२४	-०९।०८
सवाईमाधोपुर	२५।५८	७६।२४	-२४।२४	-०५।०८
सिरोही	२४।५३	७२।५४	-३८।२४	-१९।०८
सीकर(शेखावटी)	२७।३६	७५।१०	-२९।२०	-१०।०४
सरदार शहर	२८।२७	७४।३०	-३२।००	-१२।४४

मध्यप्रदेश

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
इन्दौर	२२।४४	७५।५१	-२६।३६	-०७।२०
इटारसी	२२।३७	७७।४६	-१८।५६	+००।२०
उज्जैन	२३।१०	७५।४४	-२७।०४	-०७।४८
खरगोन	२१।४९	७५।४०	-२७।२०	-०८।०४
खण्डवा	२१।५०	७६।२०	-२४।४०	-०५।२४
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	-१७।२०	+०१।५६
गुना	२४।४०	७७।३०	-२०।००	-०१।२४
छतरपुर	२४।५४	७९।३८	-११।२८	+०७।३६
छिन्दवाड़ा	२२।०३	७८।५७	-१४।१२	+०५।०४
जबलपुर	२३।१०	७९।५९	-१०।०४	+०९।१२
जनकपुर	२३।४२	८१।५१	-०२।३६	+१६।४०
झाबुआ	२२।४५	७४।३७	-३१।३२	-१२।१६
टीकमगढ़	२४।४५	७८।५१	-१४।३६	+०४।४०
दमोह	२३।५०	७९।२९	-१२।०४	+०७।१२
देवास	२२।५८	७६।०७	-२५।३२	-०६।१६
धार	२२।३६	७५।१९	-२८।४४	-०९।२८
नरसिंहपुर	२२।५७	७९।१४	-१३।०४	+०६।१२
नीमच	२४।२७	७४।५२	-३०।३२	-११।२०
पन्ना	२४।४४	८०।१३	-०९।०८	+१०।०८
बालाघाट	२१।४७	८०।१५	-०९।००	+१०।१६
बेतूल	२१।५१	७७।५३	-१८।२८	+००।४८
भोपाल(राज.)	२३।१६	७७।२३	-२०।२८	-०१।१२
मन्दसौर	२४।०४	७५।०५	-२९।४०	-१०।२४
मण्डला	२२।४०	८०।३५	-०७।४०	+१०।३६
भिण्ड (मुरैना)	२६।२६	७८।०४	-१७।४४	+०१।३२
रतलाम	२३।२०	७५।०६	-२९।३६	-१०।२०

स्वदेशकाल (अक्षांशादि) सुबोधिनी तालिका

स्टै.अन्तर = स्थानीय टा. और स्टै.टा. का अन्तर

देशान्तर = मथुरासे पूर्वमें + पश्चिममें − अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
मध्यप्रदेश				
राजगढ़	२४।००	७६।४०	−२३।२०	−०४।०४
रायसेन	२३।२०	७७।५०	−१८।४०	+००।३६
रीवा	२४।३१	८१।१९	−०४।४४	+१४।३२
विदिशा	२३।३३	७७।५१	−१८।३६	−००।४०
शहडोल	२३।२०	८१।२५	−०४।२०	+१४।५६
शिवपुरी	२५।४१	७७।४०	−१९।२०	−००।०४
सतना	२४।३४	८०।५५	−०६।२०	+१२।५६
सीहोर	२३।२९	८०।०९	−०९।२४	+०९।५२
सिंधी	२४।१८	८१।५०	−०२।४०	+१६।३६
छत्तीसगढ़				
अम्बिकापुरसरगुजा	२३।१०	८३।१०	+०२।४०	+२१।५६
कवारधा	२२।००	८१।१४	−०५।०४	+१४।१२
कांकेर	२०।१७	८१।२९	−०४।०४	+१५।१२
कोरबा	२२।२५	८२।५३	+०२।०८	+२२।३६
जशपुर नगर	२२।५३	८४।१०	+०६।४०	+२५।५६
जगदलपुर	१९।०५	८२।०२	−०१।५२	+१७।२४
बिलासपुर	२२।०५	८२।१३	−०१।०८	+१८।०८
रायपुर (राज.)	२१।१५	८१।४१	−०३।१६	+१६।००
राजनदगांव	२१।०७	८१।०२	−०५।५२	+१३।२४
रायगढ़	२१।५४	८३।२३	+३।३२	+२२।४८
पंजाब				
अमृतसर	३१।३७	७४।५५	−३०।२०	−११।२४
अबोहर(फिरोजपुर)	३०।०७	७४।२८	−३२।०८	−१२।५२
कपूरथला	३१।२२	७५।२४	−२८।२४	−०९।०८
गुरुदासपुर.	३२।०३	७५।२७	−२८।१२	−०८।५६
चण्डीगढ़	३०।४४	७६।५२	−२२।३२	−०३।१६
जालन्धर	३१।१९	७५।३४	−२७।४४	−०८।२८
डेराबाबा नगर	३२।०३	७५।०४	−२९।४४	−१०।२८
तलवन्डी(भटिंडा)	२९।५५	७५।१०	−२९।२०	−१०।०४
तरनतारन(अमृतसर)	३१।२८	७४।५६	−३०।१६	−११।०४
थानेश्वर	२९।५८	७६।५६	−२२।१६	−०३।००
नाभा	३०।२५	७६।०९	−२५।२४	−०६।०८
पटियाला	३०।२०	७६।२५	−२४।२०	−०५।०४
पठानकोट(गुरदासपुर)	३२।१८	७५।४२	−२७।१२	−०७।५६
फरीदकोट	३०।४०	७४।४२	−३१।१२	−११।५६
फाजिल्का	३०।२५	७४।०४	−३३।४४	−१४।२८
फगवाड़ा(कपूरथला)	३१।१४	७४।४६	−३०।५६	−११।४०
फिरोजपुर	३०।५६	७४।४०	−३१।२०	−१२।०४
बटाला(गुरदासपुर)	३१।४९	७५।१३	−२९।०८	−०९।५२
बरनाला(संगरूर)	३०।४०	७५।२५	−२८।२०	−०९।०४
भटिन्डा	३०।१२	७४।५९	−३०।०४	−१०।४८
रूपनगर	३१।१०	७६।२७	−२४।१२	−०४।५६
लुधियाना	३०।५५	७५।५४	−२६।२४	−०७।०८
सरहिन्द(पटियाला)	३०।३८	७६।२५	−२४।२०	−०५।०४
संगरूर	३०।१४	७५।५१	−२६।३६	−०७।२०
होशियारपुर	३१।३२	७५।५६	−२६।१६	−०७।००
हिमाचल प्रदेश				
कल्पा	३१।३२	७८।१५	−१७।००	+०२।१६
कुल्लू	३१।५८	७७।०६	−२१।३६	−०२।२०
चम्बा	३२।२९	७६।१०	−२५।२०	−०६।०४
धर्मशाला	३२।१५	७६।२२	−२४।३२	−०५।१६
बिलासपुर	३१।१९	७६।५०	−२२।००	−०३।२४
मण्डी	३१।४३	७६।५८	−२२।०८	−०२।५२
शिमला	३१।०६	७७।१३	−२१।०८	−०१।५२
सोलन	३०।५५	७७।०९	−२१।२४	−०२।०८
हमीरपुर	३१।४१	७६।३१	−२३।५६	−०४।४०
जम्मू और कश्मीर				
अनन्तनाग	३३।४३	७५।१७	−२८।५२	−०९।३६
कारगिल	३४।३०	७६।१३	−२५।०८	−०५।५२
जम्मू	३२।४४	७४।५४	−३०।२४	−११।०८
रियासी	३३।०५	७५।००	−३०।००	−१०।४४
लेह	३४।१०	७७।३८	−१९।२८	−००।१२
श्रीनगर	३४।०६	७४।५१	−३०।३६	−११।२०
गुजरात				
अहमदाबाद	२३।०२	७२।३८	−३९।२८	−२०।१२
कच्छ(भुज)	२३।१६	६९।४४	−५१।०४	−३१।४८
गोधरा	२२।४८	७३।३५	−३५।४०	−१६।२४
जामनगर	२२।२७	७०।०६	−४९।३६	−३०।२०
जूनागढ़	२१।३२	७०।३६	−४७।३६	−२८।२०
द्वारिका	२२।१४	६९।०१	−५३।५६	−३४।४०
पालनपुर	२४।११	७२।२७	−४०।५२	−२०।५६
महेसाणा	२३।३५	७२।२४	−४०।२४	−२१।०८
राजकोट	२२।१८	७०।५०	−४६।४०	−२७।२४
बडोदरा	२२।१८	७३।१२	−३७।१२	−१७।५६
सूरत	२१।१२	७२।५०	−३८।४०	−१९।२४
महाराष्ट्र				
अमरावती	२०।५६	७७।४७	−१८।५२	+००।२४
औरंगाबाद	१९।५२	७५।१९	−२८।४४	−०९।२८
कोल्हापुर	१६।४२	७४।१९	−३२।४४	−१३।२८
नागपुर	२१।०९	७९।०७	−१३।३२	+०५।४४
नासिक	२०।००	७३।४९	−३४।४४	−१५।२८
पूना(पुणे)	१८।३०	७३।५३	−३४।२८	−१५।१२
बम्बई(मुम्बई)	१८।५७	७२।५०	−३८।४०	−१९।२४
भण्डारा	२१।१५	७९।४५	−११।००	+०८।१६
शोलापुर	१७।४०	७५।५५	−२६।२०	−०७।०४
गोआ(पणजी)				
गोआ	१५।३०	७३।५५	−३४।२०	−१५।०४
कर्नाटक				
गुलबर्गा	१७।१९	७६।५०	−२२।४०	−०३।२४
चिकमंगलूर	१३।१९	७५।४७	−२६।५२	−०७।३६
चित्रदुर्गा	१४।१३	७६।२५	−२४।२०	−०५।०४
बिजापुर	१६।५०	७५।४४	−२७।०४	−०७।४८
बेंगलूर	१२।५८	७७।३५	−१९।४०	−००।२४
मैसूर	१२।१८	७६।३९	−२३।२४	−०४।०८
रायचूर	१६।१२	७७।२१	−२०।३६	−०१।२०

स्टै.अन्तर = स्थानीय टा. और स्टै.टा. का अन्तर

स्वदेशकाल (अक्षांशादिं) सुबोधिनी तालिका

देशान्तर = मथुरासे पूर्वमें + पश्चिममें - अन्तर

केरल

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
कोट्टयम	०९।३६	७६।३१	-२३।५६	+०४।४०
तिरूअनन्तपुरम्	०८।४४	७७।२०	-२०।४०	-०१।२४
मलप्पुरम	११।००	७६।०५	-२५।४०	-०६।२४

तमिलनाडु

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
कन्याकुमारी	०८।०४	७७।३६	-१९।३६	-००।२०
कोयंवुत्तूर	११।००	७७।००	-२२।००	-०२।४४
तिरूचिराप्पलि	११।००	७८।५५	-१४।२०	+०४।५६
धर्मपुरी	१२।०८	७८।११	-१७।१६	+०२।००
पाण्डिचेरी	११।५६	७९।५१	-१०।३६	+०८।४०
मदुरै	०९।५५	७८।०८	-१७।२८	+०१।४८
मद्रास(चैन्नई)	१३।०५	८०।१७	-०८।५२	+१०।२४
रामेश्वरम्	०९।१७	७९।१२	-१३।१२	+०६।०४

आन्ध्रप्रदेश

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
आदिलाबाद	१९।४०	७८।३१	-१५।५६	+०३।२०
ओंगोलु	१५।३१	८०।०६	-०९।३६	+०९।४०
अनन्तपुरम्	१४।४१	७७।३७	-१९।३२	-००।१६
चित्तूर	१३।१३	७९।०६	-१३।३६	+०५।४०
विशाखापटनम्	१७।४२	८३।२०	+०३।२०	+२२।३६
विजयवाड़ा	१६।३१	८०।३९	-०७।२४	+११।५२
हैदराबाद	१७।१८	७८।३०	-१६।००	+०३।१९

उड़ीसा

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
कोरापुट	१९।०९	८२।१९	-०।४४	+१८।३२
बालेश्वर	२१।३०	८६।५४	+१७।३६	+३६।५२
भवानीपाटणा	१९।५८	८३।०७	+०२।२८	+२१।४४
भुवनेश्वर	२०।१५	८५।५२	+१३।२८	+३२।४४
राउरकेला	२२।१४	८४।५२	+०९।२८	+२८।४४
सम्बलपुर	२१।२८	८३।५९	+०५।५६	+२५।१२

बिहार

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
औरंगाबाद	२४।४४	८४।२५	+०७।४०	+२६।५६
कटिहार	२५।३३	८७।३४	+२०।१६	+३९।३२
गया	२४।४९	८५।०१	+१०।०४	+२९।२०
चम्पारन(पूर्व)	२६।४०	८४।५६	+०९।४४	+२९।००
दरभंगा	२६।१०	८५।५७	+१३।४८	+३३।०४
नालन्दा	२५।१०	८५।३०	+१२।००	+३१।१६
पटना	२५।३७	८५।१०	+१०।४०	+२९।५६
बेगूसराय	२५।२६	८६।०७	+१४।२८	+३३।४४
भागलपुर	२५।१४	८६।५९	+१७।५६	+३७।१२
मधेपुरा	२५।५७	८६।५७	+१७।४८	+३७।०४
वैशाली	२५।४०	८५।१२	+१०।४८	+३०।०४
साहिवगंज	२५।१४	८७।३९	+२०।३६	+३९।५२
सीतामढ़ी	२६।३५	८५।२९	+११।५६	+३१।१२

झारखण्ड

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
गढ़वा	२४।१०	८३।५४	+०५।३६	+२४।५२
गुलमा	२३।०७	८४।४०	+०८।४०	+२७।५६
गोड्डा	२४।४०	८७।१०	+१८।४०	+३७।५६
चांईवासा	२२।३२	८५।५०	+०९।२०	+२८।३६
दुमका	२४।१८	८७।१४	+१८।५६	+३८।१२
धनवाद	२३।४७	८६।३०	+१६।००	+३५।१६
राची(राजधानी)	२३।२०	८५।२०	+११।२०	+३०।३६
लोहरदगा	२३।२७	८४।४२	+०८।४८	+२८।०४
हजारीबाग	२३।५९	८५।२४	+११।३६	+३०।५२

पश्चिमी बंगाल

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
कलकत्ता(कोलकाता)	२२।३४	८८।२३	+२३।३२	+४२।४८
खडगपुर	२२।२०	८७।१०	+१८।४०	+३७।५६
जलपाई गुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२५।०४	+४४।२०
वाकुंडा	२३।१४	८७।०५	+१८।२०	+३७।३६

उत्तरअक्षांश तथा पूर्वरेखांश एटलसके अनुसार लिये गये है। भूकेन्द्रीय अक्षांश लेनेपर किंचित अन्तर परिलक्षित होता है। ग्लोवपर भूमध्यरेखा से उत्तर तथा दक्षिणकी ओर खींचे हुए वृत्तोंको उत्तर एवं दक्षिण अक्षांशरेखा (वृत्त) कहते है। जोकि दोनो तरफ ९०-९० अंश समान होते है। ग्लोवपर उत्तरीध्रुवसे दक्षिणध्रुव तक खीचों गई रेखाओंको देशान्तरेखा कहते है, जोकि ३६० होती है। जिनकी ग्रीनविच से पूर्वापर गणना की जाती है। ग्रीनविचको शून्य पर माना गया है। देशान्तरेखा अर्थात् एक से दूसरे देशका अन्तर ज्ञानार्थ रेखांश होता है।सूर्य को १ रेखा पार करने मे ४ मि.का समय लगता है। ४ x ३६० बराबर २४ घंटे होते है। यही मानक समय है।

अन्य शहर राज्य

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. क.	ग्रीनविच से पूर्व रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सै.	मथुरा से पूर्वापर स. संस्कार मि.सै.
गान्तोक(सिक्किम)	२७।२०	८८।३८	+२४।३२	+४३।४८
डिब्रूगढ़(असम)	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+६९।००
दिसपुर (असम)	२६।२८	९१।५८	+३७।५२	+५७।०८
गुवाहाटी (अस.)	२६।११	९१।४५	+३७।००	+५६।१६
इटानगर (अरु.)	२६।५४	९३।३७	+४४।२८	+६३।४४
आलंग (अरु.)	२८।१०	९४।३०	+४८।००	+६७।१६
कोहिमा (नागा.)	२५।४१	९४।०७	+४६।२८	+६५।४४
इम्फाल (मणि.)	२४।४८	९३।५८	+४५।५२	+६५।०८
आईजोल (मिजो.)	२३।४६	९२।५२	+४१।२८	+६०।४४
अगरतला (त्रिपुरा)	२३।४९	९१।१८	+३५।१२	+५४।२८
शिलांग (मेघा.)	२५।३४	९१।५४	+३७।३६	+५६।५२
ढाका (वांग्ला.)	२३।४३	९०।२५	+३१।४०	+५०।५६
पोर्ट ब्लेअर	११।४०	९२।४६	+४१।०४	+८०।००
काठमाण्डू(नेपाल)	२७।४२	८५।१७	+११।०८	+३२।१८

ग्रीनविचमें जब दोपहरके १२ बजतेहै तव कहां कितने बजतेहै?

रेखांश		रेखांश	
३० पूर्व दिन के	२ वजते है।	३० पश्चिम प्रात:	१० वजते है।
६० पूर्व सायं के	४ वजते है।	६० पश्चिम प्रात:	८ वजते है।
९० पूर्व सायं के	६ वजते है।	९० पश्चिम प्रात:	६ वजते है।
१२० पूर्व रात्रि के	८ वजते है।	१२० पश्चिम रात्रि	४ वजते है।
१५० पूर्व रात्रि के	१० वजते है।	१५० पश्चिम रात्रि	२ वजते है।
१८० पूर्व रात्रि के	१२ वजते है।		

दैनिक लग्नोंमें वार्षिक संस्कार- लीप ईयर वर्ष मे १ जनवरी से २८ फरवरी तक ३ मिनट धन संस्कार और २९ फरवरी से ३१ दिसम्वर तक १ मिनट ऋण संस्कार होता है। लीपईयर से आगे वाले वर्षमे संस्कार करने की जरुरत नही पड़ती है। लीपईयर से द्वितीय वर्षमें १ मिनट धन और तृतीय वर्षमे ३ मिनट धन संस्कार लग्नारम्भके समयमें करनेसे सूक्ष्मासन्न लग्न स्पष्ट हो जाता है। जैसे लीप ईयर सन् १९९२ था तो सन् ९३ मे कोई संस्कार नही, ९४ मे १ मिनट धन, ९५ मे २ मिनट धन और ९६ मे जन. फर.मे ३ धन एवं २९ फर. से वर्षान्त तक १ मि. ऋण संस्कार करना होगा। जनवरी आदि मासोंमे दैनिक लग्न प्रवेश सारिणी प्रष्ठ ६५ से ७० तक छपी है।

विदेश काल सुबोधिनी तालिका

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टे. टा.से स्था. समयान्तर	ग्रीनविच GMT से क्षे. स्टे.समयान्तर	भारतीय स्टे. टा.से क्षे.स्टे. टा. समयान्तर	मथुरासे पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय संस्कार
		अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं. मि.	घं. मि.	घं.मि.से.
वेलिंग्टन	न्यूजीलैंड	४१।१९द.	१७४।४६पू.	-२०।५६	+१२।००	+६।३०	+६।३०।०८
कानवेरा	आस्ट्रेलिया	३५।१५द.	१४९।०८पू.	-०३।२८	+१०।००	+४।३०	+४।४७।३६
आस्ट्रेलिया	दक्षिणी	३२।००द.	१४६।१७पू.	-१४।५२	+१०।००	+४।३०	+४।३६।१२
टोकियो	जापान	३५।३९उ.	१३९।४५पू.	+१९।००	+०९।००	+३।३०	+४।१०।०४
सेउल	द.कोरिया	३७।४०उ.	१२७।००पू.	-३२।००	+०९।००	+३।३०	+३।१९।०४
प्योंगयांग	उ.कोरिया	३९।००उ.	१२५।३०पू.	-३८।००	+०९।००	+३।३०	+३।१३।०४
फार्मोसा	फार्मोसा	२५।१८उ.	१२१।३२पू.	-५३।५२	+०९।००	+३।३०	+२।५१।२४
फिजीदीप	फिजी	१८।००द.	१७९।००पू.	+०६।२६	+१२।००	+६।३०	+६।४७।०४
पेकिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	-१४।४०	+०८।००	+२।३०	+२।३६।२४
हांगकांग	हांगकांग	२५।१८उ.	११४।१०पू.	-२३।२०	+०८।००	+२।३०	+२।२७।४४
जाकार्ता	इण्डोनेशिया	०७।५७द.	११०।२०पू.	-०८।४०	+०७।३०	+२।००	+२।१२।२४
सिंगापुर	मलाया	०१।१६उ.	१०३।४७पू.	-३४।५२	+०७।३०	+२।३०	+१।४६।१२
बैंगकॉक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	-१८।००	+०७।००	+१।३०	+१।३३।०४
रंगून	वर्मा	१६।४८उ.	९६।०८पू.	-०५।२८	+०६।३०	+१।००	+१।१५।३६
मांडले	वर्मा	२२।००उ.	९६।०५पू.	-०५।४०	+०६।३०	+१।००	+१।१५।२४
ल्हासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१।०८पू.	+३४।३२	+०५।३०	-०।००	+०।५५।३६
ढाका	बांग्लादेश	४३।४३उ.	९०।२५पू.	+०१।४०	+०६।००	+०।३०	+०।५२।४४
कार्डी	सीलोनलंका	०७।११उ.	८०।३२पू.	-००।००	+०५।३०	-०।००	+०।२१।१२
राज.दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१४पू.	-२१।०४	+०५।३०	-०।००	-०।०१।००
काबुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१२पू.	+०६।४८	+०४।३०	-१।००	-०।३२।०८
कराची	पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७।००पू.	-३२।००	+०५।००	-०।३०	-०।४०।५६
तेहरान	ईरान	३५।४४उ.	५१।२७पू.	-०४।१२	+०३।३०	-२।००	-१।४३।०८
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५।०१पू.	-००।०४	+०३।००	-२।३०	-२।०८।५२
बगदाद	इराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	-०२।००	+०३।००	-२।३०	-२।१०।५६
अदन	एडन	१३।२५उ.	४५।००पू.	-००।००	+०३।००	-२।३०	-२।०८।५६
रियाध	सऊदीअरब	२४।५०उ.	४६।१८पू.	+०५।१२	+०३।००	-२।३०	-२।०३।४४
मास्को	रुस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	-३९।४०	+०३।००	-२।३०	-२।३८।३६
नाईरोबी	पूर्वीअफ्रीका	०१।२०द.	३६।४४पू.	-३३।०४	+०२।३०	-३।००	-२।४२।००
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+२५।१२	+०२।००	-३।३०	-२।४३।४४
अमन	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७पू.	+२३।४८	+०२।००	-३।३०	-२।४५।०८
जेरूसलेम	इजराइल	३१।४८उ.	३५।१२पू.	+२०।४८	+०२।००	-३।३०	-२।०८।०८
काहिरा	मिस्त्र	३०।०१उ.	३१।१३पू.	+०४।५२	+०२।००	-३।३०	-२।०४।०४

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख नगर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टे. टा.से स्था. समयान्तर	ग्रीनविच GMT से क्षे. स्टे.समयान्तर	भारतीय स्टे. टा.से क्षे.स्टे. टा. समयान्तर	मथुरासे पूर्व व पश्चिम देशान्तर समय संस्कार
		अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं. मि.	घं. मि.	घं.मि.से.
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५२उ.	३२।५९पू.	+११।५६	+२।०	-३।३०	-२।५७।००
ट्रांसवालय	द.अफ्रीका	२५।००द.	२९।००पू.	+०४।००	+२।०	-३।३०	-३।१२।५६
बल्गारिया	यूरोप	४३।१८उ.	२६।१७पू.	+१४।५२	+२।०	-३।३०	-३।२३।४८
एथेन्स	ग्रीस	३७।५९उ.	२३।२०पू.	-२६।४०	+२।०	-३।३०	-३।३५।३६
बेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४।५०उ.	२०।३७पू.	+२२।२८	+१।०	-४।३०	-३।४६।२८
बुडापेस्ट	हंगरी	४७।२९उ.	१९।०५पू.	+१६।२०	+१।०	-४।३०	-३।५२।३६
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	-०६।२४	+१।०	-४।३०	-४।१५।२०
ट्रिपोली	उ.अफ्रीका	३२।४५द.	१३।१५पू.	-०७।००	+१।०	-४।३०	-४।१५।५६
रोम	इटली	४१।४५उ.	१२।२९पू.	-१०।०४	+१।०	-४।३०	-४।१९।००
वान	प.जर्मनी	५०।४३उ.	०७।०६पू.	-३१।३६	+१।०	-४।३०	-४।४०।३२
जेनेवा	स्वीट्जरलैण्ड	४६।४२उ.	०६।०९पू.	-३५।२५	+१।०	-४।३०	-४।४४।२०
ब्रुसेल्स ★	बेल्जियम	५०।५१उ.	०४।२१पू.	-४२।२६	+१।०	-४।३०	-४।५१।३२
पेरिस ★	फ्रांस	४८।५०उ.	०२।२०पू.	-५०।४०	+१।०	-४।३०	-४।५९।३६
ग्रीनविच	इंग्लैण्ड	५१।२९उ.	रे.शून्य	-००।००	+०।०	-५।३०	-५।०८।५६
लन्दन	इंग्लैण्ड	५१।३२उ.	००।०५प.	-००।२०	-०।०	-५।३०	-५।०९।१६
मॉड्रिड ★	स्पेन	४०।२५उ.	०३।४५प.	-७५।००	+१।०	-४।३०	-५।२३।५६
जिब्राल्टर	जिब्राल्टर	३६।०७उ.	०५।२२प.	-८१।२८	+१।०	-४।३०	-५।३०।२४
लिस्बन	पुर्तगाल	३८।४२उ.	०९।१०प.	-३६।४०	-०।०	-४।३०	-५।४५।३६
अर्जेण्टाइना	द.अमेरिका	२६।१२द.	६४।४५प.	+४१।००	+५।०	-८।३०	-९।२७।५६
न्यूयार्क	अमेरिका	४०।४३उ.	७४।००प.	+०४।००	+५।०	-१०।३०	-१०।०४।५६
ओटावा	कनाडा	४५।२६उ.	७५।४१प.	-०२।४४	+५।०	-१०।३०	-१०।११।४०
वाशिंगटन	अमेरिका	३८।४३उ.	७७।००प.	-०८।००	+५।०	-१०।३०	-१०।१६।५६
मैक्सिको	मैक्सिको	१९।२५उ.	९९।१७प.	-३७।०८	+६।०	-१०।३०	-११।४६।०४

नोट- भारत सरकार द्वारा प्रामाणिक एटलससे उपरोक्त तालिका बनाई गई है। किंचित कहीं अन्तर परिलक्षित हो तो विद्वान स्वयं सुधारलें। ★ यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) जनरल मीन टाइम भी व्यवहार मे चालू है। विश्वके कुछ देशोंमें स्टे.टा.भी अलग चलता है। जैसे अमेरिका (U.S.A.) ईस्टर्नटाईम (E.T.)-१०।३० सैण्ट्रलटाईम (C.T.)-११।३० माउण्टेनटाईम(M.T.)-१२।३० और पैसिफिकटाईम (P.T.)-१३।३० भा.स्टे.टा. से अन्तर रहता है। कनाडा-९।०० एटलांटिकटाईम (A.T.)-९।३० ईस्टर्नटाईम(E.T.)-१०।३० सैन्ट्रलटाईम (C.T.) ११।३० माउण्टेनटाईम (M.T.)-१२।३० पैसिफिकटाईम (P.T.)-१३।३० का अन्तर भा.स्टे.टा.से रहता है। मैक्सिको-सैन्ट्रलटाईम (C.T.)-११।३० माउण्टेनटाईम (M.T.)-१२।३० पैसिफिकटाईम (P.T.)-१३।३० का अन्तर भा.स्टे.टा. से रहता है। कनाडा, क्यूबा, चेकोस्लावाकिया, मिश्र, आयरलैण्ड, इटली, पौलेण्ड, सीरिया, टर्की, इंग्लैण्ड, अमरीकादि कुछ देशोंमें ग्रीष्मकालभी प्रचलित है।अर्थात् गर्मियोंमें स्टे.टा.से ग्रीष्मकाल १ घं. आगे रहता है।

देश-विदेश की लग्न ज्ञान सारणी

उपकरण-इष्ट साम्पातिक काल

अंश :-		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मेष ०	घं.	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९
	मि.	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४४	४७	५०	५३
	से.	२८	२८	२८	२९	३१	३३	३६	४१	४६	५०	५८	६	१३	२४	३५	४५
वृष १	घं.	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१
	मि.	४३	४७	५१	५४	५८	२	५	९	१२	१६	२०	२३	२७	३१	३५	३९
	से.	५६	२९	२	३५	१२	४९	२५	६	४७	२८	१३	५८	४४	३४	२४	१४
मिथुन २	घं.	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३
	मि.	३९	४४	४८	५२	५७	१	५	१०	१४	१८	२२	२६	३१	३५	३९	४५
	से.	५७	१२	२७	४३	३	२३	३९	२	२५	४७	१३	३९	५	३५	३	३०
कर्क ३	घं.	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२
	मि.	५४	५९	४	८	१२	१७	२२	२६	३१	३६	४०	४५	५०	५४	५९	४
	से.	१२	५१	३०	९	४९	२८	७	४७	२७	६	४६	२६	६	४६	२६	६
सिंह ४	घं.	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	मि.	१३	१८	२२	२७	३२	३६	४१	४५	५०	५४	५९	३	८	१३	१७	२२
	से.	३९	१५	५१	२६	१	३६	११	४५	१९	५३	२६	५९	३३	५	३७	१०
कन्या ५	घं.	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६
	मि.	२९	३४	३८	४३	४७	५२	५६	१	५	१०	१४	१९	२६	२८	३२	३६
	से.	४५	१४	४३	१२	४१	१०	३८	७	३६	५	३४	३	३२	२	३२	५९
तुला ६	घं.	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
	मि.	४४	४९	५३	५८	२	७	११	१६	२०	२५	३०	३४	३९	४४	४८	५३
	से.	३८	११	४४	१०	४३	१६	५०	२५	०	४१	१६	५१	२७	३	३९	१६
वृश्चिक ७	घं.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	मि.	२	७	११	१६	२१	२५	३०	३५	३९	४४	४९	५४	५८	३	८	१२
	से.	५४	३४	१४	५४	३४	१४	५३	३३	१२	५२	३१	१०	५२	३०	८	४५
धनु ८	घं.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	मि.	२१	२५	३०	३४	३८	४३	४७	५२	५६	०	५	९	१३	१७	२२	२६
	से.	१४	४१	८	३५	५९	२३	४७	८	२९	४९	६	२३	४१	५४	७	२१
मकर ९	घं.	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५
	मि.	२६	३०	३४	३७	४१	४५	४९	५२	५६	०	३	७	१०	१४	१७	२१
	से.	३३	१८	३	५६	३९	२२	५	४४	२३	२	३७	१२	४५	१६	४७	१७
कुम्भ १०	घं.	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६
	मि.	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४२	४५	४८	५१	५४	५७
	से.	१	१०	१९	२९	३५	४१	४८	५२	५६	५९	०	१	३	२	१	०
मीन ११	घं.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८
	मि.	४०	४३	४६	४९	५२	५४	५७	०	३	६	९	१२	१५	१७	२०	२३
	से.	४१	३३	२५	१७	८	५९	५१	४३	५	२६	१८	१०	१	५३	४५	३८

अंश :-		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष ०	घं.	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०
	मि.	५६	०	३	६	१०	१३	१६	१९	२३	२६	३०	३३	३६	४०	४३
	से.	५९	३	२६	४३	०	१८	३८	५८	१९	४३	७	३१	५९	२७	५६
वृष १	घं.	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२
	मि.	४३	४७	५०	५४	५८	२	६	१०	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९
	से.	८	४	५६	५५	५४	५३	५६	५९	२	९	१६	२४	३५	४७	५७
मिथुन २	घं.	२३	२३	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	मि.	५०	५५	५९	३	८	१२	१७	२१	२६	३१	३६	४०	४४	४९	५४
	से.	१	३४	३	३६	९	४३	८	४३	२८	५	४२	२०	५७	३४	१२
कर्क ३	घं.	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
	मि.	८	१३	१८	२२	२७	३२	३६	४१	४५	५०	५५	५९	४	९	१३
	से.	४५	२५	४	४३	२२	१	३९	१७	५६	३३	१०	४८	२५	२	३९
सिंह ४	घं.	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५
	मि.	२६	३१	३५	४०	४४	४९	५३	५८	२	७	११	१६	२०	२५	२९
	से.	४१	१२	४४	१५	४६	१७	४७	१७	४८	१८	४८	१७	४६	१५	४५
कन्या ५	घं.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
	मि.	४१	४५	५०	५४	५९	३	८	१२	१७	२२	२६	३१	३५	४०	४४
	से.	२९	५९	२८	५८	२८	५८	२८	५८	२९	०	२१	२	३४	६	३८
तुला ६	घं.	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०
	मि.	५७	२	७	११	१६	२१	२५	३०	३४	३९	४४	४८	५३	५८	२
	से.	५३	३०	८	४६	२४	२	४०	१८	५७	३६	१५	५५	३५	१५	५४
वृश्चिक ७	घं.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२
	मि.	१३	१८	२६	२१	२५	४०	४४	४९	५४	५८	३	७	१२	१६	२१
	से.	२३	१	३८	१४	५०	२५	५९	३३	८	४०	१२	४४	१४	४४	१४
धनु ८	घं.	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	मि.	३०	३४	३८	४२	४६	५५	५९	३	३	७	११	१४	१९	२२	२६
	से.	३०	३९	४९	५४	५९	५	६	६	७	३	०	५६	४८	४०	३२
मकर ९	घं.	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	मि.	२४	२८	३१	३४	३८	४१	४५	४८	५१	५४	५८	१	४	७	११
	से.	४३	९	३६	५८	२०	४३	१	१९	३८	५३	८	२४	३६	४८	१
कुम्भ १०	घं.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७
	मि.	५९	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३४	३७	४०
	से.	५७	५४	५२	४८	४४	४०	३४	२८	२३	१६	९	३	५६	४९	४१
मीन ११	घं.	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९
	मि.	२६	२९	३२	३५	३८	४०	४३	४९	४९	५२	५५	५८	१	४	४
	से.	३१	२४	१६	१०	४	५८	५३	४३	४३	४०	३७	३३	३१	२९	२८

कोष्टक 'अ'

साम्पातिक काल गति ज्ञानार्थ कोष्टक(अ) गोमूत्रिका क्रम से जोड़कर ग्रहण करें।

घं.मि.से.	प्रसे			घं.मि.से.	प्रसे		
मि.से.प्रसे	–			मि.से.प्रसे	–		
से.प्रसे	–	–		से.प्रसे	–	–	
१	०	९	५१	३१	५	५	३३
२	०	१९	४२	३२	५	१५	२४
३	०	२९	३४	३३	५	२५	१६
४	०	३९	२५	३४	५	३५	७
५	०	४९	१६	३५	५	४४	५९
६	०	५९	८	३६	५	५४	५०
७	१	९	०	३७	६	४	४१
८	१	१८	५१	३८	६	१४	३३
९	१	२८	४२	३९	६	२४	२४
१०	१	३८	३४	४०	६	३४	१५
११	१	४८	२५	४१	६	४४	७
१२	१	५८	१७	४२	६	५३	५८
१३	२	८	८	४३	७	३	५०
१४	२	१८	०	४४	७	१३	४१
१५	२	२७	५१	४५	७	२३	३२
१६	२	३७	४२	४६	७	३३	२४
१७	२	४७	३३	४७	७	४३	१५
१८	२	५७	२५	४८	७	५३	८
१९	३	७	१६	४९	८	२	५८
२०	३	१७	८	५०	८	१२	४९
२१	३	२६	५९	५१	८	२२	४१
२२	३	३६	५०	५२	८	३२	३२
२३	३	४६	४२	५३	८	४२	२३
२४	३	५६	३३	५४	८	५२	१५
२५	४	६	२५	५५	९	२	६
२६	४	१६	१६	५६	९	११	५८
२७	४	२६	७	५७	९	२१	४९
२८	४	३५	५९	५८	९	३१	४०
२९	४	४५	५०	५९	९	४१	३२
३०	४	५५	४२	६०	९	५१	२३

१. श्री ब्रजभूमि पंचांग में दैनिक मध्यरात्रि १२ बजे का साम्पातिक काल ग्रहस्पष्ट स्थितिके साथ घं. मि.से. में दिया जाता है। अग्रिमपृष्ठ पर सन् १९४४ से २०११ तक के वर्षोंमें साम्पातिक काल ज्ञान सारिणी छपी है।

साम्पातिक द्वारा कुण्डली बनानेके लिये- जिस समयकी लग्न बनानी है उसी समयका इष्ट साम्पातिक पहले मथुरा के लिये बनायें।

२. मथुराके इष्ट साम्पातिककालमें आप किसी भी स्थानका देशान्तर संस्कार देशकाल सुबोधिनी तालिकाके कालम नं.५ से लेकर ऋण धन चिन्हानुसार यथावत् कर देंगे तो उसी समयका अभीष्ट स्थानीय स्पष्ट साम्पातिककाल बन जायेगा, जिस समयका आपने मथुराके लिए बनाया है।

३. जिस स्थानकी कुण्डली बनानी हो उसी स्थानका इष्ट साम्पातिक काल बनाकर उसे उसी स्थानके अक्षांशोंके आधार पर बनी देश विदेशकी लग्न सारणीमें देखने से जहां समानांक मिलें उसके बाईं ओर लिखी लग्न राशिके ऊपर लग्न भुक्तांश स्पष्ट होंगे।

४. साम्पातिककाल गति प्रति १ घंटा बराबर १० सेकेण्डके हिसाब से धन होती है। स्पष्ट ज्ञानार्थ कोष्टक(अ) साथमें दिया गया है।

५. साम्पातिककालके २४ घंटोंमें घड़ीका समयमान २३ घं. ५६ मि. ४.०९५४ सेकेण्ड बराबर ०.९९८७ दिन है।

★ उदाहरण- १ अप्रैल १९९५ दिन के २ बजकर ५८ मिनट (भा.स्टे.टा. १४घं.५८मि.) पर मथुरामें साम्पातिककाल द्वारा लग्न ज्ञात करनी है तो पहले स्टे.टा.१४।५८ को मथुराका लोकल टाइम बना लीजिये। ★ लोकलटाइम बनानेकी विधी- स्वदेशकाल सुबोधिनी तालिकाके चौथे कालममें मथुराके सामने स्टे. अन्तर- १९मि.१६से.को १४।५८ में से घटाया तो १४ घं. ३८मि. ४४ सै. यह मथुराका लोकल टाइम बना। स्थानीय समय लो.टा.१४।३८।४४ के अनुसार कोष्टक (अ) से साम्पा.समय संस्कार ज्ञात किया-

१४ घंटे के लिए चालन	+	०	घं.	२	मि.	१८	से.	०० प्र.से.
३९ मिनटके लिए चालन	+	०	"	०	"	६	"	२४
साम्पातिक काल संस्कार	+	०	"	२	"	२४	"	२४ सिद्धि हुआ
मथुराकालोकल टाइम	+	१४	"	३८	"	४४	"	०० जोड़ दिया
१अप्रैल९५का साम्पातिककाल	+	१२	"	१४	"	३८	"	०० जोड़ दिया
[illegible]		[illegible]	"	[illegible]	"	४६	"	इष्ट सा काल सिद्धहुआ

शेष अग्रिम पृष्ठ पर देखें।

साम्पातिककालज्ञान सारिणी
Sidereal Time

सन्	घं.मि.से.	सन्	घं.मि.से.
१९४४*	६।३७।१७	१९७८	६।४०।१९
१९४५	६।४०।१६	१९७९	६।३९।२२
१९४६	६।३९।१६	१९८०*	६।३८।२४
१९४७	६।३८।२२	१९८१	६।४१।२३
१९४८*	६।३७।२५	१९८२	६।४०।२६
१९४९	६।४०।२५	१९८३	६।३९।३८
१९५०	६।३९।२७	१९८४*	६।३८।३०
१९५१	६।३८।३०	१९८५	६।४१।३०
१९५२*	६।३७।३३	१९८६	६।४०।३२
१९५३	६।४०।३३	१९८७	६।३९।३४
१९५४	६।३९।३५	१९८८*	६।३८।३७
१९५५	६।३८।३८	१९८९	६।४१।३६
१९५६*	६।३७।४१	१९९०	६।४०।३९
१९५७	६।४०।४०	१९९१	६।३९।४२
१९५८	६।३९।४३	१९९२*	६।३८।४५
१९५९	६।३८।४५	१९९३	६।४१।४४
१९६०*	६।३७।४७	१९९४	६।४०।४८
१९६१	६।४०।४७	१९९५	६।३९।५१
१९६२	६।३९।५०	१९९६*	६।३८।५३
१९६३	६।३८।५३	१९९७	६।४१।५३
१९६४*	६।३७।५६	१९९८	६।४०।५६
१९६५	६।४०।५५	१९९९	६।३९।५८
१९६६	६।३९।५७	२०००*	६।३८।५८
१९६७	६।३९।००	२००१	६।४१।५८
१९६८*	६।३८।०३	२००२	६।४१।००
१९६९	६।४१।०२	२००३	६।४०।०३
१९७०	६।४०।०५	२००४*	६।३९।०६
१९७१	६।३९।०७	२००५	६।४२।०६
१९७२*	६।३८।१०	२००६	६।४१।०८
१९७३	६।४१।१०	२००७	६।४०।११
१९७४	६।४०।१२	२००८*	६।३९।१४
१९७५	६।३९।१५	२००९	६।४२।१३
१९७६*	६।३८।१७	२०१०	६।४१।१६
१९७७	६।४१।१६	२०११	६।४०।१८

प्रतिमासारम्भ साम्पा. काल संस्कार धन.

मास	घं. मि. से.
जनवरी +	००।००।००
फरवरी	०२।०२।१३
मार्च	०३।५२।३७
अप्रैल	०५।५४।५०
मई	०७।५३।०७
जून	०९।५५।२०
जुलाई	११।५३।३६
अगस्त	१३।५५।५०
सितम्बर	१५।५८।०३
अक्टूबर	१७।५६।२०
नवम्बर	१९।५८।३३
दिसम्बर	२१।५६।५०

लीप वर्ष जिस सन् में फरवरी २९ का हो साम्पा. काल संस्कार धन

मास	घं. मि. से.
जनवरी +	००।००।००
फरवरी	०२।०२।१३
मार्च	०३।५६।३३
अप्रैल	०५।५८।४७
मई	०७।५७।०३
जून	०९।५९।१६
जुलाई	११।५७।३३
अगस्त	१३।५९।४६
सितम्बर	१६।०२।००
अक्टूबर	१८।००।१६
नवम्बर	२०।०२।२९
दिसम्बर	२२।००।४६

ता.	घं.मि.से.
१	+०।०।०
२	०।३।५७
३	०।७।५३
४	०।११।५०
५	०।१५।४६
६	०।१९।४३
७	०।२३।३९
८	०।२७।३६
९	०।३१।३२
१०	०।३५।३०
११	०।३९।२६
१२	०।४३।२३
१३	०।४७।१९
१४	०।५१।१६
१५	०।५५।१२
१६	०।५९।१८
१७	०।१०।३।५
१८	०।१०।७।२
१९	१।१०।५८
२०	१।१४।५५
२१	१।१८।५१
२२	१।२२।४८
२३	१।२६।४४
२४	१।३०।४१
२५	१।३४।३७
२६	१।३८।३४
२७	१।४२।३०
२८	१।४६।२७
२९	१।५०।२४
३०	१।५४।२७
३१	१।५८।१७

(शेष पृ. ८४ का) घंटे के स्थानमें २४ से अधिक है इसलिए २४ घटाकर शेष इष्ट साम्पातिककाल ३घं. १५ मि. ४६ से. को देश-विदेश की लग्न ज्ञान सारिणीमें देखा तो सिंहलग्न के सामने ० अंश के नीचे ३ घ. १३ मि. ३९ से. और १ अंश के नीचे ३घं. १८ मि. १५ से. लिखा मिला अत: सिंह लग्न ० अंश २८ कला के लगभग स्पष्ट होती है। लग्न प्रवेश सारणीमें देखें सिंह लग्न का आरम्भ काल १४ घं. ५६ मि. लिखा है। देश-विदेशकी लग्न ज्ञान सारिणी २७।२८अक्षांश तुल्य बनाई गई है।

मथुरामें सिंह है तो फार्मोसामें क्या लग्न होगी? फार्मोसा का देशान्तर सं.घं. २ मि. ५५ से. २४ धन है इसलिये मथुराके इष्ट साम्पा. ३घं. १५ मि. ४६ से. में जोड़ा तो ६ घं. ११ मि. १० से. यह फार्मोसा का इष्ट साम्पातिककाल बना। देखिए देश-विदेश की लग्न ज्ञान सारिणीमें कन्यालग्न ९ अंश के नीचे ६ घं. १० मि. ५ सै. छपा है इससे यह सिद्ध हुआ कि फार्मोसामें भा.स्टे.टा. १४।५८ बजे कन्यालग्न ९ अंशपर उदय हो रही होगी।

मास तारीखोंपरि = वेलान्तरम् = मिनट सेकेण्ड

तारीख	जनवरी मि.से.	फरवरी मि.से.	मार्च मि.से.	अप्रैल मि.से.	मई मि.से.	जून मि.से.	जुलाई मि.से.	अगस्त मि.से.	सितम्बर मि.से.	अक्टूबर मि.से.	नवम्बर मि.से.	दिसम्बर मि.से.
	+	+	+	+	-	-	+	+	+	-	-	-
१	३।४३	१३।३८	१२।३५	४।०७	२।५२	२।२५	३।३३	६।१५	+०९	१०।०७	१६।२१	११।०३
२	३।५२	१३।४६	१२।२३	३।४९	३।००	२।१६	३।४५	६।११	-।१०	१०।२७	१६।२३	१०।४३
३	४।२०	१३।५४	१२।११	३।३२	३।०७	२।०७	३।५६	६।०७	०।२९	१०।४६	१६।२४	१०।१८
४	४।४८	१४।००	११।५९	३।१४	३।१३	१।५७	४।०८	६।०२	०।४८	११।०५	१६।२४	९।५३
५	५।१६	१४।०६	११।४६	२।५६	३।१९	१।४७	४।१८	५।५७	१।०८	११।२३	१६।२३	९।२८
६	५।४२	१४।१०	११।३२	२।३९	३।२४	१।३६	४।२८	५।५१	१।२८	११।४३	१६।२१	९।०३
७	६।०९	१४।१४	११।१८	२।२२	३।२९	१।२५	४।३८	५।४४	१।४८	११।५९	१६।१७	८।३७
८	६।३५	१४।१७	११।०४	२।०४	३।३३	१।१४	४।४८	५।३७	२।०९	१२।१६	१६।१४	८।११
९	७।००	१४।२०	१०।४९	१।४८	३।३६	१।०३	४।५८	५।२९	२।२९	१२।३३	१६।०९	७।४५
१०	७।२५	१४।२१	१०।३४	१।३१	३।३९	०।५२	५।०७	५।२१	२।५०	१२।४९	१६।०४	७।१८
११	७।४९	१४।२२	१०।१८	१।१५	३।४२	०।४०	५।१५	५।१२	३।११	१३।०५	१५।५८	६।५१
१२	८।१३	१४।२२	१०।०२	०।५९	३।४४	०।२८	५।२३	५।०३	३।३२	१३।२१	१५।५२	६।२३
१३	८।३६	१४।२१	०९।४६	०।४३	३।४५	०।११	५।३०	४।५३	३।५३	१३।३६	१५।४३	५।५५
१४	८।५८	१४।१९	०९।२९	०।२७	३।४६	-१०३	५।३७	४।५२	४।१४	१३।५०	१५।३४	५।२७
१५	९।२०	१४।१७	०९।१२	+।१२	३।४६	+१०९	५।४४	४।३१	४।३६	१४।०४	१५।२५	४।५८
१६	९।४१	१४।१४	०८।५५	-।०३	३।४६	०।२२	५।५०	४।२०	४।५७	१४।१७	१५।१५	४।२९
१७	१०।०१	१४।१०	०८।३८	०।१७	३।४५	०।३४	५।५६	४।०८	५।१८	१४।३०	१५।०४	४।००
१८	१०।२१	१४।०६	०८।२१	०।३१	३।४३	०।४८	६।०१	३।५५	५।४०	१४।४२	१४।५२	३।३१
१९	१०।४०	१४।०१	०८।०३	०।४५	३।४१	१।०१	६।०६	३।४२	६।०१	१४।५३	१४।३९	३।०२
२०	१०।५८	१३।५५	०७।४५	०।५७	३।३८	१।१४	६।१०	३।२८	६।२२	१५।०४	१४।२४	२।३२
२१	११।१५	१३।४८	०७।२८	१।११	३।३५	१।२७	६।१३	३।२४	६।४३	१५।१४	१४।१०	२।०२
२२	११।३२	१३।४१	०७।१०	१।२३	३।३१	१।४०	६।१६	२।५९	७।०४	१५।२४	१३।५५	१।३२
२३	११।४९	१३।३४	०६।५१	१।३५	३।२७	१।५३	६।१९	२।४४	७।२५	१५।३३	१३।३९	१।०२
२४	१२।०४	१३।२४	०६।३३	१।४६	३।२२	२।०६	६।२१	२।३०	७।४६	१५।४१	१३।२२	०।३२
२५	१२।१९	१३।१७	०६।१५	१।५७	३।१७	२।१९	६।२३	२।१३	८।०७	१५।४९	१३।०४	-०।२
२६	१२।३२	१३।०७	०५।४७	२।०८	३।११	२।३२	६।२३	१।५६	८।२७	१५।५६	१२।४६	+।२८
२७	१२।४५	१२।५७	०५।३८	२।१८	३।०५	२।४४	६।२३	१।३९	८।४८	१६।०२	१२।२७	०।५८
२८	१२।५८	१२।४६	०५।२०	२।२७	२।५८	२।५७	६।२३	१।२२	९।०८	१६।०७	१२।०७	१।२८
२९	१३।०९		०५।०२	२।३६	२।५०	३।०९	६।२२	१।०४	९।२८	१६।१२	११।४६	१।५८
३०	१३।२०		०४।४४	२।४४	२।४२	३।२१	६।२०	०।४६	९।४७	१६।१६	११।२५	२।२७
३१	१३।२९		०४।२५		२।३४		६।१८	०।२८		१६।१९		२।५६
	+	+	+	-	-	+	+	+	-	-	-	+

उक्त समय किशनगढ़(राज.) में क्या लग्न होगी? मथुराके इष्ट साम्पा.३ घं. १५मि. ४६ से. में किशनगढ़ का देशान्तर सं. ऋण ११मि. १६से. घटाया तो ३घं. ४ मि. ३० से. यह किशनगढ़का इष्ट साम्पातिककाल दिन के १४ घं. ५८मि. का बना। इष्ट साम्पा. ३घं.४मि.३०से. को देश-विदेश की लग्न ज्ञान सारिणी में देखा तो कर्क लग्नके सामने २८ अंश के नीचे ३।४।२५ लिखा मिला। इससे यह सिद्ध हुआ कि उक्त समय किशनगढ मे कर्कलग्न २८ अंश के आसन्न वर्तमान है।

एक ही समय पर किशनगढ़में कर्कलग्न २८ अंश पर उदय है। मथुरामें सिंह लग्नका एक अंशभी नहीं बीता है तो फार्मोसा में उक्त समयकन्यालग्नके ९ अंश भुक्त हो चुके हैं।

अल्प समय श्रममें साम्पातिककालके द्वारा आप चाहे जिस नगर अथवा अन्य किसी दूसरे देशकी लग्न निकाल सकते हैं। इतनी सरलसुबोध देश-विदेशकी लग्न ज्ञान सारिणी दिल्लीसे प्रकाशित श्रीराजधानी पंचांग में सर्वप्रथम सं. २०४२ में हमारे पिताजी ने प्रकाशित की थी। आशा है पाठक लाभान्वित होंगे।

षट्वर्ग विचार और कुण्डली रचना

जन्मकुण्डलीका विस्तारसहित फल जानने के लिए तनादि द्वादश भाव स्पष्ट करके चलित कुण्डली बनाई जाती है तदनुसार भावविहित ग्रह योगायोगका अति सूक्ष्म विचार किया जाता है। इसके बाद फलित की अधिक गहराई में जानेके लिए होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवांश, द्वादशांश और त्रिशांश लग्नानुसार-पृथक् पृथक् छह कुण्डलियाँ बनाकर जातक के जीवन में होने वाली शुभाशुभ घटनाओं का सहज ही ज्ञान प्राप्त कर लिया जाता है। आगे षट्वर्ग ज्ञानार्थचक्र दिया गया है जिसकी सहायता से घण्टों के काम को मिनटोंमें कर सकते हैं। पाठकोंकी विशेष जानकारी हेतु होरा आदि का उल्लेख करते है।

'राशेरर्घभवेद्धोरा' प्रत्येक राशि ३० अंशकी होती है। राशिके आधे भागको होरा कहते हैं। सम राशियाँ वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन में पहले १५ अंश तक चन्द्रमाका होरा होता है। आगे १६ से ३० तक सूर्यका होरा जानें। विषम राशियां मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भमें प्रथम १५ अंश तक सूर्यका, उपरान्त १६ से ३० तक चन्द्रमाकी होरा होती है।

द्रेष्काणज्ञानम्- प्रत्येक राशि (लग्न) में तीन द्रेष्काण होते है, अर्थात् १० अंशका द्रेष्काण होता है। पहला द्रेष्काण अपनी ही राशिके स्वामीका, दूसरा द्रेष्काण उससे पांचवीं राशिके स्वामीका तथा तीसरा द्रेष्काण उससे नवम राशिके स्वामीका होता है, अर्थात् मेष लग्न में १० अंश तक मंगल का, ११ से २० तक सिंहके स्वामी सूर्य का, इसी प्रकार २१ से ३० तक मेषसे नवींराशि धनुके स्वामी गुरु का द्रेष्काण मान्य होता है। यथा-

द्रेष्काण आद्योलग्नस्य द्वितीयः पंचमस्य च।
द्रेष्काण तृतीयस्तु, लग्नान्नवमराशिपः॥

सप्तमांशज्ञानम्- लग्न(राशि) का सातवां भाग ४ अंश १७ कला सप्तमांश कहलाता है। समान रुपेण सातभाग करके विषम मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ राशियोंमें उन्हीं से गणना कर सप्तमांश लग्न स्वामी जानें। सम राशियाँ वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीनमें सप्तम राशि से गिनती करके सप्तमांशराशि एवं उसके स्वामी का ज्ञान प्राप्त कर लिया जाता है।

नवमांशज्ञानम्- राशि(लग्न) के नवमें भाग ३ अंश २० कला को नवांश कहते हैं। अतः नव खण्ड कर नवांशकी गणना चर राशियों में उन्हीं राशियोंसे करें, स्थिर राशियोंमें नवमी राशि से गिनती करें और द्विस्वभाव राशियोंमें पांचवीं राशिसे गिनती करके नवांश जान लिया जाता है। यथा-

नवांशकाश्चरे तस्मात्स्थिरे लग्नवमादितः।
उभये तत्पंच मादेरितिबौध्यं विचक्षणैः॥

द्वादशांशज्ञानम्- प्रत्येक राशि(लग्न) के बारह समान भाग करने पर २ अंश ३० कलाका एक द्वादशांश होता है। जिस लग्नमें द्वादशांश देखना हो उसी लग्नसे गिनती करके द्वादशांश जान लें जैसे- मेषमें २ अंश ३० कला तक मेषका द्वादशांश होता है। आगे ५ अंश तक वृष का होगा। द्वादशांशपति राशिके स्वामी ही जानें।

त्रिशांशज्ञानम्- मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ विषम राशि(लग्नों) में पहले ५ अंशतक मेषका त्रिशांश होता है ऐसेही आगे १० अंशतक कुम्भ का, आगे १८ तक धनुका, २५ अंश तक मिथुनका और आगे २६ से ३० अंश तक तुलाका त्रिशांश होता है।

वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन समलग्नों में पहले ५ अंश तक वृषका त्रिशांश होता है। आगे १२ अंशतक कन्या का, आगे २० अंश तक मीनका, आगे २५ अंश तक मकर का और आगे २६ से ३० अंश तक वृश्चिक का त्रिशांश माना जाता है।

घण्टोंके कामको मिनटोंमें कैसे करें?

होरादिषट्वर्ग ज्ञानार्थचक्र पर ध्यान दीजिये- इष्ट लग्न के सामने लग्न भुक्ताशोंके नीचे क्रमशः होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवांश, द्वादशांश और त्रिशांश लग्नांक जो मिलें उन्हें होरादि कुण्डलियोंके प्रथम कोष्टकों में रखकर कुण्डलियाँ बनालें। इस तरह मिनटोंमें छहों कुण्डलियाँ बनेगीं।

उदाहरण- १ जनवरी सन् १९९३ ई. पूर्ववत् उदाहरण में वृषलग्न शून्य अशांदि १।०।६।५८ पर स्पष्ट है। देखिये षट्वर्गसारिणीमें वृष लग्न ० अंशके नीचे क्रमशः ४।२।८।१०।२।२ अंक लिखे मिले। अतः यही होरादि कुण्डलियोंके लग्न सिद्धि हुए अर्थात् होरा में कर्क, द्रेष्काणमें वृष, सप्तमांशमें वृश्चिक, नवांशमें मकर, द्वादशांशमें वृष और त्रिशांश में भी वृष ही है। होरा में ४ कर्कलग्न,द्रेष्काण कुण्डलीमें २ वृष लग्नांक प्रथमभावमें रखा जायेगा, इसी प्रकार आगे जानें।

होरादि कुण्डलियोंमें ग्रह रखनेकी विधि- पूर्ववत् उदाहरणमें १ जनवरी १९९३ अपरान्ह घं.२ मि.२३ बजे रवि स्पष्ट ८।१७।११।५३ धनु राशि के १७ अंश ३० कलाके नीचे षट्वर्गचक्रमें ४।१।६।६।३।९ अंक लिखें हैं। होरादि कुण्डलियोंमें सूर्य इन्हीं लग्नांकों में लगाया जायेगा। अर्थात् होरामें सूर्य कर्कमें, द्रेष्कांण व सप्तमांश में, मेष में तथा नवांश कुण्डलीमें सूर्य कन्यामें द्वादशांशमें मिथुनमें और त्रिशांश कुण्डली में सूर्य धनुमें लगाया जायेगा। इसी प्रकार जन्मकालीन स्पष्टग्रहोंका षट्वर्गीकरण करके होरादि कुण्डलियोंमें लगादें, किस कुण्डलीसे किस विषयका ज्ञान किया जाता है उसेआगे यहां लिखते हैं। विशेष जातक ग्रन्थोंमें देखें।

❀ होरादि कुण्डली फलम् ❀

होराकुण्डली- होरालग्न सिंहमें सूर्य स्थित हों तो जातक रजोगुणी, पुरुषार्थी एवं उच्चपदाभिलाषी होता है। साथमें गुरु मंगल आदि मित्र ग्रह हों तो शूरवीर, राजकाजमें भाग लेने वाला, सम्पत्तिवान, सुखी, सर्वमान्य, शीलसम्पन्न,बहुप्रसिद्ध नेतृत्वकर्त्ता होता है।

'होरायांवै सम्पाद्यैसुखंच' यदि चन्द्रराशि कर्क होरालग्नमें हो और उसमें चन्द्र स्थितहो तो जातक शान्तस्वभाव, मातृभक्त, वंश परम्पराका अनुसरण करने वाला, जनसम्पर्कके कामोंमें रुचि रखने वाला होता है। चन्द्रमाके साथ शुभग्रह हो तो साधु स्वभाव, शीलसम्पन्न, धार्मिकप्रवृत्ति,ऐ नैश्वर्य सम्पन्नसांसारिक सुखोंका भोग करनेवाला होताहै।

नोट- सूर्य अथवा चन्द्र एक दूसरेकी राशियोंमें पापग्रह युक्त अथवा दृष्ट हों तो प्रतिकूलफल होता है। सूर्यके साथ शनि, राहु व केतु या क्षीणचन्द्रमा हो तो जातक नीचप्रकृति वाला, मर्यादा रहित आचरण प्रिय निर्धन एवं दुःखी रहता है। चन्द्रके साथ पापग्रहोंका अशुभ योग बनने पर क्षीणकाय नीचमन अशान्त, माताके विरुद्ध आचरण करने वाला होता है। सूर्य चन्द्र तथा परस्पर शुभग्रह योग बनने पर जातक ज्ञानी, ध्यानी, शोधकर्ता, वैज्ञानिक या दार्शनिक बनताहै।

द्रेष्काणकुण्डली- से जातक से सहोदर(सगे) भाई बहनोंके सुख-दुःख का विचार किया जाता है। **द्रेष्काणेस्याद्भावजंभ्रातृसौख्यम्।** द्रेष्काण लग्न का स्वामी त्रक ६।८।१२ भावमें पाप दृष्ट अथवा युक्त पीड़ितहो और जन्मकुण्डलीके तीसरेभावका स्वामी ६।८।१२वें भावमे पड़ा हो तो जातकको भाई बहिनोंका सुख नहीं मिलता, अथवा वह उनसे दुःखी रहता है। द्रेष्काण लग्नाधिपति केन्द्रगत शुभ ग्रहोंके साथ एवं मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भाई भावजका पूर्ण प्यार मिलता है तथा सयुंक्त व्यवसायसे सौख्यसमृद्धि बढ़ती है।

स्यात्सप्तांशेसन्ततिःपुत्रपौत्री॥ सप्तमांशलग्न से सन्तानका विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्नका स्वामी पुरुष ग्रह हो तो जातकको पुत्र अधिक होते हैं। स्त्रीग्रह हो तो कन्या अधिक होती हैं। लग्नका स्वामी ६।८।१२वें भागमें हो तो सन्तान क्षीण हो जाती है। सप्तमांशलग्नका स्वामी पापपीड़ित निर्बल हो तो सन्तान नीचकर्म करने वाली होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी शुभग्रह से दृष्ट अथवा युक्त हो तो सन्तति शुभाचरण प्रिय होती है। सन्तानके विषयमें निर्णय लेने से पहले जन्मकुण्डली के पांचवेंभावका गहन अध्ययन करना चाहिए।

रितु शुक्र, रेतज मंगलको न देखें तथा मंगल शुक्रको न देखें तव जातकको बहु विवाह करने पर भी सन्तान नहीं होती है। सप्तमांश चक्र तथा जन्मांगचक्रमें मंगल+शुक्र का संयुक्त योग न हो अथवा परस्पर किसी प्रकार का सम्बन्ध भी न हो तो जातक सन्तान हीन होता है। यह योग स्वयं परीक्षित है।

विशेषलक्षण- शुक्र, चन्द्र, मंगल तीनोंग्रह द्विस्वभाव राशिमें हों तो आयुके पूर्वार्द्धमें सन्तान होती है। यहि तीनोंग्रह धनु राशिमें रहे तो सन्तानका अभाव सा रहता है। लग्न शुभग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो तो बाल्यावस्थामें पुत्र सुख होता है। ऐसे ही दशमसे यौवनावस्था में, चतुर्थ से वृद्धावस्थामें और सप्तम स्थानसे जीवनान्तमें जानना चाहिए। सप्तमांश लग्नपति लग्नसे ६।८।१२वें स्थानमें पापग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होता है। तीसरे भावमें रवि, गुरु अथवा मंगल पड़ा हों तो जातकको सत्यवक्ता, मनोवांछित धन प्राप्त करने वाला बना देते हैं।

नवांशकुण्डली- से घर गृहस्थमें होने वाले सुख-दुःख का विचार किया जाता है यथा- **'नूनंनवांशेतुकलत्रसौख्यम्'** नवांश लग्नेश मंगल हो तो जातककी स्त्री क्रूर, कुलटा, लड़ाकू होती है। सूर्यहो तो पतिव्रता, तेज तरार होती है। चन्द्रमाहो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण तथा मिलनसार प्रकृति की होती है। बुध नवांश पति होने से स्त्री कला प्रवीण, सर्वांग सुन्दर, चतुर ज्ञानवान होती है। ऐसे ही शुक्र से श्रृंगारप्रिय, विलासी और शनि हो तो क्रूर स्वभाव अप्रिय दर्शन वाली, कुलविरुद्ध आचरणप्रिय नीचजातमन होती है। राहु व केतु के प्रभावमें नवांशलग्न हो तो दुराचारिणी जाननी चाहिए।

नवांशलग्नका स्वामी स्वराशिस्थ शुभ ग्रह केन्द्र व नव-पंचम में हो तो जातक दाम्पत्यजीवनका पूर्णसुख भोगता है। भाग्येशके साथ २।११वें भावमें नवांशलग्न का स्वामी उच्च का हो तो जातकको स्त्रियोंसे तथा सुसराल पक्ष से विशेष जायदाद आदिका सुख मिलता है। नवांश पति पापयुक्त व दृष्ट ६।८।१२वें भावमें हो तो स्त्रीका सुख नहीं मिलता अपितु पापग्रह संख्यातुल्य स्त्रियोंका नाश होता है।

नोट- स्त्री-पुरुष सम्बन्धी भावोंका फल जातक ग्रन्थोंमें तुल्य ही कहा है, परन्तु फिर भी स्त्रीके सौभाग्य (सुहाग, पतिके दीर्घजीवन, अच्छे-बुरे आचरण) का फल सप्तमभावसे और शरीरकी सुन्दरता आदि आकृतिका फल चन्द्र तथा लग्नसे विचार करना चाहिए, अर्थात् चन्द्र तथा लग्न सौम्य ग्रहोंसे युक्त हो तो सर्वदा सौभाग्यवती रहे। अतः वैधव्य न भोगनापड़े व पापग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होने पर दुर्भगा होवे यथा-

स्त्रीपुंशोर्जन्मफलं तुल्यं, किन्त्वत्र जन्मलग्नस्थ्।
तद्बलयोगाद्वपुराकृतिश्च, सौभाग्यमस्तमये।।

जन्मराशि(लग्न) के प्रथम नवांशमें जिसका जन्म हो वह चुगलखोर, चंचल, दुष्ट, धी पापकर्मरत, कुसंगप्रिय दूसरोंके शोकमें व्याकुल चोर होता है। इसी प्रकार द्वितीयनवांशमें जन्म होने पर भोगोंको भोगने वाला, रण विक्रमी, नाच गायन प्रिय तथा विषयासक्त बनता है। तृतीय नवांशकमें जन्म होनेपर जातक धर्मज्ञ, व्याधियोंसे युक्त, सारयुक्त बातोंको जाननेवाला, सर्वज्ञ देवभक्त होता है।

चतुर्थ नवांशमें जन्म होनेपर दीक्षायुक्तमन्त्र ग्रहण करने वाला, गुरुभक्त, विधिके विधानानुरुप वस्तुओंको प्राप्त करता है। पंचम नवांश में जन्मेजातक विलक्षण, विख्यात, दीर्घायु तथा बहुत से पुत्र पौत्रों वाले होते हैं। इसी प्रकार छठेमें जन्म होने पर अनावश्यक प्रेमी, पुरुषत्वहीन, शुभलक्षण रहित, बाचाल, दरिद्रतायुक्तअ प्रभावी होता है। सप्तममें उत्पन्न व्यक्ति पराक्रमी सुबुद्धिमान परमोत्साही तथा सन्तोषी होते हैं। अष्टम नवांशमें जन्म होनेपर कृतघ्नी, मदमत्त, क्रूर, भोगी, बहुत सी सन्तानोंसे युक्त एवं शुभफल के समयका त्याग करने वाला होता है। जिस जातक का जन्म विहित लग्नके अन्तिम नवांशमें होता है वह कला प्रवीन, चतुर, अपने कार्यमें दक्ष, संयमी, प्रतापी एवं नौकरचाकरोंसे युक्त होता है। यह वर्गोत्तम (लग्नारुप) नवांशको छोड़कर फल कहा-श्रीमान् भूदेव देखें जातक ग्रन्थोंमें।

द्वादशांशकुण्डली- से जातक के माता-पिताके विषयमें विचार किया जाता है यथा **स्याद्द्वादशांशेपितृमातृसौख्यम्।** द्वादशांश लग्नका स्वामी शुभग्रह हो तो माता-पिता शुभाचरण युक्त, पापग्रह हो तो पापाचरण प्रिय जानने चाहिए। लग्नका स्वामी पुरुषग्रह स्वगृही, मित्रक्षेत्री अथवा उच्च राशिस्थ(द्वादशांश कुण्डलीके) १।४।५।७।९।१०वें स्थानमें पड़ा हो तो पिताका पूर्णसुख और प्रतिकूल होने पर सुख न के बराबर मिलता है। द्वादशांश लग्नाधिपति स्त्री कारक ग्रह सौम्यहो और अपनी राशिका, मित्रराशि या उच्चराशिका होकर १।४।५।७।९।१०वें भावोंमें से किसीमें बैठा हो तो जातक को माताका पूर्णसुख होता है। यदि पाप पीड़ित पापदृष्ट ६।८।१२ त्रक भावोंमें पड़ जाय तो माता-पिता का सुख नही होता,युक्तियुक्त विचारकर फल कहना चाहिए।

'त्रिंशांशकेऽरिष्टफलंविचिन्त्यम्' त्रिंशांशकुण्डलीसे जीवनमें होने वाली शुभाशुभ घटनाओंका विचार किया जाता है। त्रिंशांश लग्नका स्वामी पापग्रहोंके साथ ६।८।१२वें भावमें हो तो जातकका जीवनान्त अथवा दुर्घटना ग्रहानुकूल वस्तुविशेषके सम्पर्कसे होता है। यथा-सूर्य के साथ होने से उच्चस्थानसे गिरकर,चन्द्र हो तो जलमें, मंगलहो तो अस्त्र-शस्त्र से, बुध हो तो व्यापारिक झन्झट, गुरु हो तो वायु विकार, आंधीतूफान तथा धार्मिकविवाद, शुक्रके संसर्गसे विलासिता (अनावश्यक प्रेम) शनि हो तो वाहन एवं राहु केतु का सम्पर्क होने पर म्लेच्छकृत्य बुरे कर्मफल दुर्घटनादि से होती है।

अरिष्ट कब और क्यों?

ज्योतिषके माध्यमसे अरिष्ट कब होगा तो क्यों? जाननेके लिए फल कथन करने वालोंको विंशोत्तरीदशा अन्तरदशा तथा प्रत्यन्तर दशाओं का भली प्रकार संशोधन कर लेना चाहिए। फलितके सभी नियमोंका सम्यक् विचारकर फलकथन करनेवाले उपहासके पात्र नहीं बनते। पंचांग भी सूक्ष्म दृश्य गणितसे बना प्रयोग में लेना चाहिए। जैसे श्री ब्रजभूमि पंचांग व दिल्लीसे प्रकाशित श्रीराजधानी पंचांग जिनका गणित सूक्ष्मातिसूक्ष्म दृग्गतुल्य है।

क्रूरग्रहदशायां च क्रूरस्यानतर्दशा यदा।
शत्रुयोगे भवेन्मृत्युर्मित्रयोगे च संशयः।।

क्रूर ग्रहोंकी दशामें अगर क्रूर ग्रहोंका ही अन्तर आ जाय और उसमें भी शत्रुग्रह का योग हो तो मृत्यु तथा मित्र योग हो तो भी मरण तुल्य शारीरिककष्ट निसन्देह जानना चाहिए।

अन्य अरिष्ट योग-

क्रूरराशौ स्थितः पापः षष्ठे वा निधनेऽपि वा।
सितेन रविणा दृष्टः स्वपाके मृत्युदो ग्रहः।।

क्रूर ग्रहकी राशिका होता हुआ पापग्रह छटे या आठवें स्थानमें स्थित होकर शुक्र या सूर्यसे दृष्ट होतोवह अपनी दशामें मृत्युकारक होता है।

लग्नस्याधिपतेः शत्रुर्लग्नष्यान्तर्दशागमः।
करोत्यकस्मान्मरणं सत्याचार्येणभाषितम्।।

लग्नाधिपतिका शत्रु लग्नमें बैठा हो और उसीकी अन्तर्दशा आ जाये तो अकस्मात मृत्युदायक होता है। यह सत्याचार्यजी का वाक्य है।

मंगलस्य दशायां च शनेरन्तर्दशा यदा।
म्रियतेऽत्र चिरंजीवी का कथा स्वल्प जीविनम्।।

मंगलके दशाकालमें यदि शनिका अन्तर आ जाय तो दीर्घायु वाला भी मर जाय, इसमें स्वल्पायुवालोंका हो तो कहना ही क्या है।

अथ दशारिष्ट भाग:

दशायां बलवान् खेटः शुभैर्वासनिरीक्षितः।
सौम्याधिमित्रवर्गस्थोऽरिष्टभंगो भवेत्तदा।।

जो दशा वर्तमानहो और उसमें बलवानग्रह हो और वह शुभग्रहावलोकित हो, अथवा सौम्यग्रहके अधिमित्रके वर्गमें तो उसकी दशा में अरिष्ट का भंग होता है।

मूलं दशाधिनाथस्य वाचस्यपतिदशा यदा।
वली शुभोऽथविज्ञेयोऽरिष्टभंगस्तदा भवेत्।।

मूल दशाधिपतिकी दशामें अगर बृहस्पतिकी दशाहो तो उस शुभ ग्रह की दशा, होनेके कारण वह दशा बलवन्ती होती है, इस कारण उसमें अरिष्ट नाश हो जाता है।

शुभग्रहो ग्रहैर्योगे विजयीजायते सदा।
दशायां न भवेत्कष्टं स्वोच्चादिषु च संस्थिता।।

शुभग्रह अन्यग्रहोंके योग होने पर भी विजयी माना जाता है, और वही शुभग्रह स्वोच्चराशि स्थित हो तो भी वैसा ही है। अतः उसकी दशा में जातकको कष्ट नहीं होता है।

अथ होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, द्वादशांश और त्रिशांश (षट्वर्ग) ज्ञानार्थ सारणी

राशि	अंश→	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	विकला	०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
मेष १	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रेष्का	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सप्त	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	नव	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वाद	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
वृष २	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रेष्का	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सप्त	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	नव	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वांद	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
मिथुन ३	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रेष्का	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सप्त	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	नव	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वाद	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
कर्क ४	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रेष्का	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सप्त	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	नव	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वाद	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
सिंह ५	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रेष्का	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सप्त	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	नव	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वाद	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
कन्या ६	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रेष्का	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सप्त	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	नव	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वाद	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रिशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	अंश→	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	कला	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	विकला	०	०	८	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
तुला ७	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रेष्का	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	सप्त	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	नव	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	५	२	३	३
	द्वाद	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	२	५	५	६
	त्रिशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
वृश्चिक ८	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रेष्का	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	सप्त	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	नव	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वांद	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रिशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
धनु ९	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रेष्का	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	सप्त	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	नव	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वाद	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रिशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
मकर १०	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रेष्का	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	सप्त	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	नव	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वाद	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रिशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
कुम्भ ११	होरा	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रेष्का	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	सप्त	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	नव	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वाद	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रिशा	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
मीन १२	होरा	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रेष्का	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	सप्त	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	नव	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वाद	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रिशा	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

❀ अथ सूर्यादि ग्रहों की विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा जानने का चक्र ❀

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७			
कृतिका उ.फा.उ.षा. अन्तरदशा				रोहिणी हस्त श्रवण अन्तरदशा				मृग.चित्रा धनिष्ठा अन्तरदशा			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं.	०	१०	०	म	०	४	२७
चं	०	६	०	म	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	१	०	०	र	०	६	०	चं.	०	७	०

राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९			
आर्द्रा.स्वाती शतभिषा अन्तरदशा				पुन.विशा. पूभा. अन्तरदशा				पुष्य.अनुराधा उभा अन्तरदशा			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	च	१	७	०
र	०	१०	२४	च	१	४	०	म	१	१	९
च	१	६	०	म	०	११	६	रा	२	१०	६
म	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
आश्ले.ज्ये. रेवती अन्तरदशा				मघा मूल अश्वनी अन्तरदशा				पूफा. पूषा. भरणी अन्तरदशा			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
के	०	११	२७	शुं	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	१०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
च	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
म	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा-साधन-सारणी

(जन्म चन्द्र-राश्यंश से विंशोत्तरीदशा भुक्तवर्ष, मास, दिन बोधक सारणी)

अंश	मेष, सिंह व धनु राशिस्थ चन्द्र				वृष कन्या व मकर राशिस्थ चन्द्र				मिथुन तुला व कुम्भ राशिस्थ चन्द्र				कर्क, वृश्चिक व मीन राशिस्थ चन्द्र				अंश
	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	
१	के.	०	६	९	सू.	१	११	१२	मं.	४	०	९	बृ.	१३	२	१२	१
२		१	०	१८		२	४	२४		४	६	१८		१४	४	२४	२
३		१	६	२७		२	१०	६		५	०	२७		१५	७	६	३
४		२	१	६		३	३	१८		५	७	६	श.	०	११	१२	४
५		२	७	१५		३	९	०		६	१	१५		२	४	१५	५
६		३	१	२४		४	२	१२		६	७	२४		३	९	१८	६
७		३	८	३		४	७	२४	रा.	०	५	१२		५	२	२१	७
८		४	२	१२		५	१	६		१	९	१८		६	७	२४	८
९		४	८	२१		५	६	१८		३	१	२४		८	०	२७	९
१०		५	३	०		६	०	०		४	६	०		९	६	०	१०
११		५	९	९	चं.	०	९	०		५	१०	६		१०	११	३	११
१२		६	३	१८		१	६	०		७	२	१२		१२	४	६	१२
१३		६	९	२७		२	३	०		८	६	१८		१३	९	९	१३
१४	शु.	१	०	०		३	०	०		९	१०	२४		१५	२	१२	१४
१५		२	६	०		३	९	०		११	३	०		१६	७	१५	१५
१६		४	०	०		४	६	०		१२	७	६		१८	०	१८	१६
१७		५	६	०		५	३	०		१३	११	१२	बु.	०	५	३	१७
१८		७	०	०		६	०	०		१५	३	१८		१	८	१२	१८
१९		८	६	०		६	९	०		१६	७	२४		२	११	२१	१९
२०		१०	०	०		७	६	०		१८	०	०		४	३	०	२०
२१		११	६	०		८	३	०	बृ.	१	२	१२		५	६	९	२१
२२		१३	०	०		९	०	०		२	४	२४		६	९	१८	२२
२३		१४	६	०		९	९	०		३	७	६		८	०	२७	२३
२४		१६	०	०	मं.	०	४	६		४	९	१८		९	४	६	२४
२५		१७	६	०		०	१०	१५		६	०	०		१०	७	१५	२५
२६		१९	०	०		१	४	२४		७	२	१२		११	१०	२४	२६
२७	सू.	०	१	२४		१	११	३		८	४	२४		१३	२	३	२७
२८		०	७	६		२	५	१२		९	७	६		१४	५	१२	२८
२९		१	०	१८		२	११	२१		१०	९	१८		१५	८	२१	२९
३०		१	६	०		३	६	०		१२	०	०		१७	०	०	३०

॥ अथ योगिनी दशाऽन्तर्दशा ज्ञानाय चक्रमिदम ॥

मंगला व.१ श्र.आर्द्रा चित्रा			पिंगला व.२ ध.पुनर्वसु स्वाती			धान्या व.३ श. पुष्य विशा.			भ्रामरी व.४ अश्वि.आश्ले. अनु.पूभा.			भद्रिका व.५ भर.मघा. ज्ये.उ.भा.			उल्का व.६ कृ.पूफा. मूल रे.			सिद्धा व.७ रो.उफा. पूषा.			संकटा व.८ मृग.हस्त. उषा.		
द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.	द.	मा.	दि.
म.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	स.	१८	२०	म.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	स.	१६	०	म.	२	१०	पि.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	स.	१३	१०	म.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	स.	१०	२०	म.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	स.	८	०	म.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	स.	५	१०	म.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	म.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

विंशोत्तरी दशा परिलेख-

महर्षिपरासरजीके मतसे पुनर्जन्मार्जित शुभाशुभकर्मानुसार प्राणी अच्छे व बुरे ग्रहोंकीविंशोत्तरी महादशामें जन्म लेता है। उपरोक्त चक्रमें कृतिकादि नक्षत्रानुसार सूर्य-चन्द्र आदि ग्रहोंकी महादशायान्तर्दशा का विवरण दिया गया है। किसीका जन्म कृ.उफा. या उषा. में हुआ है तो उसका जन्म सूर्यकी महादशामें हुआ है ऐसा जानें। अन्य नक्षत्रोंके विषयमें इसी प्रकार समझना चाहिए। कृतिकादि २७ नक्षत्रोंको तीन आवृत्तियों में विभाजित करके विंशोत्तरी दशाओं का चयन(आ.चं.भौ.रा.जी.श.बु.के.शु.) ग्रहानुसार किया गया है।यानी उस समय कुल १२० वर्ष आयु मानी गई थी।

भुक्तभोग्य जाननेकी विधि- जन्म नक्षत्रके कुल घट्यादि मानको भभोग(सर्वक्ष:) कहतेहै और जन्म समय तक नक्षत्रके बीते हुए घट्यादि मान को भयात् (गतर्क्ष:) कहते है। भभोग और भयात् के पृथक् पृथक् पल बना लें। भयात् पलोंको दशाके वर्षों से गुणाकर भभोगके सर्वपलोंसे भाग दें, लब्धांक वर्ष होंगे। शेषांशको १२ से गुणाकर दुबारा भभोग पलोंसे भाग दें, लब्ध फल मास व्याप्त होंगे। शेषांकको पुनः ३० से गुणाकर भभोगके पलोंसे भाग करने पर लब्धांक दिन होंगे। इसी प्रकार आगे ६० से गुणाकर पूर्ववत् क्रिया करनेसे घटी-पल आ जाते है। जोकि दशाके भुक्त वर्षादि होते है जिन्हें दशाके कुलमान में से घटाने पर शेष दशाके योग्य वर्षादि निकलते है। नोट- इसी प्रकार योगिनी दशाकाभुक्त भोग्य निकालें। भयात् भभोग बनाने कीविधि नामकरण के सन्दर्भ में लिखी है।

योगिनी दशा विवरण- मंगलादि योगिनी दशाओं के क्रमशः स्वामी चन्द्र, सूर्य, गुरु, भौम, बुध शनि और शुक्र होते है। संकटा दशा के पूर्वार्ध १ से ४ वर्ष तक राहु और उत्तरार्ध ५ से ८ वर्ष तक केतु स्वामी होता है। शुभदशाएं मंगला,धान्या,भद्रिका व सिद्धा अशुभ दशाएं पिंगला,भ्रामरी,उल्का व संकटा जाननी चाहिए।

विंशोत्तरी दशा भुक्त भोग्य ज्ञानम्- १ अप्रैल सन् १९९३ ई. प्रातः घं. ५मि.३०बजे राश्यादि स्पष्ट चन्द्र २।२७।५४।४५ है तो उपरोक्त सारिणी में देखिये पहले मिथुनराशि २७ अंश के सामने गुरु दशाके भुक्त वर्ष ८ मास ४ दिन २४ मिले जिनमें अग्रिम सारिणी से ५४ कला का मान १२ मास २८ दिन ४८ घटी और ४५ विकलाका मान ५ दिन २४ घटी ०० पल ग्रहण कर जोडने से कुल योग भुक्त वर्षादि ९।५।२८।१२ हुए, जिन्हें गुरुदशाके कुल वर्ष १६में से घटानेपर भोग्य वर्षादि ६।६।१।४८रहे।(ज्योतिष रहस्य से साभार)

क्र.	केतु व मंगलदशा वर्ष ७						शुक्र दशा वर्ष २०				सूर्य दशा वर्ष ६						चन्द्र दशा वर्ष १०					
	कला			विकला			कला		विकला		कला			विकला			कला			विकला		
	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	पल	मास	दिन	दिन	घटी	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	पल	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	पल
१	०	३	९	०	३	९	०	९	०	९	०	२	४२	०	२	४२	०	४	३०	०	४	३०
२	०	६	१८	०	६	१८	०	१८	०	१८	०	५	२४	०	५	२४	०	९	०	०	९	०
३	०	९	२७	०	९	२७	०	२७	०	२७	०	८	६	०	८	६	०	१३	३०	०	१३	३०
४	०	१२	३६	०	१२	३६	१	६	०	३६	०	१०	४८	०	१०	४८	०	१८	०	०	१८	०
५	०	१५	४५	०	१५	४५	१	१५	०	४५	०	१३	३०	०	१३	३०	०	२२	३०	०	२२	३०
६	०	१८	५४	०	१८	५४	१	२४	०	५४	०	१६	१२	०	१६	१२	०	२७	०	०	२७	०
७	०	२२	३	०	२२	३	२	३	१	३	०	१८	५४	०	१८	५४	१	१	३०	०	३१	३०
८	०	२५	१२	०	२५	१२	२	१२	१	१२	०	२१	३६	०	२१	३६	१	६	०	०	३६	०
९	०	२८	२१	०	२८	२१	२	२१	१	२१	०	२४	१८	०	२४	१८	१	१०	३०	०	४०	३०
१०	१	१	३०	०	३१	३०	३	०	१	३०	०	२७	०	०	२७	०	१	१५	०	०	४५	०
११	१	४	३९	०	३४	३९	३	९	१	३९	०	२९	४२	०	२९	४२	१	१९	३०	०	४९	३०
१२	१	७	४८	०	३७	४८	३	१८	१	४८	१	२	२४	०	३२	२४	१	२४	०	०	५४	०
१३	१	१०	५७	०	४०	५७	३	२७	१	५७	१	५	६	०	३५	६	१	२८	३०	०	५८	३०
१४	१	१४	६	०	४४	६	४	६	२	६	१	७	४८	०	३७	४८	२	३	०	१	३	०
१५	१	१७	१५	०	४७	१५	४	१५	२	१५	१	१०	३०	०	४०	३०	२	७	३०	१	७	३०
१६	१	२०	२४	०	५०	२४	४	२४	२	२४	१	१३	१२	०	४३	१२	२	१२	०	१	१२	०
१७	१	२३	३३	०	५३	३३	५	३	२	३३	१	१५	५४	०	४५	५४	२	१६	३०	१	१६	३०
१८	१	२६	४२	०	५६	४२	५	१२	२	४२	१	१८	३६	०	४८	३६	२	२१	०	१	२१	०
१९	१	२९	५१	०	५९	५१	५	२१	२	५१	१	२१	१८	०	५१	१८	२	२५	३०	१	२५	३०
२०	२	३	०	१	३	०	६	०	३	०	१	२४	०	०	५४	०	३	०	०	१	३०	०
२१	२	६	९	१	६	९	६	९	३	९	१	२६	४२	०	५६	४२	३	४	३०	१	३४	३०
२२	२	९	१८	१	९	१८	६	१८	३	१८	१	२९	२४	०	५९	२४	३	९	०	१	३९	०
२३	२	१२	२७	१	१२	२७	६	२७	३	२७	२	२	६	१	२	६	३	१३	३०	१	४३	३०
२४	२	१५	३६	१	१५	३६	७	६	३	३६	२	४	४८	१	४	४८	३	१८	०	१	४८	०
२५	२	१८	४५	१	१८	४५	७	१५	३	४५	२	७	३०	१	७	३०	३	२२	३०	१	५२	३०
२६	२	२१	५४	१	२१	५४	७	२४	३	५४	२	१०	१२	१	१०	१२	३	२७	०	१	५७	०
२७	२	२५	३	१	२५	३	८	३	४	३	२	१२	५४	१	१२	५४	४	१	३०	२	१	३०
२८	२	२८	१२	१	२८	१२	८	१२	४	१२	२	१५	३६	१	१५	३६	४	६	०	२	६	०
२९	३	१	२१	१	३१	२१	८	२१	४	२१	२	१८	१८	१	१८	१८	४	१०	३०	२	१०	३०
३०	३	४	३०	१	३४	३०	९	०	४	३०	२	२१	०	१	२१	०	४	१५	०	२	१५	०
३१	३	७	३९	१	३७	३९	९	९	४	३९	२	२३	४२	१	२३	४२	४	१९	३०	२	१९	३०
३२	३	१०	४८	१	४०	४८	९	१८	४	४८	२	२६	२४	१	२६	२४	४	२४	०	२	२४	०
३३	३	१३	५७	१	४३	५७	९	२७	४	५७	२	२९	६	१	२९	६	४	२८	३०	२	२८	३०
३४	३	१७	६	१	४७	६	१०	६	५	६	३	१	४८	१	३१	४८	५	३	०	२	३३	०
३५	३	२०	१५	१	५०	१५	१०	१५	५	१५	३	४	३०	१	३४	३०	५	७	३०	२	३७	३०
३६	३	२३	२४	१	५३	२४	१०	२४	५	२४	३	७	१२	१	३७	१२	५	१२	०	२	४२	०
३७	३	२६	३३	१	५६	३३	११	३	५	३३	३	९	५४	१	३९	५४	५	१६	३०	२	४६	३०
३८	३	२९	४२	१	५९	४२	११	१२	५	४२	३	१२	३६	१	४२	३६	५	२१	०	२	५१	०
३९	४	२	५१	२	२	५१	११	२१	५	५१	३	१५	१८	१	४५	१८	५	२५	३०	२	५५	३०
४०	४	६	०	२	६	०	१२	०	६	०	३	१८	०	१	४८	०	६	०	०	३	०	०
४१	४	९	९	२	९	९	१२	९	६	९	३	२०	४२	१	५०	४२	६	४	३०	३	४	३०
४२	४	१२	१८	२	१२	१८	१२	१८	६	१८	३	२३	२४	१	५३	२४	६	९	०	३	९	०
४३	४	१५	२७	२	१५	२७	१२	२७	६	२७	३	२६	६	१	५६	६	६	१३	३०	३	१३	३०
४४	४	१८	३६	२	१८	३६	१३	६	६	३६	३	२८	४८	१	५८	४८	६	१८	०	३	१८	०
४५	४	२१	४५	२	२१	४५	१३	१५	६	४५	४	१	३०	२	१	३०	६	२२	३०	३	२२	३०
४६	४	२४	५४	२	२४	५४	१३	२४	६	५४	४	४	१२	२	४	१२	६	२७	०	३	२७	०
४७	४	२८	३	२	२८	३	१४	३	७	३	४	६	५४	२	६	५४	७	१	३०	३	३१	३०
४८	५	१	१२	२	३१	१२	१४	१२	७	१२	४	९	३६	२	९	३६	७	६	०	३	३६	०
४९	५	४	२१	२	३४	२१	१४	२१	७	२१	४	१२	१८	२	१२	१८	७	१०	३०	३	४०	३०
५०	५	७	३०	२	३७	३०	१५	०	७	३०	४	१५	०	२	१५	०	७	१५	०	३	४५	०
५१	५	१०	३९	२	४०	३९	१५	९	७	३९	४	१७	४२	२	१७	४२	७	१९	३०	३	४९	३०
५२	५	१३	४८	२	४३	४८	१५	१८	७	४८	४	२०	२४	२	२०	२४	७	२४	०	३	५४	०
५३	५	१६	५७	२	४६	५७	१५	२७	७	५७	४	२३	६	२	२३	६	७	२८	३०	३	५८	३०
५४	५	२०	६	२	५०	६	१६	६	८	६	४	२५	४८	२	२५	४८	८	३	०	४	३	०
५५	५	२३	१५	२	५३	१५	१६	१५	८	१५	४	२८	३०	२	२८	३०	८	७	३०	४	७	३०
५६	५	२६	२४	२	५६	२४	१६	२४	८	२४	५	१	१२	२	३१	१२	८	१२	०	४	१२	०
५७	५	२९	३३	२	५९	३३	१७	३	८	३३	५	३	५४	२	३३	५४	८	१६	३०	४	१६	३०
५८	६	२	४२	३	२	४२	१७	१२	८	४२	५	६	३६	२	३६	३६	८	२१	०	४	२१	०
५९	६	५	५१	३	५	५१	१७	२१	८	५१	५	९	१८	२	३९	१८	८	२५	३०	४	२५	३०
६०	६	९	०	३	९	०	१८	०	९	०	५	१२	०	२	४२	०	९	०	०	४	३०	०

क्र.	राहु दशा वर्ष १८						गुरु दशा वर्ष १६						शनि दशा वर्ष १९						बुध दशा वर्ष १७					
	कला			विकला			कला			विकला			कला			विकला			कला			विकला		
	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	पल	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	पल	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	पल	मास	दिन	घटी	दिन	घटी	पल
१	०	८	६	०	८	६	०	७	१२	०	७	१२	०	८	३३	०	८	३३	०	७	३९	०	७	३९
२	०	१६	१२	०	१६	१२	०	१४	२४	०	१४	२४	०	१७	६	०	१७	६	०	१५	१८	०	१५	१८
३	०	२४	१८	०	२४	१८	०	२१	३६	०	२१	३६	०	२५	३९	०	२५	३९	०	२२	५७	०	२२	५७
४	१	२	२४	०	३२	२४	०	२८	४८	०	२८	४८	१	४	१२	०	३४	१२	१	०	३६	०	३०	३६
५	१	१०	३०	०	४०	३०	१	६	०	०	३६	०	१	१२	४५	०	४२	४५	१	८	१५	०	३८	१५
६	१	१८	३६	०	४८	३६	१	१३	१२	०	४३	१२	१	२१	१८	०	५१	१८	१	१५	५४	०	४५	५४
७	१	२६	४२	०	५६	४२	१	२०	२४	०	५०	२४	१	२९	५१	०	५९	५१	१	२३	३३	०	५३	३३
८	२	४	४८	१	४	४८	१	२७	३६	०	५७	३६	२	८	२४	१	८	२४	२	१	१२	१	१	१२
९	२	१२	५४	१	१२	५४	२	४	४८	१	४	४८	२	१६	५७	१	१६	५७	२	८	५१	१	८	५१
१०	२	२१	०	१	२१	०	२	१२	०	१	१२	०	२	२५	३०	१	२५	३०	२	१६	३०	१	१६	३०
११	२	२९	६	१	२९	६	२	१९	१२	१	१९	१२	३	४	३	१	३४	३	२	२४	९	१	२४	९
१२	३	७	१२	१	३७	१२	२	२६	२४	१	२६	२४	३	१२	३६	१	४२	३६	३	१	४८	१	३१	४८
१३	३	१५	१८	१	४५	१८	३	३	३६	१	३३	३६	३	२१	९	१	५१	९	३	९	२७	१	३९	२७
१४	३	२३	२४	१	५३	२४	३	१०	४८	१	४०	४८	३	२९	४२	१	५९	४२	३	१७	६	१	४७	६
१५	४	१	३०	२	१	३०	३	१८	०	१	४८	०	४	८	१५	२	८	१५	३	२४	४५	१	५४	४५
१६	४	९	३६	२	९	३६	३	२५	१२	१	५५	१२	४	१६	४८	२	१६	४८	४	२	२४	२	२	२४
१७	४	१७	४२	२	१७	४२	४	२	२४	२	२	२४	४	२५	२१	२	२५	२१	४	१०	३	२	१०	३
१८	४	२५	४८	२	२५	४८	४	९	३६	२	९	३६	५	३	५४	२	३३	५४	४	१७	४२	२	१७	४२
१९	५	३	५४	२	३३	५४	४	१६	४८	२	१६	४८	५	१२	२७	२	४२	२७	४	२५	२१	२	२५	२१
२०	५	१२	०	२	४२	०	४	२४	०	२	२४	०	५	२१	०	२	५१	०	५	३	०	२	३३	०
२१	५	२०	६	२	५०	६	५	१	१२	२	३१	१२	५	२९	३३	२	५९	३३	५	१०	३९	२	४०	३९
२२	५	२८	१२	२	५८	१२	५	८	२४	२	३८	२४	६	८	६	३	८	६	५	१८	१८	२	४८	१८
२३	६	६	१८	३	६	१८	५	१५	३६	२	४५	३६	६	१६	३९	३	१६	३९	५	२५	५७	२	५५	५७
२४	६	१४	२४	३	१४	२४	५	२२	४८	२	५२	४८	६	२५	१२	३	२५	१२	६	३	३६	३	३	३६
२५	६	२२	३०	३	२२	३०	६	०	०	३	०	०	७	३	४५	३	३३	४५	६	११	१५	३	११	१५
२६	७	०	३६	३	३०	३६	६	७	१२	३	७	१२	७	१२	१८	३	४२	१८	६	१८	५४	३	१८	५४
२७	७	८	४२	३	३८	४२	६	१४	२४	३	१४	२४	७	२०	५१	३	५०	५१	६	२६	३३	३	२६	३३
२८	७	१६	४८	३	४६	४८	६	२१	३६	३	२१	३६	७	२९	२४	३	५९	२४	७	४	१२	३	३४	१२
२९	७	२४	५४	३	५४	५४	६	२८	४८	३	२८	४८	८	७	५७	४	७	५७	७	११	५१	३	४१	५१
३०	८	३	०	४	३	०	७	६	०	३	३६	०	८	१६	३०	४	१६	३०	७	१९	३०	३	४९	३०
३१	८	११	६	४	११	६	७	१३	१२	३	४३	१२	८	२५	३	४	२५	३	७	२७	९	३	५७	९
३२	८	१९	१२	४	१९	१२	७	२०	२४	३	५०	२४	९	३	३६	४	३३	३६	८	४	४८	४	४	४८
३३	८	२७	१८	४	२७	१८	७	२७	३६	३	५७	३६	९	१२	९	४	४२	९	८	१२	२७	४	१२	२७
३४	९	५	२४	४	३५	२४	८	४	४८	४	४	४८	९	२०	४२	४	५०	४२	८	२०	६	४	२०	६
३५	९	१३	३०	४	४३	३०	८	१२	०	४	१२	०	९	२९	१५	४	५९	१५	८	२७	४५	४	२७	४५
३६	९	२१	३६	४	५१	३६	८	१९	१२	४	१९	१२	१०	७	४८	५	७	४८	९	५	२४	४	३५	२४
३७	९	२९	४२	४	५९	४२	८	२६	२४	४	२६	२४	१०	१६	२१	५	१६	२१	९	१३	३	४	४३	३
३८	१०	७	४८	५	७	४८	९	३	३६	४	३३	३६	१०	२४	५४	५	२४	५४	९	२०	४२	४	५०	४२
३९	१०	१५	५४	५	१५	५४	९	१०	४८	४	४०	४८	११	३	२७	५	३३	२७	९	२८	२१	४	५८	२१
४०	१०	२४	०	५	२४	०	९	१८	०	४	४८	०	११	१२	०	५	४२	०	१०	६	०	५	६	०
४१	११	२	६	५	३२	६	९	२५	१२	४	५५	१२	११	२०	३३	५	५०	३३	१०	१३	३९	५	१३	३९
४२	११	१०	१२	५	४०	१२	१०	२	२४	५	२	२४	११	२९	६	५	५९	६	१०	२१	१८	५	२१	१८
४३	११	१८	१८	५	४८	१८	१०	९	३६	५	९	३६	१२	७	३९	६	७	३९	१०	२८	५७	५	२८	५७
४४	११	२६	२४	५	५६	२४	१०	१६	४८	५	१६	४८	१२	१६	१२	६	१६	१२	११	६	३६	५	३६	३६
४५	१२	४	३०	६	४	३०	१०	२४	०	५	२४	०	१२	२४	४५	६	२४	४५	११	१४	१५	५	४४	१५
४६	१२	१२	३६	६	१२	३६	११	१	१२	५	३१	१२	१३	३	१८	६	३३	१८	११	२१	५४	५	५१	५४
४७	१२	२०	४२	६	२०	४२	११	८	२४	५	३८	२४	१३	११	५१	६	४१	५१	११	२९	३३	५	५९	३३
४८	१२	२८	४८	६	२८	४८	११	१५	३६	५	४५	३६	१३	२०	२४	६	५०	२४	१२	७	१२	६	७	१२
४९	१३	६	५४	६	३६	५४	११	२२	४८	५	५२	४८	१३	२८	५७	६	५८	५७	१२	१४	५१	६	१४	५१
५०	१३	१५	०	६	४५	०	१२	०	०	६	०	०	१४	७	३०	७	७	३०	१२	२२	३०	६	२२	३०
५१	१३	२३	६	६	५३	६	१२	७	१२	६	७	१२	१४	१६	३	७	१६	३	१३	०	९	६	३०	९
५२	१४	१	१२	७	१	१२	१२	१४	२४	६	१४	२४	१४	२४	३६	७	२४	३६	१३	७	४८	६	३७	४८
५३	१४	९	१८	७	९	१८	१२	२१	३६	६	२१	३६	१५	३	९	७	३३	९	१३	१५	२७	६	४५	२७
५४	१४	१७	२४	७	१७	२४	१२	२८	४८	६	२८	४८	१५	११	४२	७	४१	४२	१३	२३	६	६	५३	६
५५	१४	२५	३०	७	२५	३०	१३	६	०	६	३६	०	१५	२०	१५	७	५०	१५	१४	०	४५	७	०	४५
५६	१५	३	३६	७	३३	३६	१३	१३	१२	६	४३	१२	१५	२८	४८	७	५८	४८	१४	८	२४	७	८	२४
५७	१५	११	४२	७	४१	४२	१३	२०	२४	६	५०	२४	१६	७	२१	८	७	२१	१४	१६	३	७	१६	३
५८	१५	१९	४८	७	४९	४८	१३	२७	३६	६	५७	३६	१६	१५	५४	८	१५	५४	१४	२३	४२	७	२३	४२
५९	१५	२७	५४	७	५७	५४	१४	४	४८	७	४	४८	१६	२४	२७	८	२४	२७	१५	१	२१	७	३१	२१
६०	१६	६	०	८	६	०	१४	१२	०	७	१२	०	१७	३	०	८	३३	०	१५	९	०	७	३९	०

लाघवांक (LOGARITHAM) कोष्ठक

(घंटा) कलाक अथवा अंश, मिनट अथवा कला:

मि.	क.०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३क	मि.
००	—	१.३८०२	१.०७९२	९०३१	७७८१	६८१२	६०२१	५३५१	४७७१	४२६०	३८०२	३३८८	३०१०	२६६३	२३४१	२०४१	१७६१	१४९८	१२४९	१०१५	०७९२	०५८०	०३७८	०१८५	००
०१	३.१५८४	१.३७३०	१.०७५६	९००७	७७६३	६७९८	६००९	५३४१	४७६२	४२५२	३७९५	३३८२	३००४	२६५७	२३३६	२०३६	१७५६	१४९३	१२४५	१०११	०७८८	०५७७	०३७५	०१८२	०१
०२	२.८५७३	१.३६३०	१.०७२०	८९८३	७७४५	६७८४	५९९७	५३३०	४७५३	४२४४	३७८८	३३७५	२९९८	२६५२	२३३०	२०३२	१७५२	१४८९	१२४१	१००७	०७८५	०५७३	०३७१	०१७९	०२
०३	२.६८१२	१.३५९०	१.०६८५	८९५९	७७२८	६७६९	५९८५	५३२०	४७४४	४२३६	३७८०	३३६८	२९९२	२६४६	२३२५	२०२७	१७४७	१४८५	१२३७	१००३	०७८१	०५७०	०३६८	०१७५	०३
०४	२.५५६३	१.३५२२	१.०६४९	८९३५	७७१०	६७५५	५९७३	५३१०	४७३५	४२२८	३७७३	३३६२	२९८६	२६४०	२३२०	२०२२	१७४३	१४८१	१२३३	०९९९	०७७७	०५६६	०३६५	०१७२	०४
०५	२.४५९४	१.३४५४	१.०६१४	८९१२	७६९२	६७४१	५९६१	५३००	४७२६	४२२०	३७६६	३३५५	२९८०	२६३५	२३१५	२०१७	१७३८	१४७६	१२२९	०९९६	०७७४	०५६३	०३६१	०१६९	०५
०६	२.३८०२	१.३३८८	१.०५८०	८८८८	७६७४	६७२६	५९४९	५२८९	४७१७	४२१२	३७५९	३३४९	२९७४	२६२९	२३१०	२०१२	१७३४	१४७२	१२२५	०९९२	०७७०	०५५९	०३५८	०१६६	०६
०७	२.३१३२	१.३३२३	१.०५४६	८८६५	७६५७	६७१२	५९३७	५२७९	४७०८	४२०४	३७५२	३३४२	२९६८	२६२४	२३०५	२००८	१७२९	१४६८	१२२१	०९८८	०७६६	०५५६	०३५५	०१६३	०७
०८	२.२५५३	१.३२५८	१.०५११	८८४२	७६३९	६६९८	५९२५	५२६९	४६९९	४१९६	३७४५	३३३६	२९६२	२६१८	२३००	२००३	१७२५	१४६४	१२१७	०९८४	०७६३	०५५२	०३५२	०१६०	०८
०९	२.२०४१	१.३१९५	१.०४७८	८८१९	७६२२	६६८४	५९१३	५२५९	४६९०	४१८८	३७३७	३३२९	२९५६	२६१३	२२९५	१९९८	१७२०	१४६०	१२१३	०९८०	०७५९	०५४९	०३४८	०१५७	०९
१०	२.१५८४	१.३१३३	१.०४४४	८७९६	७६०४	६६७०	५९०२	५२४९	४६८२	४१८०	३७३०	३३२३	२९५०	२६०७	२२८९	१९९३	१७१६	१४५५	१२०९	०९७७	०७५६	०५४६	०३४५	०१५३	१०
११	२.११७०	१.३०७१	१.०४११	८७७३	७५८७	६६५६	५८९०	५२३९	४६७३	४१७२	३७२३	३३१६	२९४४	२६०२	२२८४	१९८८	१७११	१४५१	१२०५	०९७३	०७५२	०५४२	०३४२	०१५०	११
१२	२.०७९२	१.३०१०	१.०३७८	८७५१	७५७०	६६४२	५८७८	५२२९	४६६४	४१६४	३७१६	३३१०	२९३८	२५९६	२२७९	१९८४	१७०७	१४४७	१२०१	०९६९	०७४९	०५३९	०३३९	०१४७	१२
१३	२.०४४४	१.२९५०	१.०३४५	८७२८	७५५२	६६२८	५८६६	५२१९	४६५५	४१५६	३७०९	३३०३	२९३३	२५९१	२२७४	१९७९	१७०२	१४४३	११९७	०९६५	०७४५	०५३५	०३३५	०१४४	१३
१४	२.०१२२	१.२८९१	१.०३१३	८७०६	७५३५	६६१४	५८५५	५२०९	४६४६	४१४८	३७०२	३२९७	२९२७	२५८५	२२६९	१९७४	१६९८	१४३८	११९३	०९६२	०७४२	०५३२	०३३२	०१४१	१४
१५	१.९८२३	१.२८३३	१.०२८०	८६८३	७५१८	६६००	५८४३	५१९९	४६३८	४१४१	३६९५	३२९१	२९२१	२५८०	२२६४	१९६९	१६९४	१४३४	११८९	०९५८	०७३८	०५२९	०३२९	०१३८	१५
१६	१.९५४२	१.२७७५	१.०२४८	८६६१	७५०१	६५८७	५८३२	५१८९	४६२९	४१३३	३६८८	३२८४	२९१५	२५७४	२२५९	१९६५	१६८९	१४३०	११८५	०९५४	०७३४	०५२५	०३२६	०१३५	१६
१७	१.९२७९	१.२७१९	१.०२१६	८६३९	७४८४	६५७३	५८२०	५१७९	४६२०	४१२५	३६८१	३२७८	२९०९	२५६९	२२५४	१९६०	१६८५	१४२६	११८२	०९५०	०७३१	०५२२	०३२२	०१३२	१७
१८	१.९०३१	१.२६६३	१.०१८५	८६१७	७४६७	६५५९	५८०९	५१६९	४६११	४११७	३६७४	३२७१	२९०३	२५६४	२२४९	१९५५	१६८०	१४२२	११७८	०९४७	०७२७	०५१८	०३१९	०१२९	१८
१९	१.८७९६	१.२६०७	१.०१५३	८५९५	७४५१	६५४६	५७९७	५१५९	४६०३	४१०९	३६६७	३२६५	२८९७	२५५८	२२४४	१९५०	१६७६	१४१७	११७४	०९४३	०७२४	०५१५	०३१६	०१२५	१९
२०	१.८५७३	१.२५५३	१.०१२२	८५७३	७४३४	६५३२	५७८६	५१४९	४५९४	४१०२	३६६०	३२५८	२८९१	२५५३	२२३९	१९४६	१६७१	१४१३	११७०	०९३९	०७२०	०५११	०३१३	०१२२	२०
२१	१.८३६१	१.२४९९	१.००९१	८५५२	७४१७	६५१९	५७७४	५१३९	४५८५	४०९४	३६५३	३२५२	२८८५	२५४७	२२३४	१९४१	१६६७	१४०९	११६६	०९३५	०७१७	०५०८	०३०९	०११९	२१
२२	१.८१५९	१.२४४५	१.००६१	८५३०	७४०१	६५०५	५७६३	५१२९	४५७७	४०८६	३६४६	३२४६	२८८०	२५४२	२२२९	१९३६	१६६६३	१४०५	११६२	०९३२	०७१३	०५०५	०३०६	०११६	२२
२३	१.७९६६	१.२३९३	१.००३०	८५०९	७३८४	६४९२	५७५२	५१२०	४५६८	४०७९	३६३९	३२३९	२८७४	२५३६	२२२३	१९३२	१६५८	१४०१	११५८	०९२८	०७०९	०५०१	०३०३	०११३	२३
२४	१.७७८१	१.२३४१	१.००००	८४८७	७३६८	६४७८	५७४०	५११०	४५५९	४०७१	३६३२	३२३३	२८६८	२५३१	२२१८	१९२७	१६५४	१३९७	११५४	०९२४	०७०६	०४९८	०३००	०११०	२४
२५	१.७६०४	१.२२८९	०.९९७०	८४६६	७३५१	६४६५	५७२९	५१००	४५५१	४०६३	३६२५	३२२७	२८६२	२६२६	२२१३	१९२२	१६४९	१३९३	११५०	०९२०	०७०२	०४९५	०२९६	०१०७	२५
२६	१.७४३४	१.२२३९	०.९९४०	८४४५	७३३५	६४५१	५७१८	५०९०	४५४२	४०५५	३६१८	३२२०	२८५६	२६२०	२२०८	१९१७	१६४५	१३८८	११४६	०९१७	०६९९	०४९१	०२९३	०१०४	२६
२७	१.७२७०	१.२१८८	०.९९१०	८४२४	७३१८	६४३८	५७०६	५०८१	४५३४	४०४८	३६११	३२१४	२८५०	२५१५	२२०३	१९१३	१६४०	१३८४	११४२	०९१३	०६९५	०४८८	०२९०	०१०१	२७
२८	१.७११२	१.२१३९	०.९८८१	८४०३	७३०२	६४२५	५६९५	५०७१	४५२५	४०४०	३६०४	३२०८	२८४५	२५०९	२१९८	१९०८	१६३६	१३८०	११३८	०९०९	०६९२	०४८५	०२८७	००९८	२८
२९	१.६९६०	१.२०९०	०.९८५२	८३८२	७२८६	६४१२	५६८४	५०६१	४५१६	४०३२	३५९७	३२०१	२८३९	२५०४	२१९३	१९०३	१६३२	१३७६	११३४	०९०५	०६८८	०४८१	०२८३	००९४	२९
३०	१.६८१२	१.२०४१	०.९८२३	८३६१	७२७०	६३९८	५६७३	५०५१	४५०८	४०२५	३५९०	३१९५	२८३३	२४९९	२१८८	१८९९	१६२७	१३७२	११३०	०९०२	०६८५	०४७८	०२८०	००९१	३०
३१	१.६६७०	१.१९९३	०.९७९४	८३४१	७२५४	६३८५	५६६२	५०४२	४४९९	४०१७	३५८३	३१८९	२८२७	२४९३	२१८३	१८९४	१६२३	१३६८	११२६	०८९८	०६८१	०४७४	०२७७	००८८	३१
३२	१.६५३२	१.१९४६	०.९७६५	८३२०	७२३८	६३७२	५६५१	५०३२	४४९१	४०१०	३५७६	३१८३	२८२१	२४८८	२१७८	१८८९	१६१९	१३६३	११२३	०८९४	०६७८	०४७१	०२७४	००८५	३२
३३	१.६३९८	१.१८९९	०.९७३७	८३००	७२२२	६३५९	५६४०	५०२३	४४८२	४००२	३५७०	३१७६	२८१६	२४८३	२१७३	१८८५	१६१४	१३५९	१११९	०८९१	०६७४	०४६८	०२७१	००८२	३३
३४	१.६२६९	१.१८५२	०.९७०८	८२७९	७२०६	६३४६	५६२९	५०१३	४४७४	३९९४	३५६३	३१७०	२८१०	२४७७	२१६८	१८८०	१६१०	१३५५	१११५	०८८७	०६७०	०४६४	०२६७	००७९	३४

❁ लाघवांक (LOGARITHAM) कोष्ठक ❁

(घंटा) कलाक अथवा अंश, मिनट अथवा कला:

मि.	क. ०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३क	मि.
३५	१.६१४३	१.१८०६	०.९६८०	८२५९	७१९०	६३३३	५६१८	५००३	४४६६	३९८७	३५५६	३१६४	२८०४	२४७२	२१६४	१८७५	१६०५	१३५१	११११	०८८३	०६६७	०४६१	०२६४	००७६	३५
३६	१.६०२०	१.१७६१	०.९६५२	८२३९	७१७४	६३२०	५६०७	४९९४	४४५७	३९७९	३५४९	३१५७	२७९८	२४६७	२१५९	१८७१	१६०१	१३४७	११०७	०८८०	०६६४	०४५८	०२६१	००७३	३६
३७	१.५९०२	१.१७१६	०.९६२५	८२१९	७१५९	६३०७	५५९६	४९८४	४४४९	३९७२	३५४२	३१५१	२७९३	२४६१	२१५४	१८६६	१५९७	१३४३	११०३	०८७६	०६६०	०४५४	०२५८	००७०	३७
३८	१.५७८६	१.१६७१	०.९५९७	८१९९	७१४३	६२९४	५५८५	४९७५	४४४०	३९६४	३५३५	३१४५	२७८७	२४५६	२१४९	१८६२	१५९२	१३३९	१०९९	०८७२	०६५६	०४५१	०२५५	००६७	३८
३९	१.५६७३	१.१६२७	०.९५७०	८१७९	७१२८	९२८२	५५७४	४९६५	४४३२	३९५७	३५२९	३१३९	२७८१	२४५१	२१४४	१८५७	१५८८	१३३५	१०९५	०८६८	०६५३	०४४८	०२५१	००६४	३९
४०	१.५५६३	१.१५८४	०.९५४२	८१५९	७११२	६२६९	५५६३	४९५६	४४२४	३९४९	३५२२	३१३३	२७७५	२४४५	२१३९	१८५२	१५८४	१३३१	१०९२	०८६५	०६४९	०४४४	०२४८	००६१	४०
४१	१.५४५६	१.१५४०	०.९५१५	८१४०	७०९७	६२५६	५५५२	४६४७	४४१५	३९४२	३५१५	३१२६	२७७०	२४४०	२१३४	१८४८	१५७९	१३२७	१०८८	०८६१	०६४६	०४४१	०२४५	००५८	४१
४२	१.५३५१	१.१४९८	०.९४८८	८१२०	७०८१	६२४३	५५४१	४९३७	४४०७	३९३४	३५०८	३१२०	२७६४	२४३५	२१२९	१८४३	१५७५	१३२२	१०८४	०८५७	०६४२	०४३७	०२४२	००५५	४२
४३	१.५२४९	१.१४५५	०.९४६२	८१०१	७०६६	६२३१	५५३१	४९२८	४३९९	३९२७	३५०१	३११४	२७५८	२४३०	२१२४	१८३८	१५७१	१३१८	१०८०	०८५४	०६३९	०४३४	०२३९	००५२	४३
४४	१.५१४९	१.१४१३	०.९४३५	८०८१	७०५०	६२१८	५५२०	४९१८	४३९०	३९१९	३४९५	३१०८	२७५३	२४२४	२११९	१८३४	१५६६	१३१४	१०७६	०८५०	०६३५	०४३१	०२३५	००४८	४४
४५	१.५०५१	१.१३७२	०.९४०९	८०६२	७०३५	६२०४	५५०९	४९०९	४३८२	३९१२	३४८८	३१०२	२७४७	२४१९	२११४	१८२९	१५६२	१३१०	१०७२	०८४६	०६३२	०४२८	०२३२	००४५	४५
४६	१.४९५६	१.१३३१	०.९३८३	८०४३	७०२०	६१९३	५४९८	४९००	४३७४	३९०५	३४८१	३०९६	२७४१	२४१४	२१०९	१८२५	१५५८	१३०६	१०६८	०८४३	०६२९	०४२४	०२२९	००४२	४६
४७	१.४८६३	१.१२९०	०.९३५६	८०२३	७००५	६१८०	५४८८	४८९०	४३६५	३८९७	३४७५	३०८९	२७३६	२४०९	२१०४	१८२०	१५५३	१३०२	१०६४	०८३९	०६२५	०४२१	०२२६	००३९	४७
४८	१.४७७१	१.१२४९	०.९३३०	८००४	६९९०	६१६८	५४७७	४८८१	४३५७	३८९०	३४६८	३०८३	२७३०	२४०३	२०९९	१८१६	१५४९	१२९८	१०६१	०८३५	०६२१	०४१८	०२२३	००३६	४८
४९	१.४६८२	१.१२०९	०.९३०५	७९८५	६९७५	६१५५	५४६६	४८७२	४३४९	३८८२	३४६१	३०७७	२७२४	२३९८	२०९५	१८११	१५४५	१२९४	१०५७	०८३२	०६१८	०४१४	०२२०	००३३	४९
५०	१.४५९४	१.११७०	०.९२७९	७९६६	६९६०	६१४३	५४५६	४८६३	४३४१	३८७५	३४५४	३०७१	२७१९	२३९३	२०९०	१८०६	१५४०	१२९०	१०५३	०८२८	०६१४	०४११	०२१६	००३०	५०
५१	१.४५०८	१.११३०	०.९२५४	७९४७	६९४५	६१३१	५४४५	४८५३	४३३३	३८६८	३४४८	३०६५	२७१३	२३८८	२०८५	१८०२	१५३६	१२८६	१०४९	०८२४	०६११	०४०८	०२१३	००२७	५१
५२	१.४४२४	१.१०९१	०.९२२८	७९२९	६९३०	६११८	५४३५	४८४४	४३२४	३८६०	३४४१	३०५९	२७०७	२३८२	२०८०	१७९७	१५३२	१२८२	१०४५	०८२१	०६०८	०४०४	०२१०	००२४	५२
५३	१.४३४१	१.१०५३	०.९२०३	७९१०	६९१५	६१०६	५४२४	४८३५	४३१६	३८५३	३४३४	३०५३	२७०२	२३७७	२०७५	१७९३	१५२८	१२७८	१०४१	०८१७	०६०४	०४०१	०२०७	००२१	५३
५४	१.४२६०	१.१०१५	०.९१७८	७८९१	६९००	६०९४	५४१४	४८२६	४३०८	३८४६	३४२८	३०४७	२६९६	२३७२	२०७०	१७८८	१५२३	१२७४	१०३७	०८१४	०६०१	०३९८	०२०४	००१८	५४
५५	१.४१८०	१.०९७७	०.९१५३	७८७३	६८८५	६०८१	५४०३	४८१७	४३००	३८३८	३४२१	३०४१	२६९१	२३६७	२०६५	१७८४	१५१९	१२७०	१०३४	०८१०	०५९७	०३९४	०२०१	००१५	५५
५६	१.४१०२	१.०९३९	०.९१२८	७८५४	६८७१	६०६९	५३९३	४८०८	४२९२	३८३१	३४१५	३०३४	२६८५	२३६२	२०६१	१७७९	१५१५	१२६६	१०३०	०८०६	०५९४	०३९१	०१९७	००१२	५६
५७	१.४०२५	१.०९०२	०.९१०४	७८३६	६८५६	६०५७	५३८२	४७९८	४२८४	३८२४	३४०८	३०२८	२६७९	२३५६	२०५६	१७७४	१५१०	१२६१	१०२६	०८०३	०५९०	०३८८	०१९४	०००९	५७
५८	१.३९४९	१.०८६५	०.९०७९	७८१८	६८४१	६०४५	५३७२	४७८९	४२७६	३८१७	३४०१	३०२२	२६७४	२३५१	२०५१	१७७०	१५०६	१२५७	१०२२	०७९९	०५८७	०३८४	०१९१	०००६	५८
५९	१.३८७५	१.०८२८	०.९०५५	७८००	६८२७	६०३३	५३६१	४७८०	४२६८	३८०९	३३९५	३०१६	२६६८	२३४६	२०४६	१७६५	१५०२	१२५३	१०१८	०७९५	०५८३	०३८१	०१८८	०००३	५९

तत्काल ग्रह स्पष्ट करने की विधि :- श्री ब्रजभूमि पंचांग मे प्रतिदिन सुबह घं.५ मि. ३० बजे के लिए सूर्य चन्द्रादि सभी ग्रह रा. अं. क. वि. पर्यन्त स्पष्ट करके छाप दिये जाते हैं। जिस समय के लिए ग्रह स्पष्ट करने हों, उस समय में से ५ घं. ३० मि. घटा दें; शेष घं. मि. चालन धन होगा। चालन तुल्य लाघवांक कोष्ठक से दशमलव सहित लाघवांक प्राप्त करें। पुन: ग्रह गति के अनुसार लाघवांक लेकर पूर्व प्राप्त लाघवांक में जोड़ दें। कुल योग को लाघवांक कोष्ठक मे देखे जहाँ समानांक मिले, उनके ऊपर कला व बाईं ओर विकलादि प्राप्त फल को प्रात:कालीन स्पष्ट ग्रह मे जोड़ने से और यदि वक्री ग्रह हो तो घटाने से तत्काल ग्रह स्पष्ट हो जायेगा।

स्मरण रहे-अधिक गति से भ्रमण करने वाले (चन्द्र, बुध शुक्र) ग्रहों का चालन तुल्य फल अं. क. वि. भी हो सकता है। युक्तियुक्त विचार कर काम लेना चाहिए।

उदाहरण- १ अप्रैल सन् १९९८ ई. में दिन के २ बजकर ५७ मिनट में पर चन्द्रमा स्पष्ट करना है तो १४ घं. ५७ मि. से ५ घं. ३० मि. घटाये शेष ९ घं. २७ मि. चालन बना। चालन तुल्य दशमलव सहित .४०४८ लाघवांक प्राप्त किये।

१ अप्रैल के चन्द्रस्पष्ट १।११।११।७ को २ अप्रैल के चन्द्रस्पष्ट १।२५।१५।० में से घटाया तो अंशादि १४।३।५३ गति सिद्धि हुई, जिसके अनुसार अनुपात से लाघवांक .२३२१ ग्रहण करके पूर्व प्राप्त लाघवांक में जोड़ा तो कुल योग ६३६९ हुआ। कुल योग को पुन: लाघवांक कोष्ठक में देखा तो ५ अं. के नीचे ३२ क. के सामने ६३७२ लिखा मिला और ३३ क. के सामने .६३५९ है। अनुपात से ५ अं. ३२ क. १४ वि. ग्रहण करके १ अप्रैल के चन्द्रस्पष्ट १।११।११।७ में जोड़ दिया तो १।१६।४३।२१ यह तत्काल चन्द्रस्पष्ट हुआ। यानी १४ घं. ५७ मि. बचे का चन्द्रमा स्पष्ट हो गया।

अथ सूर्यादि ग्रहाणां अष्टकवर्ग चक्रम्

रवि रेखा ४८ दि.३घ.४५

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	६	१	३	५	६	१	३
२	३	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

चन्द्र रेखा ४९ दि.१६।५१

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

भौम रेखा ३९ दि.५।३।३९

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

बुध रेखा ५४ दि.३।१७

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

गुरु रेखा ५६ मा १।१८।५८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

शुक्र रेखा ५२ दि.५।५२।५१

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	११				१०		११
	१२				११		

शनि रेखा ३९ मा.३।२२।२२

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

लग्न रेखा ४९

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	६	४	४	३	४	१०
१०	११	१०	६	५	४	६	११
११	१२	११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

निसर्ग मैत्री चक्रम्

ग्रहा	सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.
मित्राणि	च. मं. गु.	सू. बु.	सू. चं. गु.	सू. शु	सू. चं. मं.	बु. श	बु. शु.
समाः	बु.	शु. गु. मं. श.	शु. श	मं. गु. श.	श	मं. गु.	गु.
शत्रवः	शु. श		बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.

कष्ट:स्यादेकरेखायांद्वाभ्यामर्थक्षयो भवेत्। त्रिभिः क्लेशं विजानीयाच्चतुर्भिस्समतांवदेत्।। पंचभिश्चवदेत्सौख्यं षट्भिश्चैव धनागमः। सप्तभि:परमानंदमष्टभिस्सर्वसंपदाम्।। जिस ग्रह का बल देखना हो उसकी रेखा जन्मकुण्डली लिखके लगाएँ। फिर विचारणीय राशिमें कितनी रेखा पायी हैं। यदि १से३ तक पाएं तो निर्बली ग्रह हुआ, ४पाएं तो सम, ५से ८पायें तो बली। ऐसे ही विचार विवाह जनेऊ आदि कर्ममें करें। सब ग्रहोंकी रेखा एक जगह करने से आयु का निर्णय भी ठीक हो जाता है।

अवस्थाच.

विषमे		समे.
मृतावस्था	३०	बालावस्था
वृद्धावस्था	२४	कुमारावस्था
युवावस्था	१८	युवावस्था
कुमारावस्था	१२	वृद्धावस्था
बालावस्था	६	मृतावस्था

अवस्थाजाग्रत

विषमे		समे.
सुसुप्त	३०	जाग्र.
सुप्ता.	२०	सुप्ता.
जाग्र.	१०	सुसुप्त
वि.	अ.	स.

तात्कालिक मैत्री

मित्राणि	शत्रवः
२	१
३	५
४	६
१०	७
११	८
१२	९

पंचधामैत्री सप्तकवर्गीफलम्

१सप्तक वर्गमें स्वगृही	३०	०	०
२मित्रमित्रको अतिमित्रता	२२	३०	०
३मित्रसमको मित्र होय	१५	०	०
४मित्रशत्रुको सम होय	७	३०	०
५समशत्रुको शत्रु होय	३	४५	०
६शत्रुशत्रुकोअतिशत्रुहोय	१	५२	३०

दिनके सहम ऊपरसे और रात्रिके सहम नीचेसे गणना करें

सहम	एतऊ	एतेभ्य	एतयुक्त	सहम	ऐहिनक	इनमेक	एतेयु
पुण्यं	सूर्य	चंद्रात्	तनु	प्रसूति	बुधं	गुरुतः	तनु
गुरुः	चन्द्र	सूर्यात्	तनु	जाड्य	शनिं	भौमात्	बुध
यश	पुण्यं	जीवात्	तनु	जलप	चंद्रं	शनैः	लग्न
मित्र	पुण्यं	गरुस	शुक्र	शत्रु	शनिं	भौमात्	लग्न
महा.	भौमं	पुण्या	तनु	दरिद्र	बुधं	पुण्यात्	बुध
आशा	शुक्रं	शनितः	तनु	शास्त्र	शनिं	गुरुतः	बुध
राज	सूर्य	शनैः	तनु	वंदक	बुधं	चन्द्रात्	तनु
माता	शुक्रं	चंद्रात्	तनु	बंधन	शनिं	पुण्यात्	तनु
उपाय	गुरुं	शनैः	तनु	अश्व	सूर्ये	पुण्यात्	लाभ
कर्म	बुधं	भौम	तनु	अन्यक	शनिं	चन्द्रात्	तनु
कली	भौम	गुरुतः	तनु	बुद्धि	सूर्ये	जीवात्	तनु
चतुष्पद	६ भाव	१२भाव	तनु	अंग	शनिं	भौमात्	तनु
रात्रौ	शोधक	शोध्य	विभे	रात्रिमें	शोधक	शोध्य	

गुरु सहम के समान ही ज्ञान-विद्या ज्ञाती होते हैं। ऐसे ही यशः के समान बल देह और महात्म के सम शौर्य धैर्य, माता के समान अंबू, जीवित के समान उपाय, विवाह समस्त्री कलीसोही क्षमायात्रा के समान परदेशमार्ग होते हैं और शोध्य से शोध तक लग्न बीच में नहीं आवे तो सहम में १ राशि और जोड देनी चाहिए अन्यथा नहीं।

।। ग्रहाणांमुच्चनीचदीप्तांशहर्षस्थानानि।।

	ग्रहाः	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
परमोच्च	रा.	०	१	९	५	३	११	६
	अं.	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीच	रा.	६	७	२	११	५	५	०
	अं.	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
दीप्तांशाः	रा.	१५	१२	८	७	९	७	९
	अं.							
हर्ष स्थानानि	रा.	९	३	६	१	११	५	१२
	अं.							

अथ ग्रहाणां विविध विषयोपयोगी गुण-धर्म ज्ञानार्थ चक्रम्

ग्रहाः →	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सितारा	आफ ताब	माह ताब	मिरीख	उता. रुद	मुस्तरी	झाहार	झाहल	रास	जनव.
प्लेनेट	सन	मून	मार्स	मरकरी	जुपीटर	वीनस	सेटर्न	ड्रेगनहेड	ड्रेगनटेल
ग्रहाणां१ पाद दृष्टि	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०		३।१०	३।१०
द्विपाद दृष्टि	५।९	५।९	५।९	५।९		५।९	५।९	५।९	५।९
त्रिपाद दृष्टि	४।८	४।८		४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७
भाग्योदय वर्षाणि	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८
नेष्टग्रहस्य वर्षे दानोपायसाधनं	हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	पीली वस्तुएँ	गोरक्षा	मृत्युंजय जप	भुजंग दान	ध्वजा दान
ग्रहाणां एक राशि भुक्तप्रमाणम्	मास १	दिन २।	मास १॥	मास १	मास १३	मास १	मास ३०	मास १८	मास १८
रत्नानि	माणिक्य	मोती	प्रवाल	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मित्रग्रहाः	चं.मं. गु.	सू.बु.	सू.गु. चं.	सू.रा. शु.	सू.चं. मं.	बु.रा. श.	बु.रा. शु.	बु.श. शु.	बु.
समग्रहाः	बु.	मं.शु. गु.श.	शु.श. रा.	मं.श. गु.	श.रा.	मं.गु.	गु.	गु.	
शत्रुग्रहाः	श.रा. शु.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं. मं.	सू.चं. मं.	
ग्रहाणांउच्चराशियाँ परमोच्चांश	मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५
ग्रहाणांनीचराशियाँ अति नीचांश	तुला १०	वश्चिच. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५

सूर्य	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
स्वगृहाणि	सिंह	कर्क	मेष वृश्चि.	कन्या मिथुन	धनु मीन	वृष तुला	मकर कुम्भ	कन्या	मीन
मूलत्रिकोण	सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर
ग्रहों के वर्ण	क्षत्रीय	वैश्य	क्षत्रीय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निखाद	निखाद	निखाद
पुरुष-स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	स्त्री	पुरुष	पुरुष
आकार	चतुरस्त्र	स्थूल	चतुरस्त्र	वृत	वृत	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
समय	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य
धातु	सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	हीरसु	रौप्य	लोहा	लोहा	लोहा
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
सौम्यादि	उग्र	शुभाशुभ	उग्र	शुभाशुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप
गुण	सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम
चरादि	स्थिर	चर	चर	द्विस्व	स्थिर	चर	पक्षीस्थिर	चर	पक्षी
रस	तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय
भूमि	पशु प्राय	जलभू	दुग्ध	शमशान	वाणी सुराल	जलभू	उत्कर	उषर	उषर
ग्रहों की प्रकृति	पित्त	श्लेष्म	पित्त	सम धातु	सम धातु	कफ शुक्र	वायु	वायु	वायु
ग्रहों की अवस्था	वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध
ग्रहों के रंग	पाटल	गौरश्वे	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र,
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
ग्रहों के स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	संधि	विवर	विवर

अ व क ह डा चक्र राशि स्वामिवर्णवश्यादिज्ञानायचक्रम्

अ,व,क,ह,डा,चक्रके अन्दर ८ रिंग हैं। पहले रिंग (ऊपरीगोलेमें) ज्योतिषकी वर्णमालानुसार अश्विनी आदि नक्षत्रोंके चरणोंमें विहित चार-चार अक्षर प्रत्येक भागमें लिखे हैं। नक्षत्र २७ X ४ = १०८ अक्षर हैं। एक राशिमें ९ अक्षर अर्थात् सवा दो नक्षत्रकी होती है।

दूसरे रिंग में- नक्षत्र तथा राशि नाम लिखे है। कृत्तिका के १ चरण तक मेष राशि रहती है, अतः कृ.१ में एवं कृ.३ वृ. इस तरह लिखा गया है। स्थानाभावके कारण नामके पहले अक्षरको लिखकर बिन्दी लगा दी जाती है।

तीसरे रिंगमें- राशियोंके वर्णका उल्लेख है जैसे मेषका वर्ण क्षत्री है तो अश्विनी भरणी कृतिकाके १भागतक क्षत्री लिखा है।

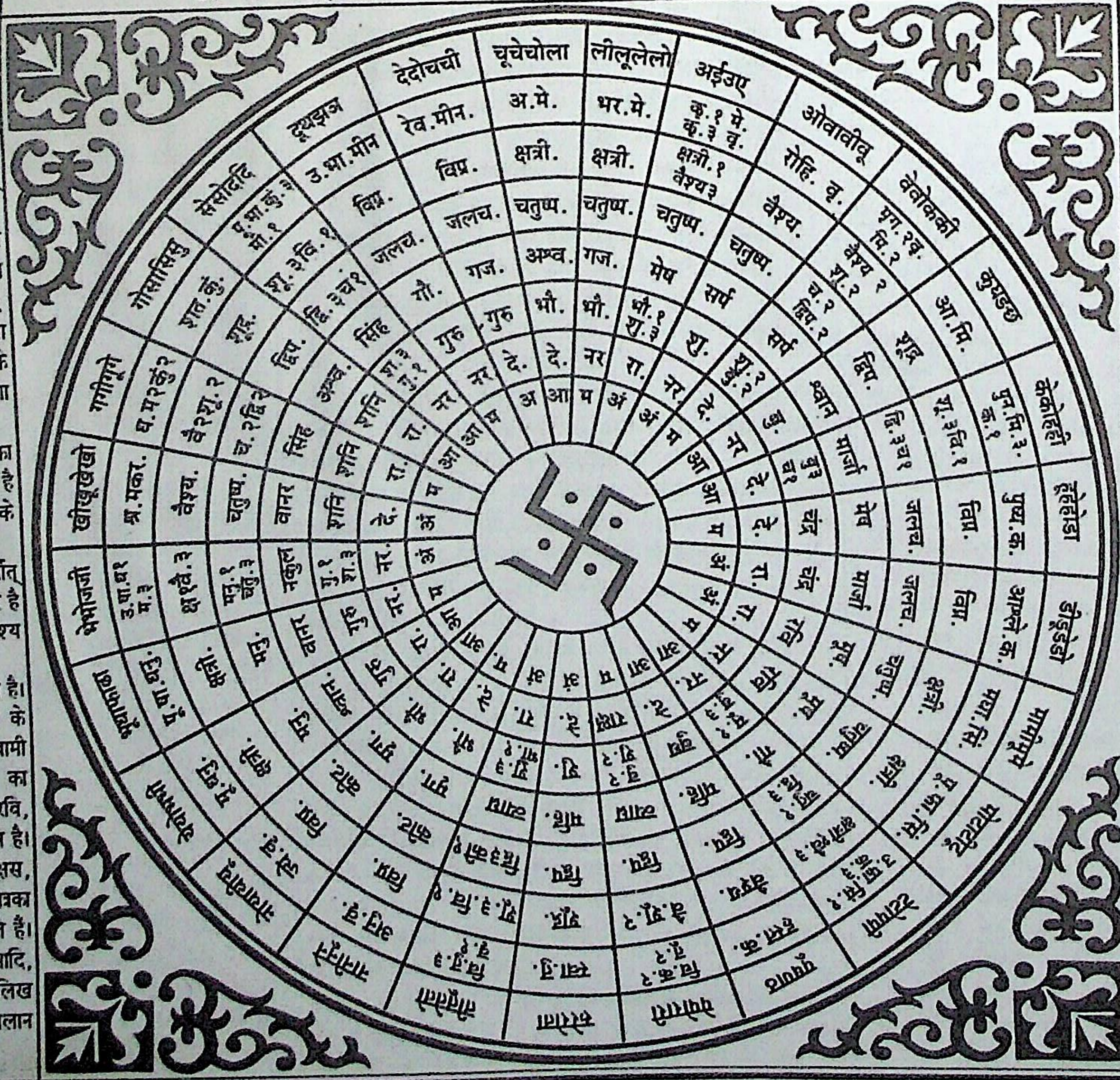
चौथेरिंगमें- पाद उल्लेख है अर्थात् राशि चतुष्पद है द्विपद है जलचर है वनचर है या कीट संज्ञक है। वश्य गुणावगुण जान सकते है।

पाँचवेंरिंगमें-नक्षत्रोंकी योनिलिखी है।

छटेरिंगमें- राशियोंके स्वामियों के नाम लिखे है जैसे- मे.वृ.का स्वामी भौम, वृ.तु. का शुक्र, मि.क. का बुध, कर्क का चन्द्र, सिंह का रवि, ध.मि.कागुरु और म.कुं.का शनि है।

सातवेंरिंगमें- देव, नर, राक्षस, इत्यादि लिखा है अतः किस नक्षत्रका कौन सा गण है यह जान सकते हैं।

आठवेंरिंगमें- नक्षत्रोंकी नाडी आदि, मध्य, अन्त्य, मध्य, आदि, लिख दी गई है। वर-वधू गुण मिलान आसानीसेकरसकतेहैं।



पंचांग परिवर्तन विधि-

जिस नगरका सूर्योदय ज्ञात करना हो उक्त नगरके सामने देशकाल सुबोधिनी तालिका से देशान्तर मि.से. धन हों तो ऋण और यदि ऋण हों तो धन संस्कार इस पंचांगमें उल्लिखित सूर्योदय में करने पर अभीष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय बन जायेगा। अभीष्ट दिन रविक्रान्ति एवं उक्त नगर के अक्षांश तुल्य चरान्तर मिनटोंका संस्कार मध्यमसूर्योदयमें करनेसे स्पष्टसूर्योदय होगा।

चरान्तर मिनटोंको ५ से गुणाकर प्राप्त पलोंका विपरीत (धनको ऋण व ऋणको धन) संस्कार पंचांगके लिखित दिनमानमें करनेसे अभीष्ट नगरका दिनमान हो जायेगा।

दिनमानको२॥ से भागकर प्राप्त घं. मि.को सूर्योदय में जोड़ने से सूर्यास्त काल होगा।

तिथ्यादि साधनम्- अभीष्ट नगरीय सूर्योदयन्तर मिनटोंके पलोंको इस पंचांगके घटी-पलोंमें (पूर्वमें धन पश्चिम में ऋण) संस्कार करने से इच्छित नगरमें तिथि नक्षत्र योगादिका स्पष्ट मान हो जायेगा।

ग्रह दोष नाशक परिहार-

राहुका बुध, राहु व बुध का शनि और राहु,बुध और शनि तीनों का दोष नाशक मंगल, तथा मंगल,राहु, बुध शनि का दोष नाशक शुक्र है। शुक्र,राहु, बुध,शनि,मंगल पांचों का गुरु है। राहु, मंगल,बुध, गुरु,शुक्र, शनि इन छः के दोषनिवारण में चन्द्र तथा सभी ग्रहों का दोषनाशक सूर्य को समझें।

जातक प्रकरण

जन्म लेने वाले सभी प्राणी जातक कहलाते है। जीवनके सभी क्रिया कलाप आयु पर ही निर्भर करते है, इसीलिए ज्योतिषियोंको सर्वप्रथम जातककी आयुका विचार करना चाहिए। उपरान्त अन्य विषयोंके सन्दर्भमें सोचना शास्त्रोक्त दृष्टि से उत्तम है। फलित ज्योतिषमें आयु निर्धारणकी कई विधियां विद्वानोंने बतलाई है। महर्षि जैमिनीप्रोक्त आयुर्दाय गणितपद्धति की सर्वोपरीय मान्यता है।

।। अथ आयुर्दायं निर्णायक चक्रम् ।।

दीर्घायु	मध्यमायु	अल्पायु
एक चर राशिमें	एक द्विस्वभाव राशिमें	एक स्थिर राशि में
दूसरा चर राशिमें	दूसरा द्विस्वभाव राशिमें	दूसरा स्थिर राशिमें
एक स्थिर राशिमें	एक चर राशि में	एक चर राशि में
दूसराद्विस्वभावराशिमें	दूसरा स्थिर राशि में	दूसरा द्विस्वभाव राशिमें

महर्षि जैमिनीके मत से आयुर्दाय (उम्र) के तीन भेद होते है यथा-१. दीर्घायु २. मध्यमायु ३. अल्पायु प्रत्येक खण्डका निर्णय भी तीन प्रकार से पृथक्-पृथक् किया जाता है। **१. लग्नेश एवं अष्टमेश, २. शनि एवं चन्द्रमा, ३. लग्न एवं होरा लग्न।**

प्रत्येक प्रकार के दो-दो अधिनायकोंमें से दोनों चरराशिमेंहो, या कोई एक द्विस्वभावमें,दूसरा स्थिरराशिमेंहो तो जातककीदीर्घायु जाननी चाहिए।

यदि दोनों द्विस्वभाव राशिमें हो अथवा एक कोई चर राशिमें, दूसरा स्थिरराशिमें हो तो मध्यमायु जानें। इसी प्रकार यदि दोनों स्थिरराशिमें हो अथवा एक चर राशिमें, दूसरा द्विस्वभाव राशिमें हो तो जातककी अल्पायु होती है।

नोट- तीनों प्रकार से दीर्घायु निकले तो १२० वर्ष, दो प्रकार से निकले तो १०८ वर्ष और यदि एक प्रकार से दीर्घायुका प्रमाण मिले तो ९६ वर्ष जानें। तीनों प्रकार से मध्यमायु निकले तो ८० वर्ष, दो प्रकार से निकले तो ७२ वर्ष और यदि एक प्रकार से मध्यमायुका प्रमाण मिले तो ६४ वर्षजानें। इसी प्रकारअल्पायुका विचार करें अर्थात् तीनोंतरह से अल्पायु निकले तो ३२ वर्ष, दो प्रकारसे अल्पायुका योग हो तो ३६ वर्ष और एक प्रकार से अल्पायुका प्रमाण मिले तो उम्र ४० वर्ष जाननी चाहिये। इसमें ग्रहकक्षा ह्रास-वृद्धि तथा जन्मांगचक्रमें बननेवाले शुभाशुभ ग्रहयोगोंके फलस्वरुप घटा-बढ़ीहो जाती है। राश्यारम्भ में ग्रह अधिक आयु देते है तो राश्यान्तमें पहुँचनेपर क्षीण कर देते है। लग्नेश दशमेश व अष्टमेश जन्मकुण्डली के ४।५।९।११ भावमें रहे और केन्द्र १।४।७।१० में जितने ग्रह हों वे दीर्घायु देते है। तीसरे तथा चौथे में जो पाप ग्रह ३।६।११ के स्वामी होकर रहें तथा २।५।८।११वें घर में जितने ग्रह रहें वे मध्यमायु देते है और पापग्रह आपोक्लिम् ३।६।९।१२में रहें वे सब अल्पायु देते है।

आयु सुनिश्चित नहीं- गणितोपलब्ध आयुर्दाय पूर्वजन्मार्जित कर्मफल बोधक ग्रहोंके योग से बना है जिसमें केवल जन्म समये ग्रहस्थिति शनि, चन्द्र तथा गुरु वसात् ह्रास वृद्धि ही नहीं, बल्कि वर्त्तमान जन्म में स्वयं मानवकृत शुभाशुभकर्म जन्य न्यूनाधिक होना भी निसर्गसिद्ध एवं शास्त्र सम्मत है, अन्यथा धर्मग्रन्थोंमें वर्णित नैतिकता तथा सदाचारके समस्त उपदेश और श्रुतिवाक्य **शतायुर्वैपुरुषः। पश्येमशरदःशतम्, जीवेम शरदःशतम्।** इत्यादि व्यर्थ होंगे। जन्मकुण्डलीमें सूर्यआत्मा, चन्द्रमामन, गुरुज्ञान, शनिदुःख आदिके निर्णायक है। विशेषतः चन्द्र संयोगसे बने अच्छे बुरे योग अन्य ग्रह वसात् बने योगोंके फलका नाशकर अपना फल देनेमें सशक्त होते है क्योंकि **'चन्द्रमा मनसोजातः'** वेद का सिद्धान्त है, इसलिये ज्योतिषाचार्यो ने लिखा है-

अन्ययोगफलं हन्ति चन्द्रयोगो विशेषतः।
स्वफलं प्रददातीति बुधो यत्नाद् विचिन्तयेत्।।

प्रसंगवश अब अनुभव सिद्ध दीर्घायु, मध्यमायु अल्पायु सम्बन्धी शुभाशुभ योगोंका उल्लेख करते है। जन्मकुण्डली में पड़ेग्रहोंका शुभाशुभ प्रभाव प्राणीमात्रके शरीर पर पड़ता है। कर्मफल विभाजनहेतु प्रभुने ग्रहोंको बनाया और उन्हें फलदेनेका अधिकार प्रदान किया, क्योंकि कालके कर्त्ता सूर्यादि ग्रह ही है और काल ही समस्त ब्रह्माण्डका नियमायक है।

दीर्घायुयोग-

तनु पति गुरु केन्द्रालय राजै। कोणभवन मह पाप समाजै।।
वर्ष एक सौ बीस प्रमाना। आयुर्वल तेहि केरि बखाना।।
रहै जीव तनु कर्कट रासी। शुक्र वीर्ययुत केन्द्र निवासी।।
जीवै सो मानव शत वर्षा। सुत सम्पतियुत सदा सहर्षा।।
कर्क लग्न तनुगत वागीशा। निजगृह केन्द्रे सौम्य कवीशा।।
राहु शनैश्चर थिर त्रिपडाया। जीवन तासु वर्ष शत गाया।।
नवम भवन निवसै जो मंदा। वीर्यवात तनु-मन्दिर चन्दा।।
रहै चन्द्र वाला भवधर्मा। सो जीवै शत वर्ष सुकर्मा।।
लग्न चन्द्र ते अष्टम भावा। होइ खेट को वास अभावा।।
कवि गुरु केन्द्र रहै वलवन्ता। कहि पूर्णायु तासु मतिमन्ता।।

दोहा- **शुभ ग्रह, पञ्चम नवम गृह, सुर गुरु लग्न कुलीर।।**
असी वर्ष सो जन जियै, कहै देव चित चीर।।

मध्यमायु योग

चन्द्र रहै निज भवन मँह, तनु मद सौम्य न भोग।
साठ वर्ष सो जन जिये, यह भाषै बुध लोग।।
रहै लग्नपति बहुबली, शुभ खेचर से दृष्ट।
साठ वर्ष सो जीवई, मेटै सर्व अरिष्ट।।
तनु ते शशि ते पूर्ण शशि, बुध गुरु भार्गव केन्द्र।
रहै लग्नगुरु सो जियै, सत्तर वर्ष नरेन्द्र।।
लहै निधनगुरु सौम्य ग्रह, सौम्य चतुष्टय वासि।
चत्वारिंशत वर्ष सो, नर जीवै सुखभासि।।
खल ग्रह हीन लग्न औ चन्दा, लग्ने गुरु त्रिपडाय गमन्दा।
खग विहीन मृतुगृह शुभ केन्द्रा, सत्तरि वर्ष आयु कहि ज्ञेन्द्रा।।

अल्पायु योग

इन्दु रहै आपोक्लिम ग्रामी। आपोक्लिम गृह मँह तनु स्वामी।
लग्न चन्द्र को देखै पापा। जीवै बत्तीस वर्ष सतापा।।
रहै चन्द सुत बहु बली, शुभ खग कण्डक माँहि।
खेटहीन अष्टम भवन, जीवै त्रिंश समाहिं।।
अष्टमपति तनु मँह रहै, तनु पति अष्टम भाव।
क्रूर दृष्ट चौविस वरष, तासु आयुर्दा भाव।।
लग्नाष्टम-पति-मृतु-भवन, क्रूर विलोकति होइ।
वर्ष सताइस जीवनी, तासु कहै सब कोइ।।
खलयुतगुरु तनु शशि वलहीना। अष्टम गृह मंह पाप मलीना।।
आर्युवल द्वाविंशति साला। भाषै ताको वृद्धि विशाला।।
गुरु व्यय कंकट पाप समाजा। तनु-पति नव रिपु सहज विराजा।।
तीन वर्ष आर्युवल ताको। रक्षक मृत्युञ्जय जप वाको।।

अन्य अरिष्टकारक योग- राहु युक्त चन्द्रमा पापग्रहके साथ लग्नमें बैठाहो और जन्मकुण्डलीके आठवें भावमें मंगलहो तो जातकके सहित माताकी मृत्यु होती है। चन्द्रमाके समान सूर्य ग्रह हो तो, अस्त्र-शस्त्र आदि से मृत्यु होती है।

जन्मांगचक्रमें छठे आठवें पड़े चन्द्रमाको पापग्रह देखें तो जातककी मृत्यु होती है। शुभग्रह देखेंतो आठ वर्ष और यदि शुभाशुभ ग्रहोंके समान प्रभावमें शशि हो तो बच्चेकी चार वर्षमें मृत्यु जाननी चाहिए। यदि दशा अरिष्टकारक न हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

किसस्थानसे किसका विचार करें? जन्मकुण्डलीमें सूर्य जहां हो, उससे नवां स्थान पिताका होता है। चन्द्रमासे चौथाघर माता का, गुरु से पांचवां घर सन्तान का होता है। इसी प्रकार शुक्रसे सप्तमभावमें पति पत्नीके परस्पर सम्बन्धोंका विचार किया जाता है।

जन्मकुण्डलीके बारहवें तथा छठे स्थानमें पड़े पापग्रह माताके लिए, चौथे-दशमें भाव में पड़े अशुभग्रह पिताके लिए नेष्ट होते हैं। उपरोक्त प्रकारसे भी विचार करना चाहिए, जैसे- सूर्य से ९ तथा चन्द्र से ४ घर पाप पीडित हो, तो महा अरिष्ट होता है। ग्रहोंके बलाबलको विचार कर मृत्यु या कष्ट कहना चाहिए।

तृतीय स्थानमें पड़े सूर्य अग्रज (बड़े भाई बहिनोंको) नष्ट करते हैं। तृतीय शनि पृष्टज (पीछे) छोटे बहिन भाइयोंको नष्ट करते हैं। तृतीय स्थानमें मंगल अग्रज तथा पुष्टज दोनोंको नष्ट करता है।

जन्मलग्न से आठवें चन्द्रमा हो और केन्द्र १।४।७।१० में पापग्रह तथा चौथे स्थानमें राहु के रहनेसे जातक एक वर्ष जीता हैवक्री शनि मंगलकी राशि १।८ में रहे या केन्द्र १।४।७।१०वें हो या आठवें रहे,जिसे बलीमंगल देखताहो,तो दो वर्ष तक अरिष्ट होताहै। शनि,राहु व मंगल युक्त चन्द्रमा जन्म कुण्डली के ७ व ९ वें घर में हो, तो जातक को ७ दिन ७ महीने या ७ वर्षमें अरिष्ट होता है। शनिकी राशि १०।११ में सूर्य और सूर्यकी राशि ५ में शनि जन्म समय में हो, तो बारहवें वर्ष में अरिष्ट होता है।

जिसके जन्मलग्न में सूर्य हो, चन्द्रमा पंचममें पड़ा हो और पापग्रह अष्टममें स्थित हो, तो वह बालक नहीं जीता है।

शनिसे युक्तमंगल यदि लग्नमें,याछठे,आठवें व सप्तममें हो और शुभग्रहोंसे देखा जाता हो,तो निःसन्देह उस बालककीमृत्यु होती है।

जिस नक्षत्रपर केतु उदय हो वह रौद्र मुहूर्त्त कहलाता है। उस मुहूर्त्तमे जिसका जन्म हो, वह शीघ्र मरण को प्राप्त होता है।

जिसके जन्म लग्नाधिपति ग्रह छठे आठवें या बारहवें भावमें स्थित हो तो, राशिकी संख्यातुल्य वर्षोंमें अरिष्ट होता है।

शुक्ल पक्षे निशायां च कृष्णे जातौ दिवा यदा।
षष्ठाष्टमगतश्चंद्रो न शिशुहन्ति तातवत्।।

शुक्ल पक्षमें रात्रिका जन्म हो, कृष्णपक्षमें दिनका और जन्मकुण्डलीमे चन्द्रमा छठे या आठवें स्थानमें हो, तो बालककी मृत्यु नहीं करता अपितु पिताकी तरह रक्षा करता है।

अनन्त सम्पत्ति योग-

चन्द्रेण मंगलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत्।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीनेव विमुञ्चति।।

इष्ट बनाने की नूतन विधि-

जन्म समयमें से सूर्योदय हीन करने पर शेष इष्ट घंटा-मिनट होता है। घण्टा-मिनट को ढाई से गुणा करने पर इष्ट घटी पल बन जाता है। **स्मरण रहे-** जिस जगह बच्चेका जन्म हुआ हो उसी स्थानका सूर्योदय घटाना चाहिए। सूर्योदय भी भा.स्टैं.टा. के अनुसार होना चाहिए क्योंकि विश्वमें समस्त घड़ियां इस समय स्टैं.टा. से ही चल रही हैं।

नाम रखने की विधि-

प्रथम परिस्थिति- इष्ट दिन पंचांगमें नक्षत्रका मान (नक्षत्र समाप्त होनेका समय घटी पल एवं घंटा मिनट में जो हर रोज लिखा जाता है) इष्टकालसे अधिक हो, तो उसी नक्षत्रमें शिशु जन्म हुआ है ऐसा जानें। इस परिस्थितिमें विगतदिन गत नक्षत्रके घट्यादि मानको ६० में से घटा दें, बचे हुए अंकोंमें इष्टकालके घटी पल जोड़ने से भयात् (गतर्क्षः) होता है। बचे हुए अंको में इष्ट दिन वर्तमान नक्षत्रका मान घटी पल जोड़ने पर भभोग(सर्वक्षः) अर्थात् नक्षत्रका कुलमान होता है। **दूसरी परिस्थिति-** इष्टकाल से नक्षत्रका मान कम हो, तो अग्रिम नक्षत्रमें जन्म हुआ है ऐसा जानना चाहिए। इस परिस्थितिमें इष्टकालमें से नक्षत्रका मान घटादें, शेष भयात् (गतर्क्षः) होगा। इष्ट दिन नक्षत्रमान को ६० घटी में से घटाकर शेष घटी पलोंको अग्रिम दिनके नक्षत्रमान में जोड़ देने पर भभोग (सर्वक्षः) होगा। कुल नक्षत्रमान के चार भाग करके देखें, भयात् किस चरण तुल्य बना है। नक्षत्र चरणाक्षर तुल्य जातकका सुन्दर सा नाम रख दें।

नक्षत्रमान घटना-बढ़ना- चन्द्रमाकी दैनिक गति पर निर्भर करता है। कोई भी नक्षत्र कभी भी कम से कम ५२ घटी और अधिक से अधिक ६८ घटी तक हो सकता है। वृद्धि होने पर तीनों दिनका नक्षत्रमान जोड़कर भभोग बनाना चाहिए। अभीष्ट दिन यदि नक्षत्र क्षय हो और इष्ट प्रातःकालीन भोग नक्षत्रमान से अधिक हो तो इष्ट में से नक्षत्रका मान घटानेपर भयात् बनेगा और समाहत नक्षत्रके अन्तिमकालमें से प्रातःकालीन नक्षत्रकामान घटानेपर क्षय होनेवाले नक्षत्रका भभोग बनेगा। **नोट-** इष्ट बनानेकी अत्यन्त सरल सुबोध नूतन विधि लग्नसारिणी के नीचे लिखी है। नक्षत्र चरणाक्षरोंका विवरण देखिए अ व क हा डा चक्र में। हम अपने पंचांगके पाठकोंकी सुविधाहेतु इसी प्रकरणमें नक्षत्र चरणाक्षरों पर बनने वाले आधुनिक सुन्दर नाम दे रहे हैं।

छठीपूजन- जन्मदिन से गणना कर छठे दिन प्रदोषकाल में करना चाहिए। सपरिवार देशकाल संकीर्तन, संकल्पकर, षष्ठीदेवी वैमाता (परमेश्वर की योगमाया) सहित विधिका सविधि पूजनकर त्रय तापोंसे शिशुकी रक्षा हेतु प्रार्थना करें-

अथाहिवरदे देवि महाषष्ठीति विश्रुते।
शक्तिभिः सह बालं मे रक्ष जागरवासरे।।
शक्तिस्त्वं सर्वदेवां लोकानां हितकारिणी।
मातर्वालमिमं रक्षमहाषष्ठिनमोस्तु ते।।
लम्बोदर महाभाग सर्वोपद्रवनाशनं।
त्वत्प्रसादादविघ्नेश चिरंजीवतुबालकः।।
जननी सर्वभूतानां बालानां च विशेषतः।
नारायणी स्वरूपेण बालमेरक्ष सर्वदा।।

जातकर्मसंस्कार- जन्म से १० या ११ दिन नामकरण (दसोठन) होना चाहिए। अन्य आचार्य १२ वें दिन को भी शुभ कहते हैं अन्यथा कुलाचरणके अनुसार शुभ वार में रिक्ता व अमावस्या तिथियोंको छोड़कर अश्वि.रो मृ पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. उफा. उपा. श्र. ध. श. उभा. रे. नक्षत्र तथा शुभ लग्न में यज्ञानुष्ठान कर बच्चेका नाम रख, दक्षिण कान में ३ बार राम कहें।

मूल संज्ञक नक्षत्र अश्विनी, श्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती में जन्मे जातकोंका मूल शान्तिविधान २७वें दिन के लगभग उसी नक्षत्रमें होता है, जिसमें बच्चा जन्म लेता है।

ज्ञानवृद्धि संस्कार- स्वर्णयुक्त अनामिका अंगुली से शुद्ध गोघृत तथा शहद मिलाकर **ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वास्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः त्वयि दधामि,** इन चारों मन्त्रोंको बोलते हुए नवजात शिशुको थोड़ा-थोड़ा मधु अथवा घृत चटाने से ज्ञानकी वृद्धि होकर जातक यशस्वी होता है।

कुआँ पूजन मुहूर्त्त- मंगल,शनि व रविवार रिक्ता तिथि (४।९।१४।३०) मलमास, पितृपक्ष तथा गुरु शुक्रास्तकाल को छोड़कर शुभ योग एवं मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु, मूल तथा श्रवण नक्षत्र एवं शुभलग्न चन्द्र बल देखकर प्रसूता कूप का पूजन करें।

प्रसूतास्नान मुहूर्त्त- अश्विनी, रो. मृ. उफा. ह. स्वा. अनु. उषा. उभा. नक्षत्रोंमें, कुयोग, क्रूर पाप वार तथा रिक्ता ४।९।१४।३० तिथियोंको छोड़कर प्रसूंता स्त्रीको स्नान करवाना शुभ है। जल में अजवायन उबाल लेने से ग्रह दोष तथा रोग नाश होता है।

पिता घर में थे या नहीं? चन्द्रमा जन्मलग्नको न देखता हो अथवा बुध-शुक्र के मध्य बैठा हो, या मंगल ही सातवें स्थानमें बैठा हो, एवं लग्नमें शनि बैठा हो तो बच्चेका जन्म पिताकी अनुपस्थितिमें हुआ है, ऐसा जानें। कुण्डलीके ८।९।११।१२ वें स्थानमें सूर्य चर राशिका हो तो पिता जन्मसमय दूर दराजके देशमें थे, अगर सूर्य स्थिर राशिका हो तो पिता स्वदेशमें ही थे। उक्त स्थानोंमें सूर्य द्विस्वभाव राशिका हो तो मार्गमें कहनाचाहिए।यदि चन्द्रमा लग्नको देखता होतो पिताघर पर थे।

उप-सूतिकाज्ञानम्- जन्मकुण्डलीमें लग्न और चन्द्रमाके मध्य जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकाएं जननीके पास थी। लग्न व लग्नेशेके साथ व इनके २।१२ स्थानमें कुलग्रह संख्यांक तुल्य उपसूतिका जानें।

द्वितीयप्रकार- लग्नसे सप्तम (अदृश्यचक्रार्ध) तक ग्रह हों तो उपसूतिका जननीके कक्षमें थी और यदि सप्तमसे लग्नपर्यन्त (दृश्यचक्रार्धमें) ग्रह हो तो उपसूतिकाएं प्रसूतिस्थान से बाहर थीं ऐसा जानें। प्रजनन प्रसंगमें सहायक दाई,नर्स,लेडी व पुरुष डाक्टर अथवा परिवारियजनोंका वर्ण, जाति अवस्था रंग रुप आकृति स्वभावादि ग्रहोंके अनुसार जानना चाहिए। जितनेग्रह उच्चकेहों या वक्री हों, उनकी संख्यांक ३ गुणा, अपनी राशि, अपने नवांशमें पड़े ग्रह २ गुणा, उपसूतिकाओंके परिचायक होते है। नीच अस्तगत ग्रह संख्याको आधा करके उपसूतिका कहनी चाहिए। लग्नेशका संयोग जैसे ग्रह के साथ होगा तत्काल वैसा ही संस्कार बनेगा।

तृतीयप्रकार- मीन व मेष लग्नमें जन्म होने पर दो उपसूतिका होती हैं। वृष-कुम्भ में ४,कन्या-तुला में ७,कर्क-धनु में ५,मिथुन-सिंह में ५, वृश्चिक में ८ और मकरमें जन्महोनेपर ३ उपसूतिकायें होती हैं।

छागे सिंहवृषे लग्ने जायते नालवेष्टितः।
वामभागे च नारीणं पुरुषाणां च दक्षिणे॥

मेष सिंह और वृष लग्न में लड़के का जन्म हो तो नाल दाहिने भागके प्रत्यंगमें लिपटा था। उक्त लग्नोंमें कन्या जन्मे तो नाल बामभाग में लिपटा हुआ था ऐसा जानना।

बच्चा रोया था या नहीं?- जन्मलग्न मेष, वृष, सिंह, मकर और तुला हो तो बच्चा उत्पन्न होते ही रोया था ऐसा कहें। कुम्भ-कन्या लग्नमें कम रोते है, अन्य लग्नोंमें रोते ही नहींहै।

जन्म परिज्ञानम्- ३।५।६।७।८।११ ये शीर्षोदय राशियां हैं। अर्थात् जन्म समय इन राशियोंका नवांशलग्नमें हो तो शिरके बल जन्म हुआ जानें। १।२।४।९।१० ये पृष्ठोदय राशियां हैं। इनका नवांश जन्म समय में हो तो पैरोंके बल जन्म हुआ जानें और मीनका नवांश लग्नमें होने पर हाथोंके बल जन्म होता है।

प्रसूतागृह द्वार ज्ञानम्- जन्म लग्न ४।७।८।११ में प्रसूता कक्ष का द्वार पूर्व में होता है। इसी प्रकार ३।६।९।१२ में उत्तर दिशामें २ में पश्चिममें और १।५।१० में मुख्य द्वार दक्षिण दिशामें जानना चाहिए।

द्वितीयप्रकार- केन्द्रगत ग्रह स्थितिके अनुसार सूतिका ग्रहका द्वार जानना चाहिए अर्थात् सर्वाधिकबली ग्रहकी जो दिशा हो उस ओर दरवाजा कहें। केन्द्रमें ग्रहाभाव होनेपर लग्न या लग्नेशकी दिशामें दरवाजा समझें।

सूर्यशुक्रो भौमराहु शनिचन्द्रौ बुधो गुरुः।
पूर्वादीनां क्रमादेते दिशानाथाः प्रकीर्तिताः॥

सूर्य, शुक्र, भौम, राहु, शनि, चन्द्र, बुध और गुरु ये क्रमशः पूर्व, आग्नेय, दक्षिणादि दिशाओंके स्वामी माने गये है।

जन्म समय जातक रोया था या नहीं? मेष, मिथुन, सिंह और धनु में जन्म होने पर बच्चा शीघ्र रोया ऐसा कहें। कन्या, तुला और कुम्भलग्न में जातक कम रोता है। शेष वृष, कर्क, वृश्चिक, मकर और मीन लग्नोंमें बच्चे देरी से रोते हैं।

जन्म भूमि पर हुआ या शय्या पर? इस प्रश्नका उत्तर युक्तिसंगत विचारकर देना चाहिए। वर्तमान समयमें अधिकतर बच्चोंकाजन्म नर्सिंग होम या अस्पतालोंमें होता है जोकि बहुमंजिले बने होते हैं। जन्मलग्न यदि ४।५।६।७।९।१२ हो तो जन्म शय्या जमीनसे उच्चस्थानमें हुआ जानें। अन्य लग्नोंमें भूमिपर कहें। मीनलग्नमें द्वितीय या तृतीय मंजिल पर समझें।

मेषादि राशियोंका अंग विभाग- कालपुरुष के शिर में मेष राशिका स्थान है, मुंखमें वृषका, दोनों भुजाओंमें मिथुनका, हृदयमें कर्कका, उदरमें सिंहका, कमरमें कन्याका, बस्ति (मूत्राशयगुप्तेन्द्रिय) में तुला तथा वृश्चिकका, उरु (दोनोंजंघाओं) में, धनुका, दोनों घुटनोंमें, मकरका, पिण्डलियोंमें, कुम्भका और मीनराशिका दोनों पैरोंमें, स्थान होता है।

अन्य आचार्य जन्मकुण्डलीके १२ भावोंमें अंगोंकी कल्पना इस प्रकार करते है यथा- प्रथमभावमें शिर, २ में मुख, ३ में भुजा, ४ हृदय, ५ में उदर, ६ में कमर, ७ में मूत्राशय, ८ गुप्तेंद्रीय, ९ में जंघा, १० में जानु, ११ में घुटने तथा १२वें भावमे पाद का विचार करना चाहिए। जो राशि कालपुरुषके अंग स्थित शुभाशुभ ग्रह से प्रभावित हो तथा जन्मांगचक्र अंगविभागका ध्यान कर ग्रह स्थितिके अनुसार अच्छा बुरा फल कहें।

चिन्ह ज्ञानम्-

षट् त्रिकोण वा लग्न रवि, बुध भाखै धरि ध्यान।
वामे कछु लहसन कहै, गर्ग-वचन परमान॥
भानु तथा सौरी तनु, धन कुज कंटक चन्द।
बालक को षट् अंगली, भाषत कविकुल वृन्द॥
तनु स्थान मँहसुक्रहोय, अष्टम जावै राहु।
वाम कर्ण वा मस्तकै, अवस चिन्ह दरसाहु॥
सुहृद भाव मँह कवि तमस, भौम सौरि वा लग्न।
वामपाद के चिन्ह कौ, भाषत ज्योतिषमग्न॥
नौमे पांचै भृगु बसै, तनु वा चौथे मन्द।
मृत्यु मँह जावै बुध गुरु, उदरे चिन्ह भणद॥

काणयोग ज्ञानम्-

तनु धन व्यय पतियुक्त भृगु, आइ बसै त्रिक धाम।
वा ससिधन कवि पापयुत, ताहि नेत्र बेकाम॥
सा ऽर्क सुक्र तनु-नाथयुत, भवन बसै त्रिक् जाय।
जन्म अन्य यहि जोग है, भाषत बुध समुदाय॥
तात मात भ्राता तनय, मातुल त्रिय घर-नाथ।
चन्द्र भौम जो द्वादसै, बाम नैन की हानि॥
भानु राहु दाहिनो नयन, बुध जन कहत बखानि॥

अंगोमें ग्रहोंका अधिकार- शिर व मुखमें सूर्यका अधिकार है ऐसे ही वक्षस्थल तथा गलेमें चन्द्रका, पीठ व उदरमें मंगलका, हस्त एवं पैरोंमें बुधका, कटिप्रदेश व जांघोंमें गुरुका, गुप्तेन्द्रियोंमें शुक्रका, जंघा व उरुप्रदेशमें शनिका अधिकार होता है। जन्मसमय अथवा प्रश्नसमय जब जैसे ग्रह जिन अंगोंके जिन-जिन भागोमें गतिशील होते हैं उन अंग प्रत्यंगोंमें वैसे ही दुख-सुख उपस्थित हुआ करते हैं।

सूर्य, भौम और गुरु पुरुष ग्रह है, शुक्र, चन्द्र स्त्री ग्रह हैं तथा बुध और शनि नपंसुक हैं। पुरुषोंके जन्म समयमें पुरुषग्रह तथा स्त्रियोंके जन्म समयमें स्त्रीकारकग्रह व नपुसंकोंको नपुसंकग्रह उत्तम फल देते हैं।

मासोंमें प्रसव दोष- चैत्रमें कुतिया, वैशाखमें ऊँटनी, ज्येष्ठमें बिल्ली, श्रावणमें गधी व घोड़ी, भाद्रपदमें गौ,कार्तिकमें स्त्री, मार्गशीर्षमें हथिनी, पौषमें बकरी और माघमें भैंस प्रसूता हो तो पिता या घरके मालिक को ६ मास तक अरिष्ट रहता है। श्रावणमें दिनको घोड़ी तथा माघमें बुधवारको भैंस प्रसूता हो तो संरक्षकको महाभय जानें। शान्त्यर्थ प्रसूता गौ भैंस आदिका दानकर योग्य आचार्यसे यज्ञानुष्ठान,शान्तिपाठ करें॥

बालकष्टावली चक्रम्

दिन-मास-वर्ष परित्वेन नन्दादिमातृकाग्रसितरोगोपद्रव एवं स्वरक्षितोपायादि 'रावणकृतकुमारतन्त्र-चक्रदत्त-उल्लिखितं प्रदर्शितम्'।

पूतना ग्रहण का समय	पूतना ग्रसित रोग लक्षण	मूर्ति निर्माण हेतु उपयोगी पदार्थ	पूजन सामग्री वस्तनाम(द्रव्य)	धूप तथा वलि दें	धूनी हेतु वस्तुएं उपल - अग्नि	दिन	रोगीकेसिरकेऊपरसे७ वारबलिनिःसारण मन्त्र	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र व सबके लिए औषधि	शरीर में मर्दन करने हेतु विभिन्न पदार्थ
नन्दा मातृका प्र.दिन,प्र.मास व प्र.वर्ष में	अधिक रुदन, तीव्र ज्वर, मूर्च्छा बेहोशी निद्राभंग	नदी या तालाब के दोनों किनारों की मृत्तिका	चावल,श्वेतफूल, ध्वजा, दीपक, पान, सराई	गन्ध, धूप, मांस, मद्य, चौमार्ग पर	सरसों,मेंढ़ासिंगी, नीम के पत्ते, शिव निर्माल्य धतुरादि	४	ॐनमोभगवत रावणाय हन हन,मुञ्चमुञ्चस्वाहा। नन्दामातृकायै नमः।।	ॐब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तुत्वरितं बालं मुञ्चमुञ्च कुमारकम्।। सर्वोषधि	नीमकी छाल, खैर छाल, काहू छाल पकाकर मर्दन करें।
शुभदामातृका द्वि.दिन, मास व वर्ष में	ज्वर,कम्पन,अति प्रलाप, निद्राभंग, निश्चेष्ट होना	सवाकिलोचावलका आटा,गङ्गाजल, घी से मूर्ति बनाना	दही, मद्य, तिल, मछली का मांस	अगर,तगर, माषान्न,रोली चौराहे पर	शिवनिर्माल्य,खश, बिल्ली के बाल, घी, दूध	३	ॐनमो रावणाय हन हन मुञ्चमुञ्चफट्फट् स्वाहा। शुभदामातृकायै नमः।।	लाजवन्ती, कूट, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, लोध क्वाथ	गौ या बकरी के मूत्र में देवदारु, नागरमोथ, चन्दन पकाकर मर्दन करें।
पूतनामातृका तृ.दिन, मास व वर्ष में	आकाश निरीक्षण मुष्टिका बंधन, कंपन, चिल्लाना	नदी या तालाब के दोनों तटोंकी मिट्टी का पुतला बनाना	पान, लाल पुष्प, चन्दन, ध्वजा, दीपक, भात	भात,मांस, मद्यदक्षिणमें चौराहे पर	गुगल,सरसों,नीम के पत्ते, मेंढ़ासिंगी, शि. नि.	३	ॐनमो रावणाय नमःहन हनमुञ्चमुञ्च,त्रासयत्रासय स्वाहा।पूतनामातृकायैनमः।।	नीम की छाल, विष्णुकान्ता, कपास पेड़ के क्वाथ से	विदारीकंद, श्वेतदाख, हरताल, मैनसिल, राल, कूकट तेल घीमें पकाकर मर्दन करें
मुखमण्डिकामा. चतुर्थ दिन मास व वर्षमें	ज्वर, ग्रीवा न झुके मुट्ठी बांधे, रोता रहे, अधिक सोवे	नदी किनारे की मृत्तिका,चारस्थानों का जल लेना	कमलपुष्प,श्वेत पुष्प, गन्ध, ताम्बूल,चार दीये	१३पूए,मद्य, मछली,मांस, छाछउत्तरमें	केसर, लोहवान, काली मिर्च,	३	ॐनमो रावणाय हन हन मुञ्च मुञ्च स्वाहा। मुखमण्डिकायै नमः।।	कैथ, बेल, अरण्य, अड़ूसा, कूट और श्वेत अरण्ड क्वाथ	भंगरे का रस और वच को तेल में पकाकर मर्दन करें।
शीतपूतनामातृका पंचम दिन, मास व वर्ष में	ज्वराधिक्य, कंपन भाषण न करे, मुट्ठी बांधे रहे	कुम्हारके चाककी मिट्टी से पूतना रूपीपुतला बनाना	ताम्बूल,मीठाचावल, श्वेतपुष्प, ध्वजा, पांच दीपक	५बड़े,गोघृत सुपारी लौंग ईशानमें	सांप की कांचली, नीम के पत्ते, घी, शि. नि.	३	ॐ नमो रावणाय चूर्णय चूर्णय स्वाहा। शीतपूतनायै नमः।।	गौमूत्र, अजामूत्र, देवदारु, नागरमोथा, चन्दनादि क्वाथ	कुटकी, नीमछाल, खैरछाल, पलास, काहूछाल को घृत में पकाकर मर्दन करें।
शकुनिमातृका छःदिन, मास व वर्ष में	ऊपर को देखे, ज्वर, प्रलाप कंपन हो, क्लेश करे	सवाकिलो गेंहूंके आटे का सतीर्थो-दक जलसे बनावें	श्वेत-पीत-लालपुष्प, १०दीये,१०ध्वजा दही के बड़े	मद्य,मांस,घी लौंगइलायची आग्नेयदिशा	शि.नि.घृतलहसन गूगल,सरसों,सांपकी कांचली,नीम	२	ॐ नमो रावणाय चूर्णय चूर्णय हन हन स्वाहा।। शकुनि मातृकायै नमः।।	केतकी, आम की, जरु की और कैथ वृक्ष की जड़ के क्वाथ	झाऊ,महुआ, खस, गौरीसर, कमलनाल, पद्मकाष्ठ, प्रियंगु मजीठ, गेरु जलयुक्त मर्दन।
शुष्करेवती मा. सप्तम दिन, मास व वर्ष में	ज्वर, गात्रकंप, मुष्टिबंधन,अधिक रुदन करे या हंसे	नदी या तालाब तल की मिट्टी का पुतला बनावें	लालपुष्प,चावल, ताम्बूल,खिचड़ी, १० दीये	मद्य,केसर, केवड़ा,सिंदूर पश्चिमदिशा	शि.नि.सरसों, मेंढ़ा सिंगी, खस, घृत	३	ॐनमो रावणाय तत्तेजसे हनहनमुञ्चमुञ्चस्वाहा। शुष्करेवतीमातृकायै नमः।।	सतीर्थोदक जलम्। सर्वोषधि स्नानम्।।	प्रियंगु पुष्प, सौंफ, चित्रक, गौमूत्र, दही और कांजी क्वाथ मिलाकर मर्दन करें।
नानामातृका अष्टम दिन मास व वर्ष में	दुर्गंधयुक्त ज्वर, गात्रकंप आहार तथा निद्रानाश	गेरु मिट्टी का गंगाजल से सुन्दर पुतला बनावें	ध्वजा, लाल चन्दन,पीपली,लाल फूल, दूध घी	दूध,मांस, ध्वजा,चंदन प्रातःकाल	चन्दन, मद्य, लोहवान, लौंग	४	ॐनमोरावणायत्रैलोक्यविद्रावणाय चतुर्दशयोक्षणाय। ज्वरहनहनॐफट्स्वाहा।।	बेलछाल, अरण्डी, जड़ और कणगच की जड़ का क्वाथ	प्रियंगु पुष्प, जवासा, सौंफ, चित्रक छाल,गौमूत्र,दही कांजी तेलमें पकाकर मर्दन करें।
सूतिकामातृका नवम दिन, मास व वर्ष में	ज्वर, शरीरपीड़ा, वमन करे, बेहोशी हो जाये, सिरदर्द	नदी या तालाब के दोनों किनारों की मिट्टी लें	श्वेतवस्त्र, गन्ध, १३ दीये, १३ ध्वजा, घी	गूगल,नीम पत्ती,गौसींग सरसों,उ.दि	गूगल, लौंग, सूतिका बाल	३	ॐ नमो रावणाय हन हन स्वाहा। सूतिका मातृकायै नमः।।	शुभदामातृका विधानोक्त जानें।	शुभदामातृका विधानोक्त मर्दन करें।
क्रियामातृका दशम् दिन, मास व वर्ष में	ज्वरातिसार, बहु रुदन, हड़फूटन, स्वांस-कास	पवित्र नदीके दोनों किनारोंकीमृत्तिकासे क्रिया पुतलाबनावें	ताम्बूल,लालफूल, रक्तचन्दन५ध्वजा ५दीपक,मालपुआ	मद्य,मालपुआ ताम्बूल,घी, वायव्यकोण	काकविष्टा,गौका सींग,नीम पत्ती, बिल्लीके बाल,घी	४	ॐ नमो चर्णित हस्ताये मुञ्च मुञ्च स्वाहा। क्रिया मातृकायै नमः।।	नीम छाल, विष्णुकांता वन वृक्ष का क्वाथ	नीम की छाल, गोखरु, हर्र को तेल में पकाकर मर्दन करें।
पिपिलिकामातृका एकादश दिन मास व वर्ष में	तीव्रज्वर, अरुचि, अफारा, वमन, कम्पन, मूर्च्छा	सवा किलो गेंहूं चूर्णका देवस्थान जलसे बनावें	रक्तचन्दन, पीत पुष्प,दूध,ताम्बूल ७ दीपक	गंध,पूआ,मांस मद्य,पीलासिंदूर पूर्व दिशा	शि.नि. गूगल, गौका सींग, सांप की कांचली, घृत	३	ॐ नमो रावणाय मुञ्च मुञ्च स्वाहा। पिपिल मातृकायै नमः।।	नीम, पटोल, कटयाली, गिलोय और अड़ूसा का क्वाथ	कैथ, बेल, अग्नि मथ, अड़ूसा, कूटकांगनी क्वाथ से मर्दन करें।
कामुकामातृका द्वादश दिन, मास व वर्ष में	अनावश्यक हंसी, ज्वर,कम्पन,श्याम वर्ण, चिल्लाए	सवा किलो गेंहूं चूर्णकानदी-सरोवर जलसेपुतला बनायें	ताम्बूल, गन्ध, श्वेतपुष्प,७पुआ, ७ध्वजा,गङ्गाजल	लौंग,केसर जायफल,काली मिर्चचौराहेपर	शि.नि. गूगल, सरसों, घृत, लौंग	३	ॐ नमो रावणाय मुञ्च मुञ्च हन हन स्वाहा। कामुक मातृकायै नमः।।	पीपल, पीपला मूल, कटहरी के क्वाथ में गोघृत पकाकर	तिल, तैल, गिलोय व अड़ूसा क्वाथ से मर्दन करें।

विवरणः- कोनसी पूतना किस दिन, किस मास, किस वर्षमें ग्रसती(परेशान)करती है। उससे बचने के उपाय इस चक्र में वर्णित हैं। प्रत्येक मन्त्रको २१बार पढ़कर बलिको सात बार रोगीके सिर से नीचे उतार कर उल्लिखित स्थान पर रखें। रोगी रोगमुक्त होकर स्वस्थ हो जायेगा। १सहस्र=१०००

अथ बाल रक्षा विधि (प्रयोगसारे):- यदि दुष्ट दृष्टि(नजरादिदोषों)के कारण बालकके शरीरमें कोई रोग कष्टहो तो-**ॐ नमो वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतित्वरित बाल मुञ्चमुञ्च कुमारकम्।।१।। कृष्ण!रक्ष शिशु- शङ्ख- मधुकैटभ-मर्दन।। प्रातःसङ्गममध्याह्ने सायाह्ने शुचिसन्ध्ययोः।।२।। महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्टनिषूदनः।। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृ ग्रहानपि।।३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्।। त्राहि त्राहि हरे नित्य त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।।** इन चार मन्त्रोंसे अभिमन्त्रित हुई गौके गोबरकी शुद्ध भस्मको बालकके मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगोंमें लगाने से बालक का कष्ट सुनिश्चित दूर हो जाता है।

नोटः-एकसहस्र=१०००घृत आहुति गायत्रीमन्त्र से देने पर सम्पूर्ण ज्वरों एवं व्याधियों का शमन हो जाता है।

अथ नक्षत्र कष्टावली

अश्विन्यादि नक्षत्राणां रोगोत्पन्न कष्टदिनसंख्या, कष्टलक्षण, शान्त्यर्थ जपसंख्या, वेदोक्त मन्त्राः एवं गंधादि पदार्थानाम् ज्ञानायचक्रम्

नक्षत्र व उनकेस्वामी	कष्ट दिन	नक्षत्रचरणानुसार कष्टदिनसंख्या प्र.	द्वि.	तृ.	च.	साध्यासाध्य ज्वरादि रोग कष्ट के लक्षण	जपसंख्या	जपनीयवेदोक्तमन्त्राः	गन्धादि पदार्थ (वस्तुनाम)	शान्तयर्थ धारण करें	होम द्रव्य	वलि द्रव्य	दान वस्तुएं और दान करने का समय
अश्विनी (दस्त्रौ)	९ दिन	९	११	१०	२०	वातज्वर, गात्र तथांग पीडा निद्राभंग, बुद्धि भ्रम, अरुचि	५ सहस्त्र	ॐअश्विना तेजसा चक्षुःप्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः।	श्वेतचन्दन, कमलपुष्प, घृत, गुग्गल, धूप, घृतदीप, क्षीर, गुड़, मिष्ठान्न	अपामार्ग मूलम्	खांड, यव, घृत मेवा	गुडोदन तिल	घृतकुम्भ, सुवर्ण, तुलादान प्रातःकाल दान करें
भरणी (यम)	११ दिन	०	८०	४०	११	उल्टी दस्त, तीव्रज्वर रोग आलस्यप्रमाद, अन्यरोग	१० सहस्त्र	ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे॥ ॐ यमाय नमः॥	अगरगन्ध, कनेरपुष्प, घृत, दीप, गुग्गल, धूप, घृत, गुड़, मिष्ठान्न	अगस्त मूलम्	घृत, मधु, तिलाक्षत	मिपरान्न (खिचड़ी)	छायापात्र, दीप, गो, भैंस, घृत युक्त शक्कर, सायंकाल में
कृत्तिका (अग्नि)	९ दिन	९	११	१६	२८	नेत्रविकार, अनिद्रा, भय, अति दाह, उरुशूल, पित्तप्रकोप	१० सहस्त्र	ॐअग्निर्मूर्द्धा दिवःककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम्। अपाᳬ रेताᳬ सि जिन्वति॥ ॐ अग्नये नमः॥	श्वेतचन्दन, जूहीपुष्प, घृतदीप, गुग्गलधूप, तिलमाषान्ननैवेद्य	कर्पास मूलम्	तिल, यव, घृत, शर्करा	पायसघृत मोदक	सुवर्ण, गोदुग्ध, दही, चावल प्रदोषकाल में
रोहिणी (ब्रह्मा)	७ दिन	७	९	१८	३०	शिरपीड़ा, ज्वरप्रकोप, कुक्षिशूल, प्रलाप, मोह	५ सहस्त्र	ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतःसुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	श्वेतचन्दन, कमलपुष्प, दशाङ्ग धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य भोग	अपामार्ग मूलम्	तिलाज्य घृत, यव	मध्याज्य क्षौद्र शाल्यान्नक्षीर	सप्तधान्य, कृष्णगाय, कमण्डल, कन्या भोजन, मध्याह्न में
मृगशिर (चन्द्रमा)	एक मास	९	५	७	१०	त्रिदोषजन्य महाकष्ट, अर्धगात्रपीड़ा, शीतप्रकोप	१० सहस्त्र	ॐइमन्देवाअसपत्नᳬसुवध्वंमहते क्षत्रायमहते ज्यैष्ठ्यायमहते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियायइममुष्य पुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविश एष वोऽमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳬ राजा॥ ॐचन्द्रमसेनमः॥	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृतदीप, पायस, अपूपमध्योदन, नैवेद्य	जयन्ती मूलम्	दधि, मीठा पायस, घी	दधि, शर्करा, शाल्यान्न	चावल, दधि बूरा, सवत्सा गोदान, चन्द्रमुखे रात्रि में
आर्द्रा (शिव)	मृत्यु तुल्य	०	२८	०	०	त्रिदोषजन्य, तीव्रज्वर, सर्वाङ्गपीड़ा, अनिद्रा	१० सहस्त्र	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ रुद्राय नमः॥	श्वेतचंदन, सौरभपुष्प, दशाङ्ग धूप, घृतदीप, पायसौदन, नैवेद्य	सचन्दनाश्वत्व मूलम्	घृत, मधु, शर्करा	दध्योदन मध्वाज्य	श्यामा बछड़ा, ऊनी वस्त्र, समस्त मेवा, बिजिया, दिनमें
पुनर्वसु (अदिति)	७ दिन	७	१४	२	२१	ज्वरातिसार, शिरपीड़ा कटिप्रदेश, पीड़ाव्यथा	१० सहस्त्र	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा अदितिःपञ्चजना अदितिर्जनित्वम्॥ ॐ अदितये नमः॥	हरिद्रा, कुंकुमगंध, सेवन्तिका पुष्प, अष्टगंधधूप, घृतदीप, घृताक्तपीतवर्णान्ने, नैवेद्य	अर्कवृक्ष मूलम्	घृत, दूध, तण्डुल	साज्य पीत तण्डुल	वस्त्राभूषण, कमलपुष्प, पांच कन्याओं को भोजन, मध्याह्न में
पुष्य (गुरु)	७ दिन	६	७	१०	२१	ज्वराधिक्य, उदरशूल, महाकष्ट, वायुप्रधानरोग	१० सहस्त्र	ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये नमः॥	कुमकुमगन्ध, कमलपुष्प, घृत, गुग्गल, घृतदीप, घृतपायस, शर्करा नैवेद्य	अपामार्ग मूलम्	घृत, बूरा, पायस	समण्डक मोदक	गो, स्वर्ण, पीतवस्त्र, गुरु सम्मान, दिन में
आश्लेषा (सर्प)	मृत्यु तुल्य	०	०	४१	०	सर्वाङ्गपीड़ा, पादरोगोत्पात विषभय, मृत्युतुल्यकष्ट	१० सहस्त्र	ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः॥	कुंकुम, अगरगन्ध, अगस्तपुष्प, घृत गुग्गल, धूपघृतदीप, घृतक्षीर, नैवेद्य	पद्मावती मूलम्	शर्करा, मेवा घृत, बड़दूध	हवि, दध्योदन	सवत्सा, श्यामा गो, छायापात्र, मीठा दूध, तारों की छाया में
मघा (पितर)	२० दिन	१५	७	१७	२०	शिररोग, अन्य उपद्रव अर्धगात्रपीड़ा, सन्ताप	१० सहस्त्र	ॐपितृभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमःपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यःस्वधानमः प्रपितामहेभ्यःस्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्नमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरःपितरःशुन्धध्वम्॥ ॐ पितरेभ्यो नमः॥	श्वेतचन्दन, चम्पकपुष्प, घृतगुग्गल धूप, घृतदीप, घृतयुक्तमिष्ठान्न, यव	भृंगराज मूलम्	तिल, घृत, तण्डुल	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिल गुड़, दही, तस्मई गोवत्सा गाय, मध्याह्न में
पू.फा. (भग)	मृत्यु तुल्य	०	२५	०	३०	गात्रव्यथा, ज्वरप्रकोप, शिर पीड़ा, अन्य असाध्यरोग	१० सहस्त्र	ॐभग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवाददन्नः। भग प्रणोजनय गोभिरश्वैर्भग प्रनृभिर्नृवन्तःस्याम॥ ॐभगाय नमः॥	श्वेतचन्दन, मालतीपुष्प, घृतविल्व, धूप, घृतदीप, अपूपोदन, मोदक	कटहरी मूलम्	मालकांगनी तिल, घृत	घृतोदन पायस	पित्तल, यव, माषान्न, सुवर्ण, गोदान, दिन में
उ.फा. (अर्यमा)	७ दिन	७	१४	७	६०	कुक्षिशूल, ज्वरातिसार शिरपीड़ा, अतिकष्टसाध्य	१० सहस्त्र	ॐदेवावध्वर्युश्चागतं रथेन सूर्यत्वधा मध्वायणᳬ समंजायेतंप्रलथायं वेनश्चित्रं वानाम्॥ ॐ अर्यमाये नमः॥	कर्पूर, केसरगन्ध, अर्कपुष्प, घृत, गुग्गल, घृतदीप	पद्मावती मूलम्	मेवा, तिल, घृत, शर्करा	घृत, शर्करा शाल्यन्न	वस्त्राभूषण, गोदान, अन्नादि दान, दिन में
हस्त (सूर्य)	१५ दिन	१५	१७	१५	०	उरुशूल, अफरा, दस्त, सर्वाङ्गपीड़ा, प्रस्वेदरोग	५ सहस्त्र	ॐविभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्य मध्वायुर्दधद्यज्ञपताधविहुतम्। वातजूतोयो अभिरक्षतित्मना प्रजाःपुपोष पुरुधा विराजति॥ ॐ सवित्रे नमः॥	रक्तचन्दन, केशरगन्ध, कमल पुष्प, घृतगुग्गल, घृतदीप, घृत पायस, नैवेद्य	जाति मूलम	दधि, मेवा, घृत, मीठा	मिष्ठान्न पायस	दूध वाली गो, सुवर्ण, गेंहू, गुड़, घी, अरुणोदय समये
चित्रा (त्वष्टा)	११ दिन	११	९	९	१६	अनेक रोगोपद्रव, कष्ट वातव्याधि, समायुक्त	१० सहस्त्र	ॐत्वष्टा तुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धनम्। द्विपदा छन्दऽइन्द्रियमुक्षा गोत्रवयोदधः॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः॥	केसर गंध, विचित्र वर्ण पुष्प, घृत, गुग्गल, धूप, घृत, दीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य	मलयज मूलम	तिलाज्य घृततण्डुल	विचित्रान्न, घृत	तिलगुड़, छायापात्र, मेवा, सब्जी, मध्याह्न में

अथ नक्षत्र कष्टावली

अश्विन्यादि नक्षत्राणां रोगोत्पन्न कष्टदिनसंख्या, कष्टलक्षण, शान्त्यर्थ जपसंख्या, वेदोक्त मन्त्राः एवं गंधादि पदार्थानाम् ज्ञानायचक्रम्

नक्षत्र व अकेस्वामी	कष्ट दिन	नक्षत्रचरणानुसार कष्टदिन संख्या प्र.	द्वि.	तृ.	च.	साध्यासाध्य ज्वरादि रोग कष्ट के लक्षण	जप संख्या	जपनीयवेदोक्तमन्त्राः	गन्धादि पदार्थ (वस्तुनाम)	शान्त्यर्थ धारण करें	होम द्रव्य	वलि द्रव्य	दान वस्तुएं और दान करने का समय
स्वाती (पवन)	मृत्यु तुल्य	६०	१७	३०	०	नानाकष्ट, वातव्याधि, तीव्र वातज्वर, सर्वाङ्गपीड़ा, भ्रम	१० सहस्त्र	ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्ते त्रिगाहि नियुत्वाय सोमपीतये॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध(दमनकपुष्प)अगर, धूप, गुग्गल, घृतदीप, नैवेद्य, घृतपायस	जाति मूलम्	तिल, यव घृत, शक्कर	घृत, पायस	स्वर्ण, रक्तधेनु, पक्वान्न, दान सन्ध्याकाल
विशाखा (इन्द्राग्नि)	१५ दिन	१५	०	४	१३	सर्वाङ्गशोथ, अतिदाह, ज्वरातिसार, कुक्षिशूल	१० सहस्त्र	ॐ इन्द्राग्नि आगत ॐ सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः॥	चन्दन, केशरगन्ध, कमलपुष्प, देवदारु, घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य	गुञ्जा मूलम्	आज्य, पायस इन्द्रजौ, घी	सहवि चित्रान्न	रक्त-पीत वस्त्र, कृष्णवृषभ, छायापात्र, दान प्रातः
अनुराधा (मित्र)	स्थिर रोग	६०	१२	३६	३०	शिरपीड़ा, तीव्रज्वर, शिरोरोग, आधाशीशी	१० सहस्त्र	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृतॐ सपर्यत। दूरे दृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत॥ ॐ मित्राय नमः॥	केशरगन्ध, कमलपुष्प, चन्दन, धूप, घृत, पायस, नैवेद्य, घृतदीप	सुपुष्प मूलम्	यव, मीठा घृत, आज्य	मध्वाज्य, गुड माषान्न	स्वर्ण, गौ, छायापात्र दान, अभिजिन्मुहूर्त समये
ज्येष्ठा (इन्द्र)	मृत्यु तुल्य	६१	९	६	४	पित्तविकार, कंपन, व्याकुलता, दांतपीसना	५ सहस्त्र	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रॐ हवे हवे सुहव ॐ शूरमिन्द्रम ह्वयामि। शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ॐ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ ॐ इन्द्राय नमः॥	श्वेतचन्दन, गन्ध, चम्पकपुष्प, सुगंधधूप, चित्रान्न, नैवेद्य	अपामार्ग मूलम्	तिल, घृत तण्डुल	दध्योदन, सुपुष्प	स्वर्ण, तिल, नीलवस्त्र, दान दिवासमये
मूल (राक्षस)	९ दिन	०	९	१५	६	मुख तथा उदर रोगोत्पात बेहोशी, भय, दुःस्वप्न	५ सहस्त्र	ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमाण ॐ स्वे योनावभारुखा। तां विश्वेदेवैर्ऋतुभिः संवदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नमः॥	अगरगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप, कृष्णागरुधूप, माषमिश्रान्न, नैवेद्य	मदार मूलम्	कन्द-मूल, घृत, आज्य	सहवि, माषान्न	गौ, छायापात्र, वस्त्र, कुमारी पूजा, दान प्रातःकाल
पू.षा. (जल)	मृत्यु तुल्य	०	१५	२४	१०	शिरपीड़ा, कम्पन, अन्यान्य महाकष्टअसाध्यरोगोत्पात	५ सहस्त्र	ॐ अपाघमप किल्बिषमपकृत्यामपोरपः। अपामार्ग त्वमस्मद दुःस्वप्न्यॐ सुवः॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	श्वेतचंदनगंध, कमलपुष्प, घृतदीप घृतगुग्गलधूप, घृतपायसान्न, नैवेद्य	कर्पास मूलम्	तिल, घृत तंडुल, मीठा	घृत, पायस, मिष्टान्न, हवि	स्वर्ण, वस्त्र, तिल, तण्डुल, जलकुम्भ, गोदान, मध्याह्न
उ.षा. (विश्वेदेव)	एक मास	३०	२४	२६	१६	कटिपीड़ा, उदरशूल, प्रलाप, वातव्याधि, ज्वरवेग	१० सहस्त्र	ॐविश्वेदेवाःशृणुतमॐ हवं मे ये अन्तरिक्ष य उपद्यविष्ठम्। अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्या स्मिन्बर्हिषि मादयध्वम्॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः॥	श्वेतचंदनगंध, कमलपुष्प, घृतदीप, घृतगुग्गल, धूप, घृतपायसान्न, नैवेद्य	कर्पास मूलम्	तिल, आज्य यव, मेवा	सहवि, पायस, तिलाज्य	आमान्न, स्वर्णदान, शुभलग्न मुहूर्त समये
श्रवण (श्रीविष्णु)	११ दिन	६०	२४	६	९	सर्वाङ्गपीड़ा, त्रिदोष भय, अतिसार, पक्षाघात, शोथ	१० सहस्त्र	ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ ॐ विष्णवे नमः॥	श्वेतचन्दन, मालतीपुष्प, कर्पूर, गुग्गल, धूप, घृतदीप, षड्रस, शाल्यन्न, नैवेद्य	अपामार्ग मूलम्	तिल, आज्य यव, शर्करा	सहवि, पायस	स्वर्ण, गौ, छायापात्रदान, शुभलग्न मुहूर्त समये
धनिष्ठा (वसु)	१५ दिन	१५	४	२०	२१	ज्वर, कंपन, रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ तथा अन्यरोग	१० सहस्त्र	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोःपवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः॥ ॐ वसुभ्यो नमः॥	श्वेतचन्दन, गन्ध, कमलपुष्प, धूप, गुग्गल, घृत, दीपक, घृतपायस, नैवेद्य	भृंगराज मूलम्	तिल, आज्य पायस, घी	पायस, मोदक, पुष्प, तिलपिष्ट	छत्रोपानत, अश्व, स्वर्ण, गोदानादि प्रातःकाल
शतभिषा (वरुण)	११ दिन	४	४५	३	२२	वातज्वर, सन्निपातजन्य कष्ट, कफ के विकार	१० सहस्त्र	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥ ॐ वरुणाय नमः॥	केशर, अगरगन्ध, कमलपुष्प, कर्पूर, चन्दन, धूप, घृतदीपक, घृतपीलिका, नैवेद्य	कमल मूलम्	आज्य, घी दध्योदन	घृत, गुड़, चित्रान्न	स्वर्ण, तिलान्न, घट, अश्व, छायापात्र दान रात्रि
पू.भा. (अजपाद)	मृत्यु तुल्य	०	१२	२१	३९	वमन, व्याकुलता, शरीर पीड़ा, त्रिदोषजन्यान्य असाध्य रोग	१० सहस्त्र	ॐ उत नोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः॥ विश्वेदेवाऽऋतावृधो हुवाना स्तुता मंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	चन्दनगन्ध, केसर, श्वेताऽर्कपुष्प, शतौषधि, मिश्रितपुष्प, घृतदीपक, दधिपायस, नैवेद्य	भृंगराज मूलम्	क्षीर, आज्य सर्करा, घी	दध्योदन, पायस	स्वर्ण, रजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छायापात्र दान प्रातःकाल
उ.भा. (अहिर्बु.)	७ दिन	१०	३	९	१५	अतिसार, उदरशूल, शोथ, हड़फूटन, अकारण भय	१० सहस्त्र	ॐशिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिॐसीः। निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननायराय स्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥ ॐ अहिर्बुध्न्यःनमः॥	चन्दन, कर्पूरगन्ध, कमलपुष्प, बिल्वपत्र, गुग्गल, घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य	अश्वत्थ मूलम्	तिल, आज्य यव, शर्करा	तिल, घृत, मुद्ग माष	स्वर्ण, रजत, तिल, कृष्णवस्त्र, दान शुभलग्न मुहुर्त्त
रेवती (पूषा)	स्थिर रोग	१८	१०	९	२०	वात-पित्त जन्य ज्वर, उदर शूल, चित्तभय, विषाद	५ सहस्त्र	ॐ पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्तव स्मसि॥ ॐ पूष्णे नमः॥	रक्तचन्दन, गन्ध, मन्दार पुष्प, गुग्गल, घृत, पायस, घृतदीप, नैवेद्य	अश्वत्थ मूलम्	तिल, आज्य तंडुल, घी	सहवि, दध्यन्न	रजत व पीतल पात्र, वस्त्र, वृषभ, छायापात्र दान प्रातःकाल

एक नक्षत्र जन्म दोष- पिता-पुत्र, माता-पुत्र व कन्या अथवा दो सहोदर भाइयोंका जन्मनक्षत्र एक ही हो तो दोनोंमें से एक की मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट हो, शान्त्यर्थ गौ, वस्त्र, सुवर्ण दान तजन्य नक्षत्र मन्त्रका जाप यज्ञादि से अरिष्ट निवारण होता है।

त्रिखल जन्म दोष- तीन पुत्रोंके बाद कन्या अथवा तीन कन्याओंके बाद पुत्रका जन्म हो तो 'त्रिखल' दोष माना जाता है। पुत्र पिताको, पुत्री माताको नेष्ट होती है। शान्तिहेतु नामकरण तक भूमिशयन तीनअन्न,तीनबर्तन, तीनवस्त्र, तीन प्रकार की मेवाएं तथा तीन प्रकारके फलादिदान, महामृत्युञ्जयजप यथाशक्ति करानेसे शान्ति होती है।

दांत निकलने का फल- बच्चेके जन्म से ही दांत निकले हुए हों तो माता-पिताको अरिष्ट होता है। ऊपरकी पंक्तिमें दांत होने से अधिक दुःखदाई होते है। प्रथम मासमें दांत निकलें तो स्वयं जातक को नेष्ट, दूसरेमें छोटे भाई, तीसरेमें बहिन, चौथेमें कुटुम्बी भ्राता और पांचवें मासमें दांत निकले तो मातुल (मामा) पक्षको नेष्ट होता है।

अशुभफलशान्त्यर्थ मां गंगाकी गोदमें पार्थिव पूजन, नाना परिवारकी ओरसे मामा शिशुके लिए वस्त्राभूषण, सप्तधान्य देकर बिना किसीके साक्षात्कार किए उल्टेपांव लौट जाय, ऐसा करनेसे भय नहीं होता है। छटे, सातवें आदि मासोंमें दांत निकलना श्रेष्ठ है।

गण्ड मूल विचार- रेवती, आश्लेषा, ज्येष्ठाकी अन्तिम दो-दो घटी और अश्वि., मघा, मूल के आरम्भकी दो-दो घटीका समय गण्डमूल होता है। अन्य आचार्य श्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती नक्षत्रकी अन्तिम १६ घटी और मघा, मूल, अश्वि. के प्रथम चरणको गण्डान्त कहते है। कुछ विद्वानोंके मत से रे. अ. श्ले. म. ज्ये. और मूल नक्षत्रका मध्यभाग चार घड़ी गण्डान्तकाल होता है।

तिथ्यादि गण्डान्त विचार- ५।९।१०।१५ तिथियोंकी अन्तिम और १।६।११वी तिथियोंके आरम्भमें एक-एक घटी गण्डान्तकाल होता है।

कर्क-सिंह, वृश्चिक-धनु, मीन-मेष इन लग्नोंकी सन्धिरुप एक घटी को लग्न गण्डान्त कहते हैं। गण्डयोगमें जन्मे जातकके लिए पूर्वाचार्योका आदेश इस प्रकार है-सर्वेषां गण्डजातानां परित्यागो विधीयते। वर्जयेद्दर्शनं तावत्तच्च षाण्मासिकं भवेत्।। तिथि गण्डे त्वनड्वाहं नक्षत्रे धेनु रुच्यते। काञ्चनं लग्नगण्डे तु गण्डदोषो विनश्यति।।

अशुभ फल

तिथ्यर्क्षगण्डे पितृमातृनाशो लग्ने तु संघौतनयस्य नाशः।
सर्वेषु नो जीवति हन्तिबन्धून् जीवन्पुनः स्याद्बहवारणाश्चः।।

अन्य मत

अश्विनीमघमूलादौ त्रिपट्कनवनाडिकाः।
रेवतीसार्पशाक्रान्ते मासाश्च ऋतुसायकाः।।
अश्विनीमघमूलादौ नाडिकाद्वितयंतथा।
अश्विनी मघमूलानां पूर्वाध बाध्यते पिता।।
पूषाहिशक्रपश्चार्द्धे जननीबाध्यते शिशौः।
पितृहा तु दिवाजातो रात्रिजातस्तु मातृहा।।
आत्मध्रुक् सध्ययोर्जातो नास्ति गण्डो निरामयः।

मूल नक्षत्रके कुल मानको आठसे विभाजितकर चार भाग मूल वृक्ष की जड़ में रखें, आगे चतुर्भागमें सातवां भाग और मिलाकर मूलवृक्षके स्तम्भमें रखकर यथाक्रम फलका विचार निम्नलिखित चक्रानुसार करें।

श्लेषा वृक्ष विभाग फलम्		मूल वृक्ष विभाग फलम्	
विभाग	हिस्सा फलम्	विभाग	हिस्सा फलम्
१ मूल (जड़)	४ मूल नाश	१ मूल (जड़)	७ मूलनाश
२ स्तम्भ	७ धन हानि	२ स्तम्भ	८ स्वयंहानि
३ त्वचा	१० भाई कष्ट	३ त्वचा	१० माताहानि
४ शाखा	८ माता कष्ट	४ शाखा	११ मामाकष्ट
५ पत्र	९ परिवारक्षयः	५ पत्र	१२ राज्यलाभ
६ पुष्प	५ मन्त्रीक्षयः	६ पुष्प	५ मन्त्रीलाभ
७ फल	६ अधिकलाभ	७ फल	४ धन लाभ
८ शिखा	११ आयु कम	८ शिखा	३ अल्पायु

❀ अथ पुरुष जन्म मूल विचार ❀

स्थान	शीर्षे	मुखे	स्कन्धे	वाह्वो	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्य	जानुहि	पादे
घटयः	५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६
फलम्	राज्य लाभ	पिता हानि	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	भोगी	बुद्धि-मान	बुद्धि-मान

❀ अथ कन्या जन्म मूल विचार ❀

स्थान	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	वाह्वो	हस्ते	गुह्य	जंघे	जानुहि	पादे
घटयः	४	६	५	५	१०	८	४	४	४	१०
फलम्	पशु नाश	धन हानि	धन लाभ	कुटिल हृदय	धन लाभ	दया-वान	कामिनी	मामा कष्ट	भ्रातृ कष्ट	वैध. कष्ट

❀ अथ मूल निवास ज्ञानार्थ चक्रम् ❀

जन्म मासानुसारेण	वै.ज्ये.मार्ग. फाल्गु	चैत्रश्राव.का.पौष	आषा.भाद्र.आ.माघ
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल का निवास और फल	पाताल में धनैश्वर्य वृद्धिः	भूमि में परिवार में हानिः	स्वर्ग में राज्य सुख प्राप्तिः

फलम्- स्वर्गे मूले भवेद्राज्यं पाताले च धनागमः।
मृत्युलोके यदा मूलं तदा शून्यं समादिशेत्।।

❀ अथ आश्लेषा विभाग फलम् ❀

स्थानम्	शिर	मुख	नेत्र	ग्रीवा	स्कन्ध	हस्त	हृदय	नाभी	गुदा	पाद
विभागम्	५	७	२	३	४	८	११	६	९	५
फलम्	राज्य प्राप्त	पिता हानि	माता हानि	नाना भोग	पितृ भक्त	बली हो	हिंसक	चोरी भ्रम	त्याग	धनैश्वर्य हानि

❀ अथ आश्लेषा वृक्षविभाग फलम् ❀

स्थानम्	फल	पुष्प	दल	शाखा	त्वचा	लता	स्कन्ध
विभागम्	१०	५	९	७	१३	१२	४
फलम्	धनैश्वर्य	धन वृद्धि	राजभय	धनहानि	मातृ हानि	पितृ हानि	अल्पायु

❀ अथ ज्येष्ठा जन्म द्वादश भाग फलम् ❀

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	४९	५५	५७	६०
विमाता कष्ट	नाना कष्ट	मामा कष्ट	माता कष्ट	स्वयं कष्ट	गोत्र हानि	दोनो कुल हानि	बड़े भाई हानि	श्वसुर कुल हानि	परिवार कष्ट	लघु भाई कष्ट	श्वशुर कष्ट

गण्डान्तफलम्- सन्ध्यारात्रिदिवाभागे गण्डयोगेध्रुवं शिशुः।
आत्मानं मातरं तातं विनिहन्ति यथाक्रमम्।।

कृष्णचतुर्दशी जन्मफलम्- चतुर्दशीविहित कालको ६ से विभाजित करके प्रत्येक भागका फल-प्रथमभागमें जन्म हो तो शुभ, द्वितीयमें पिता, तृतीयमें माता, चतुर्थमें मातुलपक्ष, पंचममें कुलके व्यक्ति सुहृदय महानुभाव कष्ट पाते हैं। छठे भागमें जन्म होनेपर धनकी हानि होती है।

नोट- गण्ड शान्ति विधान शान्ति प्रकरण में देखना चाहिए।

अथ अमावस्याके भेद- जिसमें चन्द्रमाकी कला दृश्य हो वह सिनीवाली और जिसमें कला अदृश्य रहे उसे कुहूवाली अमावस्या कहते हैं। सिनिअमावस्या जन्मफल- स्त्री,हथिनी,घोड़ी,भैंस,गौ,पालतूपक्षी,मृगी या दासीशिशुजन्में तो धन ऐश्वर्यहानि,व्यर्थकलंकअपयशका भय होताहै। कुहूअमावस्यामें प्रजनन समस्त दोषोंको करने वाला है। घरधनीकी आयुक्षय होती है। धन घटता है। शास्त्रकारोंने कल्याणकी इच्छासे शिशुका त्याग लिखा है। सविधि शान्ति यज्ञादि होने पर शुभमाना है।

अन्यकुयोगजन्मफलम्-

कुमार जन्मकाले तु व्यतीपातश्च वैधृतिः।
संक्रान्तिश्च रवेस्तत्र जातो दारिद्र्य कारकः।।
आम्रियं मृत्युमाप्नोति नात्रकार्या विचारणा।
स्त्रीणांञ्च शोकोदुःखञ्च सर्वनाशकरं भवेत्।।

स्त्री-दासी-गौ आदि पशु-यमल जन्मफलम्-

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिहि।
सुतौ च सुतकन्ये वा कन्या एव तथा पुनः।।
एकलिंगौ विनाशाय द्विलिंगौ मध्यमौ स्मृतौ।
पित्रोर्विघ्नकरौज्ञेयौ तत्र शांतिर्विधीयते।।

मूल नक्षत्र चारचरण जन्मफलबोधक चक्र

अश्विनी चार चरण फल		आश्लेषा चार चरण फल	
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
१. पिता को अशुभ	पिता को नेष्ट	१.शान्ति से शुभ	सुखसमृद्धि
२. धनैश्वर्य वृद्धि	धन लाभ	२.धनैश्वर्य नाश	सास नेष्ट
३. मन्त्रि पदासीन	राजकाजमें नि	३.माता को नेष्ट	सास नेष्ट
४. राज्य सम्मान	मान सम्मान	४.पिता को नेष्ट	सास नेष्ट

मघा चार चरण फल		ज्येष्ठा चार चरण फल	
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
१. माता को कष्ट	माता-विमाता ने.	१.बड़ेभाई को ने.	जेठ को नेष्ट
२. पिता को कष्ट	पिता श्वसुर ने.	२.लघुभ्राता को ने	लघु भगिनी व देवर नेष्ट
३. सुख समृद्धि	धन वृद्धिः	३.जननी को नेष्ट	उभय कुल माता कष्ट
४. धनायु सुखस.	धनैश्वर्य वृद्धिः	४.स्वयं को नेष्ट	देवरको श्रेष्ठ

मूल चार चरण फल		रेवती चार चरण फल	
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
१. पिता को नेष्ट	श्वसुर को नेष्ट	१.राजकार्य रत	राजकाज में नि.
२. जननी को नेष्ट	सास को नेष्ट	२.मंत्रित्व प्राप्ति	मंत्रित्व प्राप्ति
३. धनैश्वर्य हानि	दोऊ कुल दोष	३.धनैश्वर्य वृद्धि	ऐश्वर्य वृद्धिः
४. शान्ति से शुभ	शान्ति से शुभ	४.स्वयं को नेष्ट	स्वयं को कष्ट

चन्द्रमा से पाया जानना

जन्मकुण्डलीके १,६,११ वें स्थानमें चन्द्रमा हो तो स्वर्णपाद, २,५,९ में चांदी, ३, ७, १० में तांबा और ४, ८, १२ भावमें हो तो लोहेके पायासे जन्म हुआ है ऐसाजानें यह मत सर्वमान्य है।

नक्षत्रसे पाया विचार- आर्द्रादि दशकं रूपं विशाखादि युगलोहकम्।
पूषादि सप्तताम्रश्च रेवती षष्ठ स्वर्णकम्।।

आर्द्रादि १० नक्षत्र चांदीके पाया। विशा., से ४ में लोहपाद। पूषा. से ७ तक ताम्रपाद और रेवती से ६, नक्षत्रोंमें जन्म हो तो स्वर्णपाद से जानना चाहिए। तांबा, चांदी श्रेष्ठ, लोहा और स्वर्णपाद फल नेष्ट होता है।

द्वितीय मत- आर्द्रा दशरुपाणां विशाखा नव ताम्रकम्।
रेवती षट् स्वर्णश्च शेषा लोहाः प्रकीर्त्तिताः।।

आर्द्रादि १० नक्षत्रों में जन्म हो तो चांदी के पाया। विशाखादि ९ में तांबे के पाया, रेवत्यादि ६ में सोनाके पाया। पूभा.उभा.में जन्म होने पर लोके पायाजानना। दोनोंमत परस्पर भिन्न होने के कारण सर्वमान्य नहीं।

अथ मेषादि जन्मलग्न शुभाशुभ फलम्

मेषे लग्ने समुत्पन्नश्चण्डो मानी सकोपकः।
सुधीः स्वजनहन्ता च विक्रमी परवत्सलः।।

मेष लग्नमें जिसका जन्म होता है वह उग्र स्वभाव, अभिमानी, गुस्साखोर, सुबुद्धिमान अपने बान्धवोंका हनन करने वाला, पराक्रमी तथा दूसरोंका प्यारा होता है। नेष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८ विशेष दान, पुण्य परित्वेन पूर्णआयु को भोगता है। लगभग १०० वर्ष होती है। प्रसूता गृह पुराना, निकास पूर्वमें, जननीका शिरभी पूर्वमें, वस्त्रादि जो धारण किये वह लाल प्रजननसे पहले मीठा कुछ खाया हो, कष्ट अधिक हुआ हो, निम्नस्थल पर जन्मा बच्चा तत्काल रोया हो, उपसूतिका ३ या ६, बच्चेके मुखका रंग गेहुंआ, नेत्र श्वेत सुन्दर, प्रकृति-वात-श्लेष्म, कदसामान्य, शरीरदृढ़, वाणीचंचल, जन्म पैरोंके बल हुआ जानें।

वृष लग्न भवो लोके गुण भक्तः प्रियंवदः।
गुणी कृती धनी लुब्धः शूरः सर्वजन प्रियः।।

वृषलग्नमें जिसका जन्म होता है वह जातक लौकिक गुणोंमें प्रेम करने वाला, प्रिय बोलने वाला गुणी, धनी, लोभी, वीर, समस्त जन समुदायका प्यारा होता है। नेष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१ अन्न वस्त्रादि दान, प्रिय भोज्य, महामृत्युञ्जय जपोपरान्त आयु ९० वर्ष के निकट होती है। प्रसूति स्थान नया, निकास दक्षिणमें, मुख्य द्वार पश्चिममें माताका शिर दक्षिणमें, प्रसवकालके वस्त्र श्वेत, माताने शुष्क अन्नादि खाया, जातक उच्च स्वर से रोया, जननीको सामान्य कष्ट हुआ, रंग गोरा, मुखमण्डल गौर, रक्तिमायुक्त, प्रकृति-रक्तपित्त, कद लम्बा, ढीला शरीर कहें, वृषलग्नमें अधोमुख प्रसव पाद से हुआ जानें, उपसूतिका ३ या ४, प्रकाश उत्तर दिशामें होता है।

मिथुनोदयसञ्जातो मानी स्वजनवत्सलः।
त्यागी भोगी धनी कामी दीर्घसूत्र्यरिमर्दकः।।

जिसका जन्म मिथुन लग्नमें होता है वह व्यक्ति मानी, स्वजनोंका प्यारा, स्वल्प त्यागी, भोगी, धनाढ्य कामी दीर्घसूत्री-चिरक्रिय (बड़ी देर से काम करने वाला) शत्रुओंका मानमर्दन करने वाला होता है। नेष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५७ देवार्चन गौ दानादि परित्वेन पूर्णायु। प्रसूति स्थान नया, गृहद्वार पश्चिममें, मुख्य द्वार उत्तरमें, माता का शिर पश्चिममें, वस्त्र पीले कुछ पुराने, प्रसव समयसे पहले, नमकीन खाया हो, दाहिने अंगमें चिन्ह, ज्वरादि कष्ट अधिक, जन्मस्थान जमीन से ऊपर, बच्चेने शीघ्र रुदन किया, उपसूतिका ३ या ५ जानें। सुन्दर रुपवान, नेत्ररोगयुक्त, प्रकृति बल्गमी, स्वभाव चंचल, सामान्य कद, मन्दबुद्धि विलक्षण, जन्म शिरके बल हुआ जानें। महामृत्युञ्जय जपोपरान्त आयु ८६ वर्ष के करीब होती है।

कर्कलग्ने समुत्पन्नो भोगी धर्मी जनप्रियः।
मिष्टान्न पान भोगी च सुभाग्यः स्वजनप्रियः।।

जिसजातकका जन्म कर्कलग्नमें होता है वह भोगी, धर्मात्मा, स्वजनप्रिय, मिष्ठान्न पान भोगी, सुयश भाग्य वाला तथा कुटुम्बीजनों का प्यारा होता है। नोट- भारतकी जनता कर्क लग्नमें जन्म लेने वालोंसे बहुत स्नेह करती है। नेष्ट वर्ष ५।२५।४०।४८।६२ जन्म कुण्डलीमें शुभाशुभ योगानुसार जप दानोपरान्त पूर्णायु होती है। प्रसूतिस्थान नया, द्वार उत्तरकी ओर, प्रमुखद्वार पूर्वमें, माताका शिर उत्तरमें प्रजनन समय वस्त्र पुराने कुछ सफेद कुछ लाल, माता ने मधुर सुपाच्य शीतल भोजनादि किया हो, प्रसूतिकष्ट अधिक, जन्मभूमि पर तत्काल पिता परेशानीमें रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ४ या ५ बालकका रंग गोरा, कद लम्बा, कोमलांग, आंखें चंचल, प्रकृति बात-श्लेष्म, वाणी मीठी, बामांगमें चिन्ह, जन्म पैरोंके बल हुआ जानें। मृत संजीवनी जपोपरान्त आयु १०० वर्षके लगभग होती है।

सिंहलग्नोदये जातो भोगी शत्रुविमर्दकः।
स्वल्पोदरोऽल्पपुत्रश्च सोत्साही रणविक्रमः।।

सिंह लग्नमें जन्मे जातक भोगी, शत्रुओंका मानमर्दन करने वाले, कृशोदर, स्वल्पपुत्रवान, उत्साही संग्राममें पराक्रम दिखाने वाले होते हैं। नेष्ट वर्ष ५।१३।२८।३६।४८ भास्कर पूजन, विशेष दानपुण्य दुर्गार्चनोपरान्त आयु ८३ वर्ष के करीब होती है।

प्रसूतागृहद्वार पूर्वको, मुख्यद्वार दक्षिण दिशामें, मकाननया, माता का शिर पूर्वमें, वस्त्र कुछ लाल चित्र-विचित्र, प्रजननसे पहले भोजन शाकयुक्त खट्टा खाया हो, पीड़ाअधिक, भूमिपर जन्म, शिशु रोया अधिक, उपसूतिका ३ या ५, रंग गोरा, केश घने, पीठपर चिन्ह चेहरालम्बा छोटा कद प्रतिभापूर्ण, शरीरकोमल, नेत्र चंचल, निडर, प्रकृतिकफ-पित्त, वाणीकर्कश, जन्म शिरके बल हुआ जानें। आदित्य-हृदय स्तोत्रका पाठ, अपूपान्नदान परम आवश्यक है।

कन्यालग्नभवो वालो नानाशास्त्र विशारदः।
सौभाग्यगुणसम्पन्नः सुन्दरः सुरत प्रियः॥

जिसकाजन्म कन्या लग्नमें होता है, वह अनेक शास्त्रोंमें चतुर, सामान्य सौभाग्यगुण वाला, विषयाशक्त होता है। नेष्ट वर्ष ४।१६।२३।३६।५५ छायापात्र दान, गौदान, महामृत्युञ्जय जपोपरान्त पूर्णायु।

प्रसूता निवास पुराना, प्रसव हुआ घरके दक्षिण भागमें, गृहद्वार उत्तर दिशामें, जननी का शिरभी उत्तरमें पहनेहुए वस्त्र जीर्ण पाण्डु रंग युक्तहो, प्रजननसे पहले मिष्ठान्नखाया, कष्ट सामान्य हुआ, जन्म उच्चस्थान पर हुआ, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५ भुजामें चिन्ह, जातकका रंग गोरा, गला व जंघामें चिन्ह, दृष्टि उत्तम, प्रकृति वात-कफ कद सामान्य, सर्वांग सुन्दर, सुडोल शरीर, जन्म शिरके बल पैदा हुआ जानें।

तुला लग्नोदये जातः सुधीः सत्कर्मजीवनः।
विद्वान्सर्वकला भिज्ञो धनाढ्यो नरपूजितः॥

तुला लग्नमें जन्मेजातक सुबुद्धिमान, सत्कर्ममें जीवन निर्वाह करने वाले,विद्वान् सर्वकलाप्रवीण विद्वानोंसे पूजित होते हैं। नेष्ट वर्ष ३।८।१५ ।३१।३५।४६।६२।६४ मेंशान्ति करानेसे जातककी पूर्णायु होती है।

प्रसूतास्थान नूतन प्रसूतिकक्ष पश्चिम भागमें, द्वार पूर्वमें, माताका शिर पश्चिममें, श्वेतवस्त्र प्रजननसे पहले माता ने कुछ खाकर ठण्डापानी पिया, प्रसवकष्ट अधिक, घरमें कुछ झंझटभी हुआ, भूमिसमतल जगह जन्म, रोदन धीमा, उपसूतिकाएं ३ या ५ जिनमें एक कन्याभी हो, रंग कुछ पीला, शरीर कमजोर, कद छोटा, वर्ण विकृतसा, नेत्र चंचल, वाणीकर्कश, जन्म शिरके बल हुआ। गोदान तुला दानसे सुखशान्ति रहे आयुपूर्ण होवे।

वृश्चिकोदयसंजातः शौर्यवानति दुष्टधीः।
विज्ञानज्ञानसम्पन्नः सुखी सद्विग्रहः सुधीः॥

जिस जातकका जन्म वृश्चिकलग्नमें होता है, वह पराक्रमी, दुष्ट बुद्धिवाला, ज्ञान-विज्ञानसे सम्पन्न सुखी दिव्यदेह वाला, सुविज्ञ होता है। नेष्ट वर्ष ३।११।२८।३८।५२।६२ अरिष्ट निवारण हेतु छायादान, महामृत्युञ्जयजाप, ब्रह्मभोजनादि परित्वेन, जातककी दीर्घायु होती है।

प्रसूतिस्थान जीर्ण, द्वार उत्तरमें, मुख्य द्वार पूर्वकी ओर, माता का शिर उत्तर या दक्षिणमें पुराने वस्त्र लाल या दग्ध, साधारणभोजन कुछ क्रोधपूर्ण, प्रसवमें कष्ट अधिक, जन्म हुआ भूमि पर रोया कुछ कम ही था, उपूसतिकाएं ४ या ५, पिता कुछ झंझटमें था, चिन्ह पीठ पर, केश लम्बे, काले घुंघराले, गलेमें पीड़ा, रंग श्याम, प्रकृति रक्त-पित्त, कद सामान्य, वाणी चंचल, जन्मशिरके बल हुआ ऐसा जानें।

धनुर्लग्नोदये जातो नीतिमान्धर्मवान्सुधी।
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञः सर्वस्य पोषकः॥

धनु लग्नमें जिसकी उत्पत्ति होती है वह नीतिवान, धर्मवान तीव्र बुद्धिवाला, अपने कुलमें श्रेष्ठ विद्वान, सबका पोषण करने वाला होता है। नेष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२ इनमें देवार्चन भौम पूजनादि अच्छा होता है। स्वल्पायु होती है।

प्रसूता स्थान नया, जन्म दक्षिण कोणमें, गृहद्वार पूर्व दिशामें द्वितीय उत्तरमें, माताका शिर पूर्वमें, जननीके वस्त्र मिश्रितरंग के लाल वसन्ती, पकवान भोजनकर जल पिया हो, प्रजननमें कष्ट अधिक, जन्म उच्च स्थान द्वितीय तृतीय मंजिल पर, बच्चेने रोदन अति दीर्घ स्वरमें किया, उपसूतिकाएं १ या ५, बच्चेका रंग गोरा, सुन्दराकृति, बड़े नेत्र, शिर ऊँचा, वक्षस्थलपर चिन्ह, प्रकृति पित्तोष्ण, कद सामान्य, वाणी मधुर, जन्म पाद से हुआ हो।

मकरोदयसंजातो नीचकर्मा बहुप्रजः।
लुब्धोऽलसो बिनष्टश्च स्वकार्येषु कृतोद्यमः॥

जिसका जन्म मकर लग्नमें होता है वह जातक नीचकर्म करने वाला, बहु सन्तानवान, लोभी, आलसी, होनेसे अपने कार्यको नष्ट करता है। नेष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७ छायापात्र, माषान्न स्वर्ण तेलादि दान, रुद्राभिषेकोपरान्त पूर्णायु होती है।

प्रसूता भवन पुराना, द्वार उत्तर या दक्षिणमें, जन्म पश्चिम कोण में, जननीका शिर पश्चिममें वस्त्र मैले पुराने द्विरंग मिश्रित, प्रजननसे पहले शाक युक्त नमकीन कुछ खाया, जल पिया हो, कष्ट सामान्य, जन्म भूमि पर, कुछ समय बाद बालक अर्द्ध स्वर से रोया, उपसूतिकाएं १ या ५, बच्चेका रंग श्याम, केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, कद सामान्य, अंग सुन्दर, जन्म पैरोंके बल हुआ, ऐसा समझें।

कुम्भलग्नोदये जातश्चंचलचित्तोऽतिसौहृदः।
परदाररतोनित्यं मृदुकायो महासुखी॥

कुम्भ लग्नमें उत्पन्न जातक चंचलचित्त, बहुमित्र, परस्त्रीविषयाशक्त, कोमल देह वाले, महासुखी होते हैं। नेष्ट वर्ष २।१०।२८।३३।४८।६४ विशेष दानपुण्य परित्वेन पूर्णायु को भोगता है।

प्रसूता गृह कुछ जीर्ण कुछ नया हो, प्रजजन स्थान दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्व या उत्तरमें माताका शिर पश्चिममें काले मैले वस्त्र कम्बलादि, प्रजननसे पहले कषैला चटपटा कुछ खाया हो, पिता घर पर न हो, प्रजननमें कष्ट कम, जन्म भूमि पर, कुछ समय बीतने पर बच्चा रोया, उपसूतिकाएं ३ या ४ कहें, नाटा कद, नेत्र चंचल, मस्तक लम्बा, होंठ मोटे, वाणीमधुर, बच्चेका शिरके बल जन्म हुआ जानें।

मीनलग्नोदये जातो रत्नकाञ्चनपूरितः।
अल्पकामोऽतिदौर्वल्यः दीर्घकालविचिंतकः॥

मीन लग्नमें जन्मे जातक रत्न कांचनोंमें परिपूर्ण, स्वल्पकामी कृशतन, दीर्घकालीन चिन्तन करने वाले होते हैं। नेष्ट वर्ष १।८।१८।२५।४८ गुरु पूजन देवार्चनादि से पूर्णायु होती है।

प्रसूता भवन कुछ नया कुछ पुराना, प्रसूता कक्ष उत्तरमें द्वार दक्षिणमें, प्रमुख द्वार उत्तरमें, जननीका शिर उत्तरमें, वस्त्र वसन्ती कुछ मलिन, पिता घरमें था, जल ठण्डा पिया जन्म ऊंचे स्थान पर कष्ट से हुआ। जातक देर से रोया। उपसूतिकाएं २।३ या ५ जानें, पलंग का कुछ हिस्सा टूटा था, बच्चेका रंग गोरा, नाक चपटी, आंखें भूरी, बाल कपिल, ऊँचा माथा, प्रकृति वात-कफ, जन्म हाथके बल हुआ ऐसा जानें। शान्तिके उपाय मोदकान्नदान, गोदान, महामृत्युञ्जय जाप।

संक्षिप्त जन्म लग्न फलम्

मेषे दीनो वृषे मानी पटुबुद्धिश्च मन्मथे।
क्रूरः कर्के धृति सिंहे कन्यायां बहुमायिता॥
जूके स्त्रीत्वमलौ मानी चापे पापाशयो नरः।
मुखरो मकरे कुम्भे चतुरः स्थिरधीर्झषे॥

सूचना-समय का यदि किसी कारणवश सही ज्ञान न हो तो आसन्न लग्नानुसार कुण्डली बनाएं। जिस लग्नके लक्षण सही मिलें,वही लग्न जातककी मानें। बहुधा देहातोंमें अभीभी सहीसमय नोटनहीं करपाते हैं।

अथ मेषादि जन्म राशि शुभाशुभ फलम्

मेष- राशिमें जन्मे जातक साहसी, वीर विपत्तियोंमें न घबराने वाले निडर होते हैं। जो निर्णय लेना होता है उसे वे स्वयं ही ले डालते हैं, अपने लक्ष्यके प्रति सतत जागरुक रहते हुए अत्यन्त खेल प्रिय होते हैं, प्रेमसे अघाते नहीं, मेष अग्नितत्व राशि होनेके कारण जातक प्रतिभाशाली ओजपूर्ण होते हैं। अन्य व्यक्ति सदैव इनसे प्रभावित होते रहते हैं।

वृष- राशिमें जन्म लेने वाले अधिकांश जातक हृष्टपुष्ट होते हैं। परिश्रमी प्रतिकूल परिस्थितियोंको अनुकूल बनाने वाले, सहनशील, धैर्यशाली, हृदयंगम, गृहस्थजीवनको सफलतापूर्वक चलाने वाले कमखर्चीले, समव्यवहार, ईमानदार, ख्याति प्राप्त होते हैं, अनुशासन प्रेमी, मानसिक दृढ़ता स्मरण शक्ति तेज होती है।

मिथुन- वायु तत्व प्रधान राशिमें जन्मे जातक सौभाग्यशाली, बुद्धिजीवी वाक्चातुर्य गुणोंसे सम्पन्न अपनेको परिस्थितिके अनुसार बदल लेते हैं, अर्थात् ये स्थिर बुद्धिके नहीं होते, विषयाशक्त, बाल्यकाल उत्तम नहीं कहा जा सकता, ३० वर्षकी आयुके बाद निजी व्यवसायसे धनी बनते हैं। योजनाबद्धकार्य करते हुए सफलता प्राप्त करते हैं। बेईमानीसे धन कमाना इन्हें पसन्द नहीं, इसी से समाजमें सम्मान प्राप्त करते हैं।

कर्क- जलतत्व चर राशिमें जन्मे जातक भावुकताप्रिय, बुद्धिजीवी, अपनी बुद्धिकी प्रबलताके कारण कठिन से कठिन कार्यको भी सहज कर लेते हैं। अपने मित्रोंकी राय इन्हें अधिक पसन्द होती है, जिसके फलस्वरुप समय-समय पर धोखाभी खाते रहते हैं, इनमें लीडरीके गुण हृदयंगम् होते हैं और समय पाकर उभर आते हैं।

सिंह- राशिमें जन्मे जातक निडर, साहसी, विघ्नबाधाओंपर विजय प्राप्त करने वाले, परिस्थितियोंके अनुकूल अपनेको ढालने वाले १४-१५ घण्टे काम करने पर भी न थकने वाले होते हैं। अपनी सिंह रुपी गर्जना व वाक पटुतासे दूसरोंको प्रभावित करते रहते हैं। अल्पभाषी निजीकार्यमें व्यस्त रहते हैं।

कन्या- राशिमें जन्मे जातक परिश्रमी अत्यन्त विषयाशक्त विघ्न-बाधाओं पर हंस-हंसकर विजय प्राप्त करने वाले होते हैं। व्यक्तित्वपूर्ण, इनकी थाह पाना आसान नहीं। परिवार वालोंकी मदद भरपूर करते हैं, इनका ध्येय होता है पढ़ना पढ़ाना मनन करना और धनोपार्जनकर सुख प्राप्त करना, कुशल प्रशासक मैनेजर, वकील, जज, साहित्यकार और व्यापारमें इनके प्रयत्न सराहनीय होते हैं।

तुला- राश्यान्तर्गत जन्मे जातक ईमानदार, कटुसत्य प्रिय, न्यायकारी, प्रलोभन परित्यागी, परिश्रममें विश्वास करने वाले, शान्तिप्रिय प्रेमीजनोंसे घनिष्ठप्रेम करने वाले, हर एक विषयकी तुलना करने वाले, शत्रुओंसे घिरा जीवन अस्त-व्यस्त होता है। यह विरोधपूर्ण बातें कटु व्यवहार टालकर अपनी कूटनीतिसे अपने सामूहिक व्यवहारमें रद्दोबदल करते हुए सफलताकी सीमा पर पहुँच जाते हैं।

वृश्चिक- राशिमें जन्मेजातक कठोर परिश्रमी, चरित्रवान, ईमानदार अपनी कही हुई बातसे न मुकरने वाले, हठी होते हैं। विपरीत परिस्थितियोंको अनुकूल बनानेमें चतुर, प्रारम्भिक जीवनमें कम सुख लगभग २५वर्षकी आयुके उपरान्त सफलताओंकी ओरअग्रसर होतेहैं। इनमें स्वतन्त्र चिन्तनका विशेषगुण होता है जिसके फलस्वरुप विशेष शोधपूर्ण कार्यरत डाक्टर,सर्जन,इंजीनियर आदि पाए जाते हैं। गम्भीरता पूर्वक सोचविचार कर कदम बढ़ानेवाले राष्ट्रभक्त स्वाभिमानी होते हैं।

धनु- राशिमें जन्म लेने वाले व्यक्ति हृष्ट-पुष्ट सर्वांग सुन्दर आकर्षक होते हैं। ये अपने पास आने वाले व्यक्तिके भावको तुरन्त हृदयंगम् कर समयानुकूल उचित उत्तर देते हैं। घनिष्ट सम्बन्ध कायम करनेमें चतुर, नाच गानेमें भी अधिक बढ़चढ़ कर भाग लेते हैं। शारीरिक श्रमकी अपेक्षा बुद्धिजीवी होते हैं। विपत्तिमें भी हंसना, खाओ मौज उड़ाओ ऐसी भावनाके होते हैं।

मकर- राश्यान्तर्गत जन्मे जातकोंमें सामाजिकगुण अधिक पाए जाते हैं। ये कभीदूसरोंको अहित करनेमें हिचकिचाते नहीं, जिद्दी नम्बर एक के होते हैं। दाम्पत्य सुखोपभोगके साधन इन्हें पूर्ण प्राप्त होते हैं। गुप्तारम्भी, षड्यन्त्र मलेच्छावृत्ति वाले अट्टहासमे रुचि रखते हैं।

कुम्भ- राशि वायुतत्व प्रधान होनेसे वात कफ प्रकृति युक्त जातक होते हैं, मानसिकचिन्तन अथक पराक्रमी दूरदर्शी चंचल प्रवृत्ति ओजपूर्ण साहसी, अपने लक्ष्यके प्रति निरन्तर बढ़ने वाले दृढ़ निश्चयी अत्यन्तकामी होते हैं। कुंभ राशि में जन्मे व्यक्ति अपने कार्य को कल पर छोड़ देते हैं।

मीन- राश्यान्तर्गत जन्म लेने वाले जातक जल प्रवासी स्वच्छ हृदय, एकांकी होते हैं। नूतन लक्ष्यकी पूर्तिहेतु नितनई योजनाओंमें उलझे रहते हैं। दाम्पत्य सुख न्यून ही कहा जा सकता है, नेतागिरी के गुण समय पाकर उभर आते हैं। सम राशिमें जन्म लेनेके कारण जातक आवश्यकतासे अधिक भार नहीं उठाते, दोस्तों से जीवनमें कई बार हानि उठानी पड़ती है, कई बार तो इतने सहनशील हो जाते हैं कि दुश्मन इनका सर्वश्व हरण कर लेते हैं।

नामकरण संस्कार्

जन्मसे १०।११।१२ दिन अथवा परिस्थिति वसात् १५।१६।२१।२७ एवं ३७वें दिन शुभवार में १।४।६।९।१४ तिथि रहित **शुभनक्षत्र-** अश्वि.,रोहि.,मृग.,पुन.,पुष्य.,उफा.,हस्त, चित्रा. स्वाती,अनु.उषा. श्रव.धनि.शत.उभा.और रेवती तथा शुभ लग्नमें वर्ण व्यवस्थानुसार विद्वानोंको नामकरण संस्कार करनेकी अनुमति देनी चाहिए।

देवतानाम मासनाम नक्षत्रनाम व्यावहारिकनामेति।
तत्रामुकदेवताभक्तं इत्वाकारकं देवतानाम प्रथमम्।।

नाम चार प्रकारके होते हैं यथा- देवतानाम, मासनाम, नक्षत्र नाम तथा व्यवहारिकनाम यथा- श्रीकृष्णदास, रामसहाय, रामसेवक इत्यादि देवतानाम। वैकुण्ठ, जनार्दन, उपेन्द्र, यज्ञपुरुष, वासदेव, हरिकिशन, योगीश, पुण्डरीकाक्ष, कृष्ण, अनन्त, अच्युत, चक्रधर ये मास नाम चैत्रादि मासानुसार कहे हैं। नक्षत्रनाम नक्षत्र चरणाक्षर तुल्य रखे जाते हैं और परिवारमें अन्य किसीका नाम न हो ऐसा मुंह बोला नाम अपने कुलाचार देशाचारानुसार भी रख लिया जाता है। जो बोलते-बोलते सिद्धि हो जाता है।

प्रतिष्ठाकी कामनाविहित दो अक्षरोंका नाम, ब्रह्म तेजकी वृद्धि वाला चार अक्षरोंका नाम जिसके अन्तमें रेफ लकार न हो, आपस्तम्भ और हिरण्यकेशी सूत्रमें तो यह कहा है कि ऐसा नाम रखना चाहिए, जिसके उच्चारणमें आत्मशान्ति मिले, किसी विशेषताकी झलक हो, जिससे श्रीवृद्धि यशकीर्तिका विस्तार हो, वर्णानुसार शर्मा, वर्मा, गुप्ता तथा दासोऽहम्का सम्बोधन होता हो। वर्तमानमें केवल नक्षत्र चार चरणानुसार नाम रखनेकी परम्परा है। इसलिये प्रस्तुत हैं अ व क ह डा चक्रांकित अक्षरतुल्य नाम तालिका जिसमें देखकर अपने बच्चोंका सुन्दरनाम रख सकते हैं।

(देखें आग्रिम पृष्ठों पर)

शंका समाधान

ज्ञानचन्द, द्वारिकाप्रसाद, क्षेमचन्द, त्रिलोकबाबू, ग्यारसीलाल, घालारामकी जन्मराशि व नक्षत्रचरण शास्त्रीय दृष्टि से क्या मान्य होगा? और यदि हस्त नक्षत्रके तृतीय चरण(ण) पर किसी बच्चेका जन्म हो तो उसका क्या नाम रखा जाय? इस सन्दर्भमें शंकासमाधान हेतु हमारे यहां पंचांगकार्यालयमें प्रतिवर्ष पत्र आते रहते हैं। **अ,व,क,ह,डाचक्रानुसार** अश्विन्यादि नक्षत्र चरणाद्याक्षरानुसार सुन्दर नाम क्या रख सकते हैं, इस विषय में हमारां प्रथम प्रयास है। पाठकोंको लाभ होगा तो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूंगा।

आर्द्रा का तृतीय चरणाक्षर (ङ) हस्तका तृतीय (ण) और उभा.के चतुर्थचरण (ञ) पर किसीका नामहो अतः ये अक्षर नामके आदिमें पाये गये हों ऐसा आजतक नहीं सुना। पाठकोंके विचार शतप्रतिशत सत्य है। शतपथ चक्रानुसार यदि ङ,ण,ञ इन तीनों वर्णो में से कोई वर्ण जातकके जन्म नक्षत्रका चरण आ पड़े तो उस परिस्थिति में क्रमशः घ,ठ,झ पर नाम रखना चाहिए। यथा-

नामादौ नावलोक्यन्ते वर्णास्तु ङ- ञ- णाः क्वचित्।
तदेतेषु क्रमान्नाम धर्तव्यं घ- झ- ठाक्षरैः॥

अर्थ- आर्द्रा के तीसरे चरणमें जन्म हो तो घनश्याम-घनानन्द आदि नाम रखें। हस्तके तृतीय भागमें जन्म होने पर ठाकुरदास ठाकुरदत्त आदि नाम रखें और उभाके चौथे चरणमें जन्माक्षर आन पड़े तो झम्मनलाल-झब्बूलाल आदि नाम रखना चाहिए।

नामका प्रथमअक्षर जिस नक्षत्रके जिस चरणमें हो वही उसका नक्षत्र और विहित राशि जाननी चाहिए यथा-चन्द्रप्रभाकी मीन राशि होगी-

यन्नामाद्यक्षंर यस्य नक्षत्रस्य पदे भवेत्।
तदेव तस्य नक्षत्रं विज्ञैयं गणकोत्तमैः॥

यदि नामके आदि में संयुक्ताक्षर हो तो उनमें प्रथम वर्णका ग्रहण करना चाहिए यथा-

यदि नामिन् भवेद्वर्णः संयुक्ताक्षरलक्षणः।
ग्राह्यस्तदादिमो वर्ण इत्युक्तं ब्रह्मयामले॥

जैसे- श्रीपति नाम के आदि में संयुक्त वर्ण 'श्र' के प्रथम वर्ण 'श' कार है, वह शतभिषाके द्वितीय चरणमें है इसलिये श्रीपति या श्रीचन्द का जन्म नक्षत्र शततारका हुआ।

शतपथ चक्रमें ऋकार नहीं कहा गया है, इसलिए ऋकार के स्थानमें रेफ (र) ग्रहण करना चाहिए। अर्थात् किसीका नाम ऋद्धिनाथ या ऋषिकुमार है तो उसका चित्राका तीसराचरण एवं तुला राशि होगी। प्रमाणवाक्य-

अनुक्तत्वादृकारस्य रेफो ग्राह्यो विचक्षणैः।
ऋद्धिनाथस्य नक्षत्रं यथा चित्राख्यमेव हि॥

दीर्घ- ह्रस्व स्वर परस्पर समान

शतपद चक्रमें अकार और आकार तथा इकार और ईकार, उकार और ऊकार तथा ऐकार एवं ओकार और औकार परस्पर तुल्य समझे जाते हैं, इसी प्रकार व और ब एवं श और स ये दो-दो अक्षर समान माने गये हैं। जैसे- अमरनाथ, आनन्दस्वरुप दोनोंका एक ही कृतिक नक्षत्रका प्रथम चरण हुआ। ऐसे ही शक्तिधर और सविनयकुमार की शतभिषानक्षत्र द्वितीयाचरणमें विहित कुम्भराशि हुई। हस्तके द्वितीय चरणमें अक्षर (ष) को इसमें न मिलावें। ऐसा करने से राशि व नक्षत्र पृथक् हो जायेगा। अतः ष अक्षरके स्थान पर पुष्पेन्द्र, पुनीत, पूरन इत्यादि नाम रखने से राशि, नक्षत्र वही रहेगा, न मेलापकगुणोंमें अन्तर आयेगा। शास्त्र वाक्य-

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, द्वौ मिथः रामौ।
व, बौ, श, सौ, तथैवात्र, ज्ञेयौ, देवविदा सदा॥

संयुक्ताक्षर राशि ज्ञानम्

संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यतत्रादिमाक्षरम् के अनुसार जिस नामके आदिमें संयुक्त अक्षर हो उसका आदि वर्ण ग्रहण करके ही राशिविचार करना चाहिए। जैसे- ज्ञानचन्द नामके आदि 'ज्ञा' शब्दकी उत्पत्ति पाणिनि व्याकरण भाषासूत्रके अनुसार (ज ञ ज्ञः) ज+ञ से यह अक्षर वना है, इसलिए ज्ञान का नक्षत्र उषा. तृतीय चरण व मकर राशि होती है। इसी प्रकार क्ष (क,ष,संयोगाद् क्षः) होने से क्षेमचन्दकी राशिमिथुन व मृगशिरका तीसरा चरण होगा। (त+र त्रः) बराबर 'त्र' अक्षर है, इसलिये त्रिलोकचन्द की राशितुला और नक्षत्र विशाखा मान्य होगा। (द् ' अ द्वा) द्वारिकामें दकार ही प्रधान है अतः राशि कुम्भ और नक्षत्र पूभा. मान्य है।

द्रौपदी, प्रियकान्त, प्रेमदत्त, क्षेत्रपाल आदि में व्यवहित मध्य अक्षरको छोड़कर स्वर सहित आद्यक्षर से ही नक्षत्र माननीय होगा। इनमें क्रमशः द, पी, प, क अक्षर की प्रधानता है। द्रुपदकुमार का उभा. नक्षत्रका पहला चरण और मीन राशि मानी जायेगी।

नोट- अ, व, क, ह, डा चक्रमें कुछ और भी अक्षर ऐसे हैं, जिन पर नाम नहीं रखा जा सकता। जैसे (थ) पर लड़की का नाम क्या रखें इस परिस्थितिमें ज्योतिषी स्वतन्त्र चिन्तनकर नाम आगे व पीछेके अक्षर पर रख सकता है, ध्यानरहे नक्षत्र व राशि पृथक् न हो जाय।

राशि की प्रधानता

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रह गोचरे।
जन्म राशेः प्रधानत्वं नाम राशि न चिन्तयेत्॥

विवाहादि समस्त मंगलकार्य, विशेष मुहूर्त्त यात्रा ग्रह दशा, ग्रहोंकी गणना दिनदशा देखनेके लिए जन्म राशिकी प्रधानता मानी गई है।

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत्॥

देश ग्राम नगर या घर निवास, युद्ध व्यवसाय, दैनिक व्यवहार, कोर्ट-कचहरी, न्यायालय, रजिस्ट्रीकरण, लेन-देन, आगम प्राप्तिसे सम्बन्धित सभीकार्योमें नामराशि मान्य है, जन्मराशिका महत्व नहीं।

कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ वलान्विते।
सर्वाण्यन्यानिकर्म्माणि नामराशौ वलान्विते॥

अर्थ-गर्भाधानादि पोडस संस्कार सुसम्पन्नताहेतु जन्मराशिस्थ चन्द्रवल का विचार करना चाहिए। अन्यसभी कामोंमें नामराशि देखनी चाहिए।

विवाह घटनं चैव लग्नजं ग्रहजं वलम्।
नामभाषिन्तुयेत्सर्वः जन्मन ज्ञायते यदा॥

अर्थ- यदि जन्मराशि ज्ञात न हो तो नामराशि नक्षत्रसे ही विवाहादि सम्पादनमें लग्न ग्रहबलका विचार कर लेने चाहिए।

स्त्रीणांचन्द्रबलविशेष-

स्त्रीणांविधोर्वलमुशंति विवाह गर्भसंस्कारयोरितर कर्मसु भर्तृरिव। बाहवाँचन्द्रमाशुभहोताहै यथा- पाणिग्रहे स्त्रीसुरतेऽभिषेके यात्रात्रमाशे व्रतबंधने च। व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वैः शुभोद्वादशयो हिमांशुः॥

परन्तु स्त्री हेतु १२ वाँ चन्द्र निषेध है-

सर्वेषु शुभ कर्मेषु चन्द्रोद्वादशगः शुभः।
नारीणां द्वादशश्चन्द्रः मृत्युहानिकरस्तदा॥

अवकहडाचक्र — राशिस्वामिवर्णवश्यादिज्ञानायचक्रम्

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	स्वामी	वर्ण	वश्य	योनि	गण	नाड़ी	युञ्जा	हंसक तत्व
अश्विनी भरणी कृत्तिका	चू चे चो ला ली लू ले लो अ ० ० ०	मेष	मंगल	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व गज मेष	देव मनुष्य राक्षस	आदि मध्य अन्त्य	पूर्व पूर्व पूर्व	अग्नि
कृत्तिका रोहिणी मृगशिरा	० इ उ ए ओ वा वि वु वे वो ० ०	वृष	शुक्र	वैश्य	चतुष्पद	मेष सर्प सर्प	राक्षस मनुष्य देव	अन्त्य अन्त्य मध्य	पूर्व पूर्व पूर्व	पृथ्वी
मृगशिरा आर्द्रा पुनर्वसु	० ० क की कु घ ङ छ के को हा ०	मिथुन	बुध	शूद्र	मानव	सर्प श्वान मार्जार	देव मनुष्य देव	मध्य आदि आदि	पूर्व मध्या मध्या	वायु
पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा	० ० ० ही हू हे हो डा डी डू डे डो	कर्क	चन्द्रमा	विप्र	जलचर	मार्जार मेष मार्जार	देव देव राक्षस	आदि मध्य अन्त्य	मध्या मध्या मध्या	जल
मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी	मा मी मू मे मो टा टी टू टे ० ० ०	सिंह	सूर्य	क्षत्रिय	वनचर	मूषक मूषक गौ	राक्षस मनुष्य मनुष्य	अन्त्य मध्य आदि	मध्या मध्या मध्या	अग्नि
उत्तराफाल्गुनी हस्त चित्रा	० टो पा पी पू ष ण ठ पे पो ० ०	कन्या	बुध	वैश्य	मानव	गौ महिष व्याघ्र	मनुष्य देव राक्षस	आदि आदि मध्य	मध्या मध्या मध्या	पृथ्वी
चित्रा स्वाती विशाखा	० ० रा री रु रे रो ता ती तू ते ००	तुला	शुक्र	शूद्र	मानव	व्याघ्र महिष व्याघ्र	राक्षस देव राक्षस	मध्य अन्त्य अन्त्य	मध्या मध्या मध्या	वायु
विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा	० ० ० तो ना नी नू ने नो या यी यू	वृश्चि.	मंगल	विप्र	कीट	व्याघ्र मृग मृग	राक्षस देव राक्षस	अन्त्य मध्य आदि	मध्या मध्या अन्त्या	जल
मूल पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा	ये यो भा भी भू धा फा ढा भे ० ० ०	धनु	गुरु	क्षत्रिय	मानव / चतुष्पद	श्वान वानर नकुल	राक्षस मनुष्य मनुष्य	आदि मध्य अन्त्य	अन्त्या अन्त्या अन्त्या	अग्नि
उत्तराषाढ़ा श्रवण धनिष्ठा	० भो ज जी खी खू खे खो गा गी ० ०	मकर	शनि	वैश्य	चतुष्पद / जलचर	नकुल वानर सिंह	मनुष्य देव राक्षस	अन्त्य अन्त्य मध्य	अन्त्या अन्त्या अन्त्या	पृथ्वी
धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपदा	० ० गू गे गो सा सी सू से सो द ०	कुम्भ	शनि	शूद्र	मानव	सिंह अश्व सिंह	राक्षस राक्षस मनुष्य	मध्य आदि आदि	अन्त्या अन्त्या अन्त्या	वायु
पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा रेवती	० ० ० दी दू थ झ ञ दे दो चा ची	मीन	गुरु	विप्र	जलचर	सिंह गौ गज	मनुष्य मनुष्य देव	आदि मध्य अन्त्य	अन्त्या अन्त्या पूर्व	जल

मासतिथ्यादिघातज्ञानायचक्रम्

मास	ति.	वार	नक्षत्र	योग	करण	प्र.	पुरुष घात	स्त्री घात	लग्न
कार्तिक	१ ६ ११	रवि	मघा	विष्कुंभ	बव	१	चन्द्र मेष	चन्द्र मेष	१
मार्गशीर्ष	५ १० १५	शनि	हस्त	शुक्ल	शकुनि	४	कन्या	धनु	२
आषाढ़	२ ७ १२	सोम	स्वाती	परिघ	कौलव	३	कुम्भ	धनु	४
पौष	२ ७ १२	बुध	अनुराधा	व्याघात	नाग	१	सिंह	मीन	७
ज्येष्ठ	३ ८ १३	शनि	मूल	धृति	बव	१	मकर	वृश्चिक	१०
भाद्रपद	५ १० १५	शनि	श्रवण	शूल	कौलव	१	मिथुन	वृश्चिक	१२
माघ	४ ९ १४	गुरु	शतभिषा	शुक्ल	तैतिल	४	धनु	मीन	६
आश्विन	१ ६ ११	शुक्र	रेवती	व्यतिपात	गर	१	वृष	धनु	८
श्रावण	३ ८ १३	शुक्र	भरणी	वज्र	तैतिल	१	मीन	कन्या	९
वैशाख	४ ९ १४	मंगल	रोहिणी	वैधृति	शकुनि	४	सिंह	वृश्चिक	११
चैत्र	३ ८ १३	गुरु	आर्द्रा.	गंड	किंस्तुघ्न	३	धनु	मिथुन	३
फाल्गुन	५ १० १५	शुक्र	आश्ले.	वज्र	चतुष्पाद	४	कुम्भ	कुम्भ	५

नक्षत्राणिस्वामिस्वरूपादिज्ञानम्

स्वामी	स्वरूप	संज्ञा	मुखं	घ उ
अश्विनीकु. यम अग्नि	घोड़ा भग छुरी	क्षिप्र लघु उग्र क्रूर मिश्र साधा	तिर्यक् अधो: अधो:	५० २४ ३०
अग्नि ब्रह्मा चन्द्र	छुरी गाड़ी हरिण	मिश्र साधा ध्रुव स्थिर मृदु मैत्र	अधो: ऊर्ध्व तिर्यक्	३० ४० १४
चन्द्र शिव अदिति	हरिण मणि भवन	मृदु मैत्र तीक्ष्णदारुण चर चलं	तिर्यक् ऊर्ध्व तिर्यक्	१४ २१ ३०
अदिति गुरु सर्प	भवन बाण चक्र	चर चलं छिप्र लघु तीक्ष दारु	तिर्यक् ऊर्ध्व अधो:	३० २० ३२
पितर भग अर्यमा	मकान मचान शय्या	उग्र क्रूर उग्र क्रूर ध्रुव स्थिर	अधो: अधो: ऊर्ध्व	३० २० १८
अर्यमा रवि त्वष्टा	शय्या हाथ मोती	ध्रुव स्थिर क्षिप्र लघु मृदु मैत्र	ऊर्ध्व तिर्यक् तिर्यक्	२८ २१ २०
त्वष्टा वायु इन्द्राग्नि	मोती मूंगा तोरण	मृदु मैत्र चर चल मिश्र साधा	तिर्यक् अधो: अधो:	२० १४ १४
इन्द्राग्नि मित्र इन्द्र	तोरण भात कुण्डल	मिश्र साधा मृदु मैत्र तीक्ष.दारु.	अधो: तिर्यक् तिर्यक्	१४ १० १४
राक्षस जल विश्वेदेव	सिंहपु. हाथीदां. मचान	तीक्ष.दारु. उग्र क्रूर ध्रुव स्थिर	अधो: अधो: ऊर्ध्व	५६ २४ १०
विश्वेदेव विष्णु वसु	मचान वामन मृदंग	ध्रुव स्थिर चर चल चर चल	ऊर्ध्व ऊर्ध्व ऊर्ध्व	१० १० १०
वसु वरुण अजपाद	मृदंग वृत्त मंच	चर चल चर चल उग्र क्रूर	ऊर्ध्व ऊर्ध्व ऊर्ध्व:	१० १८ १६
अजपाद अहिर्बुध्न्य पूषा	मंच यमल मृदंग	उग्र क्रूर ध्रुव स्थिर मृदु मैत्र	ऊर्ध्व: ऊर्ध्व तिर्यक्	१६ २४ १०

नामाक्षर तुल्य वर्ग कोष्टक - अपने वर्ग से पंचम शत्रु, चौथा मित्र और तीसरा उदासीन (सम) होता है।

अ ई उ ए ओ १ गरुड़ दिशा पूर्व	क ख ग घ ङ २ मार्जार दि. अग्नेय	च छ ज झ ञ ३ सिंह दि. दक्षिण	ट ठ ड ढ ण ४ श्वान दि. नैऋ	त थ द ध न ५ सर्प दि. पश्चिम	प फ ब भ म ६ मूषक दि वायव्य	य र ल व ७ मृग दि उत्तर	श ष स ह ८ मेढ़ा दि. ईशान

कांकिणी-परित्वेन विचार- सर्वप्रथम साधक व साध्यके नाम के प्रथमाक्षर तुल्य वर्ग कोष्टक से वर्ग संख्या स्वामी व दिशा ज्ञातकरलें। प्रत्येक वर्गसे पांचवाँ वर्ग उसका वैरी और उस पांचवे वर्गकी दिशाभी उसके लिए नेष्ट होती है। अत: उस (पाँचवें) वर्गके अक्षरों से जिसकानाम शुरु होता है, उस नगर ग्राम, व्यक्ति, वस्तु, या दिशासे उसका सम्बन्ध सुखद नही रहता; उनकी ओरसे इसको झगड़ा झन्झट अथवा नुकसान या कुछ न कुछ परेशानियाँ उपस्थित होती ही रहती है। अतएव उनसे सम्बंध होनेपर साधकको बहुत सावधानी बर्तनी चाहिए। विस्तार सहित विवरण फलितसे सम्बन्धित ग्रंथोंमें देखना चाहिए।

राशियोंमें विहित नक्षत्र चार चरणाक्षर तुल्य रखिए आप अपने बच्चोंके अत्यन्त सुन्दर नाम



राशि	नक्षत्र	अक्षर	लड़के	लड़कियाँ
राशि- मेष	अश्विनी	चू-	चुन्नीलाल, चूड़ामणि	चुनमुन, चुन्नी
		चे-	चेतन, चेतन्यस्वरूप,✻	चेतना,चैतन्या, चेताली
		चो-	चोखेलाल,	चौमुखी
		ला-	लालमणि,ललित	लता, ललिता, लवली, लक्ष्मी, लाजवंती,
	भरणी	ली-	लीलाधर	लीलावती, लिपिका, लीना
		लू-	लूकेश ★ लक्ष्मण,लक्ष्मीकांत	लूसी
		ले-	लेखराज ✻ चेतराम	लेखा
		लो-	लोकेन्द्र, लोकेश, लोचन	लोपाद्रुमा, लोलिता,
	कृत्तिका	अ-	अनुराग, अमित, अनिल, अवनीश,आमोद अरूण, अभिषेक, अजय, अंकुर,अनुज	आशु, अन्नपूर्णा, अमृता, अनुपमा, अलका अंकिता, अंगूरी, आरती, आशारानी, अंजली
राशि- वृष		इ-	इन्दुकान्त, इन्दुशेखर, ईश्वरदत्त, इन्द्रजीत	इन्दुप्रभा, इन्दिरा, इन्दुकांता, ईला, इन्दुमती
		उ-	उमेश, उभयकुमार, उर्मीतकुमार, उत्तम, उमाशंकर,	उर्मिला, ऊषा, उल्का, उत्प्रेच्छा,उमा,उर्वशी
		ए-	ऐश्वर्य कुमार, ऐदल सिंह	ऐश्वर्यप्रभा, ऐनी, एकतारानी
	रोहिणी	ओ-	ओमवीर, ओमप्रकाश, ओंकार	ओमवती, ओमजा, ओजस्विनी
		वा-	वालेन्दु, व्रजेश, वालमुकुन्द, वहुलकान्त, वकुलेश,वरूण,वंशीलाल, व्रजमोहन	वन्दना, ववीता, वसुधा, वाला, वर्षारानी
		वि-	विनयप्रकाश, विन्दुसार, विवेक, विमल विपिनकुमार, वीरवल, विनोद	वीना, विन्देश्वरि, विन्नी, विमला, विनीता विभा, विद्या
		वु-	वुधेन्द्र, वुधसैन, वुधराज	वुधेन्दी, वुलवुल
	मृगशिर	के-	वेदप्रकाश, वेदवीर, वेदराम	वेवी, वैजयन्ती, वेला, वैदेही
		वो-	वोधराज, वोधासिंह,	वोधवती
राशि- मिथुन		क-	कमल, क्रान्तीप्रसाद, कलानिधि, कन्हैया, कनिष्क, कपिल, क्षेमचन्द, कृष्णकांत	कविता, कल्पना, कामिनी, करुणारानी, कृति कमलेश, कमला, कांती
		की-	कीर्तिप्रिय, किंशुक, किसलय,किशोरीलाल	कीर्तिलता, कीर्ति, किरणप्रभा, किमी
	आर्द्रा	कु-	कुमुदकांत कुलानन्द, कुलदीप, कुलश्रेष्ठ, कुशाग्र, कुन्दनलाल	कुमकुम, कुसुमलता, कुसुम
		घ-	घनश्याम, घनानन्द	घनाक्षरी, घनश्यामा
		ङ-	(घ) घनश्याम, घनानन्द	घनाक्षरी, घनश्यामा
		छ-	छायांक, छविकान्त, छत्रपति, छत्रपाल	छाया, छवि, छटा, छत्रेश्वरी, छिप्रा
	पुनर्वसु	के-	केतनशंकर, कैलाशचन्द, केसरी, केहर	कैरवी, कैलाशी, केतकी
		को-	कौशलकिशोर, कोमलप्रसाद, कोविद	कोमिला, कोमलांग, कोविदरानी
		ह-	हंसराज, हरकेश, हरीशकुमार, हरीशंकर, हरवीर, हरिप्रसाद, हरिओम	हर्षप्रभा, हनी, हरदेई, हसैन्द्री



राशि	नक्षत्र	अक्षर	लड़के	लड़कियाँ
राशि- कर्क	पु.	ही-	हिमांशु, हीरालाल, हिमकर, हीरामणि	हिनादेवी, हिमिका,★
	पुष्य	हू-	हुकमचन्द	हुवली,
		हे-	हेमन्तकुमार, हेमगिरि, हेमाद्रि	हेमवती, हेमलता,✻
		हो-	होरीलाल, होतीलाल	
		डा-	डालचन्द, डव्वू	डालिमा, डाली
	आश्लेषा	डी-	डिव्रहन	डिम्पल, डिवादेई
		डू-	डूंगरमल, डूवू	डुरमिलारानी
		डे-	डेविड	ड्रेमिला, डेजी
		डो-	डोरीलाल, डोनी	डोली, ड्रोलिमा
राशि- सिंह	मघा	मा-	मनोज, मधुकर, मधुसूदन, महेन्द्र, मनीष, मणिकांत, मयंक, मंगलेश, मदन	मंजु,मनोरमा,माधुरी,माधवी,मंजुला,मधु,ममता, माया, मृदुला
		मी-	मिन्टू, मिश्रीलाल, मिठ्ठन	मीना, मीनाक्षी, मीनू, मिथिलेश
		मु-	मुकेश, मुदितकुमार, मुकुल, मुन्नालाल मुरलीधर	मुक्ति, मुन्नी, मुनमुन, मुग्धा, मुकुरप्रभा,मुदिता
		मे-	मैत्रेय, मेधावी, मेनपाल, मेघराज	मेघा, मैत्रेयी, मेनका, मेघना
	पूर्वाफाल्गुनी	मो-	मोनू, मोहन,मोहनीश,मोहनलाल,मोतीलाल	मोहिनी, मोनिका, मोहनीशा, मोना,
		टा-	टारजन, ट्रावेन्द्र	टम्भीरानी
		टी-	टिंकू, टीनू, टीकमसिंह	टीना, टिन्नी, टिवंकल, टिवकलिना
		टू-	टूकेजकुमार, टूकीराम	टेकी
	उत्तराफाल्गुनी	टे-	टेकचन्द	टेकी, टेविका
राशि- कन्या		टो-	टोनी	टोनिका
		पा-	पंकज, प्रतीक, प्रशान्त, परवीन, प्रदीप, पवन, परवेश, प्रवीणकुमार, प्रणय, प्रमोद	पारूल, प्रभा, प्रमिला, प्रज्ञा, प्राची, प्रतिमा, पामेला, प्रखर, प्रगति, प्रज्ञावती
		पी-	प्रियव्रत, प्रियकांत, प्रियांशु, प्रीतमसिंह	प्रियंका, पिंकी, प्रीतिलता
	हस्त	पू-	पुनीत, पुष्पेन्द्र, पूर्णेन्दु, पुण्यवीर, पूरनचन्द	पूनम, पूजा, पुष्पा, पुनीता, पूर्णिमा
		ष-	पुनीत, पुष्पेन्द्र, पूर्णेन्दु, पुण्यवीर, पूरनचन्द	पूनम, पूजा, पुष्पा, पुनीता, पूर्णिमा
		ण-	(ठा) ठाकुरदास	
		ठा-	ठाकुरदास, ठाकुरप्रसाद	
	चित्रा	पे-	प्रेमपाल, प्रेमसागर, प्रेमशंकर, प्रेमराज	प्रेमलता, प्रेरणा, प्रेमा,
		पो-	प्रोवेशचन्द	प्रोमिला

★ हिमन्द्रा, हिंमांशी,
✻ हेमाद्री, हेलन

नोटः अ व क हा डा चक्र ज्योतिपकी वर्णमाला में कुछ अक्षर ऐसे भी है जिनपर कोई नाम नहीं होता या वोलनेमें अच्छा नहीं लगता वहां ज्योतिषी आगे पीछेके अक्षरपर नाम रखनेमें स्वतन्त्र होता है।







राशि	नक्षत्र	लड़के	लड़कियाँ
राशि- तुला	चित्रा	रा- राकेश, राजीव, राहुल, रमेश,रंजन,रवि	राखी, राधा, रंजना, रतिका, रत्नप्रभा, रमा
		रत्नाकर, ऋषिकुमार, ऋतुराज, ऋषिराज	रश्मि, रजनी, रसना, रत्ना
		री- रीतेश, रिंकू, रिपुदमन, रिशांक	रीता, रीना, रिचा, रीतू, रिद्धिमा
		रू- रुपकिशोर, रुद्रदेव, रुद्रदत्त, रुपेश	रूबी, रूकमणी, रुचिता, रूपशिखा, रूपा
	स्वाती	रे- रेवतीप्रसाद, रैवतसिंह	रेनू, रेखा, रेशमा
		रो- रोहित, रोमेश, रोविन, रोवट	रोजी, रोहिणी, रोशनी, रोचिता
		ता- तन्मय, तरूणकुमार, तपन, तनु, तपेश	तापती, तृष्णा, तनुप्रिया, तरूलता, त्रैयम्बिका
	विशाखा	ती- त्रलोकचन्द, त्रिदेवकुमार	तिलोत्तमा, त्रियनयना, तीक्षा, त्रिशला
		तू- तुहिनांशु, तुहिनचन्द, तुलसीराम, तुलाराम	तूलिका, तुलसी
		ते- तेजप्रताप, तेजासिंह, तेजपाल	तेजसी, तेजस्वनी
राशि- वृश्चिक		तो- तोयद, तोताराम	तोयशी
	अनुराधा	ना- नवीन, नवनेन्दु, नवनीत, नागार्जुन, नगेन्द्र	नम्रता, नवमल्लिका, नवनीता, नंदिनी
		नी- नीरज, निर्मल, निवेश, निर्भय, नीलकांत	नीलम, नीतू, निशा, नीरू, निर्मला, निरूपमा
		निपुणेश, नितीश, निशान्त	
		नू- नूतन	नूतन, नुपूर, नूरी
		ने- नेमिचन्द, नेतराम, नेत्रपाल	नेहा, नेमवती, नेहलिया
	ज्येष्ठा	नो- नोरत्न, नोवेश, नोहवतशरण	
		या- यादवेन्द्र, यज्ञदत्त, यशोमणि, यज्ञसैन	यशोधरा, यशवती, यशोदा, यतिका, यामिनी
		यशपाल, यशवंत, यदुवीर	
		यी	
		यू- यूकेश, युगलकिशोर, यूपेन्द्र	युगेन्द्री, युगलेशकुमारी
राशि- धनु	मूल	ये-	योगिता, योगेश्वरी, योकिला
		यो- योगेन्द्र, योगेश	भावना, भानुप्रिया, भास्वती, भानुमती, भानवी
		भा- भारतेन्दु,भानुप्रताप,भगवत,भद्रसैन, भागीरथ,	भानुरेखा
		भास्कर, भगवती प्रसाद	
		भी- भीमसैन, भीष्म, भीकमसिंह	भीनूरानी
	पूर्वाषाढ़	भू- भूपेन्द्र, भुवनेश, भूषण, भुजवीर	भूदेवी, भूपिता, भूमिजा, भूमिका
		धा- धर्मेन्द्र, धर्मांशु, धरणीधर, धीरज, धर्मदत्त	धनवती, धनेन्द्री, धनैश्वरि, धवली, धात्री
		धवलकांत, धर्मेश, ध्रुव	धृति
		फा- फणीन्द्र, फतेहचन्द, फनीशकुमार	फनी, फरहा, फूलन, फूलवती
		ढा- ढिल्लोराम	ढिल्लोरानी
	उषा.	भे- भेदिव्यांश	भेव्यारानी
राशि- मकर	उषा.	भो- भोजराज,	भोजवती
		जा- जानकीदास, जगप्रवेश, जतिन, जयपाल,	ज्योति,जयप्रभा,जाग्रती,✲
		जसवन्त, जयवीर, ज्ञानचन्द्र	जीनियां, जिप्रू, जिज्ञासा,★
		जी- जीवाराम, जीवेश, जितेन्द्र, जीयालाल,	
		ज्वाला प्रसाद	जूली,
	अभि.	जू जे- जुगलकिशोर, जून्यादेव, जैपालभारती	खग्रारानी, खजानी, ख्याति
		जो खा- जोगेन्द्र, खगेश, खगेन्द्र, जोगिन्दर	खिस्त्रादेवी
	श्रवण	खी- खिलाड़ीराम	खुमानीदेवी ✲ज्योत्सना,ज्योतिबाला
		खू- खूवीराम	खेलप्रिया ★ज्ञानवती
		खे- खेरातीलाल, खेमचन्द	
		खो-	गार्गी, गतिका, गरिमा, गायत्री, गाथारानी
	धनिष्ठा	गा- गवनीश, ग्यारसीलाल, गंगाशरन	गीता, गीतांजली, गीतिका, गिरिननन्दिनी
		गी- गीतम, गिरधर, गिरीशकुमार, गिरिराज	
राशि- कुम्भ		गु- गुणवर्धन, गुटलू, गुल्लू, गुरूप्रीति	गुडडी, गुरमीत, गुंजन, गुंजिता, गुणवती
		गे- गेंदालाल, गेग्रीयलाल	
	शतभिषा	गो- गौरव, गोविन्द, गौरीशंकर, गोविल,	गौरांगना, गौरी
		गोरेशचन्द	
		सा- संजय, सचिन, सतेन्द्र, सर्वेश, शरदचन्द	साधना, सरोज, सरिता, सारिका, सविता,
		शशिकांत, शशिभूषण, संदीप, सत्यव्रत	सन्ध्या, शशी, साक्षी, स्वाती, संगीता
		सी- श्रीकांत, श्रीधर, शीतांशु,शीतलचन्द,	सीमा, श्रीप्रभा, शिक्षा, शिविका, शीला
		शिवराज, शिवेन्दु, सिद्धार्थ,श्रीयांशु,श्रीचन्द्र	शिखा, शीला
		सु- सुकेश, सुधाकर, सुमित, सुरेश, सुरेन्द्र	सुभद्रा,शुचि,शुचिप्रभा,श्रुतिकीर्ति,सुमित्रा,सुधा
	पूर्वाभाद्रपद	से- शैलेन्द्र, सेवाराम, सेवकराम	शैलजा, शैलेन्द्री, सेव्यावती,
		सो- सौरभ, सोमेश, सोमदत्त,सोरनसिंह,शोभन	सोनिया, शोभा, शोभना,श्रोतिभा,शोभांगना
		दा- दामोदर, द्रुपद, द्वारिकप्रसाद, दलवीर,	दयावती, दुधिसुता
		दयानिधि, दयानन्द, दयाराम	
राशि- मीन		दी- दिनेश, दिनकर, दीपक, दीपेश, दीपांशु	दिव्यावती, दीपिका, दीप्ति, दीपशिखा
		दीपेन्द्र, दिवस्पति, दिवेन्दु, दिलीप	
	उत्तराभाद्रपद	दु- दुलीचन्द, दुष्यन्त	दुलारी, दुर्गादेवी
		थ- थानसिंह	थानेश्वरी
		झ- झम्मनलाल	झिलमिली, झुन्झुन
		ञ- झम्मनलाल	झिलमिली, झुन्झुन
	रेवती	दे- देवेन्द्र, देवस्वरूप, देवराज, देवकीनन्दन,	देवप्रभा, देवकी, देवप्रिया,देवांगना,देवज्योति
		देवमणि, देवदास, देवीलाल, देवव्रत	
		दो- दौलतराम	द्रौपदी द्युति
		च- चन्द्रकान्त, चन्द्रेश, चन्द्रमणि, चन्द्रभूषण	चन्द्रकान्ता, चंचल, चन्द्रिका,चारू,चन्द्रकेला,
		ची- चीनू, चिन्टू, चित्रेश, चित्रक	चित्रलेखा, चित्रप्रभा, चित्रांगदा, चित्रा

मेषादि राशियों की संज्ञादि ज्ञानार्थ चक्रम्

संज्ञा	पु.-स्त्री	चरादि	तत्व	पुष्टकृश	पाद	वर्ण	गुण	धातु	शब्द	स्थान	क्रूरादि	बलस	विषमसम	दिशा	स्त्रीसंग	कान्ति	जाति	उदय	ऋतु	बुरज	साइन	राशि
मेष	पुरुष	चर	अग्नि	दृढ़	चतुष्पद	पाटलरक्त	तप्तदेह	पित्त	अतिरव	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्रिय	पृष्ठोदय	वसन्त	हमल	एरिस	मेष
वृष	स्त्री	स्थिर	पृथ्वी	दृढ़	चतुष्पद	श्वेत	शीत	वायु	अतिरव	समभूमि	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	मध्य	रूक्ष	वैश्य	पृष्ठोदय	ग्रीष्म	सूर	टॉरस	वृष
मिथुन	पुरुष	द्विस्वभाव	वायु	मृदु	द्विपद	हरित	तप्त	समधा	दीर्घशब्द	वनचर	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	मध्य	स्निग्ध	शूद्र	शीर्षोदय	ग्रीष्म	जोज़ा	जेमिनी	मिथुन
कर्क	स्त्री	चर	जल	मृदु	अपद	पाटल	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	पृष्ठोदय	वर्षा	सर्तान्	केन्सर	कर्क
सिंह	पुरुष	स्थिर	अग्नि	दृढ़	चतुष्पद	धूम्र	उष्ण	पित्त	दीर्घशब्द	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्रीय	शीर्षोदय	वर्षा	असद	लिओ	सिंह
कन्या	स्त्री	द्विस्वभाव	पृथ्वी	कृश	द्विपद	पांडुरंग	शीत	वायु	अर्धशब्द	समभूमि	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	अल्प	रूक्ष	वैश्य	शीर्षोदय	शरत्	सबुला	विरगो	कन्या
तुला	पुरुष	चर	वायु	दृढ़	द्विपद	विचित्र	उष्ण	समधा	शब्दहीन	वनचर	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	अल्प	स्निग्ध	शूद्र	शीर्षोदय	शरत्	मीज़ान	लिब्रा	तुला
वृश्चिक	स्त्री	स्थिर	जल	कृश	बहुपद	श्वेत	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	शीर्षोदय	हेमन्त	अकव	स्कोर्पिओ	वृश्चिक
धनु	पुरुष	द्विस्वभाव	अग्नि	दृढ़	द्विपद	सुवर्ण	उष्ण	पित्त	अतिशब्द	पर्वत	उग्र	दिवा	विषम	पूर्व	अल्प	रूक्ष	क्षत्रीय	पृष्ठोदय	हेमन्त	कांस	सेजिटेरिस	धनु
मकर	स्त्री	चर	पृथ्वी	दृढ़	चतुष्पद	पीत	शीत	वायु	अतिशब्द	वनचर	सौम्य	रात्रि	सम	दक्षिण	अल्प	रूक्ष	वैश्य	पृष्ठोदय	शिशिर	जदी	केप्रिकोर्न	मकर
कुम्भ	पुरुष	स्थिर	वायु	दृढ़	अपद	कर्बुर	उष्ण	समधा	खंडशब्द	भूमि	उग्र	दिवा	विषम	पश्चिम	मध्य	स्निग्ध	शूद्र	शीर्षोदय	शिशिर	दलु	एक्वारीस	कुम्भ
मीन	स्त्री	द्विस्वभाव	जल	दृढ़	अपद	धूम्र	शीत	कफ	शब्दहीन	जलचर	सौम्य	रात्रि	सम	उत्तर	बहु	स्निग्ध	विप्र	उभयोदय	वसन्त	हूत	पीसिस	मीन

अथ जन्मकुण्डल्यां तन्वादि भावस्थ ग्रहाणां फलानि

ग्रहाः	तनु१	धन २	भ्राता३	सुख४	पुत्र५	शत्रु६	स्त्री७	मृत्यु८	धर्म९	कर्म१०	लाभ११	व्यय१२
सूर्य	शूर	धनी	सुखी	दुःखी	अपुत्र	बली	स्त्रीजित	अल्पायु	सुखी	शूर	धनी	पतित
चन्द्र	जड़	कुटुम्बी	क्रूर	सुशील	पुत्रवान	अल्पायु	ईर्ष्यालु	रोगी	सुभग	धीर	ख्यातः	हीनांग
भौम	व्रणी	कुटिल	विक्रमी	पीड़ित	अपुत्र	शत्रुजित	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्य	पतित
बुध	विद्वान्	धनी	दुर्जन	सुखी	मन्त्री	दुशील	धर्मज	गुणी	पुत्रवान	विक्रमी	धनी	जड़
गुरु	चिरायु	धनी	कृपण	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्ध	अल्पायु	पुत्रवान	सुकृति	धनी	दरिद्र
शुक्र	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीच	प्रतापी	सुमति	धनाढ्य	खल
शनि	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्र	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुःखी
राहु	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्भाग	बली	अशुचि	गतायु	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतित
केतु	अल्पायु	धर्महा.	शूर	दुःखी	अपुत्र	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जन

अथ स्त्रियाणां जन्म कुण्डल्यां तन्वादि भावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनु१	धन२	भ्राता३	सुख४	पुत्र५	शत्रु६	पति७	मृत्यु८	धर्म९	कर्म१०	लाभ११	व्यय१२
सूर्य	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्र	अल्पायु	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रिय	दुखार्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगा
भौम	दुःखार्ता	बन्ध्या	अभ्रातृका	दुखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुखिनी	कुपुत्रा	सधर्मा	दुष्टा
बुध	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्ध	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरु	सती	सधना	भ्रातृमती	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरुपा	सद्व्यया
शुक्र	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रिय	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनि	बन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्ता	बन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहु	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्ता	क्लेशिनी	बन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतु	दुःखार्ता	शोकार्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदुःखा	शोकार्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

सूर्यादि ग्रहों का द्वादश भावों में गोचर फल

ग्रहाः	भाव१	भाव२	भाव३	भाव४	भाव५	भाव६	भाव७	भाव८	भाव९	भाव१०	भाव११	भाव१२
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्री	मानभंग	दैन्य	विजय	मार्गभ्रम	पीड़ा	सुकृतना.	सिद्धि	धनलाभ	धननाश
चन्द्र	धनलाभ	सन्तोष	सुख	रोग	ज्ञानवृद्धि	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सौख्य	धनलाभ	धननाश
भौम	शत्रुनाश	धननाश	धनलाभ	शत्रुमी	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुमी.	शत्रुपीड़ा	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	सुख	धनलाभ	शत्रुमी.	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्य	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	हानि	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुमी.	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुमी	पुत्रकष्ट	धननाश	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्री	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रु

अथ पुरुष जन्म कुण्डल्यां तन्वादि भावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	भाव१	भाव२	भाव३	भाव४	भाव५	भाव६	भाव७	भाव८	भाव९	भाव१०	भाव११	भाव१२
सूर्य	चिन्ता	राजभय	धनलाभ	हानि	कष्टम्	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	वृणा	धनलाभ	जय	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सौख्य	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	रोग
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनला.	पुत्रप्राप्ति	कष्टम्	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्रा.	धनलाभ	कीर्तिला	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभय	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	क्षेमलाभ	व्यय
शनि	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्रपीड़ा	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	शिरोर्ति	राजभय	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगी	कष्ट	धर्महानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुखम्	यशोऽर्थ	पुष्टि	दुःखम्	सुखप्राप्ति	कष्टम्	व्यसनं	दुःख	भाग्योदय	राजयोग	लाभ	कष्ट

अथशान्तिप्रकरणम्

गुरुगायत्रीमंत्र- ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

अशुभ ग्रहोंकी शान्तिहेतु ऋषि-महर्षि,ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वानोंने (जो ग्रह जिस समय अशुभ फल दे रहा हो उसी ग्रह से सम्बन्धित) मन्त्र जप,यज्ञानुष्ठान, दान, पुण्यार्जन एवं ग्रह दोष शमन यन्त्र, तदनुसार रत्न-उपरत्न धारण का विधान बतलाया है। साथ ही यह भी कहा है कि गुरुजनोंका आशीर्वाद, भूदेव द्विजोंकी वन्दना, धर्मशास्त्रोंका चिन्तन-मनन तथा सत्संग साधु सेवासे अशुभ फलकारी ग्रहकी पीड़ा शान्त होती है। श्री ब्रजभूमि पंचांगके पाठकोंकी विशेष सुविधा हेतु सूर्यादिग्रहोंसे सम्बन्धित यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र,जपसंख्या और समय,दान,हौम सामग्री आदिकी जानकारी दे रहे हैं, ताकि अनिष्टसे बचा जा सके। समय पर होने वाले दानादिका फल कल्याणकारी होता है। **प्रगट चारि पद धर्मके, कलि महुँ एक प्रधान। जेनकेनविधि दीन्हें,दान करइ कल्यान॥ उ.दो.१०३ख॥**

सूर्यका ध्यान- पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युतिः। सप्ताश्वःसप्तरज्जुश्च द्विभुजःस्यात् सदारविः॥



६	१	८
७	५	३
२	९	४

वैदिकमंत्र- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ यजु ३४।३१

जपनीय तान्त्रिक मन्त्र- ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। **एकाक्षरी बीज मन्त्र-** ॐ घृणिः सूर्याय नमः। **प्रार्थना करें-** ग्रहाणामादिरादित्यो लोकलक्षणकारकः।विषमस्थानसम्भूतां पीडां दहतु मे रविः॥

जपसंख्या- ७००० कलियुगमें २८०००। **हवन समिधा-** मदार **दान वस्तुएँ-** माणिक, गोधूम, लाल सवत्साधेनु, लाल चन्दन। लाल वस्त्र, गुड़, सुवर्ण, तांबा, लालचन्दन, लालफूल, गेहूँ, घी, केशर। **दान का समय-** अरूणोदय(सूर्योदय-काल)। **धारण हेतु रत्न-** माणिक्य मानिक चुन्नी(Ruby) याकूत। ५ या कम से कम ३ रत्ती का सोनेकी अँगूठी में रविपुष्यामृत योगमें, धारण करें। साधारणजन १५ चावल वजन का माणिक भी धारण कर सकते हैं। **उपरत्न-** विद्रुम, सूर्यमणि(लालड़ी) जिसे फारसीमें लाल भी कहते हैं कंटकिज (Spinal) तामड़ा या चुनडी (Garnet) **जड़ी-** विल्व वृक्षका मूल। **पीड़ानिवृत्तये सतीर्थजलोषधिस्नानम्-** मनः शिला, इलायची, देवदारू, कुंकुम,मुलहटी,शहद,कमल फूल,लालकनेरके फूल ग्रहण करें।

चन्द्रका ध्यान- श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतवाहनः। गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्त्तव्यो वरदः शशी॥



७	२	९
८	६	४
३	१०	५

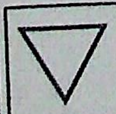
वैदिकमंत्र- ॐ इमंदेवाऽअसपत्न ऽ सुवध्वंमहते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुमुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ऽ राजा॥ यजु.अ.१०मं.१८

जपनीयतान्त्रिकमन्त्र- ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः। **एकाक्षरी बीजमन्त्र-**ॐसों सोमाय नमः। **लघुमन्त्र-** ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

प्रार्थना करें- रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रो सुधाशनः। विषमस्थानसम्भूतां पीड़ां दहतु मे विधुः॥

जप संख्या- ११ हजार कलियुगमें ४४ हजार। **हवन समिधा-** पलास। **दानवस्तुयें-** मोती, सोना, चांदी, चावल, मिश्री, दही, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, शंख, कपूर, सफेद बैल, सफेदचन्दन, घी से भरा घड़ा। **दान का समय-** सन्ध्याकाल। **धारण हेतु रत्न-** मुक्ता (मोती Pearl, मुखारीद) २।४।६ अथवा ११ रत्तीका धारण करें, ७ या ८ रत्तीका न पहने। चांदी या सोनेकी अंगूठीमें शुक्ल पक्ष के सोमवारको रोहिणी नक्षत्र योगकालमें धारण करना चाहिए। **उपरत्न-** चन्द्रकांत Moon Stone निमरु मोतीकी सीपकी पूंछ (जड़) में मोतीकी सी आभा होती है, यह भी मोतीकी तरह खूब गुणकारी होती है। **जड़ी-**क्षीरणी (खिरनी) मूल। **पीड़ानिवृत्तये सतीर्थजलोषधि स्नानम्-** पञ्चगव्य, गजमद, शंख सीपी, श्वेत चन्दन, स्फटिक लेना चाहिए।

मंगल का ध्यान- रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः। चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः॥



८	३	१०
९	७	५
४	११	६

वैदिकमन्त्र-ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम्। अपा ऽ रेता ऽ सिजिन्वति॥ यजु.अ.३मं.१२

जपनीयतान्त्रिकमन्त्र- ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः। **एकाक्षरीबीजमन्त्र-** ॐ अं अङ्गारकाय नमः। **लघुमन्त्र-** ॐ हुँ श्री मंगलाय नमः। **प्रार्थना करें-** भूमिपुत्रो महातेजा जगतो भयकृत्सदा।वृष्टिकृद-वृष्टिहर्ता च पीड़ां दहतु मे कुजः॥

जपसंख्या- १०हजार,कलियुगमें जपसंख्या ४० हजार। **हवनसमिधा-** खदिर। **दानवस्तुयें-** मूंगा, सोना, तांबा, मसूर, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल कनेर का फूल, केशर, कस्तूरी, लाल बैल, लाल चन्दन, **दानका समय-** सुबह-सुबह २ घटी=४८ मिनट तक। **धारणकरने हेतु रत्न-** विद्रुममणि या प्रवाल (मूंगा Coral मिरजान) ८ रत्ती वजन का सोनेकी अंगूठीमें मंगलवारको अनुराधा नक्षत्रमें पहने। ५ या १४ रत्ती का न हो। **उपरत्न-** विद्रुममूल या संगमूली, ज्योतिरस, Blood Stone **जड़ी-** नागजिह्वा (अनन्त) मूल धारण करें। **पीड़ानिवृत्तये सतीर्थजलोषधि स्नानम्-**विल्व छाल,चम्पक, बालछड़ लालफूल,हींग,जटामासी,बकुल,लालचन्दन तथा सिंगरफ लेना चाहिए।

बुधका ध्यान- पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः। खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥



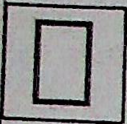
९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

वैदिक मन्त्र- ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते स ऽ सृजेथा मयं च। अस्मिन्सधस्थे। अध्युत्तरस्मिन् विश्वैदेवा यजमानश्च सीदत॥ यजु. अ.१५मं.५४

जपनीयतान्त्रिकमन्त्र-ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। **एकाक्षरी बीजमन्त्र-**ॐ वुं बुधाय नमः। **लघुमन्त्र-**ॐ ऐं स्त्री श्री बुधाय नमः। **प्रार्थना करें-** उत्पातरूपी जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्यप्रियकरो विद्वान्पीडां दहतुमे बुधः॥

जपसंख्या- ९ हजार; कलियुगमें जप-संख्या ३६ हजार। समिधा-अपामार्ग। **दानवस्तुयें-** पन्ना, सोना, कांसा, मूंग, खांड, घी, हरावस्त्र, मिलेजुले फूल, हाथीदांत, कर्पूर, शस्त्र, फल तथा गारूत्मक, दासी, **दानका समय-** सुबह २ घण्टे तक। **धारण हेतु रत्न-** मरकतमणि पन्ना (Emerald जमरुद) ६ या ३ रत्ती का सोनेकी अंगूठीमें बुधवारको उफा नक्षत्रमें धारण करें। **उपरत्न-** हरित नीलमणि (Aquamarine) शिलामणि (Agate सुलेमानी पत्थर) टोडा और देरुजसंग। **जड़ी-**वृद्धदारू-मूल (विधारा वृक्ष की जड़) **पीड़ानिवृत्तये सतीर्थजलोषधिस्नानम्-** गोबर, अक्षत, फल, गोरोचन, मधु, मोती, कमलपुष्प, शहद, सीपी, नवमूल तथा स्वर्ण मिश्रित जल लेना चाहिए।

गुरुकाध्यान- देवदैत्यगुरु तद्वत् पीतश्वेतौ चतुर्भुजौ।
दण्डिनौ वरदौ कार्यौ साक्षसूत्रकमण्डलू।।



वैदिकमन्त्र- ॐ बृहस्पते अति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा।।यजु.अ.२६मं.३

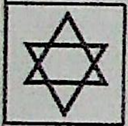
१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

जपनीयतान्त्रिकमन्त्र- ॐग्रां ग्री ग्रौ सः गुरवे नमः। **एकाक्षरी बीज मंत्र-** ॐ बृं बृहस्पतये नमः।**लघुमंत्र-** ॐ ऐं क्ली बृहस्पतये नमः। **प्रार्थना करें -** देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहितेरतः।
अनेकशिष्यैः सम्पूर्णः पीडां दहतु मे गुरुः।।

जपसंख्या- १९ हजार, कलियुग में जपसंख्या ७६ हजार होती है। **हवनसमिधा-** पीपल, अश्वत्थ। **दानवस्तुयें-** पुखराज, सोना, कांसी, चनेकीदाल, खांड, घी, पीला कपड़ा, पीले फूल, हाथी, पुस्तक, घोड़ा, पीले फल, हल्दी तथा मेवायें। **दानका समय-** सन्ध्याकाल। **धारण हेतु रत्न-** पुष्पराग (पुखराज Topaz) ९ रत्ती वजन का गुरुपुष्यामृत योगमें धारण करें; ९ रत्ती के अभावमें १२ चावल वजन अथवा १।। रत्ती का भी पीतल या सोने की अंगूठीमें पहना जा सकता है। स्मरण रहे ६।११।१५ रत्तीका नहीं पहनना चाहिए। **उपरत्न-**Emerald संग सोनेला, संग सोनामाखी आदि। **जड़ी-** भारंगी या केलेका मूल (जड़) लेनी चाहिए।

पीड़ानिवृत्तयेसतीर्थ जलोषधिस्नानम्- मालती पुष्प, चम्पा पल्लव, सरसोंपीली, शहद मिश्रित जल मुलहट्ठी लेना चाहिए।

शुक्रका ध्यान- श्वेतवर्णादण्डायुधा दानवादि पुरोहिता।
अग्निवर्णाष्टाश्वयुत रथारूढ़ सुशोभिता।।

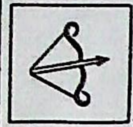


वैदिक मंत्र- ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रिन्य मिदं पयोऽमृतम्मधु।। यजु. अ.१९मं.७५**जपनीयतान्त्रिकमंत्र-** ॐद्रां द्री द्रौ सः शुक्राय नमः। **एकाक्षरीवीजमंत्रः** ॐ शुं शुक्राय नमः। **लघुमन्त्र-** ॐ ही श्री शुक्राय नमः। **प्रार्थना करें-**दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महाद्युतिः।प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीड़ा दहतु मे भृगुः।।

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

जपसंख्या- १६ हजार, कलियुगमें ६४ हजार। **हवनसमिधा** उदम्बर। **दानवस्तुएं-** हीरा, सोना, चांदी, चावल, मिश्री, दूध, सफेद चित्रितवस्त्र, सफेद फूल, सुगन्धितद्रव्य, दही, सफेद घोड़ा, सफेदचन्दन, बज्रमणी, गाय तथा परिमल। **दानका समय-** अरुणोदय-काल (सूर्योदय के समय) **धारण हेतु रत्न-** वज्रमणि (हीरा Diamond अल्सास) ७ रत्ती का शुक्रवार को मृगशिर नक्षत्रमें पहनना चाहिए। ७ रत्ती की सामर्थ्य न हो तो २ रत्ती का धारण करें, चांदीकी अंगूठी में। **उपरत्न-** संगदतला, संगतुरमुली Amethyst या Zircon अथवा चांदी में जड़ा हुआ मोती पहनें। **जड़ी-**सिंहपुच्छ का मूल धारण करें। **पीड़ानिवृत्तयेसतीर्थजलोषधिस्नानम्-** मनःशिला, इलायची, वृक्षोंकी जड़, कुंकुमयुक्त जलमें केशर मिलाकर प्रयोग करें।

शनि का ध्यान- इन्द्रनीलद्युतिः शूली वरदो गृध्रवाहनः।
बाणबाणासनधरः कर्तव्योऽर्कसुतस्तथा।।



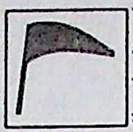
वैदिक मन्त्र- ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शन्योरभिस्त्रवन्तु नः।। यजु.अ.३६।१२

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

जपनीय तान्त्रिक मन्त्र- ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः। **एकाक्षरीमन्त्र-** ॐ शं शनैश्चराय नमः।
लघुमन्त्र- ॐ ऐं ह्रीं श्रीशनैश्चराय नमः।
प्रार्थनां करें- सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां दहतु मे शनिः।।

जपसंख्या- २३ हजार, कलियुगमें ९२ हजार होती है। **हवनसमिधा-** शमी। **दानकी वस्तुएं-** नीलम, सोना, लोहा, उड़द, कुलथी, कड़वा तेल, कालावस्त्र, कालाफूल, कस्तूरी, सवत्सा कालीगो, भैंस,भैसा,खडाऊँ तथा इन्द्रनीलमणि। **दानका समय-** मध्यान्ह काल अथवा सन्ध्यासमय। **धारणहेतु रत्न-** नीलमणि (नीलम Saphire याकूत) १०।७।६।३ रत्तीका शनिवारको श्रवण नक्षत्रके योगमें धारणकरें। कम से कम ११ चावलके वजनका भी पहना जा सकता है। लोहेकी अंगूठी या सप्तधातु अथवा जस्तमें धारण कर सकते हैं। **उपरत्न-** पन्ना Crysolite संगलीली, संग जमुनिमा। **जड़ी-**विच्छोल की लेनी चाहिए। **पीड़ानिवृत्तयेसतीर्थ जलोषधिस्नानम्-** काले तिल, अंजन, लोहवान, लाज्जवती, सौंफ, मुत्यरा खिल्ला, पुष्पयुक्त जल ग्रहण करें।

राहु का ध्यान- करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः।
नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते।।



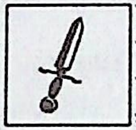
वैदिक मन्त्र- ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।। यजु.अ.२७।३९

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

जपनीयतान्त्रिकमन्त्र- ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः। **एकाक्षरीमन्त्र-** ॐ रां राहवे नमः। **लघुमन्त्र-** ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः। **प्रार्थना करें-** अनेक रूपवर्णश्च शतशोऽथ सहस्त्रशः। उत्पातरुपी घोरश्च पीडां दहतु मे शिरवी।।

जपसंख्या- १८ हजार, कलियुगमें ७२ हजार। **हवनसमिधा-**दूर्वा। **दानकी वस्तुएं-** गोमेद, सोना, सीसा, तिल, सरसों, तेल, नीलावस्त्र, कालेफूल, कम्बल, घोड़ा, सूप, तलवार, नारियल तथा सप्त धान्य। **दानका समय-** रात्रिमें। **धारण हेतु रत्न-** गोमेद (गोमेद Zircon जरकूनिया या जारगुन) ६रत्ती का बुधवार उफा.नक्षत्र में धारण करें। अंगूठी, लोहा, शीशा या रांग की होनी चाहिए। **उपरत्न-** लाजवर्त, Sardonyx संगतुरसावा, संगसाफी, **जड़ी-**श्वेत चन्दन।
पीड़ानिवृत्तयेसतीर्थजलोषधिस्नानम्- लोध, तिल, सुथरामोती, हाथीमद, कस्तूरी युक्त जल लेना चाहिए।

केतुका ध्यान- धूम्रा द्विबाहवःसर्वे गदिनो विकृताननाः।
गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः।।



वैदिक यन्त्र- ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्याऽअपेशसे समुषद्भिरजा यथाः।। यजु.अ.२९।३७

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

जपनीयतान्त्रिकमन्त्र- ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः। **एकाक्षरीवीजमन्त्र-** ॐ कें केतवे नमः। **लघुमन्त्र-** ॐ ह्रीं केतवे नमः। **प्रार्थना करें-** अनेक रूपवर्णश्च शतशोऽथ सहस्त्रशः। उत्पातरूपी घोरश्च पीडां दहतु मे शिखी।।

जपसंख्या- १८ हजार, कलियुगमें ७२ हजार। **हवन समिधा-** कुशा। **दानवस्तुएं-** लहसुनिया, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूमिल कपड़ा, ऋतु फल, फूल, नारियल कम्बल, बकरा, खोया,ध्वजा और शस्त्र। **दानकासमय-** रात्रि। **धारण हेतु रत्न-** वैदूर्य (लहसुनिया Cat's-Eye फिरोजा) ६ रत्ती का गुरुपुष्य योगमें धारण करें। अंगूठी, लोहा, शीशा, जस्ता की पहनें। गोमेद और

लहसुनिया ३ रत्ती का भी ले सकते हैं। २।४।११।१३ रत्ती का वर्जित है। उपरत्न- लाजवर्त Turqaise संगमूसा, संगगोदन्ती आदि। जड़ी- असगंध की जड़ धारण करें। पीड़ानिवृत्तये सतीर्थजलोषधिस्नानम्- लोबान, तिलपत्र, मुस्तरा, हाथीमद, बकरी मूत्र से युक्त जल ग्रहण करें।

ग्रहोंके दोष शान्त्यर्थ सामान्य औषधि स्नानम्

लाजवन्ती (छुईमुई), कूट, खिल्ला, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारू, हल्दी, लोध, जटामासी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन, बच, चम्पक और नागरमोथा इन सब औषधियुक्त गङ्गादि सतीर्थोदक जल से स्नान करने पर सब ग्रहोंकी पीड़ा शान्त होती है। ऊपर लिखे अनुसार सूर्यादि ग्रहोंके सम्बन्धमें वर्णित मन्त्रजप यज्ञानुष्ठानादि करने से अशुभ स्थानमें भी ग्रह पीड़ा नहीं देते हैं।

ग्रह औषधि, जल, वायु और वस्त्र- ये सब संग और कुसंग पाकर संसारमें बुरे और भले पदार्थ हो जाते हैं। चतुर एवं विचारशील पुरुषही बातको जान पाते हैं, जैसाकि गोस्वामी श्रीतुलसीदासने लिखा है-

ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुजोग सुजोग।
होहिं कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलच्छन लोग।।

ध्यान रहे- नग में बाल, रेखा बिन्दु न हो, वह टूटा-फूटा न हो, रंग में रंग मिश्रित न हो। नग लेने की सामर्थ्य न हो तो उपरत्न- यन्त्र एवं शास्त्रोक्त नियमानुसार जड़ी धारण करना भी कम उपयोगी नहीं होता है। जिस प्रकार मूर्तिकी प्रतिष्ठा मन्त्रों द्वारा की जाती है उसी प्रकार जिस ग्रहका नग हो उसी ग्रह मन्त्रका १००० जाप दशांश हवन करके नग धारण करें।

ग्रहयन्त्र पंचांगशुद्धि देखकर अष्टगन्धकी स्याही और अनारकी कलमसे भोजपत्र पर लिखकर सोने, चांदी या तांबेके ताबीजमें ग्रहानुसार धागेमें पिरोकर पुरुष दाहिनी भुजामें, स्त्री व बच्चे गलेमें पहनें। प्रत्येक ग्रह की जड़ी पुष्यार्कयोग में ग्रहण करें। मासान्तर्गत लाभ हो तो ठीक अन्यथा बदल लेना चाहिए।

समस्तविश्व देवताओं (देदीप्तमानज्योतियों) के आधीन है। देवता मन्त्रोंके अधीन रहते हैं तथा मन्त्र भूदेव ब्राह्मणोंके अधीन होते हैं, इसलिए मन्त्रदृष्टा विद्वान ही सर्वसाधारणके लिये देवता है जहां तक सम्भव हो सके विद्वान से ही जपादि करवाना चाहिए-

देवाधीनं जगत् सर्वम् मन्त्राधीनश्च देवता।
ते मन्त्र ब्राह्मणाधीनः तस्मात् ब्राह्मण देवता भवेत।।

ग्रह किसपाद से आया है- ग्रह जिस समय राशि बदले उस समय चन्द्रमा जिस राशि पर हो, वह राशि जन्म राशि से १।६।११वें हो तो ग्रह स्वर्णपाद से गतिशील रहेगा ऐसा जानें, फल अनावश्यक चिन्ता व्याप्त रहे। ऐसे ही २।५।९वें हो तो चांदीके पायासे, फल- धन प्राप्ति हो, ३।७।१०वें हो तो **ताम्रपाद फल-** लक्ष्मी प्राप्ति और यदि ४।८।१२वें हो तो लोहपादमें ग्रह फल दुःख होता है। मतान्तर- शनि, राहु, केतु का लोहपाद, गुरुका स्वर्णपाद और मंगलका ताम्रपाद फल शुभ होता है।

शनिकी साढेसाती लगनेसे- १०० दिन मुख पर रहता है फल हानि करता है। ऐसे ही ४०० दिन दक्षिण भुजा पर विजय दिलाता है। ६०० दिन चरणोंमें यत्र-तत्र भ्रमण करता है। ४०० दिन वाम भुजामें दुःख देता है। ५०० दिन उदर में लाभ देता है। ३०० दिन मस्तक पर राजलाभ करता है। २०० दिन नेत्रोंमें सुखद होता है और २०० दिन गुह्य प्रदेशमें रहकर दुःख देता है। इस प्रकार शनि की साढेसाती २७०० दिन भोग करती है।

शनि वाहन फल- शनिसंचार दिन के तिथि, वार, नक्षत्र संख्या में नामाक्षर जोड़कर ९ का भाग दे शेष १ बचे तो शनि वाहन गदर्भ, २ अश्व, ३ हस्ति, ४ महिष, ५ जम्बूक, ६ सिंह, ७ काक, ८ मयूर, ० शेष में हंस वाहन होता है **द्वितीय मत-** जन्म नक्षत्र से जिस दिन शनि राशि बदले उस दिनके नक्षत्र तक गिनकर ९ से भाग करने पर उपरोक्त क्रम से वाहन जानें। फल-गदर्भ से कलह, अश्व से मरण भ्रम, गज से लाभ, महिष से व्याधि, जम्बूक से भय, सिंह से विजय, काक से चिन्ता, मयूर व हंस से जय सौख्य समृद्धि होती है।

श्रीदशरथजी कृत-शनि स्तोत्र

दशरथजी ने माता सरस्वती और गणेशजीका स्मरण करके निम्नलिखित स्तोत्रकी रचना करके शनिदेव की सविधि पूजनार्चनाकी जिससे संतुष्ट होकर शनि ने वरदान मांगने को कहा। तब महाराजा ने वरदान में मांगा- 'भगवन् देवता, मानव, पशु-पक्षी' किसी को आप कष्ट न दें। शनि ने एक शर्त के साथ यह वरदान भी दे दिया।

शर्त यह थी- कि यदि किसीकी जन्मकुण्डलीके मृत्युस्थान ८ जन्मलग्नस्थान १ अथवा चतुर्थसुखस्थान ४ में मैं बैठा हूं एवं गोचरमें जब कभी भ्रमण कर रहा हूं तब मैं उसे मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट दे सकता हूं, किन्तु यदि वह मेरी प्रतिमाकी पूजाकर तुम्हारे द्वारा रचित स्तोत्रका नित्य पाठ करेगा तो उसे मैं कभी पीड़ा नहीं दूंगा। अपितु उपासककी रक्षा करूँगा।

दशरथजी रचित शनि-स्तोत्र

नमःकृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमःकालाग्निरुपायकृतान्ताय च वै नमः।।
नमो निर्मांसदेहाय दीर्घश्मश्रुजटाय च।
नमो विशालनेत्राय शुष्कोदरभयाकृते।।
नमःपुष्कलगात्राय स्थूलरोम्णेऽथ वै नमः।
नमोदीर्घाय शुष्काय कालदंष्ट्र नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते कोटराक्षाय दुर्निरीक्ष्याय वै नमः।
नमो घोराय रौद्राय भीषणाय कपालिने।।
नमस्ते सर्वभक्षाय बलीमुख नमोऽस्तु ते।
सूर्यपुत्र नमस्तेऽस्तु भास्करेऽभयदाय च।।
अधोदृष्टे नमस्तेऽस्तु संवर्तक नमोऽस्तु ते।
नमो मन्दगते तुभ्यं निस्त्रिंशाय नमोऽस्तु ते।।
तपसा दग्धदेहाय नित्यं योगरताय च।
नमो नित्यं क्षुधार्ताय अतृप्ताय च वै नमः।।
ज्ञानचक्षुर्नमस्तेऽस्तु कश्यपात्मजसूनवे।
तुष्टो ददासि वै राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्।।
देवासुरमनुष्याश्च सिद्धविद्याधरोरगाः।
त्वया विलोकिताः सर्वे नाशं यान्ति समूलतः।।
प्रसादं कुरु मे देव वरार्होऽहमुपागतः।
एवं स्तुतस्तदा सौरिर्ग्रहराजो महाबलः।।

पद्मपु.उत्त.३४।२७।३६

ग्रह गायत्री मन्त्र

जन्म भूर्गोत्रमग्निश्च वर्णः स्थानं मुखानि च।
योऽज्ञात्वा कुरुते शान्तिं ग्रहास्तेनावमानिताः।।

ग्रह शान्तिके सन्दर्भो में अध्ययन करने पर निर्विवाद रूप से यह स्वीकार किया जा सकता है कि ४।८।१२ स्थानोंमें रहने वाले, ग्रहोंके कुप्रभावको न्यूनाधिक मात्रामें अनुकूल करनेके लिए ग्रह शान्तिका विशेष महत्व है। यही कारण है कि ग्रह गणिताचार्यो ने न केवल ग्रहोंके प्रभावोंका ही निर्देश किया अपितु उनकी अनुकूलताके लिए 'ग्रहशान्ति' जैसे साधारण एवं सुसाध्य उपायोंका विश्लेषणात्मक अध्ययन भी किया। प्राचीन मन्त्रदृष्टा ऋषियोंने जप के लिए ग्रहोंकी गायत्रीका भी निर्देश किया है यथा-

सूर्य-ॐ आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।
चन्द्र-ॐअमृताङ्गाय विद्महे कलारूपायधीमहितन्नःसोमः प्रचोदयात्।।
भौम-ॐअंगारकाय विद्महे शक्तिहस्तायधीमहितन्नोभौमः प्रचोदयात्।।
बुध-ॐसौम्यरूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहितन्नौ सौम्यः प्रचोदयात्।।
गुरु-ॐआंगिरसाय विद्महे दण्डायुधाय धीमहितन्नोजीवः प्रचोदयात्।।
शुक्र-ॐभृगुसुताय विद्महे दिव्देशाय धीमहितन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।।
शनि-ॐसूर्यपुत्राय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहितन्नो सौरिः प्रचोदयात्।।
राहु-ॐशिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहितन्नो राहुः प्रचोदयात्।।
केतु-ॐगदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहितन्नो केतुः प्रचोदयात्।।

प्रसव कष्ट शान्ति

प्रजननमें विलम्ब हो, प्रसूता अधिक कष्टमें हो तो निम्नलिखित ऋचा तथा सूक्त द्वारा गंगाजल अभिमन्त्रित करके गर्भिणीको पिलानेसे बच्चा सुखपूर्वक हो जाता है-

प्रथमदिने प्रसूयन्त्यां जपेद् गर्भविमोचनीम्।
इन्द्रं च मनसा ध्यायेन्नारी गर्भं विमुञ्चति।।
वि जिहीष्व वनस्पतये योनिः सूष्यन्त्या इव।
श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवध्रिं मुञ्चतम्।।

शीघ्र प्रसव होने का मन्त्र- 'ॐ क्षीं ॐ स्वाहा' इस मन्त्रको पढ़ता हुआ तिल तैल को सौ या हजार बार अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्रीको किंचित्मात्र पिलादें तथा प्रजननमार्ग पर अच्छी प्रकार लेप करनेसे शीघ्र ही प्रसव हो जाता है। हिमवतीके उत्तर पार्श्वमें एक सुरथा नाम राक्षसी है, जिसके स्मरण मात्र से शीघ्रता-शीघ्र प्रजनन होकर प्रसूता निर्दुःख हो जाती है यथा-

हिमवत्युत्तरे पार्श्वे सुरथा नाम यक्षिणी।
तस्याः स्मरणमात्रेण विशल्यागर्भिणी भवेत्।।

औषधिप्रयोग- बांस व नीमकी छाल, तुलसीकी जड़, कपित्थ(कैंत) के पत्ते, करवीरकेबीज इन सबको बराबर लेकर भैंसके दूधमें पीसें, तिल तेलमें मिलाय योनिमार्गपर लेप करनेसे शीघ्र प्रसवहो जाता है।

प्रजननके लिए अशुभ समय- कार्तिकमें स्त्री, पौषमें बकरी, माघमें भैंस, चैत्रमें कुतिया, वैशाखमें ऊँटनी, ज्येष्ठमें बिल्ली, श्रावणमें गधी व घोड़ी, भाद्रपदमें गौ, मार्गशीर्षमें हथिनी बच्चा जन्मे तो पिता एवं घरधनी को छः मासान्तर्गत अरिष्ट होता है। शान्त्यर्थ प्रसूता गौ आदि का दान करें, घरमें हवन, शान्तिपाठ, पुण्यहवाचन, श्वेतसर्षप हवन, व्याहृति मन्त्रोंसे यज्ञानुष्ठान करवाना चाहिए, जिससे शान्ति रहे।

त्रिखल जन्म शान्ति विधान

सुतत्रये सुता चेत्स्यात्तत्रये वा सुतो यदि।
मातापित्रोः कुलस्यापि तदाऽनिष्टं महद्भवेत्।।

तीनपुत्रोंके बाद कन्या या तीन कन्याओके बाद पुत्रका जन्म हो तो त्रिखलदोष होता है। पुत्रीमाताके लिये और पुत्र पिताके लिये नेष्ट होता है। परिवारमें अनिष्टकी आशंका बनी रहती है।

शान्त्यर्थ- भूषयन्, तीनअन्न, तीनपात्र, तीन प्रकारके वस्त्राभूषणादि दान तथा महामृत्युञ्जयजप व ब्रह्मा, विष्णु, महेश,इन्द्रके सूक्तोंका पाठ, उक्त देवोंके मन्त्रोंसे १८००आहुतिःहवन, गुरुजनोंके आशीर्वादसे अरिष्ट विलीनहो जाताहै। विस्तृत विवरण देखें। नि.सि.तृ.प.पृ.५०८

एक नक्षत्र जन्म दोष

पिता-पुत्र,माता-पुत्र व कन्या, दो सहोदर भाइयोंका जन्म एक ही नक्षत्रमें हो तो दोनोंमें से किसी को कष्ट होताहै। दोषशान्त्यर्थ गौ, सुवर्ण एवं छायापात्रका दान,उत्तम सामग्रीसे हवनादि करना चाहिए।

उल्टे दांत जन्म हो तो महाअशुभ- पहले मासमें यदि बच्चेके दांत निकलें तो स्वयंके लिए, दूसरेमें छोटे भाईको, तीसरेमें बहिनको, चौथेमें पारिवारिक भ्राताको, पांचवेमें बड़े भाई को नेष्ट होता है। जन्म से ही दांत निकले हुए हों तो माता-पिता अथवा अपने लिये महाअशुभ होता है। यदि बच्चेके उल्टे (ऊपर की पंक्तिमें) पहले दांत निकलें तो दैवज्ञोंने मातुलपक्ष अर्थात् मामा-मामी आदिके लिए नेष्ट कहा है। दोष निवृत्तिहेतु सुवर्ण, चांदी, तांबा या कांसीके पात्रमें दही और आटा भरकर मामा भान्जे, या भान्जीके हाथमें देते समय निम्न मन्त्रोच्चारणके साथ अवलोकन करें-

रक्ष मां भागिनेय! त्वं रक्ष मे सकलं कुलम्।
गृहीत्वा भाजनं सान्नं प्रसन्नो भव मे सदा।।

हाथीकी पीठ या नौकापर बच्चेको बैठाकर सर्वोषधि, सर्वगन्ध बीज, पुष्प, फल, पंचगव्य, रत्न तथा पत्ता मिश्रित जलसे स्नान करावे, तदनन्तर थालीपाक से ब्रह्माका ७ दिन तक पूजन करे, और ब्राह्मणको भोजन करावे। आठवें दिन स्वर्ण या अन्य धातुसे बने आसनपर बैठकर वृक्ष, जड़, मृत्तिका, रितुफल सर्वोषधि, सर्वगन्ध तथा बीजयुक्त जल से स्नान करावे। अग्नि, सोम, वायु, प्रसिद्ध पर्वत तथा भगवान् केशवके निमित्त अग्निमें हवन, गौ ब्राह्मणपूजन दानमानसे सम्मानित करने पर दोषकी निवृत्ति होती है।

निर्विघ्नं कुरु कल्याणं निर्विघ्नां च मातरम्।
मय्यात्मानमधिष्ठाप्य चिरंजीव मया सह।।

अशुभसमय-भद्रा,व्यतिपात,कुलिंग,यमघण्ट,सूर्यचन्द्रग्रहण,दोनों संध्या,वैधृतिपात,भूमिकम्पन,अन्यान्य महोत्पात या गण्डमूल नक्षत्रादिमें किसीका जन्म हो तो आचार्य युक्तियुक्त विचार कर शान्ति करावे।

अङ्गभंग-जन्महोना,शक्लयोनि विकृतहो, अद्भुतरूप पैदा हो, मनुष्य, गौ,बकरी,घोड़ी,मृग अन्यान्य पशु,पक्षी,सदन्तजन्मे,बहुशिर, बिनाशिर बहुकान, बिनाकान, एकसींग, तीनसींग, तीनपाव,पांचपांव, बड़ेकान पैदाहों तो महोत्पात जानें। जहां जन्म हुआ हो , वहां विनाश होता है। इसलिए ग्राम प्रधान द्वारा अथवा राजकीय शान्ति होनी चाहिए।

मूलशान्तिविधान-

गण्डेऽरिष्टं चन्दनं च कुष्ठं गोरोचनं तथा।
घृतेन मिश्रितं कृत्वा चतुर्भिः कलशैस्ततः।।
सहस्त्रशीर्षामन्त्रेण बालकं स्नापयेद्बुधः।
पितृयुक्तं दिवाजातं मातृयुक्तं च रात्रिकम्।।
स्नापयेत्पितृमातृभ्यां सन्ध्ययोरुभयोरपि।
कांस्यपात्रं घृतैः पूर्णं दद्याद्गण्डोपशान्तये।।
कृष्णां धेनु सुवर्णं च ग्रहजाप्यं च कारयेत्।
आश्लेषायां च मूलेऽपि शान्तिरेवं विधीयते।।

मूल-गण्डमूल शुभाशुभ नक्षत्रोंका विस्तारसहित विवरण देखें जातक प्रकरणमें, यहां केवल शान्तिपरिचर्या पाठकोंके विचाराधीन है।

मूलमें जन्मे बच्चेका नामकरण संस्कार(शान्तिविधान) पुनः जन्म(मूल) नक्षत्र आनेपर २७वें दिनके आसन्न लग्नशुद्धि देख करना चाहिए।

सर्वे दोषाः विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदा भवेत्।।

मूल जपके लिए वेदोक्त मन्त्र- पृष्ठ १०० पर अथ नक्षत्र कष्टावलीचक्रमें देखने चाहिए। अश्विनी,आश्लेषा,मघा, मूल,रेवतीके मन्त्र जप ५ हजार और आश्लेषा मघाके १०हजार जप करने चाहिए। कलियुगमें चौगुना जाप फलदायक होता है।

आहुति किस ग्रह के मुख में जानी चाहिए?

सूर्याश्रित नक्षत्र से हवन दिन नक्षत्र तक गिनें; तीन-तीन में क्रमशः सूर्य, बुध, शुक्र, शनि, चन्द्र, मंगल, गुरु, राहु और केतु के मुख में आहुति होती है। जन्मराशि स्वामीग्रहके मुखमें आहुति पड़नी चाहिए। स्मरण रहे यह मत केवल जन्म नक्षत्र मूल शान्ति सन्दर्भमें है अन्य यज्ञोंमें शुभग्रह के मुखमें आहुति पड़नेसे कल्याण होता है।

अग्निका निवास कहां शुभ होता है?

हवन दिन तिथि संख्यामें वार संख्या जोड़कर १ और मिलायें। ४का भाग दें शेष ३।० बचे तो अग्निका वास पृथ्वीपर शुभ जानें। १ शेषमें अग्निवास आकाशमें प्राणनाशक होता है। २ शेषमें पातालमें अग्नि धनैश्वर्य हानिकारक होती है।

सप्त अग्नियोंके नाम- बहुरूपा, हिरण्या, कनका, रक्ता, कृष्ण, सुप्रभा और जिव्हा। **सप्तजिव्हानाम-** ॐ भुं स्वाप्त,स्तुं स्वाहा, ॐब्रुं स्वाहा,ॐपुं स्वाहा,ॐ डुं स्वाहा,ॐ द्रुं स्वाहा, ॐ क्षुं स्वाहा।

मुन्था- जिस वर्ष वर्षफलमें जीवसाक्षिणी देहधारी प्रधानग्रह मुन्था पाप ग्रह से युक्त, दृष्ट या संपुट होकर त्रिक भवनमें स्थित होती है; उस वर्ष मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट, त्रय तापोंकी वृद्धि होती है। शांत्यार्थ दान-मोती, तन्दुलान्न, सुवर्ण, कांस्यपात्र, घृत, श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, कर्पूर, मिश्री, श्वेत चन्दन, हाथी दांत, वर्ण और दक्षिणा, रत्न-लहसुनिया(वैदूर्यमणि) धारण करना चाहिए। दानकासमय, जप मन्त्र संख्या और समिधा मुन्थेवत्। सप्तधान्योंमें जौ, उड़द, मूंग, गेहूँ,चावल,चना और कांगनी है। कूट, जटामासी, दोनोंहल्दी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन, वच, चम्पक और नागरमोथा ये दस द्रव्य सर्वोषधिके हैं। अष्टगन्धकेद्रव्य-अगर,तगर, छबीला, केशर,गौरोचन, कस्तरी,कुमकुम तथा दोनों चन्दन हैं।

पंचकोंमें मृत्यु हो जाये तो क्या करें?

आदौ कृत्वा धनिष्ठार्धमेतन्नक्षत्रपञ्चकम्।
रेवत्यन्तं सदा दूष्यमशुभं दाहकर्मणि।।

धनिष्ठाके उत्तरार्ध से रेवती पर्यन्त ५ नक्षत्र पंचक कहलाते हैं। पंचकों में किसीकी मृत्यु हो जाये तो महाअशुभ होती है। सम्भवहो तो पंचकों में दाहसंस्कार न करें। पंचांगके पक्षोंमें पंचक, भद्रा, त्रिपुष्कर, व्यतिपात, भरणी आदि कुयोगोंका स्पष्ट उल्लेख होता है। अशुभ योगमें मरने पर प्राणी प्रेतात्माको प्राप्त होकर वंशजोंका हनन करता है। उसकी ऊर्ध्वगति(स्वर्गारोहण) नहीं होता। मृतक छोटा हो या बड़ा नियम सब पर समान लागू होता है।

कुम्भमीनस्थिते चन्द्रे मरणं यस्य जायते।
न तस्योर्ध्वगतिर्दृष्टा सन्ततो न शुभं भवेत्।।

कुशाकी पांच प्रतिमा बनाकर ऊन से लपेट कर जौ के आटे से अनुलेपन करें। फिर संस्कारकर्त्ता अपने हाथ में गंगाजल अक्षत सहित लेकर अमुकगोत्रस्य अमुकनामकस्य पंचकमरणजनितवंशानिष्ट परिहारार्थ पंचकविधि करिष्ये ओम्। संकल्प कर पुतलों पर छोड दें। पुनः गन्ध पुष्पादि से पांचों पुतलोंका उनके नाम तथा मन्त्रों द्वारा अर्चन करे यथा- १. प्रेतवाहनाय नमः २. प्रेतसखाय नमः ३. प्रेतपाय नमः ४. प्रेतभूमिपायेन नमः ६. प्रेतहर्त्रे नमः और निम्न मन्त्रोंसे पिण्डदान करें यथा- १. **जमया अत्र वसवो रन्त देवाः उरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः। अर्वाक् पथ उरुज्रयः कृणुध्वं श्रोता दूतस्य जन्मुषो नो अस्य।। (ऋ. ७।३९।३) २. तत् त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेलमानो वरुणेह। बोध्युरुशंसमान आमुः प्रमोषीः।। (ऋ.१।२४।११) ३.उत नोऽहिर्बुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपात् पृथ्वी समुद्रः। विश्वेदेवा ऋतावृधे हुवानाः स्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु।। (ऋ.६।५०।१४) ४. कदु रुद्राय प्रचेतसे मीलहुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे।। (ऋ.१।४३।१) ५. पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः। पूषा वाजं सनोतु।। (ऋ.६।५४।५)**

कुशाओंकी पूजित प्रतिमाओंको क्रम से प्रेतात्माके एक शिर में, दूसरी नेत्रोंमें, तीसरी बाई कुक्षीमें, चौथी नाभिमें तथा पांचवीं पैरों पर रखकर काष्ठकी चिता पर मुर्दे को रखें; फिर पूर्वोक्त नाम मन्त्रोंसे ही स्थापन क्रम से घृताहुति देकर अग्नि प्रदान करें। चिता में अग्नि प्रज्जलित होने पर बोलें-**'प्रेहि प्रेहि मे पथिभिः पूर्वेभिः'** अर्थात् जिस मार्गसे अन्य पूर्वज गये हैं, उसी मार्ग से तुम भी जाओ।

पञ्चकके पहले मरने पर पञ्चकमें दाह करें तो पुत्तल विधान ही करे। शान्ति न करें। पञ्चकमें मरने पर पञ्चक के बाद दाहसंस्कार करने पर शान्ति का ही विधान है; पुत्तलकी विधि आवश्यक नहीं। यह धर्मसिन्धु का मत है। पञ्चकोंमें वर्जित अन्य कर्म-

धनिष्ठापञ्चकं त्याज्यं तृणकाष्ठादिसंग्रहे।
त्याज्या दक्षिणादिग्यात्रा गृहाच्छादनमेव च।।

पञ्चक शान्ति कथन

शान्ति कर्त्ता देशकाल वंशानुगतस्मत्पित्रादेर्धनिष्ठादिपञ्चकदुर्मरण जनितदोषोपशान्त्यर्थ मम गृहे सर्वेषां बालादीनां दीर्घायुरारोग्यंसुख प्राप्त्यर्थ ब्रह्माण्डपुराणोक्तां पंचकनिधनशान्ति करिष्ये। इस प्रकार संकल्प कर गणेशादि समस्त देवताओंका आवाहन तथा पूजन करें। उत्तरादि चारों दिशाओंमें ४ कलश जलसे भरकर रखें उनके मन्त्र- **वसुभ्यो नमः। वरुणाय नमः। अजैकपादे नमः। अहिर्बुध्न्याय नमः** और पांचवां कलश मध्यमें रखें **मन्त्र-पूष्णेनमः।** स्वर्णादि ५ धातुओं की धनिष्ठादि ५नक्षत्रोंकी मूर्ति बनवाकर उन कलशों पर स्थापित प्राणप्रतिष्ठा विधि से करें।

यज्ञस्थलके निकट यमादि देवताओंको स्थापित करे। यथा- **यमाय नमः। धर्मराजायनमः। मृत्यवे नमः। अन्तकाय नमः। वैवस्वताय नमः। कालाय नमः। सर्वभूतक्षयाय नमः। औदुम्बराय.नमः। दध्नाय नमः। नीलाय नमः। परमेष्ठिने नमः। वृकोदराय नमः। चित्राय नमः। चित्रगुप्ताय नमः। मृत्युञ्जयाय नमः।**

५ कलशोंके सूक्त जप के लिए ५ ब्राह्मणोंका वरण करें। ब्राह्मण ब्रह्मा,विष्णु,महेश,इन्द्र और वरुण सूक्तोंका जाप निरन्तर करें। छाया पात्रका दान देवें। सोना दानमें देवें। लक्षहौम ब्राह्मणपूजन व षष्ट्यंश दान करनेसे शान्ति होतीहै। नि.सि.का आशौच प्र.देखना चाहिए। पञ्चकोंमें कृतकार्य की पांच गुणी वृद्धि होती है। हानि भी पांच गुनीहो जातीहै।

कन्या रजस्वला दोष-शान्ति

स्नापयित्वा तु तां कन्यामर्चयित्वा यथाविधि।
युञ्जानामाहुति हुत्वा ततः कर्मणि योजयेत्।।

विवाह समये कदाचित कन्या रजस्वला हो जाय तो फेरा हौम करने से पहले स्नान कराकर निम्नलिखित शु.यजु.११।१ मंत्र से युञ्जनी

की आहुति अग्निमें दिलाकर संस्कार करनेमें दोष नहीं होता है-

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरत्।।

भद्रा- श्रीपतिने कहा है कि देव-दानव संग्राममें जब देवगण परास्त हुए तो भगवान् शिवने क्रोध से संतप्त अपने शरीर को देखा, जिससे गर्दन मुखवाली, पूंछयुक्ता, तीन, पांव, सात भुजा तथा सिंहके समान गर्दन वाली प्रेत वाहिनी 'देवी' प्रकट हुई जिसने अपने विकराल मुख से सम्पूर्ण राक्षसों का संहार कर देवताओं का भद्र (भला) किया। इसलिए प्रसन्न हुए देवताओं ने इसे भद्रा नाम से सम्मानित किया और कर्णो के मध्य स्थान दे दिया। भद्राकाल के ३० भाग करनेपर छटे भागतक नेष्ट भद्रा मुख जानें। अन्तिम ३ के भागके समयको विद्वानोंने विष्टिपुच्छ विजयप्रद शुभकहा है। भद्रावास तीनों लोकोंमें बतलाया है यथा-मेष, वृष, मिथुन तथा वृश्चिकके चन्द्रमामें भद्रा स्वर्गमें रहती है। कन्या, तुला, धनु और मकरके चन्द्रमामें भद्रापातालवासी होती है और कर्क सिंह कुम्भ व मीन में चन्द्रमा होने पर मृत्युलोक निवासिनी भद्राके (मुख) विहितकालमें पृथ्वी वासियोंको विष्टि कष्ट देती है।

स्वर्गे भद्रा शुभम् कार्ये पाताले च धनागमः।
मृत्यु लोके यदा विष्टिः सर्वकार्य विनाशनः।।

'विष्टिस्तिथ्यपरार्धजा शुभकरी रात्रौ तु पूर्वार्द्धजा' दिनमें तिथिके उत्तरार्धकी व रात्रिमें तिथिके पूर्वार्धकी भद्रा शुभ होती है। विशेषरूप से भद्राओंमें श्रावणीकर्म रक्षाबन्धन, होलिका दहन निषेध है। यथा-

भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।
श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।।

प्रदक्षिणा विचार-

एका चंड्या रवोः सप्त तिस्त्र कार्या विनायके।
हरेश्चतस्त्रः कर्त्तव्याः शिवस्यार्द्ध प्रदक्षिणा।।

दीप निपदर्पिणादि दोष-

नैव निर्वापयेद्दीपं देवार्थ मुपकल्पितम्।
दीपहर्ता भवेदन्ध काणो निवार्पको भवेत्।।

यज्ञानुष्ठान- हवनके सम्बन्धमें आचार्योंने जिन सिद्धान्तोंका प्रतिपादन किया है, उसमें मण्डपकी लम्बाई चौड़ाई ऊँचाई तथा गहराई आदि का उल्लेख करनेके साथ-साथ अग्निकी प्रज्वलिताका विशेष रूप से ध्यान रखनाहै। हवनमें 'स्वाहा' संख्या मुख्य अनुष्ठान पर निर्भर करती है। इस सम्बन्धमें सामान्यतया आचार्योंने तद्दशांश हवन, तद्दशांश तर्पण, एवं तद्दशांश मार्जन आदि का भी विधान किया है। आचार्योंका मानना है कि अग्निकी अप्रज्वलिताके परिणाम स्वरूप यजमान तथा देश पर संकटकी आशंका रहती है। यथा- **वधिराय कर्ण होने जातदेवसः।** शान्ति प्रकरणकी पूर्ति करनेसे पूर्वमें आशा करताहूँ कि पाठकोंके ज्ञानार्जनमें शान्तिप्रकरण सहयोग करेगा। सुयशके भागीदार बनेंगेतो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूंगा।

अद्भुत शान्ति कथनम्- यात्रारम्भ करते ही कोई कह दे, कहां जा रहे हो? ठहर जाओ या फिर वस्त्र ही किसी में उलझ जायतो यात्रा अति नेष्ट होती है। अगर अचानक गिद्ध, उल्लू आदि सिरपर बैठ जाय, छिपकली गिरजाय, कौआ स्पर्श करके अद्भुत शब्द करे, अशुभ अंग फड़क उठे, घरमें चमगादड़ आदि घुसना शुरू कर दें, दुस्वप्न आना प्रारम्भ हो जाय। अपने या परिवारमें किसीके मृत लक्षण दिखलाई पड़े तो अपने कुलगुरु अथवा योग्य आचार्य के परामार्शानुसार शान्ति करानी चाहिए। धर्मका अनुसरण करना चाहिए, क्योंकि धर्मही व्याधियोंका शमनकर्त्ता है, धर्मही ग्रह दोषोंका नाश कर्त्ता है और धर्मही शत्रुओंपर विजय दिलानेमें समर्थ है।

धर्मेण हन्यते व्याधि, धर्मेण हन्यते ग्रहाः।
धर्मेण हन्यते शत्रु, यतोधर्मस्ततोजयः।।

असम्भव को भी सम्भव करनेमें समर्थ सर्वशक्तिमान आशुतोष भगवान शिवजीहैं- जैसाकि नारदजीने अपने श्रीमुखसे कहा है-

जौ तपु करै कुमारि तुम्हारी। भाविऊ मेटि सकहिं त्रपुरारी।।

तपकी प्रशंसा जगत्जननि मातापार्वतीजी ने स्वयं इस प्रकार की है-

करहि जाइ तपु सैल कुमारी। नारद कहा सो सत्य विचारी।।

कलियुगमें गंगाजी का महत्व-

कृतयुगे पुष्कराणि त्रैतायां नैमिषिं स्मृतम्।
द्वापरे च कुरुक्षेत्रं कलौ गङ्गासमाश्रयेत्।।
अग्निनादह्यते तूलं तृणं शुष्कं क्षणाद् यथा।
तथा गङ्गाजलस्पर्शात्पुसां पापं दह्यते क्षणात।।

देवताओंकोअतिप्रिय-शंकरस्यविल्वपत्रम्। विष्णोस्वतुलसीदलम्। गणेशस्य दूर्वांकुरम्अम्बायां नानाविधपुष्पाणिसूर्यस्यरक्तकवीर पुष्पम्।।

छिपकली कोढ़-किरली गिरने का फल-

पुरुषोंके दक्षिणअंग से और स्त्रियोंके वामांगसे विचार करना, पुरुषोंके वामभागमें और स्त्रियोंके दक्षिण भागमें विपरीत भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपातका कहा जाता है; वही सरट(गिरगिट) के चढ़नेका जाने। सरटके गिरनेका व पल्लीके चढ़नेका फल वृथा होताहै।

।। अथाङ्ग-विभागेछिपकलीकोढ़किरली पतनफलम्।।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशःकष्ट
नासाग्रै	व्याधि	वामकर्णे	बहु लाभः	अधरोष्टे	ऐश्वर्यलाभ
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयोः	सौभाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृप तुल्य
जनद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्यलाभः	वाममणिधे	कान्तिनाशः	नाभो	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुख	मिष्ठान्नला.
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्री नाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनप्राप्ति	पादान्ते	मृत्युःकष्ट
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणकष्ट
जंघयो	शुभम्	स्कन्धयो	विजयः	नखैषु	धान्य लाभ
दःमणिबन्धे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षागृष्ठे	धन लाभ

पल्ली-पतने प्रशस्त वार-तिथ्यक्षाणि-यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियोंमें तथा चं.बु.गु.शु. इन वारोंमें गिरे तो शुभ फल देती है। पुष्य अश्वि रो.मू.पुनः उफा.ह.चि.स्वा.ध.रे. अनु.श. ये नक्षत्र शुभ दायक है। **अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।**

पल्ली-पाते कर्त्तव्यकर्म- पल्ली(किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करे। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धदिन, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रह युक्त लग्नमें तथा अष्टम चन्द्रमामें पल्ली आदि के स्पर्श होनेसे अनिष्ट होता है। उसकी शान्तिके लिए होम, महामृत्युञ्जय मन्त्रका जप वा तिल, स्वर्ण दान पञ्चगव्यसे स्नान तथा घृतका छाया पात्र दान करना भी उत्तम है।

दिवा रात्रौ भूकम्प फलम्

दिन प्र.प्रहर	दिन द्वि.प्रहर	दिनतृ.प्रहर	दिन च.प्रहर
नृप मरण	मन्त्रीभय	पशु भय	अन्न नाश
रात्रौ प्र.प्रहर	रात्रौ द्वि.प्रहर	रात्रौ तृ.प्रहर	रात्रौ च.प्रहर
अन्न वृद्धि	राजमें भय	प्रजामें पीड़ा	राजमें युद्ध भय

अथ तिथि, करण, नक्षत्र, योग एवम् एकादशी नाम संख्यादि ज्ञानाय चक्रम्

तिथि संख्या	तिथि नाम	चन्द्र-रवि भोग्यांश	तिथियों में विहित करण नाम पूर्वार्धे	उत्तरार्धे
	शुक्ल पक्ष			
१	प्रतिपदा	१२	किंस्तुघ्न	बव
२	द्वितीया	२४	बालव	कौलव
३	तृतीया	३६	तैतिल	गर
४	चतुर्थी	४८	वणिज	विष्टि(भद्रा)
५	पञ्चमी	६०	बव	बालव
६	षष्ठी	७२	कौलव	तैतिल
७	सप्तमी	८४	गर	वणिज
८	अष्टमी	९६	विष्टि(भद्रा)	बव
९	नवमी	१०८	बालव	कौलव
१०	दशमी	१२०	तैतिल	गर
११	एकादशी	१३२	वणिज	विष्टि(भद्रा)
१२	द्वादशी	१४४	बव	बालव
१३	त्रयोदशी	१५६	कौलव	तैतिल
१४	चतुर्दशी	१६८	गर	वणिज
१५	पूर्णिमा	१८०	विष्टि(भद्रा)	बव
	कृष्ण पक्ष		**पूर्वार्धे**	**उत्तरार्धे**
१६	प्रतिपदा	१९२	बालव	कौलव
१७	द्वितीया	२०४	तैतिल	गर
१८	तृतीया	२१६	वणिज	विष्टि(भद्रा)
१९	चतुर्थी	२२८	बव	बालव
२०	पञ्चमी	२४०	कौलव	तैतिल
२१	षष्ठी	२५२	गर	वणिज
२२	सप्तमी	२६४	विष्टि(भद्रा)	बव
२३	अष्टमी	२७६	बालव	कौलव
२४	नवमी	२८८	तैतिल	गर
२५	दशमी	३००	वणिज	विष्टि(भद्रा)
२६	एकादशी	३१२	बव	बालव
२७	द्वादशी	३२४	कौलव	तैतिल
२८	त्रयोदशी	३३६	गर	वणिज
२९	चतुर्दशी	३४८	विष्टि(भद्रा)	शकुनि
३०	अमावस्या	३६०	चतुष्पद	नाग

नक्षत्र योग सं.	नक्षत्र नाम	भोग्यांश अं० क०	योग नाम	शुभाशुभ फल
१	अश्विनी	१३।२०	विष्कुम्भ	अशुभ
२	भरणी	२६।४०	प्रीति	उत्तम
३	कृत्तिका	४०।०	आयुष्मान	सौख्य
४	रोहिणी	५३।२०	सौभाग्य	समृद्धि
५	मृगशिरा	६६।४०	शोभन	शुभ
६	आर्द्रा	८०। ०	अतिगण्ड	नेष्ट
७	पुनर्वसु	९३।२०	सुकर्मा	श्रेष्ठ
८	पुष्य	१०६।४०	धृति	श्रेष्ठ
९	आश्लेषा	१२०।०	शूल	नेष्ट
१०	मघा	१३३।२०	गण्ड	नेष्ट
११	पूर्वाफाल्गुनी	१४६।४०	वृद्धि	सौख्य
१२	उत्तराफाल्गुनी	१६०। ०	ध्रुव	मध्यम
१३	हस्त	१७३।२०	व्याघात	नेष्ट
१४	चित्रा	१८६।४०	हर्षण	शुभ
१५	स्वाती	२००। ०	वज्र	अशुभ
१६	विशाखा	२१३।२०	सिद्धि	सौख्य
१७	अनुराधा	२२६।४०	व्यतीपात	नेष्ट
१८	ज्येष्ठा	२४०। ०	वरियान	मध्यम
१९	मूल	२५३।२०	परिघ	अशुभ
२०	पूर्वाषाढ़ा	२६६।४०	शिव	शुभ
२१	उत्तराषाढ़ा	२८०। ०	सिंद्ध	सौख्य
२२	श्रवण	२९३।२०	साध्य	मध्यम
२३	धनिष्ठा	३०६।४०	शुभ	श्रेष्ठ
२४	शतभिषा	३२०। ०	शुक्ल	शुभ
२५	पूर्वाभाद्रपदा	३३३।२०	ब्रह्म	श्रेष्ठ
२६	उत्तरभाद्रपदा	३४६।४०	ऐन्द्र	मध्यम
२७	रेवती	३६०। ०	वैधृति	नेष्ट

संख्या	वार+नक्षत्र संयोगाः	शुभाशुभ फल
१	आनन्द	सिद्धि
२	कालदण्ड	मृत्यु
३	धूम्र	असुख
४	धाता	सौभाग्य
५	सौम्य	बहुसुख
६	ध्वांक्ष	धनक्षय
७	केतु	मध्यम
८	श्रीवत्स	सौख्य
९	वज्र	क्षय
१०	मुद्गर	लक्ष्मीक्षय
११	छत्र	राजसम्मान
१२	मित्र	पुष्टि
१३	मानस	सौभाग्य
१४	पद्म	धनागमन
१५	लुम्ब	धनक्षय
१६	उत्पात	प्राणनाश
१७	मृत्यु	मृत्यु
१८	काण	क्लेश
१९	सिद्धि	कार्यसिद्धि
२०	शुभ	कल्याण
२१	अमृत	राजसम्मान
२२	मूसल	धनक्षय
२३	गद्	अक्षयविद्या
२४	मातङ्ग	कुलवृद्धि
२५	राक्षस	अभिवृद्धि
२६	चर	कार्यसिद्धि
२७	सुस्थिर	गृहसुख
२८	प्रवर्द्धमान	विवाहसुख

एकादशी नाम चैत्र शुक्लादि	
१	कामदा
२	वरुथिनी
३	मोहिनी
४	अपरा
५	निर्जला
६	योगिनी
७	देवशयनी
८	कामिका
९	पुत्रदा
१०	अजा
११	पद्मा
१२	इन्दिरा
१३	पापाङ्कुशा
१४	रमा
१५	प्रबोधिनी
१६	उत्पत्ति
१७	मोक्षदा
१८	सफला
१९	पुत्रदा
२०	षट्तिला
२१	जया
२२	विजया
२३	आमला
२४	पापमोचनी
	अधिक मास में उभय पक्ष
१	कमला पु.
२	पुरुषोत्तमा

नोट : राशि आदि के विचार में अभिजित् नक्षत्र की गणना नहीं की जाती है । राशि चक्र में जिसका मान ९ रा. ६ अं. ४० क. से ९ राशि १० अं. ५३ क. २०वि. तक विहित है ।

एकादश्यां दिने योऽन्नं भुङ्क्ते पापं भुनक्ति सः।
इह लोके च चाण्डालो मृतः प्राप्नोति दुर्गतिम्।।

प्रमुख अवस्थाएँ तीन होती है:- जागृत, सुषुप्ति और स्वप्न। सजग रहते हुए क्रियाशील होने को जागृत अवस्था कहते हैं। सोने अर्थात् गहरी निद्रावस्था को सुषुप्ति तथा सोने और जागने (सुषुप्ति एवं जागृत) के बीच की अवस्था ही स्वप्न कहलाती है। स्वप्न कई प्रकार के होते हैं। जैसे- अच्छे फलवाले, अशुभ समय का पूर्वाभास कराने वाले, तो कुछ निष्फल भी होते हैं। स्वप्न का वर्णन वेद तथा ब्रह्मवैवर्त पुराणादि में भी पाया जाता है।

प्राणी जागृत अवस्था में जिन-जिन विषयों का चिन्तन मनन करता है, जिन-जिन वस्तुओं को देखता है अथवा किसी घटना विशेष के विषय में सुनता है। केवल यही जन्म नहीं, अपितु विज्ञानात्मा को पूर्व जन्म-जन्मान्तरों का चिन्तन बना रहता है, उन्हीं से सम्बन्धित अविकल अथवा भिन्न-भिन्न संयोग जनित अनेक प्रकार के स्वप्न देखता है। अतःकैसा भी असम्भव(असामंजस्य) युक्त स्वप्न क्यों न हो, सब ठीक ही माना जाता है। यद्यपि सम्पूर्ण स्वप्नोंका फल ठीक नहीं बैठता, फिर भी निरर्थक नहीं कहा जा सकता। स्वप्नलोक कुछ ऐसा ही है, जहाँ हमें अपनी इच्छा के विरुद्ध भी जाना पड़ता है। फ्रायड के मतानुसार स्वप्न दबी हुई इच्छाओं का प्रकाश मात्र है। विशेषतया हमारी वे इच्छाएँ जो समाज के भय से जागृत अवस्था में पूर्ण नहीं होतीं, वह स्वप्न में चरितार्थ होकर मानसिक तृप्ति देती हैं। काम वासनाएँ इनमें मुख्य हैं। हृदय में दबी हुई प्रत्येक वासना स्वप्न में मूर्तिमान होकर अपने अनेक करतब दिखलाती है। यह तो रही भौतिकतावादियों की बात। अध्यात्मिक ज्ञान के भण्डार भारतीय मनीषियों से लेकर साधारण जनों ने भी बहुत से ऐसे स्वप्न देखे हैं, जिनका सम्बन्ध भावी घटनाओं से शत-प्रतिशत सही था। ऐसे स्वप्न आज भी देखते हैं और भविष्यमें भी देखते रहेंगे। मेरे पिताजीने स्वप्नसे प्रेरणा प्राप्तकर श्रीराजधानीपंचांगकी रचना की है।

चिन्ताव्याधि समायुक्तो नर स्वप्नञ्च पश्यति।
तत्सर्वं निष्फलं तात प्रयात्वेन न संशयः।।

किसी विशेष प्रकार की चिन्ता, व्याधि, रोगसे ग्रसित नर जो स्वप्न देखता है, वह सब निष्फल होता है। हे तात! इसमें संशय नहीं करना चाहिए।

जड़ोमूत्र पुरीषण पीड़ितश्च भयाकुलः।
दिगम्वरो मुक्तकेशो न लभते स्वप्नजं फलं।।

जड़ बुद्धि वाला, मूत्र, पुरीशवेग से दबा, पीड़ित (दुःखित) किसी

स्वप्न फल विचार

विशेष प्रकार के भय से व्याकुल, बाल खुले हों या अचानक वस्त्र खुल जायं अथवा निर्वस्त्र सोने वालेको स्वप्नफल नहीं मिलता है।

दृष्टवास्वप्नञ्च निद्रःलुर्यदि निद्रांप्रयाति च।
धातु विकारेणानुजं न लभेत स्वप्नजं फलम्।।
उक्तवाकाश्यपगौत्राय विपत्ति लभते ध्रुवम्।
प्रकाशयेन्न सुस्वप्नः पण्डिते काश्यपान्वये।।

अर्थात् स्वप्नदृष्टा यदि स्वप्नान्त में सो जाये या शरीरस्थ रस-रक्तादि धातुओं में किसी तरह का विकार हो तो स्वप्न निष्फल जानना चाहिए। कश्यप ऋषि गोत्रोत्पन्न द्विजमात्र से स्वप्न का वर्णन किया जाय और हृदय की बात प्रकटकर शास्त्रविहित शान्ति विधान करवा लिया जाए तो दुःस्वप्न का कुप्रभाव भी नष्ट हो जाता है। अन्य महर्षियों का मत है कि अच्छे कुलोत्पन्न वेदपाठी ब्राह्मण के आशीर्वाद से सभी पापों का क्षयः हो जाता है। अब अनुभव सिद्धि अच्छे-बुरे स्वप्नों की सूची दे रहे हैं:-

अच्छे स्वप्नों की सूची

१. स्वयंको खड़ी फसलके बीच देखें तो धनी होंगे। २. साथी अकेला छोड़कर चला जाय, तो नई योजना बडी कठिनाई से पूरी होती है। ३. इम्तिहान में फेल हो जायें तो सफलता मिलेगी। ४. जलती आग देखें तो समस्या पर विजय मिलेगी। ५. जलता दीपक देखना आशा पूरी करता है।

६. आग बुझाते देखें तो रिश्ता टूट जायेगा। ७. अपने घर में आग लगी देखना कार्यपूर्ति का सूचक है। धूआँ देखना महाअशुभ होता है। ८. निर्मल आकाशमें चमकीला देखना बहुत बड़ी उन्नतिका सूचक है। ९. उड़ना, दीवार पर चढ़ना, पेड़ से सहज कूद जाना आदि संकटों को आसानी से पार करना है। १०. दौड़ता हाथी देखना सुख-समृद्धि का सूचक है।

११.स्वप्न में दूसरे का चश्मा लगानेका अर्थ है, दूसरे की रायसे प्रभावित होना। काला चश्मा या टेढ़ा चश्मा लगाना गलत रायका सूचक है। १२. ऊँट देखें तो विवेक से काम लेने पर लाभ होगा। १३. दांत उखड़ना प्रेम कम होने का प्रतीक है। १४. स्वयं दांत उखाड़ें तो नया प्रेम होगा। १५. जलते चूल्हे पर रोटी बनाना शुभ समाचार का सूचक है।

१६. पर्दा लगा देखना अप्रिय जन मिलन का सूचक है। १७. स्वप्नमें बस या ट्रक चलाना देखें तो समझें कि बहुत बड़ा अवसर मिलने वाला है। १८. मिट्टी खोदना शुभ है किन्तु वह गीली न हो। १९. स्वप्नमें खोई वस्तु ढूंढना प्रेमी का प्रेम करना है। २०. वस्तु मिल जाए तो प्रेम साकार होना माना जाता है।

२१. गलीचा देखना, स्वयं या किसी अन्य को गरीबी में देखना शुभ माना गया है। २२. गाय, मधुमक्खी व मोर देखना भौतिकसमृद्धि मिलनेका सूचक है। २३. खेलमें गेंद निकट आना शुभ, दूर चली जाना अशुभ है। २४. स्वप्नमें घड़ीका टिकटिकाना बताता है कि जिस काममें आप लगे रहे हैं वह व्यर्थ है। घण्टा ध्वनि किसी फैसले की सूचक है। २५. चिट्ठी का स्वप्न प्रेमसे सम्बन्ध रखता है। अविवाहिता के लिए यह अच्छा-बुरा जैसा प्रतीत हो, वैसाही फल दायक प्रतीत होता है। चिट्ठी पाना उत्तम, फैंक देना नेष्ट है।

२६. छज्जे से झांकना आपके किसी निकट सम्बन्धी के विवाहित प्रेम की सूचना है। कुमारी-कुमार छज्जा देखें तो शुभ है। २७. चिड़िया आत्मा या विचार की स्वरूप हैं। स्वप्नमें घायल चिड़िया देखना आन्तरिक दुःख की सूचक है। कमरे में बन्द चिड़िया दिखे तो समझो कि वायदा खिलाफी से आप बच नहीं सकते। कौआ दर्शन महाअशुभ होता है, उसे उड़ाना मुसीबत से छूट जाना है।

२८. स्वप्न में चेचक निकले तो आपको धन मिलेगा, यदि दूसरों के निकली देखें तो शुभ समाचार मिलेगा। २९. खरहा, घोड़ा व सांड देखना शुभ है। घोड़े से गिरना अशुभ है। कुत्ता शुभ यदि डर जाये तो अशुभ है। शेर का दर्शन प्रबल शत्रु का सूचक है। कटघरे में शेर देखना दुश्मन से बचना है। ३०. झण्डा लहराना शत्रु पर विजय का प्रतीक है। यदि झण्डा फटा-पुराना, कीचड़से सना हो तो समस्या का सामना करना पड़ेगा।

३१. तम्बू देखें तो नया काम बनेगा, ढ़ोल बजाना स्वप्नमें देखें तो सफलता मिलेगी, लम्बी यात्रा होगी। ३२. डरना या घबराना शुभ सूचक होता है। यदि कोई स्वप्नमें आपके पीछे पड़े तो समझौता होगा। तीर चलाने पर निशाना ठीक लगे तो प्रत्येक काममें सफलता मिलेगी। ताला लगा देखें तो काम बन्द, यदि खुला हो तो नया रोजगार मिलेगा। ३३. ताश खेलना इच्छापूर्ति का सूचक है। ३४. मछली पकड़ें, किसीको पकड़ते देखें तो व्यापारिक सफलता मिलेगी। ३५. बूढ़े लोग देखना, भीख पाना और देना शुभ है। भीड़ लगी

देखना परिवार-मित्र वृद्धिकी सूचना है। भोजनयुक्त थाल शुभ, खाली हो तो अशुभ।

३६. दौड़में जीतना शुभ, हारना अशुभ किन्तु स्वप्नमें साथी साथ दौड़े तो साझीदारसे सावधान रहे। ३७. धन पाना शुभ, खोना अशुभ, चांदीके बजाय तांबेका सिक्का पाना अधिक शुभ माना गया है। ३८. अनेक वस्तुओंकी नीलामी देखना शुभ, बोली लगाना अति शुभ, वस्तु खरीदकर पश्चाताप करना घाटे का सूचक है। ३९. नंगे पांव चलना मुसीबत में पड़ना होता है, किन्तु इसे कुछ आचार्य रोग निवृत्ति मानते हैं। पानी या ओस पर चलना सफलता का प्रतीक है। पत्थर या कांटों पर चलना जोखिममें पड़ना बताता है। किसी अन्यको नंगे पांव चलता देखें तो समझिए कि वह आपकी सहायता चाहता है। ४०. प्रेम, व्यापार या इम्तिहान में फेल होना पास होनेका लक्षण है।

४१. प्राकृतिक दृश्य आकर्षक हो, धूप निकल रही हो या स्वप्नमें आप अजीब घटना देखकर आनन्दित हो रहे हों तो सुयश मिलेगा। बादल छायें देखें तो चिन्ताग्रस्त होंगे। ४२. पिंजड़े में पक्षी आपके गुण गा रहा हो तो सुयश बढ़ेगा। तोता देखना चुगली का परिचायक होता है। खुद को पिंजड़े में बन्द देखना केसमें फंसना होता है। ४३. वाद्यधुन एवं गीत सुनना पारिवारिक सुख, सारंगी धुन प्रेमका प्रतीक मानें, स्वयं बजायें तो प्रेम टूट जाएगा, ऐसा जानें। ४४. डाक्टरसे वार्तालाप रोग निवृत्तिका सूचक है। कड़वी दवा पीना रुकावट डालती है। ४५. भोजन पकाना शुभ समाचार पाना है। दूसरे के साथ खाना अच्छे सम्पर्क का प्रतीक है। भोजन न मिलना परेशानियों का परिचायक है।

४६. यदि स्वप्नमें कोई मार्ग रोके, आगे बढ़ने ही न दे तो आप मित्रोंकी बात मानकर चलें। चाँदनी रात्रिमें अवरुद्ध मार्ग घाटेकी सूचना देता है। ४७. कोई स्वयं को माला जपते देखे तो तत्काल भाग्योदय होगा। ४८. मक्खन(घी) खाने का स्वप्न आरोग्य होने का सूचक होता है। मन्दिर या मूर्ति देखना धर्म में आस्था को प्रकट करता है। ४९. स्वप्न में सड़क पर चलते हुए अच्छा-बुरा जैसा देखें वैसा ही जीवन के लिए फलदायक समझें। चौड़ी सीधी सड़क सफलता की सूचक है, टेढ़ी-मेढ़ी या दलदली असफलता बताती है। ५०. स्वप्न में कोई विदेशी भाषा बोले या सुने तो लम्बी यात्रा का सुयोग बनता है। घर से दूर उस आदमी का भाग्योदय होता है।

मृत्युसूचक दुःस्वप्न

१. अत्यन्त वृद्धा, काले शरीर वाली या नंगी स्त्रीका नाच देखना मृत्युसूचक होता है। २. जो व्यक्ति लाल, श्वेतरस अथवा विष्ठा-मूत्र की वमन होते देखे तो उसकी आयु दस महीने समझनी चाहिए। ३. खुले केश वाली शूद्रा या विधवाका लाल या श्वेतवस्त्र पहने हंसते हुए अपनी ओर आते देखना मृत्युसूचक है। ४. सिर या छाती पर ताड़ अथवा अन्य प्रकारके काले फलों का गिरना भी मृत्युसूचक होता है। ५. नंग-धड़ंग फकीर को नाचते,गाते,हंसते,अपनी ओर क्रूर दृष्टिसे निहारते हुए देखना शीघ्र मृत्यु का सूचक माना है।

६. वृक्ष की डालियाँ पर्वत-श्रृंग, सूर्य-चन्द्र मण्डल या तारे टूटते दिखाई देना परिवारमें किसी की मृत्यु का सूचक होता है। ७. काले वस्त्रोंसे अलंकृत लोहे का डंडा हाथमें लिए किसी को देखना तीन मासमें मृत्युका संदेश होता है। ८. राखके ढ़ेर या जलते दीपकके ऊपर अपने को खड़ा देखें तो आठ महीनेमें ही जीवनकाल समाप्त समझें। ९. भस्मयुक्त सूखा तालाब,जली मछली,लोहा,दावानल से जलकर सूखा खड़ा वन देखना, प्रमुख व्यक्तिकी मृत्यु तथा पारिवारिक घोर आपत्ति का कारण होता है। १०. श्रृगाल,कुक्कर,शूकर,शकुनि, राक्षस,असुर,पिशाच,भूत-प्रेत,पतंग,कुरंग अथवा श्येनपक्षीमें से किसी को खाते हुए दर्शन करना वर्षमें निश्चित यमपुरी जाना होता है।

११. हाथसे दर्पण, दण्डादि का गिरकर टूटना बहुत स्नेहीजनका यमलोक जाना होता है। १२. बन्दरकी पीठ पर सवार हो पूर्व में जाना प्रतीत हो तो पांच दिन जीवन शेष जानें और यदि गधे या भैंस की पीठ पर चढ़कर दक्षिण दिशामें जायें तो अपनी मृत्यु सन्निकट समझनी चाहिए। १३. अंगार,भस्म या रक्तकी वर्षा स्वप्नमें देखना या वानर,कौआ,कुत्ता,भालू,सूअर,गदहा,बैल,भैंस,गीध,कंक,घड़ियाल, सियार को देखना विपत्तिका सूचक है। १४. अपने शरीरमें किसीका तेल लगाना, नृत्य गीतयुक्त विवाहोत्सवको देखना कार्य की विफलता का सूचक है। १५. गलेका हार या मालाका टूटना साथीका बिछुड़ना माना गया है। काले वस्त्रयुक्त किसीको अपना आलिंगन करते देखना विपत्तिमें फंसना है। कालीप्रतिमा या आगसे जला स्थान देखना अशुभ होता है। १६. भस्म,पुञ्ज,हड्डियाँ,ताड़वृक्ष,केश,नाखून,कौड़िया, कब्राइत,बुझेअंगार(कोयला),मरघटमें चिता पर रखा हुआ मुरदा, कुम्हारका चाक, तेलीका कोल्हू,अधजला काठ,कुश, तृण,मुरदेका चिल्लता हुआ मस्तक देखना महाविपत्तिका सूचक माना गया है।

१७. सर्वज्ञ मुनिवर कहते हैं कि जिस मनुष्य को जल में सूर्य की छाया (बिम्ब) दक्षिण की ओर फटी दिखाई दे तो वह छः महीने, पश्चिम की ओर कटी दिखे तो तीन मास, उत्तर की ओर कटी दिखे तो दो मास और पूर्व की ओर कटी दिखे तो वह प्राणी एक मास जीता है। बिम्बके बीचमें छिद्र दिखें तो दस दिन आयु भोगता है, इसी प्रकार छाया यदि धूँए के वर्ण की दिखाई दे तो तत्काल (उसी दिन) मृत्यु हो जाती है।

१८. अपने नेत्रों का तारा स्वयं देखनेमें नहीं आता जिसे देखने के लिए विद्वानों ने एक सरल उपाय बताया है। **यथा-** नेत्र बन्द करके नेत्र के कोरों को किसी भी अंगुली से किंचित(मामूली) दबाओ तो जिस कोने को दबाया जायेगा उसकी विपरीत दिशामें आंखों के मध्यवर्ती तारा की आकृति एक गोल ज्योतिमण्डल दिखलाई पड़ेगा, जिसे मात्र मण्डल कहते हैं। उपरोक्त क्रिया करने पर सदैव दिखाई देता है। जब मृत्यु निकट होती है, तब दीखना बन्द हो जाता है।

१९. **मार्जार संकेतः-** रात्रिमें सोते समय किसी मनुष्यके ऊपर बिल्ली आ गिरे अथवा चांटा मारे तो छःमासान्तर्गत उसकी मृत्यु हो जाती है। २०. तिलक करने अथवा सौभाग्यके लिए प्रतिदिन दर्पण देखना चाहिए। जिस दिन दर्पणमें अपना मस्तक धड़रहित दिखाई दे, उस दिनसे पन्द्रह दिनके भीतर मृत्यु जाननी चाहिए।

२१. दिनमें चमकते तारे एवं चन्द्रमाकी ज्योति और रात्रिमें धधकता सूर्य दिखाई देने लगे अथवा चन्द्रमण्डल सूर्य के समान और सूर्यमण्डल चन्द्रमण्डलके समान दिखाई दे तो मृत्यु निकट भविष्यमें शीघ्र हो जाती है। २२. जिस मनुष्यकी अंगुलियाँ चटकाने पर भी न चटकें तो उसकी मृत्यु निकट जाननी चाहिए। २३. कबूतर, कौआ, गिद्ध या उल्लू आदि पक्षी जिस मनुष्यके मस्तक पर मांसका टुकड़ा लेकर बैठ जाये, उसकी मृत्यु छःमासके भीतर जाननी चाहिए। २४. जिसके मस्तक की तीन रेखाएँ नष्ट हो जाएं उसकी मृत्यु तीन मासमें हो जाती है। २५. जो मनुष्य दीपक बुझने पर उसकी गन्ध अनुभव नहीं करता तथा रात्रिमें अग्निसे भयभीत हो जाए वह छःमाससे अधिक जीवित नहीं रह सकता।

२६. दाहिने हाथ की मुट्ठी बन्द करके, नाक की सीध में भौंहों के बीच लाकर कलाई को देखने पर बहुत पतली दिखाई पड़ती है, यही स्वाभाविक नियम है। परन्तु मृत्यु से छः मास पहले ही टूटी हुई कलाई अलग दिखाई देने लगती है।

अथ विवाह संस्कार

गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, वपनक्रिया(चौल), कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह, विवाहाग्नि परिग्रह और अन्त्येष्टि ये सोलहसंस्कार ब्राह्मसंस्कार कहलाते है। इनके अतिरिक्त यज्ञानुष्ठानादि ३२ संस्कार देवसंस्कार कहलाते है। कुल मिलाकर हिन्दुओंके ४८ संस्कार धर्मशास्त्रोंमें बताये गये है। इस प्रकरणमें परिचर्चा केवल विवाहके विषयमें ही करेंगें। मनुस्मृति २/२७ में १२ संस्कारोंका उल्लेख मिलता है।

याज्ञवल्क्यादि स्मृतियोंमें विवाह ८ प्रकारके कहे है यथा- **ब्राह्मविवाह-** वर को अपने निवासस्थान पर सम्मानपूर्वक बुलाकर यथाशक्ति वस्त्राभूषणादि से अलंकृत कन्या दी जाती है। **देवविवाह-** यज्ञानुष्ठानके समय ऋत्विजको (यथाशक्ति अलंकृत करके) कन्या दी जाय वह देवविवाह कहलाता है। **आर्षविवाह-** दो गायें लेकर कन्या-वर को दी जाए वह आर्ष विवाह होता है। **प्रजापत्य विवाह-** साथ रहकर धर्मका आचरण करो। ऐसा कहकर कन्या विवाहेच्छु वरको प्रदानकी जाती है, उसे प्रजापत्य विवाह कहते हैं। **असुर विवाह-** धन लेकर कन्या दी जाय वह असुर विवाह कहलाता है। **गन्धर्वविवाह-** परस्पर प्रेम बन्धनमें जो विवाह स्वेच्छासे किया जाय। **राक्षसविवाह-** युद्धमें हरण की गई कन्यासे विवाह राक्षस कहलाता है; दूसरे आचार्य इसे विजयविवाह भी कहते हैं। **पैशाच विवाह-** कन्याको छलपूर्वक बहला-फुसलाकर या जबरदस्ती से किया गया विवाह पैशाच विवाह कहलाता है।

ब्राह्म, देव आर्ष और प्रजापत्य ये चार प्रकारके विवाह श्रेष्ठ विवाह कहे जाते हैं। श्रेष्ठ विवाहोंके लिये पंचांगमें उत्तम मुहूर्त्त लगाये जाते है। शेष पशु प्रवृत्तिके विवाह एहिलोक और परलोकमें भी निन्दनीय है। सरकारी रजिस्टर्ड विवाह गन्धर्वविवाहोंमें गिने जाते हैं। विवाहको सर्वश्रेष्ठ संस्कार माना गया है। उत्तमविवाह विधिवत् सम्पन्न होने पर जीवात्मा मनुष्यजीवनके सर्वोपरीयउद्देश्य(धर्म,अर्थ,काम) का यथावत् पालन करते हुए मोक्षको प्राप्त कर सकता है।

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास चारों आश्रमोंमें गृहस्थ आश्रमका मुख्य आधार है विवाह स्त्रीको मुख्य रूप से धर्म, अर्थ, कामकी प्रदात्री माननेके साथ-साथ सन्तानसिद्धिका मुख्य साधन तथा जीवनकी सार्थकताका सच्चास्वरूप माना गया है। **समित ꣸ संकल्पेथा ꣸ संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ। इषमूर्जमभि संवसानौ।।** यजु० १२।५७।। जो स्त्री-पुरुष सर्वथा विरोध त्यागकर परस्पर प्रीतिमें तत्पर, विद्यावत् अच्छे-अच्छे वस्त्राभूषणोंसे अलंकृत रहते हैं; वहां मंगल होता है; आरोग्य बढ़ता है और जहां विरोध होता है वहां दुःख का सागर उमड़ पड़ता है। स्त्री-पुरुष (प्रकृति-पुरुष) दोनों परस्पर अधूरे माने गये हैं। दोनोंके मिलनेसे ही प्रकृति कुछ करनेमें समर्थ होती है; या यों कहिए कि संसार चक्रको चलानेके लिए ईश्वरने आत्मस्वरूपके दो रूप बना दिये है। श्रीरामने द्वितीय विवाहके प्रस्तावका परित्याग करते हुए कहा था- **अर्पण जिसको वर दिया मैने आधा अंग। उसे छोड़ कैसे करुँ ब्याह किसी के संग।।** सीताका रुप धारण कर लेनेके कारण आशुतोष भगवान शंकर जी ने सतीके शरीरसे भेंट नहीं की थी, लेकिन मनसे परित्याग फिर भी नहीं किया था। विवाहके लिए समय शुद्धि का विशेष विचार किया जाता है-

भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता शीलंशुभंभवति लग्न वर्षेन तस्याः।
तस्माद्विवाहसमयःपरिचिन्त्यते हि सन्मिहनतामुपगताः सुतशीलधर्माः।।
'राम दैवज्ञ'

आदिकालसे अनेकमहापुरुष ऋषि-महर्षि विज्ञानियोंने विवाह विषय पर गहनअध्ययन चिन्तनमनन करनेके साथ-साथ सूर्यादि ग्रहोंके शुभाशुभ प्रभावका सही आकलनकर कुछ नियम निश्चित किये हैं। यथा-विद्याध्ययन काल पूरा होने पर जब लड़की व लड़काकी उम्र विवाहके योग्य हो जाय अर्थात् रस रक्तादि धातुऐं परिपक्व हो जाय,यौवनके चिन्ह दिखाई देने लगें,तब माता-पिता वंशानुकूल परम्परानुसार अपने गुरु आचार्य से विचारविमर्श करके सुयोग्य वरकोटीका(वाग्दान) करें। टीका चढ़ाने से पहले वर-कन्याकी जन्मकुन्डलीमिलान सही सुयोग्य आचार्य, ज्योतिषके जानने वाले से करवा लेना चाहिए।

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गणमैत्रं भकूटञ्च नाडी चैत्रे गुणाधिका:।।

आगे अष्टकूटोंके पृथक्-पृथक चक्र दिये हैं; जिससे पाठक आसानी से गुणोंका मिलान कर सके। राशि, स्वामी, वर्ण, योनि, गण और नाडी के ज्ञानके लिए (अ, व, क, ह, डा) चक्र जातक प्रकरण में पृष्ठ १०७ पर छपा है।

वर्णगुण बोधक चक्र (१)

वर → ↓ कन्या	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्यगुण बोधक च्रक्र (२)

वर → ↓ कन्या	चतुष्पाद	कीट	वनचर	द्विपाद	जलचर
चतुष्पाद	२	१	॥	०	१
कीट	१	२	१	०	१
वनचर	॥	१	२	१	१
द्विपाद	०	०	१	२	०
जलचर	१	१	१	०	२

वर्ण विचार- वर और कन्या का एक वर्ण हो अथवा कन्या से वर का वर्ण उत्तम हो तो १ गुण, हीन वर्ण वर का हो तो ० गुण होता है। समान वर्णमें १, कई आचार्य आधा गुण भी कहते हैं।

वश्य विचार- सिंहको छोड़कर सब राशियाँ नर राशिके वश्य होती हैं; और जलचर राशि भक्ष्य है, तथा वृश्चिकको छोड़कर सभी राशियां सिंहके वश में हैं। अतः अन्य राशियोंके वश्यावश्यको निजी अनुभवसे समझना चाहिए।

तारागुण विचारणीय चक्र (३)

वर → ↓ कन्या			अ	भ	कृ	रो	मृ	आ	पुन	पु	आ
			म	पूफा	उफा	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये
			मू	पूषा	उषा	श्रव	ध	श	पूभा	उभा	रेव
अ	म	मू	३	३	१½	३	१½	३	१½	३	३
भ	पूफा	पूषा	३	३	१½	३	१½	३	१½	३	३
कृ	उफा	उषा	१½	१½	०	१½	०	१½	०	१½	१½
रो	हस्त	श्रव	३	३	१½	३	१½	३	१½	३	३
मृ	चि.	ध.	१½	१½	०	१½	०	१½	०	१½	१½
आ	स्वा	श	३	३	१½	३	१½	३	१½	३	३
पुन	वि	पूभा	१½	१½	०	१½	०	१½	०	१½	१½
पु	अनु	उभा	३	३	१½	३	१½	३	१½	३	३
आ	ज्ये	रेव	३	३	१½	३	१½	३	१½	३	३

ताराविचार- कन्याके नक्षत्रसे वरके नक्षत्र तक और वरके नक्षत्रसे कन्याके नक्षत्र तक (अभिजित् रहित) गिनें, उसमें ९ का भाग देने से १ बचे तो तारानाम 'जन्म' का फल शुभ जानें, इसी प्रकार आगे समझें। यथा- २ शेषमें सम्पत्, ३ में विपत्, ४ में क्षेम, ५ में प्रत्यरि, ६ में साधक, ७ में वध, ८ में मित्र और ० शेषमें तारा नाम 'परममित्र' होता है। विपत्, प्रत्यरि और वध अशुभ फलदायक माने गये हैं। **दुष्ट तारा शान्ति हेतु-** पूर्वाचार्योंने इस प्रकार लिखा है, प्रत्यरि तारामें लवण(नमक) दान, जन्ममें शाक ऋतुफल, विपतमें गुड और वध तारामें तिल, सुवर्णका दान करने से शान्ति होती है।

तारापवाद- **पर्याय प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः।**
द्वितीये त्वशंका वर्ज्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः॥
आद्यांशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरौ चरणोऽशुभः।
वधस्त्याज्यस्तृतीयांशः शेषा अंशास्तु शोभनाः॥

अथ शुभाशुभताराज्ञानाय चक्रम्

कर्त्ता के जन्मनक्षत्र से कार्य दिन (दैनिक चान्द्र) नक्षत्र तक गिनें, गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभाशुभ फल समझें।

11019	21120	31221	41322	51423	01524	71625	81726	91827
जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

तारागुणज्ञानम्- एक से शुभ तथा दूसरे से अशुभ हो तो डेढ गुण दोनोंसे शुभ हो तो ३ गुण और यदि दोनोंसे अशुभ हो तो ० गुण समझना चाहिए। **नोट-** अन्य सभी शुभ कर्मोंमें भी शुभाशुभ तारा का विचार किया जाता है।

योनि विचार- अश्व-महिषमें परस्पर महावैर रहता है। ऐसे ही घोड़ा भैसमें, सिंह-हाथीमें, मेढा-वानरमें, नेवला-सर्प में, मृग-श्वान में, मार्जार-मूषक में और व्याघ्र-गौ में वैर जानना। परस्पर महावैर में ० सामान्य वैर में १, सम में २, मैत्री में ३, अतिमैत्री में ४ गुण ग्राह्य होते हैं।

योनिगुण बोधक चक्र (४)

वर → / ↓ कन्या	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	२	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	१	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	२	०	२	२	२
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
मूषक	३	२	२	१	२	०	४	३	३	२	३	२	१	२
गौ	२	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१
व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	३
मृग	३	३	३	२	०	३	३	३	३	१	४	२	२	१
वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
नकुल	२	२	२	०	२	२	१	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	३	१	२	२	४

राशीशमैत्री गुण चक्र (५)

वर → / ↓ कन्या	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	१/२	१/२
मंगल	५	४	५	१/२	५	३	१/२
बुध	४	१	१/२	५	१/२	५	४
गुरु	५	४	५	१/२	५	१/२	३
शुक्र	०	१/२	३	५	१/२	५	५
शनि	०	१/२	१/२	४	३	५	५

ग्रहमैत्रीविचार- वर-कन्याकी राशि का स्वामी एक ही ग्रह हो अथवा राशियोंके स्वामियों में परस्पर मैत्री हो तो ५ गुण, सममित्रतामें ४ गुण, समतामें ३ गुण, मित्र शत्रुत्व में १, सम शत्रुत्व में आधा, परस्पर शत्रु होने पर ० गुण माना गया है। मित्रादि होने पर भी नीच परिस्थितिमें होने से १ गुण कम करके ग्रहण किया जाता है।

गणगुण चक्र (६)

वर → / ↓ कन्या	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

नाडीगुण चक्र (८)

वर → / ↓ कन्या	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

गणकूटविचार- परस्पर समान गुण में ६ गुण, देव-नर में ५, देव-राक्षस में ० (कोई आचार्य १ गुण कहते हैं) नर-राक्षसमें ० गुण होता है। **गणदोषविचार-** राशियोंमें मैत्री हो अथवा अंशके स्वामीमें मैत्री हो तो गणादि दुष्ट (दोष) रहने पर भी विवाह (पुत्र पौत्रादि को बढ़ाने वाला) शुभ होता है। **राशिकूट-** वर-कन्याकी राशियां परस्पर गिनने पर ६।८ हो तो मृत्युभय ९।५ हो तो सन्तान हानि और यदि २।१२ होंतो दरिद्रताकी प्रतीक मानी जाती है। **यथा-मृत्युः षट्काष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे। द्विर्द्वादशे दरिद्रत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत॥** लेकिन ऐसी बात नहीं है ६।८ राशियाँ भी परस्पर शुभ होती है जैसे- मेष-वृश्चिक, मिथुन-मकर इत्यादि। **दुष्टभकूटपरिहार-** वर-कन्याकी राशियों के स्वामी एक ही ग्रह हों अथवा दोनों राशियों में मैत्रीत्व हो और नाडी नक्षत्र शुद्ध रहे तो दुष्ट भकूट में भी विवाह शुभ होता है। यथा-

एकाधिपत्ये राशीशमैत्र्यां दुष्टभकूटके।
नाडी नक्षत्रशुद्धिश्चेद्विवाहः शुभदस्तदा॥

भकूटगुण चक्र (४)

वर → / ↓ कन्या	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चि.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

नाडी विचार- वर-कन्या की एक नाडी हो तो विवाह अशुभ होता है। मध्य नाडीमें महाअशुभ मृत्युप्रद माना गया है। एक नाडी में ० गुण और भिन्न नाडी में ८ गुण माने जाते हैं। वर्णभेद से दोष भी अलग-अलग मान्य है। जैसे-

नाडीदोषोऽस्ति विप्राणां वर्णदोषोऽस्ति भूभुजाम्।
वैश्यानां गणदोषः स्यात् शूद्राणां योनिदूषणम्।।

ब्राह्मणोंको नाडी दोष, क्षत्रियोंको वर्ण दोष, वैश्योंको गण दोष और शूद्रोंको योनि दोष विशेषकर वर्जित है। एक नाडी होने पर दोनोंमें से एक की मृत्यु होगी ऐसा भय प्रदर्शित कर दिया जाता है; जबकि यह नियम केवल ब्राह्मणों पर ही लागू होता है। परिहार वाक्यभी मिलते है। यथा-

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाडीदोषो नो गणानां न दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्।।

वर-कन्या की एक राशि हो और नक्षत्र-भिन्न-भिन्न हो अथवा नक्षत्र एक और राशियां अलग-अलग हों तो नाडी दोष और गणदोष नहीं होता है। अतः एक नक्षत्रमें चरण भेद से शुभ माना गया है।

नाडीपरिहार- रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राणां पुष्यश्रवणरेवती। अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते। शुक्रेजीवे तथा सौम्ये एकराशीश्वयो यदि। नाडीदोषो न वक्तव्य सर्वथा यत्नतो बुधैः।। वर्णपहिार- हीनवर्णों यदाराशीराशीशो वर्ण उत्तमः। तदाराशीश्वरो ग्राह्यस्तद्राशिनैव चिन्तयेत्।। योनिपरिहार- सति सद्राशिकेऽपि योनिवैरं न दोषकृत्। यदि स्यादबला योनिः पुंसो योनिर्बलो। गणपरिहार- सद्भकूटयोनि शुद्धिः ग्रहसंख्य गुणत्रयम्। एष्वेकतमसदभ वे नारीरक्षोगणा शुभा।। ज्येष्ठनक्षत्रापवाद- एकराशौ पृथकधिष्णे एकर्क्षे भिन्नराशिगः। एकाधिपत्ये मैत्रेवा द्वितीयं स्वामिशुभम्। एकराशौ पृथक्धिष्ण्ये अन्त्यांत्यौ चरणौ यदा। अतीव शोभनः प्रोक्तो द्वितीयस्थो न दोषकृत्।। अन्यान्यविषय वाक्यानां पंचाँगराजधानौ विलोक्यन्ताम्।

लग्ने विश्वादाग्रहा:

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
३	२	३	१	१	१	३	३
६	३	६	२	२	२	६	६
११	११	११	३	३	३	११	११
			४	४	४		
			५	५	५		
			६	६	९		
			९	९	१०		
			१०	१०	११		
			११	११			

विवाह लग्न के इष्ट ग्रह



विवाह लग्न के नेष्ट ग्रह



राशियों के परंस्पर शुभाशुभ योग

शुभ नव-पंचम		मध्यम नव-पंचम		श्रेष्ठ द्विर्द्वादश		अशुभ द्विर्द्वादश		प्रीति षडाष्टक		शत्रु षडाष्टक		अशुभ केन्द्र	
९	५	९	५	२	१२	२	१२	६	८	६	८	४	१०
मेष	सिंह	कुम्भ	मिथुन	मेष	मीन	तुला	वृश्चिक	मेष	वृश्चिक	वृष	धनु	मेष	कर्क
वृष	कन्या	मीन	कर्क	वृष	मिथुन	धनु	मकर	मिथुन	मकर	कर्क	कुम्भ	वृष	सिंह
मिथुन	तुला	कर्क	वृश्चिक	कर्क	सिंह	कुम्भ	मीन	सिंह	मीन	कन्या	मेष	कर्क	तुला
सिंह	धनु	कन्या	मकर	कन्या	तुला	मेष	वृष	तुला	वृष	वृश्चिक	मिथुन	कन्या	धनु
तुला	कुम्भ	अशुभ सम-सप्तक		वृश्चिक	धनु	मिथुन	कर्क	धनु	कर्क	मकर	सिंह	वृश्चिक	कुम्भ
वृश्चिक	मीन			मकर	कुम्भ			कुम्भ	कन्या	मीन	तुला	मकर	कर्क
धनु	मेष	कर्क	मकर	अपवाद								मीन	मिथुन
मकर	वृष	सिंह	कुम्भ	सिंह	कन्या								

टिप्पणी- तृतीय एकादश सम्बन्ध किन्हीं भी राशियोंका शुभ ही होता है, किन्तु सम-सप्तक (राशि-प्रतियोग) तथा केन्द्र (चतुर्थ-दशम) सम्बन्ध उपर्युक्त अशुभ समसप्तक तथा अशुभ केन्द्र की राशियोंके अलावा शेष राशियोंका ही शुभ होता है।

वर्गकूट- ज्योतिषानुसार हिन्दी देवनागरी लिपिके स्वर तथा व्यंजनों को अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग इत्यादि आठ वर्गोंमें बांटा गया है। स्वामी आदि का ज्ञान वर्गचक्र से प्राप्त करें। अपने से पांचवाँवर्ग शत्रु का, चौथा मित्र तथा तीसरा उदासीन होता है। वर-कन्याके नामका प्रथम अक्षर यदि एक वर्ग में हो तो अत्यन्तप्रीति होती है। मित्र वर्गमें उत्तमप्रीति, उदासीनमें बहुत कम प्रीति होती है। परस्पर शत्रु वर्गमें हानि जाननी चाहिए।

नोट- उपरोक्त चक्रांकित राशियों के परस्पर शुभ योग ९,५,२,१२, ६,८ एक दूसरी राशि के अनुकूल ही शुभ होती है। अशुभ केन्द्र गत ४।१० वीं राशियां सीधे हाथ की ओर लिखी गई है।

न वर्ग वर्णो गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा राशीशमैत्री शुभदो विवाहे।।

वर्ग, वर्ण, गण, योनि, अशुभ द्विर्द्वादश, षडाष्टक योग राशि, तारा विरुद्ध और परस्पर अशुभ नव-पंचम राशियोंके विवाह भी शुभ होते है; अगर राशियोंके स्वामी ग्रह परस्पर एक दूसरे के मित्र हों तो।

वर-कन्या के ग्रह मिलते है या नही?

उत्तर देने से पहले जन्माङ्ग चक्रमें पड़े ग्रहोंका अच्छी प्रकार चिन्तन करना चाहिए। जातकग्रन्थोंमें दोनोंके लिए ग्रहोंका समान फल है।

कुण्डली में बनने वाले वैधव्य विषाख्य योग

लग्नाच्चन्द्रादन्यमतः पापाः सप्तमेऽष्टमे वा विधवा।। भौमराहौ सप्तमेऽष्टमे व्यये वा विधवा।। द्यूने राहौ कुलदोषदा दुःखार्त्ता।। द्यूनेऽङ्गे पापे विवाहोत्तरं सप्तमाब्दे विधवा।। लग्नेन्दू पापान्तरगौ शुभैरदृष्टौ कुलद्वयघ्नी। षष्टेऽष्टमे पापाः चन्द्रेऽष्टमाब्दे रण्डा। सप्तमे रन्ध्रेशे पापदृष्टे नवोढा रण्डा। षष्टाष्टमेशो षष्ठगतौ व्यये पापास्तेनापि विधवा। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा मृतवत्सा वा।। कुजेऽष्टमे कुलटा मन्देऽष्टमे पतिरोगवती। सूर्येऽष्टमे पापयुक्ता भवति।। रन्ध्रे राहौ कुलद्वयघ्नी। लग्नतुर्याष्टमान्त्य संस्थाः पापास्तदा पतिं त्यक्त्वा परासक्ता च भवति।। सप्तमेशोऽष्टमे यस्य सप्तमे निधनाधिपः। पापाश्रययुतो बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम्। सप्ताष्टमपतौ षष्ठे व्यये वा पाप पीडितौ। तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः।। निशाकरात् सप्तमभाव-संस्था महीजमंदागुदिवाकराश्चेत्। तनोऽरिभे जन्मनि नैधने वा दिशन्ति वैधव्यमलं मदेवः।।

दोनों के लिये मंगली दोष- लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्याभर्तुः विनाशाय भर्ता पत्नीविनाशकृत्।। इदं लग्नेन्दुभ्यां विर्चायम्।।

विषाख्य योग

मन्दाश्लेषाद्वितीयायां जाता विषाख्या। सूर्यवारुणद्वादश्यां जाता विषाख्या।। कुज विशाखा सप्तम्यां जाता विषाख्या। पापेगेसशुभ पापावारगौ जाता विषाख्यां। पुत्रेऽर्के मन्देऽङ्के भौमेऽङ्के विषाख्या।। इन पांचों योगोंमें जन्म लेने वाले विषाख्या कहलाते है। अर्थात् किसी न किसी प्रकारसे असत्कर्म करके निन्दाके पात्र बनते है।

पत्नी विनाशक योग

शुक्रः खलांतरगतः सखला सिताद्वा पापाः सुखास्तमृतिगा रमणीहराः स्युः। जायाधीशः कुटुम्बाधिपतिरपि युतश्चेत्त्रिके गर्हिताख्यैर्यावदभिशुक्रयुक्तैर्नियतमिह भवेत्तावतीनां विरामः।। बुधशुक्रौर्द्यूनस्थौ पत्नीहीनो जायते विपुत्रश्च पापो नोदयगे रवौ। रविसुते मीनस्थिते दारहा पुत्रस्थानगतश्च पुत्रमरणं पुत्रोऽवनेर्यच्छति।।

कौन सा ग्रह किस ग्रहके प्रभावको नष्ट कर देता है?

लग्नाद्वियोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च। द्यूनस्थितो हन्त्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषं च।। भौमतुल्यो यदा भौमः पापो वा तादृशो भवेत्। उद्वाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्र पौत्रदः।। जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वाहिंयुतेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।शनिर्भौमोऽथवा। कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्।। तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।। अजे लग्ने व्यये चापि पाताले वृश्चिके स्थिते। वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते। सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽपि वाऽथवा भौमे। वक्रिणिनीचारिगृहे वार्कस्थेपि वा न कुजदोषः।। केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा।।

मंगल अमंगल ही नही शुभकर्ता भी है- भूदेव द्विजमात्र विद्वानोंको पक्षपातरहित बुद्धि से विचार करना चाहिए। क्या मंगल कुण्डलीके १।४।७।८।१२ स्थानमें होने पर अशुभ फल ही करता है अगर यह सुनिश्चित होता तो पूर्वाचार्य अजे लग्ने व्यये चापे....... कदापि न लिखते अर्थात् मेष का मंगल लग्नमें, धनुका बारहवें भाव में, वृश्चिकका चौथे घर में, वृषका सातवें घरमें और कुम्भका अष्टम भावमें हो तो दोष नहीं होता है। मकर, मेष, वृश्चिक, सिंह, धनु और मीन राशिके मंगलको शुभ माना है तथा केन्द्र त्रिकोणपति होने से कर्क, सिंह लग्नमें मंगल को योग कारक माना है। 'सर्वे त्रिकोणनेतारो ग्रहाः शुभफलप्रदाः।' महर्षि पराशरजीके वचनानुसार ५।९ का स्वामी पर मंगल ग्रह अशुभ फलदायक नहीं होता है। अन्य आचार्यों के मतानुसार परस्पर वर-कन्याकी कुण्डलियोंमें भौम एक-दूसरेके तुल्य हो अथवा उक्त स्थानोंमें शनि पड़ा हो अथवा गुरु ग्रह का शुभ प्रभाव हो तोमंगल दोषके साथ-साथ अन्य अशुभ ग्रहोंका दुष्प्रभावभी नष्ट होता है।

अथ ग्रह मेलापक विचार- वरस्य लग्नशुक्राभ्यां १।४।७।८।१२ स्थानेषु पापग्रहा अशुभकराः। चन्द्रतोऽपि सप्तमस्थानस्य पापखेचरोऽनिष्ट सूचक एव।। कन्याया लग्न-चन्द्राभ्यां १।४।७।८।१२ स्थानेष्वस्थिता पापखेचरा अनिष्टदाः। उक्तस्थानेषु कन्यापापग्रहापेक्षया वरक्रूरग्रहा अधिका अपि न दोषावहाः।। जन्मांगचक्रे सूर्यात् ९ पिता, भौमात् ३ भ्राता, चन्द्रात् ७ पतिः एवं कन्यायाः सप्तमेषशुक्रादि सौम्यग्रहाणां शुभस्थानस्थित्यादिना सौभाग्ययोगश्च विचार्य्यः।

कुण्डली के द्वितीयभाव में चन्द्र, शुक्र स्थित हो, मंगल पर गुरु की पूर्ण दृष्टि हो तथा केन्द्रगत राहु भौम की युति हो तो मंगली दोष नहीं होता ऐसा 'मुहूर्त दीपक' में लिखा है, साथ ही यह भी कहा है कि केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह ३।६।११वें भाव में स्वग्रही सप्तमेश भौमदोष को नष्ट करता है तथा राशीश की मित्रता, गण की ऐक्यता और मेलापक चक्र में गुणों की बाहुल्यता होने पर मंगली दोष नहीं होता- न मंगली चन्द्रभृगुद्वितीये न मंगली पश्यति यस्य जीवः। न मंगली केन्द्रगते च राहु न मंगली मंगलराहुयोगे। केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः। तदा भौमस्य दोषो न मदने मदन-पस्तथा। राशिमैत्र यदायाति गणैक्य वा यदा भवेत्। अथवा गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

टिप्पणी- जन्मकुण्डली सूक्ष्म दृश्य (कम्प्यूटर) गणित से बनी होनी चाहिए। आपके करकमलों में ग्राह्य श्री राजधानी पंचांग का प्रकाशन वि. सम्वत् २०३९ से हम करते आ रहे हैं; जिसकी लोकप्रियता से पाठक परिचित हैं। हमारे यहां शुद्ध गणित से जन्मपत्र बनाये जाते हैं। योगों का निर्णय चलित चक्र से करके फल लिख दिया जाता है।

किसी की कुण्डली में एक से अधिक कुयोगों द्वारा प्रबल वैधव्य योग जान पड़ें तथा किसी भी प्रकार से परिहार न होता हो तो उसका विवाह सविधि (गोदान, वस्त्राभूषण, दानजप, पूजन, यज्ञानुष्ठान) शालिग्राम से, पिप्पलवृक्ष से, अर्कवृक्ष से अथवा कुम्भ से करके पुनः सुयोग्य वर से विवाह करने पर कन्या सौभाग्य सम्पन्न पुत्र, धन से युक्त होती है ऐसा श्री रामाचार्य ने लिखा है- जन्मोत्थं च विलोक्य बालविधवायोगं विधाय व्रतम्, सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुताया दद्यादिमा वा रहः। संल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटै कृत्वा विवाहं स्फुटम्, दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः।।

आगे अष्ट कूटों के संयोग से निर्मित वर-कन्या गुण मेलापक सारिणी अंकित है। गुण योग १८ से अल्प हो तो अशुभ, अधिक हो तो शुभ और यदि २७ से अधिक हों तो अत्यन्त शुभ जानें। अर्धाधिक्य गुण मिलने पर यदि कोई दोष रहे तो उसका परिहार्य भी उसीमें होजाता है-

अशुभोऽष्टादशाल्पश्चेत् शुभोऽष्टादशतोधिकः।
शुभोऽतिगुणयोगश्चेत्सप्त विंशतितोऽधिकः।।

राशि की प्रधानता-

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत्। कांकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूतेज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता।। विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहज बलम्।। नामभात् चिन्तयेत् सर्वजन्म न ज्ञायते यदा। विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत्।। कुर्यात्षोडश-कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। अर्थात् विवाह, यात्रा, ग्रह गोचर अन्य मंगल कार्य (षोडश) संस्कारविषये जन्मराशि की प्रधानता मानी गई है। यदि लड़का-लड़की की जन्मराशि ज्ञात न हो तो दोनों के प्रसिद्ध नाम नक्षत्र से विचार करना चाहिए। एक का जन्म तथा दूसरे का प्रसिद्ध नाम ऐसा कदापि न लें, अन्यथा दाम्पत्य जीवन में निर्धनता बढ़ती है यथा- जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्। व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निर्धनप्रदम्।।

क्या कन्या का नाम बदला जा सकता है?- यह प्रश्न बहुत ही गम्भीर विचारणीय है। कुछ पंचांगोंमें यह लिखा मिलता है कि वर-कन्या की जन्मकुण्डली न हो तथा प्रसिद्ध नामोंका मिलान ठीक न बैठता हो तो कन्याका नाम बदलकर विवाह कर दें। ऐसा नाम रखें जहां गुण ज्यादा मिलते हों; वर का नाम नही बदलना चाहिए तो क्यों? इसका उत्तर उनके पास कुछ नहीं है। शास्त्रानभिज्ञ धूर्तो की अपनी कोरी कल्पना है। ज्योतिष के किसी भी ग्रंथ में ऐसा आदेश नहीं है। इस सन्दर्भ में केवल यह कहा जा सकता है कि स्त्री के प्रति उनका घोर अन्याय है। स्त्री-पुरुष का जीवन मेरे विचार से समान उपयोगी है। गृहलक्ष्मी के चले जाने या अपंग हो जाने के दुःख को तो भुक्तभोगी ही जानता है, अन्य कोई उसका अनुमान नहीं कर सकता। हिन्दू धर्म शास्त्रों में तो जननी को देवी मानकर पूजा जाता है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।
सन्तुष्टोभार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्।।

✿ वर-वधू गुण मेलापक सारणी ✿

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्।।

भाग १

कन्या ↓	वर →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
	चरण →		४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	
	↓	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	
मेष	४	अ.	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ -४	२२॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८	२१ +५	२५ +५	१५॥ ३५	११ ३६	९ २३६	१३ ६	२२॥	२६॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३६	१३॥ ३५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३४	२४॥ +४	२६॥ +४	अ.
	४	भ.	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०४२	२१॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० १५-	१८ ३५	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १३६	१३॥ १३	२९॥	२१॥ -१	१७॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६	२० -१५	१८ ३५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १३२	२० -१	२४ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	२६॥ +४	भ.
	१	कृ.	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३४०	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१६॥ ३५	२० १५	२० १५	१५॥ १६	१५॥ ६	१८ ६	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३६	१९॥ -६	२५॥ -६	२४॥ +५	१८ १२५	१२ ३१५	१३॥ १३	११॥ २३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १४	१९॥ १४	११॥ ३४	कृ.
वृष	३	कृ.	१८॥ -४	२० १४	१९ ३४	२८ ३	२० ०१३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १५	२१ +५	२३॥ +५	२२॥ -६	१०॥ ३६	१४॥ ३६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १२६	७॥ १३६	१२ १३५	१० ३५२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३	कृ.
	४	रो.	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५-	१९ १६	१५॥ ३६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१४ १६	१९॥ ६	११॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५-	२४॥ -१	२४॥ -१	३०॥	२७	२७	१९ ३	रो.
	२	मृ.	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ १	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ -६	१८॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७	मृ.
मिथुन	२	मृ.	२७	१८ ३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ -४	१२ ३४	१४ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० -२६	२३॥ -६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥	मृ.
	४	आ.	१९ ३	२७	२१ १	१८॥ १४+	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० -४	१३ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२७ -१५	२७ +५	२० १५+	१३॥ १६	१७ २६	५ १३६२	१६ १३	२८	२८	२३ -६	२३ -६	१७॥ -१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥	आ.
	३	पुन.	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ ३४-	२२॥ ०४	१७ -४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ -६	२३ -६	१७॥ -६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥	पुन.
कर्क	१	पुन	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१	२०॥	२८	२२	२०॥ +५	२६ +५	११॥ ३५	८ ३६	२१ -६	२१ -६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५	पुन
	४	पुष्य	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३	११॥ ३	२६॥	२१	१९ -५	१८ ३५	२१ -५	१७	११ २३६	२१ ६	२६	२५ -२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	पुष्य
	४	श्ले.	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३	१५ ३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० -५	२६ -५	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५-	२१ १५	१३ ३५	श्ले.
सिंह	४	मघा	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२२॥ १	२०॥ -२	१६॥ २४+	१९॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ १६-	१९॥ १६-	१३ ३६	मघा
	४	पूफा	२६ +५	१८ ३५	२० १५-	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७॥ १३४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ -६	१७॥ ३६	२५॥ -६	पूफा
	१	उफा	१६॥ ३५	२६ +५	२० १५-	२२ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ १४-	२७॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १३	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२५॥ -६	उफा
कन्या	३	उफा	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ १५+	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२+	१६॥ १२४-	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ १५+	१६॥ -६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥	उफा
	४	हस्त	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥	हस्त
	२	चि.	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२६ १	२५॥	२२	१२ ३	२७	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	१९॥	चि.
	नक्षत्र →		अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	

वर्णवश्य आदि के संयोगसे निर्मित यह गुण-दोष मेलापक सारणी है। जिसमें ऊपरकी पंक्तिमें वर के नक्षत्र, तिरछीपंक्ति खडी लाइनमें कन्याके नक्षत्र लिखे है, सम्पात कोष्ठकोंके ऊपरी भागमें गुण, संख्या तथा नीचे महादोषोंके चिन्ह दिए है। चिन्होंका अभिप्राय है, एकनाड़ी दोषकी जगह (३) गण महादोष (मनुष्य राक्षस)के स्थानमें (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६), नवपंचममें (५), द्विर्द्वादशमें (४), वैर योनिमें (२), लिखे है

प्रस्तुत है संशोधित परिवर्धित गुण मेलापक सारणी

❁ वर-वधू गुण मेलापक सारणी ❁

भाग २

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्।।

कन्या ↓	वर →		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
	चरण →		४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	
	↓	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	
तुला	२	चि.	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६	चि.
	४	स्वा.	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ –६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६	स्वा.
	३	वि.	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ ––६	१९॥ +५	२० १५	२२ +५	२२	२२	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६	वि.
वृश्चिक	१	वि.	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ –५	१८ –५	१५॥ –५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५	अनु.
	४	अनु.	२४॥ –६	१५॥ ३६	१९॥ –६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ –५	१८ ३५	२२ –५	२४॥	२०॥ ३	२९॥	२५	२६	११ ३	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३२ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	ज्ये.
	४	ज्ये.	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ –६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३६२	५ ६३	२०॥ ५३	२० +५	२६ –५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२८	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५	मूल.
धनु	४	मूल.	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ २४+	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३-	२५ १	२६॥	पूषा.
	४	पूषा.	२६ +५	१८ ३५	१८ –२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ –१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४–	१५॥ ३४	१७॥ १४–	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१	उषा.
	१	उषा.	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	१६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ –१४	२६॥ –१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३	उषा.
मकर	३	उषा.	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ –६	२२ –६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५	२४ –१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२३ ४+	३०॥	३०॥	२२॥ ३	श्र.
	४	श्र.	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ –६	२१ –६	२२ –६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३	ध.
	२	ध.	२०	२२ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ –६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३६१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२	ध.
कुम्भ	२	ध.	२०	२२ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२५॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६	१८ ३५	२० –५	२४॥ –५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२	शत
	४	शत	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४	पूभा.
	३	पूभा.	१८ ३	२५ +२	२० –१	२४॥ –१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५+	२६ +५	२० –२५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० –२४	२८॥ –१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२	पूभा.
मीन	१	पूभा.	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ –२४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ २५	१७॥ –१६	२३॥ +६	१४॥ ३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	१९ १५–	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ २३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२	उभा.
	४	उभा.	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ –१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२२ १५	१८॥ –१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ –१५	२४ –१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०	रेव.
	४	रेव.	२५ +४	२४॥ +४	२२॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ –२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३	
	नक्षत्र →		अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहाँ (–) चिन्ह है, जहां (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह है वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है, और जिस जगह वरके नक्षत्रसे पूर्व वधू का नक्षत्र है (इसका भी महादोष है) वहां ० शून्य का चिन्ह है और जहां कोई भी महादोष नही मिलता वहां केवल गुण ही लिखे है। जैसे अश्विनी वर का नक्षत्र और भरणी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक में केवल ३४ गुण ही लिखे है।

वरस्य भास्करबलम् कन्यायाश्च गुरोर्बलम्।
द्वयोश्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहो नान्यथा भवेत्।।

वर को सूर्यबल, कन्या को गुरुबल तथा दोनोंका चन्द्रबल देखना चाहिए। उपनयनमें लड़केकी राशिसे गुरु और चन्द्रबल देखा जाता है। अन्य सभी कार्योंमें केवल चन्द्रबलकी प्रधानता है।

❀ त्रिवल शुद्धिचक्रम् ❀

	श्रेष्ठ	पूजा से शुभ	नेष्ट
राशि से सूर्य	३।६।१०।११	१।२।५।७।९	४।८।१२ अशुभ जानें
राशि से गुरु	२।५।७।९।११ वां	१।३।६।१०	उच्च, मित्र, स्वग्रहो गुरु,४।८।१२वां भी ग्राह्य माना गया है।
राशि से चन्द्र	३।६।७।१० ११ वां	१।२।५।९ १२ वां	४,८वांनेष्टनोट-शुक्ल पक्ष में२।५।९ वां तथा कृष्णपक्षमें १२वां चन्द्र ग्राह्य माना है।

द्वादशचन्द्रोग्राह्य-

पाणिग्रहे स्त्री सुरतोऽभिषेके यात्रान्नप्राशे व्रतबन्धने च।
व्रतोपवासादिषु गर्ग पूर्वैः प्रोक्तः शुभो द्वादशगो हिमांशुः।।

विशेष- गुरु व सूर्य स्वोच्च, स्वमित्र, स्वराशि, स्वनवांश वर्गोत्तमे ४।८।१२वें नेष्ट स्थान में होने पर भी शुभ माने जाते हैं।

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः।
रि:फाष्टतुर्यगोऽप्यष्टनीचराशिस्थः शुभोऽप्यसत्।। रामदैवज्ञ

गुरु-सूर्य नीच या शत्रु राशिस्थ हों तो शुभ होने पर भी अशुभ फलप्रद होते हैं। सूर्य के लिए परिहार वाक्य- **'दैवज्ञ कल्पद्रुम'-**

स्वोच्चे स्वमित्रे सदने स्वगृहे स्ववर्गे। स्वांशे ततश्च नियनव्ययतुर्यगोऽपि।
श्रेयस्तनोति अरिनीचगतोऽप्यनिष्टम्तुल्यं फलं निगदितं रविजीवयोश्च।।

तुला राशि वालों के लिए २,५,९वें सूर्य शुभ फलप्रद होते है, पूजा की आवश्यकता नहीं। यथा प्रमाण-

धर्मधीघनगतो दिवाकरतौलिराशिजनितस्य शोभनः।

अन्य राशि वालों के लिए २,५,९वें सूर्य १३ अंश बीतने पर शुभ होते हैं। अर्थात् पूज्य नहीं होते। यथा-

भृग्वंगिऽरोवत्सवशिष्ठगौतमपराशराद्या मुनयो वदन्ति।
द्वितीयपंचांगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः।।

त्रिज्येष्ठ विचार-

प्रथम गर्भ वाले लड़का-लड़की का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं होना चाहिए क्योंकि त्रिज्येष्ठ का दोष होना है। एक ज्येष्ठ का विवाह ज्येष्ठ में मध्यम लिखा है। अतएव सूर्यको कृतिका नक्षत्र भोगने (२५ मई) के बाद विवाह करने में हानि नहीं होती है।

काल उत्तरोत्तर बली कैसे मान्य होता है?

कार्य सुसम्पादन के लिए सब प्रकार से समय अनुकूल नहीं हो सकता है। अतएव अधिकांश शुभ (सुयोग) मिलते हों तो कार्यारम्भ कर लेना चाहिए। अशार्ष वचन-

अयोगश्च सुयोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि।
अयोगो हन्यते तत्र सुयोगश्च प्रवर्तते।।

शुभाशुभ फल देने में समय के पांच अंग- वर्ष, मास, दिन(तिथि), लग्न और मुहूर्त उत्तरोत्तर बली माने गये हैं अर्थात् वर्ष अशुभ हो तो वह मास की शुद्धि से शुद्ध होता है एवं तिथि(दिन) की शुद्धि से अशुद्ध मास व वर्ष भी शुद्ध हो जाते है, और लग्न व मुहूर्त्त शुद्ध संशोधन होने पर दिन, मास तथा वर्ष भी शुद्ध माने जाते हैं। इसलिए पूर्वाचार्यो ने कहा है- **'सर्वे दोषा: विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदा भवेत्।'**

लग्न के विषय में बहुत कुछ जातक प्रकरण में लिखा है। अभीष्ट लग्न कर्त्ता की राशि से ३।६।१०।११वीं हो तो अति उत्तम, ४।८।१२ नेष्ट तथा बाकी लग्न की राशियां मध्यम मानी गई हैं।

मुहूर्त्तो घटिकाद्वयम्- प्रत्येक मुहूर्त्त २ घटी बराबर ४८ मिनट का मान्य होता है। लग्न मुहूर्त से ७।८।१२वां स्थान ग्रह रहित हो, लग्न शुभ ग्रह से दृष्ट हो और चन्द्रमा लग्न से ३।६।१०।११वें भाव में हो तो कार्य की सिद्धि होती है। यह नियम विवाह (कन्यादान समय) पर लागू नहीं होता क्योंकि विवाह में विहित लग्न इष्टग्रह रेखा (अधिक) तथा जायाभाव शुद्धि पर आधारित होती है। शास्त्र के मर्म को न समझने वाले द्विज वितण्डावाद में अधिक रुचि लेते हैं।

साढ़े तीन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त- १ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, २ वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तीज), ३ आश्विन शुक्ल दशमी (विजया दशमी), ४ कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (गुजराती नववर्षारम्भ) ये चार स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त कहलाते हैं। इनमें चौथा अर्धबली होने से इनको साढ़े तीन मुहूर्त्त कहते हैं। इनमें कोई भी शुभ कार्य किया जा सकता है; पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं। **देव प्रबोधिनी एकादशी** और **फुलेरा दौज** भी अनबूझ मुहूर्तों में जाने जाते है। बड़ी ही श्रद्धा के साथ पूर्वज इन मुहूर्तो को अपनाते आये हैं तथा शतप्रतिशत सफल भी होते देखे गये हैं।

शुभकार्य में त्यागने योग्य- व्यतिपात, वैधृति, अमावस्या, संक्रांति, तिथिक्षय, भद्रामुख, कृष्णाष्टमी, चतुर्दशी, जन्मनक्षत्र, ग्रहणनक्षत्र, क्षय, तथा मलमास, गुरु-शुक्रास्त का समय सिंह के गुरुवर्षारम्भ चार मास, तेरह दिन का पक्ष, ४।९।१४ तिथि, पापवार,अशुभ योग, ग्रहणभात, श्राद्ध दिन तथा अन्य दुर्दिन त्यागकर स्रोत-स्मार्त कर्म करने चाहिए।

रवियोग- का स्पष्ट उल्लेख पाठकोंकी सुविधा के लिये अन्ययोगोंके साथ कर दिया जाता है। रवियोग त्रयोदश(चर,क्रकच,दग्धा तिथि व नक्षत्र, मृत्युदातिथि, उत्पात, मृत्यु, काण, कुलिंग, यमदृष्ट, यमघण्ट, मूसल, वज्र) कुयोगों का नाशक माना गया है। मुहूर्त निश्चित करते समय अन्य शास्त्रोक्त परिहार्य वचनों पर भी ध्यान देना युक्तियुक्त है यथा- **विष्टिरङ्गारकश्चैव व्यतिपातश्च वैधृतिः। प्रत्यरिर्जन्मनक्षत्रं मध्यान्हात्परतः शुभम्।।** वचन विशेष से भद्रा व्यतिपात, वैधृति, जन्मनक्षत्रादि विविध दोष दोपहर बाद न्यून होते हैं।

नौमी. तिथि मधुमास पुनीता। सुकल पक्ष अभिजित् हरिप्रीता।
मध्य दिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक विश्रामा।।

जो भगवान हरि को अत्यन्त प्रिय है; जिसमें काल भी लोकोपकारार्थ कुछ क्षण के लिये विश्राम करता है। इसी अभिजिन्मुहूर्त्त नौमी तिथि चैत्र मास में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अवतरित हुये थे। अभिजित् मुहूर्त्त में अनेक दोष निवारण की शक्ति है। अतः कोई शुभ मुहूर्त्त लग्न न बनता हो तो जातकादि सभी शुभ कार्य अभिजित् मुहूर्त्त में किये जा सकते हैं। परन्तु बुधवार के दिन इनका निषेध है।

❀ कन्या वरण मुहूर्त्त ❀

अ. रो. मृग. मघा. उफा. हस्त. चित्रा. स्वा. अनु. मूल. उषा. श्र. ध. उभा. रे. नक्षत्र, शुभवार, शुभ तिथि में अच्छा समय देखकर वस्त्राभूषण, पुष्प मिष्ठान्न फलादि से कन्या वरण (गोद भरें) करें।

नोट- मांग में सिंदूर भरने का अधिकार सप्तपदी के पश्चात् वर को ही है अन्य किसी को नहीं। देखें (ऋ.मं. १० सूक्त ८५)

❀ वर वरण मुहूर्त्त ❀

उपरोक्त नक्षत्र तथा शुभ मुहूर्त्त में आचार्य या पुरोहित अथवा कुलगुरु कन्या के पिता, भ्राता एवं अभिभावक सहित वर से पहले गणेशादि पूजन करवाकर कुमकुम केशर आदि से वर का तिलक करें। मोली बांधें, मिष्ठान्न खिलावें, तदन्तर वस्त्राभूषण गोद में रखकर सम्मानित करें, उपरान्त माला पहनावें, न्यौछावर करें। वर जाने से पहले गुरुजनों के सहित बुजुर्गो का आर्शीवाद प्राप्त करे, सामान जननी की गोद में धरें। वर के चौकी पर से जाने से पूर्व कन्या पक्ष की ओर से पठनीय मन्त्र इस प्रकार है-

तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नात: स्नाते ह्यरोगिणो।
अव्यंगेऽपंडितेऽक्लीबे पिता (दाता) तुभ्यं प्रदास्यति।।

विवाह से पूर्व चिन्तनीय विषय-

दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से न करें, और दो बहिनों का विवाह एक वर से न करें। पृथक् माता से उत्पन्न बहिनों का विवाह मण्डप तथा आचार्य भेद से करें। यमल (जोड़े) से उत्पन्न दो का विवाह एक मण्डप में कर सकते हैं। संस्कारान्त ६ मास होना चाहिए। सम्वत्सर भेद हो तो पहले करने में भी दोष नहीं।

विवाह में शौचादि की सम्भावना हो तो १० दिन पहले नान्दीश्राद्ध कर लेना चाहिए। दैववशात् यदि अशौच हो जाय तो माता-पिता तथा कर्ता को अशौच नहीं लगता। बड़ा विनायक स्थापन के बाद यदि किसी की मृत्यु हो जाय तो अशौच नहीं लगता, निश्चित समय पर विवाहादि मंगल कार्य सम्पन्न कर लेना चाहिए। फिर भी मंगल की कामना हेतु कूष्माण्ड हवन, गो-दान तथा पंचगव्य प्राशन, स्वस्तिवाचन ग्रह शान्ति करनी चाहिए। जनाना शौच में श्री शान्ति से एवं अशौच से पूर्व अन्नादि का संकल्प कर लेने से किसी को अशौच नहीं लगता, संकल्पित अन्न को सब प्रयोग कर सकते हैं।

आचार्य का समयोचित आदर सम्मान कर विवाह के लिए शुभ मुहूर्त निकलवाना चाहिए। उभय पक्ष में मान्य मुहूर्त के अनुसार विवाह से सवा दो मास या सवा महीना अथवा २१ दिन पहले पीली चिट्ठी (षट्कर्म लग्न, तेल-वान, हल्दात, नेग करण और फेरादि) की सूचना देनी चाहिए। लग्न- विवाह दिन से ५।७।९ व ११ दिन की सुविधानुसार लिखवा कर भेजनी चाहिए।

मेषादि राशियों के लिए तेलादि लेपन दिन

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
तेलसं.	७	५	५	७	५	७	७	५	५	५	५	७

नोट- अब बच्चों के विवाह बड़ी उम्रमें होने लगे हैं, इसलिए तेलों की संख्या कम करके लिखनी चाहिए। यह प्रामाणिक विषयभी नहीं है। देशकाल, परिस्थितियोंके अनुसार विद्वानोंके कई मत पाये जाते हैं। समयाभावको ध्यानमें रखते हुए विद्वान् न्यूनाधिक् करके स्वयं लिखेंगे, ऐसी हमें आशा है।

तेल चढ़ाने के लिए शुभ दिन- सोम, बुध और शनिवार माने गये हैं। अन्य वारों में तेल चढ़ाना हो तो रवि को पुष्प, गुरु को दूर्वा, मंगल को गंगारज और शुक्र को गाय का गोबर मिलाने से तेल के दोष नष्ट हो जाते हैं।

तैलाभ्यंगे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः।
बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम्।।

अर्के पुष्पं गुरौ दूर्वा भूमिपुत्रे रजस्तथा।
भार्गवे गोमयं दद्यात् तैलाभ्यङ्गो न दूषिता।।

विवाह में विहित नक्षत्र- रोहिणी, मृग., मघा, उफा, हस्तश्च स्वाती नक्षत्रकाः। अनु.मूल.,उषा,उभा,रेवत्यां शुभदो विवाहे।। ये ग्यारह नक्षत्र विवाह के लिए सर्वमान्य शुभ हैं। यजुर्वेदियों के लिए ग्राह्य कात्यायन सूत्र वाले सूत्रोक्त आर्ष वचन- 'त्रिपु त्रिपुत्तरादिपु' अर्थात् तीनोंउत्तराओं से तीसरे पड़ने वाले नक्षत्र चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा और अश्विनी ये विवाहके लिये शुभ है। अन्य प्रमाण- "चित्राश्रवणधनिष्ठाऽश्विनीनक्षत्रं यजुर्वेदिविषयम्" इन नक्षत्रोंको धर्मसिन्धु, सत्यकृत्य मुक्तावलीमें भी शुभ माना गया है। ध्यान रहे ऋग्वेदीय और सामवेदियोंके लिए ग्राह्य नहीं है। देशाचार, कुलाचार तथा जात्याचार का अपना विशेष महत्व होता है- **देशाचारः कुलाचारः जात्याचारो विशेषतः। कर्त्तव्यो विदुषा तत्र सारासारं विचार्य च।।**

विवाह के लिए ग्राह्य मास- वैशाख, ज्येष्ठ, त्रिभाग आषाढ़ (मिथुनार्क में) आगे प्रबोधिनी एकादशीके बाद (वृश्चिकके सूर्यमें) कार्तिक व मार्गशीर्ष (मकरके सूर्यमें) माघ और (कुम्भ संक्रान्ति में) फाल्गुन मात्र शुभ माना गया है। देशाचारकी प्रधानता से चैत्र, पौष को छोड़कर अन्य सभी मासोंमें विवाह होते हैं।

अथ विवाह मुहूर्त्तोंमें रेखाओं का महत्व

द्विजातियोंके विवाह मुहूर्तोंमें ८१ दोष शास्त्रोंमें बतलाये गये हैं; किन्तु उनमें दस महादोष मुख्य हैं यथा- लता, पात, युति, वेध, जामित्र, वाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य महापात और दग्धा तिथि। इनका मुख्यतः विचार किया जाता है। वेध, मृत्युवाण, क्रान्तिसाम्य ये तीन महादोष अपरिहार्य होने से विवाहमें सर्वत्र सर्वथा वर्जित हैं। नोट- वेध दोष चरण गत मान्य होता है।

श्रीब्रजभूमिपंचांग के विवाह मुहूर्तों में लतादि जो कोई दोष जहां आता है उसे (ऽ) ऐसी वक्ररेखा द्वारा लिख दिया जाता है। मुहूर्तों में लगी (।) खड़ी रेखाएं शुद्धताकी परिचायक हैं। इस विषय का शास्त्रसम्मत निर्णय लेना पंचांगकर्त्ताका परमकर्त्तव्य है। दोषोंका संक्षेपमें वर्णन करते हैं-

लता-दोषज्ञानाय चक्रम्

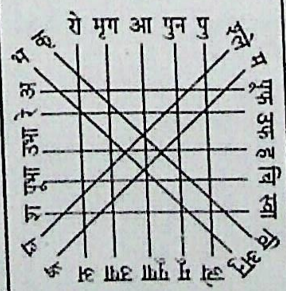
ग्रहाणां	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
नक्षत्र सं. आगे-पीछे	१२ आगे	२२ पीछे	३ आगे	७ पीछे	६ आगे	५ पीछे	८ आगे	९ पीछे	९ पीछे
फलम्	धन हानि	भय	अति कष्ट	भय	भाई कष्ट	कार्य हानि	वंश हानि	मरण	मरण

अपने आश्रित नक्षत्रसे आगे वाले बारहवें नक्षत्रको सूर्य लतादोष से दूषित बनाता है तो चन्द्र पीछे वाले २२वें नक्षत्र को दूषित करता है। अन्य ग्रह लतादोष एवं फल चक्र से ज्ञात करें।

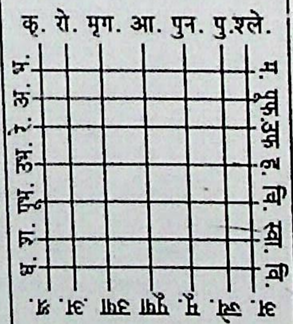
२. पातदोष- हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, गण्ड और शूल योग काअन्त जिस नक्षत्रमें हो वह नक्षत्र पातदोषसे दूषित समझा जाता है।

३. युतिदोष- जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह चल रहा है तो उस ग्रहकी युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र, स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, अपितु श्रेष्ठ होता है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्रय मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्रकी युति विशेषतः वर्जित है।

४. वेध चक्रम्- पञ्चशलाका चक्र-



४. वेध चक्रम्- सप्तशलाकाचक्र-



४. वेधदोष- पञ्चशलाका चक्रमें आमने-सामने वाले नक्षत्र परस्पर ग्रह वेधके माने जाते हैं अर्थात् जिस समय जो ग्रह जिस नक्षत्र पर गतिशील होता है वह अपने से शलाकाविद्ध नक्षत्रका वेध करता है।

५. जामित्रदोष- विवाह कालीन लग्न या चन्द्रराशि से सप्तमस्थ ग्रह होने पर उक्त ग्रहका जामित्रदोष समझा जाता है। पापी ग्रह का जामित्र दोष विशेष वर्ज्य है। लग्न या चन्द्र से ५५ वें नवांश यानी उससे सातवीं राशिके उतने ही अंश पर कोई ग्रह हो तो सूक्ष्म जामित्र दोष होता है जो विशेष वर्जनीय माना गया है।

६. बाणदोष ज्ञानाय चक्रम्-

बाण नाम	सूर्य के गतांश	वर्ज्य ५ कर्म	वर्ज्य वार	वर्ज्य काल
रोग	८।१७।२६	उपनयन में	रविवार	रात्रि में वर्ज्य
अग्नि	२।११।२०।२९	गृहारम्भ में	भौमवार	सदैव वर्ज्य
राज	४।१३।२२	राजकाज में	शनिवार	दिन में वर्ज्य
चोर	६।१५।२४	यात्रा में	भौमवार	रात्रि में वर्ज्य
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाह में	बुधवार	सन्ध्याकाल वर्ज्य

रोगादि पांचों बाणों का सम्बन्ध सूर्य के जिन भुक्तांशों से होता है, उससे विगत अंश रोगादि पांचों बाणों के सामने चक्र में लिखे है। विवाह में बुध-पञ्चक(यानी पांचों बाणों) के समय त्याज्य माने गये है, किन्तु मृत्युबाण का समय सब देशों के लिये वर्जित है। प्रत्येक बाण का समय अपने ही वर्ज्य वार, समय तथा कर्म में नेष्ट होता है।

७. एकार्गल दोष- व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुम्भ, शूल, वैधृति वज्र, परिघ, अतिगण्ड इन अशुभ योगों में सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने पर विषम संख्यांक हो तो एकार्गल दोष होता है जो कि कश्मीर देश में वर्ज्य है।

८. उपग्रह दोष- सूर्याश्रित नक्षत्र से वैवाहिक नक्षत्र संख्यॉंक ५।७।८।१०।१४।१५।१८।१९।२१।२२।२३।२४।२५ हो तो उपग्रह दोष होता है। गणना अभिजित् रहित होती है।

९. क्रान्तिसाम्यदोषचक्रम्-

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
सिंह	मकर	धनु	वृश्चिक	मेष	मीन	कुम्भ	कर्क	मिथुन	वृष	तुला	कन्या

उपरोक्त चक्र में ऊपर नीचे लिखी किसी एक राशि पर सूर्य तथा दूसरी राशि पर चन्द्रमा हो तो क्रान्तिसाम्य दोष कहलाता है जोकि मंगल कार्य में अशुभ होता है। यह स्थूल मत है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य गणित से सिद्ध होता है। श्री ब्रजभूमि पंचांग के विवाह मुहूर्तों में गणित सिद्ध सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य दोष ही लगाया जाता है।

१०. दग्धातिथिदोष ज्ञानाय चक्रम्-

संक्रांति	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
द.ति.	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

मेषादि संक्रांतियों में लिखित तिथियां दग्ध कहलाती हैं चाहे वह कृष्ण पक्ष की हों या शुक्ल पक्ष की। दग्ध तिथि मध्यदेश के विवाह मुहूर्तो में दोषप्रद मानी जाती है।

कौनसा दोष किस प्रदेश में वर्जित है?

लता मालवके देशे पातश्च कुरुजांगले।
एकार्गलं च कश्मीरे वेध: सर्वत्र वर्जयेत।।

लता दोष मालवा प्रान्त(उज्जैन), पातदोष कुरुक्षेत्र वांगर फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त, एकार्गलदोष(कश्मीर) के आसन्न क्षेत्रमें वर्जित होता है तथा वेध सर्वत्र वर्जनीय है।

उपग्रहर्क्षकुरुवाल्हीकेपु कलिंगवंगेषु च पातितभयम्।
सौराष्ट्रशाल्वदेषु च पतितं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।।

उपग्रहदोष- कश्मीर से पश्चिम हिमालय तक तथा हिमाचल प्रदेश एवं पंजाब तक और आगरा प्रान्त बलखबुखारा तक मान्य है। **पातदोष-**उड़ीसा के दक्षिण और मद्रास के उत्तर तीरवर्ती कलिंग (वर्तमान भुवनेश्वर) तथा समस्त बंगाल में मान्य होता है। **लतादोष-**अहमदाबाद से सोमनाथ तक तथा सूरत नाम से प्रसिद्ध (सौराष्ट्र) एवं शाल्व देश (उज्जैन प्रान्त में) मान्य होता है। वेध नक्षत्र सब देशों में त्याज्य माना जाता है।

युतिदोषो भवेद् गौडे जामित्रस्य च यामुने।
मासदग्धा च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिता:।।

युतिदोष- बंगाल में ढाका, मुर्शिदाबाद मालवा के आसन्न मान्य है। **जामित्रदोष-**मथुरा प्रान्तासन्न माना जाता है और **दग्धा-तिथि दोष** मध्यदेश (उज्जैन,भोपाल, नरसिंहपुर और जबलपुर)के आसन्न क्षेत्रोंमें माना जाताहै।

चित्रां गते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धा:।
पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजात: सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपात:।।

चित्रा में बना पात दोष विचित्र देश में (अज्ञात कोई प्रान्त), अनु, और मघा में बना पात दोष उज्जैन में। रेवती, श्रवण में बना पात उत्तर दिशा में सुदूर पर्वतीय प्रदेश में वर्जित होता है। भुजंग पात (रवि-शशि क्रान्ति साम्य) सर्वत्र वर्जनीय है।

भुजंगक्रान्तिसाम्यं च बाणवेधं तथैव च।
लग्नहीनं विवाहं तु कलौ पंच विवर्जयेत्।।

भुजंग क्रान्तिसाम्य, बाण और वेध दोषपूर्ण (विवाह मुहूर्त) बलहीन लग्न का विवाह कलियुग में वर्जित है। आगे युति वेध और जामित्र दोष परिहारार्थ ऋषि-महर्षियों के वचन प्रस्तुत हैं-

स्वक्षेत्रग: स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधु:।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्यो:. श्रेयसे सदा।।

विवाहकाल में चन्द्रमा स्वक्षेत्रीय हो, उच्च का हो अथवा मित्र क्षेत्री हो तो युति दोष का नाश करता है। दाम्पत्य जीवन सुखी बनता है। सदा अच्छा श्रेय मिलता है।

पादमेव शुभैर्विद्धम् शुभैर्नैव कृत्स्नत:।
अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्।। नारद:।।
तृतीयगो द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमम्।
भिनत्तिवेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात्।। वशिष्ठ:।।

वास्तव में एक नक्षत्र के प्रथम चरण में ग्रह हो तो दूसरे का चतुर्थ चरण और चतुर्थ चरण में ग्रह हो तो दूसरे का प्रथम चरण विद्ध होता है एवं द्वितीय और तृतीय चरण में परस्पर वेध होता है; जोकि अवश्य वर्जनीय है।

भुक्त भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च।
शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नत:।।

अस्यापवाद मुहूर्त्त चिन्तामणौ-

ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च।
भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभऋक्षाणि प्रचक्षते।।

क्रूर ग्रह से विद्ध और क्रूर ग्रह से भुक्त या भोग्य नक्षत्र और पापग्रह युक्त एवं पापाक्रान्त होने वाले नक्षत्रों को यदि चन्द्रमा भोगकर अग्रिम नक्षत्र पर पहुंच गया हो तो वह नक्षत्र शुभ होते हैं।

स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे।
हत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्।।
व्यवहार समुच्चय।।

चन्द्रमा उच्च का हो, शुभग्रह की राशि में हो, अपने वर्ग या मित्र के वर्ग में हो तो जामित्र दोष का हरण कर अत्यन्त सुख देता है। पति-पत्नी सुखोपभोग करते हैं।

अन्य मत-

एकार्गलोपग्रहपातलता जामित्रकर्तर्यदयास्तदोषा:।
नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषा:।।

ज्योतिषशास्त्र के अविष्कारकर्त्ता पूर्वाचार्यों ने जहां दोषों का वर्णन किया है वहां यह भी बतलाया है कि कौन-सा दोष कहां मान्य होता है और किस दोष का क्या परिहार्य है। पंचांग किसी एक प्रान्त-प्रदेश या एक देश के लिये अथवा एक सम्प्रदाय एवं वर्ग विशेष के लिये नहीं बनता बल्कि वह सार्वभौम होता है। अनन्त शास्त्रों का सार अनन्त विज्ञान का भंडार गूढ़ रहस्यमय अंकों से ओत-प्रोत, पांचों अंगों से परिपूर्ण होता है। अपने अपने प्रयोग में आने वाले विशुद्ध ज्ञान को ग्रहण करना चाहिए।

अनन्तशास्त्रं बहुलाश्च विद्या अल्पश्च कालो बहुविघ्नता च।
यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्।।

कर्त्तरी दोष- लग्नस्यपृष्ठाग्रयोरसाध्वोःसा कर्त्तरी स्याद्दृजुवक्रगत्योः। "इयं तावेव शीघ्रो यदि वक्रचारी न कर्त्तरी चेति पितामहोक्तिः। "इयं कर्त्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या।" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः-पापौ कर्त्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्त्तरी। दोषौ नैव सितेऽरिनीच गृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमौ दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न।।

दोषापवादा ज्योतिर्निबन्धे- दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पा कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैं सह। अपवादान्तरम्-उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थे सितौ वापि पन्नगानारुडो यथा। मुहूर्त्तलग्नषड्वर्गकुनवांशग्रहोद्भवाः ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी।। अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यर्क्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे। लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतारिष्टमेकोऽपि विलयं नयेत्।। बलवान केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम् द्यूनं विहाय दैत्येज्य सहस्त्रं लक्षमंगिराः।।

स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र(१।४।१०) ही ग्रहण करना है।

विवाहलग्ने ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः	मुहूर्त्तगणपतौ
३ ६ ८ १	२ ३ ११	३ ६ ११	१।२ ३।४ ५।६ ९ १० ११	२।१ ३।४ ६।५ ९ १० ११	१।२ ४।५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	स्थानानि	लग्नं शुभ विवाहे स्याद्दशविंशोपकाधिकम्
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकाबल

अथ गोधूलिलग्नविचार- लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्। लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते।। गोधूलिं त्रिविधां वदन्ति मुनयो नारीविवाहादिके, हेमन्ते शिशिरे प्रयाति मृदुतां पिण्डीकृते भास्करे। ग्रीष्मेऽर्धास्तमिते वसन्तसमये भानौ गते दृश्यतां, सूर्ये चास्तमुपागते भगवति प्रावृश्ट्शरत्कालयोः।। गोधूलिके [illegible] कुलिकं [illegible] च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पंचदोषैस्तु दूषितः।। अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे। लग्ने षष्ठेऽष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः।। "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के।" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे(क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्यास्त से पहले (क्योंकि सूर्यास्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्णचाण्डालादिजातीनां विवाहमुहूर्त्तः- कृष्णे पक्षे भानुभौमा र्कजानां वारे योगे चापि धिष्ण्ये निषिद्धे। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायुः प्राप्तये शौनकाद्याः।

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग्	श्रीः	उन्नति	फल

अन्यच्च- सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यांकसाभिजिद् भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेधभृगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः।।

वधू प्रवेश-द्विरागमन विचार

पाणिगृहीत वधू पिता गृह से जब पतिगृह में प्रवेश करती है, उस समय को वधू प्रवेश कहते हैं जिसमें यात्रा सम्बन्धी विचार नहीं होता क्योंकि विवाह काल को ही यात्रा समय कहते हैं। वधू प्रवेश में सम्मुख शुक्रदोष भी मान्य नहीं-

स्वभवनपुरप्रवेशे देशानां विप्लवे तथोद्वाहे।
नववध्वा गृहगमने प्रतिशुक्रविचारणा नास्ति।। लल्लाचार्य
न शुक्रदोषो न सुरेज्य दोषो ताराबलं न योज्यम्।
उद्वाहिताया नवकन्यकाया दीपोत्सवे शोभनमङ्गलानि।। भास्कराचार्य

कहीं-कहीं विवाह के बाद वधू अपने पति के घर नहीं जाती तो उसके बाद वधू प्रवेश का लोप करके उसी (वधू प्रवेश ही) को द्विरागमन मानकर उसमें शुक्र शुद्धि का विचार करते हैं; परन्तु यह वहाँ की (विशेष समाज-सम्प्रदाय) की अपनी लोक परम्परा है, जिसका शास्त्रों में कोई प्रमाण नहीं।

मुहुर्त-मार्तण्ड के ४०वें श्लोक में लिखा है कि इस परिस्थिति में विवाह दिन से १६ दिन तक सम दिनों में ६।८।१०।१२।१४।१६ और विषम ५।७।९ में तारों की रोशनी में प्रवेश शुभ है।

१६ दिन के बाद मास पर्यन्त विषम दिन में, १ मास के बाद वर्ष भीतर विषम मास में तथा १ वर्ष के बाद विषम वर्ष में वधू प्रवेश शुभ है। मेष, वृश्चिक तथा कुम्भ सौर मास एवं शुक्ल पक्ष हो तो अति उत्तम होता है। तृतीयादि वर्षों में यात्रा विचार भी करना चाहिए।

द्विरागमन विचार-नव विवाहिता (वधू प्रवेश) के बाद पिता गृह जाती है। पुनः पिता गृह से विदा होकर पति घर जाने को द्विरागमन कहते है। जिसमें यात्रा सम्बन्धी सभी नियमों का विचार किया जाता है।

विहित नक्षत्रमासादि-अश्विनी, रोहि., मृग, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, उफा, अनु, मूल, उषा, श्रव, धनि, शत, उभा और रेवती नक्षत्र, मेष, वृश्चिक, कुम्भ सौर मास अर्थात् वैशाख, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघोत्तर, फाल्गुन विषम वर्ष, शनि, मंगल छोड़कर श्रेष्ठ लग्न में द्विरागमन शुभ की इच्छा से करें। गुरु-शुक्र अस्त हो, गुरु अंश रहित हों, शुक्र यदि सम्मुख हो अथवा दक्षिण हो तो गर्भिणी या बालक के सहित नव विवाहिता का गौना द्विरागमन न करें।

शुक्र का विशेष विचार-

रेवत्यादि मृगान्तञ्च यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः।
तावच्छुको भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः।।

रेवती से मृगशिर पर्यन्त जब तक चन्द्रमा रहते है तब तक शुक्र अन्धा रहता है; तब सम्मुख दक्षिण दोष मान्य नहीं। अन्य आचार्य वर्ष भीतर द्विरागमन (गौना) को गुरु शुक्रास्त काल में भी शुभ कहते है-

अस्तेऽथवा शिशुत्वे वा बालत्वे गुरुशुक्रयोः।
शुभो द्विरागमा यावद् वर्षमेकं विवाहतः।।

अन्य परिहार वाक्य

नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवे करपीडने विबुधतीर्थयात्रयोः।
नृपपीडने नववधूप्रवेशने प्रतिभार्गवो भवति दोषकृन्न हि।।
पित्र्येगृहे चेत्कुचपुष्पसम्भव स्त्रीणां न दोषः प्रतिशुक्रसम्भवः।
भृग्वंगिरोवत्सवसिष्ठकश्यपा स्त्रीणां भारद्वाजमुनेः कुले तथा।।

शुक्र सम्मुख है या दक्षिण?- इस प्रश्न का सन्तोषजनक उत्तर किसी भी ज्योतिष ग्रन्थ में नहीं है। अपनी कक्षा में गतिशील शुक्र ग्रह जब मेष, सिंह व धनु राशि में होता है तब वह पूर्व दिशा में सम्मुख और उत्तर दिशा में दक्षिण माना जाता है। इसी प्रकार वृष, कन्या, मकर दक्षिण में, मिथुन तुला, कुम्भ, पश्चिम और कर्क, वृश्चिक और मीन में गतिशील शुक्र को उत्तर दिशा में सम्मुख जानना चाहिए। यात्रा प्रकरण में कालराहुवास, योगिनीवास दिशाशूल आदि का विस्तार सहित विवरण दिया गया है।

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः।
मत्तमार्तंगयूथानां शतं हन्ति च केशरी।।

ब्रजभूमिपंचांगस्य विवाहप्रकरणमन्तमगात् ब्रजेश्वरिप्रसादात्।

यात्रा प्रकरणम्

गो. तुलसीदास जी के वचनामृत

दोहा- रामु लखन कौसिक सहित, सुमिरहु करहु पयान।
लक्षि लाभ जय जगत जसु, मंगल सगुन प्रमान।।
भरत सत्रुसूदन लखन, सहित सुमिरि रघुनाथ।
करहु काज सुभ साज सब, मिलिहि सुमंगल साथ।।

श्रीविश्वामित्रजीसहित श्रीराम-लक्ष्मणका स्मरण करके यात्रारम्भ करनेसे लक्ष्मीप्राप्तिके साथ-साथ जगतमें विजय सुयश प्राप्त होता है। यह शकुन सच्चा मंगलमय है! भरत,शत्रुघ्न,लक्ष्मण और श्रीरघुनाथजीका स्मरणकर सब शुभ साधनोंके सहित अपने कार्य करोगे तो सफल होगें, यश भी मिलेगा।

दोहा- नकुल सुदरसन, दरसनी, क्षेमकरी चक चाष।
दसदिसि देखत सगुन सुभ, पूजहिं मन-अभिलाष।।
सुधा, साधु, सुरतरु सुमन, सुफल सुहावनि बात।
'तुलसी' सीतापति भगति, सगुन सुमंगल सात।।

नेवला मछली, दर्पण, क्षेमकरीचिड़िया(चील), चकवा और नीलकण्ठ इन्हें दसों दिशाओंमें कहीं भी देखना शुभ शकुन है और ये मनकी अभिलाषा पूर्ण करते हैं। गो. तुलसीदास जी कहते हैं कि अमृत, साधु, कल्पवृक्ष, सुन्दर पुष्प, अच्छेफल, सुहावनीबात और श्रीसीताराम की भक्ति ये सात सुन्दर शकुन हैं।

शुभ शकुन

चलत समय नेउरा मिल जाय। वाम भाग चारा चखु[1] खाय।।
काग दाहिने खेत सुहाय। सफल मनोरथ समजहु भाय।।
लोमा[2] फिर-फिर दरस दिखावै। बांयें से दहिने मृग आवै।।
मृग बायें से दाहिने, जो आवै तत्काल।
अन-धन-लक्ष्मी बहु मिलै, चलते प्रात:काल।।
भड्डरिकवि यह सगुन बतावैं। सगरेकाज सिद्ध होइ जावैं।।
नारि सुहागिन जलघट लावै। दधिमछली जो सनमुख आवै।।
सनमुख धेनु पियावै बाछा। यही सगुन है सब ते आछा।।

कोयलशकुन- कोयल हरियल आम के, तरु पर बैठी होय।
गमनत में ताको दरश, करे बटोही कोय।।
करे बटोही जोइ, लाभ धन उसको होगा।
[illegible]

1 नीलकंठ
2 लोमड़ी

अशुभ शकुन

गवन समय जो स्वान। फरफराय दे कान।।
एक शूद्र दो वैस असार। तीन बिप्र औ छत्रीचार।।
सनमुख आवै जो नौ नार। कहै भड्डरी अशुभ विचार।।
स्वान धुनै जो अङ्ग, अथवा लोटै भूमि पर।
तो निज कारज भङ्ग, अतिहि कुसगुन जानिये।।
बैस पाँच षट् स्वान, एक बैल एक बकरा जान।
तीनि धेनु गज सात प्रमान, चलत मिलै मति करौ पयान।।
सगुन सुभासुभ निकट हो, अथवा होवैं दूर।
दूरि से दूरि, निकट ते निकट, समझौ फल भरपूर।।

यात्रारम्भे बिल्लियोंका युद्ध, रजस्वला स्त्रीका सामने आना, जननीका तिरस्कार, अकालोतिवृष्टि और परिवारीय मृतसूतकोंमें शुभकी इच्छा चाहने वाले यात्रा न करें। यथा-

मार्जारयुद्धे कलहे प्रवच्छे रजस्वलामुस्त्री जननी निषेध।
अकालवृष्टो मृतसूतके चं किञ्चित् न गमनं चाहस्य जीवनं।।

छींक-विचार

सर्दी जुकामसे आने वाली छींक या शराब,शीरादि गन्ध,मिर्च, नोसादर आदि की भस लगनेसे आने वाली छींक प्रायः सभी निष्फल होतीहैं।

छींक सूंघनी छलकरि लीनी। सज्जन जानो सो फल हीनी।।

कन्या, बांझस्त्री, विधवास्त्री, रजस्वलास्त्री, वैश्या, मालिन, धोबिन, पशु तथा कुरुपाङ्ग मनुष्यकी छींक अशुभ होती है।

सम्मुख छीक लड़ाई भाषै। छीक दाहिनी द्रव्य विनाशै।।
ऊँची छीक होय जयकारी। नीची छीक होय भयकारी।।

छींक भी शुभ होती है-

आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने।
वामाङ्गे पृष्टतश्चैव षट् छिक्का च शुभावहा:।।
एक नाक दो छींक, काम बनै सब ठीक।
छींकत खइये, छींकत नहिये, छींकत पराये घर ना जइये।।
अपनी छींक महादु:खदाई। ऐसे छींक विचारो भाई।।

विशेष- उपरोक्त आवश्यक विचारोंके साथ-साथ मनोत्साह तथा गुरुजन ब्राह्मणादिके सद्वाक्योंका यात्रामें अपना विशेष महत्व होता है।

शकुनकेविषयमें- यहां तक कहा जाताहै, कि संचितकर्मका फल परिपक्व होकर यात्राके समय शुभाशुभ शकुनोंका प्रतिपादन करता है अर्थात् आभासरूप पूर्व सूचना देता है। मनकीशुद्धता एवं निर्बलताका [illegible]

पन्था-राहु चक्रांकित नक्षत्र और उनके फल

धर्मपक्ष के नक्षत्र	अश्वि.	पुष्य	आश्ले	विशा.	अनु.	धनि.	शत.
अर्थपक्ष के नक्षत्र	भरणी.	पुन.	मघा	स्वाती	ज्ये.	श्रव.	पूभा.
कामपक्ष के नक्षत्र	कृति.	आंर्द्रा	पूफा.	चित्रा	मूल	अभि.	उभा.
मोक्षपक्ष के नक्षत्र	रोहि.	मृग.	उफा.	हस्त	पूषा.	उषा.	रेवती

प्रस्थानके समय सूर्य धर्म नक्षत्रमें और चन्द्रमा अर्थ या मोक्षके नक्षत्रोंमें हो तो यात्रा शुभ होती है। इसीप्रकार सूर्य अर्थ में और चन्द्रमा धर्म या मोक्षमें हो तो शुभ जानें। सूर्य काममें और चन्द्र धर्म, अर्थ या मोक्ष में होने पर शुभद होता है। सूर्य मोक्षमें और चन्द्रमा धर्ममें शुभद् माना जाता है। इससे अन्यथा सूर्य चन्द्र की स्थितियां अशुभ होती है। यात्रारम्भे इष्टदेवता और दिक्पतिको प्रणाम करके यह श्लोक पढ़ें-

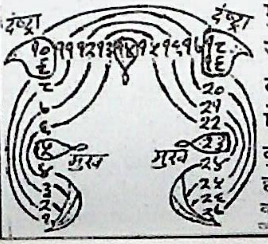
मंगलंभगवान्विष्णु:मंगलंगरुड़ध्वज:।
मंगलंपुण्डरीकाक्षमंगलायतनो हरि:।।



श्येन-पक्षी

सूर्याश्रित नक्षत्रको श्येन पक्षीकी चोंचके अग्रभावमें माने। इसी प्रकार आगे ३ नक्षत्र छाती,३ शिर,३ ग्रीवा,४ दायां पैर,४ बायां पैर,४ पीठ और ६ नक्षत्र उदर पर रख कर विचार करें नामनक्षत्र यदि पक्षीकी चोंचमें आ पड़े तो बन्धन जानें,छाती,शिर व ग्रीवामें धनलाभ और यदि पैर उदर या पीठपर हो तो नेष्ट रहता है।

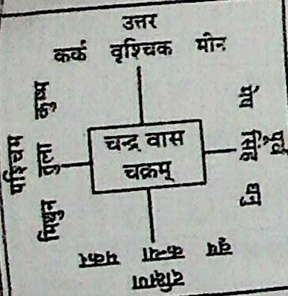
आजकादिन कैसा वीतेगा?- यह जाननेके लिए कालदंष्ट्रा चक्रांकित अंकोंके स्थान पर दैनिक नक्षत्रसे अग्रिमनक्षत्रोंको स्थापित करें; अर्थात् १ अंक के स्थानपर आजकानक्षत्र जो भी हो उसे रखें। **यथा फलम्**- कालदंष्ट्रा चक्रमें मध्यके ३ स्थान कालमुखके माने गये हैं, और दोनों ओर के २-२ स्थान कालदंष्ट्राके दाड़ माने गये हैं। जन्म या नामनक्षत्र मुखमें आ पड़े तो मृत्यु या कष्ट होता है। और दाड़ स्थानगत होनेपर ज्वर आदि व्याधि जाननी चाहिये।



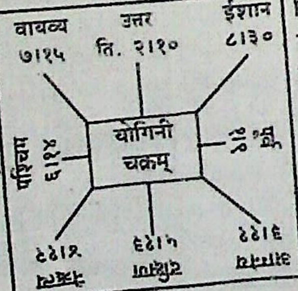
मुखदंष्ट्रगते मृत्यु: शुभमन्यत्र संस्थिते।
ज्वरितेनष्टदष्टे च विवाहे विग्रहे रणे।।
कालदंष्ट्रस्यगेनामपस्यतस्य महभ्दयम्।

ऐसे अशुभ संयोगमें रोग उत्पन्नहो, कुत्ता,सर्प,चूहा आदि काट ले,या व्यक्ति हमलाग्रस्त हो जाय, विपादिका सेवन कर ले,अग्नि आदि से जल जाय तो [illegible]

चन्द्रवासज्ञानाय चक्रम्



योगिनीवासज्ञानाय चक्रम्



लाभालाभ विचार

सम्मुखे चार्थलाभः स्याद् दक्षिणे सुखसम्पदः।
पृष्ठे च शोकसन्तापौ वामे चन्द्रे धनक्षयः।।

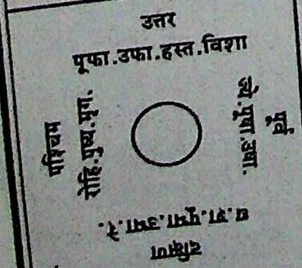
यात्रा में सम्मुख चन्द्रमा विशेष लाभदायक होता है, दाहिनी ओर रहे तो सुख सम्पत्ति मिलती है। पीठ पीछे शोक सन्ताप और बांई ओर रहे तो धन की क्षति होती है। राशि से गिनने पर चौथे चन्द्रमा कलह कारक,आठवें प्राणसंशय और बारहवें हानिकारक माने गये हैं।

युद्ध में, विवाद में, कुमारी पूजन में, राजसेवा में तथा वाहनासे यात्रादि में घात चन्द्र वर्जित है अन्य कार्योंमें नहीं; देखें पृष्ठ (१०७) पर।

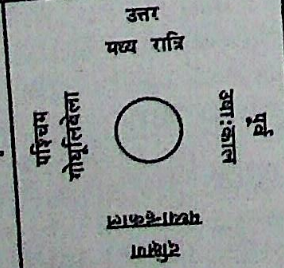
यथा- युद्धे चैव विवादे च कुमारीपूजने तथा।
राजसेवावाहनादौ घातचन्द्रं विवर्जयेत्।।

दिशाशूल ले जाओ बायें,राहु योगिनी पूठ।
सम्मुख लेवे चन्द्रमा, लावे लच्छमी लूट।।

नक्षत्रशूलज्ञानाय चक्रम्



समयशूलज्ञानाय चक्रम्



अथ योगिनी विचार

तिथियोंके अनुसार योगिनी निवास कहा गया है जैसे- द्वितीया और दशमीको योगिनी उत्तरमें रहती है। तिथि चाहे शुक्ल पक्षकी हो या कृष्ण पक्षकी। समस्त दिशाओंमें योगिनीवास ज्ञान चक्र से प्राप्त करें। योगिनी निवास फल-

योगिनी सुखदा वामे, पृष्ठे वांछितदायिनी।
दक्षिणे धनहन्त्री च, सम्मुखे मरणप्रदा।।

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों या मारकेशकी दशा हो तो अच्छे मुहूर्त में दूर दराजकी यात्रा न करें; प्रथम तीर्थयात्रा या देव दर्शन गुरु-शुक्रास्त में वर्जित है। अन्तरिक्षयात्रा- तिथि को ५ से गुणाकर १ जोड़कर ३ से भाग दें १ शेष में स्वर्ग, २ में भूमि और ० शेष में राशिका निवास पातालमें होता है, यात्रा तुल्य विचार करें।

यात्रा समये लग्न विचार

दहिने सम्मुख लग्न जो, होई सिद्धि सब काज।
बांयें मध्यम जानिये, पृष्ठे महा अकाज।।
जौन लग्न में रवि तपै, ताकौ यहै विचार।
पूर्व अग्नि तामे चलै सो, है अतिहि ख्वार।।

जिन राशियोंमें चन्द्रमा जिस दिशामें रहता है, उन्हीं राशियोंका लग्न भी उसी दिशामें रहता है। लग्नमें सूर्य हो तो पूर्व एवं अग्निकोणकी दिशामें यात्रा नहीं करनी चाहिए।

आग्नेय कोण (विदिशा)की गिनती पूर्व में होती है; इसी प्रकार नैऋत्य को दक्षिणमें,वायव्यकी पश्चिममें और ईशानको उत्तरमें मानकर गिना जाताहै।

दिशा ज्ञानम्

उदित सूर्य के सम्मुख, खड़े हो जाओ सीना ताने।
कौशिक जी के वचन से, सुगम दिशा पहचाने।
सम्मुख दिशा होय सो पूरब। बाईं ओर दिशा कहि उत्तर।
दहिनी ओर दिशा कहि दक्खिन। पश्चिम पीठस जानहु प्रियजन।।

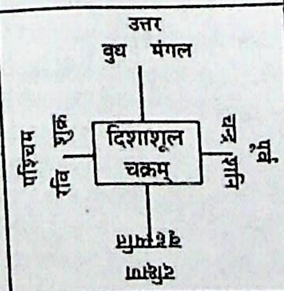
चार मध्यवर्ती आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य और ईशान तथा नीचे ऊपर वाली दो दिशा मिलाने से दश दिशाएँ कहलाती हैं।

समयशूल तथा परिहार वाक्यानि

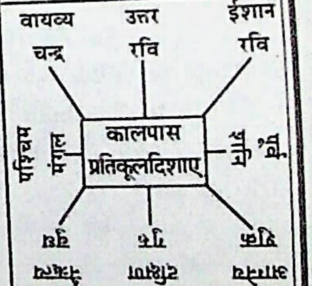
उषा: (प्रात:) काल में पूर्व, गोधूलि में पश्चिम, अर्धरात्रि में उत्तर और मध्यान्ह काल में दक्षिण दिशा को नहीं जाना चाहिए।

उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहस्पतिः।
अंगिरा च मनोत्साहः ब्रह्मवाक्यं जनार्दनः।।

दिशाशूलज्ञानाय चक्रम्



कालराहुवासज्ञानाय चक्रम्



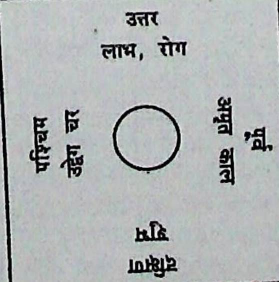
सोम सनीचर पूरब ना चालू। मंगल बुध उत्तरदिसि कालू।।
रवी शुक्र जो पच्छिम जाय। हानि होय पथ सुख नहिं पाय।।
बीफे दक्खिन करे पयाना। फिर नही समझे ताको आना।।

दिकशूलमें यात्रा भय, कष्ट और अनर्थप्रद होती है। इसलिए दिशाशूल वर्जित करना ही चाहिए। किन्तु जहां एक ही दिनमें यात्रा करके गन्तव्य स्थानमें पहुँचना सम्भव हो, वहां दिशाशूल योगिनी आदि के विचार की आवश्यकता नहीं रहती है।

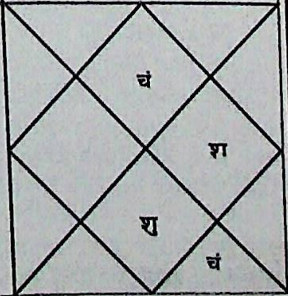
काल राहु विचार

उपरोक्त चक्रसे आप सहज जान सकते है कि किस दिन कालराहुका वास किस दिशामें रहेगा। यात्रा की दिशामें सम्मुख कालराहु नेष्ट होता है, कालपास- दिनमें कालराहुवास के सम्मुख दिशामें पास रहता है, और रात्रिमें विपरीत चक्र लगाता है। दोनों कालराहु एवं पास त्याज्य है।

चौघड़िया वर्जितचक्रम्



लग्नभङ्गीग्रहस्थिति



गोरख पतरा (यात्रा मुहूर्त्त) ।। श्री गोरखनाथ जी का वचनामृत ।।

पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	मासों की तिथियों का फल	प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिश	दक्षिण दिशा	पश्चिम दिशा	उत्तर दिशा
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो।	अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र.ला
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	महाभय जीवहानि पछतावा हो, Z सहित घर आवे।	भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्ध व अर्थपूर्ण हो, Y कुशल घर आवे	लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुःख	इष्टलाभ	धनप्रा.
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे।	क्लेश	लाभ	क्लेश	बिनाश	लाभ	सुख	मंगल	श्रीप्रा.
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु लाभ हो, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें।	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धनप्रा.	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट हो, कदाचित घरआवे।	संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थला.
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्नादिZ	विलम्ब	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीव नाश हो।	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशा पूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो।	लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो,बहुत दिन लगे किन्तु स Y	लाभ	सम्पूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्रीप्रा.
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो,जीव हानि नहीं,सौभाग्य पावे नहीं।	मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्रव्यला	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मार्ग में सिद्धि,मित्र मिलें,विघ्न मिटे,धन लाभ।	मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक

श्री गोरखनाथके पूछने पर गुरू मत्स्येन्द्रनाथने कहा था कि जो व्यक्ति इस चक्रोक्त यात्रा मुहूर्त के अनुसार यात्रा करेगा, वह कुशल पावेगा। यह मुहूर्तराज है। उसे चन्द्रदोष, भद्रा, दिशाशूल, योगिनी, काल, घातवार इत्यादि किसी कुयोगका दोष नहीं होगा, यह स्वयं सत्यसिद्ध भी है। मैंने स्वयं अपने जीवनकालमें इसी यात्रा मुहूर्त से अनेक मुहूर्त बनाए हैं। वे लगभग सभी शतप्रतिशत सत्यसिद्ध हुए हैं। पंचांगप्रेमी पाठकोंकी विशेष जानकारी हेतु पूरे विवरण सहित यह यहाँ प्रकाशित किया जाता है। इसमें प्रत्येक माह की, प्रत्येक तिथि और प्रत्येक प्रहरमें हर एक दिशाकी यात्राका फल निर्दिष्ट किया गया है। **पौषादि मासोंके** नीचे दी गई तिथियोंको उस मासके कृष्ण व शुक्ल पक्ष दोनोंकी समझनी चाहिए। इसमें १३,१४,१५ और ३० तिथियोंका उल्लेख नहीं है। सो १३ तिथि का फल ३ तीज तिथिके समान, १४ का फल ४ तिथिके समान और १५ का फल ५ तिथिके समान समझना चाहिए। ३० (अमावस्या) वर्ज्य है। इसी तरह १से ४ तक के प्रहरोंको दिन और रात दोनोंके लिए समान समझे।

नोट:- दिनमानका चतुर्थांश दिनके एक प्रहर का मान होता है। तथा रात्रिमानका चतुर्थांश रात्रिके एक प्रहर का मान होता है। प्रत्येक प्रहर लगभग तीन घन्टें का होता है।

दिन के चौघड़िया							रात के चौघड़िया						
र	चं	मं	बु	गु	शु	श	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	च	का	शु	च	का	उ	अ	रो	ला
च	का	उ	अ	रो	ला	शु	अ	रो	ला	शु	च	का	उ
ला	शु	च	का	उ	अ	रो	च	का	उ	अ	रो	ला	शु
अ	रो	ल	शु	च	का	उ	रो	ला	शु	च	का	उ	अ
का	उ	अ	रो	ला	शु	च	का	उ	अ	रो	ला	शु	च
शु	च	का	उ	अ	रो	ला	ला	शु	च	का	उ	अ	रो
रो	ला	शु	च	का	उ	अ	उ	अ	रो	ला	शु	च	का
उ	अ	रो	ला	शु	च	का	शु	च	का	उ	अ	रो	ला

चौघड़ियाविवरण- उ. से उद्वेग, च से चर, ला से लाभ, अ से अमृत, का से काल, शु से शुभ, और रो से रोग का चौघड़िया मुहूर्त्त जानना चाहिए। **चौघड़ियामुहूर्त्तोंके स्वामी** उद्वेग का रवि, चर का शुक्र, लाभ का बुध, अमृत का चन्द्र, काल का शनि, शुभ का गुरु और रोग का स्वामी भौम है, **श्रेष्ठसमय** शुभ, चर अमृत और लाभके चौघड़ियाका होता है। अशुभ समय उद्वेग, रोग और कालका होता है। दिनमानको ८ से भाग करनेपर लब्ध १ चौघड़िया मुहूर्त्तका मान होता है, उसके घण्टा-मिनट बनाकर सूर्योदयमें जोड़नेसे उस चौघड़िया मुहूर्त्तका समाप्तिकाल निकलताहै। इसीप्रकार दिनके ८ चौघड़ियामुहूर्त्तोंका समय जान सकते हैं। रात्रिके चौघड़ियोंका समय जाननेके लिए रात्रिमानको ८ से भागकर लब्ध फलघट्यादि के घं.मि. बनाकर सूर्यास्तमें जोड़नेसे रात्रिके प्रथम चौघड़ियाका समाप्ति काल आ जायेगा। सभी आवश्यक कार्योंमें चौघड़िया मुहूर्त्तोंका बहुत ही उपयोग हो रहा है। किन्तु यात्रा में इनके स्वामीका सूक्ष्म विचार कर लेना आवश्यक है। यात्री उक्त चारों श्रेष्ठ चौघड़ियोंमें किसीभी दिशाकी यात्रा कर लेतेहै, किन्तु फल कभी-कभी उल्टा यानी अशुभ होता है। इसका कारण यह है कि यदि किसीको पूर्वमें जाना है और 'अमृत' के चौघड़ियामें चला गया तो उसका स्वामी चन्द्र होनेके कारण पूर्व दिशाके लिए वह चन्द्रदिशाशूलदोष कारक होगा- **'सौम शनीचर पूरब ना चालू** तो फल श्रेष्ठ की बजाय नेष्ट होना सम्भव है।

प्रस्थानविधान- यदि कहीं जरूरी कारणोंसे यात्रा मुहूर्त्त में न जा सकें तो उसी मुहूर्त्तमें ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य शहद-घी, शूद्र फलको अपने वस्त्रमें बांधकर किसीके घर में व नगर से बाहर जानेकी दिशामें प्रस्थान कर रख दें। उपर्युक्त चीजोंके बजाय मनकी सबसे प्यारी वस्तु को भी रख सकते हैं। **यात्राके पहले त्याज्य वस्तुएँ-** यात्रा के ३दिन पहले दूध, ५दिन हजामत, ३दिन पहले तेल, ७दिन पहले मैथुन त्याग देना चाहिए। यदि इतना न हो सके तो कम से कम एक दिन पहले तो त्याज्य वस्तुओंको अवश्य ही छोड़ देना चाहिए। **नोट-**जन्म राश्येश, जन्म लग्नेश,वर्तमान दशापति व शुक्रके अस्त रहने पर यात्रा नकरें,गुरु-शुक्रके अस्तमें पहली तीर्थयात्रा नहीं करनी चाहिए। **यात्रा के लिए शुभ तिथि-** भद्रादि दोषरहित २,३,५,७,१०,११,१३ तथा कृष्ण पक्षमें प्रतिपदा श्रेष्ठ मानी गई है। **यात्राके लिए शुभ नक्षत्र-**अश्वि.,मृग., पुन, पुष्य,हस्त,अनु,श्रव.धनि.,रेवती, मध्यमनक्षत्र रोहि. ,उ.फा.,उ.षा.,उ.भा.,पू.फा.,पू.षा.,पू.भा.ज्येष्ठा, मूल और शतभिषा। **श्रेष्ठ चौघड़िया-** अमृत, चर, लाभ और शुभ। **होरा** चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र की शुभ होती है।

जन्म राशिसे शुभाशुभ चन्द्र

दूजे, तीजे, पांचवें, सप्तम, दशवें जोई।
एकादश ये शुभ कहे, मध्यम नेष्ट सुनोई।।
षष्ठ जन्म अरु नवम जो मध्यम आनहु मीत।
अष्टम, चौथे, बारहवें सब राशिन को भीत।।
सगुन शुभाशुभ निकट हो, अथवा होवै दूर।
दूरि ते दूरि, निकट ते निकट, समझो फल भरपूर।।

यात्रा के पहले ग्राह्य वस्तुयें-

रविको पान सोम को दर्पण। मंगलको गुड़ करिये अर्पण।।
बुधे धनियां बीफे जीर। शुक्र कहे मोहि दधि की पीर।।
कहै शनीमैं अरदख पावौ। सुख-सम्पत्ति निश्चयघर लावौ।।
वस्तुग्राह्य करि जो जहाँ जावै,सिद्धिकाज करि घर नर आवै।।

प्रश्न प्रकरणम्

मेरा अमुक कार्य कब पूरा होगा? मेरी पुत्री अथवा पुत्रका विवाह कब तक हो जायेगा? मेरे पास धन क्यों नहीं रुकता? मैं कौन सा काम करूँ जिसमें सफलता मिले? मेरा परीक्षा परिणाम कैसा निकलेगा? ऐसे अनेक प्रश्न प्रतिदिन ज्योतिषियोंसे होते रहते हैं। अपने-अपने अर्जित ज्ञानानुसार ज्योतिर्विद् उत्तर देकर प्रश्न कर्ताओं को सन्तुष्ट भी करते रहते हैं। इस प्रकरणमें हम निजी अनुभव सिद्धि प्रश्नोत्तर शैली लिखनेके साथ-साथ पूर्वाचार्योंके विचार भी लिखेगें, जिससे पाठक लाभ उठा सकें।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम्।।

ज्योतिषज्ञान इस लोकमें सबसे उत्तम है, जिसके द्वारा शुभ-अशुभ भूत-भविष्य-वर्त्तमान का ज्ञान तो होता ही है, यह आत्मकल्याणकारी भी माना गया है। कालका यथार्थ ज्ञान भी ज्योतिषके द्वारा ही होता है-जोकि सबका कर्त्ता, संहर्त्ता और पालनकर्त्ता है। काल अन्तरात्मा सर्वदर्शी शुभाशुभ फलका सूचक है, जिसे व्यवहार, स्पर्श, चेष्टादि के द्वारा तत्वदर्शी प्रश्नोत्तर समयमें जाननेकी चेष्टा करें, ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

कालोऽन्तरात्मा सर्वदा सर्वदर्शी शुभाशुभः फलसूचकैः सविशेषेण। प्राणीनांपराङ्गेस्पर्शव्यवहारेङ्गितचेष्टादिभिर्निमित्तैः फलमभिदर्शयति।।

उपहासमें कभी किसीसे प्रश्न नहीं करना चाहिए। प्रश्नोत्तरचक्र **'श्रीरामशलाका प्रश्नावली'** हो या **केरलप्रश्नोत्तरमाला** या अन्य कोई भी किसी विद्वान् द्वारा निर्मित प्रश्नफलबोधक कोष्टक हो अपनी-अपनी जगह सभी मान्य होते हैं। श्रद्धाभावानुसार फल भी देते है। उत्तर देनेसे पहले प्रश्नकर्त्ताके हावभाव, चेष्टा, दृष्टि आदि का विचार कर लेना चाहिए। श्रद्धाविहीन प्रश्नका उत्तर ठीक नहीं बैठता। अतः उलटे उपहासका पात्र बनना पड़ता है।

'चन्द्रमामनसोजातः' वेद में चन्द्रमाको मन कहा गया है। अतः प्रश्न कुण्डलीमें चन्द्रमा जिस भाव तथा जिस लग्न, राशिमें एवं जैसी अवस्थामें होगा तदनुसार प्रश्नकर्त्ता प्रश्न करेगा।

चन्द्र की बारह अवस्थाएँ

१.प्रवास, २.नाश, ३.मरण, ४.जय, ५.हास्य, ६.रति, ७.क्रीड़ा, ८.सुप्त, ९.भुक्त, १०.ज्वर, ११.कम्प और १२.स्थिर ये बारह अवस्थाएं चन्द्रमा की बताई गई हैं। अर्थात् मेषमें प्रवेश करने पर शशि जितने समयमें राशिका बारहवांभाग २ अंश ३० कला का भोग करेगा तब तक उसकी प्रवास अवस्था रहेगी, आगे ५ अंश भोग्यकाल तक नाश अवस्था, आगे ७ अंश ३० कला तक मरण, आगे १० अंश तक जय इसी प्रकार आगे जानें।

गणनाक्रम-मेषमें पहले प्रवास अवस्था, वृषमें पहले नाश, मिथुनमें मरण, कर्क में जय, सिंह में हास्य, कन्यामें रति, तुलामें क्रीड़ा, वृश्चिकमें सुप्त, धनुमें भुक्त, मकरमें ज्वर, कुम्भमें कम्प और मीन राशिमें प्रथम अवस्था स्थिर होती है। एक राशिमें गतिशील चन्द्र संचारके समयको समान बारह भाग करने पर स्पष्ट एक अवस्था का समय निकल आता है।

फल-यदि कोई मेषलग्नमें प्रश्न करता है। चन्द्रमाभी तत्काल मेष में है और यदि अवस्थाभी प्रवास हो तो चिन्ता अपने घनिष्ट संबंधीकी जानें (जो दूर देश या परदेश में रह रहा है) लग्नके चन्द्रकी दृष्टि सप्तम पर होगी (वह भाव दाम्पत्यजीवन से सम्बन्धित है) इसमें विहित मिलता जुलताही प्रश्न होगा। चन्द्रमा यदि नाश या मरणावस्था में हो तो प्रश्नकर्त्ता प्रश्न दुःख-सुखके विषयमें करेगा।

मेषादिलग्नोपरि प्रश्नफलचक्रम्

	मनश्चिन्ता प्रश्न	रोगिणां प्रश्न	संज्ञाएँ
मेष	मानवीय जीव चिन्ता	देवी या कुल देव दोष	धातु-चर
वृष	गाय भैंस आदि पशु	पितृ अतृप्ति दोष	मूल-स्थिर
मिथुन	गर्भ विषये चिन्ता	शंकिनी डंकिनी दोष	जीव-द्विस्वभाव
कर्क	व्यवसाय नौकरी चिन्ता	भूत-पिशाचादि दोष	धातु-चर
सिंह	जीव मात्र की चिन्ता	स्वकुलीय मात्र दोष	मूल-स्थिर
कन्या	दाम्पत्य सुख-दुःख "	अपने देवता का दोष	जीव-द्विस्वभाव
तुला	गुप्त धन चिन्ता	कुपित चण्डिका दोष	धातु-चर
वृश्चि.	सांसारिक व्याधि "	मृत्वत्सा नारी दोष	मूल-स्थिर
धनु	आगम धनप्राप्ति "	यक्षिणी-पिशाचिनीदोष	जीव-द्विस्वभाव
मकर	शत्रु जय-पराजय "	स्थान एवं ग्राम दोष	धातु-चर
कुम्भ	अपनी जायदाद "	अपुत्र स्त्री कुदृष्टि दोष	मूल-स्थिर
मीन	देव,भूतपिशाचादि "	कुपित वायु ग्रहरश्मिदोष	जीव-द्विस्वभाव

अन्धसंज्ञकनक्षत्र- रोहि.,पुष्य,उफा,विशा.,पूषा,धनि और रेवती हैं। इनमें यदि कोई वस्तु गुम हो जाय या किसीको दे दी जाय तो वह शीघ्र मिल जाती है। पूर्व दिशा में जाती है।

कमदृष्टिसंज्ञकनक्षत्र-अश्वि.,मृग.,श्लेषा,हस्त,अनु.,उषा और शत है इनमें खोनेवाली वस्तु दक्षिणमें जातीहै बहुतयत्न करनेपर मिलती है।

मध्यसंज्ञकनक्षत्र-भर.,आर्द्रा,मघा,चित्रा,ज्ये.,अभि.और पूभा.है,इनमें चोरी गई वस्तु पश्चिममें जाती है।कुछ दिनमें केवल सूचना मिलती है।

सुलोचनसंज्ञकनक्षत्र-कृति,पुन.,पूफा.,स्वाती,मूल,श्रव.और उभा है। इनमें गुमहोने वाली वस्तु उत्तरमेंजातीहै न प्राप्त होती है न खबर मिलती है।

वारोंकीमान्य दिशाएँ- रविवारकी पूर्व, चन्द्र की वायव्य,मंगल की दक्षिण, बुध की उत्तर,गुरू की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम होती है। किस नक्षत्रका किस वार से सम्बन्ध कैसा बना है सो विचार कर उत्तर देना चाहिए।

कोई घर से चला गया है? इस प्रश्नोत्तरके समय नक्षत्र,वार,चौघड़िया और तत्कालीन लग्न संशोधन से जाना जा सकता है,कि वह कहां किस परिस्थितिमें है। मिलेगा या नहीं, नहीं तो उत्तर विवेकपूर्ण ढंग से दें,जिससे पूछने वालेको बुरा भी न लगे और बात भी पूरी हो।

गर्भसम्बन्धी प्रश्न- कुण्डलीके तृतीय,सप्तम,नवम,पंचम स्थानमें रवि भौम या गुरु पुरुष ग्रह स्थिति हो तो पुत्र और यदि उक्त स्थानोंमें अन्य ग्रह पड़ें हों तो कन्या जन्म कहना चाहिए।

नष्टवस्तु प्रश्न- प्रश्नकालीन तिथि,वार,नक्षत्र और लग्नांक में तीन मिलाकर ५ का भाग दें, शेष १ बचे तो पृथ्वीमें, २ बचे तो जलमें परन्तु मिले नहीं। ३शेषमें ऊँची जगह पर, ४शेष में वस्तुको राज्यखजानेमें जानें और ० शेष में गई हुई वस्तु हवामें नष्टप्रायः जानें फल शोक सन्ताप कहें।

कार्य पूरा होगा या नही?- प्रश्नदिन, वार, तिथि, नक्षत्र और प्रहर संख्या मिलाकर ३ से भाग करें। यदि शेष १ बचे तो प्रश्न सत्वगुण सम्पन्न जाने, **फल** कार्य शीघ्र सिद्ध होगा। २ शेष में प्रश्न रजतत्व प्रधान हुआ **फल**-कार्यमें विलंब होगा और यदि ० बचे तो तमप्रधान प्रश्न का **फल**-निष्फल जानना चाहिए।

पथिकागमन प्रश्न- तिथि,वार,नक्षत्र और प्रहर संयुक्त संख्यांक को ७ से भाग देकर फल विचार करें। दूसरी विधि-कृतिका से प्रश्न दिन नक्षत्र तक गिने ७ से भाग करें, १ शेष से स्थान में जानें, २ से मार्ग में, ३ अर्धमार्ग में, ४ से ग्राम में, ५ से आ रहा था लौट गया, ६ से रोगी है और यदि ० शेष बचे तो फल महाअशुभ जानें।

कार्यसिद्ध होगा या नही?- प्रश्नकर्त्ताकी सम्मुख दिशा, प्रहर, वार और नक्षत्र संख्यांक जोड़ में ८ का भाग दें। १।५ शेषमें शीघ्र कार्य सिद्ध होगा, ६।४ बचने पर तीन दिनमें, ३।७ में विलम्ब से काम बनेगा। २।० शेषमें कार्यपूर्तिमें सन्देह है, परेशानी हो सकती है।

अंक प्रश्न- परमात्माके एक सौ आठ नामांकोंमें से किसी एक का नाम कहलवायें अर्थात् १०८ संख्यांक में से कोई भी संख्या प्रश्न पूछने वाला कहे उसको १२ से भाग करें। १।७।९ बचे तो काम पूरा होने में देर लगेगी, ३।० बचने पर काम शीघ्र पूरा होगा, २।६।११ से सिद्धि मिलेगी, ४,५,८,१० बचनेसे कार्य हानि सम्भ्व है।

पशु खोये जानेका प्रश्न- सूर्याश्रित नक्षत्र से पशु (सफेद या लाल) खोये गये दिन नक्षत्र तक गिनें। ९ नक्षत्र संख्या तक पशुको जंगलमें भ्रमता जानें,१५तक निजस्थानके समीप,२२ तक शीघ्र मिलेगा,२४ तक मिलनेकी आशा नहीं और यदि आगे संख्या हो तो नष्टप्राय जानें खबर नहीं मिलेगी। काले पशु,भैंस,बकरी,कुत्तादि खो गया हो तो शनि जिस नक्षत्र पर चल रहा हो उससे गिनती करके फल ऊपर कहे अनुसार जानें।

पथिकागमन विचार- प्रश्नाक्षरोंको द्विगुणित कर १३ जोड़ दें और ८ का भाग दें। जो शेष बचे उसका फल इस प्रकार बतायें- १.आने की सोच रहा है। २.चल पड़ा है। ३.रास्तेमें है। ४.शीघ्र आ जायेगा। ५.ठहर के आयेगा। ६.अस्वस्थ है। ७.नहीं आएगा। मृत्यु या कष्ट में है ऐसा कहें।

देशान्तरसे सूचना मिलेगी या नही?- प्रश्नलग्न चर राशिका हो और उससे द्वितीय तृतीय स्थान शुभ ग्रह युक्त अथवा दृष्ट हों तो पत्र जल्दी आयेगा,मार्ग में है। स्थिर लग्न में विलम्ब से मिलेगा। प्रश्न लग्नमें चन्द्र हो व शुभग्रह देखें तो पत्रआयेगा। द्विस्वभावलग्न हो तो उत्तरनहीं मिलेगा।

पुत्र लाभ होगा या नही?- प्रश्नकालीन तिथिसंख्याको ४ से गुणाकर, १ जोड़ना तदन्तर वार तथा योगकी संख्या युक्त करके २ से भाग देना, जो लब्धि आये उसको ३से गुणाकरके ४ से भाग देना। जो १ शेष बचे तो विलम्ब से पुत्र सन्तान होगी। चिरंजीविताके लिये पार्थिव शिवपूजन करना चाहिए। शेष २ बचे तो पूर्व जन्मके पापके कारण सन्तान सुख न होगा, गया यात्रा तथा हरिवंशपुराणका नवाह्न सुनने तथा सन्तान गोपालके सवालक्ष जपसे सम्भव है, ईश्वर कृपा करें। ३ शेष रहे तो पुत्र लाभ होगा, किसी गरीबकी कन्याका विवाह कर दें, या उसके विवाह में गुप्तदान से मदद करें। ऐसा करनेसे पुत्रका पूर्णसुख होगा। ०शेषमें सन्तान शीघ्र होगी।

टिप्पणी- दिनमान को ४ से भाग करने पर एक प्रहरका मान होता है। वार की गिनती रवि से होती है। तिथि की गिनती शुक्ल प्रतिपदा से, नक्षत्रकी अश्विनी से और दिशाओंकी गिनती पूर्वको एक मानकर की जाती है।

विवाह होगा या नही?- प्रश्नकालीन कुण्डली में २।३।६।७।९।०।११वें भाव में पड़े चन्द्रमाको बृहस्पति देखे तो विवाह हो जायेगा। १।३।५।६।७।११वें भावस्थिति चन्द्रमापर सूर्य, बुध, गुरु, का प्रभाव हो अथवा व्ययेश सप्तम में और सप्तमेश लग्नमें या २।४।७ इन राशियोंमें से किसी एक राशि में चन्द्र या शुक्र हो तो विवाह अवश्य हो जायेगा। चन्द्रमाके साथ पापीग्रह होने पर कठिनाई होती है।

विवाह कितनी उम्र में होगा?- जन्मकुण्डली में सप्तमेश सूर्य हो तो २६, चन्द्र हो तो २२, मंगल हो तो १८, बुध हो तो १५ गुरु हो तो २४, शुक्र हो तो २०, शनि हों तो २८वें वर्ष में विवाह होगा। सप्तमेश पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो अवधि कम तथा अशुभ ग्रह संयोगात और भी विलम्ब होता है। गोचरमें शुभ गुरु या शुक्र ५।७।९।१०।११ भावमें आते है तब विवाहका संयोग बनता है।

विवाह किस दिशामें होगा?- इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले कुण्डलीमें सप्तमेशका ध्यान कीजिये। सप्तमेशसे सप्तम भावेश और सप्तमेशकी दिशामें विवाह होता है।

दाम्पत्यजीवन कैसा बनेगा?- कुण्डलीके चतुर्थ और सप्तम घर में शुभ ग्रह हो या इन स्थानोंके भावेश शुभ हो तो घर गृहस्थीका पूर्णसुख मिलता है। सप्तमेश सूर्य भौम गुरु शुक्र होने से कन्याका पति सर्विस वाला होता है। बुध चन्द्रसे शान्त स्वभाव निजी व्यवसायरत। मंगलसे उच्चपदासीन क्रोधी। शनि हो तो जिद्दी स्वभाव सांवला कदलम्बा दुबला पतला होता है।

फल परिणाम प्रश्नोत्तर- प्रश्नकर्त्ता इच्छित फल फूल लेकर ज्योतिषी के पास आये तदनुसार ज्योतिषी फल कथन कर। फल-फूल नाम और प्रश्नकर्त्ता नामाक्षर जोड़कर ९ का भाग दें, जो शेष वचे उसका फल कहे। यदि १।३।५।७।० शेष रहे तो तत्काल कार्यसिद्ध होगा। २।४ से विलम्ब से काम बनेगा और यदि ६।८ बचे तो कार्य हानि, दुःख-शोकादि, परेशानी जानें।

प्रश्नकर्त्ता- द्वारा लाये गये फल फूल संख्यांक तुल्य दिन वर्ष मासमें फलका परिपक्व होता है। फलोंका रंग रूप आकृति देखकर सहजही सुख दुःख का अहसास किया जा सकता है, लाये हुये फल रस युक्त है या शुष्क यह भी ध्यान देने योग्य है।

जय-पराजय प्रश्न- यदि तीसरे भावसे लेकर आठवेंभावतक शुभग्रह अधिक बलवान हों तो प्रतिवादी (मुद्दालह) जीतेगा। यदि नवम भाव से दूसरे भाव तक शुभ ग्रह अधिक बलवान हो तो मुद्दई जीतेगा और यदि पापग्रह लग्नमें बैठा हो तो प्रश्नकर्त्ता जीतेगा,परन्तु वहां पापग्रह नीच राशिमें हो या अस्त हो या शत्रु राशिके घर में हो तो हार जायेगा।

❀ मुकद्दमा सम्बन्धी प्रश्नोत्तर ❀

वादी उसको जानिए केस चलावै जोइ।
जाके ऊपर केस है, प्रतिवादी है सोइ॥
प्रतिवादी है सोई प्रश्न कोई पूछन आवै।
उसी वक्त का लग्न पूरि परिणाम बतावै॥
द्विज पूरन समझाय लग्न को मानो वादी।
दसवां न्यायाधीश, सातवां घर प्रतिवादी॥१

शुभ राशिमें लग्नहो, शुभग्रह देखत होय।
पापी क्रूर सप्तम परै, वादी विजयी होय॥
वादी विजयी होय, यदि घर सप्तम शुभ हो।
लग्न पाप युत परै, जीत प्रतिवादी की हो॥
भाषत पूरनचन्द लग्न-सातवें दोऊ पापी।
द्वन्द्व बढ़ै बहु काल होएगी आपा धापी॥२

एक, सात, छः भाव के, स्वामी होवें मित्र।
सन्धी जरुर होएगी, ईश्वर गती विचित्र॥
ईश्वरगती विचित्र, बली दशमेश शनीचर।
रिश्वत लेकर न्यायं करैगो, जज्ज फटीचर॥
भाषत पूरनचन्द, कर्मक्षेत्र में दिनकर आवै।
जुर्माना करै अवश्य, साथ में सजा सुनावै॥३

❀ चोरी से सम्बन्धित प्रश्नोत्तर ❀

चोरीमें गये मालकी दिशा प्रश्न लग्नेश ग्रहकी दिशा समझनी चाहिए। यदि केन्द्र में दो या दो अधिक ग्रह हों तो सबसे बली ग्रह की दिशामें धन गया जानना चाहिए। सप्तमेश व चन्द्रमा सूर्य के साथ हों तो चोरीमें गया सामान मिलता नहीं। प्रश्नलग्न से ३।५।७।११वें स्थान शुभग्रह हो तो धन मिल जाता है।

प्रश्नलग्न प्रथम द्रेष्काणमें हो तो चोरी गया सामान चोर ने द्वार के पास रखा है। द्वितीय द्रेष्काण में घर के मध्य तथा तृतीय द्रेष्काण में सामान पीछे के भाग में रखा है, ऐसा जानना चाहिए।

❀ लग्नगत गये मालकी दिशा आदि ज्ञानार्थचक्रम् ❀

प्रश्न लग्न	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
गये मालकीदिशा	पू.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	प.	प.	वा.	उ.	उ.	ई.
चोर का वर्ण	उग्र	क्षत्रिय	वैश्य	अन्त्य.	अन्त्य.	स्त्री.	पुल्लिंग.	नौकर	स्त्रीमा.	वैश्य	अनुभि	स्वयं
माल कहां रखाहै?	जमीन	पृथ्वीस्थ	महल	जलमें	जंगल	ओछे.	निर्जन	गुप्त.	अलग	जलमें	घरमें	भूमिगत
नामाक्षर	मअउइ	मकार	ककार	तकार	नकार	मकार	मकार	सकार	सकार	सकार	नकार	वकार

❀ रोगोत्पत्तौ कुयोगाः ❀

जन्मलग्नज्ञानम्- प्रश्नकालिक लग्नस्थ द्रेष्काण से सूर्य जितनी संख्याके द्रेष्काणमें हो उतनी ही संख्यामें सूर्य से जो राशिहो उसी को जन्मलग्न समझना चाहिए।

द्वितीय प्रकार- प्रश्नकर्ता खड़ा होकर जिस लग्नमें प्रश्न करे, वही उसकी जन्म लग्न होती है। इसी प्रकार लेटा हुआ प्रश्न करे तो तत् कालीन लग्नसे चौथीलग्न जन्मलग्न होती है। यदि बैठा हुआ प्रश्न करे तो प्रश्नलग्नसे सप्तम राशि जन्मलग्न होती है, और यदि यकायक उठकर प्रश्न करने लग जाय तो प्रश्नकालीन से दसवीं राशि ही जन्मकी लग्न होती है।

तृतीय प्रकार- यदि प्रश्नकालिक लग्नमें ग्रह हो तो राश्यादि स्पष्ट ग्रह की कला बनाकर, यदि प्रश्नलग्नमें कई ग्रह हों तो उनमें जो सब से बली हो उसकी कला बनाकर, प्रश्नस्थानकी पलभासे गुणा करके बारह से भाग करने पर जो शेष हो वही जन्मलग्न प्रश्नकर्त्ताकी होती है। ऐसा निःशङ्क कहना चाहिए।

जन्मनक्षत्र ज्ञानम्- प्रश्नकर्त्ताके जन्मनामकी मात्राओंको २ से गुणा करके उनमें जन्मस्थानीय पलभा जोड़कर २७ से भाग करने पर जो शेष बचे वह धनिष्ठादि गिनती करके जन्मनक्षत्र जानें। जन्मनाम के आद्य अक्षरानुसार नक्षत्र होता है।

यन्त्र

४	३	८
९	५	१
२	७	६

अभीष्ट स्मरण करके यन्त्र के किसी एक कोष्टक पर अनामिका अंगुली रखें। तत्तुल्य अंक में १३ जोड़कर ९ का भाग दें। शेष एक बचे तो धनवृद्धि, २ से धनहानि, ३ से आरोग्यता, ४ से आदिव्याधि, ५ से दाम्पत्यलाभ, ६ से बन्धुकष्ट, ७ से कार्यसिद्धि, ८ से जीवहानि और ०शेष बचे तो राज्य-समाज से लाभ होता है।

कालस्यमुखदंष्ट्रा ज्ञानम्- रोगदिन नक्षत्रसे रोगीके नामनक्षत्र तक गिनने पर ५।१४।२३ संख्या हो तो कालका मुख होता है। इसी प्रकार ९।१०।१८।१९वां नक्षत्र दंष्ट्रा(दादड़ा) होती है। कालमुख या दाढ़में जिसदिन गोचरमें नक्षत्र प्राप्त हो उसदिन अत्यन्त रोगग्रस्त व्यक्तिकी मृत्युतुल्य हालत होती है। रोगोत्पत्ति,सर्पादि दर्शन, गिद्धादिके स्पर्श, विग्रह तथा युद्धमें जाते समय मुखदंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो महाअशुभ होता है।

कालांगचक्र शुभाशुभ फलम्- व्यक्ति विशेष अंगादि में पीड़ा,कष्ट, घाव,फोड़ा,केन्सर आदि चर्मविकार हो तो तत्काल प्रश्नकुण्डलीमें कालांग चक्रानुसार उस पीड़ित भाव को देखें। अतः उसभावमें अशुभ ग्रह हो या वहभाव पापदृष्ट हो, उसमें नीच ग्रह शुभ प्रभाव रहित हो तो उसमें अधिक कष्ट सम्भव है। शान्ति-हेतु उस ग्रह से सम्बन्धित विवरण शान्ति प्रकारण में देखें।

❀ कालपुरुष के अंगों में राशियों का स्थान ❀

भाव	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अंग	शिर	मुख	भुजाएँ	हृदय	उदर	कटिभाग	मूत्राशय वस्ति	गुप्तांग	जंघाएँ	घुटने	पिंडलियाँ	अंगुलियाँ पाद

नोट- कुछ दैवज्ञ भावोंके स्थान पर मेषादि द्वादश राशियोंकी कल्पना करके इसी प्रकार विचार करते हैं।

❀ रोग त्रिनाड़ी चक्रम् ❀

आर्द्रा.	पूफा.	उफा.	अनु.	ज्येष्ठा	धनि.	शत.	भरणी	कृति.	आदि
पुन.	मघा.	हस्त	विशा	मूल.	श्रव.	पूभा.	अश्वि.	रोहि.	मध्य
पुष्य.	अश्ले.	चित्रा	स्वा.	पूषा.	उषा.	उभा.	रेव.	मृग.	अन्त्य

सूर्यनक्षत्र, दिननक्षत्र और जन्मनक्षत्र या नामनक्षत्र रोग त्रिनाड़ी चक्रमें एक नाड़ीपर हों तो रोगीकी मृत्यु होती है। प्रतिदिन देखनेसे जिसदिन यह त्रियोग मिले, उसदिन रोगीकी मृत्यु या विशेष कष्ट जानें। यह रोग त्रिनाड़ीचक्र यात्रा तथा युद्धके समयभी वर्जित है।

तिथि कष्टावली चक्रम्

ति.	तिथीशाः	कष्ट दिन	बलि-वस्तु	दान-वस्तु
१	अग्नि	१२	शर्कराज्य बलि	घृत अन्न दान
२	ब्रह्मा	५	पायस बलि	भोजन दान
३	गौरी	७	घृतान्न बलि	रक्तवस्त्र दान
४	गणेश	१६	मोदकान्न बलि	मूंगा दान
५	सर्प	२१	पायस बलि	दुग्ध दान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्न बलि	चित्रवस्त्र दान
७	सूर्य	८	पायस बलि	ताम्रपत्र दान
८	शिव	१३	नानाभक्ष्य बलि	पीतवस्त्र दान
९	दुर्गा	१८	मिष्ठान्न बलि	रक्तवस्त्र दान
१०	यम	२५	कृशरान्न बलि	नीलवस्त्र दान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्न बलि	पीतवस्त्र दान
१२	विष्णु	७	मोदकान्न बलि	श्वेतवस्त्र दान
१३	काम	१०	दधिशर्करा बलि	सुवर्ण दान
१४	महादेव	६०	मिष्ठान्न बलि	क्षीरशाक विजिया
१५	चन्द्र	३	दध्यादिन बलि	रौप्य (चांदी)दान
३०	पितर	१८	पकान्न बलि	उत्तमान्न भोजन

❀ रोगोत्पत्ती कुयोगाः ❀

रोगके शुरू होने वाले दिनमें रोगीकी राशि, जन्मनक्षत्र एवं जन्म लग्न से चौथे, आठवें चन्द्रमा या लग्नेश आदि अन्य ग्रह पड़े हों, अथवा यमघण्ट,यमदंष्ट्रा,मृत्युदादि कुयोग हो तो रोगका निदान कठिन होता। यद्यपि प्रतिवर्ष निकृष्ट योगोंका उल्लेख हम अपने पंचांगमें कर देते हैं। फिरभी पाठकोंकी सुविधा हेतु वार, नक्षत्रादिसे बनने वाले कुयोगोंके विषयमें लिख रहे हैं।

रविवारको भरणी, मघा, अनु., धनि. नक्षत्र, द्वादशी तिथि हो।
सोममें आर्द्रा,विशा,मूल,उषा नक्षत्र एवं भद्रा२।७।१२ तिथियां हों।
मंगलको भर.,कृति.,मघा व शत. नक्षत्र नन्दा तिथियां १।६।११ हों।
बुधवारमें अश्वि.,पुन.,चित्रा,विशा.,मूल,पूषा.नक्षत्र जया ३।८।१३ तिथियाँ हों।
गुरुवारको मृग.,मघा,ज्येष्ठा,उषा.नक्षत्र रिक्ता ४।९।१४तिथियां हों।
शुक्रवारमें रोहि,श्लेषा,श्रव.,धनि नक्षत्र भद्रा २।७।१२ तिथियां हों।
शनिको हस्त,श्रव.,शत.,पूभा नक्षत्र पूर्णा५।१०।१५।३०तिथियां हों।
सूर्य मंगल शनिवार में ६।९।१२।१४।३० तिथि,भर.,कृति., आर्द्रा, आश्ले. तीनोंपूर्वा विशा.,ज्येष्ठा,धनि.,शत. नक्षत्र हो तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है। यह रोगोत्पत्ति दिनका विचार है।

परन्तु जन्मपत्र में मारकेशका भी विचार कर लेना चाहिये क्योंकि बिना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं, हां ऐसे कुयोगोंमें कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। बताये गये कुयोगोंमें से किसी भी कुयोगमें रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा महामृत्युञ्जय जप करना कल्याणकारी है।

वारकष्टावली चक्रम्

वार	वारेश	कष्ट दिन	बलि एवं दानादि
रवि	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चन्द्र	गौरी	८	नानाभक्ष्य बलि चन्द्रदान
मंगल	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बुध	विष्णु	७	मृद्गान्नबलि बुधदान
बृहस्पति	ब्रह्मा	५	घृतपक्वान्नबलि गुरुदान
शुक्र	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधु बलि शुक्रदान
शनि	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

❀ तेजी-मन्दी परिज्ञानम् ❀

श्रीब्रजभूमिपंचांगके पक्षोंमें गोवर्धन पद्धत्यानुसार मास,तिथि,वार,नक्षत्र, योग और मेषादि संक्रान्तियोंके ध्रुवाङ्क जोड़कर लिख दिये जाते हैं। जिन्हें तेजी-मन्दी सूचकांक कहते है। बीचके कालम में वस्तु ध्रुवाङ्क(सूचकांक) लिखे है। जिस मासमें जिस वस्तुकी तेजी-मन्दी ज्ञात करनी हो उसी मास के तेजी-मन्दी सूचकांकोंमें वस्तु ध्रुवांक जोड़कर तीन से भाग देने पर एक बचे तो मन्दीहो, २ बचे तो भाव समान रहें और यदि ० शेष बचे तो वह वस्तु तेज होगी,ऐसा जानें।

भाव कितने बढ़ेंगे या घटेंगे ?

चन्द्रदर्शन एवं सूर्य संक्रान्ति के मुहूर्त्तों का चालू मार्किट के रुख पर बहुत ही प्रभाव पड़ता है। इसलिए चन्द्रमा एवं संक्रान्ति का मुहूर्त्त कितना है। यह प्रत्येक पक्ष में लिखा रहता है। सामान्यतः संक्रान्ति व चन्द्रदर्शन मुहूर्त्त, १५ तेजी के, ३० समभाव के और ४५ मन्दी के सूचक होते हैं।

नक्षत्र ग्रह वेध, नक्षत्र दृष्टि तथा ग्रहोंका नक्षत्र व राशिचार, उदयास्त तथा वक्री-मार्गी होनेका बहुतभारी प्रभाव चालूमार्किट पर पड़ता है। सस्यजातकमें अर्घ से सम्बन्धित अनेक योगोंका वर्णन मिलता है। पंचांगके पाक्षिक फलमें अनेक विषयोंका खुलासा हम करते रहते हैं। अन्तरिक्षमें बननेवाले शुभाशुभ योगोंको ध्यानमें रखते हुए फलका निश्चय करना चाहिए। ज्योतिषशास्त्र अथाह सागर है अतः किसीभी नियमको **'इदमित्थं'** नहीं कहा जा सकता।

संक्रान्तिकालीन कुण्डलीमें सूर्य शुभ ग्रहोंसे युत या दृष्ट हो तो सूर्याश्रित राशिके प्रभावान्तर्गत आने वाली वस्तुओंका बाजार भाव बढ़ जाताहै। अशुभ ग्रहोंसे दृष्ट या युत होने पर भाव घट जाते हैं।

अमावस्या अथवा पूर्णिमाको चन्द्रमा शुभ ग्रहोंसे युत या दृष्ट हो तो चन्द्राश्रित नक्षत्राधीन वस्तुओंके भाव बढ़ जाते हैं। अशुभ ग्रह युत या दृष्ट होने पर भाव घटा करते है। सूर्य चन्द्र ग्रह संयोगात् के अभावमें मुहूर्त्तदर्शनका प्रभाव परिलक्षित होता है। सूर्य, चन्द्र व बुध से जिस समय जैसे ग्रहका वेध लगेगा। वैसी ही प्रतिक्रिया व्यापार जगत् में होगी। जैसे- सूर्य, चन्द्र, बुध का वेध होने पर सरकार व्यापारका निरीक्षण करने लगती है। छापे पड़ते हैं या आयात निर्यात् सम्बन्धी विचार विमर्श होने लगता है।

❀ वस्तुध्रुवाङ्क(वस्तुनाम) तेजी-मन्दी सूचकांक ❀

अफीम ८८४	अजमोद १७१	आँवला ७७४	अश्व ८७१	अगर १२	इलायची २१
ऊन १५०	ऊँट ४८४	कस्तूरी २८४	कसुंबी ४६२	कपास ३५	करडी १२५
कांगनी २३४	काष्ठ ८१	कांसा १०१	कांगड़ी ८१	कथीर १८२	कटु २२४
काच २८७	कंकुम ९५	कुलथी ३३	कुरी ७७	कलाय २७४	कूट १०५
उड़द १४३	केसर २२७	खजूर १२६	गरी १७६	गुडाल ८२	गेहूँ २८५
कपूर ९२	केराव १०१	खली ६२	गधा २७४	गोंद २३५	ग्वार ९१
कपड़ा ४८	कोदव १०९	खांड २४७	गाय २८३	गुड़ ६६	घृत ४४५
चना २४२	जीरा ७७३	पश्मीना ५२	मसूर २८३	लकड़ी २२४	सार ८७२
चावल ३७२	तम्बाखू २८३	पारा ६२७	मटर ४८	लाख ८८	सुहागा ६७
चांदी १२८	तांबा ८९	पीपल १२८	मिर्च ६३०	लोध ८३०	सुपारी १०८
चिरौंजी ७७८	तिल १८	पीतल १०२	मुरदाशंख ९४	लोहा २७८	सोना ६८
चिरायता २३०	तीसी १०८	वच ७३	मूंग ३५२	लौंग २७	सोड़ा ९१
चीनी १२८	तुवर ५५७	बादाम ७६०	मूंज २१	शाली ३२	हल्दी ५४
चोला ७२	तृण ७३५	दुशाला २८	मूंगफली २१२	सौंचर १२	हरड़ ८४७
चन्दन १२६	तेल ५४७	वहेड़ा ७८४	मैथी ३६	सरसों ८४०	हरताल ७२५
चंदनलाल ११५	दाख ३२०	बकरी ३२१	मोठ ६८२	सन ८८२	हाथी ४८२
जस्ता ७८६	दाना ६२	बाण १२५	मोती ८०	रूपा ८८	हिगलू ८२७
यव ७७२	धनिया ४४२	बाजरा ७१८	राई ४४१	लहशुन १०१	हींग २४
ज्वारी ७७७	नारियल ३०४	रेशम ५०	सज्जी ८८४	बैल १४४	भैंस ६८४
जायफल १३	नील ५३१	रूई १७३	शाक ८८४	किसमिश २४०	सट्टा २०५

❀ शुभाशुभ नक्षत्र ❀

श्रुति गुन कर गुन यु जुग मृग हय रेवती सखाउ।
देहि लेहि धन धरनि धरु गएहुं न जाइहि काउ।।

गो.तुलसीदासजी के मतानुसार **शुभनक्षत्र**-अश्वि.,मृग.,पुन.,पुष्य,हस्त, चित्रा,स्वाती,अनु.,श्रव.,धनि.,शत. और रेवती हैं। जिनमें जमीन जायदाद सम्बन्धी लेनदेन में व्यय होने पर या बहुलाभकारी योजनामें लगाया जाने पर धन जाता हुआ प्रतीत होने पर भी नहीं जायगा, अर्थात् नुकसान नहीं होगा।

ऊ गुन पू गुन वि अज कृ म आ भ आ मू गुनु साथ।
हरो धरो गाड़ो दियो धन फिर चढइ न हाथ।।

अशुभनक्षत्र- भर.,कृति.,रोहि.,आर्द्रा,आश्ले.,मघा,पूफा,उफा,विशा, मूल,पूषा,उषा,पूभा और उभा हैं। इन १४नक्षत्रोंमें हरा हुआ(चोरीगया हुआ) धरोहर रखा हुआ, गाड़ा गया या कारोबारमें लगाया हुआ तथा उधार दिया हुआ धन फिर लौट कर हाथ नहीं लगता।

टिप्पणी- इन नक्षत्रोंके अलावा भद्रा तथा व्यतिपात योगमें जो द्रव्य किसीको दिया जाय, पृथ्वीमें गाड़ा जाए या किसी व्यवहार में लगाया जाए या बैंकमें जमा किया जाए, अथवा चोरी आदिमें चला जाए तो वह फिर प्राप्त नहीं होता। यथा-

तीक्ष्ण मिश्र ध्रुवोग्रैर्यद् द्रव्यं दत्तं निवेशितम्।
प्रयुक्तं च विनिष्टं च विष्ट्या पाते च नाप्यते।।

मुहूर्त चिन्तामणिके इस श्लोकमें केवल एक नक्षत्र ज्येष्ठाके अलावा अन्य सब निषिद्ध नक्षत्र वही है जो गोस्वामीजी ने वताए हैं। मघाके बजाय ज्येष्ठाको अशुभ माना है। अतः मघाको द्रव्य प्रयोगमें न अशुभ न शुभ, बल्कि मध्यम समझना चाहिए और आवश्यकता में तत्परक तिथि,वार शुभ होनेपर ही उसे उपयोगमें लेना चाहिए।

लेनदेन के लिए वर्जित समय- रविवार,मंगलवार,संक्रान्ति दिन वृद्धि-योग और हस्तनक्षत्रमें यदि ऋण लें तो कभी मुक्त न हो। बुधवारको द्रव्य अनावश्यक देना नहीं चाहिए।

श्रीकाशीनाथके मतानुसार क्रय-विक्रय-मुहूर्त्त- पुष्य,श्लेषा,मघा,उफा, हस्त,स्वाती,अनु.,उषा.,श्रवण,पूभा,उभा,रेवती,**ऐधुत्रेधुसत्तिथौ शुभ दिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रय-विक्रय कार्यम्।**यह १२नक्षत्र शुभदिन शुभशकुन मिलनेपर व्यापारसम्बन्धीप्रत्येक कार्यमें सफलता मिलती है।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र- अश्वि.,चित्रा,स्वाती,श्रव.,शत.,रेव. वारोंमें बुध,रवि सर्वश्रेष्ठ माने गये हैं।

वस्तु बेचनेके नक्षत्र- भर.,कृति.,श्लेषा,पूफा,विशा.,पूषा और पूभा, ये ७ नक्षत्र और गुरु, सोमवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

खरीदनेके नक्षत्रोंमें बेचना और बेचनेके नक्षत्र वारादिमें खरीदना सुनिश्चित रुप से घाटेका सौदा जानना चाहिए। जो वस्तु, पशु, धन जिस ग्रहके कारकतत्वमें आता है उसे उससे सम्बन्धित ग्रहके नक्षत्र, वार में युक्तियुक्त विचार कर बेचा या खरीदा जा सकता है।

कौनसी वस्तु किस ग्रहके अधीन है?

सूर्य- माणिक्य,स्वर्ण,पीतल,गुड़,खांड,चना,भूसा,हल्दी,सरसों,मुनक्का, सभी औषधियाँ,शर्बत,लालपीला रंग,रंगीन वस्त्र,सरकारी ऋणपत्र, पशु, वृक्षादि।

चन्द्र- मोती,चन्द्रकान्त(मून स्टोन)कल्चर्ड मोती,चांदी,पारा,दूध,दही,मक्खन,दूध से बने पदार्थ,मछली,सर्वोषधि,फल-फूल,रसदार पदार्थ,सोडा वाटर,बर्फ, शीशा।

मंगल- मूंगा,अकीक सुर्ख, सोना, तांबा, गन्ना, गुड़, मुनक्का, आसवारिष्ट, किसमिश, छुहारा,लौंग,किरना,कैडियम,हिल,गेहूँ,चना,मसूर,मोठ, लालसरसों, सुपारी, हल्दी, धनिया, लालमिर्च, शराब, चाय, काफी,चमड़ा,लाख, लालरंग, बारीक लालऊन, वारदाना, धातुपदार्थ, मशीनरी सामान, विभिन्न शेयर्स।

बुध- पन्ना, जबरजद हरा पत्थर, अकीक, विभिन्न रंगोंका फीरोजा, ज्वार, बाजरा, गेहूँ, जौ, मूंग, मटर, ग्वार, अरहर, काली खेसारी, सौंफ, सर्वरस, सर्वधान्य, हरी उड़द, पीली सरसों, घी, कपास, अलसी(तीसी), एरण्डा(अण्डी), बिनौला(काकड़ा), मूंगफली(सींगदाना), हैसियन, जूट, पाट, सफेद वारदाना, रेशम, टैक्सटाइल, न्यूजप्रिंट कागज, पेपर मिल्स के शेयर्स।

गुरु- पुखराज, सुनैला पत्थर, बुलियान, नमक, जमीन से पैदा होने वाले कन्द, मूल, आलू, प्याज, अदरक आदि सब्जियाँ, नकली सिल्क, पाट(कुष्टा), रबड़, तम्बाकू, बैंक शेयर्स खरड जवाहरात, समुद्री पदार्थ, हाइड्रो खाद।

शुक्र- हीरा,वैकान्त,ओपल,सफेद गेहूँ, चावल,चीनी,अरहर(तुअर),रुई,रेशम, हैसियन,सिल्क,फैन्सीगुड्स,श्रृंगारप्रसाधन की चीजें, अत्तारोंकी दवाएँ, टैक्स टाइल्स शेयर्स, देशी अंग्रेजी दवाएँ।

शनि- नीलम,लाजवर्त,कसौटी,तिलहन, खनिज आदि सर्व तेल, काले तिल, उड़द, तोरिया, कालीमिर्च,कालाऊन,काले रंग,वारदाना,कालीधारी,भैंस, लोहा, वाहन,जस्ता,टीन,रांगा,सीसा,कांसी,संगमरमर,चमड़ा व चमड़े की चीजें,कोलतार, आयल शेयर्स, कोयलाकी खानोंके शेयर्स, कलपुर्जे तथा वाहनादि।

राहु-केतु- वैदूर्यमणि(लहसुनियाँ), दुआ(तारामीरा), संगमूसा, गोमेद, फीरोजा, वायरलैस, टेलीफोन, तार, बिजलीके सामान, एल्युमीनियम आदि मिश्रित धातुएँ दोनों ग्रहोंके अधीन है।

व्यापारिक अमूल्य चुटकुले- यदि कोई वस्तु सामयक भाव को देखते एकदम मन्दी हो जाए तो निश्चय १०० दिनके भीतर उसका भाव बहुत बढ़ जाता है। यदि तेज हो जाए उक्त अवधिमें काफी मन्दीका झटका लगता है।

भावबढ़ने पर विक्रय वाले नक्षत्रोंमें बेचना तथा भाव घटनेपर क्रय वाले नक्षत्रोंमें खरीदना चाहिए।

गुरुवारके बने भाव मामूली हेरफेर से अगले गुरुवारको वही होते हैं। मंगलको तेजी होकर यदि शनिवारको भी तेजी हो तो अगले मंगलवार तक तेजी ही चलती है। यदि शनिवारको मन्दी आ जाए तो तेजीकी लाइन रुकी रहेगी, ऐसा जानें।

किसीभी ग्रह के वक्री, अस्त, युतिकालमें जो भाव किसी वस्तु के बनें, उससे उलटा रुख उक्त ग्रहके मार्गी,उदय या युति छूटनेके बाद प्रायःहो जाता है। संक्रान्तिके पूर्वदिन का भाव संक्रान्तिके दिन मन्दा रहे तो आगे तेजीका रुख एक मास तक चलेगा। यदि तेज रहे तो मास पर्यन्त मन्दा जानें।

ग्रहगति अन्तर अपने अधीन वस्तुओं को बहुत ही प्रभावित करता है। चालूमार्किट रुखको पलट देता है। सर्वतोभद्र चक्रमें जहां जिस स्थानपर ग्रहवेध हो वहां सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

यद्यपि बुधग्रह सबसे छोटा ग्रह है लेकिन व्यापारका कर्ता होने से इसका बहुत तीव्र प्रभाव चालूमार्कीट पर पड़ता है। बुध का सूर्य के साथ युति या प्रतियोग होने पर पृथ्वी पर शासनतन्त्र व्यापार पर नियन्त्रण करने लगता है या सरकार खुदही रेट घटाती-बढ़ाती है। शुभग्रह योग होने पर मंहगाई बढती है तो क्रूर पापग्रह संयोगात् मंहगाई घटती जाती है।

अन्तिम कालम में उल्लिखित मेषादि राश्याधीन वस्तुनाम ग्रह संचार तथा वेधादि के कारण विशेष प्रतिक्रिया हुआ करती है। उत्पात से विनाश होता है भाव बहुत बढ़ जाते हैं।

मण्डलं नगरं ग्रामो दुर्गं देवालयं पुरम्।
क्रूरैरुभयतो विद्धं विनश्यति न संशयः॥

अपनीसामर्थ्य और सम्पत्तिके अनुसारही व्यापार करना चाहिए। ज्योतिषसे लाभ उठाने वालोंको योग्य ज्योतिषी द्वारा अपने शुभाशुभ समयका ज्ञान करवा लेना चाहिए। अशुभ समय (बुरे दिनोंके फेर से) कभी-कभी भारी घाटा लग जाता है। भाग्यका कर्ता समय सर्वोपरि है। कालकी सत्ताको सभी नमन करते हैं। खोटेग्रहों के दुष्प्रभावको विनष्ट करनेमें धर्मसर्वोपरि है।

धर्मेणहन्यते व्याधिं, धर्मेणहन्यते ग्रहाः।
धर्मेणहन्यते शत्रु, यतो धर्मस्ततो जयः॥

राश्याधीन वस्तुएँ, देश तथा स्थान विशेष

मेष- चावल, तृण, सर्वधान्य, तुषधान्य, वस्त्र,घी, मिर्च, युगंधरी, सर्वोषधि। खच्चर, ऊँट। **देश-** इग्लैण्ड, जर्मनी, डेनमार्क, पोलैण्ड, सीरिया।

वृष- सर्वरस, चावल, जौ, सर्वधान्य, सर्वधातु, तिल, ऊनी वस्त्र, रत्न, मणि, हीरा। घोड़े, गाय, भैंस, गर्दभ। **देश-** आयरलैण्ड, फारस, साईप्रस, अर्धभाग रुस और हालैण्ड। दिल्ली, मध्य प्रदेश तथा केन्द्रशासित प्रदेश।

मिथुन- ज्वार, बाजरा, कोंदोधान्य, तुअर, तेल, लवण, सर्वक्षार रस, सुगन्धित द्रव्य, लाख, सोना, रुपा, शेयर्स। **देश-** यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका, (U.S.A.) बेल्जियम, इजिप्ट।

कर्क- गेहूँ आदि धान्य, चावल, गुड़, खांड, चीनी, मजीठ, सेलडी, सुण्ठी, कोंदो, सरसों,सज्जी,तेल,हीग, सौंचरनमक,कपास,रेशमी,वस्त्र,बर्फ, घी, सोना, रुपा **देश-** अफ्रीका, न्यूजीलैण्ड, हालैण्ड, स्काटलैण्ड। राजस्थान।

सिंह- चना, गुड़, मसूर, उड़द, मूंग, तिल, तेल, धृत, प्रवाल, कम्बल, ऊन, अलसी, कांगुनी, रुपा, युगन्धरी। **देश-** फ्रांस, इटली, सिसली, केलिफोर्निया, आल्पस, रोम, वम्बई।

कन्या- चावल, कोंदो, लहसन, सज्जी, चन्दन, कपूर, देवदारु, अगर तगर, कन्दमूल, पन्ना, सोना। **देश-** टर्की, स्विटजरलैण्ड, वेस्टइण्डीज, यूनान, येरुसलम, लासऐंजिल्स, पेरिस, बगदाद पाकिस्तान।

तुला- सुपारी, मिर्च, सरसों, तेल, राई, हीग, खजूर, मूँग, जौ, चावल, गेहूँ, मसूर मोठ। घोड़ा वाहन। **देश-** पश्चिमोत्तरीय भारत, इण्डोचाइना, आस्ट्रिया, तिब्बत,चीन,वर्मा, अर्जेन्टाइना, वियना, लिस्बन और जापान। कश्मीर, राजस्थान।

वृश्चिक- सभी अन्न, चावल, गुड़, हीग, मोठ, गुग्गल, लाख, कपूर, पारा, हिंगुल। **देश-** स्वीडन,ब्राजील, नार्वे, सीरिया, अल्जीरिया, वाशिंगटन, हैलीफेक्स, डोबर, लिवरपूल, न्यूफाउण्डलैण्ड, फ्रेंकफर्ट।

धनु- चावल,घृत, कन्दमूल, तुषधान्य, अनाज, सेंचर, सैंधा नमक, श्वेतवस्तु, रस। सुरमा, कपास, लवण। **देश-** अरब, इजरायल, आस्ट्रेलिया, हंगरी, स्पेन, मैडागास्कर। उत्तरप्रदेश।

मकर- दाख, खजूर, घृत, अखरोट, चिरौंजी, पिप्पली, सुपारी, इलायची, मूंग, जायफल। लोहादिस्याह धातु। **देश-** भारत, सीरिया, अफगानिस्तान, बल्गेरिया, मेक्सिको, लिथुनिया।

कुम्भ- मद्यादि अर्क, नशेडी वस्तुएँ, प्रियंगु, मूल, जवित्री, देवदारु, तेल, सर्वधान्य, सर्वधातु, सर्वोषधि कोंदो। भैंस,वाहन। मणि, मोती, नीलम आदि रत्न। **देश-** अर्धाल्प अरब, रुस, अबीसनिया, स्वीडन।

मीन- गुड़, खांड, शक्कर,चावल,धृत,नारियल,सुपारी,त्वली, किराना। मणि, मोती **देश-** पुर्तगाल,सहारा,रेगिस्तान,अलैक्जेड्रिया,पंजाब,हिमाचल हरियाणा।

वर्षफल बनाने की विधि

वर्ष शुभाशुभ फलित हित, जो सम्वत् आमाब्द।
जन्म का सम्वत् हीन करि, जो बचे वर्ष शेषाब्द।।

वर्षका शुभाशुभ फल जाननेके लिए वर्तमान सम्वत् में से जन्मका सम्वत् घटा दें, जो शेष बचे उन्हें शेषाब्द (गताब्दाः एवं ध्रुवाङ्काः) भी कहते हैं। शेषाब्द संख्यांकतुल्य वर्षप्रवेशसारणीमें जो वारादि अंक मिलें, उन्हें जन्मके वारादि इष्ट घट्यादि में जोड़नेसे वर्षप्रवेशका वारादि इष्टकाल होगा। उसी इष्ट परिमित लग्नवत् क्रिया करने से वर्षलग्न सिद्ध हो जाएगा।

नोट- जन्म वारादि इष्ट घटी-पल और सारणीसे प्राप्त वारादि घटी-पलोंका जोड़ ६० से अधिक हो तो ६० से भागकर शेष ग्रहण करें, और वार के स्थान पर एक बढ़ा दें। वार संख्या ७ से अधिक हो तो ७ से भागकर शेषांकको रविवार से गिनती करें। **ध्यान रहे-** प्रतिवर्ष जन्मकालीन तारीख मासके आसन्नही वर्षेष्ट सिद्ध होता है। **वर्षारम्भ कुण्डलीमें** तत्कालीन गोचरग्रह यथावत् रखे जाते है अर्थात् वर्षप्रवेश समये(पंचांगमें उल्लिखित) जो ग्रह जिस राशिपर चल रहा हो उसे उसी राशिमें रख देते है। वर्षप्रवेश कुण्डलीमें प्रधान ग्रह मुन्था (जीवसाक्षिणी) मानी जाती है।

मुन्था लगानेकी विधि-

जन्म लग्न मे मुन्था, जन्म समय बलवान।
भोग एक राशि वर्ष, कौशिक वचन प्रमान।।

कौशिकजीके वचनानुसार जन्म समयमें मुन्था जन्मलग्नमें स्वस्थबलवन्ती होती है। प्रतिवर्ष प्रति एक राशिका भोग करती हुई पुनः(१३) तेरहवें वर्ष में जन्म लग्नांक राशिमें मुन्था आ जाती है।

वर्षारम्भ कुण्डलीमें मुन्था लगानेकीविधि- गताब्द संख्यामें जन्म लग्नांक जोड़कर १२ का भाग दें; शेषांकतुल्य(राशि) में मुन्था लगा दें।

[illegible] जन्म लग्न से उतनी संख्यांक राशिसे मुन्था होती है। मुन्था प्रतिदिन ४.९३१५ कला चलती है।

वर्षमध्ये मुद्दादशा-ज्ञानायचक्रम्

ग्रहाः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

मुद्दादशा जाननेकी विधि- जन्मनक्षत्र संख्यामें गताब्द संख्या जोड़कर २ घटा दें। ९से भाग करनेपर जो शेष बचे उसी नम्बरकी मुद्दादशा वर्षारम्भ में होती है। यथा १ शेष बचे तो सूर्य की, २ शेष में चन्द्रमा की, ३ में मंगल ४ में राहु, ५ में गुरु, ६ में शनि, ७ में बुध, ८ में केतु और ० शेष रहनेपर शुक्रकी दशा जाननी चाहिए। नक्षत्र गणना अश्विनीको १ मानकर अभिजित रहितकी जाती है। वर्षारम्भे दशा सुनिश्चित समयानुसार भोग करती हुई चक्र (वर्ष) पूरा करती है।

त्रिराशिपति ज्ञानार्थचक्रम्

वर्षलग्नम्	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
दिवा	र.	शु.	श.	शु.	गु.	च.	बु.	म.	श.	म.	गु.	च.
रात्रौ	गु.	चं.	बु.	मं.	र.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

दिनमें वर्षप्रवेश हो तो मेषादि राशियोंके क्रमशः सूर्य, शुक्र, शनि आदि ग्रह त्रिराशिपति होते है और यदि रात्रिमें वर्षप्रवेश हो तो गुरु, चन्द्र, बुधादि ग्रह त्रिराशिपति माने जाते हैं।

स्वोच्चबल- वर्ष कुण्डलीमे सू.१।५ चं.२।४ मं.१।८।१० बु.३।६ गु.४।९।१२ शु.२।७।१२ श.७।१०।११ इन स्थानोंमें होने पर ५ बल देते हैं। **पुरुष-स्त्री बल-** **स्त्रीसंज्ञकग्रह** (चं बु.शु.श) १।२।३।७।८।९ और **पुरुषसंज्ञकग्रह** (सू. मं.गु.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानोंमें बैठने पर ५ बल देते हैं। **दिन-रात्रि बल-** दिनके वर्षेष्ट में **पुरुषग्रह** और रात्रिके इष्टमें **स्त्रीग्रह** ५ बल देते हैं।

अथ वर्षेपाधिकारी

१जन्म लग्नेश, २वर्ष लग्नेश, ३मुन्थेश, ४त्रिराशिपति तथा ५दिनमें वर्षप्रवेश हो तो सूर्याश्रित राशिकास्वामी और यदि रात्रिमें वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्राश्रित राशिकास्वामी इनका बल विचार कर जो सबसे बलीहो और लग्नको देखता हो वह वर्षेश होता है। यदि लग्नको न देखताहो तो वह वर्षेश नहीं होता। यदि दो ग्रह समान बली हों तो लग्नपर जिसकी दृष्टि विशेष हो वही वर्षेश होता है। बल, दृष्टि एवम् अधिकार दो या दो से अधिक ग्रहोंका हो तो मुन्थेश ही वर्षेश होता है।

वर्षकुण्डलीमें स्थित ग्रहदृष्टि ज्ञान और फल- जो ग्रह जिस भावमें पड़ा हो उससे ५।९वें को प्रत्यक्ष मित्रदृष्टि से देखता है। **फल-** कार्यमें शीघ्र सफलता, सुत प्राप्ति, स्नेह वृद्धि, सौख्य-समृद्धि और विरोधियोंसे सौहार्दपूर्ण मैत्री लाभ मिलता है। ३।११वें गुप्त मित्र दृष्टिसे देखता है **फल-** प्रत्यक्षकार्य में सफलता कठिनाई से बने, गुप्त रूप से सफलता मिले। आगम धनप्राप्तिकी रुपरेखा बने। १।७वें प्रत्यक्ष शत्रुभाव पूर्ण दृष्टि होती है। **फल-** अनावश्यक शत्रुता बढे। मित्र विरोधी कार्यवाही करने लगे। धनैश्वर्य अभिवृद्धि। चालू काममें गतिरोध हो जाए आदि खराब फल होते रहते हैं। ४।१० गुप्त शत्रुदृष्टि से ग्रह देखता है **फल-** सोचे हुए कामोंमें कठिनाई से सफलता मिले, ना भी मिले। गुप्त शत्रु नुकसान पहुंचावें। रोगऋणका सन्ताप बढे। परस्पर २।६।८ और १२वें भावमें पड़े ग्रह एक-दूसरे को समदृष्टि से देखते हैं। भाव-भावेशके साथ ग्रह योगायोगका विचार कर फलका निश्चय करना चाहिए।

❀ वेधसिद्ध सूक्ष्मातिसूक्ष्म नवीन मानानुसार वर्ष-प्रवेश सारणी ❀

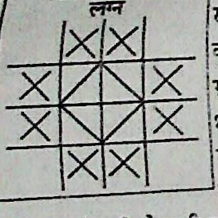
गताब्दा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	०	२३	४६	९	३२
वि.	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०

गताब्दा	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९
पल	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५
वि.	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०

गताब्दा	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३
घटी	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३
पल	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४५	८	३१	५४	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	५	२८	५१	१४	३७
वि.	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०

गताब्दा	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६
घटी	२९	४४	५९	१५	३०	४५	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४८	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२	३८
पल	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२४	४७	१०
वि.	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०	५४	४८	४२	३६	३०	२४	१८	१२	६	०

त्रिपताकी चक्रम्



ग्रहवेधविचार- त्रिपताकी चक्रमध्ये बीच वाली खड़ी रेखाके ऊपरी भागमें वर्ष लग्नाङ्क लिखकर कुण्डलीक्रमसे राशियां लिख दी जातीहैं।

ग्रहलगानेकी विधि- गताब्द वर्ष संख्या में १ जोड़कर ९ का भाग देने से जो शेष बचे जन्मकालीन चन्द्राश्रित राशि अर्थात्(चन्द्रमा जन्म समय जिस राशि पर था) से उतनी संख्यामें जो राशिहो उसी राशिमें चन्द्रमाको लिखें तथा उसी सैक(गताब्द वर्ष संख्या+एक) में ४ का भाग देने से जो शेष बचे "जन्मकालीन **ग्रहाश्रित राशि से"** उतनी संख्यामें जो राशि हो उसमें अन्य सभी ग्रहोंको लिखें। राहु और केतु को उल्टा गिनकर रखा जाता है।

ग्रहोंको लिखें। राहु और केतु को उल्टा गिनकर रखा जाता है।

त्रिपताकीचक्र में सूर्यादि ग्रहोंके न्यास करने पर

ग्रहवेध फल- इस प्रकार त्रिपताकीचक्र में सूर्यादि ग्रहोंके न्यास करने पर जहां चन्द्रमा स्थित हो उस रेखा के दूसरे सिरे पर जो ग्रह बैठा हो उससे चन्द्रमाको विद्ध समझना चाहिए। चन्द्रमा शुभ ग्रहविद्ध या युक्त हो तो वर्षमें शारीरिक सुख मिलेगा। मन प्रफुल्लित रहेगा। सौख्य-समृद्धिका प्रादुर्भाव होगा, ऐसा जानना चाहिए। यदि चन्द्रमा पापग्रह से विद्ध हो तो वर्षमें आधिव्याधि समायुक्तेनमें भौतिक परेशानियां बढ़ सकती हैं।

भौतिक सुख-समृद्धि योग- जिसवर्ष वर्षप्रवेश कुण्डलीमें प्रधानग्रह मुन्था शुभग्रह दृष्ट अथवा युक्त होकर केन्द्र या त्रिकोणमें आ जाए तो उस वर्षमें भौतिक सुख-समृद्धिका प्रादुर्भाव होता है। नित नवीनताका अनुभव होता रहता है।

जमीन-जायदाद प्राप्ति योग- मुन्थाका वर्षेशसे शुभ सम्बन्ध बनने पर जमीन-जायदाद प्राप्ति योग- मुन्थाका वर्षेशसे शुभ सम्बन्ध बनने पर पदोन्नतिका योग बनता है। चतुर्थेश से योग होनेपर जमीन-जायदादका सुख मिलता है। सप्तमेशके योग से दाम्पत्य सुख होता है। इसी प्रकार अन्य सभी भावोंका विचार करना चाहिए।

तवदीलीका योग- वर्षलग्नेश तृतीयेश, चतुर्थेश या नवमेश ६।८।१२ स्थान छोड़कर किसी एक घरमें हों या एक-दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो वर्षमें सुनिश्चित तबदीली होती है। यदिवर्ष लग्नेश वक्री हो, घनिष्ठ मित्र से दृष्ट हो तो भी उक्त फल जानें। अन्य अपनी बुद्धिबल से पहिचानें।

अरिष्ट योग- यदि जन्मलग्न ही वर्षलग्न हो और जन्मनक्षत्रभी वर्ष में वही आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है, वर्षमें गुरु चन्द्र शुभ न हो तो अशुभ, कष्ट, भयप्रद होता है। वर्षमें गुरु चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होते हैं।

मुन्था जिसवर्ष वर्षकुण्डलीके छठे भावमें पड़ती है तो रोग होता है। यदि ८।१२वें भाव में हो तो सामाजिक उपद्रव, मुकद्मादि झंझटों में धनका अपव्यय परेशानियां बढ़ती है। मुन्थाके साथ ग्रह युति या शुभाशुभ दृष्टिबल विचार कर फल का निश्चय करना चाहिए।

जन्मपत्री न हो तो वर्षफल कैसे बनायें?

स्पष्ट प्रश्नलग्नकी राशिको छोड़कर अंशादिकी कला करना, फिर उसमें १५० का भाग देना। लब्ध जो राश्यादि चार फल आवें उसकी राशिके अंक में प्रश्नलग्नकी राशि अंक मिलाना, यह मुन्थाका स्पष्ट लग्न जानना। और प्रश्नलग्नसे चतुर्थ राशिका स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंचाङ्गि कारियोंमें जन्मलग्नपति के स्थानमें प्रश्नलग्न से चतुर्थ राशिका स्वामी जो हो वह लिखना। प्रश्नलग्न पर वर्षफल बनाने में इतना ही विशेष जानना। अन्य सब रीति पूर्ववत्‌ही जानें।

वर्षकुण्डलीमें वर्षेश और भाग्येशके बलवान् होनेपर सभी तरहका लाभ मिलता है। निर्बलतासे हीन फलोंका प्रादुर्भाव होता है। वर्षेश ६।८।१२वें भावगत होने पर दैहिक-दैविक तथा भौतिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। **सूर्यवर्षेश** हो तो वर्ष में यशोपलब्धि राजकीय मान-सम्मान। **चन्द्रवर्षेश** हो तो सांसारिक सुखोपभोग, लम्बीयात्रा एवं पदोन्नति होती है। **मंगल वर्षेश** हो तो विजयोपलब्धि होती है। शरीरमें रक्तविकार होते है। धोखा भी सम्भव है। **बुधवर्षेश** हो तो संगीत कलामें दक्षता, मान-सम्मान, व्यवसाय वृद्धि, जमीन वाहनादि सुख मिलता है। **गुरुवर्षेश** हो तो धनैश्वर्य वृद्धि, सन्तति सुखोपभोग, राजसमाजमें मान-सम्मान मिले। निरोगता बनी रहे। **शुक्रवर्षेश** हो तो विलासिता परिपूर्ण वैभव बढ़े। विजयलाभ हो। **शनिवर्षेश** हो तो भूमि वाहनके उपयोग होते रहें। विचाराधीन उद्योग संचालनमें सफलता भी मिले। पदोन्नति हो। लम्बीयात्राका संयोग बने। यह फल ग्रहोंके पूर्ण हर्षबल प्राप्त होनेके है। निर्बल ग्रहोंका फल प्रतिकूल समझना चाहिए। विस्तृत विवरण ताजिक ग्रन्थोंमें देखें।

नोट :- पंचांगमें लिखित मेषार्क वार, घटी, पलमें इच्छित अब्दके वार, घटी, पल, विपल जोड़ने पर अभीष्ट सम्वत्‌में मेषार्क काल सुनिश्चित हो जाता है। **स्मरणरहे** इस समय ९० प्रतिशत पंचांग नवीन मानानुसार बनाये जाते हैं। वेधसिद्ध शुद्ध वर्षमान प्राचीन सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमानसे ८॥ पल के लगभग कम है।

वेधसिद्ध सूक्ष्मातिसूक्ष्म नवीन मानानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी केतकी ज्योतिर्गणित द्वारा बनाई गई है। ज्योतिर्गणित भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। इसी को देश-विदेशके सभी विद्वान् दैनिक प्रयोगमें लाते हैं। शुद्धमानसे शताब्दि वर्षप्रवेशसारणी छापनेका अच्छा प्रयास है।

❀ प्राचीन (सूर्यसिद्धान्तीय) मानानुसार वर्षप्रवेश सारणी ❀

गताब्दा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्दा	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
वार	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४
घटी	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३
पल	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९
वि.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८
वार	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५
घटी	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९
पल	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६
पल	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३
वार	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्दा	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६
वार	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४
घटी	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९
पल	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४
वि.	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८
वार	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५
घटी	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६
पल	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्दा	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०	१	३	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२
पल	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
वि.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

मेषादि राशियोंके लिये मासदशा देखने की सारिणी

जन्मनिविंशतिःसूर्येतृतीये दशचन्द्रमा। चतुर्थे चाष्टमेभौमःषष्ठे वेद बुधस्तथा।। सप्तमे दश मन्दस्य नवमेष्ट वृहस्पतेः। दशमे विंशतीराहौःशेषा भृगुदशा भवेत्।।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता.१३अप्रैल से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.१४मई से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.३ अप्रैल से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२२मार्च से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२२अप्रैलसे राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२४मार्च से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.१८मार्च से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.१७अप्रैल से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२२मार्च से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२४मार्च से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.२३अप्रैल से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.३अप्रैल से चन्द्र दशा ५० दिन तक
ता.४ मई से चन्द्रदशा ५० दिन तक	ता. ४ जून से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.१५ जून से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.४ मई से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.४जून से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२२मई से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२३अप्रैल से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.२५ मई से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.१८मई से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२१ अप्रैल से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२२ मई से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२५ मई से मंगल दशा २८ दिन तक
ता.२५ जून से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.२७जुलाई से मंगल दशा २८ दिन तक	ता. ६ जुलाई से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.१६जुलाई से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.१६अगस्त से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.६जुलाई से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२४ जून से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२५जुलाई से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२५जून से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.१९ जून से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२०जुलाई से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२४जून से बुध दशा ५६ दिन तक
ता. २५ जुलाई से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२५अगस्त से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२७अगस्त से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.६अगस्त से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.६सितम्बर से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.१७सितम्बर से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.६अगस्त से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.६सितम्बर से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२५अगस्त से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२७जुलाई से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.२७अगस्त से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.२१ अगस्त से शनि दशा ३६ दिन तक
ता.२१सितम्बर से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२१अक्टूबर से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२५ सित. से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२७ सित. से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.२७अक्टू. से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.७अक्टूबर से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.१७अक्टूबर से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.१६नवम्बर से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.७अक्टूबर से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२५सितम्बर से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२५अक्टूबर से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२७सितम्बर से गुरु दशा ५८ दिन तक
ता.२७अक्टू. से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.२६नवम्बर से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.२०नवम्बर से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२५अक्टू. से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२४नवम्बर से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२६नवम्बर से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.६नवम्बर से चन्द्र दशा५० दिन तक	ता.६दिस.से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.१५ दिसम्बर से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.६नवम्बर से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.६दिसम्बर से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२४नवम्बर से राहु दशा ४२ दिन तक
ता.२४ दिस. से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२२जनवरी से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२५दिसम्बर से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.१९दिसम्बर से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.१८जनवरी से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२३दिसम्बर से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२५ दिस. से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.२४जनवरी से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.४जनवरी से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.१४ जनवरी से सूर्य दशा २० दिन तक	ता.१२फरवरी से सूर्य दशा २० दिनतक	ता.१४ जनवरी से शुक्र दशा ७० दिन तक
ता.२फरवरी से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.४ मार्च से शुक्र दशा ७० दिन तक	ता.२०फरवरी से राहु दशा ४२ दिन तक	ता.२४ जनवरी से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.२२ फरवरी से गुरु दशा ५८ दिन तक	ता.१७फरवरी से शनि दशा ३६ दिन तक	ता.२२ जनवरी से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२०फरवरी से बुध दशा ५६ दिन तक	ता.२२फरवरी से मंगल दशा २८ दिन तक	ता.२ फरवरी से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता. ४ मार्च से चन्द्र दशा ५० दिन तक	ता.२४ मार्च से सूर्य दशा २० दिन तक

ग्रहोंसे सम्बन्धित जानकारी- हमारे इस सौर परिवार के मध्यस्थ भुवनभास्कर भगवान् सूर्य के इर्द-गिर्द परिक्रमा करने वाले ग्रहों में सबसे नजदीक बुध ग्रह है, द्वितीय कक्षा में शुक्र, तृतीय में पृथ्वी, चतुर्थ में मंगल, पंचम में बृहस्पति, छठी में शनि, सातवी में हर्शल(यूरेनस), आठवी में नेपच्यून और नवमी कक्षा में प्लूटो(यम) निर्बाध गति से प्रदक्षिणा करता रहता है। पृथ्वी के उपग्रह चन्द्रमा को मिलाकर ११ सदस्यों से शोभायमान आकाश गंगा सहित अनेक तारा समूहों से सुशोभित अन्तरिक्ष बहुत ही सुहावना लगता है।

पृथ्वी से ग्रहोंकी दूरी(कि.मी.)- चन्द्रमा ३८,००,०००; शुक्र ४,१४,००,०००; बुध ९,१७,००,०००; सूर्य १४,९६,००,०००; मंगल ७,८३,००,०००; गुरु ६२,८७,००,०००; शनि १,२७,७४,००,०००; यूरेनस २,७२,०४,००,०००; नेपच्यून ४,४४,४४,००,०००;प्लूटो ५,७५,०४,००,०००।

ग्रहोंकापरिभ्रमणकाल-पृथ्वी२३.५६; चन्द्रमा २७.३२; बुध ५८.६५; शुक्र २४३; मंगल १.०२; गुरु ०.४१; शनि ०.४४, हर्शल ०.६५; नेपच्यून ०.७७; प्लूटो ६.३८।

ग्रहोंका परिक्रमा काल- दिवस दशमलव में पृथ्वी ३६५.२५६३६, चन्द्रमा २७.२५६३०, बुध ८७.९६२६, शुक्र २२४.७००८, मंगल ६८६.९७९८२, गुरु ४३३२.५८८९६, शनि १०७५९.२२६२०, हर्शल ३०६८८.४४१७५, नेपच्यून ६०१८१.२७९१९, प्लूटो ९०७३६.०५६४० है।

ग्रहोंके उपग्रह अर्थात् अब तक (सन् १९९५) प्राप्त जानकारी के अनुसार किस ग्रह के इर्द-गिर्द कितने चन्द्रमा चक्कर लगाते हैं। यथा- पृथ्वी का प्यारा चन्द्रमा १, इसी प्रकार मंगल के २, वृहस्पति के १६, शनि के २०, हर्शल के १५, नेपच्यून के ८ और यम(प्लूटो) का १ चन्द्रमा है। प्लूटो के उपग्रहके विषय में सभी खगोलविद् अभी एकमत नहीं है।

अनन्त ब्रह्माण्डमें व्याप्त तारोंकी दूरी- ज्ञात करने के लिए विद्वानों ने जो विधि निकाली, वह है प्रकाश वर्ष। अर्थात् सब से तेज गति प्रकाश की है। सूर्य की किरणें ८ मिनट में करीब १४,९६,००,००० कि.मी. की दूरी पार करके पृथ्वी तक पहुँच जाती हैं। इसीलिए कहा जाता है कि पृथ्वी और सूर्य के मध्य की दूरी ८ प्रकाश मिनट है। प्रति एक वर्ष में प्रकाश करीब ९४,६३,००,००,००० कि.मी. चलता है। पृथ्वी से ध्रुवतारा ८०० प्रकाश वर्ष दूर है, तो हमारी आकाश गंगा की लम्बाई १,००,००० चौड़ाई २०,००० प्रकाश वर्ष है। हमारा सबसे नजदीकी तारा प्रोक्जीमा सेंटोरी ४.२२ प्रकाश वर्ष दूर है। आकाश में अरबों मन्दाकिनियाँ तथा असंख्य विशालकाय तारापुञ्ज हैं। आकाश गंगा के जुड़वाँ तारों की संख्या बहुत अधिक है। हर तीसरा तारा जुड़वा है। हमारे सूर्य का कोई साथी तारा नहीं है। कुछ तारा समूह तो २४,००० प्रकाश वर्ष दूर है। जैसे हरक्यूलीज, जिसमें १०,००,००० सूर्य होने का अनुमान है। इतनी खोजबीन होने के बाद भी अन्तरिक्ष की अनेकों अनसुलझी पहेलियाँ मानव को बरबस नित नये अनुसंधान करते रहने के लिए प्रेरित कर रही है।

ग्रहों के इर्द गिर्द वलय

अन्तरिक्षमें गतिमान ग्रह गुरु, शनि, हर्शल और नेपच्यून के चारों ओर वलय है, जिनके कारण ये ग्रह बहुत ही सुन्दर लगते है। श्रीब्रजभूमिपंचांगके मुखपृष्ठ पर बने मानचित्रसे आप भलीभांति समझ सकते है।

अयनांश- पृथ्वीका अक्ष खगोलमें कदम्बके चारों ओर परम क्रांतितुल्य व्यासार्धके वृत्तमें घूमता है और वह करीब २६,००० वर्षोंके बाद अपने पूर्वे स्थान पर आ जाता है जैसा कि मुञ्जालने कहा है- **उत्तरतो याम्यदिशं याम्यान्तात् तदनु सौम्यदिग्भागम्। परिसरतां गगनसदा चलनं किञ्चिद्भवेदपमे।।** इस तरह पृथ्वी में कुलाल चक्रवत् और रथचक्रवत् इन दो गतियोंके अलावा अक्ष भ्रमणरूपी यह तीसरी गति उत्पन्न होती है। इसी अक्ष भ्रमणरुपी तीसरी गति के कारण अयन चलन होता है। अयन चलन का नाम ही अयनांश है। अर्थात् सायन वसन्त व शरत् संपात बिन्दु प्रतिवर्ष ५०¼ विकलाकी गति से पीछे को खिसक जाते हैं। वही अयनांश की बढ़ती गति है। भारतीय ज्योतिर्गणितीय भचक्रका आदि निरयण बिन्दु स्थिर है, जिसकी स्थिति चित्रा तारा के ठीक सामने १८० अंश पर है। सायन व निरयण बिन्दुओंके अन्तर का नाम ही चित्रापक्षीय अयनांश है।

अयनांशके विषयमें ज्योतिर्विद एकमत नहीं है। प्रस्तुत पंचांगमें केतकी चित्रापक्षीय अयनांशके आधारपर गणित तैयार किया जाता है। किंचित् संशोधन परित्वेन चित्रापक्षीय अयनांग्न ही भारत सरकार द्वारा स्वीकृत है।

ग्रहदर्शन- सूर्याश्रित राशिमें पहुँचने पर ग्रह निर्लोप हो जाते है। शीघ्रगामी ग्रह बुध शुक्र मार्गी होने पर पूर्वास्त होकर पश्चिममें उद हुआ करते है। वक्री होनेपर पश्चिमास्त होकर पूर्वमें उदय हो जाते हैं। मन्दगामी ग्रह मंगल बृहस्पति, शनि, सदैव पश्चिमास्त होकर पूर्व में उदय हुआ करते हैं।

मध्यम मान से- चन्द्रमा १२, मंगल १७, बुध १३, गुरु ११, शुक्र ९, शनि का १५ अंश उदयास्त कालांश मान्य है।

तारीख वार निकालनेकी विधि- अभीष्ट ईस्वी सन् संख्यामें ४००का भाग दें,जो शेष बचे उसमें १००का भाग दें,इसी प्रकार १०० के शेष में २८ का और २८के शेष में ४का भाग दें। १००और ४की लब्धियोंके जोड़(योगफल) को ५ से गुणा करें। गुणनफल में अन्तिम ४ के शेषको जोड़ने से साधारण ईस्वी सन् के आरम्भ(१जनवरी) का वार (वारांक)होता है। अभीष्ट सन् अधिक वर्ष (लीप ईयर) हो तो वाराङ्क में १ घटाकर शेष ग्रहण करें। वाराङ्क संख्या ७ से अधिक हो तो ७ का भाग देकर शेषकी सोमवार से गणना करें। मासाङ्क संख्या (साधारण वर्ष) जनवरी ०, फरवरी ३,मार्च ३, अप्रैल ६, मई १, जून ४, जुलाई ६, अगस्त २, सितम्बर ५, अक्टूबर ०, नवम्बर ३, दिसम्बर ५ जानें। मासाङ्कसंख्या (अधिकवर्ष, लीपईयर) जनवरी आदि क्रमशः ०,३,४,०,२,५,०,३,६,१,४,६ ईस्वी सन् के आरम्भ वाराङ्क में अभीष्ट मासाङ्क जोड़ने पर मासारम्भ का वारांक निकल आयेगा। **आगामी २१वीं शताब्दी** का अन्तिम वर्ष कुछ विद्वानोंके अनुसार (लीपईयर) नहीं माना जायेगा। अन्यथा इस विषय में विश्वके समस्त विद्वानोंका निर्णय मान्य होगा।

संसारके प्रसिद्ध संवत्सरोंका उत्पत्तिकाल-यहूदी सन् ईसा पूर्व ७अक्टूबर ३७६१, कलियुगाब्द १८फरवरी ३१०२, रोमी सन् २१ अप्रैल ७५३, आसुरी बाबुली सन् २६ फरवरी ७४७, विक्रमाब्द संवत् २३ फरवरी सन् ५७ ईसा पूर्व शुरू हुआ था।

ईस्वीके बाद जिन सनोंका प्रचलन हुआ- शकाब्द ३ मार्च ईसा पश्चात् ७८, आरमेनीस ९ जुलाई ५५२ ई., हिजरी सन् १६ जुलाई ६२२ ई., पारसीसन् १० जून ६३२ ई. में शुरू हुआ।

शक और संवत् का पारस्परिक परिवर्तन- संवत् में से १३५ घटा देने से शकाब्द और शकाब्द में १३५ जोड़ने सं संवत् के वर्ष आ जाते है। सम्वत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे और शक वर्षारम्भ सायन मेषऽर्क दिनसे शुरू हो जाता है। राष्ट्रीय चैत्रारम्भके साथ ही शकसंवत् शुरु होता है। जोकि प्रतिवर्ष २१ मार्च के आसन्न पड़ता है।

सन्१५८२ में रोम के १३वें पोप ग्रेगरी ने ५वीं अक्टूबर को १५ अक्टूबर किया था, तब से इस संशोधित सन् में अभी तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इस समय विश्वके लगभग सभी देशोंमें ईसवी सन् तारीखोंका प्रचार है। दो शताब्दी बाद कुछ संशोधनकी आवश्यकता परिलक्षित होगी।

समयका ध्यान रखें- द्वितीय विश्वयुद्ध(३सितम्बर १९३९ से ९ मई १९४५ई.) के कारण १ सितम्बर १९४२ ई. सं. १५ अक्टूबर सन् १९४५ ई. तक अंग्रेजी हुकूमत(सरकार ने) चालाकीसे घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी थीं। इसकी सर्वसाधारण भोली-भाली जनता को जानकारी नहीं थी। अतः इन दिनों घड़ियों द्वारा नोट किये गये टाइम में से १ घण्टा घटाकर उसे भा.स्टै.टा. समझना चाहिए।

१सितम्बर सन्१९४२ से १५ अक्टूतर सन्१९४५ ई. (कुल अवधि ३ वर्ष १।।मास) के अन्तर्गत यदि दिन के २ बजकर १५ मिनट पर किसी का जन्म टाइम नोट किया गया है, तो उसे दिन के घं.१मि.१५ बजे यानी १३।१५ बजे मानकर जन्मपत्र बनाने के लिए इष्ट साधनार्थ प्रयोग किया जाएगा। तभी आप शुद्ध इष्ट संशोधन कर यथार्थ फलित के परिणाम प्राप्त कर सकेगें।

वरुण(हर्शल) यूरेनशका संक्षिप्तविवरण

हर्शल को सूर्यकी एक परिक्रमा करनेमें ८४ वर्ष ८ दिनका समय लगता है। यह एकराशिमें लगभग ७वर्ष तक रहता है। एकदिनमें ४२ प्रतिविकलाकी गतिसे चलता हुआ भगणों का भोग करता है। परिक्रमामार्ग में शनिके बाद इसका नम्बर आता है, जैसाकि श्रीब्रजभूमि पंचांगके मुख पृष्ठ पर दर्शाया गया है। यह ग्रह अत्यन्त खल बलिष्ठ तमोगुणी जलतत्वप्रधान अशुभ है। भारतीय मान्यतानुसार इसका नाम वरुण है। आकस्मिक घटना, रोगोत्पात, बैर-विरोध, वियोग, स्थान त्यागप्रिय तथा विज्ञानके क्षेत्रमें भौतिक तरक्की कारक है। इसकी प्रभाव राशि कुम्भ मानी जाती है। यह वृत्ति को चंचल बनाता है। इर्शल मिथुन, तुला एवं कुम्भमें अत्यन्त बलवान समझा जाता है। मेष व वृश्चिक राशिमें घातक फल देता है। इसके फल पर संशोधन जारी है। विद्वान किसी एक निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाये हैं।

इन्द्र (नेपच्यून) का संक्षिप्त विवरण

नेपच्यून को सूर्यकी एक प्रदक्षिणा करनेमें १६४ वर्ष २८५ दिनका समय लगता है। अतः यह एक राशिमें १३वर्ष ९ मास के लगभग रहता है। एकदिनमें २१ प्रतिविकला की गति से भगणोंका भोग करता हुआ चक्र पूरा करता है। सूर्य के इर्द-गिर्द परिक्रमा मार्ग हर्शलके बाद इसका है। जैसाकि श्रीब्रजभूमिपंचांगके आवरण पृष्ठ पर दिखाया गया है। इसके भारतीय नाम इन्द्र से बोध होता है कि नेपच्यून जलतत्व प्रधान ग्रह है। अतः मीन इसकी प्रभाव राशि है। मीन में यह स्वगृही माना जाता है। यह सात्त्विक प्रवृत्ति वाला ग्रह है। यह १।५।९ वें स्थान में सत्त्वप्रधान। २।४।६।८।१२ में तम प्रधान तथा ३।७।१०।११वाँ होने पर रजप्रधान फल का प्रतीक होता है। इसका वास्तवमें भूमण्डल पर प्रभाव पड़ रहा है। इस पर रिसर्च हो रही है। पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों में काफी मतभेद है।

यम(प्लूटो) का संक्षिप्त विवरण

प्लूटो को सूर्य की परिक्रमा करने में सर्वाधिक समय लगता है, अर्थात् २४८वर्ष के लगभग समयमें भगणोंका भोग करता है। ९०७३६.०५६४० दिन लगते हैं। यह एक राशि में २० वर्ष ७ मास के लगभग रहता है। इसके भा.नामानुसार अनुमान लगाया जा सकता है कि यह शनि से भी कहीं अधिक तामसी खल प्रकृतिका ग्रह है। उपरोक्ततीनोंग्रह वरुण, इन्द्र और यम पृथ्वी से बहुत दूर होनेके कारण नंगी आखों से दिखाई नहीं पड़ते अतः अस्तोदय कालांश सुनिश्चित कर पाना कठिन है। **भूभ्रमणजन्यउदयास्त-** प्रतिदिन सभीग्रह पूर्वदिशामें उदय होकर लगभग १२ घंटे बाद पश्चिममें अस्त होते हैं। प्राणियोंको दृश्य तभी होते हैं जब उदयास्त कालांश से बाहर होते हैं।

काल उत्तरोत्तर बली कैसे माना जाता है?

किसी भी कार्यके लिए सब प्रकारसे समय अनुकूल नहीं हो सकता। अतः अधिकांशशुभ सुयोग हों तो कार्यका शुभारम्भ कर देना चाहिए,क्योंकि अच्छे योग कुयोगोंके दुष्प्रभावका नाशकर शुभफल देनेमें समर्थ होते है। यथार्षवचन-

अयोगश्च सुयोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि।
अयोगो हन्यते तत्र सुयोगश्च प्रवर्तते।।

शुभाशुभ फल देनेमें समयके ५ अङ्ग प्रधान माने गये है। यथा- वर्ष, मास, दिन (तिथि), लग्न और मुहूर्त। किसी कार्यमें पांचों शुद्ध मिल जायें तो कार्यकी सिद्धि प्रायः सुनिश्चित होती है। उपरोक्त पांचोंकाल उत्तरोत्तर बली होतेहैं। **जैसे-** वर्ष अशुद्ध हो तो मासकी शुद्धि से वह शुद्ध हो जाता है, एवं तिथि(दिन) की शुद्धि से अशुद्ध मासभी शुद्ध समझा जाता है, तथैव लग्नकी शुद्धिसे तिथि(दिन) भी शुद्ध हो जाता है, इसलिए कहा है कि- **सर्वेदोषाः विनश्यन्ति लग्नशुद्धिर्यदा भवेत्।**

इष्टलग्न कर्त्ताकी राशिसे ३।६।९।१०।११वीं हो तो अति श्रेष्ठ, चौथी मध्यम और ८।१२वीं लग्न राशि नेष्ट होती है। ऐसा लग्न देखना चाहिए जिससे ८।१२ स्थानमें कोई भी ग्रह न हो और लग्न शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तथा चन्द्रमा लग्न से ३।६।९।१०।११ में से किसी भी स्थानमें हो तो कार्यकी सिद्धि होती ही है। **'मुहूर्त्तोघटिकाद्वयम्'** एक मुहूर्त्त २ घटी का होता है। अर्थात् प्रत्येक मुहूर्त्त ४८ मिनट तक रहता है।

सूक्ष्मातिसूक्ष्म विभेद-

यदि किसी दिन आवश्यककार्य सुसम्पादन हेतु स्थूल तिथि, नक्षत्र एवं वार उपयुक्त न हो तो सूक्ष्मतिथि, सूक्ष्म(क्षण) नक्षत्र एवं क्षण वार का चिन्तनकर विद्वज्जन कामको व्यवस्थित ढंग से करा सकते है, ऐसा ज्योतिषके प्रणेताओंका मत है। अतः गृह्यसूत्रादि में कहा गया है। यथा- **विवाहेसर्वकाल:शुभ:।**

सिद्धि होरा मुहूर्त्त-

यस्य ग्रहस्य वारेयत् कर्म किञ्चित्प्रकीर्तितम्।
तस्य ग्रहस्य होरायां सर्व कर्म विधीयते।।

सूर्यकी होरा- टैण्डर देने, नौकरी व राजकार्य का चार्ज लेने देने के लिए अच्छी होती है। नामांकन फार्म भरनेमें सर्वश्रेष्ठ मानी गई है।

चन्द्रमाकी होरा- सब कार्योंके लिए शुभ है। विजय मिलती है।

मंगलकी होरा- युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्ज देना, सभा-सोसायटीमें जाना, मुकद्मा, अस्त्र-शस्त्र बनाना आदि कार्योंमें उत्तम होती है।

बुधकी होरा- विद्या(कलाकाव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन लेखन, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करनेके लिए शुभ होती है।

गुरुकी होरा- विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ोंसे मिलन, कोष-संग्रह, नवीन काव्यलेखन, प्रकाशन, ज्ञानार्जन आदि अनेक कार्योंके लिए शुभ है।

शुक्रकी होरा- लम्बी यात्रा, वस्त्राभूषण धारण, सौभाग्यवर्धक कार्य, सिनेमा शूटिंग, भूमि वाहनादिके लिए शुभ।

शनिकी होरा- द्रव्य संग्रह, भूमि-मकानकी नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्योंके लिए शुभ होती है।

सम्पूर्ण कार्योंकी सिद्धिके लिए ज्योतिषशास्त्रमें होरा (क्षणवार) मुहूर्त्त पूर्ण फलदायक माना है। सातग्रह वार नामकी सात होरा होती है। प्रत्येक वार को एक घण्टेकी सूर्योदयके समय उसी वार की पहली होरा होती है। दिन-रात के २४ घण्टोंमें २४ होरे व्यतीत होनेसे अगले वार के सूर्योदयके समय उसी वार के स्वामीकी होरा आ जाती है। **होराका समय** ढाई घटी यानी एक घण्टा होता है। दूसरे वार की होरा उसी वार के छठे-छठे वार के क्रम से स्वामीकी होती है। इसी प्रकार प्रत्येक घण्टेकी होरा समझनी चाहिए।

ध्यान रहे कि प्रत्येक व्यक्तिको स्वराशिके स्वामीग्रह के शत्रु ग्रहोंकी होरामें यात्रा-विवाहादि तथा शुभ कार्योंका त्याग कर देना चाहिए अन्यथा अशुभ फल मिलेगा। स्वराशिके मित्र ग्रहोंकी होरामें कार्यारम्भ श्रेयष्कर रहेगा। निम्नलिखित चक्र द्वारा दिन-रात के जिस किसी भी समयमें अभीष्टकार्य सिद्धियर्थ होरा देखनी हो, सहजमें ज्ञात हो सकेगी।

क्षणवार जानने का चक्र

वार	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो	हो
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
सू.	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु
चं.	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु
मं.	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु
बु.	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श
गु.	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू
शु.	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं
श.	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं	सू	शु	बु	चं	श	गु	मं

उदाहरण- कल्पना करो कि आज मंगलवार है। आपको कार्य सिद्धयर्थ किसी बड़े अधिकारीसे मिलना है, तो इसके लिए उपरोक्त पंक्तियोंमें गुरुकी होरा उत्तम होती है, ऐसा लिखा है। अतः उस दिन गुरुकी होरा मालूम करनी है जोकि किस-किस समय पर होती है। उपरोक्त चक्रमें मंगलके सामने देखा तो उस दिन ७।१४।२१वें भागमें गुरुकी होरा मिली। अतः मंगलवारको स्थानीय सूर्योदयसे ६।१३।२०वें घण्टेके बाद एक-एक घण्टे तक गुरु की होरामें जाना चाहिए।

नोट- होरा मुहूर्त्त गणनानुसार ही सप्तवारोंके नाम निश्चय किए गए है। जैसे रविवार को पच्चीसवां होरामुहूर्त्त चन्द्रमाका होने से रविवार के बाद वार गणनामें चन्द्रवार आता है।

सूक्ष्मतिथि- प्रत्येकतिथि के आरम्भ से ४-४ घटी उसी तिथि से आरम्भ कर क्रमशः १५ तिथियां बीतती हैं। जैसे प्रतिपदारम्भ से ४ घटी=१घं.३६मि. तक प्रतिपदा, उसके बाद ४ घटी तक द्वितीया इत्यादि। अतः प्रतिपदामें ४ घटीके बाद ८ घटी पर्यन्त द्वितीयाका फल मिलेगा, प्रतिपदाका नहीं। वस्तुतः तिथिभोग घटीमानका पञ्चदशांश तुल्य क्षण तिथि होती है। यथा-

तिथेः पञ्चदशो भागः क्रमात् प्रतिपदादितः।
क्षणसंज्ञा तिथिः प्रोक्ता शुभाशुभ फलप्रदाः।।

सूक्ष्म(क्षण) नक्षत्र- प्रतिदिन सूर्योदयके बाद अहोरात्र में २-२घटी के क्रमशः आर्द्रा, आश्लेषा, अनु., मघा, धनि., पूषा., उषा., अभि.,रोहि., ज्येष्ठा, विशा., मूल, शत, उफा, पूफा, आर्द्रा, पूभा, उभा, रेवती, अश्वि, भर., कृति, रोहि., मृग., पुन., पुष्य, श्रव., हस्त, चित्रा और स्वाती नक्षत्र भोग करते हैं। ये मुहूर्त कहलाते है। दैनिक चान्द्रनक्षत्र यदि श्रेष्ठ न हो तो क्षण नक्षत्रमें कार्यकी सिद्धि प्रायः सुनिश्चित होती है।

योगस्य सप्तविंशांशो सूक्ष्मयोगो भवेदिति।
एकस्मिन्नपि योगे च सर्वेयोगा भवन्ति हि।।

एक-एक विष्कुम्भादि योगमें- उसी-उसी योगसे प्रारम्भ करके २७ योगोंके भोग होते है, जो सूक्ष्मयोग कहलाते है। स्थूल योगके पूर्णमान का २७वां भाग सूक्ष्मयोग होता है। अभीष्ट फल देनेमें वही समर्थ माना जाता है।

सावन दिन सात है-

वाराः सप्त रविः सोमो मंगलश्च बुधस्तथा।
बृहस्पतिश्च शुक्रश्च शनिश्चैव यथाक्रमम्।।

जैसे रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु शुक्र और शनिवार ये यथा-क्रमशः भोगते है। सूर्योदय से वार का शुभारंभ माना जाता है। अंग्रेजी तारीख ग्रीनविचवेधशाला दृश्योदयकाल से बदल दी जाती है। **स्मरणरहे-**ता.के साथ वार नहींबदलता।

शुभाशुभ अन्यान्य संज्ञा-

सोम, बुध, गुरु और शुक्र ये वार सभी कार्योंमें सिद्धिप्रद होते है। रवि, मंगल और शनि अग्रिम पृष्ठ पर वर्णित कार्योंमें ही प्रशस्त हैं।

रवि स्थिर संज्ञक है, ऐसे ही सोम चर, मंगल उग्र, बुध मिश्र, गुरु लघु, शुक्र मृदु और शनिवार तीक्ष्ण संज्ञक है। संज्ञा तत्तुल्यकार्य सम्पादनमें सिद्धि प्रायः सुनिश्चित होती है। क्षणवारका अपना विशेष महत्त्व है, क्योंकि पूर्वाचार्योंने स्थूलसे सूक्ष्मको अत्यन्त प्रबल होनेमें कारण प्रधान माना है।

रविवारमें कृत्य

राज्याभिषेक, उत्सव(गाना बजाना) नई सवारी (वायुयान आदि) पर चढ़ना, यात्रा, नौकरी, गाय, बैल आदि पशु क्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धीकर्म (हवन यज्ञादि), मन्त्रोपदेश, औषधिनिर्माण और सेवन, अस्त्र-शस्त्र व्यवहार(युद्धादि), सोना-तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध, व्यापार और न्यायसे सम्बन्धित सभी कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में कृत्य

शंख आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊखरस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्य पदार्थ, स्त्रीप्रसंग, वृक्ष(बीज) रोपणादि, कृषि कर्म, जल सम्बन्धी कार्य (नहर निकालना,नल लगाना,तालाब, कुआं बनाना आदि) वस्त्राभूषण धारण, गीत-नृत्य, यज्ञादि कर्म, दूध, दही, घृत, बर्फ, पशु सम्बन्धी, पुष्प तथा अक्षराम्भ(विद्याध्ययन) आदि अन्यान्य सभी कार्य सोमवारमें करने चाहिए।

मंगलवार में कृत्य

चुगलखोरी, जासूसीकार्य, चोरी, विष, अग्निसम्बन्धी, शस्त्रघात, बन्धन, संग्राम(लड़ाई शुरु), शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेनासम्बन्धी, कर्जदेना, खान, धातु, सोना, मूंगा आदि ये सभीकार्य मंगलवार में करने चाहिए।

बुधवार में कृत्य

ट्रेनिंग,व्यापार,अध्ययन,कलाकौशल,शिल्प,खेलकूद,चित्रकारी,बहीखाता, हिसाब-किताब,नोटिस देना,धातुसम्बन्धी सोना,कांसा,पीतल,सन्धि समझौता, व्यायाम,वाद-विवाद,नौकरी प्रवेशादि अन्यसभीशुभकार्य बुधवारमें करने चाहिए।

गुरुवार में कृत्य

धर्मानुष्ठानादि कर्म, पौष्टिक (स्वास्थ्य), यज्ञ, विद्याध्ययन, मंगलोत्सव, सोना सम्बन्धी गृहकर्म, वस्त्राभूषण, यात्रा, रथ, घोड़ा, गाड़ी, कार, मोटर, वायुयान आदि सवारी सम्बन्धीकार्य, औषधि-आभूषणोंका निर्माण व प्रयोग सभी शुभ काम गुरुवार में करने चाहिए।

शुक्रवार में कृत्य

स्त्री-सम्बन्धी, गुप्तवार्ता, छायाचित्र, फिल्मकार्य, नाटक, संगीत सीखना, शय्या, मणि, रत्न, सुगन्ध, वस्त्र, उत्सव, आभूषण, भूमि, व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषिकर्म, जमीन, जायदाद व भण्डार (संग्रह) से सम्बन्धित सभीकार्य अन्यान्यशुभ कार्य शुक्रवार में करने चाहिए।

शनिवार में कृत्य

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा सम्बन्धीकर्म, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी या नौकर रखना, पापकर्म, चोरी, मिथ्यालाप, विषाक्तकर्म, आसव-निर्माण व प्रयोग, गृह प्रवेश, हाथीको बांधना, अन्य पशुको सिखाना, दीक्षा(मन्त्रग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए।

तिथियों के स्वामी संज्ञादि ज्ञानाय चक्रम्

तिथि	१ प्रतिपदा	२ द्वितीया	३ तृतीया	४ चतुर्थी	५ पञ्चमी	६ षष्ठी	७ सप्तमी	८ अष्टमी	९ नवमी	१० दशमी	११ एका.	१२ द्वाद.	१३ त्रयो.	१४ चतु.	१५ पूर्णिमा	३० अमा.
स्वामी	अग्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	सर्प	कार्तिकेय	सूर्य	शिव	दुर्गा	यमराज	विश्वदेव	विष्णु	कामदेव	महादेव	चन्द्रमा	पितर
संज्ञा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	निष्फल
सत् असत्	सत्	सत्	सत्	असत्	सत्	असत्	सत्	असत्	असत्	सत्	सत्	असत्	सत्	असत्	सत्	असत्

नन्दादि तिथियोंमें कर्त्तव्य

नन्दातिथिमें चित्रकर्म, उत्सव, वास्तु(भूमि) पूजन, तन्त्र, खेती, नाच तमाशा, विवाह, वाहनोंका प्रयोग शुभ है। भद्रामें उपरोक्त वर्णित सभीकार्य और पौष्टिक बलवीर्य पुरुषार्थ को बढ़ाने वाला कर्म शुभ होता है। जयामें संग्रामके लिए उपयोगीकार्य सिद्ध होते हैं, तथा रिक्तामें वध, बन्धन आदि, विष, अग्नि सम्बन्धी और बनाए हुए शस्त्र शुभ होते हैं। पूर्णातिथिमें विवाहअन्यान्य मंगलोत्सव, यात्रा तथा पौष्टिक सहित शान्तिकर्म शुभ होते हैं। नोट-अमावस्यामें केवल पितृकर्म होते हैं। जिस अमावस्यामें चन्द्र काल दृष्ट हो तो वह सिनीवाली और कला नष्ट रहे वह कुहूवाली कही जाती है।

पाँच पर्व दिन

अमावस्या, अष्टमी, पूर्णिमा, चतुर्दशी और रविसंक्रान्तिका दिन, ये ५ पर्व दिन कहलाते हैं। ये द्विगर्तीय देशवालोंको विशेष शुभ फलदायक हैं।

पंचक-विवेचन

धनिष्ठाके उत्तरार्ध से रेवतीपर्यन्त पांच नक्षत्र पंचक कहलाते हैं। इनमें प्रेतका दाहकर्म, दक्षिण दिशाकी यात्रा, चारपाई, पलंग कुर्सी मेज आदि बनवाना, भवननिर्माण हेतु तथा जलानेके लिए काष्ठ, कोयला, गैसका संग्रह करना, छत डालना वर्जित है। परिहार- शत.के मध्यकी, पूभाके आदि की, उभाके अन्तकी केवल पांच-पांच घटी त्याज्य है और रेवती सम्पूर्ण त्याज्य माना गया है।

भद्रा-विवेचन

भद्रा- श्रीपतिने कहा है कि देव-दानव संग्राममें जब देवगण परास्त हुए तो भगवान् शिवने क्रोधमें संतप्त अपने शरीरको देखा, जिससे गदर्भ मुखवाली, पूंछयुक्ता, तीनपांव, सातभुजा तथा सिंहके समान गर्दनवाली प्रेतवाहिनी 'देवी' प्रकट हुई जिसने अपने विकराल मुखसे सम्पूर्ण राक्षसोंका संहारकर देवताओंका भद्र(भला) किया। इसलिए प्रसन्न हुए देवताओंने इसे भद्रा नाम से सम्मानित किया और पंचांगमें कर्णोंके मध्य स्थान दे दिया। भद्राको छाया से उत्पन्न सूर्यपुत्रीभी कहा गया है यथा-

छायासूर्यसुते देवि विष्टिरिष्टार्थदायिनि।
पूजितासि यथाशक्त्या भद्रे भद्र प्रदा भव॥

भद्रा मुख-पुच्छ ज्ञानाय चक्रम्

भद्रातिथियाँ	भद्राके मुख का समय	भद्राके पुच्छ का समय
शुक्ल ४	१ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	४ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
शुक्ल ८	२ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	१ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
शुक्ल ११	३ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	२ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
शुक्ल १५	४ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	३ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
कृष्ण ३	४ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	३ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
कृष्ण ७	३ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	२ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
कृष्ण १०	२ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	१ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य
कृष्ण १४	१ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य	४ प्रहरके अन्तमें दशमांश तुल्य

छाया एवं सूर्यपुत्री भद्रा यथाशक्ति पूजनार्चन मात्रसे सभी अरिष्ट निवारणकर जगतीतलवासी प्राणियोंका मंगल करतीहै। रोगोपद्रव निवृत्ति विघ्नबाधा शान्तिके साथ-साथ युद्ध, मुकद्दमा, द्यूत तथा राजकाजमें विजय दिलवाती है। भद्राके द्वादश नामोंकाविवरण- **धन्या, दधिमुखी, भद्रा, महामारी, खरानना, कालरात्रि, महारुद्रा, विष्टि, कुलपुत्रिका, भैरवी, महाकाली, असुरक्षयकरी।**

भद्रा मुख-पुच्छ ज्ञानम्- भद्रा विहित(कुलसमय) को तीन स्थानोंमें रखकर पृथक-पृथक क्रमशः४।६।१०से भाग करने पर प्रहर, षष्ट्यंश और दशमांश का मान निकल आता है। उपरोक्त चक्रमें शुक्लपक्ष की चतुर्थी तिथिमें जो भद्रा लिखी गई है उसके प्रथम प्रहर (यानि भद्रा के शुरु में) षष्ट्यंश तुल्य भद्रा का मुख होता है और चतुर्थ प्रहरके अन्तमें दशमाश तुल्य भद्राका पुच्छकाल माना जाता है। प्रहर का मतलब भाग से है।

उदाहरण- सं.२०५९ श्रावण शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार(राखी) के दिन भद्राकी व्यापी व्यवधान कारक है। अतः भद्राके मुखका समय सभी शुभकृत्योंमें वर्जित है। उक्तदिन भद्रा विहितकाल १२घं.४०मि. को ४ से भाग करने पर ३घं.१०मि. प्रत्येक प्रहर का मान हुआ। पुनः १२।४० को ६ से भाग दिया तो २घं.७मि. षष्ट्यंश हुआ। इसीप्रकार १०से भाग करनेपर दशमांश १घं. १६मि. सुनिश्चित हुआ।

पूर्णिमाके ४ प्रहरके प्रारंभमें षष्ट्यंश तुल्य भद्राका मुख होता है, सो ज्ञात कीजिये- प्रत्येकप्रहर ३।१०x३=९।३०जमा भद्रारम्भकाल २६।३९=३६ ।९-२४ शेष पूर्णिमा दिन १२घं.९मि में चौथा प्रहर शुरू भद्रामुखारम्भ का समय प्रारंभ हुआ, जिसमें षष्ट्यंश २।७ जमा किया तो १४घं.१६मि. तक का समय सुनिश्चित हुआ। जोकि राखी बांधने के लिये उपयुक्त नहीं है। तीसरे प्रहरके अन्त १२।९से दशमांश १।१६ घटाया तो १०।५३ से भद्राका पुच्छकाल १२।९बजे तक रहेगा, जिसे प्रत्येक काममें शुभ माना गया है।

पृथिव्यां यानि कर्माणि शुभान्यशुभानि च।
तानि सर्वाणि सिद्ध्यन्ति विष्टि पुच्छे न संशय॥

भद्रावास- १,२,३ और ८ राशिमें चन्द्रमा हो तो भद्रावास स्वर्गमें होता है। ऐसे ही ४,५,११,१२ राशिस्थ चन्द्र में भद्रा मर्त्य(मनुष्य) लोकमें विचरण करती है और ६,७,९ एवं १० के चन्द्रमामें भद्रा पातालवासिनी कही गई है। जहां रहती है वहीं फल है। **भूलोकस्था सदात्याज्या स्वर्ग-पातालगा शुभा।** भद्रा दिनमें तिथिके उत्तरार्धकी व रात्रिमें पूर्वार्धकी शुभ होती है। (मु.चिन्तामणि)

स्वर्गेभद्राशुभम् कार्ये पाताले च धनागमः।
मृत्युलोके यदा विष्टिः सर्वकार्य विनाशिनी॥

भद्रामें मुख्य रूपसे रक्षाबन्धन,होलिकादहन वर्जित तथा असत्कर्म ग्राह्यहै।

विष्टिरङ्गारकश्चैव व्यतीपातश्च वैधृतिः।
प्रत्यरिर्जन्मनक्षत्रं मध्याह्नात्परतः शुभम्॥

विष्टि, अंगारक, क्रकच, दग्धादि योग, व्यतिपात, वैधृति, दुष्टतारा कुयोग दोपहर के बाद सभी शुभ होते है।

कालकी परिभाषा

प्रतिदिन प्रत्येक स्थानका दिनमान न्यूनाधिक होता रहता है। अभीष्ट दिनके दिनमानको पांचसे विभाजित करनेपर प्रत्येक भागको जिस नामसे जाना जाता है उसका विवरण-१ **प्रातःकाल २ संगवकाल या पूर्वाह्नकाल, ३ मध्याह्नकाल, ४ अपराह्नकाल और ५ सायंकाल कहलाता है।** सूर्योदय से गणना शुरु होती है। दिनमानके १५ भाग करनेपर ८वां भाग अभिजित् मुहूर्त कहलाता है। और १०वाँ भाग विजयमुहूर्तके नामसे जाना जाता है। **रात्रिमानके** १५ भाग करने पर ३ भागतक **प्रदोषवेला** ८ वां भाग **महानिशीथकाल,** १३ वां भाग **ब्रह्ममुहूर्त्त,** १४ वां भाग **उषाःकाल** और १५ वां भाग **अरूणोदयकाल** कहलाता है। **प्रातः सन्ध्या** सूर्योदय उपरान्त ७२मि. तक और सायंसन्ध्या सूर्यास्तके पश्चात् ७२ मि. तक होती है।

विशेष जानकारी

६० पल बराबर १ घड़ी, दण्ड व घटी
६० घटी बराबर १ दिन अहोरात्र
३६५ दिन ६ घंटा ९ मिनटका १ सौरवर्ष
२९ दिन १२ घंटा ४४ मिनटका एक चान्द्रमास
३५४ दिन ८ घंटा ४८ मिनटका एक चान्द्रवर्ष
२½ पल बराबर १ मिनट, १घटी बराबर२४ मि.
२½ घटी बराबर १ घंटा होता है।
६० घटी बराबर २४ घंटा (एक दिन रात-अहोरात्र)

अधिमास सम्वत् में दिन संख्या लगभग ३८४ होती है। सं.२०२०, २०३९ में क्षयः मास हो चुका है। आगे २१८० में होगा। क्षयमास वर्ष में दो अधिमास होते हैं।

नक्षत्रोंकी संज्ञा विहितकर्म शुभम्

ध्रुव-स्थिर नक्षत्र- रोहिणी, उफा, उषा, उभा तथा रविवार ध्रुव और स्थिर संज्ञक हैं। इनमें स्थिर कार्य बीजबोना, बगीचा लगाना, गीत, वाद्योत्सव, विवाहोत्सव, वस्त्राभूषण धारण तथा निर्माण करना, शान्तिकर्म, गृहारम्भ, नृत्यकला सीखना, मैत्री, सन्धिविचार, पदभार संभालने हेतु शपथग्रहण करना और खेलकूदका आरम्भ तथा प्रतिष्ठाकर्म शुभ होता है।

चर-चल नक्षत्र- पुन.स्वाती,श्रवण,धनि.,शत. तथा सोमवार। इनमें साईकल,स्कूटर, कार, बस, ट्रक, घोड़ा आदि वाहनों का लेनदेन एवं उपयोग करना, लम्बी यात्रा, क्रय-विक्रय, दुकान खोलना, चित्रकारी, शिक्षा ज्ञान, रतिक्रीड़ा शुभ है। जलोत्पन्न कर्म भी शुभ है।

उग्र-क्रूर नक्षत्र- भर., मघा, पूफा, पूषा, पूभा तथा मंगलवार। इनमें दुष्ट(घात) कर्म, तस्करी, लाटरी सट्टा आदि धन्धे विषाग्नि तथा शस्त्रकर्म (बनाना चलाना) और पशु ज्ञानार्जन, पालन पोषण तथा चुगलपन श्रेष्ठ होता है।

मिश्र+साधारण नक्षत्र- कृति, विशा, तथा बुधवार। इनमें अग्नि सम्बन्धी कर्म, कई वस्तु विशेषके संयोगसे बनने वाले कार्य, वृषोत्सर्ग (सांड छोड़ना), घातकर्म, अग्निदाह, शठता, विष एवं शस्त्र सम्बन्धीकर्म शुभ होते हैं। कई आचार्य मांगलिककर्म, व्यापार एवम् उद्योगसम्बन्धीकर्म भी शुभ मानते हैं।

क्षिप्र-लघु नक्षत्र-अश्वि.,पुष्य,हस्त,अभि. तथा गुरुवार। इनमें दुकान,रतिकर्म, ज्ञानार्जन,शिल्प व चित्रकला,वाहन लेनदेन,दूर-समीपकी यात्रा,क्रय-विक्रय शुभ होता है।

मृदु-मैत्र नक्षत्र- मृग,चित्रा,अनु.,रेव तथा शुक्रवार। इनमें गीत विवाहादि मंगलोत्सव तथान्य क्रीड़ा, मैत्री-कार्य, वस्त्राभूषण निर्माण तथा धारण करना, बीजबोना, बागबगीचा लगाना, शान्ति कर्म, गृहारम्भ, नृत्यसीखना, गोपनीयताकी शपथ लेना, खेल खेलना शुभ होता है। जलोत्पन्नकर्म भी शुभ कहे है।

तीक्ष्ण-दारुण नक्षत्र- आर्द्रा, श्लेषा, ज्येष्ठा, मूल तथा शनिवार इनमें अभिचार घातलगाना, पापकर्म, चुगलपन, पशुशिक्षा, बन्धन, तस्करी, लाटरी, सट्टा आदि धन्धे, विषाग्निकर्म तथा अस्त्र-शस्त्र निर्माण और प्रयोग शुभ होता है।

टिप्पणी- वार की गिनती रविवारको एक मानकर की जाती है। तिथिकीगणना शुक्ल प्रतिपदा से होती है। कृष्णपक्षकी प्रतिपदा सोलहवीं तिथि गिनी जाती है। नक्षत्रकी गिनती अश्विनी आदि मानकर की जाती है। नक्षत्रोंकी संख्या२७ प्रसिद्ध है। उषा. के अन्तिम चतुर्थांश एवं श्रवणके आदि पंचमदशांश भाग(९रा. ६ अं. ४०क. से ९ रा.१०अं ५३ क.२०वि. तक) अभिजित् नक्षत्र माना जाता है। **सूर्यभाद्गणना, भौमभाद्गणना-** आदि से तात्पर्य यह है कि सूर्यादि ग्रह कर्मकाल समये जिस नक्षत्र पर चल रहे हों उसी नक्षत्र से दैनिक चन्द्र नक्षत्र तक गिनतीकर फल प्रसंगके अनुसार जानना चाहिए।

साढ़ेतीन स्वयंसिद्धि मुहूर्त्त

१.चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, २.वैशाखशुक्ल तृतीया(अक्षयतीज) ३.आश्विन शुक्ल दशमी(विजयादशमी) ४.कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा तथा दीपावली प्रदोषवेला चार स्वयं सिद्धि मुहूर्त है। इनमें किसी भी कार्यको करने के लिए पंचांगशुद्धि देखनेकी आवश्यकता नहीं है। इनमें से प्रथम तीन मुहूर्त पूर्ण बली तथा चौथा अर्धबली होनेसे इन्हें साढ़ेतीनमुहूर्त्त कहते हैं।

लोकप्रसिद्ध मुहूर्त्त

आषाढ़ शुक्ल नवमी, कार्तिक शुक्ल एकादशी, माघ शुक्ल वसन्त पञ्चमी (श्री सरस्वती जयन्ती), फाल्गुन शुक्ल द्वितीया(फुलेरा दौज)- ये मुहूर्त लोकव्यवहारमें सिद्धि माने जाते हैं। **कार्तिकशुक्लप्रतिपदा** को उत्तरवासी मान्यता नहीं देते हैं। ये प्रत्येककर्ममें बड़ी ही श्रद्धाके साथ अपनाए जाते हैं। इन्हें **'अनपूछा'** मुहूर्त कहा जाता है।

अभिजित् मुहूर्त्त

दिनमानके १५ भागकरने पर आठवां भाग अभिजित् मुहूर्त कहलाता है। इसमें अनेकदोष निवारणकी शक्ति है। अतः कोई शुभ लग्न मुहूर्त न बनता हो तो जातकादि सभी शुभकार्य अभिजित् मुहूर्तमें किये जा सकते हैं, परन्तु बुधवार के दिन इसका निषेध है। भगवानको अत्यन्त प्रिय यही पावनकाल सबको शान्ति देने वाला होता है।

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। शुक्ल पच्छ अभिजितहरिप्रीता॥
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक विश्रामा॥

आनन्दादि योगोंका विवरण

वार एवं नक्षत्रके संयोगसे आनन्द, कालदण्ड, धूम्र, धाता, सौम्य, ध्वांक्ष, केतु श्रीवत्स, वज्र, मुद्गर छत्र, मित्र, मानस, पद्म, लुम्ब,उत्पात,मृत्यु,काण, सिद्धि, शुभ, अमृत, मूसल, गद, मातङ्ग, राक्षस, चर, सुस्थिर और प्रवर्धमान- ये २८ योग बनते हैं, जोकि जन्त्री, पंचांगमें लिखे जाते हैं। **गणनाक्रम-** रविवारमें अश्विनी से, सोम में मृग से, भौममें श्लेषासे, बुधमें हस्तसे, गुरुमें अनु. से, शुक्रमें उषा से और शनिवारमें शत.से गिनती करने पर जाने जा सकते हैं।

आनन्दादि योगफल

धूम्र योगारम्भ की १ घटी, ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर की ५ घटी नेष्ट होती है। ऐसे ही पद्म, लुम्ब की ४, गद की ७, काण और मूसल की २ घटी अशुभ मानी गई है। काल, उत्पात, मृत्यु और राक्षस सम्पूर्ण त्याज्य माना गया है। अन्य सभी योग श्रेष्ठ फलदायक है।

दोषसमूह नाशक रवियोग सूर्याश्रित नक्षत्रसे चन्द्राश्रित नक्षत्र तक गिननेपर संख्या ४।६।९।१०।१३।२० हो तो रवियोग होता है। जोकि त्रयोदश कुयोगोंके दुष्प्रभावको समाप्त कर देता है। प्रतिवर्ष हम अपने पंचांगोंमें सर्वार्थसिद्धि अमृसिद्धि आदि सुयोग अन्यान्य कुयोग किस दिन कितने समय तक रहेंगे यह लिख देते हैं। अच्छे समयमें किये कार्य सफल होते हैं।

वार, तिथि एवं नक्षत्रके संयोग से बनने वाले शुभाशुभ योग

शुभाशुभ योग	रविवार	चन्द्रवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
अमृत सिद्धि योग	हस्त	मृगशिर	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
विषयोग तिथि	५	६	७	८	९	१०	११
सर्वार्थसिद्धि योग एवं : दुष्ट तिथि	अश्वि.पुष्य.उफा हस्त,मूलउषाउभा १,३(७संवर्त)	रोहि,मृग.पुष्य अनु.,श्रवण २,११	अश्वि.कृति. श्लेषा,उभा. ३,९,१२	कृति.रोहि.मृग. हस्त.अनु. ७,९,११	अश्वि पुन. पुष्य,अनु. रेवती	अश्वि.पुन. अनु.श्रवण रेवती	रोहि.,स्वाती श्रवण ११,१३
सिद्धियोग नक्षत्र	मूल	श्रवण	उभा	कृतिका	पुनर्वसु ३०	पूफा	स्वाती
सिद्धियोग तिथि	०	०	३*,८**,१३	२,७*,१२	५,१०*,१५**	१,६,११**	४**,९,१४*
दग्ध नक्षत्र	भरणी	चित्रा	उषा	धनिष्ठा	उफा	ज्येष्ठा	रेवती
दग्ध तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य तिथि	४	६	७	२(१संवर्त)	८	९	७
हुताशन तिथि	१२	६	७	८	९	१०	११
क्रकच(अधम)योग	१२	११	१०	९	८	७	६
ग्लाकुर योग	८**,१३	१	४**१४*	५,१०*,१५**	२,७*,१२	५,१५**	३*,८**,
मृत्युदा तिथि	१,६,११	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	४,९,१४	२,७,१२	५,१०,१५
यमदृष्टा	मघा.धनि.	विशा, मूल	भर.कृति.	पुन.रेवती	अश्वि.उषा.	रोहि.अनु.	श्रव.शत.
कालयोग	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा.
वज्र योग	श्लेषा	हस्त	अनु.	उषा.	शतभि.	अश्वि.	मृगशिर
लुम्बक योग	स्वाती	मूल	श्रवण	उभा.	कृतिका	पुनर्वसु	पूफा.
उत्पात योग	विशाखा	पूषा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उफा.
मृत्यु योग	अनु.	उषा.	शत.	अश्वि.	मृग.	श्लेषा	हस्त
काण योग	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
राक्षस योग	शतभिषा	अश्विनी	मृग.	श्लेषा	हस्त	अनुराधा	उषा.
यमघण्ट योग	मघा	विशा.	आर्द्रा	मूल	कृति.	रोहिणी	हस्त
याम(प्रहर)	४प्रहर	७ प्रहर	२ प्रहर	५ प्रहर	८ प्रहर	३ प्रहर	६ प्रहर
घटी	३।।।	३।।।	३।।।	३।।।	३।।।	३।।।	३।।।
कुलिक मुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२
कण्टक मुहूर्त	६	४	२	१४	१२	१०	८
कालवेला मुहूर्त	८	६	४	२	१४	१२	१०
अर्धयाम मुहूर्त	७	९	३	९	१५	५	१
यमघण्ट मुहूर्त	१०	८	६	४	२	१४	१२
दुष्टक्षण मुहूर्त	७।१४	१३।१४	४।६	८।९।१०	१५।१६	४।५।६।९	११२
विष घटी	२० घटी	२ घटी	१२ घटी	१० घटी	७ घटी	५ घटी	२५ घटी

* कृष्णपक्ष के तिथियर्ध में भद्रा होती है।　　** शुक्ल पक्ष के तिथियर्ध में भद्रा रहेगी।

अयोगे सुयोगोऽपि चेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धि तनोति।
परे लग्नशुद्धया कुयोगादिनाशं दिनार्द्धोत्तरं विष्टिपूर्वञ्च शस्तम्।।

यदि यमदृष्टा, कालयोग, अन्यान्य कुयोगमें सुयोग आ जाए तो अयोगके (बुरेफल) का नाश कर शुभ फल ही देता है। अतः उसमें कार्य सम्पादन कर सकते हैं।

अन्य आचार्योंके मत से तत्काल लग्नशुद्धि समस्त अशुभयोगों के फल का नाश कर शुभफल देनेमें समर्थ होती है। यथा-

यत्रलग्नं विना किञ्चित् क्रियते शुभ संज्ञकम्। तत्र तेषामयोगानां प्रभावाज्जायते फलम्।।

अतः कार्य-भेद से लग्नशुद्धि का विचार सुविज्ञजन स्वयं करें। सामान्यतः लग्न से ४।८।१२ वें स्थान शुद्ध हों, अपनी राशि से ३।६।१०।११वीं लग्न राशि होनी चाहिए। राशि से ४।८।१२वां चन्द्रमा नहीं होना चाहिए। कुछ आचार्य १२ वां चन्द्रमा नेष्ट नहीं मानते हैं।

देशभेदसे दुष्ट योगोंका परिहार

कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्था भवारजाः। हूणवंगखशेष्वेव ज्यास्त्रितयजास्तथा।।

तिथि और वार से उत्पन्न। तिथि और नक्षत्र से उत्पन्न। दिन और नक्षत्र से उत्पन्न एवं वार, तिथि, नक्षत्र इन तीनोंसे उत्पन्न कुयोग क्रमशः हूण(मध्य एशिया) वंग(बंगाल), खश(नेपाल) क्षेत्र में ही त्याज्य हैं, अन्य स्थानों पर दोष माननेकी आवश्यकता नहीं। **मुहूर्त्त चिन्तामणि पृ.१३**

नोट- विषाख्य कुलिक और सवर्त योग की अवशिष्ट तथा वार-दग्ध, हुताशन, की सर्वतिथियोंका समावेश चक्र में वार-क्रम से अन्यान्य अशुभ तिथियों में हो गया है। इसलिए इन कुयोगोंके खाने अलग से नहीं दिए गए हैं।

एक दिन में अमृतयोग और सिद्धियोग-तिथि दोनों एक साथ ही पड़ जायें तो वह दिन दुष्ट हो जाता है, जैसे मधु और घृत समभाग मिलने पर विष बन जाता है।

अमृत सिद्धियोग च यद्येकस्मिन्दिने भवेत्। तक्ष च तद्दिनं दुष्टं मधु सर्पिविष यथा।।

चक्रांकित रविवार में हस्त नक्षत्र और पंचमी तिथि एक साथ आ जाए तो 'त्रितयज' कुयोग होता है जो सभी शुभ कार्यों में त्याज्य माना गया है, ऐसे ही अन्य सभी वारों में जानना चाहिए।

कालबेला मुहूर्त्त

रविवार को आठवाँ सोम को छठा, भौम को चौथा, बुध को दूसरा, गुरु को चौदहवां, शुक्र को बारहवाँ और शनि को दशवां कालवेला नामक मुहूर्त्त महाअशुभ माना जाता है। ज्ञातकरनेकी **विधि-** अभीष्टदिन दिनमान का १५वां भाग प्रत्येक मुहूर्तका मान होता है। कालवेला मुहूर्तसे पूर्व मुहूर्त्त संख्यांक से मुहूर्त्त मान को गुणाकर दें। गुणनफल (कुलमान) को सूर्योदयमें जोड़नपर कालवेल मुहूर्त्तारम्भका समय ज्ञात हो जाएगा। दक्षिण भारतमें इस मुहूर्तमें कोई भी शुभकार्य नहीं करते हैं। त्रयोदश कुयोगनाशक रवियोग होता है। जिसका उल्लेख प्रतिवर्ष हम अपने पञ्चांग में कर देते हैं।

❀ होमाहुति शुभाशुभग्रहे मुखज्ञानम् ❀

रवि नक्षत्रसे दैनिक चान्द्रनक्षत्र तक गिने ३ संख्या तक आहुति सूर्य के मुख में जाती है, तदुपरान्त ६ तक बुधके मुखमें। इसी प्रकार आगे निम्नलिखित चक्र से जान लें।

❀ ग्रहमुखे होमाहुति ज्ञानाय चक्रम् ❀

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	राहु	केतु	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

शुभग्रह के मुखमें पड़नेसे यज्ञाहुति मंगलकारी होती है। नोट- ग्रह दोष शान्त्यर्थ आहुतियोंका विचार प्रसंगवश करना चाहिए। अर्थात् जिस ग्रहकी शान्तिहेतु हवन किया जाय, आहुतियाँ उसीग्रहके मुख में पड़नी चाहिए।

❀ होमसमये अग्निवास ज्ञानम् ❀

हवनदिन तिथि संख्यामें 'वार' संख्या जोड़कर १ और मिलावें ४ से भाग दें,यदि शेष ३।० बचे तो अग्निकावास भूमिपर होता है, सो यज्ञकर्ममें श्रेष्ठ माना जाता है। १बचे तो अग्निका वास स्वर्गमें प्राणनाशक, और २शेषमें अग्निकावास पातालमें धनैश्वर्य अभिवृद्धि कारक होताहै।

नोट-दैवज्ञरंजनमें अग्निवास स्वर्गमें शुभ कहा है। नित्य नैमित्तिक कार्योंमें अग्निवासेका विचार नहीं करना चाहिए। यथा-यात्रा-विवाह-व्रत गोचरेषु चौलोपनीताद्यखिल व्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्त राहुणां। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्॥

❀ शिववासज्ञानम् ❀

हवनदिन तिथि संख्याको दूना करके ५ और मिलावें, ७ से भाग करने पर १शेष बचे तो शिवजीका वास कैलाशपर श्रेष्ठ, २ शेष में गौरी पार्श्वे श्रेष्ठ, ३शेषमें वृषारुढ़ श्रेष्ठ,४शेषमें सभायां सन्ताप, ५ शेष में ज्ञावेलायां पीड़ा,६शेष में क्रीड़ायां दुःख शोक और ०शेष अर्थात् भाग पूरा लगने पर शिववास शमसानभूमिमें होता है जिसकाफल मृत्यु कहा गया है।

❀ शिववास शुभ तिथि ❀

शुक्लपक्ष की तिथियाँ	२	५	६	९	१२	१३
कृष्णपक्ष की तिथियाँ	१	४	५	८	११	१२

हवनमें शाकल्यविचार- यथाशक्ति ली गई सामग्रीमें तिल का आधा भाग चावल, चावलका आधा यव (जौं), यव का आधा शर्करा और सबके अनुपातमें घृत लेना चाहिए। तिल सफेद लेने चाहिये, क्योंकि काले तिलोंमें अधिकांशतः कीड़े पाये जाते हैं।

❀ गृहनिर्माण मुहूर्त्त ❀

शेषकी चालका विचार- सिंह, कन्या और तुलाकी संक्रांतियोंमें शेषनाग का मुख ईशानमें रहता है तब भवन निर्माणार्थ नीमरखने, भूमिपूजन करने, के लिये जमीनको आग्नेयकोण (पूर्व दक्षिण के मध्य) खुदवाना चाहिये। ऐसे ही सभी संक्रांतियोंके लिये निम्नचक्र से दिशाओंका ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। जिसमें विवाह, देवालय, स्कूल आदि निजीभवन गृहारम्भ और जलाशय बनवाने के लिये जमीन किस दिशामें खोदी जाय यह लिखा है।

❀ अथ खात (भूमि खोदना) चक्रम् ❀

सूर्य	विवाहे	देवालये	गृहारम्भे	जलाशये	शुभस्थान
सूर्य	२।३।४	१२।१।२	५।६।७	१०।११।१२	आग्नेय दिशा
सूर्य	११।१२।१	९।१०।११	२।३।४	७।८।९	नैर्ऋत्य दिशा
सूर्य	८।९।१०	६।७।८	११।१२।१	४।५।६	वायव्य दिशा
सूर्य	५।६।७	३।४।५	८।९।१०	१।२।३	ईशान दिशा

❀ गृहारम्भे शेषनाग फलम् ❀

फन दावै त्रिरिया डंशे, पूंछ दवै भरतार।
जो कोई दावै मध्य में, होय कुटुम्ब संहार॥

अर्थ- जो कोई शेष नागके फन (मुख) पर से भवन निर्माणहेतु नीम रखवाकर चिनाई शुरू करादे तो उस भवनके मालिककी स्त्री नहीं बचती, इसीतरह पूँछसे स्वयं गृहकर्त्ता और मध्यसे कुटुम्बकी हानि होती है। इसलिए शेषकी चाल बचाकर मुहूर्त करना चाहिए।

❀ गृहारम्भ मुहूर्त्त शिल्पशास्त्र ❀

चार वेद तिथि दुगुनि करि, नाम के अक्षर जोड़।
शिव के नैना(३) भाग दे, विश्वकर्मा ईंट चहोड़॥
एक बचे लख्खेश्वरि, दोय बचे धनवान।
शून्य बचे जीवे नहीं, शिल्प वचन प्रमान॥

❀ चन्द्रमा विचार ❀

मेष मकर वृष कर्कट सोते, कार्य समय ऐसे शशि होते।
कन्या मिथुन तुला धनु ठाडे, कुम्भ मीन सिंह वृश्चिक बैठे॥
सोते कूप खुदाइये, बैठि बसइये ग्राम।
ठाडे कटक सिंधारिये, शिल्पशास्त्र प्रमाण॥

अग्निवाण-जिस किसीभी राशिमें गतिशील सूर्यके भुक्तांश २।११।२०। २९ होने पर अग्निमांश का समय अग्निबाणदोष से युक्त होता है। जोकि गृहकार्यमें सर्वथा वर्जित है। मंगलवार में अतिनेष्ट हो जाता है।

पृथ्वीशयन- सूर्यसंक्रांति से ५।७।९।१०।२१।२४ इतनेदिन धरती सोती है। **द्वितीयमत-** सूर्यनक्षत्रात् ५।७।९।१२।१९।२६ भूमिशयन करती है। इन नक्षत्रोंमे भी क्रमशः ४।८।५।३।६।७ घटी कलांश भूशयन होता है। शेषकाल वर्जित नहीं। नोट- भूमिशयन ज्योतिषके सन्दर्भ में अनसुलझी पहेली है। अधिकतर विद्वान निम्नलिखित दोहा के समर्थक है। यथा-

संक्रांति मिति दिन पञ्चम, सप्तम नवमे जोय।
दस इक्कीस चौबीसवें, षट् दिन पृथ्वी सोय॥

❀ शुभाशुभ विचार ❀

जहां निवास करनाहो उस भूमिपर एकहाथ समकोण गड्डा बनावें, उसको पानी से भरें, अग्रिम दिन प्रातःकाल में देखें यदि जल परिपूर्णहो तो शुभ, अर्धजलयुक्त मध्यम, तथा निर्जल छिन्नभिन्न हो तो उसे अशुभ जानें।

किसीनगर, ग्रामादि में स्थायी निवास बनाने अथवा कोई कारोबार या उसकी शाखा स्थापित करने,कोई भागीदार,प्रबन्धक या कर्मचारी नियुक्त करने,किसी से व्यापारिक या आर्थिक स्थायी सम्बन्ध स्थापित करने, 'वस्तु' विशेषके उत्पादन या व्यापार करने आदि के समय यह स्वाभाविक प्रश्न उपस्थित होता है कि उस नगर ग्राम या व्यक्ति और 'वस्तु'के कार्य-व्यापारसे उसके कर्ताको लाभ होगा या नहीं? ज्योतिषशास्त्र दृष्ट्या इसका निश्चय करनेके लिए वास्तु प्रकरणमें तीन विधियां बताई है। १ राशिपरित्वेन २. नक्षत्रपरित्वेन और ३. काकिणीपरित्वेन

व्यवहारकर्त्ता व्यक्तिकी संज्ञा 'साधक' और जिससे व्यवहार करना है उस नगर,व्यक्ति या वस्तु आदिकी संज्ञा'साध्य'समझनी चाहिए। इस सन्दर्भमें पुकारने वाले नाम,राशि,नक्षत्रका ही उपयोग श्रेष्ठ रहता है। यथा-

काकिण्यां वर्ग शुद्धौ च, वादे द्यूते स्वरोदये।
मन्त्रे पुनर्भू वरणे, नामराशेः प्रधानतः॥

❀ राशि परित्वेन विचार ❀

साधक की राशिसे साध्य (नगर, ग्राम, व्यक्ति विशेष या वस्तु आदि) की राशि २।५।११वीं हो तो विशेष शुभ, ९।१० होने पर अल्पशुभ तथा १।३।४।६।७।८।१२वीं हो तो अशुभ समझनी चाहिए। साधक से साध्य की राशि १।७ होने पर शत्रुता, ३।६ से हानि, ४।८।१२वीं होने पर रोगोत्पात(विपत्ति) कारक होती है।

नक्षत्रपरित्वेन विचार- साध्यके नक्षत्रसे साधकके नक्षत्र तक साभिजित् गणना करें। ७ तक धनैश्वर्य वृद्धि मान-सम्मान, ८ से १४ तक धन हानि, १५ से २१ तक सुखोपभोग सम्पत्ति लाभ। आगे २२ से २८ तक अतिनेष्ट जानें।

काकिणी परित्वेन विचार

वर्ग वर्गसंख्या	अ वर्ग (१)	क वर्ग (२)	च वर्ग (३)	ट वर्ग (४)	त वर्ग (५)	प वर्ग (६)	य वर्ग (७)	श वर्ग (८)
वर्गाक्षर	अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
स्वामी	गरुड़	विडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा
शत्रु	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा	गरुड़	विडाल	सिंह	श्वान
दिशा	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
स्वरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२

काकिणी विचार

निवास करने वालेकी वर्ग संख्याको दूना करके स्थानकी वर्ग संख्या जोड़कर ८ से भाग दें, जो शेष बचे वह प्रवासी की काकिणी होती है। और स्थान की वर्ग संख्या दूनी करके प्रवासीके वर्ग की संख्या जोड़कर ८ का भाग देने पर ग्रामकी काकिणी होती है। बसने वालेकी काकिणी अधिक हो तो उत्तम लाभप्रद जानें। यह श्रीनारदजी के मतानुसार है सो यह सही है। रामाचार्य जी का मत इसके भिन्न है।

काकिणीसंख्या, लाभालाभ ज्ञानायचक्रम्

नगरकावर्ग	व्यक्ति का वर्ग: अवर्ग (१)	कवर्ग (२)	चवर्ग (३)	टवर्ग (४)	तवर्ग (५)	पवर्ग (६)	यवर्ग (७)	शवर्ग (८)	काकिणी
अवर्ग (१)	३ / ३ सम	५ / ४ लाभ	७ / ५ लाभ	१ / ६ हानि	३ / ७ हानि	५ / ० लाभ	७ / १ लाभ	१ / २ हानि	व्यक्ति / नगर
कवर्ग (२)	४ / ५ हानि	६ / ६ सम	० / ७ हानि	२ / ० लाभ	४ / १ लाभ	६ / २ लाभ	० / ३ हानि	२ / ४ हानि	व्यक्ति / नगर
चवर्ग (३)	५ / ७ हानि	७ / ० लाभ	१ / १ सम	३ / २ लाभ	५ / ३ लाभ	७ / ४ लाभ	१ / ५ हानि	३ / ६ हानि	व्यक्ति / नगर
टवर्ग (४)	६ / १ लाभ	० / २ हानि	२ / ३ हानि	४ / ४ सम	६ / ५ लाभ	० / ६ हानि	२ / ७ हानि	४ / ० लाभ	व्यक्ति / नगर
तवर्ग (५)	७ / ३ लाभ	१ / ४ हानि	३ / ५ हानि	५ / ६ हानि	७ / ७ सम	१ / ० लाभ	३ / १ लाभ	५ / २ लाभ	व्यक्ति / नगर
पवर्ग (६)	० / ५ हानि	२ / ६ हानि	४ / ७ हानि	६ / ० लाभ	० / १ हानि	२ / २ सम	४ / ३ लाभ	६ / ४ लाभ	व्यक्ति / नगर
यवर्ग (७)	१ / ७ हानि	३ / ० लाभ	५ / १ लाभ	७ / २ लाभ	१ / ३ हानि	३ / ४ हानि	५ / ५ सम	७ / ६ लाभ	व्यक्ति / नगर
शवर्ग (८)	२ / १ लाभ	४ / २ लाभ	६ / ३ लाभ	० / ४ हानि	२ / ५ हानि	४ / ६ हानि	६ / ७ हानि	० / ० सम	व्यक्ति / नगर

नोट :- व्यक्ति और नगर के सामने (कोष्ठकमें) बाईं ओर लिखी संख्याएं व्यक्ति और नगर की काकिणी संख्याएं है। साथ ही लाभ, हानि और सम रहने का संकेत है।

काकिणी विचार- निवासके लिये तो करते ही है, इसको अन्य और भी कामों में विचारा जाता है जैसे- किसी को किसीके साथ फर्म आदि चालू करनेके लिये समझौता करना हो। कोई कहे कि मैं अमुक वस्तु विशेष का उत्पादन करना चाहता हूँ या दुकान खोलना चाहता हूँ। फायदे में रहूँगा। या नहीं? कौन ऋणी और कौन धनी होगा? इसका उत्तर काकिणीपरित्वेन सहज प्राप्त कर सकते हैं। पहले शहरके नाम का विचार कर, फिर मोहल्ला-नगरका पुनः ब्लाक का अथवा सेक्टर का नाम देखकर निर्णय लेना चाहिए। इसीसे वाहन, पशु नौकर चाकर के शुभाशुभ का सहज ज्ञान सम्भव है।

गृहारम्भमें- शुभमास वै.,आ.,श्रा.,का.,मार्ग.,माघ और फाल्गु. **शुभनक्षत्र-** अ.रो.मृ.पु.पु.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू.उषा.श्र.ध.श.उभा.रेव. श्रेष्ठ। ४।६।८।९।१४।३० तिथि,रवि भौम को छोड़कर शेष दिन गुरु शुक्रके उदयमें शुभ जानें। अग्निबान का समय त्याज्य है।

सूर्यभात् वृषभ चक्रम्

शिर	अग्रपाद	पृ.पाद	पृष्ठ	द.कु.	पुच्छ	बा.कु.	मुख	वृषभाङ्ग
३	४	४	३	४	३	४	३	नक्षत्र
दाह	शून्य	स्थिर	धन	लाभ	क्षय	दारिद्रय	पीड़ा	फलम्

गृहारम्भ लग्नमें उच्चका शुक्र हो या उच्च का गुरु चतुर्थ भाव में हो अथवा एकादश भाव में उच्च का शनि हो तो वह घर बहुत काल तक लक्ष्मी से युक्त रहता है।

रोहिणी चक्रम्

१	५	५	३	२	४	३	४	नक्षत्र
बहुजल	सुसिद्धि	अभंगद	रुज	असिद्धि	यथार्थ	प्रसिद्धि	जलभंग	फलम्

रोहिणी नक्षत्रसे नलकूप कार्य दिन नक्षत्र तक गिने फल रोहिणी चक्रसे जानलें।

गृहप्रवेश- रिक्ता तिथि ४।९।१४ व अमावस्या रवि भौमवार त्यागकर अश्विनी,रोहिणी,मृग.,आर्द्रा,पुन.,पुष्य,उफा., हस्त, चित्रा, स्वाती,अनु.,ज्येष्ठा,मूल,उषा,श्रवण,धनि.,शत.,उभा. और रेवती नक्षत्र शुभ है। यदि सर्वार्थसिद्धि अमृतसिद्धि आदि योग बन जाए तो रविवार भी मान्य है।

शुभ लग्न- वृष, मिथुन, सिंह, वृश्चिक, धनु, कुम्भ और मीन।

सूर्यभाद्गणना-शुभाशुभनक्षत्र

५तक	१३तक	२१तक	२५तक	२८तक	नक्षत्रसंख्या
नेष्ट	शुभ	अशुभ	श्रेष्ठ	मध्यम	फलम्

वास्तु पूजन

जिस भूमि पर मनुष्यादिप्राणी वास करते है, उसे वास्तु कहा जाता है। वास्तु की शुभाशुभ परीक्षा पूजनादि सौख्य समृद्धि हेतु आवश्यक है। मत्स्यपुराण अ.२५१ में लिखा है कि अन्धकासुरके वधके समय भगवान शंकरके ललाटसे पृथ्वी पर जो स्वेदबिन्दु गिरे उनसे एक भंयकराकृतिवाला, पुरुष प्रकट हुआ। जिसने अन्धकगणों का रक्तपान किया फिरभी अतृप्त हो त्रिलोकीको भक्षण करनेके लिए उद्यत हो गया। जिसे महादेवादि देवोंने पृथ्वी पर सुलाकर वास्तुदेवताके रुपमें प्रतिष्ठितकिया और उसके शरीरमें सभी देवताओंने वास किया, इसीलिए वह वास्तुपुरुष या वास्तुदेवता कहलाने लगा। देवताओंने वास्तुको गृहनिर्माणके वैश्वदेव बलिके तथा पूजन, यज्ञ, यागादिके समय पूजित होनेका वर देकर कहाकि वापी, कूप तड़ाग गृह, मन्दिर, बाग बगीचा जीर्णोद्धार यज्ञ मण्डप निर्माणादि के समय जो तुम्हारी पूजा प्रतिष्ठा अर्चना करेगें, उन्हें सभी प्रकारकी सौख्यसमृद्धि मिलेगी। वास्तुदेवताका मूल मन्त्र- **वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवान:। यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्वशंनो भव द्विपदेशं चतुष्पदे।।**

मकानमें कहाँ क्या बनावें?

स्नानागार दिशि प्राच्यां आग्रेय्यां ग महानसम्। याम्यायां शयनागार नैर्ऋत्यां वस्त्रमन्दिरम्।। वारुण्यां भोजनगृहं वायव्यां पशुमन्दिरम्। भण्डारं वेश्मोत्तस्यां ऐशान्यां देवतालयम्।। एनान्युक्तानि शस्तानि स्वस्वये स्वरूप क्षिवपि।

वायव्य — उत्तर — ईशान

धान्य संग्रह आभूषण कक्ष	रति कक्ष	शयन कक्ष	रोगी कक्ष	पूजा गृह
सन्तान कक्ष				स्टोर
भोजन कक्ष		आंगन		मुख्य द्वार
अध्ययन कक्ष				स्नान घर पानी(जल)
शौचालय अस्त्रशस्त्रकक्ष	स्वामी कक्ष	बेड रुम	स्टोर कक्ष	पाक गृह

पश्चिम (बाएँ) — पूर्व (दाएँ)

नैऋत्य — दक्षिण — अग्नि

घरसे किस दिशामें कौनसा वृक्ष शुभ और कौनसा अशुभ होता है

पूर्वमें-वट,आम,बरगद, शुभ व पीपल अशुभ रहताहै। आग्नेयमें-अनार शुभ व वट,पीपल,पाकर,गूलर,सेमर अशुभ होता है। दक्षिणमें-मूलर शुभ व पाकर, तुलसीके पेड़ नेष्ट होते है। नैर्ऋत्यमें-इमली,नींबू,सेमरगद्दा,छोंकर वृक्ष शुभ होताहै। पश्चिममें-पीपल,चन्दन,बेला,गुलाब शुभ व वटवृक्ष को अशुभ होताहै। वायव्यमें-बेल,आमला,अशोक वृक्ष शुभ रहताहै। उत्तरमें-पाकर कैथ और शमीवृक्ष को शुभ जानें। ईशानमें- आँवला, चन्दन वृक्ष शुभ माना गया है।

आवश्यक मुहूर्त्ताः

मुहूर्त्ताः	तिथिः	वाराः	नक्षत्रलग्नमासादिकम्
प्र.रजोदर्शन	सत्	चं. बु. गु. शु.	अ.रो.मृ.पुष्य.उफा.ह. चि. स्वा. अनु. उषा. श्र. ध. श. उभा. रे. नक्षत्र। वै. ज्ये. श्रा. आश्वि.मार्ग. माघ. फाल्गु.। शु.प.,शु.ल.दिनमें शुभ है।
रजःस्नानम् गर्भाधानं	सत्	चं. बु. गु. शु.	अ.रो.मृ.उफा.ह.स्वा.अनु.उषा.श्र.ध.श.उभा.रे.श्रेष्ठः। रवि,भौम,शनिवार,भद्रा व्यतीपातादि कुयोगरहित दिन उपरोक्त मासादि में शुभः। रजोदर्शनान्तर ४ से १६ रात्रिपर्यन्त पुत्रेक्षुकसनरात्रिस्त्रीसमागमकर्त्तव्यम्।
पुंसवन सीमंतकर्म	सत्	र. मं. वृहस्पति	मृ.पुन.पुष्य.हस्त.मू.श्र.रेव.शुक्लपक्षे,मासेश्वरे सबले। तृतीयमासे पुंसवन, छटे-आठवें सीमन्त एवं श्रीविष्णुसहित श्रीपूजनार्चनम् कर्त्तव्म्।
सूतिकास्नान मुहूर्त्तः	सत्	र. चं. बु.गु.शु.	अश्वि.रो.मृग.उफा.हस्त.चि.स्वा.अनु.उषा.उभा.रेव.। सद्भानि, पञ्चमशुद्धिः लग्ने। यत्लेनचिन्तयेत्बुधः।
जातकर्म (नामकरण)	सत्	र. चं. बु.गु.शु.	अ.रो.मृ.पु.पुष्य.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.उषा.श्रव.ध.श.उभा.रे.जन्मतः १०।११।१२।१५।१६वेंदिने अथवा सवा महीनेमें नामकरणसंस्कारशुभः। **आश्विन्याश्लेषामघाश्च ज्येष्ठामूलरेवत्याम्। मूलसंज्ञकषट्भानिजन्म तत् नामकरणम्।। पुनरावृत्तिजन्मनक्षत्रः तद्दिनेशुभम्भूयात्।**
जलपूजन (कुआँपूजन)	सत्	चं. बु. गु. शु.	मृ.पुन.पुष्य.हस्त.चि.अनु.मू.श्रव.रेव.सद्भानिश्रेष्ठः। चैत्र,पौष,मलमास, मासान्त,कुयोगदिन एवं गुरुशुक्रास्तकाल वर्ज्यः। शेष कुलाचारानुसारेण
जातकानाम् अन्नप्राशनं	२।३।५ ७।८।१० १३।१५	चं. बु. गु. शु.	**बालानां षष्टादिसममासेषु कन्यायां पञ्चमादिविषमासेषु शुभः।** अ.रो.मृ.पुन.पु.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.उषा.श्र.ध.श.उभा.रेव. सद्भानिग्राह्यः। मीन वृश्चिक मेष लग्नानि। जन्मर्क्ष च वर्ज्यम् १०में शुद्धे।
निष्क्रमणमु.	सत्	शुभ	चतुर्थमासे यात्रोक्त तिथिवार नक्षत्रेषु अथवा द्वादशदिने गद्योत्सव संगे।
कर्णवेध चूड़ाकरण मुण्डन संस्कार	१।२।३ ५।६।७ ८।१०।११ १२।१३।१५	चं. बु. गु. शु. शुभयोगमें रवि	जन्मादिभात् १२ वा १६दिन वा ६।७।८ मासेषु वा विषमवर्षेशुभानि अश्वि.मृ.पुन.पुष्य.हस्त.चि.स्वा.अनु.अभि.श्रव.ध.श.रेव.भेषुचन्दः। ऽर्कबले अष्टमशुद्धलग्ने।। वर्ज्याः चैत्र पौष हरिशयनं जन्ममासं तथा ताराविरुद्धं च। रोगवानं मृत्युवानं हानिप्रदायकाः।। ज्येष्ठसुते च ज्येष्ठमासे विवर्जिताः।।
उपनयन सं. (यज्ञोपवीत) ब्राह्मण वैश्य और क्षत्रियों के लिए	२।३।५ १०।११।१२ वर्जित पौ१मा१ २ अ१०ज्ये.२	सू.चं.बु गु.शु. रविपुष्य गुरुपुष्या-मृत शुभः।	अ.रो.मृ.आ.पुन.पु.श्ले.पूफा.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू.पूषा.उषा.श्र.ध.श.पूभा. उभा.रेवतीनक्षत्रे उभयपक्षे ग्राह्यः वैशा.ज्ये.आषा.माघ फाल्गु. मासाः। लग्न २,३,५,६,९ शुभःचिन्तनीयम्। त्याज्याः- रोगवन्तः मृत्युवन्तःअन्यान्य योगाः कष्टकारकाः। वसन्त ग्रीष्म शरद् शिशिर ऋतु ग्राह्याः द्विजमात्रेण यज्ञोपवीतम्।। सामवेदीयशाखा वालोंके लिए भौमवार भी शुभः।

मुहूर्त्ताः	तिथिः	वाराः	नक्षत्रलग्नमासादिकम्
विद्यारम्भः वेदारम्भः	२।३।५ ६।१० ११।१२	चं. बु. गु. शु.	३या५वर्षे, अश्वि.रो.मृ.आर्द्रा.पुन.पु.पूफा.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू.पूषा.उषा श्रव.ध.श.पूभा.उभा.रे.सद्भानि अनध्यायवर्जितदिने(उत्तरायणे). ३पू.३उ. सर्वमान्य नहीं। श्रीगणेश,सरस्वती.लक्ष्म्यादिपूजनोपरान्त ज्ञानार्जनं शुभमभूयात।
स्त्रीणां चोटी जूड़ा करणम्	सत्	र. चं. गु. शु.	अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू.उषा.श्रव.उभा.रे.नक्षत्र। तथा २।३।४।५।१२ लग्न श्रेष्ठ।
चूड़ा पहरना	सत्	र. बु. गु. शु.	अश्वि.हस्त.चित्रा.स्वा.अनु.धनि.रे. नक्षत्र शुभः। सूर्यभाद्गणना ८नेष्ट, ३श्रेष्ठ, २नेष्ट, ७श्रेष्ठ, २नेष्ट, ४श्रेष्ठ, १नेष्ट जानें।
रोगमुक्त स्नानम्	असत्	र.मं.बु. गु. श.	अश्वि.भ.कृ.मृग.आ.पुष्य.पूफा.ह.चि.वि.अनु.ज्ये.मू.पूषा.श्र.ध.श.पूभा ये नक्षत्र और चर लग्न और अशुभचन्द्र ४।८।१२ में स्नान करें।
वधू प्रवेश मुहूर्त्त	सत्	सभी वार शुभ	विवाहसे २।४।५।६।७।८।१०।१२।१४।१६ दिनोंमें इसके पीछे विषममास विषमवर्षमें। अ.रो.मृ.पुष्य.म.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू.श्र.ध.उषा.उभा.रे. और स्थिरलग्नमें शुभः।कुछविद्वान तारोंकी छायामें विशेष शुभमानते हैं।
द्विरागमन गौना (मुकलावा)	सत्	शुभ वार	मेष वृश्चिके मकर कुम्भस्थोरवो,अ.रो.मृ.पुन.पु.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू. उषा.श्र.ध.श.उभा.रे सौम्ययुक्तादृष्टे २।३।६।७।१०।१२ लग्नेषु रवीज्य शुद्धियोगेसति। सम्मुखदक्षिणेविवर्जितेभृगौसत्। वर्षाभ्यन्तरे दोषाऽभावः।
गन्धर्वविवाह	सत्	र.मं.श.	अ.कृ.आर्द्रा.पुन.श्ले.ज्ये.ध.शत.इन नक्षत्रोंमें शुभः।
द्वारशाखा	५।७ ८।९	चं. बु. गु. शु.	रविभाद्गणना ४श्रेष्ठ,८नेष्ट,८श्रेष्ठ,३नेष्ट,४श्रेष्ठ,काष्ठशा.अ.ह.पुष्य.रो. मृ.उत्तरा३,स्वा.श्र.पाषाणे ध.श.पूभा.रे.। लग्न७।१०द्वारखाखा रोपण श्रेष्ठ
चूल्हा भट्टी	सत्	शुभ वार	पूर्वा३ रो. पुष्य.उत्तरा.३,अ.आर्द्रा.रविभाद्गणना। ६श्रेष्ठ,४नेष्ट,८श्रेष्ठ, ५नेष्ट,२श्रेष्ठ,२नेष्ट चन्द्रबले सति शुभं भूयात्।
क्रयनक्षत्र मुहूर्त्त	सत्	चं.बु.गु शु. श.	अ.मृ.पुन.पुष्य.ह.चि.स्वा.अनु.श्रव.ध.श.रे.बुधमें अपना द्रव्य देना नहीं, हस्तमें द्रव्य कर्ज लेना नहीं चाहिए।
विक्रय नक्षत्र मुहूर्त्त	शुभ तिथि	सभी वार	भ.कृ.रो.आ.श्ले.म.पूफा.उफा.वि.मू.पूषा.उषा.पूभा.उभा.नक्षत्र शुभदा,सभी वार शुभ जानें। रिक्ता व अमावस्या तिथि एवं कुम्भलग्न निषेधः।
ऋण का लेन देन कब करें			रविवार,मंगल,संक्रांतिदिन, वृद्धियोग, द्विपुष्कर त्रिपुष्करयोग और हस्त नक्षत्रमें ऋण ले तो मुक्ति न मिले। बुधवारमें अपना द्रव्य देना नहीं भौमवार में प्रदोषव्रत रखवर कर्जाचुकावें तो तुरन्त मुक्त हो जाएँ।

नोट- सत्तिथियाँ १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५, असत्तिथियाँ ४।६।८।९।१२।१४।३० सूर्यभाद् भौमभाद् या राहुभाद्गणना अथवा गुर्वाश्रितनक्षत्र अर्थात् सूर्यादि ग्रहाश्रित नक्षत्रसे दैनिक चान्द्रनक्षत्र तक गणना करके फल प्रसंगानुसार जानें। तिथियोंके नीचे जहाँ सत् लिखा हुआ है वहाँ पर सभी सत्तिथियाँ जाननी चाहिए। **स्मरण रहे-** तिथियाँ ८।१२ विकल्पमें मानी गई है। प्रसंगवस ग्राह्याग्राह्य समझनी चाहिए।

मुहूर्त्ताः	तिथिः	वाराः	नक्षत्रलग्नमासादिकम्
वापी नलकूप तड़ागारम्भः	सत्	र.च.बु. गु.शु.श.	अ.रो.मृ.आर्द्रा.पुन.पुष्य.मघा.उफा.हस्त.चि.स्वा.अनु.उपा.ध.श.उभा.र. शुभे मासे स्थिरे लग्ने च बुध गुर्वोदये।
शिशुगोदलेना	सत्	र.मं.गु.शु	अ.पुष्य.ह.चि.स्वा.वि.अनु.ध.नक्षत्र सिंह वृष लग्नमेंशुभ त्याज्यः८।९।१ल.
नौकर रखने का मुहूर्त्त	सत्	म.श. त्याज्यः	अ.मृ.पुष्य.हस्त.चि.स्वा.अनु.अभि.रे.राशिशमैत्री+नक्षत्र योनि मैत्रीगण तथा काकिणीपरित्विन वर्गपतिका चिन्तन करना श्रेष्ठ है।
प्लास्टिक उद्योग	सत्	बु.गु. सोम	अश्वि.पुष्य औरहस्तनक्षत्रउत्तम। मिश्रसंज्ञकःविशा.कृति.मध्यम। अमृतसिद्धि, सर्वार्थसिद्धियोग उत्तम। अन्यान्य शुभाशुभ योगों का भी विचार करें।
सौन्दर्य प्रसाधन	सत्	रवि चं. बु. शु.	रो.पुन.उफा.उपा.श्रव.ध.शत.शुभ। क्षयतिथि कुयोगरहित दिनमें कार्यारम्भ करें। अमृतसिद्धि व सर्वार्थसिद्धियोग उत्तम जानें।
वस्त्रोद्योग मुहूर्त	सत्	चं. बु. गु. शु.	अश्वि.रो.पुष्य.उफा.ह.उपा.श्रव.उभा.नक्षत्र शुभ हैं। राशिसे चन्द्रमा का विचार अवश्य करें। उद्योग मुहूर्त देखें।
फिल्मनिर्माण व संचालन	२।५।७ १०।१५	बु. गु. शु.	अश्वि.मृग.पुष्य.ह.चि.अनु.रेव.नक्षत्रोंमें शुभ। फिल्मप्रसारण हेतु रवि शुक्रवार सर्वोत्तम है। कर्त्ताके लिए चन्द्रमा शुभ हो।
स्वेटर अन्य बुनाई मुहूर्त्त	भद्रापूर्णा जया	रवि चं. बु. शु.	रो.मृग.उफा.चि.अनु.उपा.उभा और रेव.नक्षत्रमें कार्यारम्भ अभीष्ट सिद्धिदायक होता है। शुभ योग देख लें।
कलकारखाना उद्योग मुहूर्त्त	सत्	सोम मं. बु. शनि	अश्वि.पुन.पुष्य.हस्त.चित्रा.अनु.ज्ये.धनि. रेव. नक्षत्र शुभ हैं। धातुओंसे सम्बन्धित उद्योगमें तिथि वारादि का निर्णय स्वयं करें। चरलग्न व पुन. स्वा.श्रव. शत नक्षत्रभी शुभ हैं।
ईंट बनाना भट्टा लगाना अग्नि लगाना	सर्वतिथि ग्राह्याः ३०वर्ज्यः	रवि गु. शनि	अश्वि.रो.पुष्य.ह.उफा.उपा.श्रव.उभा.रेव.नक्षत्रशुभ। अथेष्टिका निर्माण भौम भाद्गणना ५सौख्य,३मृत्यु,३सौख्य,५मृत्यु,७सौख्य,५मृत्यु। भट्टेमें अग्नि लगाना ७शोक,५लाभ,७रोग,४क्षय,५सुख होता है।
शीशा और चित्रात्मककला	सत्	र.चं.बु. गु.शु.	अश्वि.मृग.पुष्य.ह.चि.अनु.अभि.रेव.नक्षत्रोंमें शीशा उत्पादन चित्रात्मक शैलीके सभी कार्य सफल होते हैं।
औषधि नि. व सेवन मु.	सत् तिथियाँ	र.चं. बु.गु.शु.	अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.ह.चि.स्वा.अनु.मू.अभि.श्रव.ध.श.रे.नक्षत्र और शुभलग्न मुहूर्त्तमें औषधिनिर्माण तथा सेवन करना शुभ होता है
भूमि क्रय-विक्रय मु.	सत् तिथियाँ	च.बुध गु. शु.	अश्वि.मृ.पुन.आश्ले.म.पूफा.वि.अनु.मूल.पूषा.पूभा.र.श्रेष्ठ है। कर्त्ताकी राशिसे ४।८।१२वाँ तथा घात चन्द्रमा वर्जित हैं।
पशु लेन-देन मुहूर्त्त	४,९व १४त्याज्य	भौमवार त्याज्य	अश्वि.पुन.पुष्य.ह.वि.ज्ये.ध.श.रेव.नक्षत्रोंमें गौ का लेन-देन शुभ है। अन्य पशु हेतु पुन. पूफा. ह. अनु. पूषा. ज्ये. पूभा. मूल. धनि और रेवती शुभ जानें।
			शकुन- नौमी चौदस चौथ चौपाया। हानि करे मंगल घर आया।

मुहूर्त्ताः	तिथिः	वाराः	नक्षत्रलग्नमासादिकम्
कुम्भकार मु. सीमेन्ट उद्योग	४।९।१४ त्याज्यः	भौमवार त्याज्यः	रोहि.मृ.पुन.पुष्य.ह.चित्रा.स्वा.अनु.ज्ये.श्रव.रेव.शुभ है। ईंट,चूना,सुरखी,पत्थर तथा सीमेन्ट उत्पादन में तीनोंउत्तरा-उफा.उपा.उभा.भी मान्य हैं।
स्कूटर,कार बस अन्य वाहनक्रयम्.	सत् तिथियाँ	भौमवार त्याज्यः	अश्वि.मृ.पुन.पुष्य.ह.स्वा.अभि.श्र.ध.शत.रेव.श्रेष्ठ,कर्त्ताकी राशिसे ४।८।१२वां एवं घात चन्द्रमा नेष्ट जानें। जन्मकुण्डलीमें शुभाशुभ समयका ध्यान कर लेना चाहिए। घात-मांस,तिथि वार नक्षत्रादि चक्र पृ.१०७ पर देखें।
रामायणादि कथा प्रारंभ मुहूर्त्त	रिक्ता ४।९।१४ त्याज्यः	सभी वार श्रेष्ठ	गुर्वाश्रितनक्षत्रसे १६संख्यांक तक अर्थलाभ,कार्यसिद्धि,२४तक नेष्ट, आगे२७ तक मोक्षप्रद जानें। देवप्रीत्यर्थ शुक्लपक्षमें और प्रेतदोषनिवृत्ति हेतु कृष्णपक्षमें शुभ है। भ.कृ.वि.मू.नक्षत्र एवं कर्त्ताकीराशिसे ४।८वां चन्द्रमा नेष्ट होता है।
देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त	सभी तिथियाँ	सभी वार श्रेष्ठ	अ.रो.मृ.आर्द्रा.पुन.पुष्य.म.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.ज्ये.मू.उपा.श्र.ध.श.उभा. र.गुरु-शुक्र के उदयमें, स्थिरलग्न,कृष्णपक्षमें दशमीतक,जलाशय वागादि की प्रतिष्ठाभी शुभ है। १४तिथि में शिव,४में श्रीगणेश,भाद्रपदमें श्रीकृष्ण, आश्वि.नवरात्रमें देवी, चैत्रीपूर्णिमामें बजरंगबलीकी स्थापनाहेतु शुभ है। सात्त्विकदेव उत्तरायणे तथा तामसी देवी देवता इच्छित काले।
कृषिकर्म मु.	सत् तिथियाँ	भौमवार त्याज्यः	अ.रो.मृ.पुन.पुष्य.म.उफा.ह.चि.स्वा.अनु.मू.उपा.श्र.ध.श.उभा और रेव. में खेत जोतना शुभ है। सूर्यभात्गणना ३नेष्ट,३श्रेष्ठ,३नेष्ट,५श्रेष्ठ,३नेष्ट, ५श्रेष्ठ,३नेष्ट,२श्रेष्ठ जानें।
बीजवोवन मुहूर्त्त	सत्	भौमवार वर्ज्य	पुन.वि.श्र.और श.त्यागकर शेष उपरोक्त नक्षत्रोंमें बीजबोना श्रेष्ठ जानें। राहुभाद्गणनाक्रम ध्यान रखें।८ने.३श्रे.१ने.३श्रे.१ने.३श्रे.१ने.३श्रे.४ने.समझें।
कम्प्यूटर नि. व संचालन	सत् तिथियाँ	भौम वर्जित	अश्वि.मृ.पुन.पुष्य.ह.चित्रा.स्वा.अनु.ध.श.और रेव.नक्षत्र,शुभयोगोंमें कर्त्ता की राशिमें ग्रहगणना श्रेष्ठ होनेपर सफलता सुनिश्चित मिलती है।
प्रक्षेपास्त्र मुहूर्त्त	१।४।५ ८।१० १३।१५	र. मं. शु. श.	भ.आर्द्रा.श्ले.म.ज्ये.पूफा.मू.पूषा.पूभा.नक्षत्र चर, द्विस्वभाव,लग्न तथा चर, लाभ,अमृत और शुभके चौघड़िया मुहूर्त्त में मारक अस्त्र-शस्त्रोंका निर्माण व प्रयोग सफल रहता है।
हवाई यात्रा मुहूर्त्त	यात्रोक्त तिथियाँ	सभी वार	अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.पूफा.उफा.ह.अनु.ज्ये.मू.पूषा.उपा.श.धनि.पूभा.उभा. रे.नक्षत्र श्रेष्ठ। कुयोग रहित शुभ मुहूर्त्त में यात्रा सफल होती है।
पुल निर्माण मुहूर्त्त	सत् तिथियाँ	भौम श. वर्जित	अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.उफा.ह.चि.अनु.उपा और रेव.नक्षत्र स्थिरलग्न तथा सर्वार्थसिद्धि अमृतसिद्धि या रवियोगमें निर्माण सफल रहता है।
बहीखाता पूजन	शुभ दिन	शुभ तिथि	मृग.पुन.पुष्य.उफा.ह.चि.अनु.उपा.श्र.उभा.रे. लग्न १।३।४।६।७।१०।१० श्रीगणेश लक्ष्मीन्द्र कुबेरभण्डारी आदि देवपूजनोपरान्त खातापूजन शुभ है।

❁ चौघड़िया मुहूर्त्तों के प्रारम्भ काल जानने की तालिका ❁

तारीख		दिन के चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारम्भकाल घं.मि.								रात्रि के चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारम्भकाल घं.मि.							
		पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां
जनवरी	१	७।१३	८।३०	९।४७	११।५	१२।२२	१३।३९	१४।५७	१६।१४	१७।३२	१९।१४	२०।५७	२२।४०	०।२३	२।६	३।४८	५।३१
	६	७।१५	८।३२	९।५०	११।७	१२।२५	१३।४२	१५।०	१६।१७	१७।३५	१९।१७	२१।०	२२।४२	०।२५	२।७	३।५०	५।३२
	११	७।१५	८।३३	९।५१	११।९	१२।२७	१३।४५	१५।३	१६।२१	१७।३९	१९।२१	२१।३	२२।४५	०।२७	२।९	३।५१	५।३३
	१६	७।१५	८।३३	९।५२	११।१०	१२।२९	१३।४७	१५।६	१६।२४	१७।४३	१९।२४	२१।५	२२।४७	०।२८	२।९	३।५१	५।३२
	२१	७।१४	८।३३	९।५२	११।११	१२।३०	१३।४९	१५।८	१६।२७	१७।४७	१९।२७	२१।८	२२।४९	०।३०	२।१०	३।५१	५।३२
	२६	७।११	८।३१	९।५१	११।११	१२।३१	१३।५१	१५।११	१६।३१	१७।५२	१९।३१	२१।११	२२।५१	०।३१	२।११	३।५१	५।३१
	३१	७।१०	८।३०	९।५१	११।११	१२।३२	१३।५३	१५।१३	१६।३४	१७।५५	१९।३४	२१।१३	२२।५२	०।३२	२।११	३।५०	५।२९
फरवरी	५	७।७	८।२८	९।५०	११।११	१२।३३	१३।५४	१५।१६	१६।३७	१७।५९	१९।३७	२१।१६	२२।५४	०।३३	२।११	३।५०	५।२८
	१०	७।५	८।२७	९।४९	११।११	१२।३४	१३।५६	१५।१८	१६।४०	१८।३	१९।४०	२१।१८	२२।५५	०।३३	२।११	३।४८	५।२६
	१५	७।०	८।२३	९।४६	११।१०	१२।३३	१३।५६	१५।२०	१६।४३	१८।७	१९।४३	२१।२०	२२।५६	०।३३	२।९	३।४६	५।२२
	२०	६।५६	८।२०	९।४४	११।८	१२।३३	१३।५७	१५।२१	१६।४५	१७।१०	१९।४५	२१।२१	२२।५६	०।३२	२।८	३।४३	५।१९
	२५	६।५१	८।१६	९।४१	११।६	१२।३२	१३।५७	१५।२२	१६।४७	१८।१३	१९।४७	२१।२२	२२।५६	०।३१	२।६	३।४०	५।१५
मार्च	२	६।४७	८।१३	९।३९	११।५	१२।३२	१३।५८	१५।२४	१६।५०	१८।१७	१९।५०	२१।२४	२२।५७	०।३१	२।५	३।३८	५।१२
	७	६।४१	८।८	९।३५	११।३	१२।३०	१३।५७	१५।२५	१६।५२	१८।२०	१९।५२	२१।२५	२२।५७	०।३०	२।२	३।३५	५।७
	१२	६।३६	८।४	९।३२	११।०	१२।२९	१३।५७	१५।२५	१६।५३	१८।२२	१९।५३	२१।२५	२२।५६	०।२८	२।०	३।३१	५।३
	१७	६।३१	८।०	९।२९	१०।५८	१२।२८	१३।५७	१५।२६	१६।५५	१८।२५	१९।५५	२१।२६	२२।५६	०।२७	१।५८	३।२८	४।५९
	२२	६।२५	७।५५	९।२५	१०।५५	१२।२६	१३।५६	१५।२६	१६।५६	१८।२७	१९।५६	२१।२६	२२।५५	०।२५	१।५५	३।२४	४।५४
	२७	६।२०	७।५१	९।२२	१०।५३	१२।२५	१३।५६	१५।२७	१६।५८	१८।३०	१९।५८	२१।२७	२२।५५	०।२४	१।५३	३।२१	४।५०
अप्रैल	१	६।१४	७।४६	९।१८	१०।५०	१२।२३	१३।५५	१५।२७	१६।५९	१८।३२	१९।५९	२१।२७	२२।५४	०।२२	१।५०	३।१७	४।४५
	६	६।८	७।४१	९।१४	१०।४७	१२।२१	१३।५४	१५।२७	१७।०	१८।३४	२०।०	२१।२७	२२।५३	०।२०	१।४७	३।१३	४।४०
	११	६।३	७।३७	९।११	१०।४५	१२।२०	१३।५४	१५।२८	१७।२	१८।३७	२०।२	२१।२८	२२।५३	०।१९	१।४५	३।१०	४।३६
	१६	५।५८	७।३३	९।८	१०।४३	१२।१९	१३।५४	१५।२९	१७।४	१८।४०	२०।४	२१।२९	२२।५३	०।१८	१।४३	३।७	४।३२
	२१	५।५३	७।२९	९।५	१०।४१	१२।१७	१३।५३	१५।२९	१७।५	१८।४२	२०।५	२१।२९	२२।५३	०।१७	१।४०	३।४	४।२८
	२६	५।४८	७।२५	९।२	१०।३९	१२।१६	१३।५३	१५।३०	१७।७	१८।४५	२०।७	२१।३०	२२।५३	०।१६	१।३८	३।१	४।२४
मई	१	५।४५	७।२२	९।०	१०।३८	१२।१६	१३।५४	१५।३२	१७।१०	१८।४७	२०।९	२१।३१	२२।५३	०।१५	१।३७	२।५९	४।२१
	६	५।४१	७।१९	८।५८	१०।३७	१२।१६	१३।५४	१५।३३	१७।१२	१८।५१	२०।१२	२१।३३	२२।५४	०।१५	१।३६	२।५७	४।१८
	११	५।३८	७।१७	८।५७	१०।३६	१२।१६	१३।५५	१५।३५	१७।१४	१८।५४	२०।१४	२१।३४	२२।५५	०।१५	१।३५	२।५६	४।१६
	१६	५।३५	७।१५	८।५५	१०।३५	१२।१६	१३।५६	१५।३६	१७।१६	१८।५७	२०।१६	२१।३६	२२।५५	०।१५	१।३५	२।५४	४।१४
	२१	५।३२	७।१२	८।५३	१०।३४	१२।१५	१३।५६	१५।३७	१७।१८	१८।५९	२०।१८	२१।३७	२२।५६	०।१५	१।३४	२।५३	४।१२
	२६	५।३०	७।११	८।५३	१०।३४	१२।१६	१३।५७	१५।३९	१७।२०	१९।२	२०।२०	२१।३९	२२।५७	०।१६	१।३४	२।५३	४।११
	३१	५।२९	७।११	८।५३	१०।३५	१२।१७	१३।५९	१५।४१	१७।२३	१९।५	२०।२३	२१।४१	२२।५९	०।१७	१।३५	२।५३	४।११
जून	५	५।२८	७।१०	८।५२	१०।३५	१२।१७	१३।५९	१५।४२	१७।२४	१९।७	२०।२४	२१।४२	२२।५९	०।१७	१।३५	२।५२	४।१०
	१०	५।२८	७।१०	८।५३	१०।३५	१२।१८	१४।१	१५।४३	१७।२६	१९।९	२०।२६	२१।४३	२३।१	०।१८	१।३५	२।५३	४।१०
	१५	५।२८	७।१०	८।५३	१०।३६	१२।१९	१४।२	१५।४५	१७।२८	१९।११	२०।२८	२१।४५	२३।२	०।१९	१।३६	२।५३	४।१०
	२०	५।२९	७।१२	८।५५	१०।३८	१२।२१	१४।४	१५।४७	१७।३०	१९।१३	२०।३०	२१।४७	२३।४	०।२१	१।३८	२।५५	४।१२
	२५	५।३०	७।१३	८।५६	१०।३९	१२।२२	१४।५	१५।४८	१७।३१	१९।१४	२०।३१	२१।४८	२३।५	०।२२	१।३९	२।५६	४।१३
	३०	५।३२	७।१४	८।५७	१०।४०	१२।२३	१४।५	१५।४८	१७।३०	१९।१४	२०।३१	२१।४८	२३।५	०।२३	१।४०	२।५७	४।१४

दिन के चौघड़िया मुहूर्त्त

	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां
रवि.	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग
चन्द्र.	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत
मंग.	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग
बुध.	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ
गुरू.	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ
शुक्र.	चर	लाभ	अमृत	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर
शनि.	काल	शुभ	रोग	उद्वेग	चर	लाभ	अमृत	काल

रात के चौघड़िया मुहूर्त्त

	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां
रवि.	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ
चन्द्र.	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर
मंग.	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल
बुध.	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग
गुरू.	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत
शुक्र.	रोग	काल	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग
शनि.	लाभ	उद्वेग	शुभ	अमृत	चर	रोग	काल	लाभ

प्रत्येक अहोरात्र में कुल सोलह चौघड़िया मुहूर्त्त वर्तमान रहते हैं। अर्थात् आठ दिन के और आठ ही रात्रि के चौघड़िया मुहूर्त्त होते हैं। उपरोक्त चक्रोंमें 'प्रत्येक 'वार' के सामने दिन तथा रात्रि में व्यतीत होने वाले चौघड़िया मुहूर्त्तों के नाम लिखे हुए है। पंचांग के पृष्ठ १४६ पर भी विवरण दिया गया है।

बाई ओर अंग्रेजी मासों की तारीखों के सामने पहला दूसरा, तीसरा इत्यादि चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारंभ होने का समय घण्टा-मिनटों में लिखा है, ध्यान रहे:- तालिका के पहले हिस्से में दिन के चौघड़िया और दूसरे में रात्रि के चौघड़िया मुहूर्त्त लिखें हैं।

अभीष्ट सन् के अभीष्ट मास की इच्छित तारीख में चौघड़िया मुहूर्त्त ज्ञात करने के लिए पहले पंचांग से उक्त तारीख में क्या वार है। यह जान लें। वारों के सामने दिन-रात्रि में बीतने वाले चौघड़िया मुहूर्त्तों के जो नाम लिखे हैं, वही मुहूर्त्त उक्त तारीख के सामने लिखित समयानुसार प्रारंभ होंगे।

उदाहरण :- ५ अप्रैल सन १९९८ श्रीरामनवमी के

❁ चौघड़िया मुहूर्त्तों के प्रारम्भ काल जानने की तालिका ❁

तारीख		दिन के चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारम्भकाल घं.मि.								रात्रि के चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारम्भकाल घं.मि.							
		पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां	पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवा	छठा	सातवां	आठवां
जुलाई	५	५।३३	७।१५	८।५८	१०।४०	१२।२३	१४।६	१५।४८	१७।३१	१९।१४	२०।३१	२१।४९	२३।६	०।२४	१।४१	२।५९	४।१६
	१०	५।३५	७।१७	८।५९	१०।४१	१२।२४	१४।६	१५।४८	१७।३०	१९।१३	२०।३०	२१।४८	२३।६	०।२४	१।४२	३।०	४।१८
	१५	५।३८	७।१९	९।१	१०।४३	१२।२५	१४।६	१५।४८	१७।३०	१९।१२	२०।३०	२१।४८	२३।६	०।२५	१।४३	३।१	४।१९
	२०	५।४०	७।२१	९।२	१०।४४	१२।२५	१४।६	१५।४८	१७।२९	१९।११	२०।२९	२१।४८	२३।७	०।२६	१।४४	३।३	४।२२
	२५	५।४३	७।२३	९।४	१०।४४	१२।२५	१४।६	१५।४६	१७।२७	१९।८	२०।२७	२१।४६	२३।६	०।२५	१।४४	३।४	४।२३
	३१	५।४६	७।२५	९।५	१०।४५	१२।२५	१४।५	१५।४५	१७।२५	१९।५	२०।२५	२१।४५	२३।५	०।२६	१।४६	३।६	४।२६
अगस्त	५	५।४९	७।२८	९।७	१०।४६	१२।२५	१४।४	१५।४३	१७।२२	१९।२	२०।२२	२१।४३	२३।४	०।२५	१।४६	३।७	४।२८
	१०	५।५१	७।२९	९।७	१०।४६	१२।२४	१४।२	१५।४१	१७।१९	१८।५८	२०।१९	२१।४१	२३।३	०।२५	१।४६	३।८	४।३०
	१५	५।५४	७।३१	९।९	१०।४६	१२।२४	१४।१	१५।३९	१७।१६	१८।५४	२०।१६	२१।३९	२३।१	०।२४	१।४६	३।९	४।३१
	२०	५।५६	७।३२	९।९	१०।४५	१२।२२	१३।५९	१५।३५	१७।१२	१८।४९	२०।१२	२१।३६	२२।५९	०।२३	१।४६	३।१०	४।३३
	२५	५।५९	७।३४	९।१०	१०।४५	१२।२१	१३।५७	१५।३२	१७।८	१८।४४	२०।८	२१।३२	२२।५७	०।२१	१।४५	३।१०	४।३४
	३१	६।२	७।३६	९।११	१०।४५	१२।२०	१३।५४	१५।२९	१७।३	१८।३८	२०।३	२१।२९	२२।५४	०।२०	१।४५	३।११	४।३६
सितम्बर	५	६।४	७।३७	९।११	१०।४४	१२।१८	१३।५१	१५।२५	१६।५८	१८।३२	१९।५८	२१।२५	२२।५१	०।१८	१।४४	३।११	४।३७
	१०	६।६	७।३८	९।११	१०।४३	१२।१६	१३।४९	१५।२१	१६।५४	१८।२७	१९।५४	२१।२२	२२।४९	०।१७	१।४४	३।१२	४।३९
	१५	६।८	७।३९	९।११	१०।४२	१२।१४	१३।४६	१५।१७	१६।४९	१८।२१	१९।४९	२१।१८	२२।४६	०।१५	१।४३	३।१२	४।४०
	२०	६।१०	७।४०	९।११	१०।४१	१२।१२	१३।४३	१५।१३	१६।४४	१८।१५	१९।४४	२१।१४	२२।४३	०।१३	१।४२	३।१२	४।४१
	२५	६।१३	७।४२	९।१२	१०।४१	१२।११	१३।४१	१५।१०	१६।४०	१८।१०	१९।४०	२१।१०	२२।४१	०।११	१।४१	३।१२	४।४२
अक्टूबर	१	६।१५	७।४३	९।१२	१०।४०	१२।९	१३।३७	१५।६	१६।३४	१८।३	१९।३४	२१।६	२२।३७	०।९	१।४१	३।१२	४।४४
	६	६।१८	७।४५	९।१२	१०।४०	१२।७	१३।३४	१५।२	१६।२९	१७।५७	१९।२९	२१।२	२२।३४	०।७	१।४०	३।१२	४।४५
	११	६।२०	७।४६	९।१३	१०।३९	१२।६	१३।३२	१४।५९	१६।२५	१७।५२	१९।२५	२०।५९	२२।३२	०।६	१।४०	३।१३	४।४७
	१६	६।२३	७।४८	९।१४	१०।३९	१२।५	१३।३०	१४।५६	१६।२१	१७।४७	१९।२१	२०।५६	२२।३०	०।५	१।४०	३।१४	४।४९
	२१	६।२६	७।५०	९।१५	१०।३९	१२।४	१३।२८	१४।५३	१६।१७	१७।४२	१९।१७	२०।५३	२२।२८	०।४	१।३९	३।१५	४।५०
	२६	६।२९	७।५२	९।१६	१०।३९	१२।३	१३।२७	१४।५०	१६।१४	१७।३८	१९।१४	२०।५१	२२।२७	०।४	१।४०	३।१७	४।५३
नवम्बर	१	६।३३	७।५५	९।१७	१०।४०	१२।२	१३।२४	१४।४७	१६।९	१७।३२	१९।९	२०।४७	२२।२५	०।३	१।४०	३।१८	४।५६
	६	६।३७	७।५८	९।२०	१०।४१	१२।३	१३।२४	१४।४६	१६।७	१७।२९	१९।७	२०।४६	२२।२४	०।३	१।४२	३।२०	४।५९
	११	६।४०	८।०	९।२१	१०।४२	१२।३	१३।२४	१४।४५	१६।६	१७।२७	१९।६	२०।४५	२२।२४	०।४	१।४३	३।२२	५।१
	१६	६।४४	८।४	९।२४	१०।४४	१२।४	१३।२४	१४।४४	१६।४	१७।२४	१९।४	२०।४४	२२।२४	०।४	१।४४	३।२४	५।४
	२१	६।४८	८।७	९।२६	१०।४५	१२।५	१३।२४	१४।४३	१६।२	१७।२२	१९।२	२०।४३	२२।२४	०।५	१।४६	३।२७	५।८
	२६	६।५२	८।१०	९।२९	१०।४७	१२।६	१३।२५	१४।४३	१६।२	१७।२१	१९।२	२०।४४	२२।२५	०।७	१।४८	३।३०	५।११
दिसम्बर	१	६।५६	८।१४	९।३२	१०।५०	१२।८	१३।२६	१४।४४	१६।२	१७।२१	१९।२	२०।४४	२२।२६	०।८	१।५०	३।३२	५।१४
	६	६।५९	८।१६	९।३४	१०।५२	१२।१०	१३।२७	१४।४५	१६।३	१७।२१	१९।३	२०।४५	२२।२८	०।१०	१।५२	३।३५	५।१७
	११	७।३	८।२०	९।३७	१०।५५	१२।१२	१३।२९	१४।४७	१६।४	१७।२२	१९।४	२०।४७	२२।२९	०।१२	१।५५	३।३७	५।२०
	१६	७।६	८।२३	९।४०	१०।५७	१२।१४	१३।३१	१४।४८	१६।५	१७।२३	१९।७	२०।४९	२२।३२	०।१५	१।५८	३।४१	५।२४
	२१	७।९	८।२६	९।४३	११।०	१२।१७	१३।३४	१४।५१	१६।८	१७।२५	१९।८	२०।५१	२२।३४	०।१७	२।०	३।४३	५।२६
	२६	७।१२	८।२९	९।४६	११।३	१२।२०	१३।३७	१४।५४	१६।११	१७।२९	१९।११	२०।५४	२२।३७	०।२०	२।३	३।४६	५।२९
	३१	७।१३	८।३०	९।४७	११।४	१२।२२	१३।३९	१४।५६	१६।१३	१७।३१	१९।१३	२०।५६	२२।३९	०।२२	२।४	३।४७	५।३०

उदाहरण :- ५ अप्रैल सन् १९९८ श्रीरामनवमी के दिन यात्रा या किसी कार्य विशेष के संदर्भ में चौघड़िया मुंहूर्त्त ज्ञात करने हैं, तो ध्यान दीजिए इस वर्ष संवत् २०५५ में श्रीरामनवमी के दिन रविवार है और रविवार के दिन क्रमशः उद्वेग, चर, लाभ, अमृत, काल, शुभ, रोग, उद्वेग, ये आठ चौघड़िया मुहूर्त्त होते हैं। और रात्रि में क्रमशः शुभ, अमृत, चर, रोग, काल, लाभ, उद्वेग, शुभ के चौघड़िया मुहूर्त्त बीतते है।

बाई ओर की तालिका में अप्रैल के महीने में तारीख १ और ६ के सामने चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारंभ होने का समय दिया हुआ है। बीच की तारीखों का अनुपात से ग्रहण करना होगा। अतः रविवार के दिन पहला उद्वेग का चौघड़िया मुहूर्त्त सुबह ६ घं ९ मि. से शुरू होगा। दूसरा चर का ७ घं. ४२ मि. से, तीसरा लाभ का ९ घं. १५ मि. से, चौथा अमृत का १० घं. ४७ मि. से , पांचवाँ काल का १२ घं. २१ मि. से, छटा शुभ का १३ घं. ५४ मि. से, सातवाँ रोग का १५ घं. २७ मि. से, और आठवाँ उद्वेग का चौघड़िया मुहूर्त्त १७ घं. ०० मि. बजे से प्रारम्भ होगा, जोकि सूर्यास्त तक रहेगा। इसी प्रकार रात्रि के आठों चौघड़िया मुहूर्त्त प्रारंभ होने का समय सहज ज्ञात कर सकते हैं।

१९ अक्टूबर ९८ महालक्ष्मीपूजन दिन सोमवार में पहला चौघड़िया मुहूर्त्त अमृत का ६।२५ से शुरू होगा, इसी प्रकार काल का ७।५० से, शुभ का ९।१५ से, रोग का १०।३९ से, उद्वेग का १२।५ से, चर का १३।३० से, लाभ का १४।५५ से और अमृत का १६।१९ से प्रारंभ हो जायेगा। जोकि सूर्यास्त तक रहेगा। इसी प्रकार तालिका की सहायता से इच्छित तारीख में चाहे जिस सन् में चौघड़िया मुहूर्त्तों के शुरू होने का समय ज्ञात कर सकते हैं।

संभालकर रखिए :- चौघड़िया मुहूर्त्त तलिका को यह आपके हरसमय, प्रतिदिन, प्रतिमास, प्रतिवर्ष काम आयेगी।

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र संवत् 2065

जयति जयति श्रीराधिके, बंदौ पद-अरबिंद। चहत मुदित मकरंद मृदु, जेहि ब्रजचंद मलिंद।।
राधाकृष्णात्मिकानित्यं कृष्णोराधात्मको ध्रुवम्। वृन्दावनेश्वरी राधा राध्यैवराध्यते मया।।

* राजा-मन्त्री सूर्य, उपराजा चन्द्र के शासनकाल में विश्वस्तरीय राजनीति में नाटकीय परिवर्तन होंगे। भौतिक विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसंधान, न्याय व्यवस्था को बल मिलेगा। बढ़ते तमोगुण का प्रारूप युद्ध के रूप में उभरकर सामने आयेगा। सुरसामुख सा फैलता आतंकवाद जानलेवा सिद्धि होगा। देश-देशान्तरों में वसुन्धरा रक्षण के उपाय सोचे जायेंगे।

* वर्षा, फल-फूल उत्पादन, राष्ट्ररक्षा शनि के हाथ होने से कहीं वृष्टि, बाढ़, झन्झावात, भूकम्प, आंधी-तूफान, कहीं वर्षा न होने से भारी क्षति होगी। शनीचर युद्धादि उपद्रव के कारण किसी देश, प्रदेशमें तहलका मचा सकता है- जो शनि सिंहा करसी संग। तो गढ़ दिल्ली होसी भंग।।

* आधुनिक तकनीक के माध्यम से कल-कारखाने, उद्योग-धन्धोंका विस्तार होगा। कृषि में उन्नति अवन्नति का संयोग बनेगा। पर्यावरण पर दूषित प्रभाव एवं बढ़ता तापमान ज्वालामुखी विस्फोट, भयंकर अग्निदाह, युद्धोत्पात, साम्प्रदायिक तनाव का कारण बनेगा।

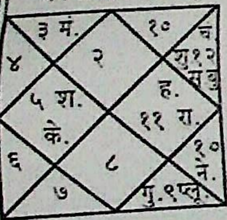
* विश्व के किन्हीं देश-प्रदेशोंमें बढ़ती कीमतें एवं रोजमर्रा की चीजें न मिलने से त्राहि-त्राहि मचेगी। भयातंक से दुःखित भूखी-प्यासी जनता इधर-उधर भागती फिरेगी। देश तथा पड़ौसी राज्यों में राजतन्त्र की नैय्या डगमगाती चलेगी। प्रभावी राजनेता को समय सानुकूल नहीं।

* इस वर्ष स्वदेश की प्रभाव राशि में पापग्रह संयोग अतिनेष्ट है। कब कहाँ क्या कुछ हो जाए? कहना मुश्किल है। कश्मीर समस्या सुलझने के बजाए और उलझती जायेगी। देश तथा पड़ौसी देशोंकी राजनीति में अकल्पित उलटफेर के योग बन रहे है।

* संवत् २०६५ में बिजली, पानी, लघु उद्योग, छोटे कामधन्धे, खेती में पैदावार की जटिल समस्या से जूझना पड़ेगा। पानी के बंटवारे को लेकर राज्य सरकारोंमें संघर्ष होगा। अन्दरुनी मामलों में बाह्य ताकतें हस्तक्षेप करने का प्रयास करेंगी।

ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावराः। सृष्टि-रक्षण-संहारा सर्वेचापिग्रहानुगा।। सृष्टिसृजन, संरचना, रक्षण, भरण-पोषण तथा अभिवृद्धि, विनाशके कारण हेतु सूर्यादि समस्त ग्रह, नक्षत्रमण्डल, तारापुंज हैं। गुरु वृहस्पतिजीके अनुसार यह सारा जगत् ग्रहोंके प्रभावाधीन है। चराचरमें व्याप्त प्राणीमात्र ग्रहोंसे प्राप्त रश्मियोंद्वारा फलते-फूलते हैं और दुष्प्रभाववसात् भविष्यके गर्त में समा जाते हैं। **''यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे''** अर्थात् जो कुछ इन पिण्डों में है, वही सब कुछ इस ब्रह्माण्ड में भी है। **वेदाङ्ग**-कल्प, व्याकरण, छन्द, शिक्षा, ज्योतिष और निरूक्त हैं। जिनमें ज्योतिषशास्त्र को वेद का निर्मलनेत्र कहा गया है- **''वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिष शास्त्र कलपम्''**। नेत्रोंके बिना संसार में कुछ भी दृश्य नहीं हो सकता, इसीलिए ब्रह्माजीने इस शास्त्रकी रचना स्वयं की है- **''तस्माज्जगद्धितावेदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा''** ज्योतिष ज्ञान ही नही, बल्कि विशुद्ध विज्ञान है। जरूरत है, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसे समझने की। ज्योतिष को देव विद्या कहा गया है। अतः जो द्विज ज्योतिषको भली प्रकार से समझकर राष्ट्र, समाज एवं व्यक्ति विशेषके विषयमें भविष्यवाणी करता है, वह दैवज्ञ कहलाता है। निराश्रित दैवज्ञ भी तो मनुष्य ही है, सर्वज्ञ निर्भ्रांत नहीं। यदि उसके द्वारा किंचित कोई त्रुटि रह जाय तो वह सहज मानवीय विकार है। **श्रीब्रजभूमि पंचांग** में की गई भविष्यवाणियाँ लगभग सही बैठती हैं, इसके साक्षी स्वयं पाठक है। आज जहां राज्याश्रय प्राप्त देश-विदेशोंमें एलोपैथी डाक्टरी, आयुर्वेद तथा विज्ञान शत-प्रतिशत सत्यता की गारंटी नहीं दे सकते। **मौसम विभाग** ७२ घण्टे से अधिक भविष्यवाणी नहीं कर सकता। यदि तीन दिन के अनन्तर करता भी है तो वह सम्भावना पर आधारित होती है। पूर्वाचार्य, ऋषि-महर्षियोंकी देन देवविद्या ज्योतिष पर आक्षेप तो बहुत लगाये जाते हैं, लेकिन इसके विकासमें सहयोग कोई नहीं करता। मेरे विचार से ज्योतिष के फलित भाग पर विद्वानोंका अधिक ध्यान केन्द्रित हो और सरकारी तौर पर सहयोग मिले तो भविष्य के यथार्थ को समझने में काफी मदद मिलेगी। जिससे मनुष्यादि प्राणी, समाज और राष्ट्र यानि समस्त संसार का हित होगा। राष्ट्र के निर्माण, कृषि आदि कार्योंमें पूरा सहयोग मिलेगा। दैवज्ञ भी वेद पारायण, सर्वांग सुन्दर, कुलीन, निष्ठावान, वेदपाठी और धर्मज्ञ होना चाहिए।

वर्ष प्रवेश लग्नम्



शुभ सम्वत् २०६५ का आरम्भ ६ अप्रैल २००८ रविवार में घं. ९ मि.२५ बजे वृष लग्न से हो रहा है। तत्कालीन ग्रहदर्शन की कुण्डली साथ में छपी है। लग्न का स्वामी शुक्र चार ग्रह संयोग में अति विकल है। लग्न और लग्नेश पर शनि की कुदृष्टि पड़ रही है। केन्द्र में पाप ग्रहोंका वर्चस्व बना हुआ है। इससे स्पष्ट है कि इस वर्ष सर्वत्र रजोगुण एवं तमोगुण का बोलबाला रहेगा। धरा पर बढ़ते दुष्कर्म, नित नये पापाचार का परिणाम अमानवीय कुकृत्य, युद्धोत्पात तथा प्राकृतिक प्रकोप, आंधी-तूफान, भूकम्प, झन्झावात, कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टिवसात् भुगतना पड़ेगा। वृष लग्न से संवत् शुरु होने का फल वर्ष प्रबोधकार ने ऐसा लिखा है-

वृषेपिपश्चिमेकाल:पूर्वस्यां राजविग्रहः। उदगथान्यार्द्ध निष्पत्तिर्दक्षिणस्यां विकालतः।।

देश के पश्चिम सम्भाग- पंजाब, हिमाचल, गुजरात, राजस्थान तथा जम्मू-कश्मीर एवं बाह्य देश पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, इराक, साऊदी अरब आदि में कालद्विन्द (उत्पात) मचाता है। असंख्य प्राणियों को अपने में समेट लेता है। **पूर्व सम्भाग-** छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखण्ड, यूपी., बिहार, पश्चिमीबंगाल, बाग्लादेश, असम, अरुणाचलप्रदेश, त्रिपुरा, म्यांनमार, थाईलैण्ड, चीन, मंगोलिया, फिलीपींस, जापान आदि में राजविग्रह होता है। राजनीतिक-सामाजिक उपद्रव, तोड़फोड़, दंगे-फसाद खूब होते हैं। अस्थिर माहौल में राजनीतिक उठापटक के चलते भारी रद्दोबदल होती है। **उत्तरीक्षेत्रों में-** वर्षाधिक्य, भूकम्प, भूस्खलन, झन्झावात, भारी हिमपात के कारण पैदावार कम होती है। आम जनता में अभाव ग्रस्तता की बैचेनी होती है। राज्य सरकारें भारी बन्दोबस्त करने का प्रयास करती हैं। **दक्षिण दिशा में-** आंधी, समुद्री तूफान, अतिवृष्टि, भयंकर बाढ़, भूकम्पादि महोत्पात के चलते बेसहारा जनता भागती फिरती है। अकाल जैसी असामान्य परिस्थिति में चौतरफा त्राहि-त्राहि मचती है। प्रभावी दो राजनेताओं को काल कलवित कर ले। आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडू, केरल, कर्नाटक तथा श्रीलंका में भारी उथल-पुथल हो जाए। कोई महानगर अस्त-व्यस्त हो जाए तो आश्चर्य नहीं। वर्ष प्रवेश कुण्डली के केन्द्र में शनि का मलेच्छ ग्रह केतु के साथ वर्चस्व कायम है। सिंह का शनि देश की राजधानी दिल्ली के लिए पूर्वाचार्योंने अतिनेष्ट कहा है। यह तो पहले भी दिल्ली पर हथौड़ा (बुल्डोजर) चलवा चुका है। इस वर्ष शनि दुर्गेश है। दुर्ग को बचाता है या नहीं, यह देखना है-

जो शनि सिंहा करसी संग। तो गढ़ दिल्ली होसी भंग।।

सौरजगत् लग्नम्



१३ अप्रैल २००८ चैत्र शुदी अष्टमी रविवार रात्रि ६ बजकर ३० मिनट पर भगवान सूर्यदेव का अश्विनी नक्षत्र मेष राशि में पदार्पण होगा। सौर वर्षारम्भ कन्या लग्न से हो रहा है। कुण्डली में बनने वाले योग विश्व के अनेक देशों में अनेक तरह की कठिनाइयों का संकेत दे रहे हैं। वर्ष के कर्त्ता-धर्त्ता सूर्य को पापग्रह के क्षेत्र अष्टम में स्थान मिला है। अतः इस वर्ष विश्व समुदाय की सात्विक सोच में परिवर्तन होगा। समृद्धशाली देश स्वरक्षा के नाम पर अत्याधुनिक (दूर तक मार करने वाले) अस्त्र-शस्त्रों का जखीरा जमा करने में लगे रहेंगे। छोटे देशों पर धाक जमाने की कोशिश करेंगे।

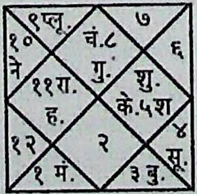
सौर कुण्डली के केन्द्र में युद्ध के देवता मंगल का प्लूटो से सीधा सम्बन्ध है। सो यह प्रोत्साहन देने का कार्य करेगा। आधुनिकता की अंधी दौड़ में दौड़ते कुछ देश आतंकवाद को सह देकर भयातंक से दूसरों को भयभीत करने का प्रयास करेंगे तो कहीं सर्वत्र शान्ति के प्रयास किए जायेंगे। पश्चिम के अमेरिका, फ्रांस, बिट्रेन आदि देश विस्तारवादी नीति पर चलेंगे।

मुस्लिम बाहुल्य देश (राष्ट्र) का रहनुमा शुक्र संसार की कुण्डली में भाग्यविधाता बनकर केन्द्र में कर्मेश-लग्नेश के साथ बैठा है। सो यह सन् २००८ तथा २००९ में सभी इस्लामिक देशोंको संगठित कर इस्लाम के नाम पर अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में तूफान खडा करेगा। **ईसा-मूसा** की लड़ाई का सूत्रपात हो जाए तो आश्चर्य नहीं। रूस, चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, इराक, साउदीअरब में आन्तरिक कलह का बीजारोपण हो सकता है। पड़ौसी देश नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका तथा भारत के अन्दरूनी क्षेत्रों में भी कठिनाइयों की काली छाया पड़ सकती है। कहीं आंधी-तूफान बड़म्बर, झन्झावात, बाढ़, भूकम्प, भूस्खलन, दिग्दाह, भारी हिमपात होने से क्षति होगी, तो कहीं सूखा की मार झेलनी पड़ेगी। ज्वालामुखी विस्फोट और भयंकर अग्निदाह की त्रासदी सम्भव है।

जिस वर्ष की आरम्भ कुण्डली में मंगल, शनि, राहु, केतु व प्लूटो बलवान होकर बैठते हैं, उस वर्ष यातायात से सम्बन्धित कुघटनाएं बहुत होती हैं। कल-कारखानों में हड़ताल, तोड़फोड़, आगजनी, लूटपाट, चोरी-डकैती बढ़ती जाती है। देश में सरकारी तन्त्र की पकड़ ढीली होती है। विकास की गति चन्द पूंजीपतियों की इच्छा पर निर्भर रहती है। सरकारी विभागों में भी श्रमिकों को क्षोभ होता है। सत्ता परिवर्तन का विचार बनने लगता है। अपूज्यों को खूब पूजा जाता है। विदुषी महिलाएं तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले द्विजाचार्योंका तिरस्कार होगा। तब तो निम्नलिखित लाइन का प्रारूप बनेगा-

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां च व्यतिक्रमः। त्रोण तीन भविष्यन्ति दुर्भिक्षं मरणं भयम्।।

सर्वोच्च पदासीन लग्नम्



२५ जुलाई २००७ अपराह्नकाले वृश्चिक लग्न में महामहिम प्रतिभापाटिल जी ने १३वें राष्ट्रपति पद का कार्यभार संभाला है। तत्कालीन लग्न में चन्द्रमा नीच का है। फिर भी गुरु के साथ होने से शुभ है, क्योंकि भाग्येश बनकर लग्न में बैठा है। वृश्चिक लग्न लग्नेश से प्रभावित होने के कारण बलवान समझी जायेगी। कर्मेश सूर्य (राज्य का मालिक) बनकर भाग्य स्थान में बैठा है, जो कि कर्मफल विकास का परिचायक है।

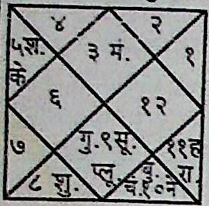
महामहिम श्रीपाटिलजी राष्ट्रपति पद के कार्यभार को संभालने में पूर्ण सक्षम होंगी। जिनकी प्रतिभापरिपूर्ण कार्यक्षमता भविष्यनिधि सम्पत्ति के रूप में उदाहरण बनकर उभरेगी। नारीनेतृत्व को बल मिलेगा। समस्त महिलावर्ग गौरवान्वित होगा।

शपथग्रहणकालीन कुण्डली में केन्द्रगत कर्मक्षेत्र दशम में शुक्र, शनि, केतू का योग है तो सुखस्थान चतुर्थ में राहु है। अतः चार मलेच्छ ग्रहों का केन्द्र में दबाब कार्यक्षेत्र में गतिरोध तो करेगा

ही विरोधी ताकतों को बल देगा। घर-परिवार के सुख को प्रभावित करेगा। महामहिम जी के नामराश्यानुसार कार्यावधि में शनि की साढ़ेसाती भी चलेगी सो अनुकूल नहीं। स्वास्थ्य पर मौसम की प्रतिक्रिया होगी। न चाहते हुए भी किसी आदेश पर हस्ताक्षर करने पड़ सकते हैं। ग्रहचाल देखने से प्रतीत होता है कि आगामी भारतीय आम चुनाव के अनन्तर प्रधानमन्त्री पद पर कोई विदूषी महिला गौरवान्वित हो सकती है। देश की राजनीतिमें महिलाओं का वर्चस्व कायम होगा। केन्द्रगत पुरुष कारक ग्रहों का बाहुल्य नारी स्वरक्षार्थ सम्मान रूप कोई ठोस नियम नहीं बनने देगा। इस वर्ष अन्तरिक्ष अनुसंधान सफल रहेगा।

उपराष्ट्रपति- पदग्रहण समारोह की लग्न सबलहोने के कारण कार्यकाल निर्विघ्न बीतेगा। देश के सभी कार्य सुचारुरूप से चलाने में विचारों का आदान-प्रदान उच्चस्तरीय राजनीति में सही ढंग से होता रहेगा। इस वर्ष सभी सुविज्ञजनोंके मत से देशहित को प्राथमिकता मिलेगी, जोकि सर्वतोन्मुखी विकास के लिए अच्छी रहेगी।

इस्लामिक वर्ष कुण्डली



१० जनवरी २००८ सायं १७।३९ बजे मिथुन लग्न से हिजरी सन् १४२९ की शुरुआत मुस्लिम आवाम तथा देशों के लिए अच्छी है। प्लूटो यमदूत का मंगल से दृष्टि सम्बन्ध इस वर्ष खाड़ी के देश तथा पाकिस्तान में उत्पात करा सकता है। किसी देश पर संकट के बादल मंडरा सकते हैं। शक्ति सम्पन्न प्रभावी राजनेता को विषम परिस्थिति में से गुजरना पड़ेगा। सत्ता पलट का संयोग बन रहा है।

ग्रहचाल- आंधी, तूफान और रोगोत्पात

१३ अप्रैल २००८ तक मीन में सूर्य+शुक्र के साथ बुध चलेगा, जो कि प्रजाजन तथा राजनेताओं में परस्पर वैर-विरोध का कारण बनेगा-

धने मीने बुधोयाति मारयति मृगान् गजान्। प्रजाशाशकयोर्वैरं करोति विग्रहं तदा।।

किंवा प्राकृतिक आपदा, भयंकर सूखा, महामारी, आंधी-तूफान एवं चाण्डाल मनुष्योंके कुकृत्य जंगली जानवर, जीव-जन्तुओं की क्षति का कारण बनेंगे। किसी देश प्रदेश में भारी विग्रह सम्भव है। कहीं असामयक वर्षा ओलावृष्टि खेती में हानि करेगी। तब भावोंमें मामूली वृद्धि होगी। अप्रैल के उत्तरार्ध वैशाख वदीमें केतु के साथ नीच के मंगल का अंगारक योग बनेगा, जो कि २१ जून तक देश के अनेक भागों में उपद्रव करेगा। किंवा भयंकर गर्मी, अग्निदाह, पानीके अभावमें हो हल्ला मचेगा।

केतु रंगारकश्चैक राशिऋक्षगतो तथा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते।।

बाड़मेर के आसन्न क्षेत्रों में युद्धोत्पात की आशंका जाननी चाहिये। राजस्थान, गुजरात सम्भागों में खड़ी फसलों में क्षति होगी। प्रभावी राजनायक को समय सानुकूल नहीं। अनुसंधान कार्य देश के हित में रहेगा, परन्तु कुछ देशों के लिए क्षोभ का कारण बनेगा।

२९ अप्रैल २००८ को मकर में राहु व कर्क में केतु का प्रवेश आगामी डेढ़ वर्ष पर्यन्त भारतीय भूभाग पर भारी उपद्रवकारी रहेगा-

भूम्यां नाशश्चतुष्पादगजहय वृषभैर्युद्ध सुभिक्षरोगैः। पीड्यन्ते सर्वदेशाः उदधिपुर पथे दुर्गदिशेषु भंगः।।

मई के पूर्वार्ध वैशाख कृष्ण पक्ष में बाजार के भावों में रद्दोबदल होगी- **वक्र चाल चलते हुये शनि मार्गी हो जाय। चालू रुख मार्कीट का एकदम पलटा खाय।।** ध्यान रहे कि अभी अंगारक योग का प्रभाव जारी है। ता.२० मई तक मेष का शुक्र चौपाए, दोपाए पशु-पक्षी, जीवजन्तुओं के साथ-साथ मनुष्यों के लिए भी क्षति का कारण बन सकता है। मई के उत्तरार्ध तथा ज्येष्ठ के पूर्वार्ध में गर्मी बेतहासा पड़ेगी। बिजली, पानी, खाद्य पदार्थों की कमी रहेगी। फल-फूल, दूध-दही, सब्जियों के भाव आसमान छूने लगे तो आश्चर्य नहीं। यान-खान रेलादि कुघटनाचक्र, सामाजिक झगड़े-झमेले, तोड़-फोड़ किंवा आगजनी, लूटपाट, हिंसक वारदात, हड़ताल, युद्धोत्पात, आंधी- तूफानादि से क्षति होना अंगारक योग का फल कहा है। ज्येष्ठ मास के दोनों पक्षों में शनिवारी एकादशी का फल-

एकादश्यां शनौ तस्मिन्छत्रभंगोऽथवा भुवि। नगर ग्रामभङ्गः स्यद्वैरिचौराद्युपद्रवा।।

किसी देश-प्रदेश की सरकार बदल जाए, कोई महानगर, गांव, जिला तहस-नहस हो जाए, प्राकृतिक आपदा, आतंकी वारदातोंके चलते जनता इधर से उधर भागती फिरे तो आश्चर्य नहीं। देश के अन्दरूनी मामलों में विदेशी दखलन्दाजी उचित नहीं।

जून २००८ के पूर्वार्ध में सूर्य के साथ ग्रह संयोग का फल-

एक राशौ गताह्यते सौम्य शुक्र दिनाधिपाः। सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाःस्वल्पजलप्रदाः।।

सभी तरह के अनाजों में तेजी का रुख बनेगा। ता.१७ जून के आसन्न यत्र-तत्र हल्की वर्षा से कुछ राहत मिले। मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब में गर्मी, आंधी-तूफान, झन्झावात की मार झेलनी पड़े। चुनाव परिचर्चा जोर-शोर से होने लगे। किसी प्रादेशिक सरकार, राजनेता को मुंह की खानी पड़े तो आश्चर्य नहीं। उच्चस्तरीय राजनेताओंमें कलह सम्भव है। सरकारी तौर पर राहत कार्यों की घोषणा हो सकती है। ता.१३ जून से ८ जुलाई तक अन्तरिक्ष में विरोधी ग्रह आमने सामने चलेंगे, जो कि धार्मिक उन्माद को बढ़ावा देंगे-

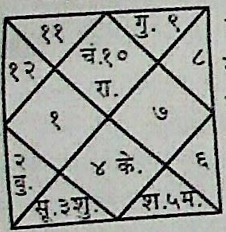
देव गुरु के सामने, जब चलते शुक्राचार। धर्मविरोधी मर मिटें, करते पापाचार।।

जून अन्तमें सरकार धर्मविरोधी भाषणप्रिय मठाधीशोंकी नकेल कस सकती है। सिंह राशिका मंगल लाल रंग की सभी वस्तुओं के भावों में वृद्धि करेगा। आषाढ़ के पहले पक्ष में भारी रद्दोबदल होगी-

बुध शनि जेहि पक्ष में गती वदलते जाँय। मार्कीट के भाव सब नित नूतन हो जाँय।।

कहीं राजनीतिक उथल-पुथल भी हो सकती है। ग्रहों के त्रिकोणात्मक योग में अन्तर्राष्ट्रीयजगत् में तनाव बढ़ेगा। पश्चिम का कोई प्रभावी देश किसी विशेष प्रकार की कठिनाई में से गुजरेगा। आतंकवादी वारदातों पर काबू पा लेना विश्व समुदाय के लिए चुनौती परिपूर्ण रहेगा।

आर्द्रा प्रवेश लग्नम्



भुवनभास्कर भगवान् सूर्यदेव २१ जून २००८ शनिवार की रात्रि में २१।४३ बजे आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। तत्कालीन मकर लग्न की कुण्डली साथ में दृष्टव्य है। जलतत्त्व की लग्न में जलतत्त्व का ग्रह चन्द्र वायु तत्त्व प्रधान राहु के साथ बैठा है। इससे स्पष्ट है कि इस वर्ष जून, जुलाई, अगस्त एवं सितम्बर पर्यन्त वर्षाकाल में तीव्रवायुवेग, झन्झावात के साथ-साथ छिन्नवृष्टि का संयोग बनेगा। **'खण्डवृष्टिश्चसंघिपु'** रोहिणी का निवास सन्धिस्थान में होने से खण्डवृष्टि हो अर्थात् कहीं वर्षा बहुत हो, विनाशकारी बाढ़ का ताण्डव नृत्य झेलना पड़े, तो कहीं सूखा पड़ने से हो-हल्ला मचे। राज्य सरकारें जल बंटवारे को लेकर एक दूसरे से लड़ती-झगडती रहें।

अगस्त २००८ में गुजरात सहित दक्षिण समुद्रतटस्थ क्षेत्रों में तूफान की आशंका जाननी चाहिए। सिंह में त्रगृही योग युद्धोत्पात को जन्म दे सकता है। भादों के महीना में पर्वतीय क्षेत्र में बादलफाड वर्षा, भूस्खलन, भूकम्प के झटके महसूस किये जा सकते हैं। उत्तराखण्ड में भी भारी वर्षा के योग हैं। जुलाई अगस्त सितम्बरमें वक्रातिचारी गुरु अपने स्वभाव के प्रतिकूल अशुभ फलों की वृद्धि करेगा-

धनु राशि गतो जीवो वक्रतामुपयाति चेत्। धनक्षयस्तदा लोके चौराद्राजापिरोपिता।।

जून जुलाई में गर्मी बेतहासा पड़ेगी। भयंकर अग्निकाण्ड, आंधी-तूफान, अन्यान्य प्राकृतिक आपदा तथा चोर, उचक्के, लफंगे, आतंकीकुकृत्य दिनोंदिन बढ़ते जाने से राष्ट्रीय सम्पदा की क्षति होगी। बेरोजगार युवावर्ग का जनाक्रोश तोड़-फोड़, मारपीट, हडताल, तालाबन्दी हिंसात्मक प्रदर्शनों के रूप में उभरकर सामने आ सकता है। ता.१८ जुलाई, १ व १५अगस्त, तथा सितम्बर के अन्त में यत्र-तत्र-सर्वत्र अच्छी वर्षा सम्भव है।

२३ जुलाईसे १५ अगस्त २००८तक चारग्रह राशि संयोगमें चलेंगे, जिनका फल पूर्वाचार्योंने विश्वके किन्हीं भागों में भारी रक्तपात, राजनीतिक, सामाजिक तथा प्राकृतिक महोत्पात होना लिखा है-

एक राशौ यदा यान्ति चत्वार:पंचखेचरा:। प्लावयन्ति मही सर्वारुधिरेण जलेन वा।।

अगस्त २००८ में जो सूर्य-चन्द्र ग्रहण होंगे, उनका प्रभाव देश के पूर्व तथा उत्तर सम्भागों पर अधिक पड़ेगा। किसी प्रदेश की सत्ता पलट सकती है। **एक मास दो गहना, राजा मरै कि सेना।।** अगस्त के उत्तरार्ध भादों बदी में बाजार के चालू भावों में भारी रद्दोबदल होगी। कहीं मेघ जमकर बरसेंगे। सर्राफा तथा सट्टा शेयर का काम करने वालों को सचेत रहना चाहिए।

क्रूर पाप के मध्य में रवि के शनि हो संग। अनहोनी होवे तभी होय किसी से जंग।।

इस कुयोग का दुष्प्रभाव सितम्बर-अक्टूबर२००८ में परिलक्षित होगा। मन्त्रिस्तर के राजनेता तथा राष्ट्राध्यक्ष एक दूसरे को क्रूर दृष्टि से देखेंगे। ईश्वरीय योगमाया पराशक्ति से अनुनय विनय है कि कहीं युद्धोत्पात एवं प्राकृतिक आपदावसात् प्राणीमात्र का अहित न हो। ता.२१ में पूर्वोदय शनि, ता. २५ सित. तुला का मंगल मौसम खराब करेगा। अनाज,दाल, चावल, ऊनी-सूती वस्त्रादि मंहगे होंगे।

अक्टूबर २००८ में सूर्यासन्न ग्रहों का जमघट विश्व के किन्हीं देशों में असम्भावी कुघटनाचक्र का सूचक है-

आगे पीछे बहुत ग्रह सूर्य के भौम अगार। सामाजिक उत्पात से होवे बहुत विगार।।

२८ अक्टूबर में मंगलवार की दीपावली व्यापारी वर्ग के लिए श्रेष्ठ नहीं है। यूरोपीय देशों में तहलका मच सकता है। विश्व व्यापार में तेजी की प्रतिक्रिया होगी। कार्तिक वदी में मार्गी बुध भारी उथल-पुथल का कारण बनेगा।

वक्र चाल चलते हुये, बुध मार्गी हो जाय। राजनीतिका रुख तभी, एकदम पलटा खाय।।

कश्मीर के मामले में चौकसी बरतनी चाहिये। अमेरिका किसी देश के प्रति सख्त रुख अपना सकता है। कहीं विश्वशान्ति परिचर्चा नाममात्र की होगी। किसी देश का नायक काल का ग्रास बनेगा।

७ नवम्बर से २ दिसम्बर तक धनु राशि में विरोधी ग्रह संयोग धार्मिक उन्माद को बढ़ावा देगा-

गुरु शुक्रौ यदैकस्थौनरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद्वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशय:।।

के अनुसार अलीगढ़, लखनऊ, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ, हिसार, जयपुर आदि महानगरों में तनाव बढ़ सकता है। भयातंक, भूख, प्यास से दु:खित जनता इधर से उधर भागती फिरे तो आश्चर्य नहीं। सिंह का शनि देश की राजधानी के लिए प्रतिकूल है-

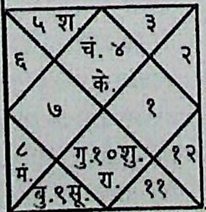
जो शनि सिंहा करसी संग। तो गढ़ दिल्ली होसी भंग।।

राजनीतिक स्तर पर भी भारी उथल-पुथल के योग बन रहे हैं। नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में ठंड अधिक पड़ेगी। भारी मेघगर्जना के साथ ओले पड़ सकते हैं। ता.८ दिसम्बर २००८ को मूलनक्षत्र धनु राशि में बुध प्रवेश करेगा जो मास पर्यन्त शाशकों में वैर-विरोध का कारण बनेगा। पश्चिम के अमेरिकादि प्रभावी देश छोटे देशों पर अपना वर्चस्व बनाने का प्रयास करेंगे। भारत सहित किसी पड़ौसी देश में विदेशी कूटनीतिज्ञ मेहमान का अगमन उचित नहीं-

धने मीने बुधोयाति मारयति मृगान् गजान्। प्रजा शाशकयोर्वैरं करोति विग्रहं तदा।।

जंगली जानवर, पशु-पक्षी, जीव-जन्तुओं के साथ प्रणियों की क्षति होगी। सरकारी तौर पर सुरक्षार्थ कड़े कदम उठाए जाऐंगे।

पश्चिम धान्येश लग्न



ग्रीष्मकालीन गेंहू, जौं, चनादि की फसल, फल-फूल, हरी सब्जियाँ, सोयाबीन, सरसों के मालिक चन्द्रमा लग्न में बैठे हैं, सो इस वर्ष इनकी पैदावार अच्छी होगी। केतु के साथ होने से भारतीय सस्यवृद्धि पर विदेशियों की कुदृष्टि पड़ेगी। किसानों को प्राकृतिक मार झेलनी पड़ सकती है।

मकरेचयदाशुक्र:सर्वसस्यविनाशकृत्। जायतेऽत्रमहार्घणिनात्रकार्या विचारणा।।

९ दिसम्बर २००८ से आगे मकर राशि में गतिशील गुरु वैमनस्य का

कारण बनेगा ही है, देशके किन्हीं भागोंमें असामान्य विषम परिस्थितियों में से गुजरना पड़ सकता है।

मकरे च गुरौ चैव दुर्भिक्षं घोर दारुणम्। विग्रहं यान्ति राजान: त्रिमासान्ते शुभ भवेत्॥

इस ग्रह का तीन मास के पश्चात् अच्छा फल होगा। दिसम्बर में शीतलहर प्रभावित करेगी। झन्झावात दुर्दिन होने से यातायात में बाधा पड़ेगी। कहीं भूमि कम्पन, दिग्दाह, आंधी-तूफान का संयोग बन सकता है। पश्चिमी सीमावर्ती राज्यों में विशेष चौकसी बरतनी चाहिए। राहु के साथ विरोधी ग्रह संयोग सामाजिक दंगे-फसाद करा सकता है।

१४ जनवरी २००९ बुधवार को सुबह ६।२७ बजे मकर राशि में सूर्य के साथ चार ग्रह संयोग असम्भावी कुघटनाचक्र का संकेत है-

एक राशौ यदा यान्ति चत्वार:पंच खेचरा:। प्लावयन्ति मही सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥

अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में कहीं भी दैहिक-दैविक-भौतिक सन्तापों की बढ़ोत्तरी हो सकती है। इस्लामिक वर्ष १४३० के आरम्भ लग्न को पंचग्रही योग प्रभावित कर रहा है। मंगल युद्ध का देवता है। इससे स्पष्ट है कि मुस्लिम बाहुल्य खाड़ी के देशों में युद्धोत्पाती षड्यन्त्र रचा जायेगा। पश्चिमी देश स्वरक्षा के नाम पर अत्याधुनिक मारक अस्त्र-शस्त्रों का जखीरा जमा करने में लगे रहेंगे। इस वर्ष **ईसा-मूसा की लड़ाई** का बीजारोपण हो सकता है। भारतीय कर्णधारों को भी सचेत रहना चाहिए।

फरवरीके आरम्भमें गगनचारी ग्रहोंके अनिष्टकारी योग बने हैं। कहीं युद्धका प्रारुप बन सकता है।

क्रूर पाप के मध्य में रवि के राहु संग। अनहोनी होवै तभी होय किसी से जंग॥

सुरसा मुख से फैलते आतंकवाद पर काबू पा लेना मुश्किल रहेगा। समृद्ध देशों को भी लोहे के चने चबाने पड़ सकते है। षड्ग्रही योग सन् १९६२ में बना था, वैसा ही पुन: बन रहा है- **षड्वैग्रहा: ध्वन्ति समस्त भूपान्॥** ता. ८ फरवरी माघ शुदी में भारी मेघगर्जन, विद्युत्पात, ओलावृष्टि, बडम्बर का संयोग बनेगा। फाल्गुन में पांच ग्रहों का संयोग भी कम भयावह नहीं है।

फरवरी के उत्तरार्ध २००९ में कहीं रोजमर्रा की चीजें मिलना मुश्किल हो सकती हैं।

कृष्ण पक्ष की तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाय। एक वस्तु तो क्या घटे, सभी वस्तु घट जाय॥

मंहगाई वृद्धि, युद्ध, भयातंक के कारण हो हल्ला मचेगा। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात के कारण शीतलहर प्रभावित करेगी। यातायात सम्बन्धी कुघटनाचक्र सम्भव है। मार्च मासान्तर्गत शनि भौम का प्रतियोग कहीं भी सामाजिक उपद्रव एवं राजनीतिक उठापटक का कारण बन सकता है।

सम सप्तक शनि भौम हो, अथवा एकहि संग। प्रजा कष्ट पावे अति, जन विग्रह का रंग॥

सरकारी तौर पर आम जनता के हित में लाभप्रद योजना की घोषणा हो सकती है। मार्च २००९ के उत्तरार्ध चैत्र मास में कहीं भयंकर अग्निदाह, आंधी-तूफान, मेघगर्जन, विद्युत्पात, ओलावृष्टि खड़ी फसलों में क्षति करेगी।

आई कांग्रेस- की प्रभाव राशियां मेष व मिथुन मानी जाती हैं। सन् २००८ और मार्च २००९ तक का समय इस दल के लिए झगड़े-झमेलों से भरपूर रहेगा। चुनावी महासमर में तो बढ़त मिलेगी, लेकिन पूर्ण वर्चस्व कायम नहीं हो पायेगा। श्रीमति सोनियागांधीजी ऐन-केन-प्रकारेण संगठन की बागडोर सम्भालने में कामयाब रहेंगी। कुम्भ राशि पर सिंह के शनि का पूर्ण प्रभाव मान प्रतिष्ठा में गिरावट, स्वास्थ्य हानि का संकेत है। ज्योतिष की दृष्टि से इन्हें अपने कहे जाने वाले नारी नेतृत्व से सचेत रहना चाहिये। निजी सूझबूझ से काम लेना फायदेमंद रहेगा।

भारतीय जनता पार्टी- धनु राशि के प्रभावान्तर्गत है। मार्च २००८ से मार्च २००९ तक की समयावधि में विकास की ओर अग्रसर होती जायेगी। दिसम्बर के पूर्वार्ध तक राशीश की बलिष्ठता समझी जायेगी। आगे मकर में नीच का गुरु बिखराव का कारण बनेगा। शीर्षस्थ राजनेताओं को गहरी सूझबूझ से काम लेना चाहिए। प्रभावी पार्टी के बड़े नेता का देहावसान क्षोभ का कारण बनेगा। यदि संवत् २०६५ में मार्गशीर्ष तक चुनाव होते हैं, तो इस पार्टी को बढ़त मिलेगी। देश के दक्षिण एवं मध्य भाग में अच्छा वर्चस्व कायम होगा। इस बार चुनाव परिणाम दिल्लीमें भी अच्छे निकलेंगे।

बहुजन समाज पार्टी- की प्रभाव राशियाँ वृष और कुम्भ मानी गई हैं। इस पार्टी की सुप्रीमो सुश्री मायावतीजी ने १३ मई २००७ को चौथी बार उ.प्र. में मुख्यमन्त्री का पदभार ग्रहण किया। तत्कालीन ग्रहचाल को देखने से विदित होता है कि अपने कार्यकाल में ऐन-केन-प्रकारेण राज्य सरकार का संचालन सुचारू रूप से करती रहेंगी। इनकी राशि में प्रभावी सिंह का शनि **'स्थानवृद्धि करौ शनि'** सूत्रानुसार मायावती जी के नेतृत्व का दूसरे राज्यों में भी विस्तार करेगा। यदि ये अपने नपे तुले कदमों से चलती रहीं और सर्वहारा वर्ग की सामूहिक सोच का जायजा लेकर काम किया तो एक दिन बड़े नेतृत्व का मौका भी मिल सकता है।

राष्ट्रीय जनता दल- के लिए ग्रहचाल उत्तम रहेगी। सन् २००८ व २००९ में विकास को गति मिलेगी। रेलमन्त्री एवं पार्टी सुप्रीमो श्री लालूप्रसाद यादव जी का रुतबा कायम रहेगा। बिहार में इस दल को दोबारा जड़ें जमाने में काफी मशक्कत करनी पड़ेगी।

समाजवादी पार्टी- का नेतृत्व इस वर्ष २००८ में कामयाब रहेगा। उच्चपदासीन नेताओं के लिए ग्रहचाल उलझनें पैदा करेंगी। **गतवर्ष की भविष्यवाणी- उत्तरप्रदेश में नेतृत्व परिवर्तन के योग बन रहे है। नया नेता राज्य की वागडोर संभालने में कामयाव हो सकता है। यह सच सावित हुई थी।** श्री मुलायमसिंह यादवजी को भितरघात से बचे रहना चाहिये। आगे चलकर तरक्की मिलेगी।

सम्वत् चौसठ मध्य में, ग्रहा: सभी वगमेल। राज छीनने के लिये, होगी धक्कम पेल॥

इसी दशक में अन्तर्राष्ट्रीय जगत् के किन्हीं दो देशों में राज्य की छीना झपटी के लिए गिद्धावृत्तीय कृत्य किये जायेंगे। ईश्वरीय योगमाया से प्रार्थना है कि सभीको सद्बुद्धि दें। सभी समृद्धिकी ओर अग्रसर होते रहें।

काले वर्षन्तुपर्जन्य: पृथिवी शस्यशालिनी। देशोऽयं क्षोभरहितो व्राह्मणा: सन्तु निर्भया:॥

शुभकामनाएं एवं शंका समाधानार्थ मिले पत्र

७६ तिलक नगर, फिरोजाबाद उत्तरप्रदेश से पत्र लिखते है-

३१-०३-२००७

ज्यो.पं.सुशील पाण्डेय जी,

आदरणीय कौशिक जी, सप्रेम जय श्री कृष्ण,

मैं ब्रजभूमि पंचांग का नियमित पाठक हूँ। और प्रसन्नता होती है कि आपका पंचांग शुद्ध एवं सरल है। अतः थोड़ी सी भी जानकारी रखने वाला व्यक्ति पंचांग को समझकर अच्छा खासा ज्योतिषी बनकर लाभ उठा सकता है। मेरा सुझाव है, उचित लगे तो स्वीकार करना जी। श्रीब्रजभूमि पंचांग के मुखपृष्ठ पर आप अपना फोटो धोती कुर्त्ता में लगा दें। जिससे इस पूज्य ग्रन्थ की मर्यादा बनी रहे। और आपके प्रति पंचांग प्रेमियों की तथा सामान्य लोगों की अटूट श्रद्धा प्रगाढ़ हो जाय।

पाण्डेय जी आपका सुझाव शिरोधार्य है, परन्तु अब ऐसा कर पाना सम्भव नहीं है। श्रीब्रजभूमि पंचांग तथा श्री राजधानी पंचांग दोनों का मुखपृष्ठीय डिजायन तथा नाम भारत सरकार द्वारा स्वीकृत हो चुके हैं। कापीराइट नियमानुसार हम तब्दीली नहीं कर सकते। इस नाम तथा आकृत्यानुसार भारत ही नहीं, अपितु पूरे विश्व में कोई भी पंचांग नहीं छप सकता है।

केसर सदन, गुलमंडी, औरंगाबाद महाराष्ट्र से पत्र लिखते है-

२१-०६-२००७

श्री ओमप्रकाश राजाराम बसैयेजी

आदरणी पंडितजी, सम्पादक श्री ब्रजभूमि पंचांग, सादर चरण स्पर्श

मैं अनेक वर्षो से अन्यान्य पंचांग लेता आ रहा हूँ। विद्वज्जन कथन तथा ज्योतिष ज्ञान लेखन से जानकारी मिली है कि दीपावली के दूसरे दिन से नया सम्वत् शुरु होता है। शाके चैत्र वदी पड़वा से आरम्भ होकर फाल्गुन की पूर्णिमा तक चलता है। आपने सम्वत् २०६४ चैत्र शुदी एकम् से शुरु कर दिया है, जबकि कालगणना से अभी तो सम्वत् २०६३ ही चल रहा है। १०नवम्बर २००७ से सम्वत् २०६४ शुरु होगा। यह भ्रामक है पत्री लेखन में गड़बडी हो रही है। कृपया ध्यान देकर समाधान करें।

प्रश्नोत्तर- श्री ओमप्रकाश राजाराम बसैये जी आपने अपने पत्र में दक्षिण भारतीय परम्परानुसार कालगणना विचार कर पत्र लिखा है। वास्तविक गणना पर ध्यान नहीं दिया है। विक्रम सम्वत् चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से शुरु होता है। देखें निर्णयसिन्धु पृष्ठ १४३पर।

चैत्रे मासि जगद्ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि। शुक्लपक्षे समग्रं तु तदा सूर्योदये सति।।

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि सूर्योदय के समय ब्रह्माजी ने संसार की रचना की थी। तत्र चैत्रशुक्ल प्रतिपदि वत्सरारम्भः। तत्रोदयिकी ग्राह्या। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से वत्सरारम्भ (संवत् प्रारम्भ) होता है। उसमें औदयिकी (सूर्योदय के समय रहने वाली) तिथि ग्रहण करनी चाहिए। इस नियमानुसार चैत्र शुदी एकम् ही सम्वत्सर शुरु होने की तिथि सिद्धि होती है। **चैत्रमासस्य या शुक्ला प्रथमा प्रतिपद्भवेत्। तदह्नि ब्रह्मणः कृत्वा सोपवासस्तु पूजनम्।। संवत्सरमाप्नोति सौख्यानि भृगुनन्दनः।।** हेमाद्रि में विष्णुधर्म ने कहा है- चैत्र महीने की जो प्रतिपदा शुक्ल पक्ष की होगी। उसी में ब्रह्मा का पूजन उपवास विधिपूर्वक करें, क्योंकि वही सम्वत्सर का प्रथम दिन है। हे भृगुनन्दन! वर्षारम्भ (दिन) वर्षपति सहित समस्त देवों की पूजा करने वाला व्यक्ति सालभर तक सुखों को भोगता है। धन सम्पन्न बनाता है।

समस्त उत्तरभारत में इस शास्त्रोक्त नियमानुसार सृष्ट्यारम्भ से ही चैत्रादि कालगणना प्रचलित हे। इसी नियमानुसार पंचांगों में सम्वत्सर संख्या तथा नाम का उल्लेख बार्हस्पत्यमानेन कर दिया जाता है। शक सम्वत् सायन गणनानुसार वसन्त सम्पात के आसन्न राष्ट्रीय चैत्र मास जिस दिन से शुरु होता है, उसी दिन शक सम्वत् बदल दिया जाता है। इसका चान्द्रमास से सम्बन्ध नहीं है। सम्वत् २०६४ फाल्गुन की पूर्णिमा वालेदिन राष्ट्रीय चैत्र प्रारम्भ लिखा है तो उसी दिन शक सम्वत् १९३० प्रारम्भ लिखा हुआ है। **ध्यान दीजिए-** हम अपने पंचांगों में कार्तिक शुदी एकम् वाले दिन लिखते हैं- **गुर्जराणां कार्तिकादि नववर्षारम्भः** अर्थात् गुजरात आदि दक्षिण सम्भागीय प्रदेशोंमें मान्य नये वर्ष की शुरुआत। समझदार के लिए इतना इशारा ही बहुत होता है।

मल्लीताल (चीनामन्दिर) नैनीताल उत्तराखण्ड से पत्र लिखते है-

ता.१४-७-२००६

हरीशचन्द थुवाल शास्त्रीजी

आदरणीय पण्डितजी सादर चरणस्पर्श नमस्कार

मैं कई साल से श्री राजधानी एवं श्री ब्रजभूमि पंचांग प्रयोग कर रहा हूँ। पंचांगों में लिखी भविष्यवाणी सटीक सत्य होती हैं। आपको विशेष धन्यवाद। कृपया ध्यान दें। श्री ब्रजभूमि पंचांग में अल्मोड़ा का सूर्योदयास्त भी है। परन्तु पृष्ठ ७१ पर लग्न परिवर्तन तालिका में अल्मोड़ा का लग्नान्तर नहीं छपा है। श्री राजधानीपंचांग पृष्ठ ७१ पर लग्न परिवर्तन तालिका में नैनीताल का लग्नान्तर तो छपा है परन्तु नैनीताल का सूर्योदयास्त नहीं दिया है। इससे बड़ी असुविधा होती है। इस अभाव की पूर्ति करें। ताकि आपके पंचांग उत्तरांचल वासियोंमें अधिक लोकप्रियता अर्जित कर सकें।

श्री शास्त्रीजी ने अपने पत्र में अति उत्तम सुझाव दिया है। हम जब भी नये सिरे से इन टेबिलों को कम्पोज करायेंगे। तब परिवर्तन का पूरा ध्यान रखेंगे। आशा है दोनों पंचांगों को ध्यान में रखते हुए विद्वान अपना काम चलाते रहेंगे। श्री शास्त्रीजी ने वास्तु सम्बन्धी लेख, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सम्बन्धी लेख, ज्योतिष सम्बन्धी ज्ञानवृद्धि हेतु लेख प्रकाशित करने का सुझाव दिया है। आपके सुझाव हमारे लिये बहुत उपयोगी हैं। हम अमल करने का पूरा प्रयास करेंगे और प्रतिवर्ष पाठकों की सुविधानुसार लेख छापते रहेंगे।

युगनिर्माण विद्या प्रचार केन्द्र, प्रज्ञामण्डल, ५७०/१६७, विराटनगर, आलमबाग, लखनऊसे पत्र लिखा है- श्रीनन्दलाल चौबे जी ने दिनांक २९.१०.२००६

सम्पादक महोदय श्री राजधानी पंचांग, सादर प्रणाम्।

कृपया स्पष्टीकरण करें- छः नक्षत्र, अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती मूलों के माने गये हैं। जिनमें से सिर्फ १ नक्षत्र का नाम ही मूल है। मूल के विषय में लिखा है- चार-चार माह स्वर्ग भूमि और पाताल में मूल निवास करता है, थोड़ा भ्रामक है। यह तथ्य सभी छः नक्षत्रों पर लागू होगा? अथवा केवल मूल नक्षत्र पर।

प्रश्नोत्तर- आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन और माघ मास में मूल निवास स्वर्ग में होता है। ऐसे ही श्रावण, कार्तिक, चैत्र, पौष में भूमि पर और फाल्गुन, मार्गशीर्ष, वैशाख, ज्येष्ठ में मूल वास पाताल में रहता है। मूल निवास का नियम सभी नक्षत्रों पर एक समान लागू होता है। निर्णयसिन्धु पृष्ठ ५०३ पर फल का निरूपण करते हुए ऐसा लिखा है- **स्वर्गे मूले भवेद्राज्यं पाताले च धनागमम्। मृत्युलोके यदा मूलं तदा शून्यं समादिशेत्।।** शिशु जन्म के समय मूल स्वर्ग में हो तो राज्यसुख, पाताल में हो तो धन का आगमन और मृत्युलोक में हो तो हानि होती है। मास तथा लग्नानुसार दोनों तरह से मूल निवास पृथ्वी (मृत्युलोक) पर हो तो अधिक हानि होने की आशंका रहती है। इस संदर्भ में पूर्वाचार्यों ने बहुत कुछ लिखा है। परस्पर विरोधाभाष भी बहुत है। आशा है चौबेजी इससे सन्तुष्ट होंगे।

झुन्झुनू, राजस्थान से पत्र लिखते है-
श्री मनीष शर्मा दिनांक ०३.०४.२००७

आदरणीय कौशिक जी जय श्री कृष्ण

गुण मेलापक साहिणी में कहीं-कहीं गुणों के नीचे अवगुणों की संख्या बहुत लिखी है। जैसे- लड़की का जन्म कृत्तिका नक्षत्र का एक चरण तथा लड़के का जन्म रोहिणी में हो तो गुण १० के नीचे १३४० अवगुण लिखे हैं। क्या इतने अवगुण हो सकते हैं?

प्रश्नोत्तर- श्रीमनीष शर्मा जी वर-वधू गुण मेलापक सारणी के नीचे लिखे विवरण को ध्यान से पढ़ें। गण महादोष (मनुष्य-राक्षस) के स्थान में १ लिखा है। अर्थात् कृत्तिका नक्षत्र राक्षस गण का है तो रोहिणी का मनुष्य गण होता है। गणदोष की जगह १ लिखा है। कृत्तिका एवं रोहिणी दोनों ही नक्षत्र अन्त्य नाड़ी के है, इसलिए नाड़ी दोष की जगह ३ लिखा है। मेष और वृष दोनों राशियाँ परस्पर गणना में द्विर्दादश योग कारक हैं। अतः इस दोष की जगह ४ लिखा है। वर के नक्षत्र रोहिणी से पहले कन्या का नक्षत्र कृत्तिका होने से कुछ आचार्य इसे नृदूर दोष मानते हैं। जिसकी जगह ० रखा गया है। **भामिनी जन्मनक्षत्राद् द्वितीयं पतिजन्मभम्। न शुभं भर्तृं नाशाय कथितं ब्रह्मयामले।।** इस लेख से आप समझ गये होंगे कि १३४० अवगुण नहीं, यह गण,नाड़ी, द्विर्द्वादश और नृदूर दोष सबको अलग-अलग दर्शाने के लिये चिन्ह मात्र(अङ्क लिखे) हैं।

९१६ एम.आई.जी.फलैट, पूर्वी लोनी रोड़,दिल्ली से पत्र लिखते है-
पं. मुरारी लाल शर्मा दिनांक ०९.०८.२००७

आदरणी कौशिकजी सप्रेम नमस्कार

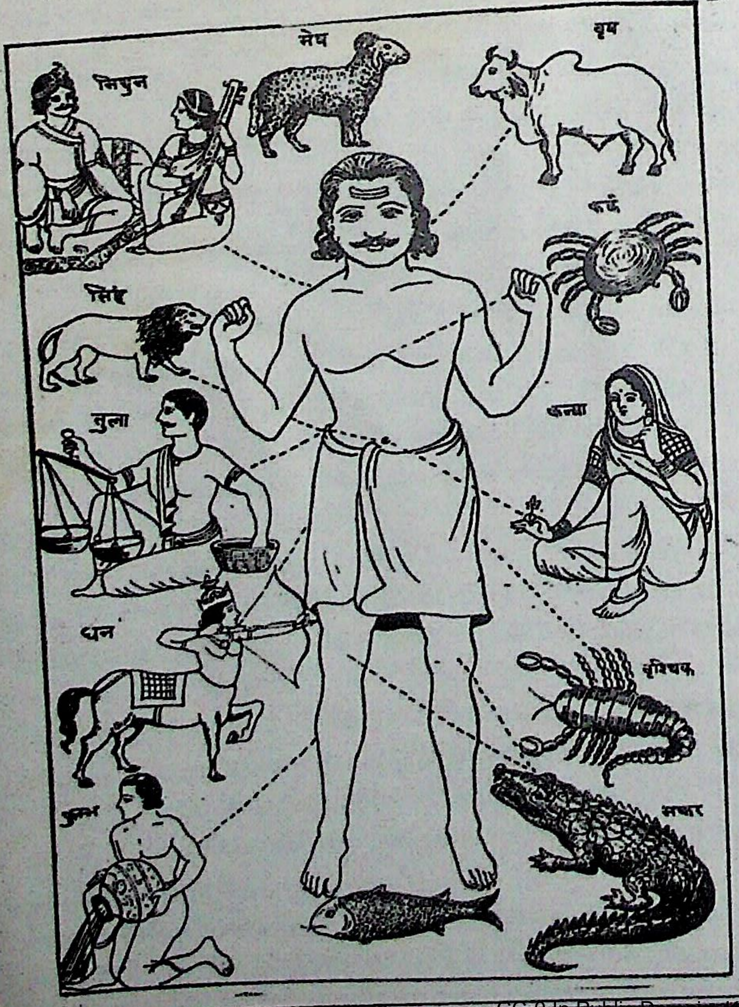
आपका पंचांग पिछले काफी वर्षों से प्रयोग कर रहा हूँ। पंचांगों के गणित व फलित बहुत सटीक बैठते हैं। कसौटी पर खरे उतरते हैं। कृपया मेरी शंका का समाधान करें। लड़की का जन्म अश्विनी नक्षत्र में तथा लड़के का ज्येष्ठा में है। गुण मेलापक सारणी में १४ गुण मिलते हैं। गुणों के नीचे ३६ संख्या लिखी है। अर्थात् नाड़ी दोष और षडाष्टक दोष है। तो क्या इनका विवाह हो सकता है?

प्रश्नोत्तर- श्रीराजधानी पंचांग के पृष्ठ १०५ तथा श्री व्रजभूमि पंचांग के पृष्ठ १२२ पर ध्यान दीजिए। **'राशियों के परस्पर शुभाशुभ योग'** नाम से एक टेबल छपा है। जिसमें यह बताया गया है कि कौन-कौन सी राशियाँ परस्पर गणना में नव-पंचम, द्विर्दादश, षडाष्टक(छटी-आठवीं) और केन्द्रयोग (एक दूसरी से चौथी दशमी) होने पर शुभाशुभ होती हैं। उक्त सारिणी में देखें कि मेष और वृश्चिक दोनों राशियाँ प्रीति (षडाष्टक) संयोग में लिखी हैं। इससे स्पष्ट है कि उपरोक्त विवाह में षडाष्टक दोष मान्य नहीं होगा। क्योंकि यहाँ दोनों की राशियों के स्वामी ग्रह मंगल एक ही है- **एकाधिपत्ये राशीशमैत्र्यां दुष्टभकूटके। नाडी नक्षत्र शुद्धिश्चेद्विवाहः शुभदास्तथा।।** वर और कन्या दोनों की राशि के स्वामी एक ही ग्रह हों अथवा दोनों राशीशों में मैत्री हो और नाड़ी नक्षत्र शुद्ध रहे तो दुष्ट भकूट में भी विवाह शुभ होता है। अतः राशीकूट के गुण ७ मान्य होते हैं। सो ७+१४ बराबर २१ गुण उपरोक्त सम्बन्ध में माने जायेंगे। **मृत्युःषट्काष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे। द्विर्द्वादशे दरिद्रत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत्।।** वर-कन्या की राशियाँ परस्पर गणना में छटी-आठवीं हों तो मृत्यु नवी-पांचवी हो तो सन्तानहानि और दूसरी-बारहवीं हो तो दरिद्रता होती है। लेकिन ऐसी बांत नहीं है ऊपर उद्धृत श्लोक इसका प्रतिकार करता है। कुछ राशियाँ ऐसी होती हैं जो वास्तव में अशुभ होती हैं जैसे नव-पंचम में कर्क-मकर और सिंह कुम्भ बाकी की सभी राशियाँ नवपंचम योगवाली शुभ मानी गई है। ज्योतिपकर्त्ता को शास्त्र के मर्म को भलीभांति समझकर ही किसी प्रकार का निर्णय लेना चाहिए।

नाडी दोष- सामान्य दृष्ट्या तो है लेकिन गहराई में जाएं तो अश्विनी के पहले चरण में लड़की का जन्म हो तथा लड़का ज्येष्ठा के चौथे भाग में जन्मा हो तभी वास्तव में नाड़ी दोष माना जायेगा, अन्यथा नहीं। इसी प्रकार द्वितीया चरण का तृतीया से, तृतीया का द्वितीया से और चतुर्थ प्रथम चरण से वेध माना जाता है।

काल पुरुष के शरीर में राशियों का स्थान

चित्र नं. १ कालपुरुष के शरीर में राशियों का स्थान



वायुर्यमोऽग्निर्वरुणःशशङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।।

हे प्रभो! आप जगत् के प्राणस्वरूप वायु, यम, अग्नि, जल, चन्द्र, सूर्य, दक्ष आदि प्रजापति रूप ब्रह्मा उनके उपादान स्वरूप नारायन देव हैं। मैं आपके चरणों में नतमस्तक पुनः सहस्त्रों बार नमस्कार करता हूँ।

ऋग्वेद १।११५।१ में भगवान् भास्कर को **'सूर्य आत्मा जगतस्तस्युषश्च'** सृष्टिकर्त्ता, पालनकर्त्ता और संहारकर्त्ता चराचर में व्याप्त जो कुछ भी है, उस सबकी आत्मा जगत्चक्षु कहा गया है। **'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'** अर्थात् जो कुछ इन पिण्डों में है, वही सब कुछ इस ब्रह्माण्ड में भी है।

ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावराः।
सृष्टि-रक्षण-संहारा सर्वेचापि ग्रहानुगा।।

सृष्टिसृजन, संरचना, रक्षण, भरण-पोषण तथा अभिवृद्धि विनाश के कारण हेतु समस्त ग्रह नक्षत्रमण्डल तारापुंज हैं। गुरु बृहस्पतिजी के अनुसार यह सारा जगत् ग्रहों के प्रभावाधीन है। चराचर में व्याप्त प्राणीमात्र ग्रहों से प्राप्त रश्मियों के द्वारा फलते-फूलते हैं और दुष्प्रभावावसात् भविष्य के गर्त में समा जाते हैं।

अन्तस्ते द्यावापृथ्वी दधाम्यन्तर्दधाम्युर्वन्तरिक्षम्।
सजूर्देवेभिरवरैः परेश्चान्तर्य्यामे मघवनमादयस्व।।

यजुर्वेद ७।५ के अनुसार हे योगी! मैं परमेश्वर तेरे हृदयाकाश में सूर्य व भूमि के समान विज्ञानादि पदार्थों को स्थापित करता हूँ तथा विस्तृत आकाश को भीतर धरता हूँ। तू समित्र के समान बनकर दैवज्ञ विद्वानों से विद्या प्राप्तकर थोड़े या बहुत योग व्यवहार से (अन्तर्यामी) भीतर ले (शरीर में विद्यमान) वर्त्तमान होकर अन्य सबको प्रसन्न किया कर। इस मन्त्र से स्पष्ट है कि जो कुछ चराचर में व्याप्त है। वह सब कुछ प्राणी मात्र के शरीर में भी है।

सूर्यात् भवन्ति भूतानि सूर्येण पालितानि तु।
सूर्ये लयं प्राप्नुवन्ति यः सूर्यः सोऽहमेव च।।

सूर्य से सम्पूर्ण चराचर में व्याप्त प्राणियों (पंचमहाभूतों) की उत्पत्ति होती है, सूर्य के ही द्वारा सबका पालन-पोषण होता है और सूर्य से ही लय (विनाश) को प्राप्त हो जाते हैं। जो सूर्य में है वह मैं ही हूँ। **'सर्वात्मा च दिवानाथः'** महर्षि पाराशर ने सूर्य को सर्वात्मा कहा है, तो आचार्य

वराहमिहिर कहते हैं- **कलात्मा दिनकरकृत्:** अतः काल का कर्त्ता, सबकी आत्मा सूर्य सबके विनाश का हेतु भी है- **कालः सृजतिभूतानि कालः संहरते प्रजाः।** वह काल भी दो प्रकार का होता है। जैसाकि सूर्य सिद्धान्त १।१० में लिखा है।

लोकानामकृत् कालः कालोऽन्यः कलनात्मकः।
स द्विधास्थूल सूक्ष्मत्वान्मूर्तश्चामूर्त उच्यते।।

विश्व के उत्पादक और प्रलयकारक काल के दो भेद है। एक तो समस्त (चराचर) का संहार करके स्वयं अव्यय अनन्तरूप रहने वाला महाकाल है तथा दूसरा काल सावयव कलनात्मक गणना करने योग्य है।

पुराणदृष्टा महर्षियों ने अनन्त ब्रह्माण्ड में द्वादशभानु अर्थात् बारह सौर परिवारों का अनुभव किया है। और कहा है कि न मालूम और कितने ऐसे ही सौर परिवारों से ओत-प्रोत समस्त ब्रह्माण्ड किस तरह एक निश्चित नियम में बंधा गतिशील है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड वस्तुतः एक घर है, अर्थात् एक समान ही है। वेदभगवान् इसका कारण बतलाते हैं।

वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहासद् यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।
तस्मिन्निदं स च बिनैति सर्वं स ओतःप्रोतश्च विभु प्रजासु।।

काल जो कलनात्मक कहा है, पंचांग के द्वारा जिसकी गणना आसान होती है। उसके बारे में जान लेना परमावश्यक है। कल्याण से प्राप्त गत पृष्ठ पर कालपुरुष का जो चित्र छपा है। उसके शिर में मेष राशि का स्थान है। बाकी राशियाँ शरीर के जिस भाग से सम्बन्ध रखती हैं, वह स्पष्ट दर्शायी हैं।

कलात्मकस्य च शिरो मुखदेशवाहु हृत्कुक्षिभागकटिवस्तिरहस्यदेशाः।
उरु च जानु युगलं परतस्तुजङ्घे पादद्वयं क्रियमुखावयवा क्रमेण।।

काल पुरुष के सिर में मेष राशि का स्थान है। जब कभी कल्पान्त में मेष राशि में सूर्यादि समस्त ग्रह विक्षेप करते हैं, तब ब्रह्माण में महाभयंकर विस्फोट होता है। तब महाप्रलय होकर सब अन्धकारमय हो जाता है। प्रत्येक कल्प ४३१८२७२००० सौर वर्ष बीतने पर महाप्रलय होती है तब कृतयुग प्रमाण सन्धिकाल १७२८००० सौरवर्ष तक समस्त ब्रह्माण्ड में अन्धकार के सिवाय कुछ नहीं रहता।

कालःसृजति भूतानि कालः संहरति प्रजाः। कालः सुप्तेषु जागर्ति कालोहि दुरतिक्रमः।।
अनादिरेषु भगवान् कालोऽनन्तोऽजरोऽमरः। सर्वगत्वात स्वतन्त्रत्वात सर्वात्मत्वान्महेश्वरः।।

तब अनन्त सत्ताधारी महाकाल (परमपिता परमात्मा) सन्धिसमय में समस्त ग्रह नक्षत्रादिकों को व्यवस्थित करने का उत्क्रम करते हैं। **ग्रहर्क्षदेवदैत्यादि सृजतोऽस्य चराचरम्।** तब सूर्यादि समस्त ग्रह नक्षत्रमण्डल वायु जल, यम, अग्नि, चन्द्र, सूर्य, दक्ष आदि प्रजापतिरूप ब्रह्मादिकोंका अस्तित्व कायम होना प्रारम्भ हो जाता है। ग्रहादिकों को अपनी-अपनी कक्षा में व्यवस्थित (गतिमान) होने में १७०६४००० सौर वर्ष लग जाते हैं।

जब सृष्टि सृजन का दिन आता है, जब मेष के आदि में सूर्यादि ग्रह एक समान भुक्त भोग्यांश रहित होते हैं। अखिल ब्रह्माण्ड नायक परमपिता परमात्मा के आदेशानुसार श्री ब्रह्माजी सृष्टि सृजन का कार्य करते हैं।

चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।

वर्त्तमान सम्वत् २०६५ में कल्प के आरम्भ से बीते वर्ष १९७२९४९१०९ और सृष्टि के रचनाकाल से बीते वर्ष १९५५८८५१०९ हैं। प्राकृतिक इकाई सूर्योदय से सूर्योदय तक के समय को एक अहोरात्र (दिन) मानकर समस्त विश्व में काल की गणना की जाती है। लघुता की दृष्टि से कार्य संचालन हेतु घटी-पल तो कहीं घंटा-मिनट बनाए गये हैं। दिन, मास, वर्ष, युग-युगान्तर काल का न्यास कर सुविज्ञजनोंने कालपुरुष के विराटरूप को समझने तथा समझाने का प्रयास किया है।

जातक के शरीर में राशियों का स्थान

चित्र नं.२



शीर्षास्यबाहुहृदयं जठरं कटिवस्तिमेहनोरुयुगम्।
जानू जंघे चरणौ कालस्याङ्गानि राश्योऽजाद्याः।।

कल्याण वर्मा ने काल पुरुष के शरीर में राशियों का स्थान इस तरह से गिनाया है-
मेष- मस्तक, वृष-मुख, मिथुन-हाथ, कर्क-हृदय, सिंह-पेट, कन्या-कमर, तुला-नाभि से उपस्थ पर्यन्त, वृश्चिक-उपस्थ, धनु-जांघ, मकर-घोटू, कुम्भ- पीड़री(ऐढ़ी से ऊपर), मीन- दोनों पैर।

वसुन्धरा पर जब कोई जन्म लेता है, उस समय पूर्वक्षितिज में उदित राशि उसकी जन्म लग्न मानी जाती है। ज्योतिष शास्त्र के फलित भाग 'होराशास्त्र' के नियमानुसार उक्त लग्न को कुण्डली के प्रथम भाव (तनस्थान) में रखकर परिक्रमा उत्क्रमानुसार राशियाँ रखते हुए कुण्डली बनाई जाती है। तत्कालीन गोचर ग्रह राशियोंमें यथा स्थान रखकर उसे पूर्ण कर लेते हैं।

लग्नात्-तनुर्धनं भ्राता सुखं पुत्र रिपु-स्त्रियः।
मृत्युञ्च धर्म कर्माया व्ययश्चेति यथाक्रमम्।।

१ तन, २ धन, ३ भ्रात, ४ सुहृद्, ५ पुत्र, ६ रिपु, ७ स्त्री, ८ मृत्यु, ९ धर्म, १० कर्म, ११ आय, १२ व्यय। ये सामान्यतः कुण्डली में बारह भावोंके नाम कहे गये हैं। दूसरे आचार्य द्वादश भावों की अनेक तरह से व्याख्या करते हैं। फल कथन की विधियाँ भी अनेक हैं।

शारीरिक दुःख सुख कैसे विचार करें?

चित्र नं.१ कालपुरुष के शरीर में राशियों के स्थान दर्शाए गये हैं। उसी तरह जातक के शरीर में भी सभीं राशियों के स्थान सुनिश्चित होते हैं। फर्क सिर्फ इतना है कि महाकाल की गणना मेष से शुरु होती है और जातक के जन्म समय पर उदित राशि लग्न से।

चित्र नं.२ पुरुषाकृति के शिरोभाग में उस लग्न को स्थापित करते हैं, जिसमें वह जन्म लेता है। अन्य राशियाँ क्रमशः रखते जाते हैं। यथा- १ लग्न नाम राशि सिर में, आगे की दूसरी मुख में, उससे आगे की तीसरी बाहु स्थान में, इसी तरह चौथी हृदय, पांचवी कुक्षि(पेट), छटि कटि(कोंधनी), सातवी वस्ति(मूत्राशय), आठवी रहस्य(मलद्वार), नवमी उरू(रीढ़की हड्डी), दशमी जानु (उरूसन्धि), ग्यारहवीं जंघा से नीचे घुटने, बारहवीं पैर (दोनों पाद)। इस तरह लग्नान्तर समस्त राशियाँ स्थापित होने पर आसानी से समझ सकते है कि कौन सी राशि शरीर के किस भाग को प्रभावित कर रही है। उसमें अच्छे ग्रह बैठे है या खराब।

जातक के शरीर में राशियों का स्थान

सुनिश्चित होने पर फल कथन करना बहुत आसान हो जाता है, बशर्ते कि द्विजाचार्य को राशियों के तथा सूर्यादि ग्रहों के गुण, कर्म, स्वभाव, तत्त्व आदि की पूरी-पूरी जानकारी हो। जन्म के समय जो ग्रह सबसे बलिष्ठ हो और शरीर के जिस भाग को प्रभावित कर रहा हो, वह भाग उसी अनुपात में सशक्त सुदृढ़ होता है। यदि अशुभ ग्रह बली होकर प्रताड़ित करता है, उसमें परेशानी का कारण बनता है।

एते ग्रहा बलिष्ठाःप्रसूतिकाले नृणां स्वमूर्तिसमम्।
कुर्यर्देहं नियतं बहवश्च समागता सु मिश्रम्।।

शरीर के अङ्ग पीड़ित कब होते है? जब गोचर में गतिशील ग्रह राशि गुण कर्म स्वभव के प्रतिकूल प्रभावशाली होकर चित्र नं.२ के अनुसार शरीर के जिस किसी अंग में विक्षेप करते हैं।

कालनरस्या वयवान्पुरुषाणां कल्पयेत्प्रसवकाले सदसद्ग्रह संयोगात्पुष्टान्सोपद्रवांश्चाऽपि।

जीवमात्र मनुष्यादि प्राणियोंके जन्मकाल में चित्र नं.२ में उल्लिखित शरीर के अंग अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट होने पर दुर्बल, कमजोर, पीड़ा से युक्त समझना चाहिए।

ज्योतिषाचार्य को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि फल कथन करते समय विंशोत्तरी मतेन किस ग्रह की दशा तथा किस ग्रह की अन्तरदशा चल रही है। जन्म समय उनकी क्या स्थिति थी। परस्पर कैसा सम्बन्ध बन रहा था। वर्त्तमान में वह ग्रह चित्र नं.२ पुरुषाकार शरीर के किस अंग पर प्रभाव डाल रहा है।

उदाहरण- जिस किसी का जन्म कर्क लग्न में होगा, उसके सिर में कर्क लग्न (राशि) का स्थान होगा। सिंह का मुख में और कन्या का दोनों हाथों में माना जायेगा। इसी तरह आगे की तुला, वृश्चिक, धनु आदि राशियों का न्यास करके चित्र नं.२ पुरुषाकृति पर राशियां स्थापित करते हुए उनमें सभी ग्रहों को यथास्थान रखकर विचार कर लेना चाहिए। जब कभी गोचर में गतिशील ग्रह सिंह राशि में आयेंगे, तब मुख या गले में विकार उत्पन्न करेंगे। जब कन्या में ग्रहातिक्रमण होगा, तब बाजुओं में विक्षेप का कारण बनेगा।

जन्म समय जो ग्रह त्रिक स्थान ६।८।१२ में पड़े विकल होते हैं, वे अपनी दशान्तर दशा में बैचेनी का करण बनते हैं। फलित का मामला बहुत पेचीदा है। सुयोग्य दैवज्ञ ब्रह्माजी द्वारा ललाट पर अंकित अक्षर मालिका को स्पष्ट रूप से पढ़ लेते हैं।

विधात्रा लिखितायाऽसौ ललाटऽक्षरमालिका। दैवज्ञस्तां पटेद्व्यं होरानिर्मलचक्षुषा।

सम्पादक

चन्द्रमा का नक्षत्र चार चरणमें प्रवेश का समय भा.स्टै.टा. घं.मि. - बच्चों के नाम रखने की सुविधा

ता.वार (अहोरात्र) में विहित नक्षत्र के चारचरण अर्धरात्रोत्तर घं.मि.२४ में जोड़कर लिखे है। सूर्योदय पश्चात् अग्रिमदिन ता. के घं.मि. लिखे हैं।

अप्रैल	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
६	अश्वि.	२१।०८	२६।२९		
७	अश्वि.			७।५०	१३।९१
७	भर.	१८।३२	२३।५३	२९।९३	
८	भर.				१०।३३
८	कृत्ति.	१५।५४	२१।९६	२६।३८	
९	कृत्ति.				८।००
९	रोहि.	१३।२२	१८।४८	२४।९४	२९।४९
१०	मृग.	११।०७	१६।४०	२२।९२	२७।४६
११	आर्द्रा	९।९८	१४।५८	२०।३८	२६।९८
१२	पुन.	७।५८	१३।४७	१९।३६	२५।२४
१३	पुष्य	७।९३	१३।९०	१९।०७	२५।०४
१४	श्ले.	७।०२	१३।०८	१९।९४	२५।९९
१५	मघा	७।२५	१३।३८	१९।५३	२६।०६
१६	पूफा.	८।९९	१४।३९	२०।५९	२७।९९
१७	उफा.	९।३९	१६।०५	२२।३१	२८।५७
१८	हस्त	११।२२	१७।५३	२४।२४	
१९	हस्त				६।५५
१९	चित्रा	१३।२६	२०।०१	२६।३६	
२०	चित्रा				९।९२
२०	स्वाती	१५।४७	२२।२६	२९।०५	
२१	स्वाती				११।४४
२१	विशा.	१८।२३	२५।०५		
२२	विशा.			७।४७	१४।२९
२२	अनु.	२१।९१	२७।५५		
२३	अनु.			१०।३९	१७।२४
२३	ज्ये.	२४।०८			

अप्रैल	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२४	ज्ये.		६।५३	१३।३७	२०।२२
२४	मूल	२७।०७			
२५	मूल		९।५०	१६।३३	२३।९६
२६	पूषा.	५।५९	१२।३८	१९।९७	२५।५५
२७	उषा.	८।३४	१५।०६	२१।३७	२८।०८
२८	श्रवण	१०।४०	१७।०२	२३।२४	
२९	श्रवण				५।४७
२९	धनि.	१२।०९	१८।९९	२४।३०	
३०	धनि.				६।४१
३०	शत.	१२।५१	१८।४९	२४।४८	
१मई	शत.				६।४६
१	पूभा.	१२।४४	१८।३०	२४।९५	
२	पूभा.				६।०१
२	उभा.	११।४७	१७।२२	२२।५६	२८।३१
३	रेवती	१०।०६	१५।३२	२०।५८	२६।३३
४	अश्वि.	७।४९	१३।०८	१८।२७	२३।४६
४	भरणी	२९।०५			
५	भरणी		१०।२०	१५।३५	२०।५०
५	कृत्तिका	२६।०५			
६	कृत्तिका		७।९९	१२।३४	१७।४९
६	रोहिणी	२३।०३	२८।९९		
७	रोहिणी			९।३६	१४।५३
७	मृग.	२०।०९	२५।३०		
८	मृग.			६।५१	१२।९३
८	आर्द्रा	१७।३४	२३।०३	२८।३२	
९	आर्द्रा				१०।०१
९	पुन.	१५।३०	२१।०८	२६।४६	
१०	पुन.				८।२४
१०	पुष्य	१४।०२	१९।५०	२५।३९	

मई	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
११	पुष्य				७।२७
११	श्ले.	१३।९६	१९।९६	२५।९५	
१२	श्ले.				७।९५
१२	मघा	१३।९५	१९।२५	२५।३४	
१३	मघा				७।४४
१३	पूफा.	१३।५४	२०।९३	२६।३३	
१४	पूफा.				८।५२
१४	उफा.	१५।९२	२१।३९	२८।०७	
१५	उफा.				१०।३४
१५	हस्त	१७।०१	२३।३४		
१६	हस्त			६।०८	१२।४१
१६	चित्रा	१९।९५	२५।५३		
१७	चित्रा			८।३०	१५।०८
१७	स्वाती	२१।४६	२८।२७		
१८	स्वाती			११।०८	१७।४९
१८	विशा.	२४।३०			
१९	विशा.		७।९३	१३।५६	२०।३९
१९	अनु.	२७।२२			
२०	अनु.		१०।०६	१६।५१	२३।३५
२१	ज्ये.	६।९९	१३।०३	१९।४८	२६।३२
२२	मूल	९।९६	१५।५९	२२।४२	२९।२५
२३	पूषा.	१२।०८	१८।४८	२५।२९	
२४	पूषा.				८।०९
२४	उषा.	१४।४९	२१।२५	२८।००	
२५	उषा.				१०।३६
२५	श्रवण	१७।९१	२३।३९		
२६	श्रवण			६।०८	१२।३६
२६	धनि.	१९।०४	२५।२३		
२७	धनि.			७।४२	१४।०१

मई	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२७	शत.	२०।२०	२६।९८		
२८	शत.			८।३७	१४।४६
२८	पूभा.	२०।५४	२६।५०		
२९	पूभा.			८।४७	१४।४४
२९	उभा.	२०।४०	२६।९५		
३०	उभा.			८।९०	१३।५५
३०	रेवती	१९।४०	२५।९४		
३१	रेवती			६।४८	१२।२२
३१	अश्वि.	१७।५६	२३।२१	२८।४७	
१जून	अश्वि.				१०।९३
१	भरणी	१५।३८	२०।५६	२६।९५	
२	भरणी				७।३४
२	कृत्तिका	१२।५२	१८।०६	२३।२१	२८।३६
३	रोहिणी	९।५०	१५।०३	२०।०७	२५।३१
४	मृग.	६।४५	१२।०१	१७।९६	२२।३२
४	आर्द्रा	२७।४७			
५	आर्द्रा		९।०७	१४।२८	१९।४९
५	पुन.	२५।०९			
६	पुन.		६।३७	१२।०५	१७।३३
६	पुष्य	२३।०१	२८।३८		
७	पुष्य			१०।९६	१५।५३
७	श्ले.	२१।३१	२७।२०		
८	श्ले.			९।०८	१४।५७
८	मघा	२०।४६	२६।४६		
९	मघा			८।४७	१४।४७
९	पूफा.	२०।४७	२६।५९		
१०	पूफा.			९।९१	१५।२३
१०	उफा.	२१।३५	२७।५७		
११	उफा.			१०।२०	१६।४२

जून	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
११	हस्त	२३।०५			
१२	हस्त		५।३६	१२।०८	१८।३९
१२	चित्रा	२५।१०			
१३	चित्रा		७।४७	१४।२५	२१।०१
१३	स्वाती	२७।४०			
१४	स्वाती		१०।२२	१७।०३	२३।४५
१५	वि.	६।२७	१३।११	१९।५५	२६।३९
१६	अनु.	९।२३	१६।०८	२२।५२	
१७	अनु.				५।३७
१७	ज्ये.	१२।२१	१९।०५	२५।४८	
१८	ज्ये.				८।३२
१८	मूल	१५।१५	२१।५७	२८।३८	
१९	मूल				११।२०
१९	पूषा.	१८।०१	२४।४०		
२०	पूषा.			७।१८	१३।५७
२०	उषा.	२०।३५	२७।०९		
२१	उषा.			९।४४	१६।१८
२१	श्रवण	२२।५२	२९।२१		
२२	श्रवण			११।४९	१८।१८
२२	धनि.	२४।४७			
२३	धनि.		७।०९	१३।३१	१९।५३
२३	शत.	२६।१५			
२४	शत.		८।२९	१४।४३	२०।५७
२४	पूभा.	२७।११			
२५	पूभा.		९।१६	१५।२०	२१।२५
२५	उभा.	२७।३०			
२६	उभा.		९।२५	१५।१९	२१।१४
२६	रेवती	२७।०९			
२७	रेवती		८।५४	१४।३९	२०।२४
२७	अश्वि.	२६।०९			
२८	अश्वि.		७।४५	१३।२१	१८।५७

जून	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२८	भरणी	२४।३३			
२९	भरणी		६।०१	११।३०	१६।५८
२९	कृत्तिका	२२।२६	२७।४८		
३०	कृत्तिका			९।१२	१४।३४
३०	रोहिणी	१९।५६	२५।१५		
१जुला	रोहिणी			६।३४	११।५३
१	मृग.	१७।१२	२२।३०	२७।४८	
२	मृग.				९।०६
२	आर्द्रा	१४।२४	१९।४४	२५।०४	
३	आर्द्रा				६।२४
३	पुन.	११।४४	१७।०८	२२।३२	२७।५६
४	पुष्य	९।२१	१४।५२	२०।२३	२५।५४
५	श्लेषा	७।२५	१३।०५	१८।४६	२४।२६
६	मघा	६।०६	११।५७	१७।४७	२३।३८
६	पूफा.	२९।२८			
७	पूफा.		११।३०	१७।३३	२३।३५
८	उफा.	५।३७	११।५०	१८।०४	२४।१८
९	हस्त	६।३२	१२।५६	१९।२१	२५।४५
१०	चित्रा	८।०९	१४।४२	२१।१५	२७।४९
११	स्वाती	१०।२२	१७।०१	२३।४१	
१२	स्वाती				६।२१
१२	विशा.	१३।००	१९।४३	२६।२६	
१३	विशा.				९।१०
१३	अनु.	१५।५३	२२।३७	२९।२२	
१४	अनु.				१२।०६
१४	ज्ये.	१८।५१	२५।३५		
१५	ज्ये.			८।१८	१५।१२
१५	मूल	२१।४५	२८।२५		
१६	मूल			११।०६	१७।४६
१६	पूषा.	२४।२६			
१७	पूषा.		७।०२	१३।३८	२०।१५

जुला	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१७	उ.षा.	२६।५१			
१८	उषा.		९।२२	१५।५३	२२।२४
१८	श्रवण	२८।५४			
१९	श्रवण		११।१९	१७।४५	२४।१०
२०	धनि.	६।३५	१२।५४	१९।१३	२५।३१
२१	शत.	७।५०	१४।०२	२०।१५	२६।२७
२२	पूभा.	८।३९	१४।४४	२०।५०	२६।५६
२३	उभा.	९।०१	१४।५९	२०।५८	२६।५६
२४	रेवती	८।५४	१४।४५	२०।३७	२६।२८
२५	अश्वि.	८।१९	१४।०३	१९।४८	२५।३२
२६	भरणी	७।१६	१२।५४	१८।३३	२४।११
२७	कृत्तिका	५।४९	११।२२	१६।५५	२२।२८
२७	रोहिणी	२८।०१			
२८	रोहिणी		९।३०	१४।५९	२०।२८
२८	मृग.	२५।५७			
२९	मृग.		७।२४	१२।५१	१८।१८
२९	आर्द्रा	२३।४५	२९।११		
३०	आर्द्रा			१०।३८	१६।०४
३०	पुन.	२१।३१	२६।५९		
३१	पुन.			८।२८	१३।५६
३१	पुष्य	१९।२५	२४।५७		
१अग.	पुष्य			६।३०	१२।०२
१	श्ले.	१७।३४	२३।१३	२८।५१	
२	श्ले.				१०।३०
२	मघा	१६।०८	२१।५४	२७।४१	
३	मघा				९।२७
३	पूफा.	१५।१३	२१।०९	२७।०४	
४	पूफा.				९।००
४	उफा.	१४।५५	२१।०१	२७।०७	
५	उफा.				९।१३
५	हस्त	१५।१९	२१।३६	२७।५२	

अग	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
६	हस्त				१०।०९
६	चित्रा	१६।२६	२२।५२	२९।१८	
७	चित्रा				११।४५
७	स्वाती	१८।१२	२४।४७		
८	स्वाती			७।२२	१३।५७
८	विशा.	२०।३२	२७।१३		
९	विशा.			९।५३	१६।३४
९	अनु.	२३।१५	२९।५९		
१०	अनु.			१२।४३	१९।२७
१०	ज्ये.	२६।११			
११	ज्ये.		८।५५	१५।३८	२२।२२
११	मूल	२९।०६			
१२	मूल		११।४७	१८।२७	२५।०८
१३	पूषा.	७।४९	१४।२५	२१।००	२७।३६
१४	उषा.	१०।१२	१६।४१	२३।०९	२९।३८
१५	श्रवण	१२।०७	१८।२९	२४।५०	
१६	श्रवण				७।१२
१६	धनि.	१३।३३	१९।४७	२६।०१	
१७	धनि.				८।१४
१७	शत.	१४।२८	२०।३५	२६।४१	
१८	शत.				८।४८
१८	पूभा.	१४।५४	२०।५४	२६।५४	
१९	पूभा.				८।५४
१९	उभा.	१४।५३	२०।४७	२६।४०	
२०	उभा.				८।३४
२०	रेवती	१४।२८	२०।१७	२६।०५	
२१	रेवती				७।५४
२१	अश्वि.	१३।४३	१९।२८	२५।१२	
२२	अश्वि.				६।५७
२२	भरणी	१२।४२	१८।२३	२४।०५	२९।४६
२३	कृत्तिका	११।२७	१७।०६	२२।४४	२८।२३

अग.	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४	सित	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४	सित	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४	अक्टू	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२४	रोहिणी	१०।०२	१५।३९	२१।२५	२६।५२	११	उषा.			७।३२	१४।०३	३०	चित्रा	९।४९	१६।०९	२२।३०	२८।५०	१९	मृग.			७।२४	१२।४५
२५	मृग.	८।२९	१४।०५	१९।४१	२५।२८	११	श्रवण	२०।३३	२६।५४			१अक्टू	स्वाती	११।२१	१७।३९	२४।०७		१९	आर्द्रा	१८।२५	२३।५१	२९।२७	
२६	आर्द्रा	६।५४	१२।३०	१८।०६	२३।४२	१२	श्रवण			९।२६	१५।३७	२	स्वाती				६।३५	२०	आर्द्रा				११।०३
२६	पुन.	२९।२८				१२	धनि.	२१।५९	२८।२१			२	विशा.	१३।०२	१९।३७	२६।२२		२०	पुन.	१६।३८	२२।२०	२८।०२	
२७	पुन.		१०।५५	१६।३३	२२।२०	१३	धनि.			१०।२३	१६।३५	३	विशा.				८।४८	२१	पुन.				९।४४
२७	पुष्य	२७।४८				१३	शत.	२२।४६	२८।४८			३	अनु.	१५।२३	२२।०४	२८।४५		२१	पुष्य	१५।२६	२१।२४	२७।०३	
२८	पुष्य		९।२८	१५।०७	२०।४७	१४	शत.			१०।५०	१६।५२	४	अनु.				११।२६	२२	पुष्य				८।५१
२८	श्ले.	२६।२७				१४	पूभा.	२२।५४	२८।४७			४	ज्ये.	१८।०७	२४।५२			२२	श्ले.	१४।४०	२०।३५	२६।३०	
२९	श्ले.		८।२०	१३।५४	१९।३७	१५	पूभा.			१०।४१	१६।३५	५	ज्ये.			७।३७	१४।२२	२३	श्ले.				८।२५
२९	मघा	२५।२१				१५	उभा.	२२।२८	२८।२४			५	मूल	२१।०६	२७।५१			२३	मघा	१४।२१	२०।२२	२६।२३	
३०	मघा		७।०९	१२।५८	१८।४७	१६	उभा.			१०।००	१५।४६	६	मूल			१०।३७	१७।२२	२४	मघा				८।२४
३०	पूफा.	२४।३६				१६	रेवती	२१।३३	२७।२४			६	पूषा.	२४।०८				२४	पूफा.	१४।२६	२०।३३	२६।४०	
३१	पूफा.		६।३२	१२।२७	१८।२३	१७	रेवती			८।५५	१४।३६	७	पूषा.		६।५०	१३।३३	२०।२५	२५	पूफा.				८।४७
३१	उफा.	२४।२८				१७	अश्वि.	२०।२६	२५।५३			७	उषा.	२६।५८				२५	उफा.	१४।५४	२१।०७	२७।२०	
१सित	उफा.		६।२१	१२।२५	१८।२८	१८	अश्वि.			७।३०	१३।०७	८	उषा.		९।३५	१६।२०	२२।४६	२६	उफा.				९।३३
१	हस्त	२४।३२				१८	भरणी	१८।४५	२४।२०	२९।५६		८	श्रवण	२९।२३				२६	हस्त	१५।४५	२२।०३	२८।२१	
२	हस्त		६।४४	१२।५७	१९।०९	१९	भरणी				११।३१	९	श्रवण		११।५०	१८।२७	२४।४४	२७	हस्त				१०।३९
२	चित्रा	२५।२१				१९	कृत्तिका	१७।०७	२२।४२	२८।२७		१०	धनि.	७।२०	१३।२६	१९।४२	२५।५८	२७	चित्रा	१६।५८	२३।२१	२९।४४	
३	चित्रा		७।४२	१४।०४	२०।२५	२०	कृत्तिका				९।५२	११	शत.	८।२३	१४।२७	२०।२१	२६।२५	२८	चित्रा				१२।०८
३	स्वाती	२६।४७				२०	रोहिणी	१५।२७	२१।०३	२६।३९		१२	पूभा.	८।२८	१४।२०	२०।२३	२६।०५	२८	स्वाती	१८।३२	२५।०१		
४	स्वाती		९।२७	१५।४७	२२।२७	२१	रोहिणी				८।२५	१३	उभा.	७।५८	१३।४०	१९।२३	२५।०५	२९	स्वाती			७।३१	१४।००
४	विशा.	२८।४७				२१	मृग	१३।५२	१९।३०	२५।०९		१४	रेवती	६।४८	१२।२२	१७।५६	२३।३०	२९	विशा.	२०।३०	२७।०५		
५	विशा.		११।२५	१८।०२	२४।४०	२२	मृग.				६।४६	१४	अश्वि.	२९।०५				३०	विशा.			९।४०	१६।२५
६	अनु.	७।२८	१४।००	२०।२३	२७।२५	२२	आर्द्रा	१२।२५	१८।०६	२३।४७	२९।२८	१५	अश्वि.		१०।३४	१६।०३	२१।३२	३०	अनु.	२२।५०	२९।३०		
७	ज्ये.	१०।०८	१६।५२	२३।३७		२३	पुन.	११।०८	१६।५२	२२।३६	२८।२०	१५	भरणी	२७।००				३१	अनु.			१२।२१	१८।५१
८	ज्ये.				६।२१	२४	पुष्य	१०।०४	१५।५२	२१।४०	२७।२८	१६	भरणी		८।२६	१३।५२	१९।२८	३१	ज्ये.	२५।३२			
८	मूल	१३।०५	१९।४८	२६।३१		२५	श्ले.	९।२५	१५।०६	२०।५८	२६।४९	१६	कृत्तिका	२४।४३	३०।०८			१नव	ज्ये.		८।२६	१५।००	२१।४४
९	मूल				९।२४	२६	मघा	८।४१	१४।३७	२०।३३	२६।२९	१७	कृत्तिका			११।३३	१६।५८	१	मूल	२८।२९			
९	पूषा.	१५।५७	२२।३५	२९।२४		२७	पूफा.	८।२५	१४।२६	२०।२७	२६।२८	१७	रोहि.	२२।२४	२७।५१			२	मूल		११।२६	१८।०३	२४।५०
१०	पूषा.				११।५२	२८	उफा.	८।२९	१४।३६	२०।४३	२६।५०	१८	रोहि.			९।२८	१४।४५	३	पूषा.	७।३६	१४।२२	२१।०८	२७।५४
१०	उषा.	१८।३०	२५।०१			२९	हस्त	८।५६	१५।०९	२१।२२	२७।३५	१८	मृग.	२०।२२	२५।४३			४	उषा.	१०।४१	१७।२३	२४।०५	

नव.	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
५	उषा.				६।४७
५	श्रवण	१३।२९	२०।०४	२६।३९	
६	श्रवण				९।१४
६	धनि.	१५।४९	२२।१३	२८।३८	
७	धनि.				११।०२
७	शत.	१७।२७	२३।३९	२९।५१	
८	शत.				१२।०३
८	पूभा.	१८।१६	२४।१५	३०।१४	
९	पूभा.				१२।१४
९	उभा.	१८।१३	२४।००	२९।४७	
१०	उभा.				११।३४
१०	रेवती	१७।२०	२२।५५	२८।३१	
११	रेवती				१०।०६
११	अश्वि.	१५।४२	२१।०९	२६।३६	
१२	अश्वि.				८।०३
१२	भरणी	१३।२९	१८।४९	२४।१०	२९।३०
१३	कृत्तिका	१०।५१	१६।०८	२१।२५	२६।४२
१४	रोहिणी	८।००	१३।१७	१८।३४	२३।५१
१४	मृग.	२९।०७			
१५	मृग.		१०।२६	१५।४६	२१।०५
१५	आर्द्रा	२६।२५			
१६	आर्द्रा		७।४९	१३।१३	१८।३७
१६	पुन.	२४।०२	२९।३३		
१७	पुन.			११।०४	१६।३५
१७	पुष्य	२२।०७	२७।४६		
१८	पुष्य			९।२६	१५।०५
१८	श्ले.	२०।४५	२६।३४		
१९	श्ले.			८।२३	१४।१२
१९	मघा	२०।०१	२५।५९		
२०	मघा			७।५७	१३।५५
२०	पूफा.	१९।५३	२६।००		

नव.	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२१	पूफा.			८।०७	१४।१४
२१	उफा.	२०।२१	२६।३६		
२२	उफा.			८।५१	१५।०६
२२	हस्त	२१।२१	२७।४३		
२३	हस्त			१०।०५	१६।२७
२३	चित्रा	२२।४९	२९।१७		
२४	चित्रा			११।४४	१८।१३
२४	स्वाती	२४।४०			
२५	स्वाती		७।१३	१३।४६	२०।१९
२५	विशा	२६।५२			
२६	विशा		९।२९	१६।०७	२२।४४
२६	अनु.	२९।२२			
२७	अनु.		१२।०३	१८।४४	२५।२५
२८	ज्ये.	८।०७	१४।५१	२१।३६	२८।२०
२९	मूल	११।०५	१७।५१	२४।३७	
३०	मूल				७।२३
३०	पूषा.	१४।१०	२०।५७	२७।४४	
१दिस	पूषा.				१०।३१
१	उषा.	१७।१७	२४।०२	३०।४७	
२	उषा.				१३।३२
२	श्रवण	२०।१७	२६।५७		
३	श्रवण			९।३७	१६।१७
३	धनि.	२२।५८	२९।३१		
४	धनि.			१२।०४	१८।३७
४	शत.	२५।०९			
५	शत.		७।३१	१३।५४	२०।१६
५	पूभा.	२६।३९			
६	पूभा.		८।५०	१५।०१	२१।१२
६	उभा.	२७।२२			
७	उभा.		९।२०	१५।१८	२१।१६
७	रेवती	२७।१३			

दिस	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
८	रेवती		८।५८	१४।४३	२०।२८
८	अश्वि.	२६।१४			
९	अश्वि.		७।४८	१३।२२	१८।५६
९	भरणी	२४।३०	२९।५५		
१०	भरणी			११।२०	१६।४५
१०	कृत्तिका	२२।०९	२७।२७		
११	कृत्तिका			८।४५	१४।०३
११	रोहिणी	१९।२१	२४।३५	२९।४९	
१२	रोहिणी				११।०३
१२	मृग.	१६।१८	२१।३१	२६।४४	
१३	मृग.				७।५७
१३	आर्द्रा	१३।११	१८।२६	२३।४१	२८।५६
१४	पुन.	१०।१२	१५।३२	२०।५२	२६।१२
१५	पुष्य	७।३२	१२।५९	१८।२६	२३।५३
१५	श्ले.	२९।२०			
१६	श्ले.		१०।५६	१६।३२	२२।०८
१६	मघा	२७।४५			
१७	मघा		९।३२	१५।१९	२१।०६
१७	पूफा.	२६।५२			
१८	पूफा.		८।५०	१४।४८	२०।४६
१८	उफा.	२६।४३			
१९	उफा.		८।५१	१५।०१	२१।१०
१९	हस्त	२७।१८			
२०	हस्त		९।३७	१५।५६	२२।१५
२०	चित्रा	२८।३३			
२१	चित्रा		११।००	१७।२८	२३।५५
२१	स्वाती	३०।२३			
२२	स्वाती		१२।५७	१९।३२	२६।०६
२३	विशा.	८।४१	१५।२०	२२।००	२८।४०
२४	अनु.	११।१९	१८।०२	२४।४५	
२५	अनु.				७।२८

दिस	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२५	ज्ये.	१४।१२	२०।५७	२७।४२	
२६	ज्ये.				१०।२७
२६	मूल	१७।१३	२३।५९	३०।४५	
२७	मूल				१३।३१
२७	पूषा.	२०।१७	२७।०२		
२८	पूषा.			९।४८	१६।३३
२८	उषा.	२३।१९	३०।०३		
२९	उषा.			१२।४७	१९।३१
२९	श्रवण	२६।१४			
३०	श्रवण		८।५४	१५।३४	२२।१४
३०	धनि.	२८।५४			
३१	धनि.		११।२९	१८।०४	२४।३९
३१	शत.	३१।१४			
१जन	शत.		१३।४१	२०।०९	२६।३६
२	पूभा.	९।०४	१५।२३	२१।४२	२८।०१
३	उभा.	१०।२०	१६।२८	२२।३७	२८।४५
४	रेवती	१०।५४	१६।५२	२२।५०	२८।४८
५	अश्वि.	१०।४५	१६।३२	२२।१९	२८।०६
६	भरणी	९।५२	१५।२८	२१।०५	२६।४१
७	कृत्तिका	८।१८	१३।४६	१९।१४	२४।४२
७	रोहिणी	३०।११			
८	रोहिणी		११।३२	१६।५४	२२।१५
८	मृग.	२७।३७			
९	मृग.		८।५४	१४।११	१९।२८
९	आर्द्रा	२४।४५	३०।०१		
१०	आर्द्रा			११।१७	१६।३३
१०	पुन.	२१।४८	२७।०५		
११	पुन.			८।२२	१३।३८
११	पुष्य	१८।५५	२४।१५	२९।३५	
१२	पुष्य				१०।५५
१२	श्ले.	१६।१६	२१।४३	२७।१०	

जन.	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१३	श्ले				८।३७
१३	मघा	१४।०३	१९।३८	२५।१३	३०।४८
१४	पूफा.	१२।२३	१८।०८	२३।५३	२९।३८
१५	उफा.	११।२४	१७।२१	२३।१८	२९।१५
१६	हस्त	११।१२	१७।२०	२३।२९	२९।३७
१७	चित्रा	११।४६	१८।०६	२४।२६	३०।४६
१८	स्वाती	१३।०६	१९।३६	२६।०६	
१९	स्वाती				८।३६
१९	विशा.	१५।०६	२१।४४	२८।२२	
२०	विशा.				१०।५९
२०	अनु.	१७।३७	२४।२०	३१।०३	
२१	अनु.				१३।४६
२१	ज्ये.	२०।३०	२७।१६		
२२	ज्ये.			१०।०२	१६।४८
२२	मूल	२३।३५	३०।२१		
२३	मूल			१३।०७	१९।५३
२३	पूषा.	२६।४०			
२४	पूषा.		९।२५	१६।१०	२२।५५
२४	उषा.	२९।३९			
२५	उषा.		१२।२१	१९।०२	२५।४३
२६	श्रवण	८।२५	१५।०२	२१।३९	२८।१६
२७	धनि.	१०।५२	१७।२३	२३।५५	३०।२६
२८	शत.	१२।५८	१९।२३	२५।४९	
२८	शत.				८।१४
२९	पूभा.	१४।४०	२०।५८	२७।१७	
३०	पूभा.				९।३६
३०	उभा.	१५।५४	२२।०५	२८।१६	
३१	उभा.				१०।२७
३१	रेवती	१६।३९	२२।४२	२८।४६	
१फर	रेवती				१०।४९
१	अश्वि.	१६।५३	२२।४९	२८।४५	

फर.	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
२	अश्वि.				१०।४१
२	भरणी	१६।३६	२२।२४	२८।१२	
३	भरणी				१०।००
३	कृत्तिका	१५।४७	२१।२८	२७।०८	
४	कृत्तिका				८।४८
४	रोहिणी	१४।२९	२०।०३	२५।३७	
५	रोहिणी				७।११
५	मृग.	१२।४५	१८।१४	२३।४३	२९।१२
६	आर्द्रा	१०।४०	१६।०५	२१।३०	२६।५५
७	पुन.	८।२०	१३।४३	१९।०६	२४।३०
७	पुष्य	२९।५३			
८	पुष्य		११।१७	१६।४१	२२।०५
८	श्ले.	२७।२८			
९	श्ले.		८।५४	१४।२१	१९।४७
९	मघा	२५।१४	३०।४५		
१०	मघा			१२।१६	१७।४७
१०	पूफा.	२३।१९	२८।५७		
११	पूफा.			१०।३५	१६।१३
११	उफा.	२१।५२	२७।३९		
१२	उफा.			९।२७	१५।१४
१२	हस्त	२१।०२	२७।००		
१३	हस्त			८।५८	१४।५६
१३	चित्रा	२०।५५	२७।०५		
१४	चित्रा			९।१४	१५।२५
१४	स्वाती	२१।३४	२७।५५		
१५	स्वाती			१०।१६	१६।३७
१५	विशा.	२२।५९	२९।३०		
१६	विशा.			१२।०१	१८।३३
१६	अनु.	२५।०४			
१७	अनु.		७।४४	१४।२४	२१।०४
१७	ज्ये.	२७।४३			

फर	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
१८	ज्ये.		१०।२८	१७।१३	२३।५८
१८	मूल	३०।४२			
१९	मूल		१३।२८	२०।१५	२७।०१
२०	पूषा.	९।४८	१६।३३	२३।१८	३०।०३
२१	उषा.	१२।४९	१९।३०	२६।११	
२२	उषा.				८।५२
२२	श्रवण	१५।३४	२२।०९	२८।४४	
२३	श्रवण				११।१९
२३	धनि.	१७।५४	२४।२२	३०।५०	
२४	धनि.				१३।१८
२४	शत.	१९।४५	२६।०५		
२५	शत.			८।२५	१४।४५
२५	पूभा.	२१।०६	२७।१९		
२६	पूभा.			९।३२	१५।४४
२६	उभा.	२१।५७	२८।०३		
२७	उभा.			१०।०९	१६।१५
२७	रेवती	२२।२२	२८।२२		
२८	रेवती			१०।२२	१६।२२
२८	अश्वि.	२२।२१	२८।१५		
१मार्च	अश्वि.			१०।१०	१६।०४
१	भरणी	२१।५९	२७।४९		
२	भरणी			९।३९	१५।२९
२	कृत्तिका	२१।१८	२७।०४		
३	कृत्तिका			८।५०	१४।३६
३	रोहिणी	२०।२१	२६।०३		
४	रोहिणी			७।४५	१३।२७
४	मृग.	१९।०८	२४।४७	३०।२६	
५	मृग.				१२।०५
५	आर्द्रा	१७।४३	२३।१९	२८।५५	
६	आर्द्रा				१०।३१
६	पुन.	१६।०८	२१।४२	२७।१७	

मार्च	नक्षत्र	चरण१	चरण२	चरण३	चरण४
७	पुन.				८।५१
७	पुष्य	१४।२६	२०।००	२५।३४	
८	पुष्य				७।०८
८	श्ले.	१२।४१	१८।१५	२३।४९	२९।२३
९	मघा	१०।५८	१६।३५	२२।१२	२७।४९
१०	पूफा.	९।२५	१५।०५	२०।४६	२६।२६
११	उफा.	८।०७	१३।५३	१९।४०	२५।२६
१२	हस्त	७।१३	१३।०७	१९।०१	२४।५५
१३	चित्रा	६।५०	१२।५४	१८।५७	२५।०२
१४	स्वाती	७।०५	१३।१९	१९।३३	२५।४७
१५	विशा.	८।००	१४।२४	२०।४९	२७।१३
१६	अनु.	९।३८	१६।१२	२२।४६	२९।२०
१७	ज्ये.	११।५३	१८।३४	२५।१५	
१८	ज्ये.				७।५६
१८	मूल	१४।३८	२१।२४	२८।१०	
१९	मूल				१०।५६
१९	पूषा.	१७।४१	२४।२७		
२०	पूषा.			७।१३	१३।५१
२०	उषा.	२०।४५	२७।२८		
२१	उषा.			१०।११	१६।५४
२१	श्रवण	२३।३६	३०।१२		
२२	श्रवण			१२।४९	१९।२५
२२	धनि.	२६।०२			
२३	धनि.		८।३०	१४।५८	२१।२६
२३	शत.	२७।५३			
२४	शत.		१०।११	१६।२९	२२।४७
२४	पूभा.	२९।०६			
२५	पूभा.		११।१५	१७।२४	२३।३२
२५	उभा.	२९।४१			
२६	उभा.		११।४१	१७।४१	२३।४१
२६	रेवती	२९।४१			

वास्तु द्वारा भाग्यवृद्धि

लेखक- श्री रामविलास शर्मा
C-7(14), गली नं.4 व 6 के बीच, गांव वजीराबाद,दिल्ली-84
फोन नं. 9868281005, 23814673

जन्म समय की ग्रहस्थिति भाग्य निश्चित करती है। ग्रहगोचर व दशान्तर्दशा घटनाओं के घटने का समय निश्चित करती है। इसी प्रकार निवास या कार्यस्थल का वास्तु उसके भाग्य की सीमा निर्धारित करता है। वास्तु एवं ज्योतिष मानव कल्याण हेतु ऋषि-मुनियों द्वारा प्रतिपादित वैदिककालीन सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित प्रमाणित विज्ञान है। इनके नियम, सिद्धान्त व परिणाम अटल है। जन्मपत्रिका की ग्रहस्थिति नहीं बदली जा सकती है। निवास या कार्यस्थल का निर्माण व व्यवस्था वास्तु के नियम (सिद्धान्त) के अनुसार करके निश्चितरूप से सौभाग्यशाली बना जा सकता है।

ज्योतिष व अध्यात्म वास्तु के पूरक हैं। वास्तुसम्मत निवास या कार्यस्थल से पूर्णलाभ तभी उठाया जा सकता है। जब भूमिपूजन गृहारम्भ, द्वारस्थापना, जलस्त्रोत खोदना व गृहप्रवेश शुभमुहूर्त में देवपूजन व ग्रहशान्ति द्वारा करें।

एक निश्चित भूखण्ड पर दसों दिशाओं में पंचतत्वों को समायोजित, सुव्यवस्थित व सुनियोजित करना वास्तु है। वास्तुविज्ञान दिशाओं पर आधारित है। हर तत्त्व व कार्य के लिए स्थान निर्धारित है।

भूखण्ड का चुनाव:- भूखण्ड वाले स्थान की भूमि का ढ़लान पूर्व, उत्तर या ईशान में हो। भूखण्ड के उत्तर, पूर्व व ईशान में जलस्त्रोत, तेजढ़लान, गड्ढ़े तथा पश्चिम, दक्षिण व नैऋत्य में ऊंचे पहाड़, पेड, भवन सौभाग्यवृद्धि करते हैं। प्लाट के आसपास या सामने कब्रिस्तान, शमशानघाट, कसाईघर, मुर्दाघर, धर्मस्थल, बरातघर, बड़ास्कूल न हो। उस भूखण्ड की भूमि काली, बदबूदार या दरारयुक्त न हो।

प्लाट का आकार:- वर्गाकार प्लाट जिसके चारो कोण ९० डिग्री के हों, सर्वोत्तम माना गया है। आयताकार प्लाट जिसकी लम्बाई- चौड़ाई से दुगनी से अधिक न हो और चारों कोण ९० डिग्री के हों शुभ फलदायक है। चार भुजा से कम या अधिक व अनियमित आकार का प्लाट अशुभ है। ईशानकोण का बढ़ना प्रगतिदायक है। अन्य कोण का घटना या बढ़ना भाग्यावरोधक है।

मार्ग का फलादेश:- प्लाट के चारों ओर रोड़ होना सर्वोत्तम माना गया है। प्लाट के पूर्व, उत्तर व पश्चिम इन तीनों तरफ सड़क उत्तम है। प्लाट के उत्तर व पूर्व में रोड़ अत्यन्त शुभ है। पूर्वमुखी प्लाट जिसके उत्तर में ऊंचे भवन, पहाड व पेड़ न हों तथा उत्तरमुखी प्लाट जिसके उत्तर में ऊंचे भवन, पहाड़ व पेड़ न हो।

ईशानकोण:- ईश्वरकृपा, वंशवृद्धि, मानसिकशान्ति, बृहस्पतिग्रह व शंकरभगवान की कृपा प्रदान करता है। यहाँ का फर्श लेवल व बिल्डिंग की ऊँचाई सबसे नीची होनी चाहिए। ईशान में शौचालय, सीढ़ियां, रसोई व भारी निर्माण भाग्यावरोधक है। यहाँ अण्डरग्राउंड, वाटरटेंक, पूजास्थल, लॉबी, स्वागतकक्ष, वास्तुअनुकल माने गये हैं।

पूर्वदिशा:- के स्वामी ग्रह सूर्य व देवता इंद्र हैं। पूर्वदिशा जीवनसमृद्धि, यश व राजकीय सम्मानप्रदायक है। पूर्वदिशा में फर्श का लेवल व बिल्डिंग की ऊंचाई पश्चिम व दक्षिण से नीची हो। यहाँ स्नानघर, पूजाघर, अध्ययनकक्ष बनाना प्रशस्त है।

अग्निकोण:- के स्वामी ग्रह शुक्र व देवता अग्नि हैं। यहाँ रसोई, भट्टी, जनरेटरकक्ष व अन्य अग्नि संबन्धित कार्य भाग्यवर्धक हैं। यह दिशा शक्ति, सुन्दरता व ऐश्वर्यप्रदान करती है। यहाँ के फर्श का लेवल व भवन की ऊँचाई नैऋत्य से कम, वायव्य के लगभग तथा ईशान से अधिक होना चाहिए।

दक्षिणदिशा:- स्वास्थ्य, दीर्घायु, मंगलग्रह व यमराज देवता की कृपा प्रदान करती है। यहाँ के फर्श का लेवल व भवन की ऊँचाई पूर्व व उत्तर से ऊँची हो। यहाँ गड्ढे, जलस्त्रोत व खाली स्थल दुर्भाग्यकारक है। नैऋत्य कोण स्थायित्व, प्रभुत्व संचालन, शक्ति, नेतृत्व क्षमता राहु ग्रह व नैऋति देवी की कृपा प्रदान करता है। यहाँ गृहस्वामी का शयनकक्ष, स्टोर, सीढ़ियाँ, भारीनिर्माण, छत पर पानीकी टंकी भाग्यवर्धक है। यहाँ कूंआ, बोरवेल, अंडरग्राउण्ड वाटरटैंक, रिक्त स्थान, द्वार भाग्यावरोधक है।

पश्चिमदिशा:- सुख, स्वास्थ्य, धन, कार्यक्षमता, वरुणदेव व शनिग्रह की कृपाप्रदान करता है। यहाँ पुत्रों का कक्ष, डायनिंगरूम, अध्ययनकक्ष प्रशस्त हैं। यहाँ पूर्वके मुकाबले भारीनिर्माण होनाचाहिए।

वायव्यकोण:- के स्वामी ग्रह चंचल चन्द्रमा व देवता वायुदेव हैं। यह कोण सामाजिक संबंध व राजकीयकृपा, इष्टमित्रों से सहायता प्रदान करता है। स्वागतकक्ष, विवाहयोग्य कन्या हेतु कक्ष, बाग इत्यादि यहाँ बनाये जा सकते है।

उत्तरदिशा:- उत्तरदिशा के स्वामी ग्रह बुध व देवता कुबेर हैं। यह दिशा धन समृद्धि प्रदान करती है। यहाँ धनके लिए कक्ष व नवविवाहित दंपत्ति कक्ष प्रशस्त हैं।

कक्ष स्थापना

रसोई:- अग्निकोण में सर्वोत्तम है। स्थानाभाव के कारण रसोई पूर्व, दक्षिण या वायव्य कोण में भी बनाई जा सकती है। परन्तु ईशानकोण, उत्तर व नैऋत्य में रसोई भाग्यावरोधक है। खाना बनाते समय गृहणी का मुंह पूर्व दिशा में होना चाहिए।

स्टोर:- दक्षिण, पश्चिम व नैऋत्य में बनाना चाहिए।

शौचालय:- मध्य दक्षिण से नैऋत्य व नैऋत्य से मध्य पश्चिम में होना चाहिए।

गृहस्वामी:- का कक्ष नैऋत्य कोण में सर्वोत्तम है। स्थानाभाव में इसे दक्षिण व पश्चिम में भी बनाया जा सकता है। अध्ययनकक्ष पूर्व में प्रशस्त है। इसे पश्चिम में भी बनाया जा सकता है। सन्तानों के लिए कक्ष पश्चिम व दक्षिण कोण में प्रशस्त है। अतिथिकक्ष वायव्य में बनायें। स्थानाभाव में इसे ईशान में भी बनाया जा सकता है। सीढ़ियाँ मध्यपश्चिम से नैऋत्य व नैऋत्य से मध्य दक्षिण में होनी चाहिए। सैफ्टी टैंक वायव्य कोण बचाते हुए उत्तरदिशा की ओर हो। पूजा स्थल ईशानकोण में उत्तम है। इसे पूर्व व उत्तर में भी बनाया जा सकता है। पूजा करते समय मुंह पूर्व, उत्तर या ईशान में हो। ब्रह्मस्थल पर भारी निर्माण, खम्भा, गड्ढ़ा, रसोई, शौचालय, सीडियाँ और कूड़ाघर नहीं होना चाहिए, क्योंकि ब्रह्मस्थल से हमें नवग्रहों की रश्मियाँ मिलती हैं। यहाँ के स्वामी ब्रह्माजी हैं। यह स्थान खुला रखने से विकसित मानसिकता की प्राप्ति होती है।

सौभाग्य, स्वास्थ्य, सुख, समृद्धि और वंश विस्तार
अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष के वास्तुदेव दातार।

रिहायशी भवन में तहखाना, छत पर कबाड़ का होना गृहस्थ सुख कम करता है। दुकान अत्याधिक ऊँची होने से ग्राहक उससे दूर रहते हैं। निवास या कार्यस्थल के सामने कूड़ा करकट, गन्दे पानी का जमा होना दुर्भाग्यकारक सिद्ध होता है। पूर्व व उत्तरमुखी घर के फर्श का लेवल सड़क से नीचा होने से समृद्धि नहीं मिलती, चाहे स्थल का निर्माण व व्यवस्था वास्तु अनुकूल हो।

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापारिक भविष्य सन् 2008-09

लेखक-श्री मनीष कुमार जैन पोरसा वाले, लाइट मशीनरी- चम्बल कालोनी, थाटीपुर, ग्वालियर, म.प्र.-474011

अप्रैल २००८

२७ मार्च से ५ अप्रैल तक सरसोंफली तेल १२५ तेज, ५से ७ अप्रैल तक तेलों में मन्दी, ७ से १२ अप्रैल तक सरसों ५५तक तेज, फली तेल ९९ की जोरदार तेजी बन सकती है। १२ से २८ अप्रैल तक तेलों में मन्दी, १९ से २५अप्रैल तक फली तेल २७५ तेज, सरसों ९९ तेज, २५ से ३० अप्रैल तक तेल गुवार में जोरदार मन्दी आ सकती है। १ से १५ अप्रैल तक कालीमिर्च में ७७७ की जोरदार तेजी तो आगे ३ मई तक जोरदार मन्दी चल सकती है। ता.१८ सूर्यबुध की युतिसे ३ से ११ अप्रैल तक सोयाबीन तेल इन्दोर २७ की भारी तेजी, सिंगदाना फली तेल २७५ की भारी तेजी, सरसों १२७ तेजी, चना १५५ तेजी, ता.२१ तक अरण्ड, अलसी, सोयाबीन में तेजी चल सकती है। ता.७ से २३ तक जीरा ७०७ की मन्दी लहसुन में चना, मसूर, मटर, तोवडा में भारी मन्दी चल सकती है। सन् २००८ में मार्केट घटा-बढी का है। २७.१२.२००७ से ५.३.२००८ के बीच कभी नये रिकार्ड भाव BSE १९९९९ के स्तर छू कर २५.५.२०११ तक ५५८५ या ६३७७ के नीचे स्तर को छू सकता है। शेयर मार्केट २००८ में भयंकर मन्दी चलने का अनुमान है। आगे भविष्य में उम्मीद है। चांदी २०९९९ आगे दो वर्ष में कमी ११९९९ सोना १२०० जो ऊंचे में १२२०१ में वाला ऊंचा भाव ७५०० तोला या ८४९९ के नीचे भाव रह सकते हैं। ग्वार नीचे में १२९९ फिर २२०० फिर १८०० होरक २५०० फिर ११०० सन् २००८ से सन् २०१० तक ग्वार Cluster Been Seeds सन् २०१० ४१०० से ४५०० के स्तर छूकर बाद में घटकर ९९९ रह सकती है। जीरा काली मिर्च लोंग पोस्तदाना भयंकर घटा-बढ़ी चलने की आशा। बाजार रुख देखकर व्यापार करें।

मई २००८

१ मई से ९ मई तक सोयाबीन तेल २९९ की तेजी, ९ मई से २३ मई तक फली तेल १२५ की मन्दी तो २३ मार्च से ३१ मई २००८ तक सरसों ५५ फली तैल १६५ तेजी आ सकती है। ७ मई से ३० मई के बीच कालीमिर्च में अच्छी तेजी, गुवार में जोरदार मन्दी चल सकती हैं। २९ मई के ७ या १५ दिन पहले से सरसों, अरण्ड, फली तेल में मन्दी चल सकती है। तेलों के नीचे भाव आगे महीने में घट-बढ़ से कुछ तेजी बन सकती है।

जून २००८

१जून से १५ जून के बीच फली तैल ३९९ की जोरदार मन्दी सोयाबीन में २८ की जोरदार मन्दी तो १६ जून से २१ जून तक तेलों में अस्थाई तेजी तो गुवार में ३ जून से २५ जून तक घट-बढ़ से तेजी आ सकती है। २१ जून से ५ अगस्त तक चना, मसूर, मटर सेवडा में अच्छी तेजी आ सकती है। १ जुलाई काली मिर्च में तेजी आ सकती है। ३ जून सूर्यबुध युति से १५-२० दिन पूर्व से चना में चल रही तेजी समाप्त होकर चना अरहर में मन्दी होगी। पिपरमेन्ट में भारी तेजी, काबुली चना में ४०५ की तेजी, रुई मक्का ४५ की मन्दी, अरहर ४०५८ की मन्दी, इमली ९९ की, चांदी-सोना-शेयर्स में तेजी, मैथी, लोंग, जीरा में तेजी चल सकती है। गेंहू, बाजरा में तेजी चल सकती है। चीनी गुड़में तेजी होगी। दानपुण्य करते रहें।

जुलाई २००८

२७ जून से १२ जुलाई तक तेलों में अच्छी तेजी तो १२ जुलाई से २ अगस्त तक सरसों, अलसी, अरण्ड में भारी मन्दी, फली तेल, सोयाबीन मन्दी तो ३० जुलाई तेलों में तेज उछाला आ सकता है। ३० जुलाई को सूर्यबुध युति से १५-२० दिन पूर्व से चना में चल रही तेजी समाप्त होकर चना अरहर में मन्दी, पिपरमेन्ट में भारी तेजी, काबुली चना में तेजी चल सकती है। गेंहू बाजरा में तेजी चल सकती है। चीनी गुड में अच्छी तेजी आ सकती है। ता १अग.से १सित. के बीच चना मसूर मटर में तेजी तो ७जुला. से ७अग. के बीच सरसों १७५ तेजी, अरहर व अरण्ड तेज, सोयाबीन तैल २७ तेज हो तो ७ से ११ अगस्त के बीच सोयाबीन तेल ४५-७७ की जोरदार मन्दी बनने की सम्भावना है। गुवार ५५ की भारी तेजी जीरा २७९९ की छोटी इलायची में तेजी आ सकती है। तो बादमें गुवार जीरा लाल मिर्च हल्दी में मन्दी का वातावरण बन सकता है। ५ अक्टूबर से ७ दिसम्बर तक गुवार गम ११०१ से १५७७ की जोरदार मन्दी चल सकती है।

अगस्त २००८

२९ जुलाई से ११ अगस्त तक मूंगफली तेल २९९ की जोरदार मन्दी, सोयाबीन १० किलो ५५ की जोरदार मन्दी, सरसों, बिनौला में जोरदार मन्दी, गुवार जीरा, हल्दी में तेजी आ सकती है। ११ से २१ अगस्त तक तेलों में अच्छी तेजी का उछाला तो ३० अगस्त तेलों के बढ़े भाव गिर सकते हैं। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। २१ अगस्त से १५ सित. तक जीरा, हल्दी, गुवार में अच्छी तेजी चल सकती है। ११ अगस्त से १५ सित. तक चना अरहर में तेजी आ सकती है।

सितम्बर २००८

२७ अग. से ३ सित. तक अरण्ड अलसी में मन्दी, तो सितम्बर २००९ तक तेजी गुवार इलायची जीरा तो बाद में आयेगी। तेलों में घट-बढ़ से सित.-अक्टू.२००८ तक फली तेल २८१की (१०० किलो तेल पर मन्दी) तो ११ सित. से २३ सित. के बीच सोयाबीन तेल इन्दौर २७ की तेजी फली तेल २४५ की तेजी तो ३० सित. तक तेलों में जोरदार गिरावट तो गुवार जीरा में अच्छी तेजी आ सकती है। १५ से २५ सित. के मध्य अरहर हल्दी ५५५ मटर तेज, लौंग CVLOV75 ज्वार ५५ की तेजी लालमिर्च ७०७ चावल बासमती में तेज मसूर मूंग KIDDNEYSEEDS राजमा २५९ तेज मगर जीरा ५०५ की मन्दी आ सकती है। २५ अग.से ५ अक्टू. के बीच POPYEDSEEDS27779 की भडकती तेजी। काजू २५२५ मगर राजमा में मन्दी चल सकती है। १८सित.से ७अक्टू. तक राजमा, बाजरा, उडद, मूंग, खोपरागोगला, पिस्ता जीरा १९७७ की प्रचण्ड मन्दी का दौर चल सकता है। २५ सित. से २० अक्टू.तक बादाम इलायची, सुपारी में तेजी, अरण्ड,

राजमा, मक्का, बाजरा आदि में अच्छी मन्दी, मूंगफली तेल ९९९ की जोरदार मन्दी, धनियाँ लालमिर्च गुवार ७७७ की जोरदार मन्दी चल सकती है। १ अक्टू.से १८ अक्टू तक बादाम २०३ तेज, काजू ५५ तेज, छोटी इलायची ७५ तेज, इमली २०३ तेज, हल्दी ५७५ तेज, खोपरागोला ५०५ अरहर मटर गेंहू में तेजी आ सकती है। मगर उडद, मूंग, सोयाबीन, सरसों, फली तेल में जोरदार मन्दी आ सकती है।

अक्टूबर २००८

१ से १८ अक्टू. सोयागीन तेल मूंगफली, करडी तिल सरसों में जोरदार मन्दी, गुवार लालमिर्च जीरा हल्दी आदि में मन्दी आ सकती है। १८ से २८ तक तेलों में २८५ की अक्टू. से ११ नव. मन्दी आ सकती है। ६ अक्टू. सूर्य बुध युति से २५ अग. से ५ अक्टू. तक बडी इलायची १५७४५ तेज, किसमिश १५७७ तेज, सौंठ ५०५ तेज, जीरा ३७७७ तेज, बाजरा ५५तेजी, रुई बारदाना में तेजी, धनियाँ ७०७ तेज तो शेयर्स मार्केट में २५ दिन पहले से १५ अक्टू. B.S.E.INDEX· में २७९९ की जोरदार गिरावट आ संकती है। ज्वार, बाजरा, चना, अलसी में तेजी आ सकती है। गुवार में जोरदार मन्दी चल सकती है। १५ अक्टू.से १५ जन.०९ तक उडद ४०५ से ५५५ की तेजी कोई लाइन निकल सकती है। १५ नव.से २७ दिस. के बीच सोयाबीन में मूंगफली करडी अरण्ड में तेजी आ सकती है। २०जन.सूर्य बुध युति से डेढ़ महीने पूर्व ११ दिन बाद तक ९९९ पोइन्ट की भारी तेजी, उडद ३०१की मन्दी, मटर २९९की मन्दी, मूंग २०६की मन्दी, सुपारी ४०५ तेजी, कलोंजी ७०९ छोटी इलायची में तेजी, चना १५-२० दिन ७५ तेजी गुवार ३७७ की जोरदार मन्दी लाल मिर्च १९९९ की मन्दी तैल तिलहन ११-१५ दिन जोरदार मन्दी आ सकती है।

नवम्बर २००८

१ से २० नवम्बर तक तिलहन में जोरदार गिरावट का दौर चल सकता है। १ नव.से ५ दिस. तक चना, अरहर में जोरदार मन्दी चल सकती है। २७ नव. को सूर्य बुध युति से १०-१५ दिन में चना १५०-२५५ की तेजी आ सकती है। १९ नव. से ७ दिस. के बीच फली तेल सोयाबीन तेल ४५ की जोरदार मन्दी तो ११ दिसम्बर तक तेजी ११ दिस. से ३ जन.०९ तक मूंगफली तेल १५७५ की भारी मन्दी सोयाबीन ३७ से६५ की मन्दी तो ५ जन. से २१ जन. तक तेजी २१ जन. से ३ फरवरी तक मन्दी ३ से १७ फर.०९ तक तेलों में भारी तेजी आ सकती है। १७ फर. से ७ मार्च के बीच फली तेल ९९९ की जोरदार मन्दी, सरसों में ७७ की मन्दी चल सकती है।

दिसम्बर २००८

१ से ११ दिस. तक फली तेल २०८ बिनौला सोयाबीन अरण्ड अस्थाई तेजी तो १२ से ३१ दिस. तक अरण्ड अलसी सरसों में जोरदार मन्दी आ सकती है। ११ दिस. तक तेलों में १५-१५ दिन पूर्व से भयंकर मन्दी चलकर नीचे भाव हो सकते हैं।

जनवरी २००९

१ से ३१ जन०९ तक तेल तिलहन बिनौला में जोरदार मन्दी आ सकती है। २९ जन. के आसपास तैल तिलहन में भयंकर मन्दी होकर नीचे भाव बन सकते हैं। २० जन. इन्फेरियर कन्जंक्शन तेलों में भारी मन्दी बन सकती है। ९ जन. से ५ फर के बीच जायफल NUTMEG २५ तेज जावित्री मगज तरबूज ७७७ तेज, कालीमिर्च ७०९ तेल, सोयाबीन DOG ५१५ तेज, चीनी, जीरा, चावल में तेजी चल सकती है। १९ जन. से ५ फर. के बीच अरण्ड तेल, ५७७ की भारी मन्दी, फली तेल ९९९ की मन्दी, सरसों Mustard १५५ मन्दी, चना १५५ मन्दी, चावल ९९ की मन्दी आ सकती है। १५ जन. से ७ फर. तक मसूर ७५, मटर अरहर १७७ की मन्दी, इमली में २५५ की मन्दी चल सकती है। २१ जन. से ११ फर. तक धनियाँ लहसुन ७००, जीरा, किसमिस ७०७ की मन्दी सौंफ ५०५ आदि में जोरदार मन्दी चल सकती है।

फरवरी २००९

३ से ११ फर. तक तेलों में तेजी लाल मिर्च धनियाँ जीरा में गुवार में जोरदार मन्दी आ सकती है। ११ से १८ फर. तक तेजी, २८फर. तक गुवार धनियाँ में जोरदार मन्दी आ सकती है। ११ से २१ फर. तक ज्वार ५५ तेजी, मक्का १५ तेज, चीनी ७५ तेज, सौंठ ५०५ तेज तो गुड़-मसूर चना २५ सोयाबीन Docsos की मन्दी आ सकती है। २१ जन. से १ मार्च तक गुवार में ५०५ की मन्दी आ सकती है। २१ फर.से २७ मार्च तक अरहर ३०९ की भड़कती तेजी आ सकती है। २७ फर से ११ मार्च तक गुवार में तेजी आ सकती है। ११ मार्च से १५ मार्च तक मन्दी गुवार में चल सकती है। १९ फर. से ५ मार्च तक कालीमिर्च ९९९ की भड़कती तेजी, लोंग २५ गुड Jagery २५५ तेज, जीरा ९९ चीनी ११५ तेज, गेंहू २५ सोयाबीन Dog ५७५ तेजी, खोपरा गोला में भडकती तेजी तो अरण्ड Castor सौंठ ५० चावल ३५, इमली में २५५ की जोरदार मन्दी चल सकती है।

मार्च २००९

१ से ११ मार्च तक सरसों अलसी, अरण्ड, मूंगफली तो १८ मार्च तक मन्दी तेलों गुवार में तेजी १८ मार्च से सरसों हल्दी गुवार में अच्छी तेजी आ सकती है। ३१ मार्च सुपीरियर कजंक्सशन तेलों में आगे तेजी चल सकती है। १७ मार्च Inferior Conjuction युति। ७ से २१ मार्च तक सौंठ ७७७ तेज, मूंग Kiddneu Been Seeds में ५५५ की भारी तेजी उड़द ३०९ तेजी, चीनी, गुड ७५ तेजी, किसमिश में तेजी आ सकती है। लालमिर्च लहसन में मन्दी आ सकती है। गुवार, अरहर में १५ मार्च से २१ अप्रैल तक तेजी-चल सकती है। १५ मार्च से ९ अप्रैल तक लालमिर्च, हल्दी, गेंहू आदि में मन्दी का झटका लग सकता है। २३ मार्च से १२ अप्रैल के बीच कभी भी जावित्री मक्का, मसूर, किशमिश में तेजी तो हल्दी, इमली सिंघाडे में मन्दी तो बासमती चावल १७७ तेज ज्वार ५५ तेज मक्का ४५ तेजी आ सकती है। व्यापार में लाभ हानि की जिम्मेदारी लेखक व संपादक की नहीं होगी।

चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव संवत् २०६५ वि.

लेखक पं. अनिल कुमार व्यास गया मथुरा फोन नं. 05663-273353, 273492

चैत्र

७ अप्रैल २००८ सोमवार को चैत्र मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन १५ मुहूर्तो व मेष राशि के अन्तर्गत हो रहा है। अतः तुष धान्य के भावों में वृद्धि, अनाजों में मन्दी व सरसों, तिल, तेल, अलसी के भावों में तेजी को बल प्रदायक है। यह चन्द्रदर्शन अश्विनी नक्षत्र के अन्तर्गत है, अतःउदित समय इसका दक्षिण श्रृंग उच्च होगा। उदित समय इसका वर्ण रक्त होगा, जिससे गेंहू, जौं, चना, मटर व दालवाना, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर के भावों में घटाबढ़ी तो होगी, लेकिन भावों में तेजी को ही बल मिलेगा। सोना, चांदी, पीतल, कांसा, रांगा, शेयर के भाव प्रथम मन्दी का मान कर सुधार बना लेंगे। कपासिया, सींगदाना, गिरकर सुधार लेंगे। अलसी, अरण्डी, सोयाबीन, सूर्यमुखी, वेजीटेबल, लोहा, सरसों, तिल, तेल, महुआ के भावों में घटा-बढ़ी से तेजी, घी, दवाऐं, केमीकल, रसायन, खनिजपदार्थों को भी बल मिलेगा। बाजारों में नये शेयर्स चलन में आयेंगे।

वैशाख

६ मई २००८ बुधवार को वैशाख मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रोदय महेन्द्रमण्डल व वृष राशि के अन्तर्गत व ३०मुहूर्त्ती है। जौं, चना, मटर, गेंहू के भावों में मन्दी का प्रभाव होगा। चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्तो होने से प्रत्येक जीन्स में घटा-बढ़ी का मान होगा। चलते भावों में परिवर्तन आयेगा। उदित समय इसका वर्ण लाल व दक्षिण श्रृंग उच्च होगा, जिससे गुड, शक्कर, चीनी, मिश्री के भावों में तेजी बनेगी। गेरु, लालचन्दन, मजीठ के भावों में तेजी। सोना, चांदी शेयर के भाव टूटकर अच्छी तेजी को बल देंगे। उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, मघ, अरहर के भावों में नमी आयेगी। सोना-चांदी, रूई, सूत, वस्त्र, सन, वारदाना, जूट, गुड, शक्कर, खाण्ड में मन्दी का झटका ले सुधार हो। शेयर, घी, अन्न के भावों में तेजी। अफीम, पोस्त, कोयला, समुद्र से प्राप्त होने वाली वस्तु व भांग, शराब, तम्बाकू तथा जीवन उपयोगी दवाओंके भावों में तेजी का वातावरण बनेगा।

ज्येष्ठ

५ जून २००८ गुरुवार को ज्येष्ठ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन मिथुन राशि व आर्द्रा नक्षत्र के अर्न्तगत हो रहा है। अतः गेंहू, चना, जौं, रूई, सूत के भावों में तेजी को बल मिलेगा। सोना, चांदी व गुड के भावों में मन्दी। उदित समय इसके दोनों श्रृंग व शूल समान होंगे। चन्द्रदर्शनमु.१५ होने से चावल, चना, मटर, अरहर के भावों में तेजी को बल मिलेगा। सभी वस्तुओं में न्यूनता और मांग वृद्धि होने से तेजी का प्रभाव रहेगा। उड़द, मूंग, दालचीनी, गेंहू के भावों में गिरावट बनेगी। सोना २ से ८, चांदी ६ से ८ तक तेजी बना लेगी। रूई, सूत, सन, पाट, शेयर, बारदाना, कपासिया, सर्पमुखी चाल से तेजी बना लेंगे। ज्वार, बाजरा, मघ के भावों में सुधार होगा। गुड, शक्कर, चीनी, दूध, दही के भावों में तेजी।

आषाढ़

४ जुलाई २००८ शुक्रवार को आषाढ़ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। चन्द्रोदय अग्निमण्डल में है। चन्द्रदर्शन मु. ३० है। भावों में समता के साथ तेजी को बल मिलेगा। उदयकाल में वर्ण श्वेत दोनों सींग समान व उच्च होंगे। सभी जीन्सों में लगभग घटा-बढ़ी चलने के साथ-साथ तेजी को बल मिलेगा। सोना, चांदी, स्टील, पीतल, कांसा, तांबा के भावों में तेजी को बल मिलेगा। रूई, शेयर, पाट, वारदाना, कपासिया के भावों में तेजी प्रधान रहेगी। गेंहू, चना, मटर के भावों में मन्दी, ज्वार, बाजरा, मक्का, मोंठ, मसूर, अरहर के भाव गिरकर सुधार लेंगे। जनता में रोग, ज्वर, आईफलू जैसे रोगों से कष्ट, चीनी, गुड, दूध, सब्जी में तेजी।

श्रावण

३ अगस्त २००८ रविवार को श्रावण मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। चन्द्रोदय ३० मुहूर्त्ती है। उदयकाल में चन्द्रमा का वर्ण रक्त होगा और दोनों श्रृंग सम व उच्च होंगे। जनता के कष्टों व रोगों में वृद्धि बनेगी। चन्द्रोदय काल में बादल हो या चन्द्रबिम्ब दिखाई न दे तो आगे अच्छी वर्षा का संकेत है। गेंहू, जौं, चना, मटर के भावों में सुधार के साथ तेजी, सोना, चांदी, शेयर के भावों में अच्छी घटा-बढ़ी, पाट, रूई, वारदाना, सूत, सन, कपास गिरकर तेजी लेंगे। मूंग, मसूर, अरहर, ज्वार, बाजरा, मक्का, मोंठ के भावों में तेजी प्रधान रहेगी। शनिवासरी अमावस्या से तिल तेल, गुड, घी, शक्कर, उडद के भावों में तेजी, सरसों, मघ, अरण्ड, मूंगफली के भावों में तेजी को बल मिलेगा। धातु बाना, सीसा के भावों में मन्दी का झटका, अफीम, तम्बाकू व चाय के भावोंमें गिरकर तेजी का योग। विशेष रिपोर्ट मंगाकर लाभ उठाएं।

भाद्रपद

१ सितम्बर २००८ को भाद्रपद मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्र दर्शन सोमवासरी व ४५ मुहूर्त्ती है। पीतल, स्टील, पारा, कांसा, कलई, सीसा व शेयरों के भावोंमें तेजी को बल मिलेगा। उदयकाल में चन्द्रमा का वर्ण पीत होगा और दोनों श्रृंग शूल के समान उच्च होंगे जो कि प्रत्येक जीन्स में तेजी, प्रजा में भय, भ्रष्टाचार को बल प्रदान करेंगे। प्राकृतिक प्रकोप से फसलों में नुकसान, कृषकवर्ग को कष्ट, सूत, सन, सोयाबीन, मूंगफली, अरण्डी, घी, वेजीटेबल के भावों में तेजी। रूई व चांदी गिरकर सुधार लेंगी। सोना, हल्दी, पीतल घटा-बढ़ी से तेजी को बल देंगे। राजविग्रह, आन्दोलन, पशुओंमें रोग, गेंहू, जौं, चना, मटर गिरकर सुधार बना लेंगे। एवरेजमें चलती लाइन में परिवर्तन आयेगा।

आश्विन

१ अक्टू. २००८ बुधवार को चन्द्रदर्शन वायु मण्डल में हो रहा है। यह चन्द्रोदय १५ मुहूर्त्ती होगा। सभी बाजारों में परिवर्तन के साथ तेजी का मान होगा। उदय के श्वेत भाल धवल होगा। श्वेत रग की वस्तुओं के भावों में गर्मी बनेगी। उदित समय इसके दोनों श्रृंग समान होंगे अतः प्रत्येक जीन्स उतार-चढ़ाव के साथ अपना पुराना रूख बना लेंगे। रूई, सूत, सन, पाट, शेयर, वारदाना, कपास, कपासिया के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा। चांदी, सोना, पीतल, सीसा, कांसा, तांबा प्रथम गिरकर सुधार बना लेंगे। तिल, तेल, सरसों, अलसी, सींगदाना के भावों में मन्दी का मान होगा। गेंहू, जौं, चना, मटर, अरहर, मूंग, मोठ, मसूर के भाव टूटकर समता को बल देंगे। ज्वार, बाजरा, ग्वार, मक्का के

भाव में मन्दी का मान होगा। चावल, चीनी, शक्कर, मिश्री के भाव घटा-बढ़ी से सुधार लेंगे। इलायची, केसर, कस्तूरी के भावोंमें तेजी। धनिया, सोंठ, मिर्च, पीपल के मूल भावोंमें वृद्धि, मक्की, हींग, मजीठ, गेरू, पत्थर, इमारती लकड़ी के भावों में सुधार आयेगा।

कार्तिक

३० अक्टूबर २००८ गुरुवार को कार्तिक मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्त्ती है। अतः सभी प्रकार के अनाजों में मन्दी का झटका लगेगा। गेंहू, बाजरा, मूंग, ज्वार, गुड, खल, खाण्ड, अलसी, शेयरों के भावों में तेजी। उदय समय इसके दोनों श्रृंग समान आकृति के व उच्च होंगे, जो कि सभी जीन्सों में घटा-बढ़ी का संकेत दे रहे हैं। चन्द्रदर्शन के बाद सोना, चांदी, रूई, सूत, मूंगफली के भावों में तेजी चन्द्रदर्शन के समय इसका वर्ण श्वेत होगा। गेंहू जौ, चना, मटर के भाव मन्दी लेकर तेजी बना लेंगे। पीतल, स्टील, लोहा व शेयर्स के भाव प्रथम तेजी लेकर गिर जायेंगे। तिल,तेल,अलसी,अनाजोंमें तेजी। इमारती सामान, लकड़ी, पत्थर, धनिया, मिर्च के भावों में तेजी रहेगी।

मार्गशीर्ष

२९ दिसम्बर २००८ शनिवार को मार्गशीर्ष मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह ३० मुहूर्त्ती है। अतः सभी व्यापारिक जीन्सों में घटा-बढ़ी से मन्दी का झटका लगेगा। चन्द्रमा उदित समय पीतवर्ण तथा इसकी उत्तरी श्रृंग की नोक उच्च होगी, जिससे व्यापार में प्रथम सप्ताह मन्दी का झटका लगेगा। चन्द्रदर्शन शनिवासरी है, अतः अन्न व सोना व्यापारिक वायदा व्यापार में तेजी, रूई में प्रथम मन्दी का झटका लगकर सुधार, सोना, चांदी के भाव घटा-बढ़ी से तेजी लेंगे। गुड़, सरसों, मूंगफली, घी के भावों में तेजी। मूंगफली, तिल, तेल, लोहा, चना, कालीमिर्च के भावों में तेजी। किसी-किसी जीन्स में तेजी से चमक होगी।

पौष

२९ दिसम्बर २००८ को पौष मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्त्ती व सोमवासरी है। अतः जो शशि उगै सोम शनि से किसी प्रान्त की सरकार भंग हो। अफीम, किराना के भावों में तेजी, घोड़ा, खच्चर, सोना, चांदी, स्टील, तांबा, शेयर, लोहा, मटर, गेंहू, जौं, तिल के भाव प्रथम मन्दी लेकर तेजी का मान करेंगे। रूई, सूत व सूती-ऊनी वस्त्र, सरसों, घी, तिल, तेल, गुड, शक्कर, खांड के भावों में आंशिक मन्दी आयेगी। खोपरा, सोयाबीन, अरण्डी के भाव घटा-बढ़ी से तेजी लेंगे। शेयर बाजार में प्रथम सप्ताह मन्दी के बाद भावों में तेजी का संचार होगा। इलायची, गोला, चना के भावों में तेजी होगी।

माघ

२७ जनवरी २००९ को माघ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। जो कि ३० मुहूर्त्ती होगा। चन्द्रदर्शन भौमवासरी तथा कुम्भ राशिगत होगा। अतः दालवाना, अनाज, राजमा, मूंग, मोंठ, उडद, चना, अरहर, मसूर के भावों में तेजी बनेगी। पशमीना ऊन के भावों में मन्दी, रूई, गुड, कपास के भावों में तेजी, उदित समय चन्द्रमा के दोनों श्रृंग समान होंगे। प्रायः अन्न व वायदा व्यापार के भावों में घटा-बढ़ी तो होगी, लेकिन मान तेजी का ही रहेगा। रूई गिरकर तेजी लेगी। सोना, चांदी में अच्छी तेजी व अच्छी मन्दी के चांस प्राप्त होंगे। गुड़, सरसों, मूंगफली के भावों में तेजी। अमावस्या व पूर्णिमा सोमवासरी है, जो कि घटा-बढ़ी को बल प्रदायक हैं। सोना-चांदी, पीतल, सन, कपास, पाट, वारदाना, शेयर, कपासिया के भावों में घटा-बढ़ी से तेजी। उड़द, मूंग, मोंठ, मसूर, मघ, अरहर के भाव गिरकर तेजी बना लेंगे। कपास सरसों, तिल, तेल, अलसी, मूंगफली, घी, वेजीटेबल के भाव तेज रहेंगे। आलू, प्याज, लहसन के भावों में मन्दी आयरन व बैंक सम्बन्धी शेयर्स में तेजी के अच्छे चान्स हैं।

फाल्गुन

२६ मार्च २००९ को फाल्गुन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन गुरुवासरी व मीन राशिगत हो रहा है। चन्द्रदर्शन पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रान्तर्गत है, अतः रूई, सूत, सूती-ऊनी वस्त्र, सरसों का तेल, घी के भावों में तेजी आयेगी। सोना, चांदी व गुड़ के भाव तेज हों। ऐवरेज में मन्दी। पाला वर्षा से चना, ईख, गेंहू, अलसी की फसल में हानि। रूई, किराना के भावों में मन्दी, किसी-किसी जीन्स में विशेष मन्दी, लोहा, सीसा, जस्ता, स्टील,तांबा, आलू, प्याज, केसर, जायफल, नारियल, गोला के भावों में मन्दी का झटका आकर तेजी बनेगी। अनाज, कपास, रसीले पदार्थ व फल के भावों में मन्दी हो।

विशेष- आप अपने नगर गांव में द्वितीय चन्द्रमा उदयकाल में स्वयं देखें और ज्योतिष की देन का लाभ उठाकर औरों को भी लाभ दें। उदयकाल चन्द्रमा भौम उच्च हो, चन्द्रमा नाव के समान हो, तो नाविकों को भयप्रद, समुद्रीय दुर्घटना हो। चन्द्रमा सींग आधा उठा हो तो किसानों को कष्ट फसलों में हानि, भ्रष्टाचारी, चोर, शासनकर्ताओं को सुख प्राप्त हो। दक्षिण सींग आधा ऊँचा हो तो पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि में उत्पात, पुलिस द्वारा जनता को कष्ट हो, चन्द्रमा समान भाव में उदय हो तो सुभिक्ष अच्छा सुख प्राप्त हो। चन्द्रमा दण्ड के समान उदय हो तो गाय, बैल, पशुओं को रोग, शासन द्वारा जनता को कष्ट, ग्रहभय हो। सिंग दक्षिण में फैला हो तो ऐसे चन्द्रमा से भूचाल, प्राकृतिक प्रकोप हानि हो। यदि सींग दक्षिण में ऊँचा हो तो व्यापारी को कष्ट, वर्षा का अभाव हो जाता है। चन्द्रमा सींग नीचे को मुंह वाला हो तो उपज, पशुचारा में विनाश, पशुओं को रोग हो। चन्द्रमा के चारों ओर गोलाकार रेखा हो तो शासन में परेशानी मन्त्रियोंमें परिवर्तन, राष्ट्रपति शासन हो, यदि उत्तर सींग ऊँचा हो तो प्रजा को सुख, चन्द्रमा १ सींग वाला हो तो श्रृंग बाला, सींग रहित हो तो महान पुरुष को कष्ट, दुर्भिक्ष, भय, बड़ा चन्द्रमा हो तो सुभिख, मृदुक दोलक के समान हो तो सुभिक्षकारक, अत्यन्त विशाल हो तो शासन जनता से सुख, सुन्दर चन्द्रमा धन्य हो, धन्य धान की उत्तम पैदावार, भावों में मन्दी बने।

विशेष- हमारे ज्योतिष रत्न कार्यालय से आप चांदी, सोना, तांबा समस्त धातु, रूई, रेशम ऊन, सूत, कालीमिर्च, तिलहन, दलहन, खल, चना, तुअर, मसूर, मटर, उड़द, मूंग, मोंठ, ग्वार, ज्वार, चावल, सरसों, बाजरा, गेंहू, किराना, जीरा, धनिया, अजवायन, सोंफ, मेथी, सोंठ, हल्दी, गुड़, खांड, चीनी, घी, शेयर बाजार आदि में से किसी एक वस्तु की हाजिर तथा स्टाक की वार्षिक भेंट ३४५१/-रु छह मास की १८५१/-रु तीन मास की ९७५/-रु और एक मास की ३५१/-रु है। **पं. अनिल कुमार व्यास**

श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया मथुरा उ.प्र.

श्री बुद्धि-सौख्य समृद्धि प्रदायक यन्त्र

विश्वासम् फलमदायकम्। श्रद्धारूपेण कर्म साधनम्।।
गुरुत्व गुरु ग्राह्यमंत्रम्। आज्ञानुसारेण साधना सफलम्।।

साधक को आवश्यकतानुसार अपने जीवन में तन्त्र साहित्य का प्रयोग मन्त्र-यन्त्र रूप में करना हो तो भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। समर्पित होकर तन्त्रमें शक्ति का योगदान, मन्त्रमें गुरु का योगदान तथा यन्त्रमें बुद्धि सरस्वती का योगदान प्राप्त करके अपना कदम रखा जाए या शाबर तन्त्र की सामान्य प्रक्रिया को अपनाया जाए तो कोई भी यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रमें विफलता होना सम्भव नहीं है।

मनोकामनापूर्ण करने के लिए यन्त्र

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

ॐ	८	१५	२	७	
ॐ	६	३	१२	११	ॐ
ॐ	१४	९	८	१	ॐ
ॐ	४	५	१०	१३	ॐ

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

विधि- इस यन्त्र को हल्दी के रस से कागज पर या भोजपत्र के ऊपर लिखें तथा इस यन्त्र के नीचे अपना मनोरथ लिख दें। फिर इसका पलीता बनाकर रविवार के दिन जला दें। इस तरह सात रविवार तक प्रयोग करने से तथा साथ ही मन्त्र का नित्य हल्दी की माला से जप करें तो शीघ्र ही मनोरथ पूर्ण होगा। **मन्त्र-** ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।। सूर्य का पूजन भी करें अवश्य लाभ होगा। प्रत्येक मनोरथ की पूर्ति के लिए अलग-अलग करें।

बुरी नजर दूर करने का यन्त्र

१४८	१३	१३८	६
२	१४६	१३	१३९
६३	७	१४०	१
२०	१३४	९	१४७

विधि- हल्दी के द्वारा पीले रंग से रंगे हुए सूती कपड़े पर यन्त्र लिखकर पोटली सी बनाकर अजवायन डालकर काले धागे से बच्चे के गले में बांधने से बुरी नजर (नजर लगना) दूर होती है। अथवा इस यन्त्र को बुधवार के दिन हल्दी से भोजपत्र पर लिखकर बालक के गले में बांधने से नजर दोष का निवारण हो जाता है।

गर्भधारण करने के लिए यन्त्र

३४२	३४९	२	ढ़
६	३	३४६	३४९
४४८	२४३	८	१
४	५	३०४	३४४

विधि- इस ताबीज (यन्त्र) को भोजपत्र के ऊपर केसर से रविवार को लिखकर स्त्री के गले में शुभ समय में बांधे तो गर्भधारण होगा। रजस्वला समय को त्यागना होगा। साथ ही गौरी शंकर की पूजा स्त्री २१ दिन तक करे तो अवश्य लाभ होगा।

व्यापार में लाभ प्राप्ति के लिए यन्त्र

५०	५७	२	७
६	३	५२	५२
५६	५१	८	५१
४	५	५२	५५

विधि- इस यन्त्र को केसर की स्याही से नदी का जल डालकर चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर शुक्रवार के दिन २१००० यन्त्र लिखकर (२४ घंटों में) फिर २१००० आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को खिलाने पर यह यन्त्र सिद्धि हो जायेगा। तब इस सिद्धि यन्त्र को भोजपत्र या चांदी में या सोने की पतरी पर लगायें तो दिन प्रतिदिन लाभ होता जायेगा।

प्रत्येक कार्य में सफलता के लिए यन्त्र

८	१	६
३	५	७
४	९	२

विधि- इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर **रविपुष्य/ गुरुपुष्य/ सर्वार्थ सिद्धि** योग में शुभ की होरा में केसर की स्याही से अनार की कलम से लिखें तथा अपने पास रखें तो प्रत्येक कार्य में लाभ ही होगा। साथ में गुरु मन्त्र **'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः'** का जप भी करें।

विद्या प्राप्ति के लिए यन्त्र

११	१	८
४	७	९
५	१२	३

विधि- इस यन्त्र को सरस्वती मन्त्र से सिद्धि करके अपनी भुजा पर बांधें तो लाभ होगा। यन्त्र केसर से भेजपत्र के ऊपर गुरुपुष्य- रविपुष्य वसतपंचमी को अनार की कलम से तैयार करें। साथ ही ५१ दिन तक देवी सरस्वती की उपासना करें। लाभ होगा।

शत्रु विजय यन्त्र

२४२	२४९	२	७
६	३	२४६	२४५
२४८	२४३	८	१
४	५	२४४	२४७

विधि- इस यन्त्र को अष्टगंध की स्याही से अनार की कल्म से भोजपत्र पर मंगलवार के दिन बनायें। आसन पर रखकर दीप जलायें, धूप- दीप से पूजन के पश्चात् अपने इष्टदेव या दुर्गाजीके मन्त्रों का १०८ बार जाप करें। इसे चांदी के तावीज में भरकर गले अथवा बाजू पर बांधने से शत्रु पराजित होगा।

बालरक्षक यन्त्र

ह्रीं च
ह्रीं ...नाम.. ह्रीं
ह्रीं च

विधि- किसी मंगलवार या शनिवार के दिन उत्तर या पूर्व की ओर मुंह करके इस यन्त्र को केसर की स्याही और अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर उसे गूगल व लोबान की धूनी देकर लाल कपडे या तावीज में रखकर बालक के गले में बांधने से सभी प्रकार की आपदाओं से बच्चे की रक्षा होती है।

ब्रह्मर्षि वैद्य पं. नारायण शर्मा कौशिक
मेंढताबाजार, मेड़ता सिटी, जिला नागौर(राज.)३४१५१०
फोन नं.९४१३९३०२४७, ०१५९०२२०७९२

राशिफल गोचर ग्रहानुसार सं. 2065 वि. (अप्रैल 2008 से मार्च 2009 ई. तक)

मेष:- चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अप्रैल:- नये रोजगारकी संभावनाएँ तलाशें, भाग्य आपका इंतजार कर रहा है। देव-दर्शन का लाभ मिलेगा। बच्चों का समय खेलकूद में बीतेगा। समस्या सुलझ जायेगी। **मई-** चल रहे साम्यक कार्यों में प्रगति का योग है। अपरिचित से अकारण सहायता न लें। असंयम भोगोंकी वृद्धि भाग्योन्नतिमें व्यवधानकारक है। **जून:-** अधिक व्यय के साथ लाभ के अवसर भी आयेंगे। नए लोगों की मित्रता से नई उमंग आयेगी। किसी की कही व्यर्थ बातों पर ध्यान न दें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। **जुलाई:-** मास मिश्रित फलदायक है। दिनचर्या असंतुलित होगी। सफलता के मध्य असफलता के योग बन रहे हैं। रोजगार, व्यवसाय में उन्नति के अवसरों को चूकें नहीं। **अगस्त:-** मास का फल कर्मयोगियों के लिए श्रेष्ठ है। गुप्त षड्यन्त्रकारियों से सावधान रहें। पारिवारिक कहा-सुनी मानसिक विक्षेप का कारण बनेगी। **सितम्बर:-** मिथ्यापवाद, व्यर्थभ्रमण से बचे रहें। आश्वासन अधूरे भाग्य की विडम्बना जानें। व्यवसायमें तत्परता बनेगी। पारिवारिक कहासुनी मानसिक विक्षेपका कारण बनेगी। **अक्टूबर:-** माह आपके लिए सामान्य फलप्रद है। रुपये-पैसों के लेन-देन में सावधानी बरतें। पुराने रोग-ऋण से छुटकारा मिलेगा। संतान से सुख मिलेगा। **नवम्बर:-** विवादास्पद प्रकरण अन्तर्विरोध को जन्म दे सकता है। सत्प्रयत्न से मनोरथ सिद्ध होगा। लम्बी योजनाओं में पूंजी खर्च होगी। कानूनी विवाद नया मोड़ ले सकता है। **दिसम्बर:-** मंगलोत्सवों में जाना होगा। यशोपलब्धि से पड़ौसी ईर्ष्या करेंगे। प्रतियोगिता परिणाम सुखद रहेगा। उच्चाधिकारी, राजनेतासे सन्निकटता श्रेष्ठ नहीं। लाभ-खर्च का संतुलन बना रहेगा। **जनवरी:-** किसी सरकारी संस्था से दूरगामी लाभ हो सकता है। कुछ विशेष कर दिखाने की उधेड़बुन में समय बीतेगा। किसी परिचित से मन-मुटाव भी हो सकता है। **फरवरी:-** अचानक शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। कार्यक्षेत्र में तनाव को अपने ऊपर हावी न होने दें। बनते-बिगड़ते परिवेश में नवीन योजना सफल रहेगी। **मार्च:-** पुराने झगड़े-झंझटो से मुक्ति मिलेगी। अधिकारी वर्ग से अच्छी साठ-गांठ रहेगी। निराशाजनक विचारों से बचे रहें, समय सानुकूल है।

वृष:- इ, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अप्रैल:- नई योजनाओं में ऊर्जा व पूंजी का निवेश करें। शत्रु पक्ष से सावधान रहें। मिथ्यापवाद, अनावश्यक भ्रमणसे बचे रहें। साहित्य, संगीत, हास्यरस में मन रमेगा। पड़ौसियों को ईर्ष्या होगी। **मई:-** नई योजना शुरु कीजिए, भाग्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। पदोन्नति में साथी रुकावट पैदा करेगा। हर्ष-विषाद होगा। दोस्तों में मटरगश्ती चलती रहेगी। **जून:-** विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। बड़े अधिकारी से सहयोग मिलेगा। घर-गृहस्थी में सरसता बनाए रखें। सोचे हुए काम बन जाएंगे। **जुलाई:-** सामाजिक संपर्क सुधरेगा। प्रतियोगिता में भाग जरूर लें। लम्बी यात्रा और देवदर्शन का लाभ उठाएंगे। घर में मेहमानों का आगमन हो सकता है। **अगस्त:-** पुराने परिचितों से अच्छी पटेगी। खरीद-फरोख्त का धंधा पनपेगा। सुसंगत विचारधारा और स्पष्टवादिता आपके व्यक्तित्व में चार चांद लगा सकती है। कुछ विशेष उतार-चढ़ाव सम्भव हैं। **सितम्बर:-** साहित्य, संगीत व ललित कलाओंमें मन लगा रहेगा। प्रतियोगिता में जीत आपकी होगी। आत्मसम्मान का ध्यान रखें। **अक्टूबर:-** कर्त्तव्य के प्रति सावधान रहें। यातायात के साधन सुलभ होंगे। रुका हुआ धन मिलेगा। तबीयत कुछ नरम चलेगी। अच्छा समाचार आयेगा। **नवम्बर:-** अचानक मिली सफलता से हर्ष होगा। वाणी पर नियंत्रण रखें। पुराने रिश्तेदारों, मित्रों के अचानक मिलने से खुशी होगी। धार्मिक यात्रा का सुयोग बनेगा। लेन-देन में सावधानी बरतें। **दिसम्बर:-** यश-कीर्ति का विस्तार होगा। समय के अनुकूल कार्य करें। श्रमसंघर्ष बढ़ेगा। नये काममें सफलता तय जानें। बाल-बच्चोंमें हास्यरस बढ़ेगा। भूमि, वाहन की खरीद-फरोख्त होगी। **जनवरी:-** नवीन व्यवसाय, राजनीतिक गठजोड़ का संयोग सुखद रहेगा। मंगलोत्सव की सूचना मिलेगी। समय का सही उपयोग करें। गृहस्थ जीवन में कठिनाई आ सकती है। **फरवरी:-** साहित्य संगीतमें मन लगेगा। नित नएपन का अहसास होगा। नया मेल-मिलाप लाभप्रद रहेगा। कुछ समय व्यर्थ ही सोच-विचार में व्यय होगा। जमापूंजी बढ़ेगी। **मार्च:-** गोचर के शुभ प्रभाव से सफलता मिलेगी। उत्तरदायित्व की वृद्धि अस्थिरता को जन्म दे सकती है। वाहन खरीदना उत्तम रहेगा। स्थान परिवर्तन सुखद रहेगा।

मिथुन:- का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा

अप्रैल:- मास के पूर्वार्ध का हर दिन एक नई उमंग लेकर आयेगा। काम के चलते सेहत को नजरअंदाज न करें। योजना पूर्ण होगी। **मई:-** मास सामान्य फलदायक है। व्यवसायिक निर्णय लेने में सावधानी बरतें। पेड़-पौधों और बागवानी में रुचि बढ़ेगी। रुपये-पैसे के लेन-देन में सावधानी बरतें। **जून:-** मास सामान्य फलदायक है। पेट सम्बन्धी परेशानियाँ हो सकती हैं। पूर्वापेक्षा लाभ से व्यय अधिक होगा। धार्मिक यात्रा पर जाने का संयोग बनेगा। **जुलाई:-** विवादास्पद प्रकरण समाप्त होगा। गुप्तशत्रु, ईर्ष्यालु साथी से सावधान रहें। ग्रहचाल का प्रभाव मध्यम रहेगा। पढ़ाई-लिखाई में मन रमा रहेगा। कुचक्र रचना से बचे रहें। **अगस्त:-** ग्रहचाल भाग्य के विकास में सहायक है। कार्यारम्भ कीजिए समय पर समस्या का समाधान हो जाएगा। दोस्तों में हास्यरस बढ़ेगा। संयोग वियोग से क्षोभ होगा। **सितम्बर:-** खरीद-फरोख्त के धंधे में मुनाफा होगा। शुभ समाचार मिलेगा। बच्चों पर पढ़ाई का भार बढ़ सकता है। सामाजिक, धार्मिक कार्यों में हिस्सा लेने से सम्मान वृद्धि होगी। **अक्टूबर:-** आप असामान्य परिस्थितियों में धैर्य बनाऐ रखें। योग और प्राकृतिक चिकित्साओं की ओर ध्यान आकर्षित होगा। व्यस्तता के चलते सेहत का ख्याल रखें। हास परिहास के अवसर मिलेंगे। **नवम्बर:-** दफ्तर व्यवसाय में कार्यभार बढ़ेगा। बेमतलब के झन्झटों से बचे रहें। घूमने-फिरने में अधिक समय का अपव्यय न करें। भक्तिसे मनको शान्ति मिलेगी। **दिसम्बर:-** मास अति महत्वाकांक्षी प्रवृत्ति वालों के लिए शुभ फलदायक है। समाज में सम्मान बढ़ेगा। अजनबी से सावधान रहें। **जनवरी:-** समय के सदुपयोगसे सितारा बुलन्द होगा। यात्रा, मंगलोत्सव का संयोग बन सकता है। राज समाजमें सम्मान बढ़ेगा। साथी पदोन्नतिमें बाधक बनेगा। **फरवरी:-** व्यावसायिक उन्नति से आत्मविश्वासमें वृद्धि होगी। उच्चाधिकारीकी घनिष्ठता से लाभ उठायें। आयात-निर्यात फायदेमंद रहेगा। धर्म, अध्यात्ममें रुचि होगी। **मार्च:-** रुका हुआ धन कठिनाई से मिलेगा। रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें। अतीतके संदर्भ में अनुसंधान से लाभ होगा। नए लोगों से संपर्क बनेंगे। प्रियजन मिलन होगा।

कर्क:- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अप्रैल:- मनोरंजन की सुख-सुविधा मिलेगी। कर्मोद्योग में तत्परता बनी रहेगी। पड़ौसियों से संबंध सुधरेंगे। समय रहते समस्या सुलझ जायेगी। खेल-कूद में रुचि बढ़ेगी। **मई:-** मेहनत के चलते सेहत का खयाल रखें। संतान पक्ष की ओर से नये अनुभव होंगे। वाहन, मकान, पशु, पक्षी लेन-देन में रुचि बनेगी। किसी से व्यर्थ का झगड़ा मोल न लें। **जून:-** साहित्य-संगीत में रुचि बनेगी। नवीन व्यवसाय, राजनैतिक गठजोड़ का संयोग सुखद रहेगा। पुराने मित्र से मिलन, इच्छित सहयोग से मन खुश रहेगा। **जुलाई:-** लम्बी लाभकारी योजनाओं में निवेश होगा। मनोरंजन की सुविधा मिलेगी। आर्थिक चिन्ता से मुक्ति मिलेगी। देश-देशान्तर से समाचार मिलेगा। **अगस्त:-** कानूनी विवाद में राहत मिलने से खुशी होगी। आमोद-प्रमोद के साधन सुलभ होंगे। नवीन क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाऐं तलाशें, भाग्य को आपकी प्रतीक्षा है। साझीदार से मनमुटाव समाप्त होगा। **सितम्बर:-** सेहत पर मौसम का प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। महिला वर्ग को लाभ होगा। व्यावसायिक समझौता लाभदायक रहेगा। संदिग्ध व्यक्ति से मित्रता न करें। **अक्टूबर:-** राजनैतिक गठजोड़ का संयोग सुखद रहेगा। मिथ्यापवाद, अनावश्यक भ्रमण से बचे रहें। अपने कर्तव्य को सही ढ़ंग से निभाएं। वाणी पर नियंत्रण बनाए रखें। कठिन समस्या समय रहते सुलझा लें। **नवम्बर:-** मास सामान्य फलदायक है। कारोबार में अनिश्चितता बनी रहेगी। बढ़ती अभिलाषाएं अनैतिक कार्यों की ओर प्रेरित करेंगी। **दिसम्बर:-** सामाजिक धार्मिक कार्यों से कहीं जाना होगा। कुछ समय ज्ञानवर्धन में व्यतीत होगा। नये काम में आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। समाज में रुतबा बढ़ेगा। **जनवरी:-** नौकरी पेशा वर्ग फायदे में रहेगा। दूर-समीप की यात्रा का सुयोग है। तरक्की से मन प्रसन्न होगा। कुछ विषयों में भाग्य साथ देगा। सहपरिवारियों से पूर्ण सहयोग मिलेगा। **फरवरी:-** मास आपके लिए कुछ विशेषताएँ लिए आ रहा है। मंगलोत्सव मिलन, आमोद-प्रमोद, हास्यरस बढ़ने लगेगा। प्रेम-प्रसंग का चक्कर भी चल सकता है। **मार्च:-** सामाजिक प्रशंसा एवं श्रीवृद्धि से मन प्रसन्न होगा। घर में त्यौहार जैसा माहौल रहेगा। रोजगार में पर्याप्त उन्नति होगी।

सिंह:- मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

अप्रैल:- किसी परिचित से मनमुटाव हो सकता है। देव दर्शन से लाभ मिलेगा। अनावश्यक दुश्चिन्ताओं को अपने ऊपर हावी न होने दें। **मई:-** लाभालाभके योग समान है। आस्थावान पुरुषों का साथ श्रेष्ठ रहेगा। अधिक व्यय होने के साथ-साथ लाभ के अवसर भी आयेंगे। **जून:-** माह महत्वाकांक्षी प्रकृति वालोंके लिए शुभफलदायी है। विवेकपूर्ण कार्य सम्पादन से लाभ होगा। कानूनी एवं घर-गृहस्थी की समस्या सुलझ जायेगी। सहपरिवारियों से पूर्ण सहयोग मिलेगा। **जुलाई:-** अभीष्ट सिद्धि से मन प्रसन्न होगा। वाद-विवाद में शत्रु पराभव से हर्ष होगा। रोजगार व्यवसाय में उन्नति के अवसरों को चूके नहीं। ससुराल पक्ष से कोई समाचार आ सकता है। **अगस्त:-** स्पष्टवादी विचारधारा का दूरगामी परिणाम श्रेष्ठ रहेगा। समय के स्वरूप को ध्यान में रखकर कार्य करें। पदाधिकार की चिन्ता अन्तर्विरोध को जन्म देगी। **सितम्बर:-** धार्मिक यात्रा संकीर्तन का विचार बनेगा। उत्तरार्ध में योजनापूर्ति से लाभ, किन्तु मनोमालिन्य भी सम्भव है। धन, ऐश्वर्य वृद्धि से शत्रुओं को ईर्ष्या होगी। व्यवहार कोमल बनाए रखें। **अक्टूबर:-** लम्बी योजनाओं में पूंजी खर्च होगी। काम की व्यस्तता के चलते परिवार की उपेक्षा न करें। धार्मिक विवाद में उलझना श्रेयस्कर नहीं है। स्वास्थ्य कुछ नरम चलेगा। कारोबार की वार्ता सफल रहेगी। **नवम्बर:-** नये मेहमान के आने से गृहखर्च में बढ़ोत्तरी सम्भव है। व्यवसाय में तत्परता बनी रहेगी। प्रतियोगिता में विजय से मन प्रसन्न होगा। कहीं से रुका हुआ धन मिलेगा। **दिसम्बर:-** सफलता के मध्य असफलता के योग बन रहे हैं। जनसम्पर्क, संचार क्षेत्र में संभावनाएँ तलाशें। बच्चे खेलकूद तो स्त्रियाँ हास्यरस से विभोर रहेंगी। **जनवरी:-** घर में नये मेहमान के आने से खुशी होगी। अधूरी योजना पूरी होने में संदेह है। सहायता पर निर्भर रहना होगा। न चाहते हुए भी कहीं जाना पड़ सकता है। **फरवरी:-** मास आपके लिए सामान्य फलदायक है। परम मित्र के सहयोग से नया काम बनेगा। कुछ समय बेमतलब की उलझनों में व्यतीत होगा। भौतिक उपभोग की वस्तु खरीदी जायेगी। **मार्च:-** मास में विशेष कार्य बनेंगे। देश-देशान्तर का समाचार मिलेगा। बढ़ते जनसम्पर्क का फायदा उठायें। गृहणियों का समय साज-सज्जा में बीतेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

कन्या:- टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अप्रैल:- आशानुसार यह मास श्रेष्ठ रहेगा। गृहस्थी की समस्याओं का निवारण सूझबूझ से करें। इष्ट कृपा, संयम परिवर्तन लाभ होगा। गृह प्रपंच से अन्तर्मन क्षुब्ध रहेगा। **मई:-** पुरानी निराशा समाप्त होकर नया प्रगतिपथ मिलेगा। महत्वपूर्ण सफलता मिलने से हर्ष होगा। आय का कुछ भाग पुण्यार्जन पर खर्च होगा। **जून:-** महिला वर्ग के लिए समय अनुकूल है। शत्रुजनित षड्यन्त्र लोकोपवाद से बचे रहें। विरोधी परेशान कर सकते हैं। **जुलाई:-** नवीन व्यवसाय, राजनैतिक गठजोड़ का संयोग सुखद रहेगा। प्रगतिपथ पर पूर्णविश्वास से बढ़ें, भाग्योदय होगा। लाभ-खर्च का सन्तुलन बनाये रखना श्रेष्ठ है। साझेदारों से मनमुटाव सम्भव है। **अगस्त:-** स्वास्थ्य संबंधी कोई नई परेशानी जन्म ले सकती है। वाद-विवाद में शत्रु पराभव से हर्ष होगा। सह परिवारियों के पूर्ण सहयोग से नवनिर्माण का विचार पूरा हो सकता है। **सितम्बर:-** मास आपके लिए कुछ विशेषताएं लिए आ रहा है। मधुरता के चलते कटुता के अनुभव होंगे। पुराने मित्र से मिलने पर खुशी होगी। भूमि, वाहन, पशु आदि लेन-देन में फायदा हो सकता है। **अक्टूबर:-** असयम (भोगों की वृद्धि) भाग्योन्नति में व्यवधानकारक है। विद्युत उपकरण, वाहनादि चलाने में सचेत रहें। उत्तरदायित्व वृद्धि शुभ फलदायक है। **नवम्बर:-** चल रहे साम्यक कार्यों में सजगता बरतें, पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। रचनात्मक कार्यों की ओर रुझान होगा। प्रेम प्रसंग के चक्कर में नुकसान उठाना पड़ सकता है। प्रतिकूल समाचार मन दुःखाएगा। **दिसम्बर:-** अवरोध-विरोध के चलते संकल्पित कार्य पूर्ण होगा। अनावश्यक श्रम से मानसिक परेशानी हो सकती है। कार्यविशेष से समाज में अच्छी छवि बनेगी। **जनवरी:-** जीवनसाथी एवं साझेदारों से सहयोग मिलेगा। सद्कार्यों में रुचि बढ़ायें, मन को शान्ति मिलेगी। नौकरी पेशा वर्ग को उन्नति मिलेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। **फरवरी:-** सत्कर्मजन्य पुण्यार्जन से अभीष्ट सिद्धि मिलेगी। परिजन विछोह मन को दुःखित करेगा। राजनैतिक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें। नव निर्माण का विचार मन में जन्म लेगा। **मार्च:-** पराक्रम वृद्धि से शत्रु पराजित होगा। कार्यालय में अधिकारी से अनबन सम्भव है। दाम्पत्य में सरसता बनाये रखें। अनपेक्षित मेहमान से गृहखर्च बढ़ेगा।

तुला:- रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अप्रैल:- अनावश्यक इच्छाएं नियन्त्रित रखें। कार्य योजनाएं बनती-बिगड़ती रहेंगी। सामाजिक संपर्क से काम बनेंगे। इस मास में धन लाभ के सुयोग हैं। **मई:-** रुका हुआ धन कठिनाई से मिलेगा। रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें। लाभ हानि का योग समान। प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। छोटी-मोटी बीमारियाँ परेशान कर सकती हैं। **जून:-**राजकीय सहयोग अपर्याप्त रहेगा। अनियमित व्यवहार से मन दुखेगा। व्यापारी तबके को लाभ होगा। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। **जुलाई:-** खट्टे-मीठे दोनों प्रकार के अनुभव होंगे। बेकार के झंझटों से बचे रहें। महिलावर्ग का समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। मर्यादारहित व्यवहार क्षोभ का कारण बन सकता है। **अगस्त:-** इच्छित उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। अजनबी से सचेत रहें। लाभ से खर्चा कम होगा। लम्बी यात्रा का अवसर मिलेगा। युवा वर्ग की महत्वाकांक्षा बढ़ेगी। **सितम्बर:-** धार्मिक सामाजिक काम से कहीं जाना होगा। समय के मुताबिक कार्य करें। विरोधियों से सावधान रहें। इस माह जनसंपर्क बढ़ेगा। पड़ौसियों से विवाद हो सकता है। प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा। **अक्टूबर:-** जनसम्पर्क अच्छा रहेगा। दीर्घकालीन विवाद समाप्त होगा। प्रियजन मिलन से मन प्रसन्न होगा। पारिवारिक अन्तर्विरोध घटनाचक्र को जन्म दे सकता है। **नवम्बर:-** व्यवसायिक शैथिल्यता, ग्रह प्रपंच से अन्तर्मन क्षुब्ध रहेगा। पुराने रोग से छुटकारा मिलेगा। सुख की सामग्री खरीदी जायेगी। पारिवारिक खुशी की खबर आयेगी। **दिसम्बर:-** समस्याओं का समयोचित समाधान न मिलने से मानसिक अशान्ति होगी। पदाधिकार की चिन्ता अन्तर्विरोध को जन्म दे सकती है। ग्रहानुसार दूर समीप की यात्रा पर जा सकते हैं। **जनवरी:-** रचनात्मक काम बनेंगे। विपरीत परिस्थितियों में क्रोध पर काबू रखें। गृहस्थी की समस्या सुलझ जायेगी। राजकीय मदद मिलेगी। अचानक लाभ हो सकता है। **फरवरी:-**किसी अनजान व्यक्ति से कोई फायदा होगा। कर्मोद्योग में ग्रहानुसार तत्परता से लाभ होगा। स्वजनों से सुख, पारिवारिक मंगल कार्यों की खुशी होगी। **मार्च:-** अनावश्यक दुःश्चिन्ताओं से मन क्षुब्ध होगा। शत्रुजनित षड्यन्त्र लोकोपवाद से बचे रहें। नई उपलब्धियाँ मेहनत से मिलेंगी। उत्तरदायित्व बढ़ेगा। लम्बी यात्रा न करें।

वृश्चिक:- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अप्रैल:- [illegible] की गतिविधियों से सावधान [illegible] वाहनादि का विचार पूरा होगा। प्रतियोगी होगा। कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक रहें, जिम्मेदारियां बढ़ेंगी, फायदा रुपए-पैसे का सोच समझकर इस्तेमाल करें। व्यर्थ की राजनीति से बचे रहें। नये रोजगार का मार्ग खुल सकता है। पुराने रोग, ऋण से छुटकारा मिलेगा। **जून:-** कानूनी दांव-पेंच से बचे रहें। सामाजिक-धार्मिक कार्यों और ईशप्रार्थना में ध्यान लगा रहेगा। व्यस्तता के बीच हंसी-खुशी में दिन बीतेंगे। आप इच्छित उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। **जुलाई:-** प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। दोस्तों से पटेगी। प्रकृति के सानिध्य में सुख मिलेगा। भूमि, वाहन, पशु-पक्षी की खरीद-फरोख्त में सावधानी बरतें। नया राजनैतिक संबंध अच्छा रहेगा। **अगस्त:-** लाटरी आदि का लाभ हो सकता है। भूमि वाहनादि के लेन-देन का विचार पूरा होगा। भौतिक विकास का योग अच्छा है। विवाहादि मंगलोत्सवों में जाना हो सकता है। **सितम्बर:-** रुका हुआ धन कठिनाई से मिलेगा। शुभ समाचार भी प्राप्त होगा। व्यक्तित्व में निखार आयेगा। आय-व्यय का संतुलन बना रहेगा। आलस्य का त्याग करें। **अक्टूबर:-** व्यावसायिक, कार्यालयी व्यस्तता के चलते दिनचर्या अव्यवस्थित न होने दें। अचानक लाभ होगा। अधूरा पड़ा काम किसी सहयोग से पूरा होगा। मनोरंजन में समय बीतेगा। **नवम्बर:-** बच्चों की पढ़ाई-लिखाई अच्छी रहेगी। यात्रा लम्बी व साधारण रहेगी। राजनैतिक, सामाजिक सम्बन्ध गहरे होंगे। व्यय कम और लाभ अधिक होगा। **दिसम्बर:-** नवीन कार्य की योजना मस्तिष्क में आकार लेगी। दोस्तों से मतभेद चल सकता है। नए मेहमान की खुशी होगी। गृहस्थी में लाभ-खर्च का संतुलन बनाये रखें। **जनवरी:-** यह मास सामान्य रहेगा। सामाजिक संपर्क फायदेमंद रहेगा। नई योजना की तरफ ध्यान रहेगा। किसी खास स्थान की यात्रा से सुकून मिलेगा। सेहत का ख्याल रखें। **फरवरी:-** दोस्तों के साथ लम्बी यात्रा पर जाना पड़ सकता है। व्यापारी तबके को अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। साहित्य-संगीत में मन रमा रहेगा। दाम्पत्य में सरसता बनी रहेगी। **मार्च:-** बड़े अधिकारी से सावधान रहें। क्रोध पर नियंत्रण बनाये रखें। नये सम्बन्ध से भाग्य चमकेगा। सामाजिक सम्मान मिलेगा। लम्बी यात्रा न करें।

धनु:- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे

अप्रैल:- भाग्य का सितारा बुलन्द होगा। किसी खास विषय की विशेषज्ञता व्यक्तित्व विकास में सहायक है। लाभ-खर्च का सन्तुलन धार्मिक [illegible] निकट सम्बन्धी से अनबन हो सकती है। **मई:-** विवादों से दूर ही रहें। बच्चों [illegible] व्यर्थ के झगड़े-झमेलों, उच्च अधिकारी से टकराव सम्भव है। **जून:-** मास [illegible] रचनात्मक कार्य के लिए अच्छा रहेगा। राज-समाज में सम्मान बढ़ेगा। प्रतियोगिता में जीत हो सकती है। सारगर्भित वार्ता शैली उत्तम है। न चाहते हुए भी कहीं जाना पड़ सकता है। **जुलाई:-** काफी समय से टल रही योजनाएँ पूरी होंगी। इष्ट-मित्र का कोई पत्र या सूचना आएगी। असीमित आकांक्षाएँ दुखों का सृजन करेंगी। समय व्यर्थ न गंवाएं। परिवार में खुशियाँ व्यापेंगी। **अगस्त:-** स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन करें। मन की उलझनों का समाधान प्रकृति स्वयं करेगी। लम्बी यात्रा से कष्ट सम्भव है। लाभ के अवसर मिलेंगे। **सितम्बर:-** किसी खास उपलब्धि से मन खुश होगा। सेहत पर मौसम का प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। दिनचर्या अव्यवस्थित न होने दें। मन की नवीन योजनाएँ साकार रूप लेंगी। **अक्टूबर:-** भूमि, पशु, वाहनादि के लेन-देन का विचार बनेगा। धर्म के प्रति आस्था जागृत होगी। अत्याधिक व्यय होने से मानसिक परेशानी सम्भव है। **नवम्बर:-** नई योजनाएँ बनाने में दिमाग उलझा रहेगा। ग्रहचाल के अनुसार स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। गृहस्थी में सामंजस्य बनाये रखना बेहतर है। चिरस्थायी योजना में धन खर्च होगा। **दिसम्बर:-** विवेकपूर्ण कार्य सम्पादन से लाभ मिलेगा। अच्छे समाचार से मन खुश होगा। नये कार्यों में ऊर्जा व पूंजी का निवेश करें। बढ़ते जनसम्पर्क का फायदा उठायें। **जनवरी:-** सामाजिक कार्यों में कम सफलता मिलेगी। आत्म अनुसंधान से कई समस्याएं सुलझ सकती हैं। नवनिर्माण तथा देवदर्शन का विचार पूरा होगा। **फरवरी:-** मास के उत्तरार्ध में योजनापूर्ति से लाभ होगा। घर-गृहस्थी के उपयोग की कोई प्रिय वस्तु खरीदी जाएगी। उच्चाधिकारी से वाद-विवाद होने की संभावना है। **मार्च:-** माह महत्वाकांक्षी प्रकृति वालों के शुभ फलदायक है। यात्रा सामान्य लाभप्रद रहेगी। कानूनी विवाद नया मोड़ ले सकता है।

मकरः- भो, ज, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खे, खो, गा, गी

अप्रैल:- तीव्रलाभ की उच्चाकांक्षाएँ मन में जन्म लेंगी। गुप्त षड्यन्त्रकारी से सावधान रहें। आर्थिक मामले में सहयोग अपेक्षित रहेगा। परिवार के लिए कुछ नया खरीदा जायेगा। **मई:-** पढ़ाई या व्यवसाय हेतु परदेश भ्रमण का लाभ मिलेगा। साहित्य, संगीत, पठन-पाठन में मन लगा रहेगा। अभीष्ट सिद्धि से प्रसन्नता होगी। स्वास्थ्य कुछ नरम रहेगा। **जून:-** मास आपके लिए सामान्य फलदायी है। वाहन चलाने में सावधानी बरतें। लाभ-खर्च का सन्तुलन बनाये रखना श्रेयस्कर है। गृहणियां मनपसन्द वस्तु की खरीदारी करेंगी। **जुलाई:-** मास में नयी योजनाएं पूरी होंगी। आगन्तुकों से गृहखर्च में वृद्धि सम्भव है। कारोबार अच्छा चलेगा। परिजनों से सहयोग मिलेगा। इष्ट मित्रों के साथ घूमने फिरने का अवसर मिलेगा। **अगस्त:-** व्यवसाय के क्षेत्र में नये मार्ग प्रशस्त होंगे। मंगलोत्सवों में जाना होगा। नये मेहमान के आगमन की खुशी होगी। आध्यात्मिक क्षेत्र में मन रमेगा। लाभालाभ समान जानें। जोखिमपूर्ण कार्य में हिस्सा न लें। **सितम्बर:-** भाग्य का सितारा चमकेगा। भौतिकवादी दृष्टिकोण के चलते विलासिता की वस्तुओं पर अपव्यय न करें। रोग, चिन्ता व मानसिक परेशानी रहेगी। **अक्टूबर:-** प्रियजन मिलन से खुशी होगी। वर्त्तमान में परिश्रम का फल भविष्य में मिलेगा। मास के मध्य में आर्थिक तंगी व स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। **नवम्बर:-** कारोबार की प्रगति होगी, किन्तु शत्रुभय भी रहेगा। रुके कार्यो को बनाने का प्रयास करें। अनावश्यक भागदौड़ से मानसिक परेशानी हो सकती है। **दिसम्बर:-** कार्यक्षेत्र में शुभाशुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। व्यावसाय में कोई नया समझौता हो सकता है। किंचित अवरोध-विरोध के बाद आर्थिक उन्नति का सुयोग है। **जनवरी:-** उन्नति के लिए प्रयासरत रहें, समय आपके अनुकूल है। महत्वपूर्ण सफलता मिलने पर मन उत्साहित होगा। ग्रहानुसार आपके भाग्य का सितारा चमकेगा। **फरवरी:-** यह मास आपके लिए फायदेमन्द रहेगा। कोई नई योजना बन सकती है। स्थानान्तरण की सम्भावना बनेगी। नये मित्रों की मदद मिल सकती है। **मार्च:-** मास में कारोबार की वृद्धि होगी। समयानुसार कार्य पूरे करने की कोशिश करें। रुपये पैसों का इन्तजाम हो जायेगा। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

कुम्भः- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अप्रैल:- ग्रहानुसार आपके भाग्य का सितारा चमकेगा। असामान्य परिस्थितियों से घबराएं नहीं। परिवार से अपेक्षित सहयोग मिलेगा। कोई सुखद समाचार भी मिलेगा। **मई:-** चल-अचल संपत्ति की खरीद-फरोख्त में सावधानी बरतें। गोचर ग्रहानुसार लाभ की संभावना है। करीबी रिश्तेदारों से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखें। नये मेहमान का आगमन होगा। **जून:-** कठोर परिश्रम से रुका हुआ काम बन जाएगा। संगीत एवं ललित कलाओं में रुचि बढ़ेगी। अतीत के संदर्भ में अनुसंधान का लाभ मिलेगा। सोची समझी योजना कारगर होगी। **जुलाई:-** नव निर्माणकारी योजनाओं में मस्तिष्क उलझा रहेगा। बच्चों का ध्यान खेलकूद से दूर पढ़ाई में लगा रहेगा। पुराने दोस्तों से सहयोग अपेक्षित जानें। हानि-लाभ के अवसर समान हैं। **अगस्त:-** कार्य की रुकावटें दूर होंगी। मास के उत्तरार्ध में किसी समस्या का सामना करना पड़ेगा। भगवत् भक्ति से मार्ग प्रशस्त होगा। किसी खुले स्थान पर घूमने जाने का मौका मिलेगा। **सितम्बर:-** रोजमर्रा के कामों में नियमितता बनाए रखें। धर्म और आध्यात्म का मार्ग सद्बुद्धि देगा। अवरोध-विरोध के चलते संकल्पित कार्य पूर्ण होगा। घर परिवार में सहयोग पूर्ववत् मिलता रहेगा। **अक्टूबर:-** मास सामान्य फलदायक है। घर गृहस्थी की समस्या समय रहते सुलझेगी। लाभ के अवसर सामान्य हैं। बड़े बुजुर्गों की अवमानना न करें। शत्रु षड्यन्त्र से लोकोपवाद होगा। **नवम्बर:-** विचाराधीन काम देर से बनेगा। आर्थिक समस्या सामने आ सकती है। किसी नई भाषा में रुचि उत्पन्न हो सकती है। अच्छी खबर मन खुश करेगी। **दिसम्बर:-** पुराने दोस्तों के मिलने से मन में नई उमंग आ सकती है। सांसारिक सुखोपभोग, सम्मान वृद्धि, भाग्य विकास का सुयोग चल रहा है। नई खोज में रुचि बढ़ेगी। **जनवरी:-** मास की ग्रहचाल आपके अनुरुप रहेगी। असमंजस की मनःस्थिति में सूझबूझ से काम लें। बच्चों को प्रिय वस्तु मिलने से खुशी होगी। उपयोगी वस्तु मिलेगी। **फरवरी:-** कर्मोद्योग में तत्परता बनी रहेगी। परिवार में सरसता का वातावरण बनाये रखें। निम्न स्तरीय जनसम्पर्क से लाभ तो बड़े अधिकारी से हानि सम्भव है। **मार्च:-** नाम और दाम दोनों का लाभ मिलेगा। किसी खास काम से यात्रा पर जाना पड़ेगा। लम्बी योजना का शुभारम्भ होगा। मित्र सहयोग मिलेगा।

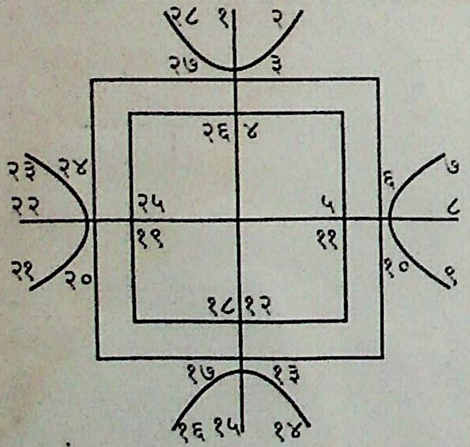
मीनः- दी, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची

अप्रैल:- प्रियजन वियोग मन दुःखाएगा। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। उत्तम ग्रहचाल से रुका हुआ काम बनेगा। भाग्य का सितारा चमकेगा। महिलाओं का समय खरीदारी में बीतेगा। **मई:-** इस माह लाभ-खर्च बराबर रहेगा। कोई तुम्हें गुमराह करने की कोशिश करेगा। पत्नी और बाल-बच्चों की बात अनसुनी न करें। विरोधियों की गतिविधियाँ पहचानें। **जून:-** जमा-खाता बढ़ेगा। देवदर्शन से लाभ मिलेगा। सांसारिक सुख का साधन मिल सकता है। अच्छे समाचार से मन प्रसन्न होगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन करें। तबादला तरक्की वाला रहेगा। **जुलाई:-** रिश्तेदारों से अच्छी खबर मिलेगी। लम्बी बीमारी से पीछा छूटेगा। रोजमर्रा के कामों में कोताही न बरतें। कानूनी झगड़ा ले-देकर सुलझ जाएगा। **अगस्त:-** देश-देशान्तर से शुभ समाचार मिलेगा। अपनी भूल का अहसाह होगा। अनावश्यक यात्रा का विचार छोड़ दें। प्रेम प्रसंग का चक्कर चलेगा। घर-गृहस्थी का विचार पूरा हो जायेगा। **सितम्बर:-** ग्रहचाल अनुकूल रहेगी। बढ़ते कामकाज की चिन्ता रहेगी। परिवार में सरसता का संयोग बनेगा। व्यर्थ के लफड़ों से बचे रहें। **अक्टूबर:-** हास्य रस, आमोद-प्रमोद में समय बीतेगा। दूर-दराज की यात्रा का संयोग बनेगा। दुश्चिन्ताओं को हावी न होने दें। व्यर्थ की राजनीतिक परिचर्चा त्याग दें। **नवम्बर:-** व्यापारी वर्ग बेहद खुश रहेगा। धार्मिक कामों में यश बढ़ेगा। नौकरी सम्बन्धी सूचना मिलेगी। किसी की कही-सुनी बातों में न आएं। पड़ौसी ईर्ष्या करेगा। **दिसम्बर:-** अच्छी-खराब दोनों तरह की खबर मिलेगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन करें। बढ़ते हुए उत्तरदायित्व निष्ठा से निभाएं। मित्र का समाचार आयेगा। उत्तम ग्रहचाल से विशुद्ध लाभ अधिक होगा। **जनवरी:-** मेहनत के चलते सेहत का खयाल रखें। दैनिक कार्यभार से चिन्ता बढ़ेगी। बड़े अधिकारी की हां में हां मिलाते रहें। मेहमान के आगमन पर गृहखर्च बढ़ेगा। **फरवरी:-** बच्चों को प्रिय वस्तुओं की प्राप्ति से खुशी मिलेगी। सरकारी लाभ की सम्भावना कम ही है। नए काम का विचार पूरा होगा। व्यर्थ वादविवाद से बचे रहें। **मार्च:-** मास शुभ फलदायक है। कानून सम्बन्धी विवाद में जय। भूमि वाहन लेन-देन में धन खर्च होगा। स्थान परिवर्तन से लाभ होगा।

आज का दिन कैसा रहेगा!

इस प्रश्न का उत्तर आप स्वयं ज्ञात कर सकते हैं। निम्नलिखित कालानल चक्र के द्वारा जिसे आप ध्यान से कोरे कागज, स्लेट या तख्ती पर लिख लीजिए।

शुभाशुभ ज्ञानार्थ चन्द्र कालानल चक्र



उपरोक्त चक्र में त्रिशूल के मध्य में जहाँ १ लिखा है, वहाँ पंचांग में देखकर आज का नक्षत्र अर्थात् जिस दिन का फल जानना चाहते हो, लिखकर क्रमशः अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों के नाम लिखकर देखिए। आपका जन्म नक्षत्र या नाम नक्षत्र चक्र के किस भाग में कहाँ पड़ा है। आपसे अन्य कोई शुभाशुभ फल जानने के लिए प्रश्न कर रहा है तो उसका नक्षत्र चक्र में कहाँ पड़ता है। उसके अनुसार फल समझना चाहिए। आपके नाम का नक्षत्र त्रिशूल पर आन पड़े तो हानि या कष्ट हो। त्रिशूल के नीचे बाहर के स्थान में से किसी एक स्थान में आ जाए तो मध्यम फल जानना चाहिए। जिस दिन जन्म नक्षत्र त्रिशूल से रहित अन्दर के २६, ४, ५, ११, १२, १८, १९, २५ इन स्थानों में से किसी स्थान पर आ जाए, उस दिन लाभ, सुखोपभोग, विजय, बौद्धिक विकास अथवा यशोपलब्धि मिलेगी। मन खुश रहेगा। नई स्फूर्ती का संचार होगा।

अग्निवास ज्ञानाय कोष्ठक

	तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुक्ल पक्ष	१	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	२	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	३	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	४	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	५	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	६	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	७	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	८	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	९	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	१०	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	११	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	१२	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१३	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
कृष्ण पक्ष	१४	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	१५	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	१	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	२	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	३	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	४	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	५	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	६	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	७	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	८	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	९	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१०	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	११	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
	१२	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
	१३	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
	१४	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
	३०	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल

साथ के अग्निवास कोष्ठक में शुक्ल और कृष्णपक्षकी १५-१५ तिथियाँ लिखी हैं। आड़ी पंक्तिमें वार अंकित हैं। तिथि व वारके सामने अग्निवास लिखा हुआ है, गो अग्निवास यज्ञादि(हवन) में पृथ्वी पर शुभ होना है। आकाश में प्राणनाशक, पाताल में धनैश्वर्य की हानि करता है। अग्निवास का विचार किन-किन कार्यों में करें- **लक्षकोटि हवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविद्यौ। देवखात भवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधी:।।** इनमें इसका विचार न करें- **विवाह यात्राव्रतगोचेपु चूडोपनीति ग्रहणे युगाद्यै:। दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नेवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।।**

नया प्रकाशन

श्री ब्रजराज

कालदर्शक पंचांग

दैनिक उपयोगी सामग्री सहित प्रकाशित



प्रत्येक पृष्ठ पर देवी-देवताओं के रंगीन चित्र, विक्रम सम्वत्, ईस्वी सन, शक सम्वत्, अंग्रेजी तारीख, चैत्र आदि मास, तिथि, प्रमुख व्रत एवं त्यौहार, सरकारी छुट्टियाँ, विवाह, व्यापार, वाहन एवं वास्तु मुहूर्त्त, दूध व अखबार का हिसाब, भद्रा, पंचक और गण्ड मूल, कुण्डलियाँ एवं ग्रह स्थिति, बारह महीने का राशिफल, कार्यसिद्धि योग, सर्वदोष नाशक रवियोग, द्वि-त्रिपुष्कर योग, रविपुष्य गुरुपुष्यामृत योग, तिथि व नक्षत्र का समाप्तिकाल, चन्द्रमा का राशि प्रवेश तथा दैनिक सूर्योदयास्त, ग्रहण विवरण, शनि की साढ़ेसाती व ग्रह चाल का प्रभाव, जन उपयोगी बातें, गृहणी की रसोई, चिकित्सा, गौरख पतरा यात्रा मुहूर्त्त, चौघड़िया मुहूर्त्त, सूर्य चन्द्र आदि नवग्रह के दान रत्न एवं उपाय, महालक्ष्मी पूजन के श्रेष्ठ मुहूर्त्त, यंत्र-तंत्र-मंत्र, स्वप्न विचार, गोचर ग्रहानुसार संसार का घटना चक्र साथ ही अनेक नए एवं महत्वपूर्ण विषय।

जन्मपत्रिकाओं के विभिन्न प्रकार व फीस

१. **टेवा(टिपड़ा)-** जन्मतिथि, तारीख, समय, नक्षत्रादि, राशिचक्र, लग्न कुण्डली व चन्द्रकुण्डली का विवरण होता है। रु.१०१/-

२. **जन्माक्षर पत्रिका-** जन्म विवरण (तिथि, नक्षत्र, योगादि) राशिचक्र, लग्न कुण्डली व चन्द्रकुण्डली के साथ विंशोत्तरी महादशा व अतिसंक्षिप्त फलभी लिखा होता है। रु.२०१/-

३. **जन्माङ्ग पत्रिका-** जन्मविवरण(तिथि, नक्षत्रादि) राशिचक्र, लग्न-चन्द्रकुण्डली, सूर्यादिस्पष्टग्रह, विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा और साधारण भविष्यफल का वर्णन होता है। रु. ३५१/-

४. **सप्तवर्गीय जन्मपत्रिका-** जन्म विवरण (तिथि, नक्षत्रादि) राशिचक्र, घातचक्र, लग्न, चन्द्र व चलित कुण्डलियाँ, तत्कालीन सूर्यादि स्पष्टग्रह, होरा-द्रेष्काणादिकुण्डलियाँ, पंचधामैत्रिकोष्ठक, विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा, योगिनीदशा व अधिक विस्तार से भविष्यफल लिखा जाता है। यह ४० पृष्ठ की पुस्तकाकार जन्मपत्रिका बनाई जाती है। रु. ११०१/-

५. **कुण्डली मिलान-** वर-वधु जन्मपत्रिका मिलान शास्त्रोक्त विधि से किया जाता है। रु.२५१/-

६. **शुभ मुहूर्त्त-** गृहप्रवेश, दुकान, प्रतिष्ठान, वाहन खरीदने आदि सभी प्रकार के शुभ मुहूर्त्त बताने की फीस। रु.२५१/-

७. **कम्पयूटर जन्मपत्रिका-** अत्याधुनिक कम्पयूटर साफ्टवेयर द्वारा भी बनाई जाती हैं, जिनमें जन्म विवरण (तिथि, नक्षत्रादि) राशिचक्र, घातचक्र, लग्न कुण्डली व चन्द्रकुण्डली, सूर्यादि स्पष्टग्रह, होरा-द्रेष्काणादि कुण्डलियाँ, विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा, योगिनी दशा तथा जीवनके सभी पहलुओं पर विवेचन होता है। रु.५५१/-

नोट:- जन्मतारीख, माह, सन्, जन्म समय, जन्मस्थान, माता-पिताका नाम आदि विवरण स्पष्ट लिखकर भेजें। विदेश में जन्मे जातकों की फीस दोगुनी ली जाती है। जन्मपत्रिका बनाने की फीस पहले ही ली जाती है।

हमारा लोकप्रिय प्रकाशन



आपका अन्यन्त प्रिय नये सम्वत् का श्री राजधानी पंचांग कम्प्यूटर कम्पोजिंग द्वारा सुन्दर साज-सज्जा से सुशोभित, पूर्ववत् साइज, अधिक पृष्ठ, सुन्दर डिजायन, मोटे-मोटे अक्षरों में छपकर तैयार है। आप अपने निकटवर्ती दुकानदार से प्राप्त कर सकते है, अथवा पंचांग कार्यालय से सम्पर्क करके मंगा सकते है।

★श्री राजधानी पंचांग की विशेषताएँ★

श्री राजधानी पंचांग में प्रतिवर्ष नये विषयों का समावेश कर आधुनिक बनाने का प्रयास किया जाता है। ज्योतिषियों के लिए नई सारणियाँ बना दी जाती है, जिनकी सहायता से देश-विदेश की कुण्डली निर्माण कर आप घंटों के काम को मिनटो में कर सकते है। नये शोधपूर्ण लेखोंके कारण इसकी लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आप अपनी प्रति पहले ही सुरक्षित करा लें।

श्री राजधानी पंचांग कार्यालय

कार्यालय : E - 219, मेन रोड़, जगजीत नगर, दिल्ली-110053

कार्या. : 22852476
निवास: 22941608
मोबा. : 9868909063